आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती विरचित लब्धिसार-क्षपणासार
की आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजीकृत भाषाटीका

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

(तृतीय खण्ड)

लब्धिसार-क्षपणासार एवं उसकी भाषा टीका

सम्पादक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.

प्रकाशक :
सत्साहित्य प्रकाशन एवं प्रचार विभाग
श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट
ए-४, बापूनगर, जयपुर-३०२०१५

प्रथम संस्करण २२००
[२७ अप्रैल १९९०, अक्षय तृतीया]

मूल्य पच्चीस रुपया
मुद्रक श्री बालचन्द्र यन्त्रालय, जयपुर-१८

प्रकाशकीय

आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धातचक्रवर्ती विरचित लब्धिसार-क्षपणासार की आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत भाषाटीका, जो सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका के नाम से विख्यात हे के तृतीय खण्ड का प्रकाशन करते हुए हमे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

दिगम्बराचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती करणानुयोग के महान् आचार्य थे। गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, लब्धिसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार तथा द्रव्यसग्रह ये महत्व-पूर्ण कृतियाँ आपकी प्रमुख देन हैं। पण्डितप्रवर टोडरमल जी ने गोम्मटसार जीवकाण्ड व कर्मकाण्ड तथा लब्धिसार व क्षपणासार की भाषाटीकाएँ पृथक-पृथक बनाई थी। चूंकि ये चारो टीकाएँ परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित तथा सहायक थी, अत सुविधा की दृष्टि से उन्होने उक्त चारो टीकाओ को मिलाकर एक ही ग्रथ के रूप मे प्रस्तुत कर दिया तथा इस ग्रथ का नामकरण उन्होने 'सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका' किया। इस सम्बन्ध मे पण्डित टोडरमल जी स्वय लिखते हैं—

> या विधि गोम्मटसार, लब्धिसार ग्रन्थनिकी,
> भिन्न-भिन्न भाषाटीका कीनी अर्थ गायकै।
> इनिकै परस्पर सहायकपननौ देख्यौ
> तातै एककर दई हम तिनकौ मिलायकै।।
> सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका धर्यो है याकौ नाम,
> सोई होत है सफल ज्ञानानन्द उपजायकै।
> कलिकाल रजनीमे अर्थ को प्रकाश करै,
> यातै निजकाज कीजै, इष्टभाव भायकै।।

इस ग्रथ की पीठिका के सम्बन्ध में मोक्षमार्ग प्रकाशक की प्रस्तावना लिखते हुए डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल लिखते हैं—

"सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका विवेचनात्मक गद्यशैली मे लिखी गई है। प्रारम्भ मे इकहत्तर पृष्ठ की पीठिका है। आज नवीन शैली के क्षेत्र मे लगभग दो-सौ बीस वर्ष पूर्व लिखी गई सम्यग्ज्ञान-चन्द्रिका की पीठिका आधुनिक भूमिका का आरम्भिक रूप है। किन्तु भूमिका का आद्यरूप होने पर भी उसमे प्रौढता पाई जाती है, उसमें हलकापन कही भी देखने को नही मिलता। इसके पढने से ग्रथ का पूरा हार्द खुल जाता है एवं इस गूढ ग्रथ के पढने में आनेवाली पाठक की समस्त कठि-नाइयाँ दूर हो जाती हैं। हिन्दी आत्मकथा साहित्य मे जो महत्व महाकवि पण्डित बनारसीदास के 'अर्द्धकथानक' को प्राप्त है, वही महत्व हिन्दी भूमिका साहित्य मे सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की पीठिका का है।"

इस ट्रस्ट द्वारा गतवर्ष सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका का प्रथम भाग (गोम्मटसार जीवकाण्ड) प्रका-शित किया गया था, जिसका समाज ने बडे आदर के साथ स्वागत किया और अल्पकाल में ही

इस बृहत ग्रथ की हजारों प्रतियाँ बिक गईं । अब इसका यह तृतीय भाग (लब्धिसार) प्रकाशित किया जा रहा है ।

इस ग्रथ का प्रकाशन बड़ा ही श्रम साध्य कार्य था, अत इसे सम्पादित करने हेतु ब्र० यशपाल जी को तैयार किया गया । उन्होने अथक परिश्रम कर इस गुरुतर भार को वहन किया, इसके लिए यह ट्रस्ट सदैव उनका ऋणी रहेगा ।

ग्रथ का प्रकाशन इस विभाग के प्रभारी श्री अखिल बसल ने बखूबी सम्हाला है, अतः उनका आभार मानते हुए जिन महानुभावो ने इस ग्रथ की कीमत कम करने मे आर्थिक सहयोग दिया है उनके नाम ग्रन्थ के अन्त मे दिये गये है, उन्हे धन्यवाद देता हूँ ।

श्री भगवानजी कचराभाई शाह ट्रस्ट, थाणा का विशेष उल्लेख किए बिना नही रह सकता जिन्होने इस ग्रन्थ की १००० प्रतियो की लागत के तीस प्रतिशत के रूप मे ६६५१) रु० की सर्वाधिक राशि प्रदान की है । एतदर्थ हम उनके हार्दिक आभारी हैं ।

इस ट्रस्ट के विषय मे तो अधिक क्या कहूँ, ट्रस्ट की गतिविधियो से सारा समाज परिचित ही है । तीर्थक्षेत्रो का जीर्णोद्धार एव उनका सवक्षरण तो इस ट्रस्ट के माध्यम से हुआ ही है । इसकी सबसे बडी उपलब्धि है श्री टोडरमल दि० जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जिसके माध्यम से सैकडो विद्वान जैन समाज को मिले है और निरन्तर मिल रहे है ।

साहित्य प्रकाशन एव प्रचार विभाग के माध्यम से भी अनुकरणीय कार्य इस ट्रस्ट द्वारा हो रहा है । आचार्य कुन्दकुन्द के पचपरमागम समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड तथा पचास्तिकाय सग्रह जैसे महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन तो इस विभाग द्वारा हुआ ही है साथ ही – मोक्षशास्त्र, मोक्षमार्ग प्रकाशक, श्रावकधर्मप्रकाश, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, ज्ञानस्वभाव-ज्ञेयस्वभाव, छहढाला, समयसार-नाटक, चिद्विलास, वीतराग-विज्ञान प्रवचन भाग–१, २, ३ व ४ आदि का प्रकाशन भी इस विभाग ने किया है । प्रचार कार्य को भी गति देने के लिए विद्वानो को नियुक्त किया गया है जो गाव-गाव जाकर विभिन्न माध्यमो से तत्वप्रचार मे सलग्न हैं ।

इस अनुपम ग्रथ के माध्यम से आप अपना आत्म कल्याण कर भव का अभाव करें ऐसी मगलकामना के साथ—

—नेमीचन्द पाटनी

सम्पादकीय

करणानुयोग के महान् आचार्य श्री नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने ग्यारहवी शताब्दि मे गाम्मटसार जोवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड, लब्धिसार और क्षपणासार ग्रन्थो की रचना प्राकृत [गाथाओ] मे की, जिन पर आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने अठारहवी शताब्दि मे ढूढारी भाषा मे "सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका" नामक भाषाटीका लिखी है। त्रिलोकसार एव सुप्रसिद्ध लघु ग्रन्थ द्रव्यसग्रह भी आचार्य श्री नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती की ही रचनाएँ है।

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका का प्रकाशन इससे पूर्व मात्र एक ही बार जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था, कलकत्ता से हुआ था, जो कि बहुत वर्षों से अनुपलब्ध है। इसलिए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर ने इसका पुनर्प्रकाशन करके करणानुयोग के एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शास्त्र की दीर्घकालीन सुरक्षा का उत्तम उपाय किया है। सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की महिमा के सम्बन्ध मे पण्डित टोडरमलजी के समकालीन स्वाध्यायशील ब्र० पण्डित राजमल्लजी ने अपने "चर्चा सग्रह" मे जो विचार व्यक्त किये हैं, वे द्रष्टव्य हैं —

"सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका की महिमा वचन अगोचर है, जो कोई जिनधर्म की महिमा और केवलज्ञान की महिमा जाणी चाहौ तो, या सिद्धान्त का अनुभव करो। घणी कहिता करि कहा।"

इस ग्रन्थ की महिमा एव विशेषता को समझने के लिए उपरोक्त विचार ही पर्याप्त हैं, अपनी ओर से और कुछ लिखने की आवश्यकता प्रतीत नही होती है।

सम्पूर्ण सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका का एकसाथ एक ही खण्ड में प्रकाशन करने से इसका आकार बहुत ही बडा हो जाता, जिससे स्वाध्याय मे असुविधा हो सकती थी, इसलिए इसका तीन भागों मे प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। उसमे से प्रस्तुत सस्करण मे लब्धिसार की सम्यग्ज्ञान-चन्द्रिका टीका को तृतीय भाग के रूप मे प्रकाशित किया है।

इस ग्रन्थ के सम्पादन के लिए सर्वप्रथम हमने छह हस्तलिखित प्रतियों से इसका मिलान किया। मिलान करते समय हमारे सामने जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी सस्था, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित और प० गजाधरलाल जैन, न्यायतीर्थ एव श्रीलाल जैन, काव्यतीर्थ द्वारा सम्पादित प्रति ही मूल आधार रही है। अन्य छह हस्तलिखित प्रतियो का विवरण इसप्रकार है :—

१ (अ) प्रति–श्री दिगम्बर जैन बडा मन्दिर तेरह पथियान, जयपुर (राज०)।

काल–पण्डित टोडरमलजी की स्वहस्तलिखित विक्रम सवत् १८१० की प्रति के आधार मे विक्रम सवत् १८६१ मे लिखी हुई प्रति।

लिपिकार–अज्ञात (अक्षर सुन्दर व सुस्पष्ट हैं)।

२ (ब) प्रति–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर भदीचन्दजी, जयपुर (राज०)।
काल–अज्ञात।

लिपिकार–अनेक लिपिकारो द्वारा लिखित एव पण्डित टोडरमलजी द्वारा सशोधित प्रति ।

३. (क) प्रति–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, आदर्शनगर, जयपुर (राज०) ।

काल–विक्रम सवत् १८२६, आषाढ सुदी तीज, गुरुवार ।

लिपिकार–गोविन्दराम ।

४ (ख) प्रति–श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मन्दिर, फिरोजाबाद (उ०प्र०) ।

काल–विक्रम सवत् १८१८ ।

लिपिकार–अज्ञात ।

५. (ग) प्रति–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर सघीजी, जयपुर (राज०) ।

काल–विक्रम सवत् १९७०, माघ शुक्ला पचमी ।

लिपिकार–श्री जमनालाल शर्मा ।

६ (घ) प्रति–श्री दिगम्बर जैन मन्दिर दीवान भदीचन्दजी, जयपुर (राज०) ।

काल–विक्रम सवत् १९६१, पौष वदी बारस ।

लिपिकार–श्री लालचन्द महात्मा देहा, श्री सीताराम के पठनार्थ ।

इस ग्रन्थ का सम्पादन करते समय हमने जिन बातो का ध्यान रखा है, उनका उल्लेख करना उचित होगा । वे बिन्दु इसप्रकार है .—

(१) छह हस्तलिखित प्रतियो से मिलान करते समय जहाँ पर भी परस्पर विरुद्ध कथन आये, उनमे से जो हमे शास्त्र सम्मत प्रतीत हुआ उसे ही मूल मे रखा है और अन्य प्रतियो के कथन को फुटनोट मे दिया है । और जहाँ निर्णय नही कर पाये हैं, वहाँ छपी हुई प्रति को ही मूल मे रखकर अन्य प्रतियो का कथन फुटनोट मे दिया है ।

(२) पीठिका मे विषयवस्तु के अनुसार सामान्य प्रकरण, गोम्मटसार (जीवकाण्ड) सम्बन्धी प्रकरण, गोम्मटसार कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रकरण, लब्धिसार–क्षपणासार सम्बन्धी प्रकरण, लब्धिसार भूमिका–ये शीर्षक हमने अपनी तरफ से दिये है, मूल मे नही है ।

(३) सम्पूर्ण ग्रन्थ मे स्वाध्याय की सुलभता के लिए विषयवस्तु के अनुसार बडे-बड़े अनुच्छेदो (पैराग्राफो) को विभाजित करके छोटे-छोटे (पैराग्राफ) बनाये हैं । साथ ही टीका मे समागत प्रश्नोत्तर अथवा शका-समाधान भी अलग अनुच्छेद बनाकर दिये है ।

(४) गाथा के विषय का प्रतिपादक शीर्षकात्मक वाक्य मूल टीका मे गाथा के वाद टीका के साथ दिया है, लेकिन गाथा पढने से पूर्व उसका विषय ध्यान मे आये–इसीलिए उस वाक्य को हमने गाथा से पहले दिया है ।

(५) मूल गाथा तो बड़े टाइप मे दी है, साथ ही टीका मे भी जहाँ पर संस्कृत या प्राकृत के कोई सूत्र अथवा गाथा, श्लोक आदि आये हैं, उनको भी ब्लैक टाइप मे दिया है ।

(६) गाथा का विषय जहाँ भी धवलादि ग्रन्थो से मिलता है, उसका उल्लेख श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, आगास से प्रकाशित प० फूलचन्दजी द्वारा सम्पादित लब्धिसार के आधार से फुटनोट मे किया है।

सर्वप्रथम मैं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामन्त्री श्री नेमीचन्दजी पाटनी का हार्दिक आभारी हूँ, जिन्होने इस ग्रन्थ के सम्पादन का कार्यभार मुझे देकर ऐसे महान् ग्रन्थ के सूक्ष्मता से अध्ययन का सुअवसर प्रदान किया।

डॉ हुकमचन्द भारिल्ल का भी इस कार्य मे पूरा सहयोग एव महत्त्वपूर्ण सुझाव तथा मार्ग-दर्शन मिला है, इसलिए मैं उनका भी हार्दिक आभारी हूँ।

हस्तलिखित प्रतियो से मिलान करने का कार्य अतिशय कष्टसाध्य होता है। मैं तो हस्त-लिखित प्रति पढने मे पूर्ण समर्थ भी नही था। ऐसे कार्य मे शातस्वभावी स्वाध्यायप्रेमी साधर्मी भाई श्री सौभागमलजी बोहरा दूदूवाले, बापूनगर, जयपुर का पूर्ण सहयोग रहा है। ग्रन्थ के कुछ विशेष प्रकरण अनेक बार पुन-पुन देखने पडते थे, फिर भी आप आलस्य छोड़कर निरन्तर उत्साहित रहते थे। मुद्रण कार्य के समय भी आपने प्रत्येक पृष्ठ का शुद्धता की दृष्टि से अवलोकन किया है। एतदर्थ आपको जितना धन्यवाद दिया जाय, वह कम ही है। आशा है भविष्य मे भी आपका सहयोग इसीप्रकार निरन्तर मिलता रहेगा। साथ ही श्री रूपचन्दजी गगवाल, जयपुर का भी इस कार्य मे सहयोग मिला है, अत वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

गोम्मटसार जीवकाण्ड, गोम्मटसार कर्मकाण्ड तथा लब्धिसार-क्षपणासार के "सदृष्टि अधिकार" का प्रकाशन पृथक् ही होगा। गणित सम्बन्धी इस क्लिष्ट कार्य का भार ब्र० विमला-बेन ने अपने ऊपर लिया तथा शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद भी अत्यन्त परिश्रम से पूर्ण करके मेरे इस कार्य मे अभूतपूर्व योगदान दिया है, इसलिए मैं उनका भी हार्दिक आभारी हूँ।

हस्तलिखित प्रतियाँ जिन मन्दिरो से प्राप्त हुई हैं, उनके ट्रस्टियो का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होने ये प्रतियाँ उपलब्ध कराई। इस कार्य मे श्री विनयकुमार पापड़ीवाल तथा सागरमलजी वज (लल्लूजी) का भी सहयोग प्राप्त हुआ है, इसलिए वे भी धन्यवाद के पात्र है।

अन्त मे इस ग्रन्थ का स्वाध्याय करके सभी जन सर्वज्ञता की महिमा से परिचित होकर अपने सर्वज्ञस्वभाव का आश्रय लेवें एव पूर्ण कल्याण करें—यही मेरी पवित्र भावना है।

महावीर जयन्ती
७ अप्रैल, १९९०

ब्र० यशपाल जैन

मेरी भावना

अज्ञानतिमिरान्धानां ज्ञानांजनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

हम अपनी भावना व्यक्त करने के पहले एवं देव-शास्त्र-गुरु को बारम्बार नमस्कार करने के उपरान्त उन पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी को कोटि-कोटि वंदन करते हैं, जिन्होंने हम जैसे अनेक मुमुक्षुओं को अज्ञानांधकार से बाहर निकाल कर अनंत-अनत उपकार किया है, मोक्षमार्ग बताया है।

आज वे हमारे बीच नहीं हैं, उनका वियोग हम सब मुमुक्षुओं को असह्य है। अब हमें भगवान कहकर कौन बुलायेगा, पामर को प्रभु कौन कहेगा? स्नेहासिक्त आत्मीय सम्बोधन कौन करेगा? — जब यह विचार आता है तो हृदय भर आता है।

यद्यपि वे आज हमारे बीच नहीं हैं, तथापि उनकी वाणी हमें उपलब्ध है, शास्त्रों के रूप में भी और टेपों के रूप में भी। यदि हम चाहें तो उस वाणी के अवगाहन से अपना कल्याण कर सकते हैं। उनकी वाणी में हमारे कल्याण करने की क्षमता है, पर जब हम उसका अवगाहन गहराई से करें, तभी वह वाणी हमारे कल्याण में निमित्त हो सकती है। अपना कल्याण करने की यह पात्रता भी हमें पूज्य गुरुदेवश्री की कृपा से प्राप्त हुई है।

आज समग्र मानव जाति भौतिक सुखों के लिए दौड़ रही है तथा सुविधामयी जीवन के सन्मुख है, ऐसे समय में हे गुरुदेव आपने हमें चैतन्यतत्त्व की महिमा समझायी तथा अर्न्तमुख पुरुषार्थ करने के लिए जागृत करके हमें चतुर्गति से उबार लिया, हम दोनों के ऊपर तथा हमारे परिवार के ऊपर आपका महान उपकार है। आपकी कृपा का पात्र बनकर हम अपने को धन्य अनुभव करते है। इस युग में पूज्य गुरुदेवश्री का जन्म मानव समाज के लिए एक आशीर्वाद था। आपने क्रियाकांड की कैद में फंसे हुए को जैनधर्म का

सच्चा स्वरूप समझाकर उसे क्रियाकांड से मुक्त करके हमें समझाया कि प्रत्येक जीव अपने अन्दर विद्यमान चैतन्यस्वरूप आत्मसत्ता की अनुभूति करके मोक्षमार्ग प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार आपने भक्तों को भगवान बनने का उपाय बताया है। पू० गुरुदेवश्री के जीवनकाल में अपना जन्म होना अपने भवसागर के तट की निकटता का सूचक है। ऐसे महान गुरु का समागम अनेक जन्मों में संचित पुण्य के उदय से होता है तथा अपने को उनके साथ में रहकर उनकी वाणी सुनकर भवसागर पार होने की देशना का लाभ मिला है, यह सब हमें मुक्तिपुरी के पथ पर चलने की प्रेरणारूपी दीपक बनेगा।

हम आर्थिक उपार्जन और लौकिक सुखों के लिए अपना मूल वतन छोड़कर परदेश गये, पर आत्मकल्याण की चाहना अन्दर थी। एकबार सन् १९४६ में चेलाना निवासी स्व० श्री धर्मसीभाई देवसीभाई अफ्रीका आये और उन्होंने हमें पूज्य गुरुदेवश्री की बात समझाते हुए उनका परिचय कराया। परिणामस्वरूप हमें पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्ररूपित तत्त्व में रुचि हुई। अतः हम उनके भी बहुत-बहुत आभारी हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन में यह तुच्छ सहयोग कर हम अपने को कृतार्थ अनुभव करते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री के उपकारों का बदला तो हम चुका ही नहीं सकते हैं। हमारी तो यही भावना है कि हमारी भावना और भक्ति भव के अन्त तक वीतरागी तत्त्व में ही बनी रहे।

लंदन — मोमबासा (केन्या)

हम हैं आपके दासानुदास
भगवानजीभाई कचराभाई शाह
श्रीमती डाहीबेन भगवानजी शाह

हमे सन्मार्ग में लगानेवाले हमारे माता-पिता

हमें धर्ममार्ग में लगानेवाले हमारे पूज्य पिता श्री भगवानजी भाई कचराभाई शाह एव माता श्री डाहीबेन भगवानजी शाह जब से पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के सत्समागम मे आये, तब से उनके हृदय में सच्चे वीतरागी जिनधर्म की भावना विशेष जागृत हो गई। एक प्रकार से उनका जीवन ही बदल गया। आपने मुम्बासा तथा थाणा में चलनेवाले व्यवसाय से निवृत्ति लेकर पूज्य गुरुदेवश्री के चरण-सान्निध्य म अधिक समय तक रहने के लिए सोनगढ मे मकान बनवाया तथा १६ वर्ष तक उनके सत्समागम में रहे। आपने सम्यग्दर्शन प्राप्त करने के लिए ३० वर्ष तक सत्समागम, अभ्यास और ज्ञान-वैराग्य मे यथाशक्ति अपने को लगाए रखा। उनके सोनगढ मे रहने का एक उद्देश्य यह भी था कि हम लोग भी बारम्बार सोनगढ आकर आध्यात्मिक और धार्मिक सस्कारो का सिचन करे और आत्महित के पथ में लगे रहें।

वैसें तो लोक मे इस प्रकार की पद्धति है कि माता-पिता के स्वर्गवास के बाद लोग उनकी स्मृति मे शास्त्रों का प्रकाशन कराते है, प्रकाशन मे सहयोग देते है, पर हमारे माता-पिता की भावना को देखकर हमे उनके जीवनकाल मे ही यह पवित्र कार्य करना उचित लगा। परिणामस्वरूप प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशन मे महत्त्वपूर्ण सहयोग देने का सकल्प किया है। यह उनकी पावन प्रेरणा का ही परिणाम है।

उनके उपकारो का स्मरण करते हुए हम उनके बारे में दो शब्द लिखना अपना कर्तव्य समझते है।

सन् १९२४ मे चापाबेराजा (जामनगर) ग्राम के निवासी हमारे पिताश्री १८ वर्ष की उम्र मे अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ करने के लिए पूर्व अफ्रीका के किटाले नामक ग्राम मे तथा उसके बाद मोम्बासा गये और भरपूर अर्थोपार्जन किया, हम सबको उसका उत्तराधिकारी बनाया। यह सब तो ठीक, पर उन्होंने जो हमे धार्मिक सस्कार दिये है, वह हम सबकी सच्ची और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति है। आपने अपने जीवन मे अनेक धार्मिक कार्य सम्पन्न किये है।

सर्वप्रथम ८ नवम्बर, १६५६ मे उन्हे जामनगर मे दिगम्बर जिन मन्दिर का शिलान्यास करने का लाभ मिला। उनकी भावनानुसार वह जिनमदिर शीघ्र ही तैयार हो गया और दो वर्ष बाद ही पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के सान्निध्य मे उसका पचकल्याणक महोत्सव हुआ। आज वह भव्य जिनालय भव्यजनों को आत्माराधना और जिनेन्द्रभक्ति करने का उत्तम धर्मस्थान है।

उसके बाद मोम्बासा (अफ्रीका) मे ५ मार्च, १९६१ मे श्रीमद् राजचन्द्र स्मृतिग्रह बनवाया। उसमे सुन्दर सजावट सहित आत्मसिद्धि तथा योगीन्द्रदेव आचार्यकृत योगसार के अनेक दोहे दीवालो पर उत्कीर्ण कराये। उन्हे श्रीमद् राजचन्द्र के वचनामृत के निरन्तर अध्ययन से आत्महित की प्रेरणा मिली थी। इसके बाद १३ सितम्बर, १९६९ को सोनगढ मे निर्मित भव्य महावीर कुन्दकुन्द परमागम मन्दिर का शिलान्यास करने का अवसर सम्पूर्ण परिवार सहित आपको प्राप्त हुआ।

पूज्य गुरुदेवश्री की आपके प्रति सदैव दयादृष्टि रहती थी और पू० श्री के सत्संग में आपने बहुत लाभ लिया एव गहन अध्ययन किया। आपके सोनगढ़ निवास के समय परिवार के सभी सदस्यो को पू० गुरुदेवश्री की भवताप शामक मगल वाणी श्रवण करने का अपूर्व लाभ मिलता था। इस प्रकार हमे हमारे माता-पिता द्वारा जैनधर्म का सत्य स्वरूप समझने को मिला तथा अपार सम्पत्ति और जगत के भौतिक सुख होते हुए भी अध्यात्मशान्ति के मार्ग पर चलने योग्य दृढ़ संस्कार मिले। इस प्रकार उन्होने हमे लौकिक और लोकोत्तर सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बनाया। हम सब भी आत्महित के मार्ग पर चलेंगे।

इस प्रकार आपने अनेक लोकोपयोगी धार्मिक कार्य अपने जीवन मे किये हैं। आपने अपने धर्मप्रेम द्वारा कुटुम्बीजनों को धर्म में लगाया है। अपने मुम्बासा के घर मे भी आपने एक धार्मिक स्थान बना रखा है, जिसमें जिनवाणी के साथ-साथ तीर्थंकरो, आचार्यो के भव्य चित्रो के साथ-साथ श्रीमद् रायचन्द्र एवं गुरुदेवश्री आदि के भी चित्र हैं। मुमुक्षुमंडल भी हमारे घर ही चलता है। प्रतिदिन गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के प्रवचनो के टेप चलते हैं। समय-समय पर विशेष कर पर्वो के समय विशेष धार्मिक आयोजन भी होते है। जब गुरुदेवश्री नैरोबी पधारे थे, तव वे हमारे घर मोम्बासा भी पधारे थे। उनकी हमारे परिवार पर सदा ही असीम कृपा रही है।

वर्तमान में हमारे पिताश्री एव माताश्री लन्दन मे रहते हैं। वहाँ भी वे निरन्तर स्वाध्याय में मग्न रहते है एव प्रवचन आदि भी करते है।

वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु का आश्रय प्राप्त कर हम सब व हमारे माता-पिता आत्महित मे ही रत रहे — यही पवित्र भावना है।

हम है आपके

पुत्री
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पुत्रवधू
सुशीला
सूर्यकला
पुष्पा

पुत्र
सोमचन्द्र, लक्ष्मीचन्द्र
भीमजी, सुरेशचन्द्र
विपिनचन्द्र

विषय-सूची

आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजीकृत

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका

पीठिका

॥ मंगलाचरण ॥

बंदौ ज्ञानानदकर, नेमिचन्द गुणकद ।
माधव वदित विमलपद, पुण्यपयोनिधि नंद ॥ १ ॥
दोष दहन गुन गहन घन, अरि करि हरि अरहत ।
स्वानुभूति रमनी रमन, जगनायक जयवत ॥ २ ॥
सिद्ध सुद्ध साधित सहज, स्वरससुधारसधार ।
समयसार शिव सर्वगत, नमत होहु सुखकार ॥ ३ ॥
जैनी वानी विविध विधि, वरनत विश्वप्रमान ।
स्यात्पद-मुद्रित अहित-हर, करहु सकल कल्यान ॥ ४ ॥
मै नमो नगन जैन जन, ज्ञान-ध्यान धन लीन ।
मैन मान बिन दान घन, एन हीन तन छीन ॥ ५ ॥ [१]
इहविधि मंगल करन तै, सबविधि मंगल होत ।
होत उदंगल दूरि सब, तम ज्यौ भानु उदोत ॥ ६ ॥

सामान्य प्रकरण

अथ मंगलाचरण करि श्रीमद् गोम्मटसार द्वितीय नाम पंचसंग्रह ग्रंथ, ताकी देशभाषामयी टीका करने का उद्यम करौ हौ । सो यहु ग्रंथसमुद्र तौ ऐसा है जो सातिशय बुद्धि-बल संयुक्त जीवनि करि भी जाका अवगाहन होना दुर्लभ है । अर मैं मंदबुद्धि अर्थ प्रकाशनेरूप याकी टीका करनी विचारौ हौ ।

सो यहु विचार ऐसा भया जैसै कोऊ अपने मुख तै जिनेद्रदेव का सर्व गुण वर्णन किया चाहै, सो कैसै बनै ?

इहां कोऊ कहै – नाही बनै है तो उद्यम काहे कौ करौ हौ ?

ताकौ कहिये है – जैसै जिनेद्रदेव के सर्व गुण कहने की सामर्थ्य नाही, तथापि भक्त पुरुष भक्ति के वश तै अपनी बुद्धि अनुसार गुण वर्णन करै, तैसै इस ग्रंथ का संपूर्ण अर्थ प्रकाशने की सामर्थ्य नाही । तथापि अनुराग के वश तै मैं अपनी बुद्धि अनुसार (गुण)[२] अर्थ प्रकाशोगा ।

१. यह चित्रालकारयुक्त है ।
२ गुण शब्द घ प्रति मे मिला ।

बहुरि कोऊ कहै कि – अनुराग है तो अपनी बुद्धि अनुसार ग्रथाभ्यास करो, मदबुद्धिनि कौ टीका करने का अधिकारी होना युक्त नाही ।

ताकौं कहिये है – जैसै किसी शिष्यशाला विषै बहुत बालक पढै है । तिनिविषै कोऊ बालक विशेष ज्ञान रहित है, तथापि अन्य बालकनि तै अधिक पढया है, सो आपतै थोरे पढने वालें बालकनि कौं अपने समान ज्ञान होने के अर्थि किछू लिखि देना आदि कार्य का अधिकारी हो है । तैसै मेरैं विशेष ज्ञान नाही, तथापि काल दोष तै मोतै भी मंदबुद्धि हैं, अर होंहिगे । तिनिकै मेरे समान इस ग्रथ का ज्ञान होने के अर्थि टीका करने का अधिकारी भया हौ ।

बहुरि कोऊ कहै कि – यहु कार्य करना तो विचारया, परन्तु जैसे छोटा मनुष्य वडा कार्य करना विचारै, तहा उस कार्य विषै चूक होई ही, तहा वह हास्य कौ पावै है । तैसै तुम भी मंदबुद्धि होय, इस ग्रंथ की टीका करनी विचारौ हौ सो चूक होइगी, तहा हास्य कौ पावोगे ।

ताकौं कहिये है – यहु तौ सत्य है कि मैं मंदबुद्धि होंइ ऐसै महान ग्रथ की टीका करनी विचारौ हौ, सो चूक तौ होइ; परन्तु सज्जन हास्य नाही करेगे । जैसे औरनि तै अधिक पढया बालक कही भूलै तब बड़े ऐसा विचारै है कि बालक है, भूलै ही भूलै; परंतु और बालकनि तै भला है; ऐसै विचारि हास्य नाही करै है । तैसै मै इहा कही भूलोंगा तहा सज्जन पुरुष ऐसा विचारैगे कि मदबुद्धि था, सौ भूलै ही भूलै, परतु केतेइक अतिमंदबुद्धीनि तै भला है; ऐसै विचारि हास्य न करैगे ।

सज्जन तो हास्य न करेगे, परन्तु दुर्जन तौ हास्य करैंगे ?

ताकौं कहिये है कि – दुष्ट तौ ऐसै ही हैं, जिनके हृदय विषै औरनि के निर्दोष भले गुण भी विपरीतरूप ही भासै । सो उनका भय करि जामै अपना हित होय ऐसे कार्य कौं कौन न करैगा ?

बहुरि कोऊ कहै कि – पूर्व ग्रंथ थे ही, तिनिका अभ्यास करने-करावने तै ही हित हो है, मदबुद्धिनि करि ग्रंथ की टीका करने की महतता काहेकौ प्रगट कीजिये ?

ताकौं कहिये है कि – ग्रथ अभ्यास करने तै ग्रथ की टीका रचना करने विषै उपयोग विशेष लागै है, अर्थ भी विशेष प्रतिभासै है । वहुरि अन्य जीवनि कौ ग्रथ अभ्यास करावने का सयोग होना दुर्लभ है । अर संयोग होइ तौ कोई ही जीव के अभ्यास होइ । अर ग्रथ की टीका बनै तौ परपरा अनेक जीवनि कै अर्थ का ज्ञान होइ । तातै अपना अर अन्य जीवनि का विशेष हित होने के अर्थि टीका करियें हैं, महतता तो किछू प्रयोजन नाही ।

बहुरि कोऊ कहै कि इस कार्य विषै विशेष हित हो है सो सत्य, परंतु मदबुद्धि तै कही भूलि करि अन्यथा अर्थ लिखिए, तहां महत् पाप उपजने तै अहित भी तो होइ ?

ताकौ कहिए है — यथार्थ सर्व पदार्थनि का ज्ञाता तौ केवली भगवान है। औरनि कै ज्ञानावरण का क्षयोपशम के अनुसारी ज्ञान है, तिनिकौ कोई अर्थ अन्यथा भी प्रतिभासै, परतु जिनदेव का ऐसा उपदेश है — कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्रनि के वचन की प्रतीति करि वा हठ करि वा क्रोध, मान, माया, लोभ करि वा हास्य, भयादिक करि जो अन्यथा श्रद्धान करै वा उपदेश देइ, सो महापापी है। अर विशेष ज्ञानवान गुरु के निमित्त बिना, वा अपने विशेष क्षयोपशम बिना कोई सूक्ष्म अर्थ अन्यथा प्रतिभासै अर यहु ऐसा जानै कि जिनदेव का उपदेश ऐसै ही है, ऐसा जानि कोई सूक्ष्म अर्थ कौ अन्यथा श्रद्धै है वा उपदेश दे तौ याकौ महत् पाप न होइ । सोइ इस ग्रथ विषै भी आचार्य करि कहा है —

सम्माइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं, अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥२७॥ जीवकाड ॥

बहुरि कोऊ कहै कि — तुम विशेष ज्ञानी तै ग्रथ का यथार्थ सर्व अर्थ का निर्णय करि टीका करने का प्रारभ क्यो न कीया ?

ताकौ कहिये है — काल दोष तै केवली, श्रुतकेवली का तौ इहा अभाव ही भया। बहुरि विशेष ज्ञानी भी विरले पाइए । जो कोई है तौ दूरि क्षेत्र विषै है, तिनिका सयोग दुर्लभ । अर आयु, बुद्धि, बल, पराक्रम आदि तुच्छ रहि गए । तातै जो बन्या सो अर्थ का निर्णय कीया, अवशेष जैसै है तैसै प्रमाण है।

बहुरि कोऊ कहै कि — तुम कही सो सत्य, परतु इस ग्रथ विषै जो चूक होइगी, ताके शुद्ध होने का किछू उपाय भी है ?

ताकौ कहिये है — एक उपाय यहु कीजिए है — जो विशेष ज्ञानवान पुरुषनि का प्रत्यक्ष तौ सयोग नाही, तातै परोक्ष ही तिनिस्यो ऐसी बीनती करौ हौ कि मै मद बुद्धि हौ, विशेषज्ञान रहित हौ, अविवेकी हौ, शब्द, न्याय, गणित, धार्मिक आदि ग्रथनि का विशेष अभ्यास मेरे नाही है, तातै शक्तिहीन हौ, तथापि धर्मानुराग के वश तै टीका करने का विचार कीया, सो या विषै जहा-जहा चूक होइ, अन्यथा अर्थ होइ, तहा-तहा मेरे ऊपरि क्षमा करि तिस अन्यथा अर्थ कौ दूरि करि यथार्थ अर्थ लिखना । ऐसै विनती करि जो चूक होइगी, ताके शुद्ध होने का उपाय कीया है ।

बहुरि कोऊ कहै कि तुम टीका करनी विचारी सो तौ भला कीया, परंतु ऐसे महान ग्रथनि की टीका सस्कृत ही चाहिये । भाषा विषै याकी गंभीरता भासै नाही ।

ताकौं कहिये है – इस ग्रंथ की **जीवतत्त्वप्रदीपिका** नामा सस्कृत टीका तौ पूर्वं है ही। परन्तु तहा सस्कृत, गणित, आम्नाय आदि का ज्ञान रहित जे मदबुद्धि है, तिनिका प्रवेश न हो है। बहुरि इहा काल दोष तैं बुद्धयादिक के तुच्छ होने करि सस्कृतादि ज्ञान रहित घने जीव है। तिनिके इस ग्रथ के अर्थ का ज्ञान होने के अर्थि भाषा टीका करिए हैं। सो जे जीव सस्कृतादि विशेषज्ञान युक्त है, ते मूलग्रथ वा सस्कृत टीका तै अर्थ धारैगे। बहुरि जे जीव संस्कृतादि विशेष ज्ञान रहित है, ते इस भाषा टीका तै अर्थ धारौ। बहुरि जे जीव सस्कृतादि ज्ञान सहित है, परंतु गणित आम्नायादिक के ज्ञान के अभाव तै मूलग्रथ वा संस्कृत टीका विषै प्रवेश न पावै है, ते इस भाषा टीका तै अर्थ कौ धारि, मूल ग्रंथ वा सस्कृत टीका विषै प्रवेश करहु। वहुरि जो भाषा टीका तै मूल ग्रथ वा सस्कृत टीका विषै अधिक अर्थ होइ, ताके जानने का अन्य उपाय बनै सो करहु।

इहां कोऊ कहै – संस्कृत ज्ञानवालों कै भाषा अभ्यास विषै अधिकार नाही।

ताकौ कहिये है – संस्कृत ज्ञानवालो कौ भाषा वाचने तै कोई दोष तो नाही उपजै है, अपना प्रयोजन जैसे सिद्ध होइ तैसे ही करना। पूर्वै अर्धमागधी आदि भाषामय महान ग्रथ थे। बहुरि बुद्धि की मंदता जीवनि के भई, तब संस्कृतादि भाषामय ग्रथ बने। अब विशेष बुद्धि की मदता जीवनि कै भई तातै देश भाषामय ग्रथ करने का विचार भया। वहुरि सस्कृतादिक का अर्थ भी अब भाषाद्वार करि जीवनि कौ समझाइये है। इहा भाषाद्वार करि ही अर्थ लिख्या तो किछू दोष नाही है।

ऐसे विचारि श्रीमद् **गोम्मटसार** द्वितीयनामा **पंचसंग्रह** ग्रथ की 'जीवतत्त्व प्रदीपिका' नामा सस्कृत टीका, ताकै अनुसारि **'सम्यग्ज्ञानचंद्रिका'** नामा यहु देशभाषामयी टीका करने का निश्चय किया है। सो श्री अरहत देव वा जिनवाणी वा निर्ग्रंथ गुरुनि के प्रसाद तै वा मूल ग्रथकर्ता नेमिचद्र आदि आचार्यनि के प्रसाद तै यहु कार्य सिद्ध होहु।

अब इस शास्त्र के अभ्यास विषै जीवनि कौ सन्मुख करिए है। हे भव्यजीव हो ! तुम अपने हित की वाछौ हौ तौ तुमकौ जैसे बनै तैसे या शास्त्र का अभ्यास करना। जातै आत्मा का हित मोक्ष है। मोक्ष बिना अन्य जो है, सो परसयोगजनित है, विनाशीक है, दुःखमय है। अर मोक्ष है सोई निज स्वभाव है, अविनाशी है, अनत सुखमय है। तातै मोक्ष पद पावने का उपाय तुमकौ करना। सो मोक्ष के उपाय सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र है। सो इनकी प्राप्ति जीवादिक के स्वरूप जानने ही तै हो है।

सो कहिए है – जीवादि तत्त्वनि का श्रद्धान सम्यग्दर्शन है । सो बिना जानै श्रद्धान का होना आकाश का फूल समान है । पहिलै जानै तब पीछै तैसै ही प्रतीति करि श्रद्धान कौ प्राप्त हो है । तातै जीवादिक का जानना श्रद्धान होने तै पहिलै जो होइ सोई तिनके श्रद्धान रूप सम्यग्दर्शन का कारण जानना । बहुरि श्रद्धान भए जो जीवादिक का जानना होइ, ताही का नाम सम्यग्ज्ञान है । बहुरि श्रद्धानपूर्वक जीवादि जानै स्वयमेव उदासीन होइ, हेय कौ त्यागै, उपादेय कौ ग्रहै, तब सम्यक् चारित्र हो है । अज्ञानपूर्वक क्रियाकाड तै सम्यक्चारित्र होइ नाही । ऐसै जीवादिक कौ जानने ही तै सम्यग्दर्शनादि मोक्ष के उपायनि की प्राप्ति निश्चय करनी । सो इस शास्त्र के अभ्यास तै जीवादिक का जानना नीकै हो है । जातै ससार है सोई जीव अर कर्म का सबध रूप है । बहुरि विशेष जानै इनका सबध का जो अभाव होइ सोई मोक्ष है । सो इस शास्त्र विषै जीव अर कर्म का ही विशेष निरूपण है । अथवा जीवादिक षड् द्रव्य, सप्त तत्त्वादिकनि का भी या विषै नीकै निरूपण है । तातै इस शास्त्र का अभ्यास अवश्य करना ।

अब इहा केइ जीव इस शास्त्र का अभ्यास विषै अरुचि होने कौ कारण विपरीत विचार प्रकट करै है । तिनिकौ समझाइए है । तहा जीव प्रथमानुयोग वा चरणानुयोग वा द्रव्यानुयोग का केवल पक्ष करि इस करणानुयोगरूप शास्त्र विषै अभ्यास कौ निषेधै है ।

तिनिविषै प्रथमानुयोग का पक्षपाती कहै है कि – इदानी जीवनि की बुद्धि मद बहुत है, तिनिकै ऐसै सूक्ष्म व्याख्यानरूप शास्त्र विषै किछू समझना होइ नाही तातै तीर्थकरादिक की कथा का उपदेश दीजिए तौ नीकै समझै, अर समझि करि पाप तै डरै, धर्मानुरागरूप होइ, तातै प्रथमानुयोग का उपदेश कार्यकारी है ।

ताकौ कहिये है – अब भी सर्व ही जीव तौ एक से न भए है । हीनाधिक बुद्धि देखिए है । तातै जैसा जीव होइ, तैसा उपदेश देना । अथवा मदबुद्धि भी सिखाए हुए अभ्यास तै बुद्धिमान होते देखिए है । तातै जे बुद्धिमान है, तिनिकौ तौ यहु ग्रथ कार्यकारी है ही अर जे मदबुद्धि है, ते विशेषबुद्धिनि तै सामान्य-विशेष रूप गुणस्थानादिक का स्वरूप सीखि इस शास्त्र का अभ्यास विषै प्रवर्तौ ।

इहां मंदबुद्धि कहै है कि – इस गोम्मटसार शास्त्र विषै तौ गणित समस्या अनेक अपूर्व कथन करि बहुत कठिनता सुनिए है, हम कैसै या विषै प्रवेश पावै ?

तिनिकौ कहिये है – भय मति करौ, इस भाषा टीका विषै गणित आदि का अर्थ सुगमरूप करि कह्या है , तातै प्रवेश पावना कठिन रह्या नाही । बहुरि या

शास्त्र विषै कथन कही सामान्य है, कही विशेष है, कही सुगम है, कही कठिन है, तहा जो सर्व अभ्यास बनै तो नीकै ही है, अर जो न बनै तौ अपनी बुद्धि के अनुसार जैसा बनै तैसा ही अभ्यास करौ । अपने उपाय मे आलस्य करना नाही ।

बहुरि तै कह्या – प्रथमानुयोग सबंधी कथादिक सुनै पाप तै डरै हैं, अर धर्मानुरागरूप हो है ।

सो तहा तौ दोऊ कार्य शिथिलता लीए हो है । इहा पाप-पुण्य के कारणकार्यादिक विशेष जानने तै ते दोऊ कार्य दृढता लिए हो है । तातै याका अभ्यास करना । ऐसै प्रथमानुयोग के पक्षपाती कौ इस शास्त्र का अभ्यास विषै सन्मुख कीया ।

अब चरणानुयोग का पक्षपाती कहै है कि – इस शास्त्र विषै कह्या जीव-कर्म का स्वरूप, सो जैसै है तैसे है ही, तिनिकौ जानै कहा सिद्धि हो है ? जो हिसादिक का त्याग करि व्रत पालिए, वा उपवासादि तप करिए, वा अरहतादिक की पूजा, नामस्मरण आदि भक्ति करिए, वा दान दीजिए, वा विषयादिक स्यो उदासीन हूजै इत्यादि शुभ कार्य करिए तो आत्महित होइ । तातै इनका प्ररूपक चरणानुयोग का उपदेशादिक करना ।

ताकौ कहिए है – हे स्थूलबुद्धि ! तै व्रतादिक शुभ कार्य कहे, ते करने योग्य ही है । परतु ते सर्व सम्यक्त्व विना अैसै है जैसै अक बिना बिंदी । अर जीवादिक का स्वरूप जानै बिना सम्यक्त्व का होना ऐसा जैसे बाझ का पुत्र । तातै जीवादिक जानने के अर्थि इस शास्त्र का अभ्यास अवश्य करना । बहुरि तै जैसे व्रतादिक शुभ कार्य कहे अर तिनितै पुण्यबध हो है । तैसै जीवादिक का स्वरूप जाननेरूप ज्ञानाभ्यास है, सो प्रधान शुभ कार्य है । यातै सातिशय पुण्य का बध हो है । बहुरि तिन व्रतादिकनि विषै भी ज्ञानाभ्यास की ही प्रधानता है, सो कहिए है–

जो जीव प्रथम जीव समासादि जीवादिक के विशेष जानै, पीछै यथार्थ ज्ञान करि हिसादिक कौ त्यागि व्रत धारै, सोई व्रती है । बहुरि जीवादिक के विशेष जानै विना कथचित् हिसादिक का त्याग तै आपकौ व्रती मानै, सो व्रती नाही । तातै व्रत पालने विषै ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है ।

बहुरि तप दोय प्रकार है – एक बहिरग, एक अतरग । तहा जाकरि शरीर का दमन होइ, सो वहिरग तप है, अर जातै मन का दमन होइ, सो अतरग तप है । इनि विषै वहिरग तप तै अतरग तप उत्कृष्ट है । सो उपवासादिक तौ वहिरग तप है । ज्ञानाभ्यास अतरग तप है । सिद्धात विषै भी छह प्रकार अतरग तपनि विषै चौथा स्वाध्याय नाम तप कह्या है । तिसतै

उत्कृष्ट व्युत्सर्ग अर ध्यान ही है । तातै तप करने विषै भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है । बहुरि जीवादिक के विशेषरूप गुणस्थानादिकनि का स्वरूप जानै ही अरहंतादिकनि का स्वरूप नीकै पहिचानिए है, वा अपनी अवस्था पहिचानिए है। ऐसी पहिचानि भए जो तीव्र अंतरग भक्ति प्रकट हो है, सोई बहुत कार्यकारी है। बहुरि जो कुलक्रमादिक तै भक्ति हो है, सो किंचिन्मात्र ही फल की दाता है । तातै भक्ति विषै भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है ।

बहुरि दान चार प्रकार है – तिनिविषै आहारदान, औषधदान, अभयदान तौ तात्कालिक क्षुधा के दुःख कौ वा रोग के दुःख कौ, वा मरणादि भय के दुःख ही कौ दूर करै है । **अर ज्ञानदान है सो अनंत भव संतान संबंधी दुःख दूर करने कौ कारण** है । तीर्थंकर, केवली, आचार्यादिकनि कै भी ज्ञानदान की प्रवृत्ति है । तातै ज्ञानदान उत्कृष्ट है, सो अपनै ज्ञानाभ्यास होइ तो अपना भला करै, अर अन्य जीवनि कौ ज्ञानदान देवै । ज्ञानाभ्यास बिना ज्ञानदान देना कैसै होइ ? तातै दान विषै भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है ।

बहुरि जैसै जन्म तै ही केई पुरुष ठिगनि के घर गए – तहा तिन ठिगनि कौ अपने मानै हैं । बहुरि कदाचित् कोऊ पुरुष किसी निमित्त स्यो अपने कुल का वा ठिगनि का यथार्थ ज्ञान होनै ते ठिगनि स्यो अतरग विषै उदासीन भया, तिनिकौ पर जानि संबंध छुडाया चाहै है । बाह्य जैसा निमित्त है तैसा प्रवर्तै है । बहुरि कोऊ पुरुष तिन ठिगनि कौ अपना ही जानै है अर किसी कारण तै कोऊ ठिग स्यो अनुरागरूप प्रवर्तै है । कोई ठिग स्यों लडि करि उदासीन भया आहारादिक का त्यागी होइ है ।

तैसै अनादि तै सर्व जीव ससार विषै प्राप्त है, तहा कर्मनि कौ अपने मानै है । बहुरि कोइ जीव किसी निमित्त स्यो जीव का अर कर्म का यथार्थ ज्ञान होनै तै कर्मनि स्यों उदासीन भया, तिनिकौ पर जानने लगा, तिनस्यो सबध छुडाया चाहै है । बाह्य जैसै निमित्त है तैसै वर्त्तै है। ऐसै जो ज्ञानाभ्यास तै उदासीनता होइ सोई कार्यकारी है । बहुरि कोई जीव तिन कर्मनि कौ अपने जानै है । अर किसी कारण तै कोई शुभ कर्म स्यो अनुराग रूप प्रवर्तै है । कोई अशुभ कर्म स्यो दुःख का कारण जानि उदासीन भया विषयादिक का त्यागी हो है। ऐसे ज्ञान विना जो उदासीनता होइ सो पुण्यफल की दाता है, मोक्ष कार्य कौ न साधै है । तातै उदासीनता विषै भी ज्ञानाभ्यास ही प्रधान है । याही प्रकार अन्य भी शुभ कार्यनि विषै ज्ञानाभ्यास ही प्रधान जानना । देखो ! महामुनीनि कै भी ध्यान-अध्ययन दोय ही कार्य मुख्य है । तातै शास्त्र अध्ययन तै जीव-कर्म का स्वरूप जानि स्वरूप का ध्यान करना ।

बहुरि इहां कोऊ तर्क करै कि – कोई जीव शास्त्र अध्ययन तौ वहुत करै है। अर विषयादिक का त्यागी न हो है, ताकै शास्त्र अध्ययन कार्यकारी है कि नाही ? जो है तौ महत पुरुष काहेकौ विषयादिक तजै, अर नाही है तो ज्ञानाभ्यास का महिमा कहा रह्या ?

ताका समाधान – शास्त्राभ्यासी दोय प्रकार है, एक लोभार्थी, एक धर्मार्थी। तहा जो अतरग अनुराग बिना-ख्याति-पूजा-लाभादिक के अर्थि शास्त्राभ्यास करै, सो लोभार्थी है, सो विषयादिक का त्याग नाही करै है। अथवा ख्याति, पूजा, लाभादिक कै अर्थि विषयादिक का त्याग भी करै है, तौ भी ताका शास्त्राभ्यास कार्यकारी नाही।

बहुरि जो अतरग अनुराग तै आत्म हित के अर्थि शास्त्राभ्यास करै है, सो धर्मार्थी है। सो प्रथम तौ जैन शास्त्र ऐसे है जिनका धर्मार्थी होइ अभ्यास करै, सो विपयादिक का त्याग करै ही करै। ताकै तौ ज्ञानाभ्यास कार्यकारी है ही। बहुरि कदाचित् पूर्वकर्म का उदय की प्रबलता तै न्यायरूप विषयादिक का त्याग न बनै है तौ भी ताकै सम्यग्दर्शन, ज्ञान के होने तै ज्ञानाभ्यास कार्यकारी हो है। जैसै असयत गुणस्थान विषै विषयादिक का त्याग बिना भी मोक्षमार्गपना सभवै है।

इहां प्रश्न – जो धर्मार्थी होइ जैन शास्त्र अभ्यासै, ताकै विषयादिक का त्याग न होइ सो यहु तौ बनै नाही। जातै विषयादिक के सेवन परिणामनि तै हो है, परिणाम स्वाधीन है।

तहाँ समाधान – परिणाम ही दोय प्रकार है। एक बुद्धिपूर्वक, एक अबुद्धिपूर्वक। तहा अपने अभिप्राय के अनुसारि होइ सो बुद्धिपूर्वक। अर दैव – निमित्त तै अपने अभिप्राय तै अन्यथा होइ सो अबुद्धिपूर्वक। जैसै सामायिक करतै धर्मात्मा का अभिप्राय ऐसा है कि मैं मेरे परिणाम शुभरूप राखो। तहा जो शुभपरिणाम ही होइ सो तौ बुद्धिपूर्वक। अर कर्मोदय तै स्वयमेव अशुभ परिणाम होइ, सो अबुद्धिपूर्वक जानने। तैसै धर्मार्थी होइ जो जैन शास्त्र अभ्यासै है ताको अभिप्राय तौ विषयादिक का त्याग रूप वीतराग भाव का ही होइ, तहा वीतराग भाव होइ, तौ बुद्धिपूर्वक है। अर चारित्रमोह के उदय तै सराग भाव होइ तौ अबुद्धिपूर्वक है। तातै विना वश जे सरागभाव हो है, तिनकरि ताकै विषयादिक की प्रवृत्ति देखिये है। जातै बाह्य प्रवृत्ति को कारण परिणाम है।

इहां तर्क – जो ऐसै है तो हम भी विषयादिक सेवेगे अर कहेगे – हमारे उदयाधीन कार्य हो है।

ताकौं कहिये है – रे मूर्ख ! किछू कहने तैं तौ होता नाही ! सिद्धि तौ अभिप्राय के अनुसारि है। तातैं जैन शास्त्र के अभ्यास तैं अपना अभिप्राय कौ सम्यक्‌रूप करना । अर अतरंग विषै विषयादिक सेवन का अभिप्राय होतैं तौ धर्मार्थी नाम पावै नाही ।

ऐसै चरणानुयोग के पक्षपाती कौ इस शास्त्र का अभ्यास विषै सन्मुख कीया ।

अब द्रव्यानुयोग का पक्षपाती कहै है कि – इस शास्त्र विषै जीव के गुणस्थानादिक रूप विशेष अर कर्म के विशेष वर्णन किए, तिनकौ जानै अनेक विकल्प तरग उठै, अर किछू सिद्धि नाही । तातै अपने शुद्ध स्वरूप कौ अनुभवना वा अपना अर पर का भेदविज्ञान करना – इतना ही कार्यकारी है। अथवा इनके उपदेशक जे अध्यात्मशास्त्र, तिनका ही अभ्यास करना योग्य है ।

ताकौ कहिये है – हे सूक्ष्माभासबुद्धि ! तै कह्या सो सत्य, परंतु अपनी अवस्था देखनी । जो स्वरूपानुभव विषै वा भेदविज्ञान विषै उपयोग निरतर रहै, तौ काहेकौ अन्य विकल्प करने । तहा ही स्वरूपानदसुधारस का स्वादी होइ संतुष्ट होना । परन्तु नीचली अवस्था विषै तहा निरन्तर उपयोग रहै नाही । उपयोग अनेक अवलबनि कौं चाहै है । तातै जिस काल तहां उपयोग न लागै, तब गुणस्थानादि विशेष जानने का अभ्यास करना ।

बहुरि तै कह्या कि - अध्यात्मशास्त्रनि का ही अभ्यास करना, सो युक्त ही है । परन्तु तहां भेदविज्ञान करने के अर्थि स्व-पर का सामान्यपनै स्वरूप निरूपण है । अर विशेष ज्ञान बिना सामान्य का जानना स्पष्ट होइ नाही । तातै जीव के अर कर्म के विशेष नीकै जानै ही स्व-पर का जानना स्पष्ट हो है। तिस विशेष जानने कौ इस शास्त्र का अभ्यास करना । जातै सामान्य शास्त्र तै विशेष शास्त्र बलवान है । सो ही कह्या है– **"सामान्यशास्त्रतो नूनं विशेषो बलवान् भवेत् ।"**

इहां वह कहै है कि – अध्यात्मशास्त्रनि विषै तौ गुणस्थानादि विशेषनिकरि रहित शुद्धस्वरूप का अनुभवना उपादेय कह्या है । इहा गुणस्थानादि सहित जीव का वर्णन है । तातै अध्यात्मशास्त्र अर इस शास्त्र विषै तौ विरुद्ध भासै है, सो कैसै है ?

ताकौ कहिये है नय दोय प्रकार है – एक निश्चय, एक व्यवहार । तहा निश्चयनय करि जीव का स्वरूप गुणस्थानादि विशेष रहित अभेद वस्तु मात्र ही है । अर व्यवहारनय करि गुणस्थानादि विशेष संयुक्त अनेक प्रकार है । तहा जे जीव सर्वोत्कृष्ट, अभेद, एक स्वभाव कौ अनुभवै है, तिनकौ तौ तहां शुद्ध उपदेश रूप जो शुद्ध निश्चयनय सो ही कार्यकारी है ।

वहुरि जे स्वानुभव दशा कौं न प्राप्त भए, वा स्वानुभवदशा तै छूटि सविकल्प दशा कौं प्राप्त भए ऐसे अनुत्कृष्ट जो अशुद्ध स्वभाव, तिहि विषै तिष्ठते जीव, तिनकौं व्यवहारनय प्रयोजनवान है। सोई आत्मख्याति अध्यात्मशास्त्र विषै कह्या है–

सुद्धो सुद्धादेसो, णादव्वो परमभावदरसीहिं।
ववहारदेसिदो पुण जे दु अपरमेट्ठिदा भावे ॥[1]

इस सूत्र की व्याख्या का अर्थ विचारि देखना।

बहुरि सुनि! तेरे परिणाम स्वरूपानुभव दशा विषै तौ प्रवर्तै नाही। अर विकल्प जानि गुणस्थानादि भेदनि का विचार न करैगा तौ तू इतो भ्रष्ट ततो भ्रष्ट होय अशुभोपयोग ही (विषै) प्रवर्त्तैगा, तहा तेरा बुरा होयगा।

बहुरि सुनि! सामान्यपनै तौ वेदात आदि शास्त्राभासनि विषै भी जीव का स्वरूप शुद्ध कहै हैं, तहा विशेष जानै विना यथार्थ-अयथार्थ का निश्चय कैसे होय? तातै गुणस्थानादि विशेष जानै जीव की शुद्ध, अशुद्ध, मिश्र अवस्था का ज्ञान होइ, तब निर्णय करि यथार्थ का अगीकार करै। **बहुरि सुनि! जीव का गुण ज्ञान है, सो विशेष जानै आत्मगुण प्रकट होइ, अपना श्रद्धान भी दृढ़ होय। जैसे सम्यक्त्व है, सो केवलज्ञान भए परमावगाढ नाम पावै है।** तातै विशेष जानना।

बहुरि वह कहै है – तुम कह्या सो सत्य, परतु करणानुयोग तै विशेष जानै भी द्रव्यलिगी मुनि अध्यात्म श्रद्धान विना संसारी ही रहै। अर अध्यात्म अनुसारि तिर्यचादिक कै स्तोक श्रद्धान तै भी सम्यक्त्व हो है। वा तुषमाष भिन्न इतना ही श्रद्धान तै शिवभूति मुनि मुक्त भया। तातै हमारी तौ वुद्धि तै विशेष विकल्पनि का साधन होता नाही। प्रयोजनमात्र अध्यात्म अभ्यास करेगे।

याकौं कहिये है – जो द्रव्यलिगी जैसै करणानुयोग तै विशेष जानै है, तैसै अध्यात्म-शास्त्रनि का भी ज्ञान वाकै होय, परतु मिथ्यात्व के उदय तै अयथार्थ साधन करै तौ शास्त्र कहा करै? शास्त्रनि विषै तौ परस्पर विरुद्ध है नाही। कैसै? सो कहिये है – करणानुयोगशास्त्रनि विषै भी अर अध्यात्मशास्त्रनि विषै भी रागादिक भाव आत्मा के कर्म निमित्त तै उपजे कहे। द्रव्यलिगी तिनका आप कर्त्ता हुवा प्रवर्तै है। वहुरि शरीराश्रित सर्व शुभाशुभ क्रिया पुद्गलमय कही। द्रव्यलिगी अपनी जानि तिनविषै त्यजन, गहण वुद्धि करै है। वहुरि सर्व ही शुभाशुभ भाव, आस्रव बध के कारण कहे। द्रव्यलिगी शुभभावन को संवर, निर्जरा, मोक्ष का कारण मानै है। वहुरि

१ समयसार, गाथा १२

शुद्धभाव संवर, निर्जरा, मोक्ष का कारण कह्या, ताकौ द्रव्यलिंगी पहिचानै ही नाही। बहुरि शुद्धात्मस्वरूप मोक्ष कह्या, ताका द्रव्यलिंगी के यथार्थ ज्ञान नाही। ऐसै अन्यथा साधन करै तौ शास्त्रनि का कहा दोष है ?

बहुरि तै तिर्यंचादिक कै सामान्य श्रद्धान तै कार्यसिद्धि कही, सो उनकै भी अपना क्षयोपशम अनुसारि विशेष का जानना हो है। अथवा पूर्व पर्यायनि विषै विशेष का अभ्यास कीया था, तिस संस्कार के बल तै हो है। बहुरि जैसै काहूने कही गड्या धन पाया, सो हम भी ऐसै ही पावैंगे, ऐसा मानि सब ही कौ व्यापारादिक का त्यजन न करना। तैसै काहूनै स्तोक श्रद्धान तै ही कार्य सिद्ध किया तो हम भी ऐसै ही कार्य सिद्धि करैंगे – ऐसै मानि सर्व ही कौ विशेष अभ्यास का त्यजन करना योग्य नाही, जातै यहु राजमार्ग नाही। **राजमार्ग तौ यहु ही है – नानाप्रकार विशेष जानि तत्त्वनि का निर्णय भए ही कार्यसिद्धि हो है।**

बहुरि तै कह्या, मेरी बुद्धि तै विकल्पसाधन होता नाही, सो जेता बनै तेता ही अभ्यास कर। बहुरि तू पापकार्य विषै तौ प्रवीण, अर इस अभ्यास विषै कहै मेरी बुद्धि नाही, सो यहु तौ पापी का लक्षण है।

ऐसै द्रव्यानुयोग का पक्षपाती कौ इस शास्त्र का अभ्यास विषै सन्मुख कीया।

अब अन्य विपरीत विचारवालो कौ समझाइए है।

तहां शब्द-शास्त्रादिक का पक्षपाती बोलै है कि – व्याकरण, न्याय, कोश, छंद, अलंकार, काव्यादिक ग्रंथनि का अभ्यास करिए तो अनेक ग्रंथनि का स्वयमेव ज्ञान होय वा पंडितपना प्रगट होय। अर इस शास्त्र के अभ्यास तै तो एक याही का ज्ञान होय वा पंडितपना विशेष प्रकट न होय, तातै शब्द-शास्त्रादिक का अभ्यास करना।

ताकौ कहिये है – जो तू लोक विषै ही पंडित कहाया चाहै है तौ तू तिन ही का अभ्यास किया करि। अर जो अपना कार्य किया चाहै है तो ऐसे जैनग्रन्थनि का अभ्यास करना ही योग्य है। बहुरि जैनी तौ जीवादिक तत्त्वनि के निरूपक जे जैनग्रन्थ तिन ही का अभ्यास भए पंडित मानैंगे।

बहुरि वह कहै हैं कि – मैं जेनग्रंथनि का विशेष ज्ञान होने ही के अर्थि व्याकरणादिकनि का अभ्यास करौं हौ।

ताकौं कहिए है – ऐसै है तो भलै ही है, परंतु इतना है जैसैं स्याना खितहर अपनी शक्ति अनुसारि हलादिक तै थोड़ा बहुत खेत कौ संवारि समय विषै बीज

बोवै तौ ताकौ फल की प्राप्ति होइ । **वैसे तू भी जो अपनी शक्ति अनुसारि व्याकरणादिक का अभ्यास तै थोरी बहुत बुद्धि कौं संवारि यावत् मनुष्य पर्याय वा इंद्रियनि की प्रबलता इत्यादिक वर्तै है, तावत् समय विषै तत्त्वज्ञान कौं कारण जे शास्त्र, तिनिका अभ्यास करेगा तौ तुझकौ सम्यक्त्वादि की प्राप्ति होयगी ।**

बहुरि जैसे अयाना खितहर हलादिक तै खेत कौ सवारता सवारता ही समय कौ खोवै, तौ ताकौ फलप्राप्ति होने की नाही, वृथा ही खेदखिन्न भया । तैसे तू भी जो व्याकरणादिक तै बुद्धि कौ सवारता सवारता ही समय खोवैगा तौ सम्यक्त्वादिक की प्राप्ति होने की नाही । वृथा ही खेदखिन्न भया । बहुरि इस काल विषै आयु बुद्धि आदि स्तोक है, ताते प्रयोजनमात्र अभ्यास करना, शास्त्रनि का तौ पार है नाही । बहुरि सुनि ! केई जीव व्याकरणादिक का ज्ञानविना भी तत्त्वोपदेशरूप भाषा शास्त्रनि करि, वा उपदेश सुनने करि, वा सीखने करि तत्त्वज्ञानी होते देखिये है । अर केई जीव केवल व्याकरणादिक का ही अभ्यास विषै जन्म गमावै है, अर तत्त्वज्ञानी न होते देखिये है ।

बहुरि सुनि ! व्याकरणादिक का अभ्यास करने तै पुण्य न उपजै है । धर्मार्थी होइ तिनका अभ्यास करै तौ किंचित् पुण्य उपजै । बहुरि तत्त्वोपदेशक शास्त्रनि का अभ्यास तै सातिशय महत् पुण्य उपजै है । ताते भला यहु है – असे तत्त्वोपदेशक शास्त्रानि का अभ्यास करना । ऐसे शब्द शास्त्रादिक का पक्षपाती कौ सन्मुख किया ।

बहुरि अर्थ का पक्षपाती कहै है कि - इस शास्त्र का अभ्यास किए कहा है ? सर्व कार्य धन तै बनै है, धन करि ही प्रभावना आदि धर्म निपजै है । धनवान के निकट अनेक पंडित आनि (आय) प्राप्त होइ । अन्य भी सर्वकार्यसिद्धि होइ । ताते धन उपजावने का उद्यम करना ।

ताकौ कहिए है - रे पापी ! धन किछू अपना उपजाया तौ न हो है । भाग्य तै हो है, सो ग्रंथाभ्यास आदि धर्म साधन तै जो पुण्य निपजै, ताही का नाम भाग्य है । बहुरि धन होना है तौ शास्त्राभ्यास किए कैसे न होगा ? अर न होना है तौ शास्त्राभ्यास न किए कैसे होगा ? ताते धन का होना, न होना तौ उदयाधीन है । शास्त्राभ्यास विषै काहे कौ शिथिल हूजै । बहुरि सुनि ! धन है सो तौ विनाशीक है, भय संयुक्त है, पाप तै निपजै है, नरकादिक का कारण है ।

अर यहु शास्त्राभ्यासरूप ज्ञानधन है सो अविनाशी है, भय रहित है, धर्मरूप है, स्वर्ग मोक्ष का कारण है । सो महत पुरुष तौ धनकादिक कौ छोड़ि शास्त्राभ्यास विषै लगै है । तू पापी शास्त्राभ्यास कौ छुड़ाय धन उपजावने की बड़ाई करै है, सो तू अनत ससारी है ।

बहुरि तै कह्या - प्रभावना आदिधर्म भी धन ही तै हो है । सो प्रभावना आदि धर्म है सो किचित् सावद्य क्रिया सयुक्त है । तिसतै समस्त सावद्य रहित शास्त्राभ्यास रूप धर्म है, सो प्रधान है । ऐसै न होइ तौ गृहस्थ अवस्था विषै प्रभावना आदि धर्म साधते थे, तिनि कौ छाड़ि सजमी होइ शास्त्राभ्यास विषै काहे को लागै है ? बहुरि शास्त्राभ्यास तै प्रभावनादिक भी विशेष हो है ।

बहुरि तै कह्या - धनवान के निकट पडित भी आनि प्राप्त होइ । सो लोभी पडित होइ, अर अविवेकी धनवान होइ तहा ऐसै हो है । अर शास्त्राभ्यासवालौ की तौ इद्रादिक सेवा करै है । इहा भी बड़े बडे महत पुरुष दास होते देखिए है । तातै शास्त्राभ्यासवालौ तै धनवान कौ महत मति जानै ।

बहुरि तै कह्या – धन तै सर्व कार्यसिद्धि हो है । सो धन तै तौ इस लोक सबधी किछू विषयादिक कार्य ऐसा सिद्ध होइ, जातै बहुत काल पर्यत नरकादि दुःख सहने होइ । अर शास्त्राभ्यास तै ऐसा कार्य सिद्ध हो है जातै इहलोक विषै अर परलोक विषै अनेक सुखनि की परपरा पाइए । तातै धन उपजावने का विकल्प छोडि शास्त्राभ्यास करना । अर जो सर्वथा ऐसै न बनै तौ सतोष लिए धन उपजावने का साधनकरि शास्त्राभ्यास विषै तत्पर रहना । ऐसै अर्थ उपजावने का पक्षपाती कौ सन्मुख किया ।

बहुरि कामभोगादिक का पक्षपाती बोलै है कि - शास्त्राभ्यास करने विषै सुख नाही, बडाई नाही । तातै जिन करि इहा ही सुख उपजै ऐसे जे स्त्रीसेवना, खाना, पहिरना, इत्यादि विषय, तिनका सेवन करिए । अथवा जिन करि यहा ही बड़ाई होइ ऐसे विवाहादिक कार्य करिए ।

ताकौ कहिए है – विषयजनित जो सुख है सो दु ख ही है । जातै विषय सुख है, सो परनिमित्त तै हो है । पहिले, पीछै, तत्काल आकुलता लिए है, जाके नाश होने के अनेक कारण पाइए है । आगामी नरकादि दुर्गति कौ प्राप्त करणहारा है । ऐसा है तौ भी तेरा चाह्या मिलै नाही, पूर्व पुण्य तै हो है, तातै विषम है । जैसे खाजि करि पीडित पुरुष अपना अग कौ कठोर वस्तु तै खुजावै, तैसे इद्रियनि करि

पीडित जीव, तिनकी पीडा सही न जाय तब किचिन्मात्र तिस पीडा के प्रतिकार से भासै – ऐसै जे विषयसुख तिन विषै झपापात लेवै है, परमार्थरूप सुख है नाही ।

बहुरि **शास्त्राभ्यास करनेतै भया जो सम्यग्ज्ञान, ताकरि निपज्या जो आनन्द, सो सांचा सुख है । जातै सो सुख स्वाधीन है, आकुलता रहित है, काहू करि नष्ट न हो है, मोक्ष का कारण है, विषम नाही ।** जैसै खाजि न पीडै, तब सहज ही सुखी होइ, तैसै तहा इद्रिय पीडने कौ समर्थ न होइ, तब सहज ही, सुख कौ प्राप्त हो है । तातै विषय सुख छोडि शास्त्राभ्यास करना । (जो) सर्वथा न छूटे तौ जेता बनै तेता छोडि, शास्त्राभ्यास विषै तत्पर रहना ।

बहुरि तै विवाहादिक कार्य विषै बडाई होने की कही, सो केतेक दिन बडाई रहेगी ? जाकै अर्थि महापापारभ करि नरकादि विषै बहुतकाल दुःख भोगना होइगा । अथवा तुझ तै भी तिन कार्यनि विषै धन लगावनेवाले बहुत है, तातै विशेप वडाई भी होने की नाही ।

बहुरि शास्त्राभ्यास तै ऐसी बडाई हो है, जाकी सर्वजन महिमा करे, इद्रादिक भी प्रशसा करै अर परपरा स्वर्ग मुक्ति का कारण है । तातै विवाहादिक कार्यनि का विकल्प छोडि, शास्त्राभ्यास का उद्यम राखना । सर्वथा न छूटै तो बहुत विकल्प न करना । ऐसै काम भोगादिक का पक्षपाती कौ शास्त्राभ्यास विषै सन्मुख किया । या प्रकार अन्य जीव भी जे विपरीत विचार तै इस ग्रथ अभ्यास विषै अरुचि प्रगट करै, तिनकौ यथार्थ विचार तै इस शास्त्र के अभ्यास विषै सन्मुख होना योग्य है ।

इहां अन्यमती कहै है कि – तुम अपने ही शास्त्र अभ्यास करने कौ दृढ किया । हमारे मत विपै नाना युक्ति आदि करि सयुक्त शास्त्र है, तिनका भी अभ्यास क्यो न कराइए ?

ताकौं कहिए है – तुमारे मत के शास्त्रनि विषै आत्महित का उपदेश नाही । जातै कही शृगार का, कही युद्ध का, कही काम सेवनादि का, कही हिसादि का कथन है । सो ए तो विना ही उपदेश सहज ही बनि रहे है । इनकौ तजे हित होई, ते तहा उलटे पोषे है, तातै तिनतै हित कैसे होइ ?

तहा वह कहै है – ईश्वरनै ऐसी लीला करी है, ताकौ गावै है, तिसतै भला हो है ।

तहा कहिये है – जो ईश्वर कै सहज सुख न होगा, तब ससारीवत् लीला करि सुखी भया । जो (वह) सहज सुखी होता तौ काहेकौ विपयादि सेवन वा

युद्धादिक करता ? जातै मदबुद्धि हू बिना प्रयोजन किंचिन्मात्र भी कार्य न करै। तातै जानिए है – वह ईश्वर हम सारिखा ही है, ताका जस गाए कहा सिद्धि है ?

बहुरि वह कहै है कि – हमारे शास्त्रनि विषै वैराग्य, त्याग, अहिसादिक का भी तौ उपदेश है।

तहां कहिए है – सो उपदेश पूर्वापर विरोध लिए है। कही विषय पोषे है, कही निषेधे है। कही वैराग्य दिखाय, पीछै हिसादि का करना पोप्या है। तहां वातुलवचन-वत् प्रमाण कहा ?

बहुरि वह कहै है कि वेदात आदि शास्त्रनि विषै तो तत्त्व ही का निरूपण है।

तहां कहिए है – सो निरूपण प्रमाण करि बाधित, अयथार्थ है। ताका निराकरण जैन के न्यायशास्त्रनि विषै किया है, सो जानना। तातै अन्यमत के शास्त्रनि का अभ्यास न करना।

ऐसै जीवनि कौ इस शास्त्र के अभ्यास विषै सन्मुख किया, तिनकौ कहिए है–

हे भव्य ! शास्त्राभ्यास के अनेक अंग है। शब्द का वा अर्थ का वाचना, या सीखना, सिखावना, उपदेश देना, विचारना, सुनना, प्रश्न करना, समाधान जानना, बार बार चरचा करना, इत्यादि अनेक अग है। तहा जैसै बनै तैसै अभ्यास करना। जो सर्व शास्त्र का अभ्यास न बनै तौ इस शास्त्र विषै सुगम वा दुर्गम अनेक अर्थनि का निरूपण है। तहा जिसका बनै तिसही का अभ्यास करना। परतु अभ्यास विषै आलसी न होना।

देखो ! शास्त्राभ्यासकी महिमा, जाकौ होतै परंपरा आत्मानुभव दशा कौ प्राप्त होइ – सो मोक्ष रूप फल निपजै है, सो तौ दूर ही तिष्ठौ। शास्त्राभ्यास तै तत्काल ही इतने गुण हो है। १ क्रोधादि कषायनि की तौ मदता हो है। २ पचइद्रियनि की विषयनि विषै प्रवृत्ति रुकै है। ३. अति चचल मन भी एकाग्र हो है। ४ हिसादि पच पाप न प्रवर्तै है। ५ स्तोक ज्ञान होतै भी त्रिलोक के त्रिकाल सबधी चराचर पदार्थनि का जानना हो है। ६. हेयोपादेय की पहिचान हो है। ७ आत्मज्ञान सन्मुख हो है (ज्ञान आत्मसन्मुख हो है)। ८ अधिक-अधिक ज्ञान होतै आनद निपजै है। ९ लोकविषै महिमा, यश विशेष हो है।१०. सातिशय पुण्य का बंध हो है – इत्यादिक गुण शास्त्राभ्यास करतै तत्काल ही प्रगट होई है।

तातै शास्त्राभ्यास अवश्य करना। बहुरि हे भव्य ! शास्त्राभ्यास करने का समय पावना महादुर्लभ है। काहे तै ? सो कहिए है—

एकेंद्रियादि असज्ञी पर्यंत जीवनिके तौ मन ही नाही। अर नारकी वेदना पीडित, तिर्यंच विवेक रहित, देव विषयासक्त, तातै मनुष्यनि कै अनेक सामग्री मिले शास्त्राभ्यास होइ। सो मनुष्य पर्याय का पावना ही द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव करि महादुर्लभ है।

तहा द्रव्य करि लोक विषै मनुष्य जीव बहुत थोरे है, तुच्छ संख्यात मात्र ही है। अर अन्य जीवनि विषै निगोदिया अनंत है, और जीव असंख्याते हैं।

बहुरि क्षेत्र करि मनुष्यनि का क्षेत्र बहुत स्तोक है, अढाई द्वीप मात्र ही है। अर अन्य जीवनि विषै एकेंद्रिनि का सर्व लोक है, औरनिका केते इक राजू प्रमाण है। बहुरि काल करि मनुष्य पर्याय विषै उत्कृष्ट रहने का काल स्तोक है, कर्मभूमि अपेक्षा पृथक्त्व कोटि पूर्व मात्र ही है। अर अन्य पर्यायनि विषै उत्कृष्ट रहने का काल – एकेंद्रिय विषै तो असख्यात पुद्गल परिवर्तन मात्र, अर और विषै सख्यातपल्य मात्र है।

बहुरि भाव करि तीव्र शुभाशुभपना करि रहित ऐसे मनुष्य पर्याय कौ कारण परिणाम होने अति दुर्लभ है। अन्य पर्याय कौ कारण अशुभरूप वा शुभरूप परिणाम होने सुलभ है। ऐसै शास्त्राभ्यास का कारण जो पर्याप्त कर्मभूमिया मनुष्य पर्याय, ताका दुर्लभपना जानना।

तहा सुवास, उच्चकुल, पूर्णआयु, इद्रियनि की सामर्थ्य, नीरोगपना, सुसंगति, धर्मरूप अभिप्राय, बुद्धि की प्रवलता इत्यादिक का पावना उत्तरोत्तर महादुर्लभ है। सो प्रत्यक्ष देखिए है। अर इतनी सामग्री मिले विना ग्रथाभ्यास बनै नाही। सो तुम भाग्यकरि यहु अवसर पाया है। तातै तुमकौ हठ करि भी तुमारे हित होने के अर्थि प्रेरै है। जैसै बनै तैसै इस शास्त्र का अभ्यास करो। बहुरि अन्य जीवनि कौ जैसे बनै तैसे शास्त्राभ्यास करावौ। बहुरि जे जीव शास्त्राभ्यास करते होंइ, तिनकी अनुमोदना करहु। बहुरि पुस्तक लिखावना, वा पढने, पढावनेवालो की स्थिरता करनी, इत्यादिक शास्त्राभ्यास की वाह्यकारण, तिनका साधन करना। जाते इनकरि भी परपरा कार्यसिद्धि हो है वा महत्पुण्य उपजै है।

ऐसे इस शास्त्र का अभ्यासादि विषै जीवनि कौ रुचिवान किया।

—ं—

गोम्मटसार जीवकाण्ड सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि जो यहु **सम्यग्ज्ञानचंद्रिका** नामा भाषा टीका, तिहिविषै सस्कृत टीका तै कही अर्थ प्रकट करने के अर्थि, वा कही प्रसगरूप, वा कही अन्य ग्रंथ का अनुसारि लेइ अधिक भी कथन करियेगा। अर कही अर्थ स्पष्ट न प्रतिभासैगा, तहा न्यून कथन होइगा ऐसा जानना। सो इस भाषा टीका विषै मुख्यपनै जो-जो मुख्य व्याख्यान है, ताकौ अनुक्रमतै संक्षेपता करि कहिए है। जातै याके जानै अभ्यास करने-वालौ कै सामान्यपनै इतना तौ जानना होइ जो या विषै ऐसा कथन है। अर क्रम जाने जिस व्याख्यान कौ जानना होइ, ताकौ तहां शीघ्र अवलोकि अभ्यास करै, वा जिनने अभ्यास किया होइ, ते याकौ देखि अर्थ का स्मरण करै, सो सर्व अर्थ की सूचनिका कीए तौ विस्तार होई, कथन आगै है ही, तातै मुख्य कथन की सूचनिका क्रम तै करिए है।

तहाँ इस भाषा टीका विषै सूचनिका करि कर्माष्टक आदि गणित का स्वरूप दिखाइ संस्कृत टीका के अनुसारि मगलाचरणादि का स्वरूप कहि मूल गाथानि की टीका कीजिएगा। तहां इस शास्त्र विषै दोय महा अधिकार है – एक जीवकाड, एक कर्मकाड। तहा जीवकांड विषै बाईस अधिकार है।

तिनिविषै **प्रथम गुणस्थानाधिकार** है। तिस विषै गुणस्थाननि का नाम, वा सामान्य लक्षण कहि तिनिविषै सम्यक्त्व, चारित्र अपेक्षा औदयिकादि सभवते भावनि का निरूपण करि क्रम तै मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि का वर्णन है। तहा मिथ्यादृष्टि विषै पच मिथ्यात्वादि का सासादन विषै ताके काल वा स्वरूप का, मिश्र विषै ताके स्वरूप का वा मरण न होने का, असंयत विषै वेदकादि सम्यक्त्वनि का वा ताके स्वरूपादिक का, देश संयत विषै ताके स्वरूप का वर्णन है। बहुरि प्रमत्त का कथन विषै ताके स्वरूप का अर पद्रह वा अस्सी वा साढे सैतीस हजार प्रमाद भेदनि का अर तहा प्रसंग पाइ सख्या, प्रस्तार, परिवर्तन, नष्ट, समुद्दिष्ट करि वा गूढ यत्र करि अक्षसचार विधान का कथन है। जहा भेदनि कौ पलटि पलटि परस्पर लगाइए तहा अक्षसचार विधान हो है। बहुरि अप्रमत्त का कथन विषै स्वस्थान अर सातिशय दोय भेद कहि, सातिशय अप्रमत्त कै अध.करण हो है, ताके स्वरूप वा काल वा परिणाम वा समय-समय सबधी परिणाम वा एक-एक समय विषै अनुकृष्टि विधान, वा तहां सभवते च्यारि आवश्यक इत्यादिक का विशेष वर्णन है। तहां प्रसग पाइ श्रेणी व्यवहार रूप गणित का कथन है। तिसविषै सर्वधन, उत्तरधन, मुख,

भूमि, चय, गच्छ इत्यादि सज्ञानि का स्वरूप वा प्रमाण ल्यावने कौं करणसूत्रनि का वर्णन है। बहुरि अपूर्वकरण का कथन विषै ताके काल, स्वरूप, परिणाम, समय-समय संबंधी परिणामादिक का कथन है। बहुरि अनिवृत्तिकरण का कथन विषै ताके स्वरूपादिक का कथन है। बहुरि सूक्ष्मसापराय का कथन विषै प्रसग पाइ कर्मप्रकृतिनि के अनुभाग अपेक्षा अविभागप्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धक, गुणहानि, नाना-गुणहानिनि का अर पूर्वस्पर्द्धक, अपूर्वस्पर्धक, बादरकृष्टि, सूक्ष्मकृष्टि का वर्णन है। इत्यादि विशेष कथन है सो जानना। बहुरि उपशातकषाय, क्षीणकषाय का कथन विषै तिनके दृष्टातपूर्वक स्वरूप का, सयोगी जिन का कथन विषै नव केवललब्धि आदिक का, अयोगी विषै शैलेश्यपना आदिक का कथन है। ग्यारह गुणस्थाननि विषै गुणश्रेणी निर्जरा का कथन है। तहा द्रव्य कौं अपकर्षण करि उपरितन स्थिति अर गुणश्रेणी आयाम अर उदयावली विषै जैसे दीजिए है, ताका वा गुणश्रेणी आयाम के प्रमाण का निरूपण है। तहा प्रसग पाइ अतर्मुहूर्त के भेदनि का वर्णन है। बहुरि सिद्धनि का वर्णन है।

बहुरि दूसरा जीवसमास अधिकार विषै – जीवसमास का अर्थ वा होने का विधान कहि चौदह, उगणीस, वा सत्तावन, जीवसमासनि का वर्णन है। बहुरि च्यारि प्रकारि जीवसमास कहि, तहा स्थानभेद विषै एक आदि उगणीस पर्यंत जीवस्थाननि का, वा इन ही के पर्याप्तादि भेद करि स्थाननि का वा अठ्याणवै वा च्यारि सै छह जीवसमासनि का कथन है। बहुरि योनि भेद विषै शखावर्तादि तीन प्रकार योनि का, अर सम्मूर्च्छनादि जन्म भेद पूर्वक नव प्रकार योनि के स्वरूप वा स्वामित्व का अर चौरासी लक्ष योनि का वर्णन है। तहा प्रसग पाइ च्यारि गतिनि विषै सम्मूर्च्छनादि जन्म वा पुरुषादि वेद सभवै, तिनका निरूपण है। बहुरि अवगाहना भेद विषै सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्त आदि जीवनि की जघन्य, उत्कृष्ट शरीर की अवगाहना का विशेष वर्णन है। तहा एकेंद्रियादिक की उत्कृष्ट अवगाहना कहने का प्रसग पाइ गोलक्षेत्र, सखक्षेत्र, आयत, चतुरस्रक्षेत्र का क्षेत्रफल करने का, अर अवगाहना विषै प्रदेशनि की वृद्धि जानने के अर्थि अनतभाग आदि चतु स्थानपतित वृद्धि का, अर इस प्रसग तै दृष्टातपूर्वक षट्स्थानपतित आदि वृद्धि-हानि का, सर्व अवगाहना भेद जानने के अर्थि मत्स्यरचना का वर्णन है। बहुरि कुल भेद विषै एक सौ साढा निण्याणवै लाख कोडि कुलनि का वर्णन है।

बहुरि तीसरा पर्याप्त नामा अधिकार विषै – पहलै मान का वर्णन है। तहा लौकिक-अलौकिक मान के भेद कहि। बहुरि द्रव्यमान के दोय भेदनि विषै, सख्या

मान विषै सख्यात, असख्यात, अनत के इकईस भेदनि का वर्णन है । बहुरि सख्या के विशेष रूप चौदह धारानि का कथन है। तिनि विषै द्विरूपवर्गधारा, द्विरूपघनधारा द्विरूपघनाघनधारानि कै स्थाननि विषै जे पाइए है, तिनका विशेष वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ पणट्ठी, बादाल, एकट्ठी का प्रमाण, अर वर्गशलाका, अर्धच्छेदनि का स्वरूप, वा अविभागप्रतिच्छेद का स्वरूप, वा उक्तम् च गाथानि करि अर्धच्छेदादिक के प्रमाण होनें का नियम, वा अग्निकायिक जीवनि का प्रमाण ल्यावने का विधान इत्यादिकनि का वर्णन है । बहुरि दूसरा उपमा मान के पल्य आदि आठ भेदनि का वर्णन है। तहां प्रसंग पाइ व्यवहारपल्य के रोमनि की संख्या ल्यावने कौ परमाणू तैं लगाय अंगुल पर्यंत अनुक्रम का, अर तीन प्रकार अंगुल का, अर जिस जिस अगुल करि जाका प्रमाण वर्णिए ताका, अर गोलगर्त के क्षेत्रफल ल्यावने का वर्णन है । अर उद्धारपल्य करि द्वीप-समुद्रनि की सख्या ल्याइए है । अद्धापल्य करि आयु आदि वर्णिए है, ताका वर्णन है । अर सागर की सार्थिक सज्ञा जानने कौ, लवण समुद्र का क्षेत्रफल कौ आदि देकर वर्णन है । अर सूच्यंगुल, प्रतरागुल, घनागुल, जगत्श्रेणी, जगत्-प्रतर, (जगत्घन) लोकनि का प्रमाण ल्यावने कौ विरलन आदि विधान का वर्णन है । बहुरि पल्यादिक की वर्गशलाका अरु अर्धच्छेदनि का प्रमाण वर्णन है । तिनिके प्रमाण जानने कौ उक्तम् च गाथा रूप करणसूत्रनि का कथन है । बहुरि पीछै पर्याप्ति प्ररूपणा है । तहा पर्याप्ति, अपर्याप्ति के लक्षण का, अर छह पर्याप्तिनि के नाम का, स्वरूप का, प्रारंभ सपूर्ण होने के काल का, स्वामित्व का वर्णन है । बहुरि लब्धिअपर्याप्ति का लक्षण, वा ताके निरतर क्षुद्रभवनि के प्रमाणादिक का वर्णन है । तहां ही प्रसंग पाइ प्रमाण, फल, इच्छारूप त्रैराशिक गणित का कथन है । बहुरि सयोगी जिन कै अपर्याप्तिपना सभवने का, अर लब्धि अपर्याप्ति, निर्वृति अपर्याप्ति, पर्याप्ति के सभवते गुणस्थाननि का वर्णन है ।

बहुरि चौथा प्राणाधिकार विषै – प्राणनि का लक्षण, अर भेद, अर कारण अर स्वामित्व का कथन है ।

बहुरि पाँचमां संज्ञा अधिकार विषै – च्यारि सज्ञानि का स्वरूप, अर भेद, अर कारण, अर स्वामित्व का वर्णन है ।

बहुरि छट्ठा मार्गणा महा अधिकार विषै – मार्गणा की निरुक्ति का, अर चौदह भेदनि का, अर सातर मार्गणा के अतराल का, अर प्रसंग पाइ तत्त्वार्थसूत्र टीका के अनुसारि नाना जीव, एक जीव अपेक्षा गुणस्थाननि विषै, अर गुणस्थान

अपेक्षा लिऐ मार्गणानि विषै काल का, अर अतर का कथन करि छट्ठा गति मार्गणा अधिकार है। तहा गति के लक्षण का, अर भेदनि का अर च्यारि भेदनि के निरुक्ति लिए लक्षणनि का, अर पाँच प्रकार तिर्यंच, च्यारि प्रकार मनुष्यनि का अर सिद्धनि का वर्णन है। बहुरि सामान्य नारकी, जुदे-जुदे सात पृथ्वीनि के नारकी, अर पाँच प्रकार तिर्यंच, च्यारि प्रकार मनुष्य, अर व्यतर, ज्योतिषी, भवनवासी, सौधर्मादिक देव, सामान्य देवराशि इन जीवनि की सख्या का वर्णन है। तहा पर्याप्त मनुष्यनि की सख्या कहने का प्रसग पाइ **"कटपयपुरस्थवर्णैं"** इत्यादि सूत्र करि ककारादि अक्षररूप अक वा बिदी की सख्या का वर्णन है।

बहुरि सातमां इंद्रियमार्गणा अधिकार विषै – इंद्रियनि का निरुक्ति लिए लक्षण का, अर-लब्धि उपयोगरूप भावेद्रिय का, अर बाह्य अभ्यन्तर भेद लिए निवृत्ति-उपकरणरूप द्रव्येन्द्रिय का, अर इन्द्रियनि के स्वामी का, अर तिनके विषयभूत क्षेत्र का, अर तहा प्रसग पाइ सूर्य के चार क्षेत्रादिक का अर इद्रियनि के आकार का वा अवगाहना का, अर अतीद्रिय जीवनि का वर्णन है। बहुरि एकेन्द्रियादिकनि का उदाहरण रूप नाम कहि, तिनकी सामान्य सख्या का वर्णन करि, विशेषपने सामान्य एकेन्द्री, अर सूक्ष्म बादर एकेद्री, बहुरि सामान्य त्रस, अर बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइद्रिय, पचेन्द्रिय इन जीवनि का प्रमाण, अर इन विषै पर्याप्त-अपर्याप्त जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि आठमां कायमार्गणा अधिकार विषै – काय के लक्षण का वा भेदनि का वर्णन है। बहुरि पच स्थावरनि के नाम, अर काय, कायिक जीवरूप भेद, अर बादर, सूक्ष्मपने का लक्षणादि, अर शरीर की अवगाहना का वर्णन है।

बहुरि वनस्पती के साधारण-प्रत्येक भेदनि का, प्रत्येक के सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित भेदनि का, अर तिनकी अवगावहना का अर एक स्कध विषै तिनके शरीरनि के प्रमाण का, अर योनीभूत वीज विषै जीव उपजने का, वा तहा सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित होने के काल का, अर प्रत्येक वनस्पती विषै सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित जानने कौं तिनके लक्षण का, बहुरि साधारण वनस्पती निगोदरूप तहा जीवनि के उपजने, पर्याप्ति धरने, मरने के विधान का, अर निगोद शरीर की उत्कृष्ट स्थिति का, अर स्कध, अडर, पुलवी, आवास, देह, जीव इनके लक्षण प्रमाणादिक का अर नित्यनिगोदादि के स्वरूप का वर्णन है। बहुरि त्रस जीवनि का अर तिनके क्षेत्र का वर्णन है। बहुरि वनस्पतीवत् औरनि के शरीर विषै सप्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठितपने का, अर स्थावर, त्रस

जीवनि के आकार का, अर काय सहित, काय रहित जीवनि का वर्णन है। बहुरि अग्नि, पृथ्वी, अप्, वात, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित प्रत्येक-साधारण वनस्पती जीवनि की, अर तिनविषै सूक्ष्म-बादर जीवनि की, अर तिनविषै भी पर्याप्त-अपर्याप्त जीवनि की संख्या का वर्णन है। तहा प्रसग पाइ पृथ्वी आदि जीवनि की उत्कृष्ट आयु का वर्णन है। बहुरि त्रस जीवनि की, अर तिनविषै पर्याप्त-अपर्याप्त जीवनि की सख्या का वर्णन है। बहुरि बादर अग्निकायिक आदि की सख्या का विशेष निर्णय करने के अर्थि तिनके अर्धच्छेदादिक का, अर प्रसग पाइ **"दिण्णछेदेणवहिद"** इत्यादिक करणसूत्र का वर्णन है।

बहुरि नवमां योगमार्गणा अधिकार विषै – योग के सामान्य लक्षण का अर सत्य आदि च्यारि-च्यारि प्रकार मन, वचन योग का वर्णन है। तहा सत्य वचन का विशेष जानने कौं दश प्रकार सत्य का, अर अनुभय वचन का विशेष जानने कौं आमत्रणी आदि भाषानि का, अर सत्यादिक भेद होने के कारण का, अर केवली के मन, वचन योग सभवने का अर द्रव्य मन के आकार का इत्यादि विशेष वर्णन है। बहुरि काय योग के सात भेदनि का वर्णन है। तहा औदारिकादिकनि के निरुक्ति पूर्वक लक्षण का, अर मिश्रयोग होने के विधान का, अर आहारक शरीर होने के विशेष का, अर कार्माणयोग के काल का विशेष वर्णन है। बहुरि युगपत् योगनि की प्रवृत्ति होने का विधान वर्णन है। अर योग रहित आत्मा का वर्णन है। बहुरि पच शरीरनि विषै कर्म-नोकर्म भेद का, अर पच शरीरनि की वर्गणा वा समय प्रबद्ध विषै परमाणूनि का प्रमाण वा क्रम तै सूक्ष्मपना वा तिनकी अवगाहना का वर्णन है। बहुरि विस्रसोपचय का स्वरूप वा तिनकी परमाणुनि के प्रमाण का वर्णन है। बहुरि कर्म-नोकर्म का उत्कृष्ट सचय होने का काल वा सामग्री का वर्णन है। बहुरि औदारिक आदि पच शरीरनि का द्रव्य तौ समय प्रबद्धमात्र कहि। तिनकी उत्कृष्ट स्थिति, अर तहाँ सभवती गुणहानि, नाना गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्तराशि, दो गुणहानि का स्वरूप प्रमाण कहि, करणसूत्रादिक तै तहा चयादिक का प्रमाण ल्याय समय-समय सबधी निषेकनि का प्रमाण कहि, एक समय विषै केते परमाणू उदयरूप होइ निर्जरै, केते सत्ता विषै अवशेष रहै, ताके जानने कौं अकसंदृष्टि की अपेक्षा लिये त्रिकोण यंत्र का कथन है। बहुरि वैक्रियिकादिकनि का उत्कृष्ट सचय कौनकै कैसै होइ सो वर्णन है। बहुरि योगमार्गणा विषै जीवनि की सख्या का वर्णन विषै वैक्रियिक शक्ति करि संयुक्त बादर पर्याप्त अग्निकायिक, वातकायिक अर पर्याप्त पचेन्द्रिय तिर्यच, मनुष्यनि के प्रमाण का, अर भोगभूमिया आदि

जीवनि कै पृथक् विक्रिया, अर औरनि कै अपृथक् विक्रिया हो है, ताका कथन है। बहुरि त्रियोगी, द्वियोगी, एकयोगी जीवनि का प्रमाण कहि त्रियोगीनि विषै आठ प्रकार मन-वचनयोगी अर काययोगी जीवनि का, अर द्वियोगीनि विषै वचन-काययोगीनि का प्रमाण वर्णन है। तहा प्रसग पाइ सत्यमनोयोगादि वा सामान्य मन-वचन-काय योगनि के काल का वर्णन है। बहुरि काययोगीनि विषै सात प्रकार काययोगीनि का जुदा-जुदा प्रमाण वर्णन है। तहा प्रसग पाइ औदारिक, औदारिकमिश्र, कार्माण के काल का, वा व्यतरनि विषै सोपक्रम, अनुपक्रम काल का वर्णन है। बहुरि यहु कथन है (जो)जीवनि की सख्या उत्कृष्टपनै युगपत् होने की अपेक्षा कही है।

बहुरि दशवां वेदमार्गणा अधिकार विषै – भाव-द्रव्यवेद होने के विधान का, अर तिनके लक्षण का, अर भाव-द्रव्यवेद समान वा असमान हो है ताका, अर वेदनि का कारण दिखाई ब्रह्मचर्य अगीकार करने का अर तीनों वेदनि का निरुक्ति लिये लक्षण का, अर अवेदी जीवनि का वर्णन है। बहुरि तहा सख्या का वर्णन विषै देव राशि कही। तहा स्त्री-पुरुषवेदीनि का, अर तिर्यंचनि विषै द्रव्य-स्त्री आदि का प्रमाण कहि समस्त पुरुष, स्त्री, नपुसकवेदीनि का प्रमाण वर्णन है। बहुरि सैनी पचेन्द्री गर्भज, नपुसकवेदी इत्यादिक ग्यारह स्थाननि विषै जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि ग्यारहवां कषायमार्गणा अधिकार विषै – कषाय का निरुक्ति लिये लक्षण का, वा सम्यक्त्वादिक घातने रूप दूसरे अर्थ विषै अनन्तानुबधी आदि का निरुक्ति लिए लक्षण का वर्णन है। बहुरि कषायनि के एक, च्यारि, सोलह, असख्यात लोकमात्र भेद कहि क्रोधादिक की उत्कृष्टादि च्यारि प्रकार शक्तिनि का दृष्टात वा फल की मुख्यता करि वर्णन है। बहुरि पर्याय धरने के पहलै समय कषाय होने का नियम है वा नाही है सो वर्णन है। बहुरि अकषाय जीवनि का वर्णन है। बहुरि क्रोधादिक के शक्ति अपेक्षा च्यार, लेश्या अपेक्षा चौदह, आयुबध अर अबध अपेक्षा बीस भेद है, तिनका अर सर्व कषायस्थाननि का प्रमाण कहि तिन भेदनि विषै जेते-जेते स्थान सभवै तिनका वर्णन है। बहुरि इहा जीवनि की सख्या का वर्णन विषै नारकी, देव, मनुष्य, तिर्यच गति विषै जुदा-जुदा क्रोधी आदि जीवनि का प्रमाण वर्णन है। तहा प्रसग पाइ तिन गतिनि विषै क्रोधादिक का काल वर्णन है।

बहुरि बारहवां ज्ञानमार्गणा अधिकार विषै – ज्ञान का निरुक्ति पूर्वक लक्षण कहि, ताके पच भेदनि का अर क्षयोपशम के स्वरूप का वर्णन है। बहुरि तीन मिथ्या ज्ञाननि का, अर मिश्र ज्ञाननि का अर तीन कुज्ञाननि के परिणमन के उदाहरण का

वर्णन है । बहुरि मतिज्ञान का वर्णन विषै याके नामांतर का, अर इंद्रिय-मन तै उपजने का अर तहा अवग्रहादि होने का, अर व्यजन-अर्थ के स्वरूप का, अर व्यंजन विषै नेत्र, मन वा ईहादिक न पाइए ताका, अर पहले दर्शन होइ पीछै अवग्रहादि होने के क्रम का अर अवग्रहादिकनि के स्वरूप का, अर अर्थ-व्यजन के विषयभूत बहु, बहुविध आदि बारह भेदनि का, तहा अनिसृति विषै च्यारि प्रकार परोक्ष प्रमाण गर्भितपना आदि का, अर मतिज्ञान के एक, च्यारि, चौबीस, अट्ठाईस अर इनतै बारह गुणे भेदनि का वर्णन है । बहुरि श्रुतज्ञान का वर्णन विषै श्रुतज्ञान का लक्षण निरुक्ति आदि का, अर अक्षर-अनक्षर रूप श्रुतज्ञान के उदाहरण वा भेद वा प्रमाण का वर्णन है । बहुरि भाव श्रुतज्ञान अपेक्षा बीस भेदनि का वर्णन है । तहा पहिला जघन्यरूप पर्याय ज्ञान का वर्णन विषै ताके स्वरूप का, अर तिसका आवरण जैसै उदय हो है ताका, अर यहु जाकै हो है ताका, अर याका दूसरा नाम लब्धि अक्षर है, ताका वर्णन है । अर पर्यायसमास ज्ञान का वर्णन विषै षट्स्थानपतित वृद्धि का वर्णन है । तहा जघन्य ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कहि । अर अनंतादिक का प्रमाण अर अनत भागादिक की सहनानी कहि, जैसै अनतभागादिक षट्स्थानपतित वृद्धि हो है, ताके क्रम का यत्र द्वार तै वर्णन करि अनत भागादि वृद्धिरूप स्थाननि विषै अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण ल्यावने कौ प्रक्षेपक आदि का विधान, अर तहा प्रसग पाइ एक बार, दोय बार, आदि सकलन धन ल्यावने का विधान, अर साधिक जघन्य जहा दूणा हो है, ताका विधान, अर पर्याय समास विषै अनतभाग आदि वृद्धि होने का प्रमाण इत्यादि विशेष वर्णन है । बहुरि अक्षर आदि अठारह भेदनि का क्रम तै वर्णन है । तहां अर्थाक्षर के स्वरूप का, अर तीन प्रकार अक्षरनि का अर शास्त्र के विषयभूत भावनि के प्रमाण का, अर तीन प्रकार पदनि का अर चौदह पूर्वनि विषै वस्तु वा प्राभृत नामा अधिकारनि के प्रमाण का इत्यादि वर्णन है । बहुरि बीस भेदनि विषै अक्षर, अनक्षर श्रुतज्ञान के अठारह, दोय भेदनि का अर पर्यायज्ञानादि की निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन है ।

बहुरि द्रव्यश्रुत का वर्णन विषै द्वादशाग के पदनि की अर प्रकीर्णक के अक्षरनि की सख्यानि का, बहुरि चौसठ मूल अक्षरनि की प्रक्रिया का, अर अपुनरुक्त सर्व अक्षरनि का प्रमाण वा अक्षरनि विषै प्रत्येक-द्विसंयोगी आदि भगनि करि तिस प्रमाण ल्यावने का विधान अर सर्व श्रुत के अक्षरनि का प्रमाण वा अक्षरनि विषै अंगनि के पद अर प्रकीर्णकनि के अक्षरनि के प्रमाण ल्यावने का विधान इत्यादि वर्णन है । बहुरि आचाराग आदि ग्यारह अंग, अर दृष्टिवाद अग के पांच भेद, तिनमैं परिकर्म के पाच

भेद, तहा सूत्र अर प्रथमानुयोग का एक-एक भेद, अर पूर्वगत के चौदह भेद, चूलिका के पाच भेद, इन सबनि के जुदा-जुदा पदनि का प्रमाण अर इन विषै जो-जो व्याख्यान पाइए, ताकी सूचनिका का कथन है । तहां प्रसंग पाइ तीर्थंकर की दिव्यध्वनि होने का विधान, अर वर्द्धमान स्वामी के समय दश-दश जीव अंत कृत केवली अर अनुत्तरगामी भए तिनकानाम अर तीन सौ तिरेसठि कुवादनि के धारकनि विषै केई कुवादीनि के नाम अर सप्त भग का विधान, अर अक्षरनि के स्थान-प्रयत्नादिक, अर बारह भाषा अर आत्मा के जीवादि विशेषरण इत्यादि घने कथन है । बहुरि सामायिक आदि चौदह प्रकीर्णकनि का स्वरूप वर्णन है । बहुरि श्रुतज्ञान की महिमा का वर्णन है ।

बहुरि अवधिज्ञान का वर्णन विषै निरुक्ति पूर्वक स्वरूप कहि, ताके भवप्रत्यय-गुणप्रत्यय भेदनि का, अर ते भेद कौनकै होय, कौन आत्मप्रदेशनि तै उपजै ताका, अर तहा गुणप्रत्यय, के छह भेदनि का, तिनविषै अनुगामी, अननुगामी के तीन-तीन भेदनि का वर्णन है । बहुरि सामान्यपनै अवधि के देशावधि, परमावधि, सर्वावधि भेदनि का, अर तिन विषै भवप्रत्यय-गुणप्रत्यय के सभवपने का, अर ए कौनकै होइ-ताका, अर तहा प्रतिपाती, अप्रतिपाती, विशेष का, अर इनके भेदनि के प्रमाण का, वर्णन है । बहुरि जघन्य देशावधि का विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का वर्णन करि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव अपेक्षा द्वितीयादि उत्कृष्ट पर्यंत क्रम तैं भेद होने का विधान, अर तहा द्रव्यादिक के प्रमाण का अर सर्व भेदनि के प्रमाण का वर्णन है । तहा प्रसग पाइ ध्रुवहार, वर्ग, वर्गणा, गुणाकार इत्यादिक का अनेक वर्णन है । अर तहा ही क्षेत्र-काल अपेक्षा तिस देशावधि के उगणीस काण्डकनि का वर्णन है ।

बहुरि परमावधि के विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव अपेक्षा जघन्य तै उत्कृष्ट पर्यन्त क्रम तै भेद होने का विधान, वा तहा द्रव्यादिक का प्रमाण वा सर्व भेदनि के प्रमाण का वर्णन है । तहा प्रसग पाइ सकलित धन ल्यावने का अर "इच्छिदरासिच्छेदं" इत्यादि दोय करणसूत्रनि का आदि अनेक वर्णन है ।

बहुरि सर्वावधि अभेद है । ताकै विषयभूत द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का वर्णन है । बहुरि जघन्य देशावधि तै सर्वावधि पर्यंत द्रव्य अर भाव अपेक्षा भेदनि की समानता का वर्णन है । बहुरि नरक विषै अवधि का वा ताके विषयभूत क्षेत्र का, अर मनुष्य, तिर्यंच विषै जघन्य-उत्कृष्ट अवधि होने का, अर देव विषै भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिषीनि के अवधिगोचर क्षेत्रकाल का, सौधर्मादि द्विकनि विषै क्षेत्रादिक का, वा [illegible] का भी वर्णन है ।

बहुरि मन पर्ययज्ञान का वर्णन विषै ताके स्वरूप का, अर दोय भेदनि का अर तहा ऋजुमति तीन प्रकार, विपुलमति छह प्रकार ताका, अर मन.पर्यय जहातै उपजै है अर जिनकै हो है ताका, अर दोय भेदनि विषै विशेष है ताका, अर जीव करि चितया हुवा द्रव्यादिक कौ जानै ताका, अर ऋजुमति का विषयभूत द्रव्य का अर मनःपर्यय संबंधी ध्रुवहार का, अर विपुलमति के जघन्य तै उत्कृष्ट पर्यन्त द्रव्य अपेक्षा भेद होने का विधान, वा भेदनि का प्रमाण, वा द्रव्य का प्रमाण कहि, जघन्य उत्कृष्ट क्षेत्र, काल, भाव का वर्णन है ।

बहुरि केवलज्ञान सर्वज्ञ है, ताका वर्णन है । बहुरि इहा जीवनि की सख्या का वर्णन विषै मति, श्रुति, अवधि, मन.पर्यय, केवलज्ञानी का अर च्यारो गति सबंधी विभगज्ञानीनि का, अर कुमति-कुश्रुत-ज्ञानीनि का प्रमाण वर्णन है ।

बहुरि तेरहवां संयममार्गणा अधिकार विषै – ताके स्वरूप का, अर सयम के भेद के निमित्त का वर्णन है । बहुरि सयम के भेदनि का स्वरूप वर्णन है । तहा परिहारविशुद्धि का विशेष, अर ग्यारह प्रतिमा, अट्ठाईस विषय इत्यादिक का वर्णन है । बहुरि इहा जीवनि को सख्या का वर्णन विषै सामायिक, छेदोपस्थापन, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसापराय, यथाख्यात सयमधारी, अर सयतासयत, अर असयत जीवनि का प्रमाण वर्णन है ।

बहुरि चौदहवां दर्शनमार्गणा अधिकार विषै – ताके स्वरूप का, अर दर्शन भेदनि के स्वरूप का वर्णन है । बहुरि इहा जीवनि की सख्या का वर्णन विषै शक्ति चक्षुर्दर्शनी, व्यक्त चक्षुर्दर्शनीनि का अर अवधि, केवल, अचक्षुर्दर्शनीनि का प्रमाण वर्णन है ।

बहुरि पंद्रहवां लेश्यामार्गणा अधिकार विषै – द्रव्य, भाव करि दोय प्रकार लेश्या कहि, भावलेश्या का निरुक्ति लिए लक्षण अर ताकरि बध होने का वर्णन है । बहुरि सोलह अधिकारनि के नाम है । बहुरि निर्देशाधिकार विषै छह लेश्यानि के नाम है । अर वर्णाधिकार विषै द्रव्य लेश्यानि के कारण का, अर लक्षण का, अर छहो द्रव्य लेश्यानि के वर्ण का दृष्टात का, अर जिनकै जो-जो द्रव्य लेश्या पाइए, ताका व्याख्यान है । बहुरि प्रमाणाधिकार विषै कषायनि के उदयस्थाननि विषै सक्लेशविशुद्धि स्थाननि के प्रमाण का, अर तिनविषै भी कृष्णादि लेश्यानि के स्थाननि के प्रमाण का, अर सक्लेशविशुद्धि की हानि, वृद्धि तै अशुभ, शुभलेश्या होने के

अनुक्रम का वर्णन है। बहुरि सक्रमणाधिकार विषै स्वस्थान-परस्थान सक्रमण कहि सक्लेशविशुद्धि का वृद्धि-हानि तै जैसै सक्रमण हो है ताका, अर सक्लेशविशुद्धि विषै जैसै लेश्या के स्थान होइ, अर तहा जैसै षट्स्थानपतित वृद्धि-हानि सभवै, ताका वर्णन है। बहुरि कर्माधिकार विषै छहो लेश्यावाले कार्य विषै जैसै प्रवर्ते, ताके उदाहरण का वर्णन है। बहुरि लक्षणाधिकार विषै छहो लेश्यावालेनि का लक्षण वर्णन है।

बहुरि गति अधिकार विषै लेश्यानि के छब्बीस अश, तिनविषै आठ मध्यम अश आयुबध कौ कारण, ते आठ अपकर्षकालनि विषै होइ, तिन अपकर्षनि का उदाहरणपूर्वक स्वरूप का अर तिनविषै आयु न बधै तौ जहा बधै ताका, अर सोपक्रमायुष्क, निरुपक्रमायुष्क, जीवनि कै अपकर्षणरूप काल का, वा तहा आयु बधने का विधान वा गति आदि विशेष का, अर अपकर्षनि विषै आयु बधनेवाले जीवनि के प्रमाण का वर्णन करि पीछै लेश्यानि के अठारह अशनि विषै जिस-जिस अश विषै मरण भए, जिस-जिस स्थान विषै उपजै ताका वर्णन है।

बहुरि स्वामी अधिकार विषै भाव लेश्या की अपेक्षा सात नरकनि के नारकीनि विषै, अर मनुष्य-तिर्यंच विषै, तहा भी एकेद्रिय-विकलत्रय विषै, असैनी पचेद्रिय विषै लब्धि अपर्याप्तक तिर्यंच-मनुष्य विषै, अपर्याप्तक तिर्यच-मनुष्य-भवनत्रिकदेव सासादन वालो विषै, पर्याप्त-अपर्याप्त भोगभूमिया विषै, मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थानिनि विषै, पर्याप्त भवनत्रिक-सौधर्मादिक आदि देवनि विषै जो-जो लेश्या पाइए ताका वर्णन है। तहा असैनी के लेश्यानिमित्त तै गति विषै उपजने का आदि विशेष कथन है।

बहुरि साधन अधिकार विषै द्रव्य लेश्या अर भाव लेश्यानि के कारण का वर्णन है।

बहुरि सख्याधिकार विषै द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, मान करि कृष्णादि लेश्यावाले जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि क्षेत्राधिकार विषै सामान्यपनै स्वस्थान, समुद्घात, उपपाद अपेक्षा, विशेषपनै दोय प्रकार स्वस्थान, सात प्रकार समुद्घात, एक उपपाद इन दश स्थाननि विषै सभवतै स्थाननि की अपेक्षा कृष्णादि लेश्यानि का (स्थान वर्णन कहिए) क्षेत्र वर्णन है। तहा प्रसग पाइ विवक्षित लेश्या विषै सभवतै स्थान, तिन विषै जीवनि के प्रमाण का, तिन स्थाननि विषै क्षेत्र के प्रमाण का, समुद्घातादिक के विधान का, क्षेत्रफलादिक का, मरने वाले आदि देवनि के प्रमाण का, केवल समुद्घात विषै दड-कपाटादिक का, तहा लोक के क्षेत्रफल का इत्यादिक का वर्णन है।

बहुरि स्पर्शाधिकार विषै पूर्वोक्त सामान्य-विशेषपनै करि लेश्यानि का तीन काल सबधी क्षेत्र का वर्णन है । तहाँ प्रसग पाइ मेरु तै सहस्रार पर्यंत सर्वत्र पवन के सद्भाव का, अर जबूद्वीप समान लवणसमुद्र के खड, लवणसमुद्र के समान अन्य समुद्र के खड करने के विधान का, अर जलचर रहित समुद्रनि का मिलाया हुआ क्षेत्रफल के प्रमाण का, अर देवादिक के उपजने, गमन करने का इत्यादि वर्णन है ।

बहुरि काल अधिकार विषै कृष्णादि लेश्या जितने काल रहै ताका वर्णन है ।

बहुरि अंतराधिकार विषै कृष्णादि लेश्या का जघन्य, उत्कृष्ट जितने काल-अभाव रहै, ताका वर्णन है । तहा प्रसग पाइ एकेद्री, विकलेद्री विषै उत्कृष्ट रहने के काल का वर्णन है ।

बहुरि भावाधिकार विषै छहौ लेश्यानि विषै औदयिक भाव के सद्भाव का वर्णन है ।

बहुरि अल्पबहुत्व अधिकार विषै सख्या के अनुसारि लेश्यानि विषै परस्पर अल्प-बहुत्व का व्याख्यान है, ऐसै सोलह अधिकार कहि लेश्या रहित जीवनि का व्याख्यान है ।

बहुरि सोलहवां भव्यमार्गणा अधिकार विषै – दोय प्रकार भव्य अर अभव्य अर भव्य-अभव्यपना करि रहित जीवनि का स्वरूप वर्णन है । बहुरि इहा सख्या का कथन विषै भव्य-अभव्य जीवनि का प्रमाण वर्णन है । बहुरि इहा प्रसग पाइ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव, भावरूप पचपरिवर्तननि के स्वरूप का, वा जैसे क्रम तै परिवर्तन हो है ताका, अर परिवर्तननि के काल का, अनादि तै जेते परिवर्तन भए, तिनके प्रमाण का वर्णन है । तहा गृहीतादि पुद्गलनि के स्वरूप सदृष्टि का, वा योग स्थान आदिकनि का वर्णन पाइए है ।

बहुरि सतरहवां सम्यक्त्वमार्गणा अधिकार विषै – सम्यक्त्व के स्वरूप का, अर सराग-वीतराग के भेदनि का अर षट् द्रव्य, नव पदार्थनि के श्रद्धानरूप लक्षण का वर्णन है । बहुरि षट् द्रव्य का वर्णन विषै सात अधिकारनि का कथन है ।

तहा नाम अधिकार विषै द्रव्य के एक वा दोय भेद का, अर जीव-अजीव के दोय-दोय भेदनि का, अर तहा पुद्गल का निरुक्ति लिए लक्षण का, पुद्गल परमाणु के आकार का वर्णनपूर्वक रूपी-अरूपी अजीव द्रव्य का कथन है ।

बहुरि उपलक्षणानुवादाधिकार विषै छहो द्रव्यनि के लक्षणनि का वर्णन है । तहां गति आदि क्रिया जीव-पुद्गल कै है, ताका कारण धर्मादिक है, ताका दृष्टांत-

पूर्वक वर्णन है। अर वर्तनाहेतुत्व काल के लक्षण का दृष्टातपूर्वक वर्णन है। अर मुख्य काल के निश्चय होने का, काल कै धर्मादिक कौ कारणपने का, समय, आवली आदि व्यवहारकाल के भेदनि का, तहा प्रसग पाइ प्रदेश के प्रमाण का, वा अतर्मुहूर्त के भेदनि का, वा व्यवहारकाल जाननें कौ निमित्त का, व्यवहारकाल के अतीत, अनागत, वर्तमान भेदनि के प्रमाण का, वा व्यवहार निश्चय काल के स्वरूप का वर्णन है।

वहुरि स्थिति अधिकार विषै सर्व अपने पर्यायनि का समुदायरूप अवस्थान का वर्णन है।

वहुरि क्षेत्राधिकार विषै जीवादिक जितना क्षेत्र रोकै, ताका वर्णन है। तहा प्रसग पाइ तीन प्रकार आधार वा जीव के समुद्घातादि क्षेत्र का वा सकोच विस्तार शक्ति का वा पुद्गलादिकनि की अवगाहन शक्ति का वा लोकालोक के स्वरूप का वर्णन है।

वहुरि सख्याधिकार विषै जीव द्रव्यादिक का वा तिनके प्रदेशनि का, वा व्यवहार काल के प्रमाण का, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव मान करि वर्णन है।

वहुरि स्थान स्वरूपाधिकार विषै (द्रव्यनि का वा) द्रव्य के प्रदेशनि का चल, अचलपने का वर्णन है। वहुरि अणुवर्गणा आदि तेईस पुद्गल वर्गणानि का वर्णन है। तहा तिन वर्गणानि विषै जेती-जेती परमाणू पाइए, ताका आहारादिक वर्गणा तै जो-जो कार्य निपजे है ताका जघन्य, उत्कृष्ट, प्रत्येकादि वर्गणा जहा पाइए ताका, महास्कध वर्गणा के स्वरूप का, अणुवर्गणा आदि का वर्गणा लोक विषै जितनी जितनी पाइए ताका इत्यादि का वर्णन है। वहुरि पुद्गल के स्थूल-स्थूल आदि छह भेदनि का, वा स्कध, प्रदेश, देश इन तीन भेदनि का वर्णन है।

वहुरि फल अधिकार विषै धर्मादिक का गति आदि साधनरूप उपकार, जीवनि के परस्पर उपकार, पुद्गलनि का कर्मादिक वा सुखादिक उपकार, तिनका प्रश्नोत्तरादिक लिए वर्णन है। तहां प्रसग पाइ कर्मादिक पुद्गल ही है ताका, अर कर्मादिक जिस-जिस पुद्गल वर्गणा तै निपजै है ताका, अर स्निग्ध-रूक्ष के गुणनि के वर्णन करि जैसे पुद्गल का बध हो है, ताका वर्णन है। ऐसे षट् द्रव्य का वर्णन करि तहा काल विना पचास्तिकाय है, ताका वर्णन है। वहुरि नव पदार्थनि का [illegible] जीव-अजीव का तौ षट् द्रव्यनि विषै वर्णन भया। वहुरि पाप जीव [illegible] का वर्णन है। तहा प्रसग पाइ चौदह गुण-स्थाननि विषै जीवनि का

प्रमाण वर्णन है। तहा उपशम, क्षपक श्रेणीवाले निरंतर अष्ट समयनि विषै जेते जेते होइ ताका, वा युगपत् बोधितबुद्धि आदि जीव जेते-जेते होंइ ताका, अर सकल संयमीनि के प्रमाण का वर्णन है। बहुरि सातै नरक के नारकी, भवनत्रिक, सौधर्मद्विकादिक देव, तिर्यच, मनुष्य ए जेते-जेते मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि विषै पाइए, तिनका वर्णन है। बहुरि गुणस्थाननि विषै पुण्य जीव, पाप जीवनि का भेद वर्णन है। बहुरि पुद्गलीक द्रव्य पुण्य-पाप का वर्णन है। बहुरि आस्रव, बंध, सवर निर्जरा, मोक्षरूप पुद्गलनि का प्रमाण वर्णन है। ऐसै षट् द्रव्यादिक का स्वरूप कहि, तिनके श्रद्धानरूप सम्यक्त्व के भेदनि का वर्णन है।

तहा क्षायिक सम्यक्त्व के भेदनि का वर्णन है।[१] तहा क्षायिक सम्यक्त्व होने के कारण का, ताके स्वरूप का, ताकौ पाऐ जेते भवनि विषै मुक्ति होइ ताका, तिसकी महिमा का, अर तिसका प्रारभ, निष्ठापन जहा होइ, ताका वर्णन है।

बहुरि वेदकसम्यक्त्व के कारण का वा स्वरूप का वर्णन है। बहुरि उपशम सम्यक्त्व के स्वरूप का, कारण का, पंचलब्धि आदि सामग्री का, वा जाके उपशम सम्यक्त्व होइ ताका वर्णन है। तहा प्रसग पाइ आयुबध भए पीछै सम्यक्त्व, व्रत होने न होने का वर्णन है। बहुरि सासादन, मिश्र, मिथ्यारुचि का वर्णन है। बहुरि इहां जीवनि की सख्या का वर्णन विषै क्षायिक, उपशम, वेदक सम्यग्दृष्टिनि का अर मिथ्यादृष्टि, सासादन, मिश्र जीवनि का प्रमाण वर्णन है। बहुरि नव पदार्थनि का प्रमाण वर्णन है। तहा जीव अर अजीव विषै पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल अर पुण्य-पाप रूप जीव, अर पुण्य-पाप रूप अजीव अर आस्रव, सवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष इनके प्रमाण का निरूपण है।

बहुरि अठारहवां संज्ञी मार्गणा अधिकार विषै – संज्ञी के स्वरूप का, सज्ञी असंज्ञी जीवनि के लक्षण का वर्णन है। अर इहा सख्या का वर्णन विषै सज्ञी-असज्ञी जीवनि का प्रमाण वर्णन है।

बहुरि उगणीसवां आहारमार्गणा अधिकार विषै – आहारक के स्वरूप वा निरुक्ति का अर अनाहारक जिनकै हो है ताका, तहा प्रसग पाइ सात समुद्घातनि के नाम वा समुद्घात के स्वरूप का, अर आहारक अनाहारक के काल का वर्णन है। बहुरि तहा आहारक-अनाहारक जीवनि का प्रमाण वर्णन है। तहा प्रसंग पाइ **प्रक्षेपयोगोद्धृतिमिश्रपिंड** इत्यादि सूत्र करि मिश्र के व्यवहार का कथन है।

---

१. यह वाक्य छपी प्रति मे मिलता है, किन्तु इसका अर्थ स्पष्ट नही होता।

बहुरि बीसवां उपयोग अधिकार विषै – उपयोग के लक्षण का, साकार-अनाकार भेदनि का, उपयोग है सो व्याप्ति, अव्याप्ति, असंभवी दोष रहित जीव का लक्षण है ताका, अर केवलज्ञान-केवलदर्शन विना साकार-अनाकार उपयोगनि का काल अंतर्मूहूर्त मात्र है, ताका वर्णन है। बहुरि इहा जीवनि की सख्या साकारोपयोग विषै ज्ञानमार्गणावत् अर अनाकारोपयोग विषै दर्शनमार्गणावत् है ताका वर्णन है।

बहुरि इक्कीसवां ओघादेशयो प्ररूपणा प्ररूपण अधिकार विषै – गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषै यथासभव गुणस्थान अर जीवसमासनि का वर्णन है। तहां द्वितीयोपशम सम्यक्त्व विषै पर्याप्त-अपर्याप्त अपेक्षा गुणस्थाननि का विशेष कह्या है। बहुरि गुणस्थाननि विषै सभवते जे जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणानि के भेद, उपयोग, तिनका वर्णन है। तहा मार्गणा वा उपयोग के स्वरूप का भी किछू वर्णन है। तहा योग भव्यमार्गणानि के भेदनि का, वा सम्यक्त्वमार्गणा विषै प्रथम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का इत्यादि विशेष-सा वर्णन है। अर गति आदि केई मार्गणानि विषै पर्याप्त, अपर्याप्त अपेक्षा कथन है।

बहुरि बावीसवां आलाप अधिकार विषै – मंगलाचरण करि सामान्य, पर्याप्त, अपर्याप्त करि तीन आलाप, अर अनिवृत्तिकरण विषै पंच भागनि की अपेक्षा पच आलाप, तिनका गुणस्थाननि विषै वा गुणस्थान अपेक्षा चौदह मार्गणा के भेदनि विषै यथासभव कथन है। तहा गतिमार्गणा विषै किछू विशेष-सा कथन है। बहुरि गुणस्थान मार्गणास्थाननि विषै गुणस्थानादि बीस प्ररूपणा यथासभव आलापनि की अपेक्षा निरूपण करनी। तहा पर्याप्त, अपर्याप्त एकेंद्रियादि जीवनी कै सभवते पर्याप्ति, प्राण, जीवसमासादिक का किछू वर्णन करि यथायोग्य सर्व प्ररूपणा जानने का उपदेश है। बहुरि तिनके जानने कौ यत्रनि करि कथन है। तहा पहिलैं यत्रनि विषै जैसैं अनुक्रम है, वा समस्या है, वा विशेष है सो कथन है। पीछैं एक-एक रचना विषै बीस-बीस प्ररूपणा का कथन स्वरूप छह सौ चौदह यत्रनि की रचना है। तहा केई रचना समान जानि बहुत रचनानि की एक रचना है। बहुरि मनःपर्यय ज्ञानादिक विषै एक होतै अन्य न होय ताका, उपशम श्रेणी तै उतरि मरण भए उपजने का, सिद्धनि विषै संभवती प्ररूपणानि का निक्षेपादिक करि प्ररूपणा जानने के उपदेश का वर्णन है। बहुरि आशीर्वाद है। बहुरि टीकाकार के वचन हैं।

ऐसें जीवकाण्ड नामा महा अधिकार के बावीस अधिकारनि विषै क्रम तै व्याख्यान की सूचनिका जाननी।

गोम्मटसार कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रकरण

ॐ नमः । अथ कर्म (अजीवकाड) नामा महाअधिकार के नव अधिकार हैं । तिनके व्याख्यान की सूचना मात्र क्रम तै कहिए है –

तहां पहिला **प्रकृतिसमुत्कीर्तन-अधिकार** विषै मंगलाचरणपूर्वक प्रतिज्ञा करि प्रतिज्ञा के स्वरूप का, जीव-कर्म के संबध का, तिनके अस्तित्व का, दृष्टातपूर्वक कर्म-परमाणूनि के ग्रहण का, बंध, उदय, सत्त्वरूप कर्मपरमाणूनि के प्रमाण का वर्णन है । बहुरि ज्ञानावरणादिक आठ मूल प्रकृतिनि के नाम का, इन विषै घाती-अघाती भेद का, इनकरि कार्य हो है ताका, इनके क्रम संभवने का, दृष्टात निरुक्ति लिए इनके स्वरूप का वर्णन है । बहुरि इनकी उत्तर प्रकृतिनि का कथन है । तहा पंच निद्रा का, तीन दर्शनमोह होने के विधान का, पच शरीरनि के पद्रह भगनि का, विवक्षित संहननवाले देव-नरक गतिविषै जहा उपजै ताका, कर्मभूमि की स्त्रीनि के तीन संहनन है ताका, आताप प्रकृति के स्वरूप वा स्वामित्व का विशेष-व्याख्यान सा है ।

बहुरि मतिज्ञानावरणादि उत्तर प्रकृतिनि के निरुक्ति लिए स्वरूप का वर्णन है । तहां प्रसंग पाइ अभव्य के केवलज्ञान के सद्भाव विषै प्रश्नोत्तर का, सात धातु, सात उपधातु का इत्यादि वर्णन है । बहुरि अभेद विवक्षाकरि जे प्रकृति गर्भित हो है, तिनका वर्णनकरि बंध-उदय-सत्तारूप जेती-जेती प्रकृति है, तिनका वर्णन है । बहुरि घातियानि विषै सर्वघाती-देशघाती प्रकृतिनि का, अर सर्व प्रकृतिनि विषै प्रशस्त-अप्रशस्त प्रकृतिनि का वर्णन है । बहुरि अनंतानुबधी आदि कषायनि का कार्य वा वासनाकाल का वर्णन है । बहुरि कर्म-प्रकृतिनि विषै पुद्गलविपाकी, भवविपाकी, क्षेत्रविपाकी, जीवविपाकी प्रकृतिनि का वर्णन है ।

बहुरि प्रसंग पाइ सशय, विपर्यय, अनध्यवसाय का वर्णनपूर्वक तीन प्रकार श्रोतानि का वर्णनकरि प्रकृतिनि के चार निक्षेपनि का वर्णन है । तहा नामादि निक्षेपनि का स्वरूप कहि नाम निक्षेप का अर तदाकार-अतदाकाररूप दोय प्रकार स्थापना निक्षेप का अर आगम-नोआगम रूप दोय प्रकार द्रव्य निक्षेप का; तहां नो-आगम के ज्ञायक, भावी, तद्व्यतिरिक्तरूप तीन प्रकार का, तहा भी भूत, भावी, वर्तमानरूप ज्ञायकशरीर के तीन भेदनि का, तहा भी च्युत, च्यावित, त्यक्तरूप भूत शरीर के तीन भेदनि का, तहा भी त्यक्त के भक्त, प्रतिज्ञा, इगिनी, प्रायोपगमनरूप भेदनि का, तहां भी भक्त प्रतिज्ञा के उत्कृष्ट, मध्य, जघन्यरूप तीन प्रकारनि का अर तद्व्यतिरिक्त नो-आगम द्रव्य के कर्म-नोकर्म भेदनि का, बहुरि भावनिक्षेप के आगम,

नोआगम भेदनि का वर्णन है। तहां मूल प्रकृतिनि विषै इनका कहि उत्तर प्रकृतिनि विषै वर्णनहै। तहा औरनि का सामान्यपनै सभवपना कहि, नोकर्मरूप तद्व्यतिरिक्त-नो-आगम-द्रव्य का जुदी-जुदी प्रकृतिनि विषै वर्णन है। अर नोआगमभाव का समुच्चयरूप वर्णन है।

बहुरि दूसरा **बंध-उदय-सत्त्वयुक्तस्तवनामा** अधिकार है। तहा नमस्कार पूर्वक प्रतिज्ञाकरि स्तवनादिक का लक्षण वर्णन है। बहुरि बंध-व्याख्यान विषै बंध के प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशरूप भेदनि का, अर तिनविषै उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्यपने का, अर इनविषै भी सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव संभवने का वर्णन है।

बहुरि प्रकृतिबध का कथन विषै गुणस्थाननि विषै प्रकृतिबंध के नियम का; तहा भी तीर्थंकरप्रकृति बधने के विशेष का, अर गुणस्थाननि विषै व्युच्छित्ति, बध, अबध प्रकृतिनि का, तहा भी व्युच्छित्ति के स्वरूप दिखावने कौ द्रव्यार्थिक-पर्यायार्थिकनय की अपेक्षा का, अर गति आदि मार्गणा के भेदनि विषै सामान्यपनै वा सभवते गुणस्थान अपेक्षा व्युच्छित्ति-बध-अबध प्रकृतिनि के विशेष का, अर मूल-उत्तर प्रकृतिनि विषै सभवते सादिनै आदि देकर बध का, तहां अध्रुव-प्रकृतिनि विषै सप्रतिपक्ष-नि प्रतिपक्ष प्रकृतिनि का, अर निरतर बध होने के काल का वर्णन है।

बहुरि स्थितिबध का वर्णन विषै मूल-उत्तर प्रकृतिनि के उत्कृष्ट स्थितिबध का, अर उत्कृष्ट स्थितिबंध सज्ञी पचेंद्रिय ही के होय ताका, अर जिस परिणाम तै वा जिस जीव कै जिस प्रकृति का उत्कृष्ट स्थितिबध होय ताका, तहां प्रसग पाय उत्कृष्ट ईषत् मध्यम सक्लेश परिणामनि के स्वरूप दिखावने कौ अनुकृष्टि आदि विधान का, अर मूल-उत्तर प्रकृतिनि के जघन्य स्थितिबध के प्रमाण का, अर जघन्य-स्थितिबध जाकै होय ताका वर्णन है। अर एकेद्री, बेइद्री, तेइद्री, चौइद्री, असज्ञी, सज्ञी पचेद्री जीवनि कै मोहादिक की उत्कृष्ट-जघन्यस्थिति के प्रमाण का, तहा प्रसग पाइ तिनके आबाधा के कालभेदकाण्डकनि के प्रमाण कौ कहि भेद प्रमाण करि गुणितकाडक प्रमाण कौ उत्कृष्टस्थिति विषै घटाए जघन्यस्थिति का प्रमाण होने का वर्णन है।

बहुरि एकेंद्रियादि जीवनि के स्थितिभेदनि कौ स्थापनकरि तहा चौदह जीवसमासनि विषै जघन्य-उत्कृष्ट-स्थितिबध अर अबाधा अर भेदनि के प्रमाण अर तिनके जानने का विधान वर्णन है। तहा प्रकृतिनि का जघन्य स्थितिबध जिनकै होइ

ताका, अर जघन्य आदि स्थितिबंध विषै सादि नै आदि देकर सभवपने का, अर विशुद्ध-संक्लेशपरिणामनि तै जैसै जघन्य-उत्कृष्ट स्थितिबंध होय ताका, अर आबाधा के लक्षण का, मोहादिक की आबाधा के काल का, आयु की आबाधा के विशेष का, तहां प्रसग पाइ देव, नारकी, भोगभूमियां, कर्मभूमियानि के आयुबध होने के समय का, उदीर्णा अपेक्षा आबाधाकाल के प्रमाण का, प्रसग पाइ अचलावली, उदयावली, उपरितन स्थिति विषै कर्मपरमाणु खिरने का, उदीर्णा के स्वरूप का, आयु वा अन्य कर्मनि के निषेकनि के स्वरूप का, अकसदृष्टिपूर्वक निषेकनि विषै द्रव्यप्रमाण का, तहा गुणहानि आदि का वर्णन है ।

बहुरि अनुभागबंध का व्याख्यान विषै प्रकृतिनि का अनुभाग जैसै संक्लेश-विशुद्धिपरिणामनिकरि बंधै है ताका, अर जिस प्रकृति का जाकै तीव्र वा जघन्य अनुभाग बंधै है ताका, तहां प्रसंग पाइ अपरिवर्तमान, परिवर्तमान मध्यम परिणामनि के स्वरूपादिक का अर उत्कृष्टादि अनुभागबंध विषै सादि नै आदि देकरि भेदनि के संभवपने का वर्णन है । बहुरि घातियानि विषै लता, दारु, अस्थि शैलभागरूप अनुभाग का, तहां देशघातिया स्पर्द्धकनि का मिथ्यात्व विषै विशेष है ताका, अर जिन प्रकृतिनि विषै जेते प्रकार अनुभाग प्रवर्त्तै ताका, अर अघातियानि विषै प्रशस्त प्रकृतिनि का गुड, खांड, शर्करा, अमृतरूप; अप्रशस्त प्रकृतिनि का निब, कांजीर, विष, हलाहलरूप अनुभाग का, अर इन प्रकृतिनि कै तीन-तीन प्रकार अनुभाग प्रवर्त्तै, ताका वर्णन है ।

बहुरि प्रदेशबंध का कथन विषै एकक्षेत्र, अनेकक्षेत्रसबधी वा तहा कर्मरूप होनै कौ योग्य-अयोग्यरूप, तिनविषै भी जीव का ग्रहण की अपेक्षा सादि-अनादिरूप पुद्गलनि का प्रमाणादिक कहि, तहा जिन पुद्गलनि कौ समयप्रबद्ध विषै ग्रहै है ताका, अर ग्रहे जे परमाणु तिनके प्रमाण कौ कहि तिनका आठ वा सात मूल प्रकृतिनि विषै जैसै विभाग हो है ताका, तहां हीनाधिक विभाग होने के कारण का वर्णन है । अर उत्तर प्रकृतिनि विषै विभाग के अनुक्रम का अर ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय विषै सर्वघाती-देशघाती द्रव्य के विभाग का, तहा प्रसग पाइ मतिज्ञानावरणादि प्रकृतिनि विषै सर्वघाती-देशघाती स्पर्द्धकनि का, तहां अनुभागसबधी नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त-द्रव्य-स्थिति-गुणहानि का प्रमाण कहि, तहा वर्गणानि का प्रमाण ल्याइ तिनविषै जहा सर्वघाती-देशघातीपना पाइए ताका वर्णनकरि च्यारि घातिया कर्मनि की उत्तर प्रकृतिनि विषै कर्मपरमाणुनि के विभाग का वर्णन है ।

तहा सज्वलन अर नोकषाय विषै विशेष है ताका, अर नोकषायनि विषै जिनका युगपत् बध होइ तिनका, अर तिनके निरतर बंधने के काल का, अर अंतराय की प्रकृतिनि विषै सर्वघातीपना नाही ताका वर्णन है । बहुरि युगपत् नामकर्म की तेईस आदि प्रकृति बधै तिनविषै विभाग का, अर वेदनीयादिक की एक-एक ही प्रकृति बंधै; तातै तहा विभाग न करने का वर्णन है ।

बहुरि मूल-उत्तर प्रकृतिनि का उत्कृष्टादि प्रदेशबंध विषै सादि इत्यादि भेद सभवने का, अर जिस प्रकृति का उत्कृष्ट-जघन्य प्रदेशबंध जाकै होय ताका, अर तहा प्रसग पाइ स्तोकसा एक जीव के युगपत् जेते-जेते प्रकृति बधै, ताका वर्णन है । बहुरि इहा प्रसग पाइ योगनि का कथन है । तहा उपपाद, एकातवृद्धि, परिणामरूप योगनि के स्वरूपादिक का वर्णन है । अर योगनि के अविभागप्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धक, गुणहानि, नानागुणहानि स्थाननि के स्वरूप, प्रमाण, विधान का योगशक्ति या प्रदेश अपेक्षा विशेष वर्णन है । अर योगनि का जघन्य स्थान तै लगाय स्थाननि विषै वृद्धि के अनुक्रम कौ आदि देकरि वर्णन है । अर सूक्ष्मनिगोदिया लब्धि-अपर्याप्तक का जघन्य उपपादयोगस्थान कौ आदि देकरि चौरासी स्थाननि का, अर बीचि-बीचि जिनका स्वामी न पाइए तिनका, अर तिनविषै गुणकार के अनुक्रम का, अर जघन्य स्थान तै उत्कृष्ट स्थान के गुणकार का वर्णन है । अर तीन प्रकार योग निरतर जेते काल प्रवर्त्तै ताका, अर पर्याप्त त्रस संबधी परिणामयोगस्थाननि विषै जे-जे जेते-जेते योगस्थान दोय आदि आठ समयपर्यंत निरतर प्रवर्त्तै तिनके प्रमाण ल्यावने कौ कालयवमध्य रचना का, अर पर्याप्त त्रससबंधी परिणामयोगस्थाननि विषै जेते-जेते जीव पाइए तिनके प्रमाण जानने कौ गुणहानि आदि विशेष लीए जीवयवमध्य रचना का अर योगस्थाननि तै जेता-जेता प्रदेशबध होय ताका, अर जघन्य तै उत्कृष्ट स्थान पर्यंत वधने के क्रम का बीचि-बीचि जेते अविभागप्रतिच्छेद होइ तिनका वर्णन है ।

बहुरि च्यारि प्रकार बध के कारणनि का वर्णन है । बहुरि योगस्थानादिक के अल्पबहुत्व का वर्णन है । तहा योगस्थान श्रेणी के असख्यातवा भागमात्र तिनका वर्णनकरि तिनतै असख्यात लोकगुणे कर्मप्रकृतिनि के भेदनि का वर्णन विषै मतिज्ञानादिकनि के भेदनि का, अर क्षेत्र अपेक्षा आनुपूर्वी के भेदनि का कथन है । बहुरि तिनतै असख्यातगुणे कर्मस्थिति के भेदनि का वर्णन विषै तिन एक-एक प्रकृति

की जघन्यादि उत्कृष्ट पर्यंत स्थिति भेदनि का कथन है। बहुरि तिनतैं असख्यातगुणे स्थितिबंधाध्यवसायनि का वर्णन विषै द्रव्यस्थिति, गुणहानि, निषेक, चयादिककरि स्थितिबध कौ कारण परिणामनि का स्तोकसा कथन है। बहुरि तिनतैं असख्यात लोकगुणे अनुभागबधाध्यवसायस्थाननि का वर्णन विषै द्रव्यस्थिति-गुणहान्यादिककरि अनुभाग कौ कारण परिणामनि का स्तोकसा कथन है। बहुरि तिनतैं अनंतगुणे कर्मप्रदेशनि का वर्णन विषै द्रव्यस्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, चय, निषेकनि का अंकसदृष्टि वा अर्थकरि कथन है। तहां एक समय विषै समय-प्रबद्धमात्र पुद्गल बधै, एक-एक निषेक मिलि समयप्रबद्धमात्र ही निर्जरै, असें होतैं द्व्यर्द्धगुणहानिगुणित समयप्रबद्धमात्र सत्त्व रहै, ताका विधान जानने कै अर्थि त्रिकोणयत्र की रचना करी है।

बहुरि असें बध वर्णनकरि उदय का वर्णन विषै उदय-प्रकृतिनि का नियम कहि गुणस्थाननि विषै व्युच्छित्ति, उदय, अनुदय प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि इहां ही उदीर्णा विषै विशेष कहि गुणस्थाननि विषै व्युच्छित्ति, उदीर्णा, अनुदीर्णारूप प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि मार्गणा विषै उदय प्रकृतिनि का नियम कहि गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषै सभवते गुणस्थाननि की अपेक्षा लीए व्युच्छित्ति, उदय, अनुदय प्रकृतिनि का वर्णन है। तहा प्रसग पाइ अनेक कथन है।

बहुरि सत्त्व का कथन विषै तीर्थंकर, आहारक की सत्ता का, मिथ्यादृष्ट्यादि विषै विशेष अर आयुबंध भए पीछै सम्यक्त्व-व्रत होने का विशेष, क्षायिक-सम्यक्त्व होने का विशेष कहि मिथ्यादृष्टि आदि सात गुणस्थाननि विषै सत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन करि, ऊपरि क्षपकश्रेणी अपेक्षा व्युच्छित्ति, सत्त्व, असत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि मिथ्यादृष्टि आदि गुणस्थाननि विषै सत्त्व, असत्त्व प्रकृतिनि का वर्णनकरि उपशम-श्रेणी विषै इकईस मोहप्रकृति उपशमावने का क्रम का, अर तहा सत्त्व-प्रकृतिनि का कथन है। बहुरि मार्गणानि विषै सत्ता-असत्ता प्रकृतिनि का नियम कहि गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषै सभवते गुणस्थाननि की अपेक्षा लीए व्युच्छित्ति, सत्त्व, असत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन है। तहा प्रसग पाइ इन्द्रिय-काय मार्गणा विषै प्रकृतिनि की उद्वेलना का इत्यादि अनेक वर्णन है।

बहुरि विवेष सत्तारूप तीसरा सत्त्वस्थान-अधिकार विषै एक जीव कै एकै कालि प्रकृति पाइए तिनके प्रमाण की अपेक्षा स्थान, अर स्थान विषै प्रकृति वदलने की अपेक्षा भग, तिनका वर्णन है। तहा नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञाकरि स्थानभंगनि का

स्वरूप कहि गुणस्थाननि विषै सामान्य सत्त्व प्रकृतिनि का वर्णन करि विशेष वर्णन विषै मिथ्यादृष्ट्यादि गुणस्थाननि विषै जेते स्थान वा भग पाइए तिनकौ कहि जुदा-जुदा कथन विषै तिनका विधान वा प्रकृति घटने, वधने, बदलने के विशेष का बद्धायु-अबद्धायु अपेक्षा वर्णन है। तहा प्रसंग पाइ मिथ्यादृष्टि विषै तीर्थकर सत्तावाले के नरकायु ही का सत्त्व होइ ताका, वा एकेंद्रियादिक कै उद्वेलना का अर सासादन विषै आहार सत्ता के विशेष का, मिश्र विषै अनतानुबंधीरहित सत्त्वस्थान जैसै संभवै ताका, असंयत विषै मनुष्यायु-तीर्थंकर सहित एक सौ अडतीस प्रकृति की सत्तावाले कै दोय वा तीन ही कल्याणक होइ ताका, अपूर्वकरणादि विषै उपशमक-क्षपक श्रेणी अपेक्षा का इत्यादि अनेक वर्णन है। बहुरि आचार्यनि के मतकरि जो विशेष है ताकौ कहि तिस अपेक्षा कथन है।

बहुरि चौथा त्रिचूलिका नामा अधिकार है। तहा प्रथम नव प्रश्नकरि चूलिका का व्याख्यान है। तिसविषै पहिलै तीन प्रश्नकरि तिनका उत्तर विषै जिन प्रकृतिनि की उदयव्युच्छित्ति तै पहिले बधव्युच्छित्ति भई तिनका, अर जिनकी उदयव्युच्छित्ति तै पीछै बंधव्युच्छित्ति भई तिनका, अर जिनकी उदयव्युच्छित्ति-बंधव्युच्छित्ति युगपत् भई तिनका वर्णन है। बहुरि दूसरा – तीन प्रश्नकरि तिनका उत्तर विषै जिनका अपना उदय होतै ही बंध होइ तिनका, अर जिनका अन्य प्रकृतिनि का उदय होतै ही बंध होइ तिनका, अर जिनका अपना वा अन्य प्रकृतिनि का उदय होतै वध होय तिन प्रकृतिनि का वर्णन है। बहुरि तीसरा – तीन प्रश्नकरि तिनका उत्तर विषै जिनका निरन्तर बध होइ तिनका, अर जिनका सांतर बंध होइ तिनका, अर जिनका सांतर वा निरतर बध होइ तिनका कथन है। इहा तीर्थंकरादि प्रकृति निरतर बधी जैसै है ताका, अर सप्रतिपक्ष-नि प्रतिपक्ष अवस्था विषै सातर-निरतर बंध जैसै संभवै है ताका वर्णन है।

बहुरि दूसरी पंचभागहारचूलिका का व्याख्यान विषै मगलाचरणकरि उद्वेलन, विध्यात, अधःप्रवृत्त, गुणसक्रम, सर्वसंक्रम – इन पंच भागहारनि के नाम का, अर स्वरूप का, अर ते भागहार जिनि-जिनि प्रकृतिनि विषै वा गुणस्थाननि विषै संभवै ताका वर्णन है। अर सर्वसक्रमभागहार, गुणसक्रमभागहार, उत्कर्षण वा अपकर्षणभागहार, अध प्रवृत्तभागहार, योगनि विषै गुणकार, स्थिति विषै नानागुणहानि, पल्य के अर्धच्छेद, पल्य का वर्गमूल, स्थिति विषै गुणहानि-आयाम, स्थिति विषै अन्योन्याभ्यस्त राशि, पल्य, कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, विध्यातसंक्रमभागहार, उद्वेलनभागहार,

अनुभाग विषै नानागुणहानि, गुणहानि, द्वयर्द्धगुणहानि, दो गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनका प्रमाणपूर्वक अल्पबहुत्व का कथन है ।

बहुरि तीसरी दशकरणचूलिका का व्याख्यान विषै बंध, उत्कर्षण, सक्रम, अपकर्षण, उदीर्णा, सत्त्व, उदय, उपशम, निधत्ति, नि काचना – इन दशकरणनि के नाम का, स्वरूप का, जिनि-जिनि प्रकृतिनि विषै वा गुणस्थाननि विषै जैसे सभवै तिनका वर्णन है ।

बहुरि पांचवां बंध-उदय-सत्त्वसहित स्थानसमुत्कीर्तन नामा अधिकार विषै मगलाचरण करि एक जीव कै युगपत् सभवता बधादिक प्रकृतिनि का प्रमाणरूप स्थान वा तहा प्रकृति बदलने करि भये भगनि का वर्णन है । तहा मूल प्रकृतिनि के बधस्थाननि का, अर तहा सभवते भुजाकारादि बध विशेष का, अर भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित, अवक्तव्यरूप बध विशेषनि के स्वरूप का, अर मूल प्रकृतिनि कै उदयस्थान, उदीर्णास्थान, सत्त्वस्थाननि का वर्णन है। बहुरि उत्तर प्रकृतिनि का कथन विषै दर्शनावरण, मोहनीय, नाम की प्रकृतिनि विषै विशेष है ।

तहा दर्शनावरण के बधस्थाननि का, अर तहा गुणस्थान अपेक्षा भुजाकारादि विशेष सभवने का, अर दर्शनावरण के गुणस्थाननि विषै सभवते वधस्थान, उदयस्थान, सत्त्वस्थाननि का वर्णन है ।

बहुरि मोहनीय के बधस्थाननि का, अर ते गुणस्थाननि विषै जैसे सभवै ताका, अर तहां प्रकृतिनि के नाम जानने कौ ध्रुवबधी प्रकृति, वा कूटरचना आदिक का, अर तहा प्रकृति बदलने तै भए भगनि का, अर तिन बधस्थाननि विषै सभवते भुजाकारादि विशेषनि का, वा भुजाकारादिक के लक्षण का, वा सामान्य-अवक्तव्य भगनि की सख्या का, अर भुजाकारादि सभवने के विधान का, अर इहा प्रसग पाइ गुणस्थाननि विषै चढना, उतरना इत्यादि विशेषनि का वर्णन है । बहुरि मोह के उदयस्थाननि का, अर गुणस्थाननि विषै सभवता दर्शनमोह का उदय कहि तहा सभवते मोह के उदयस्थाननि का, अर तहा प्रकृत्यादि के जानने कू कूटरचना आदि का, अर तहां प्रकृति बदलने तै भए भगनि का, अर अनिवृत्तिकरण विषै वेदादिक के उदयकालादिक का, अर सर्वमोह के उदयस्थान, अर तिनकी प्रकृतिनि का विधान, वा संख्या वा मिलाई हुई संख्या का, अर गुणस्थाननि विषै संभवते उपयोग, योग, संयम, लेश्या, सम्यक्त्व तिनकी अपेक्षा मोह के उदयस्थाननि का, वा तिनकी प्रकृतिनि

का विधान, सख्या आदिक का, तहा अनतानुबधी रहित उदयस्थान मिथ्यादृष्टि की अपर्याप्त-अवस्था मे न पाइए इत्यादि विशेप का वर्णन है ।

बहुरि मोह के सत्त्वस्थाननि का वा तहा प्रकृति घटने का, अर ते स्थान गुणस्थाननि विषै जैसै सभवै ताका, अर अनिवृत्तिकरण विपै विशेष है ताका वर्णन है ।

बहुरि नामकर्म का कथन विषै आधारभूत इकतालीस जीवपद, चौतीस कर्मपदनि का व्याख्यान करि नाम के बधस्थाननि का अर ते गुणस्थाननि विषै जैसै संभवै ताका, अर ते जिस-जिस कर्मपदसहित बधै है ताका, अर तिनविपै क्रम तै नवध्रुवबधी आदि प्रकृतिनि के नाम का, अर तेइस के नै आदि दै करि नाम के बधस्थाननि विषै जे-जे प्रकृति जैसै पाइए ताका, अर तहा प्रकृति बदलने तै भए भगनि का वर्णन है। अर इहा प्रसग पाइ जीव मरि जहा उपजै ताका वर्णन विषै प्रथमादि पृथ्वी नारकी मरि जहा उपजै वा न उपजै ताका, तहा प्रसग पाइ स्वयंभू-रमण-समुद्रपरै कूणानि विषै कर्मभूमिया तिर्यच है इत्यादि विशेष का, अर बादर-सूक्ष्म, पर्याप्त-अपर्याप्त अग्निकायिक आदि जीव जहा उपजै ताका, तहा सूक्ष्मनिगोद तै आए मनुष्य सकल सयम न ग्रहै इत्यादि विशेष का, अर अपर्याप्त मनुष्य जहा उपजै ताका, अर भोगभूमि-कुभोगभूमि के तिर्यच-मनुष्य, अर कर्मभूमि के मनुष्य जहा उपजै ताका, अर सर्वार्थसिद्धि तै लगाय भवनत्रिक पर्यत देव जहा उपजै ताका वर्णन है। बहुरि जैसै च्यवन-उत्पाद कहि चौदह मार्गणानि विषै गुणस्थाननि की अपेक्षा लीए जैसै जे-जे नामकर्म के बधस्थान सभवै तिनका वर्णन है ।

तहा गति, इद्रिय, काय, योग, वेद मार्गणानि विषै तो लेश्या अपेक्षा बधस्थाननि का कथन है । कषाय मार्गणा विषै अनतानुबधी आदि जैसै उदय हो है ताका, वा इनके देशघाती-सर्वघाती स्पर्द्धकनि का, वा सम्यक्त्व-सयम घातने का, वा लेश्या अपेक्षा बधस्थाननि का कथन है । अर ज्ञान मार्गणा विषै गति आदिक की अपेक्षा करि बधस्थाननि का कथन है । अर सयम मार्गणा विषै सामायिकादिक के स्वरूप का, अर सयतासयत विषै दोय गति अपेक्षा, अर असयम विषै च्यारि गति अपेक्षा बधस्थाननि का कथन है । तहा निर्वृत्यपर्याप्त देव कै बधस्थान कहने कौ देवगति विषै जे-जे जीव जहा पर्यंत उपजै ताका, अर सासादन विषै बधस्थान कहने कौ जे-जे जीव जैसै उपशम-सम्यक्त्व कौ छोडि सासादन होइ ताका इत्यादि कथन है । अर दर्शन मार्गणा विषै गति अपेक्षा बधस्थाननि का कथन है ।

अर लेश्या मार्गणा विषै प्रथमादि नरक पृथ्वीनि विषै लेश्या सभवने का, जिस-जिस सहनन के धारी जे-जे जीव जहा-जहा पर्यंत नरकविषै उपजै ताका, नरकनिविषै पर्याप्त-निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था अपेक्षा बधस्थानिन अर का, तिर्यंच विषै एकेंद्रियादिक कै वा भोगभूमिया तिर्यंच कै जो-जो लेश्या पाइए ताका, अर जे-जे जीव जिस-जिस लेश्याकरि तिर्यंच विषै उपजै ताका, अर तिनकै निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था विषै बंधस्थाननि का, अर जहा तै आए सासादन वा असयत होइ अर तिनके जे बधस्थान होइ ताका, अर शुभाशुभलेश्यानि विषै परिणामनि का, तहा प्रसग पाइ कषायनि के स्थान वा तहा सक्लेश-विशुद्धस्थान वा कषायनि के च्यारि शक्तिस्थान, चौदह लेश्या स्थान, बीस आयु बन्धाबन्धस्थान तिनका, अर लेश्यानि के छब्बीस अश, तहा आठ मध्यम अश आयुबन्ध कौ कारण, ते आठ अपकर्षकालनि विषै होइ, अन्य अठारह अश च्यारि गतिनि विषै गमन कौ कारण तिनके विशेष का, अर लेश्यानि के पलटने के क्रम का वर्णन करि, तिर्यंच कै मिथ्यादृष्टि आदि विषै जैसै मिथ्यात्व-कषायनि का उदय पाइए है ताकौ कहि, तहा जे बंधस्थान पाइए ताका, अर भोगभूमिया तिर्यंच कै वा प्रसग पाई औरनि कै जैसै निर्वृत्यपर्याप्त वा पर्याप्त मिथ्यादृष्टि आदि विषै जैसै लेश्याकरि बधस्थान पाइए, वा भोगभूमि विषै जैसे उपजना होइ ताका वर्णन है ।

बहुरि मनुष्यगति विषै लब्धिअपर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त, पर्याप्त दशा विषै जो-जो लेश्या पाइए वा तहा सभवते गुणस्थाननि विषै बधस्थान पाइए ताका वर्णन है ।

बहुरि देवगति विषै भवनत्रिकादिक कै निर्वृत्यपर्याप्त वा पर्याप्त दशा विषै जो-जो लेश्या पाइए, वा देवनि के जहा जन्मस्थान है वा जे जीव जिस-जिस लेश्याकरि जहा-जहा देवगति विषै उपजै, वा निर्वृत्यपर्याप्त वा पर्याप्त-दशा विषै मिथ्यादृष्टि आदि जीवनी कै जे-जे बधस्थान पाइए तिनका, अर तहा प्रासगिक गाथानिकरि जे-जे जीव जहा-जहा पर्यंत देवगति विषै उपजै, वा अनुदिशादिक विमाननि तै चयकरि जे पद न पावै, वा जे जीव देवगति तै चयकरि मनुष्य होइ निर्वाण ही जाय, वा जहा के आये तिरेसठि शलाका पुरुष न होइ, वा देवपर्याय पाइ जैसै जिनपूजादिक कार्य करै तिनका वर्णन है ।

बहुरि भव्यमार्गणा विषै बधस्थाननि का वर्णन है ।

बहुरि सम्यक्त्व मार्गणा विषै सम्यक्त्व के लक्षण का, भेदनि का, जहां मरण न होय ताका, अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व जाकै होइ ताका, वा वाकै जिन प्रकृतिनि

का उपशम होइ ताका, तहा लब्धि आदि होने का, अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व भए मिथ्यात्व के तीन खड हो है ताका, तहा नारकादिक कै जे बंधस्थान पाइए तिनका, तहा नरक विषै तीर्थंकर के बध होने के विधान का, वा साकार-उपयोग होने का, वा निसर्गज-अधिगमज के स्वरूप का अर द्वितीयोपशम सम्यक्त्व जाकै होइ ताका, तहां अपूर्वकरणादि विषै जो-जो क्रिया करता चढै वा उतरै ताका, तहा जे बंधस्थान सभवै ताका, वा तहा मरि देव होय ताकै बधस्थान संभवै ताका वर्णन है। बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व का प्रारभ-निष्ठापन जाकै होइ ताका, वा तहा तीन करण हो है तिनका, तहा गुणश्रेणी आदि होने का अर अनतानुबधी का विसयोजनकरि पीछे केई क्रिया करि करणादि विधान तै दर्शनमोह क्षपावने का, अर तहां प्रारभ-निष्ठापन के काल का, वा तिनके स्वामीनि का, वा तहा तीर्थंकर सत्तावाले कै तद्भव-अन्यभव विषै मुक्ति होने का वर्णनकरि क्षायिक सम्यक्त्व विषै संभवते बंधस्थाननि का वर्णन है। बहुरि वेदक-सम्यक्त्व जिनकै होइ अर प्रथमोपशम, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व तै वा मिथ्यात्व तै जैसै वेदक सम्यक्त्व होइ, अर तिनकै जे बंधस्थान पाइए तिनका वर्णन है।

बहुरि सासादन, मिश्र, मिथ्यात्व जहा-जहा जिस-जिस दशा विषै सभवै अर तहा जे बधस्थान पाइए तिनका वर्णन है। तहा प्रसंग पाइ विवक्षित गुणस्थान तै जिस-जिस गुणस्थान को प्राप्त होइ ताका वर्णन है।

बहुरि सञ्ज्ञी अर आहार मार्गणा विषै बधस्थाननि का वर्णन है। बहुरि नाम के बधस्थाननि विषै भुजाकारादि कहने कौ पुनरुक्त, अपुनरुक्त भगनि का, अर स्वस्थानादि तीन भेदनि का, प्रसग पाइ गुणस्थाननि तै चढने-उतरने का, जहा मरण न होइ ताका, कृतकृत्य-वेदक सम्यग्दृष्टि मरि जहा उपजै ताका, भुजाकारादिक के लक्षण का, अर इकतालीस जीव पदनि विषै भगसहित बधस्थाननि का वर्णन करि मिथ्यादृष्ट्यादि गुणस्थाननि विषै सभवते भुजाकार, अल्पतर, अवस्थित, अवक्तव्य भगनि का वर्णन है।

बहुरि नाम के उदयस्थाननि का वर्णन विषै कार्माण[१], मिश्रशरीर, शरीरपर्याप्ति, उच्छ्वासपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति इन पंचकालनि का स्वरूप प्रमाणादिक कहि, वा केवली के समुद्घात अपेक्षा इनका सभवपना कहि, नाम के उदयस्थान हानि

१. 'होने का' ऐसा ख पुस्तक मे पाठ है।

का विधान विषै ध्रुवोदयी आदि प्रकृतिनि का वर्णन करि, तिन पंचकालनि की अपेक्षा लीए जिस-जिस प्रकार वीस प्रकृति रूप स्थान तैं लगाय सभवते नाम के उदयस्थाननि का, अर तहा प्रकृति बदलने करि संभवते भंगनि का वर्णन है। बहुरि नाम के सत्त्वस्थाननि का वर्णन विषै तिराणवे प्रकृतिरूप स्थान आदि जैसें जै सत्त्वस्थान है तिनका, अर तहा जिन प्रकृतिनि की उद्वेलना हो है तिनके स्वामी वा क्रम वा कालादिक विशेष का, अर सम्यक्त्व, देशसंयम, अनतानुबधी का विसयोजन, उपशमश्रेणी चढना, सकलसयम धरना, ए उत्कृष्टपनै केती वार होइ तिनका, अर च्यारि गति की अपेक्षा लीए गुणस्थाननि विषै जे सत्त्वस्थान सभवै तिनका, अर इकतालीस जीवपदनि विषै सत्त्वस्थान संभवै तिनका वर्णन है।

बहुरि त्रिसयोग विषै स्थान वा भगनि का वर्णन है। तहा मूल प्रकृतिनि विषै जिस-जिस बधस्थान होतै जो-जो उदय वा सत्त्वस्थान होइ ताका, अर ते गुणस्थाननि विषै जैसै सभवै ताका वर्णन है। बहुरि उत्तर प्रकृतिनि विषै ज्ञानावरण, अतराय का तौ पाच-पाच ही का बंध, उदय, सत्त्व होइ; तातै तहा विशेष वर्णन नाही। अर दर्शनावरण विषै जिस-जिस बधस्थान होतै जो-जो उदय वा सत्त्वस्थान गुणस्थान अपेक्षा सभवै ताका वर्णन है, अर वेदनीय विषै एक-एक प्रकृति का उदय-बध होतै भी प्रकृति बदलने की अपेक्षा, वा सत्त्व दोय का वा एक का भी हो है, ताकी अपेक्षा गुणस्थान विषै सभवते भगनि का वर्णन है। बहुरि गोत्र विषै नीच-उच्च गोत्र के बंध, उदय, सत्त्व के बदलने की अपेक्षा गुणस्थाननि विषै सभवते भगनि का वर्णन है। बहुरि आयु विषै भोगभूमिया आदि जिस काल विषै आयुबध करै ताका, एकेंद्रियादि जिस आयु कौ बाधै ताका, नारकादिकनि कै आयु का उदय, सत्त्व सभवै ताका, अर आठ अपकर्ष विषै बधै ताका, तहा दूसरी, तीसरी वार आयुबध होने विषै घटने-बधने का, अर बध्यमान-भुज्यमान आयु के घटनेरूप अपवर्तनघात, कदलीघात का वर्णन करि बध, अबंध, उपरितबध की अपेक्षा गुणस्थाननि विषै संभवते भगनि का वर्णन है। बहुरि वेदनीय, गोत्र, आयु इनके भंग मिथ्यादृष्टयादि विषै जेते-जेते सभवै, वा सर्व भंग जेते-जेते है तिनका वर्णन है।

बहुरि मोह के स्थाननि की अपेक्षा भंग कहि गुणस्थाननि विषै बध, उदय, सत्त्वस्थान जैसै पाइए ताका वर्णन करि मोह के त्रिसंयोग विषै एक आधार, दोय आधेय, तीन प्रकार, तहां जिस-जिस बधस्थान विषै जो-जो उदयस्थान, वा

सत्त्वस्थान संभवै, अर जिस-जिस उदयस्थान विषै जो-जो बधस्थान वा सत्त्वस्थान सभवै, अर जिस-जिस सत्त्वस्थान विषै जो-जो बधस्थान वा उदयस्थान संभवै तिनका वर्णन है। वहुरि मोह के बंध, उदय, सत्त्वनि विषै दोय आधार, एक आधेय तीन प्रकार, तहा जिस-जिस बधस्थानसहित उदयस्थान विषै जो-जो सत्त्वस्थान जिसप्रकार सभवै, अर जिस-जिस बंधस्थानसहित सत्त्वस्थान विषै जो-जो उदयस्थान सभवै अर जिस-जिस उदयस्थान सहित सत्त्वस्थान विषै जो-जो बंधस्थान पाइए ताका वर्णन है। बहुरि नामकर्म के स्थानोक्त भंग कहि गुणस्थाननि विषै, अर चौदह जीवसमासनि विषै अर गति आदि मार्गणानि के भेदनि विषै संभवते बंध, उदय, सत्त्वस्थाननि का वर्णनकरि एक आधार, दोय आधेय का वर्णन विषै जिस-जिस वधस्थाननि विषै जो-जो उदयस्थान वा सत्त्वस्थान जिसप्रकार सभवै, अर जिस-जिस उदयस्थान विषै जो-जो बधस्थान वा सत्त्वस्थान जिसप्रकार सभवै, अर जिस-जिस सत्त्वस्थान विषै जो-जो वधस्थान वा उदयस्थान जिस-जिसप्रकार संभवै तिनका वर्णन है। वहुरि दोय आधार, एक आधेय विषै जिस-जिस बंधस्थानसहित उदय स्थान विषै जो-जो सत्त्वस्थान संभवै, अर जिस-जिस बधस्थानसहित सत्त्वस्थान विषै जो-जो उदयस्थान सभवै अर जिस-जिस उदयस्थानसहित सत्त्वस्थान विषै जो-जो वधस्थान पाइए तिनका वर्णन है।

बहुरि छठा प्रत्यय अधिकार है, तहा नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञा करि च्यारि मूल आस्रव अर सत्तावन उत्तरआस्रवनि का, अर ते जैसै गुणस्थाननि विषै सभवै ताका, तहा व्युच्छित्ति वा आस्रवनि के प्रमाण, नामादिक का वर्णन करि, तहां विशेष जानने कौ पंच प्रकारनि का वर्णन है। तहा प्रथम प्रकार विषै एक जीव कै एकै काल सभवै ऐसे जघन्य, मध्यम, उत्कृष्टरूप आस्रवस्थान जेते-जेते गुणस्थाननि विषै पाइए तिनका वर्णन है।

बहुरि दूसरा प्रकार विषै एक-एक स्थान विषै आस्रवभेद बदलने तै जेते-जेते प्रकार होइ तिनका वर्णन है।

बहुरि तीसरा प्रकार विषै तिन स्थाननि के प्रकारनि विषै सभवते आस्रवनि कौ [illegible] रचना के विधान का वर्णन है।

बहुरि चौथा प्रकार विषै तिनही कूटनि के अनुसारि अक्षसचारि विधान तै तिन [illegible] कहने का विधानरूप कूटोच्चारण विधान का वर्णन है। तहा

अविरत विषै युगपत् सभवतै हिसा के प्रत्येक द्विसयोगी आदि भेदनि का, अर ते भेद जेते होइ ताका वर्णन है ।

बहुरि पाचवां प्रकार विषै तिन स्थाननि विषै भंग ल्यावने के विधान का वा गुणस्थाननि विषै संभवते भगनि का, तहाँ अविरत विषै हिसा के प्रत्येक द्विसंयोगी आदि भग ल्यावने कौ गणितशास्त्र के अनुसार प्रत्येक द्विसंयोगी, त्रिसंयोगी आदि भंगनि के ल्यावने के विधान का वर्णन है । बहुरि आस्रवनि के विशेषभूत जिनि-जिनि भाव तै स्थिति-अनुभाग की विशेषता लीये ज्ञानावरणादि जुदि-जुदि प्रकृति का बध होइ तिनका क्रम तै वर्णन है ।

बहुरि सातवां भावचूलिका नामा अधिकार है। तहा नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञा करि भावनि तै गुणस्थानसज्ञा हो है ऐसै कहि पच मूल भावनि का, अर इनके स्वरूप का, [1] अर तिरेपन उत्तर भावनि का, अर मूल-उत्तर भावनि विषै अक्षसचार विधान तै प्रत्येक परसयोगी, स्वसयोगी, द्विसयोगी आदि भग जैसे होइ ताका, अर नाना जीव, नाना काल अपेक्षा गुणस्थान विषै सभवते भावनि का वर्णन है ।

बहुरि एक जीव कै युगपत् सभवते भावनि का वर्णन है । तहा गुणस्थाननि विषै मूल भावनि के प्रत्येक, परसयोगी, द्विसयोगी आदि संभवते भगनि का वर्णन है । तहा प्रसग पाइ प्रत्येक, द्विसयोगी, त्रिसयोगी आदि भग ल्यावने के गणितशास्त्र अनुसार विधान वर्णन है । बहुरि गुणस्थाननि विषै मूल भावनि की वा तिनके भगनि की सख्या का वर्णन है ।

बहुरि उत्तर भावनि के भग स्थानगत, पदगत भेद तै दोय प्रकार कहे है । तहा एक जीव कै एक काल सभवते भावनि का समूह सो स्थान । तिस अपेक्षा जे स्थानगत भग, तिन विषै स्वसंयोगी भग के अभाव का अर गुणस्थाननि विषै सभवते औपशमिकादिक भावनि का अर औदयिक के स्थाननि के भगनि का वर्णन करि तहा संभवते स्थाननि के परस्पर सयोग की अपेक्षा गुण्य, गुणकार, क्षेपादि विधान तै जैसे जेते प्रत्येक भग अर परसयोगी विषै द्विसयोगी आदि भग होइ तिनका, अर तहा गुण्य, गुणकार, क्षेप का प्रमाण कहि सर्वभगनि के प्रमाण का वर्णन है ।

बहुरि जातिपद, सर्वपद भेदकरि पदगत भग दोय प्रकार, तिनका स्वरूप कहि गुणस्थाननि विषै जेते-जेते जातिपद सभवै तिनका, अर तिनकौ परस्पर

---

१. ख पुस्तक मे यह पाठ नही है ।

लगावने की अपेक्षा गुण्य, गुणकार, क्षेप आदि विधान तै जेते-जेते प्रत्येक स्वसयोगी परसयोगी, द्विसयोगी आदि भग सभवै तिनका, अर तहा गुण्य, गुणकार, क्षेप का प्रमाण कहि सर्व भगनि के प्रमाण का वर्णन है ।

बहुरि पिंडपद, प्रत्येकपद भेदकरि सर्वपद भग दोय प्रकार है । तिनके स्वरूप का, अर गुणस्थान विषै ए जेतै जैसै सभवै ताका, अर तहां परस्पर लगावने तै प्रत्येक द्विसयोगी आदि भग कीए जे भग होहि तिनका, तहां मिथ्यादृष्टि का पन्द्रहवां प्रत्येक पद विषै भग ल्यावने का, प्रसग पाइ गणितशास्त्र के अनुसार एकवार, दोयवार आदि सकलन धन के विधान का, अर गुणस्थाननि विषै प्रत्येकपद, पिंडपदनि की रचना के विधान का, अर प्रत्येकपदनि के प्रमाण का, अर तहा जेते सर्वपद भग भए तिनका वर्णन है । बहुरि यहा तीनसै तिरेसठि कुवाद के भेदनि का अर तिन विषै जैसै प्ररूपण है ताका, अर एकान्तरूप मिथ्यावचन, स्याद्वादरूप सम्यग्वचन का वर्णन है ।

बहुरि आठवां **त्रिकरण चूलिका नामा अधिकार** है । तहा मगलाचरण करि करणनि का प्रयोजन कहि अध करण का वर्णन विषै ताके काल का अर तहा सभवते सर्व परिणाम, प्रथम समय संबधी परिणाम, अर समय-समय प्रति वृद्धिरूप परिणाम, वा द्वितीयादि समय सबन्धी परिणाम, वा समय-समय सम्बन्धी परिणामनि विषै खड रचनाकरि अनुकृष्टि विधान, तहा खडनि विषै प्रथम खड विषै वा खड-खड प्रति वृद्धिरूप वा द्वितीयादि खडनि विषै परिणाम तिनका अंकसदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है । तहा श्रेणीव्यवहार नामा गणित के सूत्रनि के अनुसार ऊर्ध्वरूप गच्छ, चय, उत्तर धन, आदि धन, सर्व धनादिक का, अर अनुकृष्टि विषै तिर्यग्रूप गच्छादिक के प्रमाण ल्यावने का विधान वर्णन है । अर तिन खडनि विषै विशुद्धता का अल्प-बहुत्व का वर्णन है । बहुरि अपूर्वकरण का वर्णन विषै अनुकृष्टि विधान नाही, ऊर्ध्वरूप गच्छादिक का प्रमाण ल्यावने का विधान पूर्वक ताके काल का वा सर्व परिणाम, प्रथम समयसबन्धी परिणाम, समय-समय प्रति वृद्धिरूप परिणाम, द्वितीयादि समय सबन्धी परिणाम, तिनका अकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है । बहुरि अनिवृत्ति करण विषै भेद नाही, तातै तहा कालादिक का वर्णन है ।

बहुरि नवमा **कर्मस्थिति अधिकार** है । तहा नमस्कारपूर्वक प्रतिज्ञाकरि आबाधा के लक्षण का वा स्थिति अनुसार ताके काल का, वा उदीरणा अपेक्षा

आबाधाकाल का वर्णन है। बहुरि कर्मस्थिति विषै निषेकनि का वर्णन है। बहुरि प्रथमादि गुणहानिनि के प्रथमादि निषेकनि का वर्णन है। बहुरि स्थितिरचना विषै द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, दोगुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त इनके स्वरूप, का, अर अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा तिनके प्रमाण का वर्णन है। तहा नानागुणहानि अन्योन्याभ्यस्त राशि सर्व कर्मनि का समान नाही, तातै इनका विशेष वर्णन है। तहां मिथ्यात्वकर्म की नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त जानने का विधान वर्णन है। इहां प्रसग पाइ **'अंतधणं गुणगुणियं'** इत्यादि करणसूत्रकरि गुणकाररूप पक्ति के जोडने का विधान आदि वर्णन है। बहुरि गुणहानि, दो गुणहानि के प्रमाण का वर्णन है। तहा ही विशेष जो चय ताका प्रमाण वर्णन है। ऐसे प्रमाण कहि प्रथमादि गुणहानिनि का वा तिनविषै प्रथमादि निषेकनि का द्रव्य जानने का विधान वा ताका प्रमाण अंकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है। बहुरि मिथ्यात्ववत् अन्यकर्मनि की रचना है। तहा गुणहानि, दो गुणहानि तो समान है, अर नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त राशि समान नाही। तिनके जानने कौ सात पक्ति करि विधान कहि तिनके प्रमाण का, अर जिस-जिसका जेता-जेता नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त का प्रमाण आया, ताका वर्णन है। बहुरि ऐसे कहि अंकसंदृष्टि अपेक्षा त्रिकोणयंत्र, अर त्रिकोणयत्र का प्रयोजन, अर तहा एक-एक निषेक मिलि एक समयप्रबद्ध का उदय त्रिकोणयंत्र हो है। अर सर्व त्रिकोणयंत्र के निषेक जोड़ै किंचिदून द्वयर्द्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण सत्त्व हो है तिनका वर्णन है। बहुरि निरंतर-सातररूप स्थिति के भेद, स्वरूप स्वामीनि का वर्णन है। बहुरि स्थितिबंध कौ कारण जे स्थितिबधाध्यवसायस्थान तिनका वर्णन विषै आयु आदि कर्म के स्थितिबधाध्यवसायस्थाननि के प्रमाण का अर स्थितिबंधाध्यवसाय के स्वरूप जानने कौ सिद्धात वचनिका वर्णनकरि स्थिति के भेदनि कौ कहि तिन विषै जेते-जेते स्थितिबधाध्यवसायस्थान सभवै तिनके जानने कौ द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, दो-गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त का वा चय का, वा प्रथमादि गुणहानिनि का, वा तिनके निषेकनि का, वा आदि धनादिक का द्रव्यप्रमाण अर ताके जानने का विधान, ताका वर्णन है। बहुरि इहा एक-एक स्थितिभेद संबंधी स्थितिबन्धाध्यवसायस्थननि विषै नानाजीव अपेक्षा खंड हो है। तहा ऊपरली-नीचली स्थिति संबधी खड समान भी हो है; तातै तहां अनुकृष्टि-रचना का वर्णन है। तहा आयुकर्म का जुदा ही विधान है, तातै पहिले आयु की कहि, पीछे मोहादिक की अनुकृष्टि-रचना का अकसंदृष्टि वा अर्थ अपेक्षा वर्णन है। तहां

खडनि की समानता-असमानता इत्यादि अनेक कथन है । बहुरि अनुभागबंध को कारण जे अनुभागाध्यवसायस्थान तिनका वर्णन विषै तिन सर्वनि का प्रमाण कहि, तहां एक-एक स्थितिभेद सबधी स्थितिबंधाध्यवसायस्थाननि विषै द्रव्य, स्थिति, गुणहानि आदि का प्रमाणादिक कहि एक-एक स्थितिबधाध्यवसायस्थानरूप जे निषेक तिनविषै जेते-जेते अनुभागाध्यवसायस्थान पाइए तिनका वर्णन है । बहुरि मूलग्रथकर्त्ताकरि कीया हुवा ग्रथ की सपूर्णता होने विषै ग्रथ के हेतु का, चामुडराय राजा को आशीर्वाद का, ताकरि बनाया चैत्यालय वा जिनबिब का, वीरमार्तंड राजा कौ आशीर्वाद का वर्णन है । बहुरि सस्कृत टीकाकार अपने गुरुनि का वा ग्रंथ होने के समाचार कहे हैं तिनका वर्णन है ।

ऐसै श्रीमद् गोम्मटसार द्वितीय नाम पंचसंग्रह मूलशास्त्र, ताकी जीवतत्त्व-प्रदीपिका नामा संस्कृतटीका के अनुसार इस भाषाटीका विषै अर्थ का वर्णन होसी ताकौं सूचनिका कही ।

अर्थसंदृष्टि सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि तहां जे सदृष्टि हैं, तिनका अर्थ, वा कहे अर्थ तिनकी संदृष्टि जानने कौ इस भाषाटीका विषै जुदा ही संदृष्टि अधिकार विषै वर्णन होसी ।

इहां कोऊ कहै – अर्थ का स्वरूप जान्या चाहिए, संदृष्टिनि के जानै कहा सिद्धि हो है ?

ताका समाधान – संदृष्टि जानै पूर्वाचार्यनि की परंपरा तै चल्या आया जो संकेतरूप अभिप्राय, ताकौ जानिए है । अर थोरे मे बहुत अर्थ कौ नीकै पहिचानिए है । अर मूलशास्त्र वा सस्कृतटीका विषै, वा अन्य ग्रंथनि विषै, जहां संदृष्टिरूप व्याख्यान है, तहां प्रवेश पाइये है । अर अलौकिक गणित के लिखने का विधान आदि चमत्कार भासै है । अर सदृष्टिनि कौ देखते ही ग्रथ की गंभीरता प्रगट हो है – इत्यादि प्रयोजन जानि संदृष्टि अधिकार करने का विचार कीया है ।

तहां केई संदृष्टि आकाररूप है, केई अकरूप है, केई अक्षररूप है, केई लिखने ही का विशेपरूप है, सो तिस अधिकार विषै पहिले तौ सामान्यपनै संदृष्टिनि का वर्णन है, तहा पदार्थनि के नाम तै, संख्या तै अर अक्षरनि तै अंकनि की अर प्रभृति आदि की सदृष्टिनि का वर्णन है ।

बहुरि सामान्य संख्यात, असंख्यात,अनंत की, अर इनके इकईस भेदनि की, अर पल्य आदि आठ उपमा प्रमाण की, अर इनके अर्धच्छेद वा वर्गशलाकानि की सदृष्टिनि का वर्णन है । बहुरि परिकर्माष्टक विषै सकलनादि होतै जैसै सहनानि हो है अर बहुत प्रकार सकलनादि होतै वा संकलनादि आठ विषै एकत्र दोय, तीन आदि होतै जो सहनानी हो है, वा संकलनादि विषै अनेक सहनानी का एक अर्थ हो है इत्यादिकिनि का वर्णन है । अर स्थिति-अनुभागादिक विषै आकाररूप सहनानी है, वा केई इच्छित सहनानी है, इत्यादिकनि का वर्णन है । असैं सामान्य वर्णन करि पीछै श्रीमद् गोम्मटसार नामा मूलशास्त्र वा ताकी जीवतत्त्वप्रदीपिका नामा टीका, ताविषै जिस-जिस अधिकार विषै कथन का अनुक्रम लीए संख्यादिक अर्थ की जैसै-जैसै सदृष्टि है, तिनका अनुक्रम तै वर्णन है । तहा केई करण वा त्रिकोणयत्र का जोड इत्यादिकनि का सदृष्टिनि का सस्कृत टीका विषै वर्णन था अर भाषा करतै अर्थ न लिख्या था, तिनका इस संदृष्टि अधिकार विषै अर्थ लिखिएगा । अर मूलशास्त्र के यत्ररचना विषै वा संस्कृत टीका विषैं केई संदृष्टिरूप रचना ही लिखी थी । तिनकौ अर्थपूर्वक इस संदृष्टि अधिकार विषै लिखिएगा, सो इहां तिनकी सूचनिका लिखै विस्तार होई, तातै तहा ही वर्णन होगा सो जानना ।

इहां कोऊ कहै – मूलशास्त्र वा टीका विषै जहां सदृष्टि वा अर्थ लिख्या था, तहां ही तुम भी तिनके अर्थनि का निरूपण करि क्यो न लिखान किया ? तहा छोडि तिनकौ एकत्र करि संदृष्टि अधिकार विषै कथन किया सो कौन कारण ?

तहां समाधान – जो यहु टीका मंदबुद्धीनि कै ज्ञान होने के अर्थि करिए है, सो या विषै बीचि-बीचि सदृष्टि लिखने तै कठिनता तिनकौ भासै, तब अभ्यास तै विमुख होइ, तातै जिनकौ अर्थमात्र ही प्रयोजन होहि, सो अर्थ ही का अभ्यास करौ अर जिनकौ सदृष्टि कौं भी जाननी होइ, ते सदृष्टि अधिकार विषै तिनका भी अभ्यास करौ ।

बहुरि इहां कोई कहै – तुम असा विचार कीया, परतु कोई इस टीका का अवलंबन तै सस्कृत टीका का अभ्यास कीया चाहै, तो कैसै अभ्यास करै ?

ताकौं कहिए है – अर्थ का तौ अनुक्रम जैसै संस्कृत टीका विषै है, तैसै या विषै है ही । अर जहा जो सदृष्टि आदि का कथन बीचि मै आवै, ताकौ सदृष्टि अधिकार विषै तिस स्थल विषै बाकी कथन है, ताकौ जानि तहा अभ्यास करौ । ऐसै विचारि सदृष्टि अधिकार करने का विचार कीया है ।

लब्धिसार-क्षपणासार सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि ऐसा विचार भया जो लब्धिसार अर क्षपणासार नामा शास्त्र है, तिन विषै सम्यक्त्व का अर चारित्र का विशेषता लीए बहुत नीकैं वर्णन है । अर तिस वर्णन कौं जानै मिथ्यादृष्ट्यादि गुणस्थाननि का भी स्वरूप नीकैं जानिए है, सो इनका जानना बहुत कार्यकारी जानि, तिन ग्रंथनि के अनुसारि किछू कथन करना । तातै लब्धिसार शास्त्र के गाथा सूत्रनि की भाषा करि इस ही टीका विषै मिलाइएगा । तिस ही के क्षपक श्रेणी का कथन रूप गाथा सूत्रनि का अर्थ विषै क्षपणासार का अर्थ गर्भित होयगा ऐसा जानना ।

इहां कोऊ कहै – तिन ग्रंथनि की जुदी ही टीका क्यो न करिए ? याही विषै कथन करने का कहा प्रयोजन ?

ताका समाधान – गोम्मटसार विषै कह्या हुवा केतेइक अर्थनि कौ जानै बिना तिन ग्रंथनि विषै कह्या हुवा केतेइक अर्थनि का ज्ञान न होय, वा तिन ग्रंथनि विषै कह्या हुवा अर्थ कौ जानै इस शास्त्र विषै कहे हुए गुणस्थानादिक केतेइक अर्थनि का स्पष्ट ज्ञान होइ, सो ऐसा संबंध जान्या अर तिन ग्रंथनि विषै कहे अर्थ कठिन है, सो जुदा रहे प्रवृत्ति विशेष न होइ तातै इस ही विषै तिन ग्रंथनि का अर्थ लिखने का[१] विचार कीया है । सो तिस विषै प्रथमोपशम सम्यक्त्वादि होने का विधान धाराप्रवाह रूप वर्णन है । तातै ताकी सूचनिका लिखै विस्तार होइ, कथन आगै होयहीगा । तातै इहां अधिकार मात्र ताकी सूचनिका लिखिए है ।

प्रथम मंगलाचरण करि प्रकार कारण का वा प्रकृतिबंधापसरण, स्थितिबंधापसरण, स्थितिकांडक, अनुभागकांडक, गुणश्रेणी फालि इत्यादि, केतीइक संज्ञानि का स्वरूप वर्णन करि प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने का विधान वर्णन है ।

तहां प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने योग्य जीव का, अर पंचलब्धिनि के नामादिक कहि, तिनके स्वरूप का वर्णन है । तहां प्रायोग्यता लब्धि का कथन विषै जैसे स्थिति घटै है अर तहां च्यारि गति अपेक्षा प्रकृतिबन्धापसरण हो है ताका, अर स्थिति, अनुभाग, प्रदेशबंध का वर्णन है । बहुरि च्यारि गति अपेक्षा एक जीव कै युगपत् संभवता भंगसहित प्रकृतिनि के उदय का, अर स्थिति, अनुभाग, प्रदेश के

१. घ प्रति मे 'अर्थ लिखने का' स्थान पर 'अनुसारि किछु कथन' ऐसा पाठ मिलता है ।

उदय का वर्णन है। बहुरि एक जीव कैं युगपत् संभवती प्रकृतिनि के सत्त्व का वा स्थिति, अनुभाग, प्रदेश के सत्त्व का वर्णन है। बहुरि करणलब्धि का कथन विषै तीन करणनि का नाम-कालादिक कहि तिनके स्वरूपादिक का वर्णन है।

तहां अध:करण विषै स्थितिबंधापसरणादिक आवश्यक हो है, तिनका वर्णन है।

अर अपूर्वकरण विषै च्यारि आवश्यक, तिनविषै गुणश्रेणी निर्जरा का कथन है। तहां अपकर्षण किया हुआ द्रव्य कौ जैसैं उपरितन स्थिति गुणश्रेणी आयाम उदयावली विषै दीजिए है, सो वर्णन है। तहां प्रसग पाइ उत्कर्षण वा अपकर्षण किया हुआ द्रव्य का निक्षेप अर अतिस्थापन का विशेष वर्णन है। बहुरि गुणसक्रमण इहा न संभवै है, सो जहां संभवै है ताका वर्णन है। बहुरि स्थितिकाडक, अनुभाग-कांडक के स्वरूप, प्रमाणादिक का अर स्थिति, अनुभागकाडकोत्करण काल का वर्णनपूर्वक स्थिति, अनुभाग, सत्त्व घटावने का वर्णन है।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषै स्थितिकांडकादि विधान कहि ताके काल का संख्यातवा भाग रहे अतरकरण हो है, ताके स्वरूप का, अर आयाम प्रमाण का, अर ताके निषेकनि का अभाव करि जहा निक्षेपण कीजिए है ताका इत्यादि वर्णन है। बहुरि अंतरकरण करने का अर प्रथम स्थिति का, अर अंतरायाम का काल वर्णन है। बहुरि अंतरकरण का काल पूर्ण भए पीछे प्रथम स्थिति का काल विषै दर्शनमोह के उपशमावने का विधान, काल, अनुक्रमादिक का, तहा आगाल, प्रत्यागाल जहा पाइए है वा न पाइए है ताका, दर्शनमोह की गुणश्रेणी जहा न होइ है, ताका इत्यादि अनेक वर्णन है।

बहुरि पीछे अंतरायाम का काल प्राप्त भए उपशम सम्यक्त्व होने का, तहा एक मिथ्यात्व प्रकृति कौ तीन रूप परिणमावने के विधान का वर्णन है। बहुरि उपशम सम्यक्त्व का विधान विषै जैसै काल का अल्पबहुत्व पाइए है, तैसै वर्णन है।

बहुरि प्रथमोपशम सम्यक्त्व विषै मरण के अभाव का, अर तहा तै सासादन होने के कारण का, अर उपशम सम्यक्त्व का प्रारभ वा निष्ठापन विषै जो-जो उपयोग, योग, लेश्या पाइए ताका, अर उपशम सम्यक्त्व के काल, स्वरूपादिक का, अर तिस काल कौ पूर्ण भए पीछै एक कोई दर्शनमोह की प्रकृति उदय आवने का, तहां जैसैं

द्रव्य कौं अपकर्षण करि अतरायामादि विषै दीजिए है ताका, अर दर्शनमोह का उदय भए वेदक सम्यक्त्व वा मिश्र गुणस्थान वा मिथ्यादृष्टि गुणस्थान हो है, तिनके स्वरूप का वर्णन है ।

बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व का विधान वर्णन है । तहां क्षायिक सम्यक्त्व का प्रारभ जहा होइ ताका, अर प्रारभ-निष्ठापन अवस्था का वर्णन है । बहुरि अनतानुबधी के विसंयोजन का वर्णन है । तहां तीन करणनि का अर अनिवृत्तिकरण विषै स्थिति घटने का अर अन्य कषायरूप परिणमने के विधान प्रमाणादिक का कथन है । बहुरि विश्राम लेइ दर्शनमोह की क्षपणा हो है, ताका विधान वर्णन है । तहां सभवता स्थितिकाडादिक का वर्णन है । अर मिथ्यात्व, मिश्रमोहनी, सम्यक्त्वमोहनी विषै स्थिति घटावने का, वा संक्रमण होने का विधान वर्णन करि सम्यक्त्वमोहनी की आठ वर्ष प्रमाण स्थिति रहे अनेक क्रिया विशेष हो है, वा तहा गुणश्रेणी, स्थितिकाडकादिक विषै विशेष हो है, तिनका वर्णन है । बहुरि कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि होने का वा तहा मरण होतै लेश्या वा उपजने का, वा कृतकृत्य वेदक भए पीछै जे क्रिया विशेष हो है अर तहा अतकाडक वा अतफालि विषै विशेष हो है, तिनका वर्णन है । बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व होने का वर्णन है । बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व के विधान विषैं सभवते काल का तेतीस जायगा अल्पबहुत्व वर्णन है । बहुरि क्षायिक सम्यक्त्व के स्वरूप का वा मुक्त होने का इत्यादि वर्णन है ।

बहुरि चारित्र दोय प्रकार – देशचारित्र, सकलचारित्र । सो ए जाकै होइ वा सन्मुख होतै जो क्रिया होइ सो कहि देशचारित्र का वर्णन है । तहां वेदक सम्यक्त्व सहित देशचारित्र जो ग्रहै, ताके दोइ ही कारण होइ, गुणश्रेणी न होइ, देशसयत को प्राप्त भए गुणश्रेणी होइ इत्यादि वर्णन है । बहुरि एकातवृद्धि देशसयत के स्वरूपादिक का वर्णन है । बहुरि अध प्रवृत्त देशसयत का वर्णन है । तहा ताके स्वरूप-कालादिक का, अर तहा स्थिति-अनुभागखडन न होइ, अर तहा देशसयत तैं भ्रष्ट होइ देशसयत कौं प्राप्त होइ ताकै करण होने न होने का, अर देशसयत विषै सभवते गुणश्रेण्यादि विशेष का वर्णन है । बहुरि देशसयम के विधान विषैं सभवते काल का अल्पबहुत्वता का वर्णन है । बहुरि जघन्य, उत्कृष्ट देशसयम जाकै होइ ताका, अर देशसयम विषै स्पर्द्धक का अविभागप्रतिच्छेद पाइए ताका वर्णन है । बहुरि देशसयम के स्थाननि का, अर तिनके प्रतिपात, प्रतिपद्यमान, अनुभयरूप तीन प्रकारनि का, अर ते क्रम

तै जैसै जिनकै जेते पाइए, अर बीचि मे स्वामीरहित स्थान पाइए तिनका, अर तहा विशुद्धता का वर्णन है ।

बहुरि सकलचारित्र तीन प्रकार – क्षायोपशमिक, औपशमिक, क्षायिक, तहां क्षायोपशमिक चारित्र का वर्णन है । तिसविषै यहु जाकै होइ ताका, वा सन्मुख होतै जो क्रिया होइ, ताका वर्णन करि वेदक सम्यक्त्व सहित चारित्र ग्रहण करनेवाले कै दोय ही करण होइ इत्यादि अल्पबहुत्व पर्यंत सर्व कथन देशसंयतवत् है, ताका वर्णन है । बहुरि सकलसयम स्पर्द्धक वा अविभागप्रतिच्छेदनि का कथन करि प्रतिपात, प्रतिपद्यमान, अनुभयरूप स्थान कहि ते जैसै जेते जिस जीव के पाइए, तिनका क्रम तै वर्णन है । तहा विशुद्धता का वा म्लेच्छ के सकलसंयम सभवने का वा सामयिकादि संबधी स्थाननि का इत्यादि विशेष वर्णन है । बहुरि औपशमिक चारित्र का वर्णन है । तहा वेदक सम्यक्त्वी जिस-जिस विधानपूर्वक क्षायिक सम्यक्त्वी वा द्वितीयोपशम सम्यक्त्वी होइ उपशम श्रेणी चढै है, ताका वर्णन है । तहा द्वितीयोपशम सम्यक्त्व होने का विधान विषै तीन करण, गुणश्रेणी, स्थितिकाडकादिक वा अंतरकरणादिक का विशेष वर्णन है ।

बहुरि उपशम श्रेणी विषै आठ अधिकार है, तिनका वर्णन है । तहा प्रथम अध करण का वर्णन है । बहुरि दूसरा अपूर्वकरण का वर्णन है । इहा सभवते आवश्यकनि का वर्णन है। इहातै लगाय उपशम श्रेणी का चढना वा उतरणा विषै स्थितिबधापसरण अर स्थितिकाडक वा अनुभागकांडक के आयामादिक के प्रमाण का, अर इनकौ होतै जैसा-जैसा स्थितिबध अर स्थितिसत्त्व वा अनुभागसत्त्व अवशेष रहै, ताका यथा ठिकाणै बीचि-बीचि वर्णन है, सो कथन आगै होइगा तहा जानना । बहुरि अपूर्वकरण का वर्णन विषै प्रसग पाइ, अनुभाग के स्वरूप का वा वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धक, गुणहानि, नानागुणहानि का वर्णन है । अर इहां गुणश्रेणी, गुणसक्रम हो है, अर प्रकृतिबध का व्युच्छेद हो है, ताका वर्णन है । बहुरि अनिवृत्तिकरण का कथन विषै दश करणनि विषै तीन करणनि का अभाव हो है । ताका अनुक्रम लीए कर्मनि का स्थितिबध करनेरूप क्रमकरण हो है ताका, तहा असख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणादिक का, अर कर्मप्रकृतिनि के स्पर्द्धक देशघाती करनेरूप देशघातीकरण का, अर कर्मप्रकृतिनि कै केतेइक निषेकनि का अभाव करि अन्य निषेकनि विषै निपेक्षण करनेरूप अतरकरण का, अर अंतरकरण की समाप्तता भए युगपत् सात करननि का प्रारभ हो है ताका, तहा ही आनुपूर्वी संक्रमण का – इत्यादि वर्णन करि नपुसकवेद

अर स्त्रीवेद अर छह हास्यादिक, पुरुषवेद, तीन क्रोध अर तीन माया अर दोय लोभ; इनके उपशमावने के विधान का अनुक्रम तै वर्णन है । तहा गुणश्रेणी का वा स्थिति-अनुभागकाडकघात होने न होने का अर नपुसकवेदादिक विषै नवकबंध के स्वरूप-परिणमनादि विशेष का, वा प्रथम स्थिति के स्वरूप का आदि विशेप का, वा तहा आगाल, प्रत्यागाल गुणश्रेणी न हो है इत्यादि विशेषनि का, अर सक्रमणादि विशेष पाइए है, तिनका इत्यादि अनेक वर्णन पाइए है । बहुरि सज्वलन लोभ का उपशम विधान विषै लोभ-वेदककाल के तीन भागनि का, अर तहा प्रथम स्थिति आदिक का वर्णन करि सूक्ष्मकृष्टि करने का विधान वर्णन है । तहा प्रसग पाइ वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धकनि का कथन करि अर कृष्टि करने का वर्णन है । इहा बादरकृष्टि तो है ही नाही, सूक्ष्मकृष्टि है, तिनविषै जैसै कर्मपरमाणु परिणमै है वा तहा ही जैसै अनुभागादिक पाइए है, वा तहा अनुसमयापवर्त्तनरूप अनुभाग का घात हो है इत्यादिकनि का, अर उपशमावने आदि क्रियानि का वर्णन है । बहुरि सूक्ष्मसापराय गुणस्थान कौ प्राप्त होइ सूक्ष्मकृष्टि कौ प्राप्त जो लोभ, ताके उदय कौ भोगवने का, तहा संभवती गुणश्रेणी, प्रथम स्थिति आदि का इहा उदय-अनुदयरूप जैसै कृष्टि पाइए तिनका, वा सक्रमण-उपशमनादि क्रियानि का वर्णन है । बहुरि सर्व कषाय उपशमाय उपशात कषाय हो है ताका, अर तहा सभवती गुणश्रेणी आदि क्रियानि का, अर इहा जे प्रकृति उदय है, तिनविषै परिणामप्रत्यय अर भवप्रत्ययरूप विशेष का वर्णन है । ऐसै सभवती इकईस चारित्रमोह की प्रकृति उपशमावने का विधान कहि उपशात कषाय तै पडनेरूप दोय प्रकार प्रतिपात का, तहा भवक्षय निमित्त प्रतिपात तै देव सबन्धी असयत गुणस्थान कौ प्राप्त हो है । तहा गुणश्रेणी वा अनुपशमन वा अतर का पूरण करना इत्यादि जे क्रिया हो है, तिनका वर्णन है । अर अद्धाक्षय निमित्त तै क्रम तै पडि स्वस्थान अप्रमत्त पर्यत आवै तहा गुणश्रेणी आदिक का, वा चढतै जे क्रिया भई थी, तिनका अनुक्रम तै नष्ट होने का वर्णन है । वहुरि अप्रमत्त तै पडने का तहा सभवति क्रियानि का अर अप्रमत्त तै चढै तौ बहुरि श्रेणी माडै ताका वर्णन है । ऐसै पुरुषवेद, सज्वलन क्रोध का उदय सहित जो श्रेणी माडै, ताकी अपेक्षा वर्णन है । वहुरि पुरुषवेद, सज्वलन मान सहित आदि ग्यारह प्रकार उपशम श्रेणी चढनेवालो कै जो-जो विशेष पाइए है, तिनका वर्णन है । बहुरि इस उपशम चारित्र विधान विषै संभवते काल का अल्पबहुत्व वर्णन है ।

वहुरि क्षपणासार के अनुसारि लीए क्षायिकचारित्र के विधान का वर्णन है । तहां अध करणादि सोलह अधिकारनि का अर क्षपक श्रेणी कौ सन्मुख जीव का वर्णन है ।

बहुरि अध करण का वर्णन है। तहा विशुद्धता की वृद्धि आदि च्यारि आवश्यकनि का, अर तहा सभवते परिणाम, योग, कषाय, उपयोग, लेश्या, वेद, अर प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशरूप कर्मनि का सत्त्व, बध उदय, तिनका वर्णन है।

बहुरि अपूर्वकरण का वर्णन है। तहा सभवते स्थितिकाडकघात, अनुभाग-काडकघात, गुणश्रेणी, गुणसक्रम इनका विशेष वर्णन है। अर इहा प्रकृतिबध की व्युच्छित्ति हो है, तिनका वर्णन है। इहातै लगाय क्षपक श्रेणी विषै जहा-जहा जैसा-जैसा स्थितिबंधापसरण, अर स्थितिकाडकघात, अनुभागकाडकघात पाइए अर इनकौ होतै जैसा-जैसा स्थितिबध, अर स्थितिसत्त्व अर अनुभागसत्त्व रहै, तिनका बीच-बीच वर्णन है, सो कथन होगा तहा जानना।

बहुरि अनिवृत्तिकरण का कथन है। तहा स्वरूप, गुणश्रेणी, स्थितिकाडकादि का वर्णन करि कर्मनि का क्रम लीए स्थितिबध, स्थितिसत्त्व करने रूप क्रमकरण का वर्णन है। बहुरि गुणश्रेणी विषै असख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा होने लगी, ताका वर्णन है।

बहुरि प्रत्याख्यान-अप्रत्याख्यानरूप आठ कषायनि के खिपावने का विधान वर्णन है। बहुरि निद्रा-निद्रा आदि सोलह प्रकृति खिपावने का विधान वर्णन है। बहुरि प्रकृतिनि की देशघाती स्पर्द्धकनि का बध करनेरूप देशघातीकरण का वर्णन है। बहुरि च्यारि सज्वलन, नव नोकषायनि के केतेइक निषेकनि का अभाव करि अन्यत्र निक्षेपण करनेरूप अतरकरण का वर्णन है। बहुरि नपुसकवेद खिपावने का विधान वर्णन है। तहा सक्रम का वा युगपत् सात क्रियानि का प्रारभ हो है, तिनका इत्यादि वर्णन है। बहुरि स्त्रीवेद क्षपणा का वर्णन है। बहुरि छह नोकषाय अर पुरुषवेद इनकी क्षपणा का विधान वर्णन है। बहुरि अश्वकर्णकरणसहित अपूर्वस्पर्द्धक करने का वर्णन है। तहा पूर्वस्पर्द्धक जानने कौ वर्ग, वर्गणा, स्पर्द्धकनि का अर तिन-विषै देशघाती, सर्वघातिनि के विभाग का, वा वर्गणा की समानता, असमानता आदिक का कथन करि अश्वकरण के स्वरूप, विधान क्रोधादिकनि के अनुभाग का प्रमाणादिक का अर अपूर्वस्पर्द्धकनि के स्वरूप प्रमाण का तिनविषै द्रव्य-अनुभागा-दिक का, तहा समय-समय सबधी क्रिया का वा उदयादिक का बहुत वर्णन है।

बहुरि कृष्टिकरण का वर्णन है। तहां क्रोधवेदककाल के विभाग का, अर बादर-कृष्टि के विधान विषै कृष्टिनि के स्वरूप का, तहा बारह सग्रहकृष्टि, एक-एक सग्रहकृष्टि

विषै अनती अतरकृष्टि तिनका, अर तिनविषै प्रदेश अनुभागादिक के प्रमाण का, तहां समय-समय सबधी क्रियानि का वा उदयादिक का अनेक वर्णन है। बहुरि कृष्टि वेदना का विधान वर्णन है। तहा कृष्टिनि के उदयादिक का, वा सक्रम का, वा घात करने का, वा समय-समय सबधी क्रिया का विशेष वर्णन करि क्रम तै दश सग्रहकृष्टिनि के भोगवने का विधान-प्रमाणादिक का बहुत कथन करि तिनकी क्षपणा का विधान वर्णन है। बहुरि अन्य प्रकृति संक्रमण करि इनरूप परिणमी, तिनके द्रव्यसहित लोभ की द्वितीय, तृतीय सग्रहकृष्टि के द्रव्य कौ सूक्ष्मकृष्टिरूप परिणमावै है, ताके विधान-स्वरूप-प्रमाणादिक का वर्णन है। असै अनिवृत्तिकरण का बहुत वर्णन है। याविषै गुणश्रेणी-अनुभागघात के विशेष आदि बीचि-बीचि अनेक कथन पाइए है, सो आगै कथन होइगा तहा जानना।

बहुरि सूक्ष्मसापराय का वर्णन है। तहा स्थिति, अनुभाग का घात वा गुण-श्रेणी आदि का कथन करि बादरकृष्टि संबंधी अर्थ का निरूपण पूर्वक सूक्ष्मसापराय सबधी कृष्टिनि के अर्थ का निरूपण, अर तहा सूक्ष्मकृष्टिनि का उदय, अनुदय, प्रमाण अर सक्रमण, क्षयादिक का विधान इत्यादि अनेक वर्णन है। बहुरि यहु तौ पुरुषवेद, सज्वलन क्रोध का उदय सहित श्रेणी चढ्या, ताकी अपेक्षा कथन है। बहुरि पुरुषवेद, सज्वलन मान आदि का उदय सहित ग्यारह प्रकार श्रेणी चढने वालो कै जो-जो विशेष पाइए, ताका वर्णन है। असै कृष्टिवेदना पूर्ण भए।

बहुरि क्षीणकषाय का वर्णन। तहां ईर्यापथवध का, अर स्थिति-अनुभागघात वा गुणश्रेणी आदि का, वा तहा सभवते ध्यानादिक का अर ज्ञानावरणादिक के क्षय होने के विधान का, अर इहाँ शरीर सम्बन्धी निगोद जीवनि के अभाव होने के क्रम का इत्यादि वर्णन है।

बहुरि सयोगकेवली का वर्णन है। तहा ताके महिमा का अर गुणश्रेणी का अर विहार-आहारादिक होने न होने का वर्णन करि अतर्मुहूर्त्त मात्र आयु रहै आवर्जितकरण हो है ताका, तहा गुणश्रेणी आदि का, अर केवलसमुद्घात का, तहा दड-कपाटादिक के विधान वा क्षेत्रप्रमाणादिक का, वा तहा सभवती स्थिति-अनुभाग घटने आदि क्रियानि का वा योगनि का इत्यादि वर्णन है। बहुरि बादर मन-वचन काय योग कौ निरोधि सूक्ष्म करने का, तहा जैसै योग हो है, ताका अर सूक्ष्म मनोयोग, वचनयोग, उच्छ्वास-निश्वास, काययोग के निरोध करने का, तहा काययोग के

पूर्वस्पर्द्धकनि के अपूर्वस्पर्द्धक अर तिनकी सूक्ष्मकृष्टि करिए है, तिनका स्वरूप, विधान, प्रमाण, समय-समय सम्बन्धी क्रियाविशेष इत्यादिक का अर करी सूक्ष्मकृष्टि, ताकौ भोगवता सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाती ध्यान युक्त हो है, ताका वा तहां सभवते स्थिति-अनुभागघात वा गुणश्रेणी आदि विशेष का वर्णन है ।

बहुरि अयोगकेवली का वर्णन है । तहा ताकी स्थिति का, शैलेश्यपना का, ध्यान का, तहां अवशेष सर्व प्रकृति खिपवाने का वर्णन है ।

बहुरि सिद्ध भगवान का वर्णन है । तहा सुखादिक का, महिमा का, स्थान का, अन्य मतोक्त स्वरूप के निराकरण का इत्यादि वर्णन है । ऐसै लब्धिसार क्षपणासार कथन की सूचनिका जाननी ।

बहुरि अन्त विषै अपने किछू समाचार प्रगट करि इस सम्यग्ज्ञानचद्रिका की समाप्तता होतै कृतकृत्य होइ आनद दशा कौ प्राप्त होना होइगा । ऐसै सूचनिका करि ग्रथसमुद्र के अर्थ सक्षेपपनै प्रकट किए है ।

इति सूचनिका ।

—०—

परिकर्माष्टक सम्बन्धी प्रकरण

बहुरि इस करणानुयोगरूप शास्त्र के अभ्यास करने के अर्थि गणित का ज्ञान अवश्य चाहिये, जातै अलकारादिक जानै प्रथमानुयोग का, गणितादिक जानै करणानुयोग का, सुभाषितादिक जानै चरणानुयोग का, न्यायादि जानै द्रव्यानुयोग का विशिष्ट ज्ञान हो है, तातै गणित ग्रथनि का अभ्यास करना । अर न बनै तौ परिकर्माष्टक तौ अवश्य जान्या चाहिये । जातै याकौ जाणै अन्य गणित कर्मनि का भी विधान जानि तिनकौ जानै अर इस शास्त्र विषै प्रवेश पावै । तातै इस शास्त्र का अभ्यास करने को प्रयोजनमात्र परिकर्माष्टक का वर्णन इहा करिए है—

तहा परिकर्माष्टक विषै सकलन, व्यवकलन, गुणाकार, भागहार, वर्ग, घन, वर्गमूल, घनमूल ए आठ नाम जानने । ए लौकिक गणित विषै भी सभवै है, अर अलौकिक गणित विषै भी संभवै है । सो लौकिक गणित तौ प्रवृत्ति विषै प्रसिद्ध ही है । अर अलौकिक गणित जघन्य सख्यातादिक वा पल्यादिक का व्याख्यान आगै जीवसमासाधिकार पूर्ण भए पीछै होइगा, तहा जानना । अब संकलनादिक का स्वरूप

कहिए है। किसी प्रमाण कौ किसी प्रमाण विषै जोडिये तहा संकलन कहिए। जैसे सात विषै पाच जोडे बारह होइ, वा पुद्गलराशि विषै जीवादिक का प्रमाण जोडे सर्व द्रव्यनि का प्रमाण होइ है।

बहुरि किसी प्रमाण विषै किसी प्रमाण कौ घटाइए, तहा व्यवकलन कहिए। जैसे बारह विषै पाच घटाऐ सात होय, वा संसारी राशि विषै त्रसराशि घटाऐ स्थावरनि का प्रमाण होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौ किसी प्रमाण करि गुणिए, तहा गुणकार कहिए। जैसे पाच कौ च्यारि करि गुणिए वीस होइ, वा जीवराशि कौ अनन्त करि गुणै पुद्गलराशि होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौ किसी प्रमाण का जहा भाग दीजिए, तहा भागहार कहिए। जैसे वीस कौ च्यारि करि भाग दीऐ पाच होइ, वा जगत् श्रेणी कौ सात का भाग दीए राजू होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौ दोय जायगा माडि परस्पर गुणिए, तहा तिस प्रमाण का वर्ग कहिए। जैसे पाच कौ दोय जायगा माडि परस्पर गुणै पाँच का वर्ग पचीस होइ, वा सूच्यगुल कौ दोय जायगा मांडि, परस्पर गुणै, सूच्यगुल का वर्ग प्रतरागुल होइ।

बहुरि किसी प्रमाण कौ तीन जायगा माडि, परस्पर गुणै, तिस प्रमाण को घन कहिए। जैसे पाच को तीन जायगा माडि, परस्पर गुणै, पाच का घन एक सौ पचीस होइ। वा जगत् श्रेणी कौ तीन जायगा माडि परस्पर गुणै लोक होइ।

बहुरि जो प्रमाण जाका वर्ग कीये होइ, तिस प्रमाण का सो वर्गमूल कहिए। जैसे पचीस पाच का वर्ग कीए होइ तातै पचीस का वर्गमूल पाच है। वा प्रतरागुल है सो सूच्यगुल का वर्ग कीए हो है, तातै प्रतरागुल का वर्गमूल सूच्यगुल है।

बहुरि जो प्रमाण जाका घन कीए होइ, तिस प्रमाण का सो घनमूल कहिए। जैसे एक सौ पचीस पाच का घन कीए होइ, तातै एक सौ पचीस का घनमूल पाच है। वा लोक है सो जगत्श्रेणी का घन कीए हो है, तातै लोक का घनमूल जगत्श्रेणी है।

अब इहां केतेइक संज्ञाविशेष कहिए है । संकलन विषै जोडनें योग्य राशि का नाम धन है । मूलराशि कौ तिस धन करि अधिक कहिए । जैसैं पाच अधिक कोटि वा जीवराश्यादिक करि अधिक पुद्गल इत्यादिक जानने ।

बहुरि व्यवकलन विषै घटावने योग्य राशि का नाम ऋण है । मूलराशि कौ तिस ऋण करि हीन वा न्यून वा शोधित वा स्फोटित इत्यादि कहिए । जैसे पांच करि हीन कोटि वा त्रसराशि हीन संसारी इत्यादि जानने । कही मूलराशि का नाम धन भी कहिए है ।

बहुरि गुणकार विषै जाकौ गुणिए, ताका नाम गुण्य कहिए ।

जाकरि गुणिए, ताका नाम गुणकार वा गुणक कहिए ।

गुण्यराशि कौ गुणकार करि गुणित वा हत वा अभ्यस्त वा घ्नत इत्यादि कहिए । जैसैं पंचगुणित लक्ष वा असख्यात करि गुणित लोक कहिए । कही गुणकार प्रमाण गुण्य कहिए । जैसे पाच गुणा वीस कौ पाच वीसी कहिए वा असंख्यातगुणा लोक कू असख्यातलोक कहिए इत्यादिक जानने । गुनने का नाम गुणन वा हनन वा घात इत्यादि कहिए है ।

बहुरि भागहार विषै जाकौ भाग दीजिए ताका नाम भाज्य वा हार्य इत्यादि है । अर जाका भाग दीजिए ताका नाम भागहार वा हार वा भाजक इत्यादि है । भाज्य राशि कू भागहार करि भाजित भक्त वा हत वा खडित इत्यादि कहिए । जैसै पांच करि भाजित कोटि वा असख्यात करि भाजित पल्य इत्यादिक जानने । भागहार का भाग देइ एक भाग ग्रहण करना होइ, तहा तेथवा भाग वा एक भाग कहिये । जैसे वीस का चौथा भाग, वा पल्य का असख्यातवा भाग वा असख्यातैक भाग इत्यादि जानना ।

बहुरि एक भाग विना अवशेष भाग ग्रहण करने होई तहा वहुभाग कहिए । जैसे वीस के च्यारि बहुभाग वा पल्य का असख्यात बहुभाग इत्यादि जानने ।

बहुरि वर्ग का नाम कृति भी है । बहुरि वर्गमूल का नाम कृतिमूल वा मूल वा पद वा प्रथम मूल भी है । बहुरि प्रथम मूल के मूल कौ द्वितीय मूल कहिए । द्वितीय मूल के मूल कौ तृतीय मूल कहिए । असै चतुर्थादि मूल जानने । जैसे

पैंसठ हजार पाच सौ छत्तीस का प्रथम मूल दोय सै छप्पन, द्वितीय मूल सोलह, तृतीय मूल च्यारि, चतुर्थ मूल दोय होइ । ऐसै ही पल्य वा केवलज्ञानादि के प्रथमादि मूल जानने । ऐसें अन्य भी अनेक सज्ञाविशेष यथासभव जानने ।

अब इहा विधान कहिए है। सो प्रथम लौकिक गणित अपेक्षा कहिए है। तहा ऐसा जानना **'अंकानां वामतो गतिः'** 'अकनि का अनुक्रम बाई तरफ सेती है। जैसे दोय सै छप्पन (२५६) के तीन अकनि विषै छक्का आदि अंक, पाचा दूसरा अक, दूवा अत अक कहिये । ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ आदि अकनि कौ क्रम तै एक स्थानीय, दश स्थानीय, शत स्थानीय, सहस्र स्थानीय आदि कहिए । प्रवृत्ति विषै इनही कौ इकवाई, दहाई, सैकडा, हजार आदि कहिए है ।

बहुरि सकलनादि होतै प्रमाण ल्यावने कौ गणित कर्म कौ कारण जे करण-सूत्र, तिनकरि गणित शास्त्रनि विषै अनेक प्रकार विधान कह्या है, सो तहातै जानना वा त्रिलोकसार की भाषा टीका बनी है, तहा लौकिक गणित का प्रयोजन जानि पीठबध विषै किछु वर्णन किया है, सो तहातै जानना ।

इस शास्त्र विषै गणित का कथन की मुख्यता नाही वा लौकिक गणित का बहुत विशेष प्रयोजन नाही तातै इहा बहुत वर्णन न करिए है । विधान का स्वरूप मात्र दिखावने कौ एक प्रकार करि किचित् वर्णन करिए है।

तहा सकलन विषै जिनका सकलन करना होइ, तिनके एक स्थानीय आदि अकनि कौ क्रम तै यथास्थान जोडै जो-जो अक आवै, सो-सो अक जोड विषै क्रम तै यथास्थान लिखना । सो प्रवृत्ति विषै जैसै जोड देने का विधान है, तैसै ही यहु जानना । बहुरि जो एक स्थानीय आदि अक जोडै दोय, तीन आदि अंक आवै तौ प्रथम अक कौ जोड विषै पहिले लिखिए । द्वितीय आदि अकनि कौ दश स्थानीय आदि अकनि विषै जोडिए । याकौ प्रवृत्ति विषै हाथिलागा कहिए है । ऐसै करतै जो अक होइ, सो जोड्या हुवा प्रमाण जानना ।

इहा उदाहरण – जैसै दोय सै छप्पन अर चौरासी (२५६+८४) जोडिए, तहा एक स्थानीय छह अर च्यारि जोडै दश भए । तहा जोड विषै एक स्थानीय बिंदी लिखी, अर रह्या एक, ताकौ अर दश स्थानीय पाचा, आठा इन कौ जोडै,

चौदह भए । तहा जोड विषै दश स्थानीय चौका लिख्या अर रह्या एका, ताकौ अर शत स्थानीय दूवा कौ जोडै, तीन भया, सो जोड विषै शत स्थानीय लिख्या । ऐसै जोडै तीन सै चालीस भये । ऐसै ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि व्यवकलन विषै मूलराशि के एक स्थानीय आदि अकनि विषै ऋण राशि के एक स्थानीय आदि अकनि कौ यथाक्रम घटाइए । जो मूलराशि के एक स्थानीय आदि अंक तै ऋणराशि के एक स्थानीय आदि अ क अधिक प्रमाण लीए होइ तौ धनराशि के दश स्थानीय आदि अंक विषै एक घटाइ धनराशि के एक स्थानीय आदि अक विषै दश जोडि, तामै ऋणराशि का अक घटावना । सो प्रवृत्ति विषै जैसै बाकी काढने का विधान है, तैसै ही यहु जानना । ऐसै करतै जो होइ, सो अवशेष प्रमाण जानना ।

इहा उदाहरण – जैसै छह सै पिचहत्तरि मूलराशि विषै बाणवै (६७५–९२) ऋण घटावना होइ, तहा एक स्थानीय पाच मे दूवा घटाए तीन रहे अर दश स्थानीय सात विषै नव घटै नाही तातै शतस्थानीय छक्का मैं एक घटाइ ताके दश सात विषै जोडै सतरह भए, तामै नौ घटाइ आठ रहे शत स्थानीय छक्का मे एक घटाये पांच रहे, तामै ऋण का अक कोऊ घटावने कौ है नाही तातै, पाच ही रहे । ऐसै अवशेष पाच सै तियासी प्रमाण आया । ऐसै ही अन्यत्र जानना ।

बहुरि गुणकार विषै गुण्य के अत अक तै लगाय आदि अक पर्यत एक-एक अक कौ क्रम तै गुणकार के अकनि करि गुणि यथास्थान लिखिए वा जोडिए, तब गुणित राशि का प्रमाण आवै ।

इहा उदाहरण – जैसै गुण्य दोय सै छप्पन अर गुणकार सोलह (२५६×१६) । तहा गुण्य का अत अक दूवा कौ सोलह करि गुणना । तहा छक्का तौ दूवा ऊपरि अर एका ताके पीछै $\begin{matrix}16\\256\end{matrix}$ ऐसै स्थापन करि एक करि दूवा कौ गुणै, दोय पाये, सो तो एक के नीचै लिखना । अर छह करि दूवा कौ गुणै बारह पाए, तिसविषै दूवा तौ गुण्य की जायगा लिखना एका पहिलै दोय लिख्या था तामै जोडना तब ऐसा भया [३२ ५६] । बहुरि ऐसै ही गुण्य का उपात अक पाचा, ताकौ सोलह करि गुणना तहा ऐसै $\begin{matrix}16\\32,56\end{matrix}$ स्थापना करि एका करि पाचा कौ गुणै, पांच भये, सो तौ एका के नीचै दूवा, तामै जोडिए अर छक्का करि पांचा कौ गुणै तीस भए, तहां बिंदी पाचा की जायगां माडि तीन पीछले अकनि विषै जोडिए ऐसै कीए

इहा उदाहरण – जैसें वर्गित राशि पैंसठ हजार पाच सौ छत्तीस (६५५३६) इहा विषम-सम की सहनानी ऐसी ।-।-। ६५५३६ करि अन्त का विषम छक्का तामैं तीन का वर्ग तौ बहुत होइ जाइ, तातैं संभवता दोय का वर्ग च्यारि घटाइ अवशेष दोइ तहा लिखना। अर मूल अक दूवा जुदा पक्ति विषै लिखना। बहुरि तिस अवशेष सहित आगिला सब अक ऐसा २५। ताकौ जुदा लिख्या जो दूवा तातै दूणा च्यारि का भाग दीए, छह पावै, परतु आगै वर्ग घटावने का निर्वाह नाही, तातै पाच पाया, सो जुदा लिख्या हुआ दूवा के आगै लिखना। अर पाया अक पाच करि भागहार च्यारि कौ गुणि, भाज्य मै घटाए, पचीस की जायगा पाच रह्या, तिस सहित आगिला विषम ऐसा (५५) तामैं पाया अक पाच का वर्ग पचीस घटाए, अवशेष ऐसा ३०, तिस सहित आगिला सम ऐसा ३०३, ताकौ जुदे लिखे अंकनि तै दूणा प्रमाण पचास का भाग दीए छह पाया, सो जुदे लिखे अंकनि के आगै लिखना। अर छह करि भागहार पचास कौ गुणि, भाज्य मै घटाए अवशेष ऐसा ३ रह्या, तिस सहित आगिला विषम ऐसा ३६, यामैं पाया अक छह का वर्ग घटाए राशि निःशेष भया। ऐसैं जुदे लिखे हूवे अकनि करि पैंसठ हजार पाच सै छत्तीस का वर्गमूल दोए सै छप्पन आया। ऐसैं ही अन्यत्र विधान जानना।

बहुरि घनमूल विषै घन रूप राशि के अंकनि उपरि पहिला घन, दूजा-तीजा अघन चौथा घन, पाचवाँ-छठा अघन ऐसैं क्रमतै ऊभी आडी लीक रूप सहनानी करनी। जो अत का घन अंक न होइ तो अन्त उपात दोय अकनि की घन संज्ञा जाननी। अर ते दोऊ घन न होइ तौ अन्त तै तीन अंकनि की घन संज्ञा जाननी। तहा एक वा दोय वा तीन अक रूप जो अन्त का घन, तामैं जाका घन संभवै ताका घन करि ताकौ अंत का घन अकरूप प्रमाण मै घटाइ अवशेष तहा लिखना। अर जाका घन कीया था, तिस मूल अक कौ जुदा पक्ति विषै स्थापना। बहुरि तिस अवशेष सहित आगिला अंक कौ तिस मूल अक के वर्ग तै तिगुणा भागहार का भाग देना जो अक पावै, ताकौ जुदा लिख्या हुवा अक के आगै लिखना। अर पाया अक करि भागहार कौ गुणी, भाज्य मे घटाइ अवशेष तहा लिखि देना। बहुरि इस अवशेष सहित आगिला अक, ताविषै पाया अक के वर्ग कौ पूर्वै पक्ति विषै तिष्ठते अकनि करि गुणैं, जो प्रमाण होइ, ताकौ तिगुणा करि घटाइ देना। अवशेष तहा लिखना। बहुरि इस अवशेष सहित आगिला अक विषै तिस ही पाया अक का घन घटावना। बहुरि अवशेष सहित आगिला अंक कौ जुदा लिखि अंकनि के प्रमाण

का वर्ग कौ तिगुणा करि निर्वाह होइ, तैसे भाग देना । पाया अक पक्ति विषै आगै लिखना । ऐसै ही अनुक्रम तै यावत् धनराशि नि शेष होइ तावत् कीए घनमूल का प्रमाण आवै है ।

इहां उदाहरण – जैसे घनराशि पंद्रह हजार छह सै पच्चीस (१५६२५) इहां घनअघन की सहनानी कीए ऐसा (१५६२५) इहा अन्त अंक घन नाही तातै दोय अंक रूप अन्तघन १५ । इहा तीन का घन कीए बहुत होइ जाइ, तातै दोय का घन आठ घटाइ, तहा अवशेष सात लिखना । अर घनमूल दूवा जुदी पक्ति विषै लिखना बहुरि तिस अवशेष सहित आगिला अंक ऐसा (७६) ताकौ मूल अक का वर्ग च्यारि, ताका तिगुणा बारह, ताका भाग दिए छह पावै, परतु आगै निर्वाह नाही तातै पाच पाया सो दूवा के आगै पक्ति विषै लिखना अर इस पाच करि भागहार बारह कौ गुणि, भाज्य में घटाए, अवशेष सोलह (१६) तिस सहित आगिला अक ऐसा (१६२) तामै पाया अक पाच, ताका वर्ग पचीस, ताकौ पूर्वे पंक्ति विषै तिष्ठै था दूवा, ताकरी गुणे पचास, तिनके तिगुणे ड्योढ सै घटाए अवशेष बारह, तिस सहित आगिला अंक ऐसा (१२५), यामै पाच का घन घटाए राशि नि शेष भया ऐसै पंद्रह हजार छ सै पच्चीस का घनमूल पच्चीस प्रमाण आया । ऐसे ही अन्यत्र जानना ।

ऐसे वर्णन करि अब भिन्न परिकर्माष्टक कहिए है । तहा हार अर अशनि का संकलनादिक जानना । हार अर अंश कहा कहिए । जैसै जहा छह पंचास कहे, तहा एक के पचास अंश कीए तिह समान छह अश जानने । वा छह का पाचवा भाग जानना । तहां छह कौ तो हार वा हर वा छेद कहिए । अर पाच कौ अश वा लव इत्यादिक कहिए । तहा हार कौ ऊपरि लिखिए, अश कौ नीचै लिखिए । जैसे छह पंचास कौ ऐसा $\frac{६}{५०}$ लिखिए । ऐसे ही अन्यत्र जानना । तहाँ भिन्न सकलन-व्यवकलन के अर्थि भागजाति, प्रभागजाति, भागानुबध, भागापवाह ए च्यारि जाति है । तिन-विषै इहा विशेष प्रयोजनभूत समच्छेद विधान लीए भागजाति कहिए है । जुदे-जुदे हार अर तिनके अश लिखि एक-एक हार कौ अन्य हारनि के अशनि करि गुणिए अर सर्व अशनि कौ परस्पर गुणिए । ऐसे करि जो सकलन करना होइ तौ परस्पर हारनि कौ जोड दीजिए अर व्यवकलन करना होइ तो मूलराशि के हारनि विषै ऋणराशि के हार घटाइ दीजिए । अर अश सबनि के समान भए । तातै अश परस्पर गुणे जेते भए तेते ही राखिए । ऐसे समान अश होने तै याका नाम समच्छेद विधान है ।

इहा उदाहरण – तहा संकलन विषै पाच छट्ठा अश दोय तिहाइ तीन पाव (चौथाई) इनकौ जोडना होइ तहा | ५/६ | २/३ | ३/४ | ऐसा लिखि तहा पाच हार कौ अन्य के तीन च्यारि-अशनि करि अर दोय हार कौ अन्य के छह-च्यारि अंशनि करि अर तीन हार कौ अन्य के छह-तीन अशनि करि गुणे साठि अडतालीस चौवन हार भए। अर अशनि कौ परस्पर गुणे सर्वत्र बहत्तर अ श | ६०/७२ | ४८/७२ | ५४/७२ | ऐसै भए। इहां हारनि कौ जोडे एक सो बासठ हार अर बहत्तर अश भए तहा हार कौ अंश का भाग दीए दोय पाये अर अवशेष अठारह का बहत्तरिवा भाग रह्या। ताका अठारह करि अपवर्त्तन कीए एक का चौथा भाग भया। ऐसै तिनका जोड सवा दोय आया। कोई संभवता प्रमाण का भाग देइ भाज्य वा भाजक राशि का महत् प्रमाण कौ थोरा कीजिए (वा नि शेष कीजिए) तहा अपवर्त्तन सज्ञा जाननी सो इहा अठारह का भाग दीए भाज्य अठारह था, तहा एक भया अर भागहार बहत्तर था, तहा च्यारि भया, तातै अठारह करि अपवर्त्तन भया कह्या। ऐसै ही अन्यत्र अपवर्त्तन का स्वरूप जानना।

बहुरि व्यवकलन विषै जैसे तीन विषै पांच चौथा अश घटावना। तहां **'कल्प्यो हरो रूपमहारराशेः'** इस वचन तै जाकै अश न होइ, तहा एक अंश कल्पना, सो इहा तीनका अश नाही, तातै एक अश कल्पि | ३/१ | ५/४ | ऐसै लिखना इहां तीन हारनि कौ अन्य के च्यारि अश करि, अर पाच हारनि कौ अन्य के एक अंश करि गुणे अर अशनि कौं परस्पर गुणे | १२/४ | ५/४ | ऐसा भया। इहा बारह हारनि विषै पाच घटाएं सात हार भए। अर अश च्यारि भए। तहा हार कौ अश का भाग दीए एक अर तीन का चौथा भाग पौण इतना फल आया।

बहुरी भिन्न गुणकार विषै गुण्य अर गुणकार के हार कौ हार करि अश कौ अंश करि गुणन करना। जैसे दश की चोथाइ कौ च्यारि की तिहाइ करि गुणना होइ, तहां ऐसा | १०/४ | ४/३ | लिखि गुण्य-गुणकार के हार अर अशनि कौ गुणे चालीस हार अर बारह अ श | ४०/१२ | भए तहा हार कौ अंश का भाग दीए तीन पाया। अब शेष च्यारि का बारहवा भाग ताकौ च्यारि करि अपवर्त्तन कीए एक का तीसरा भाग भया। ऐसे ही अन्यत्र जानना।

बहुरि भिन्न भागहार विषै भाजक के हारनि कौ अंश कीजिए अर अंशनि कौ हार कीजिए। ऐसे पलटि भाज्य-भाजक का गुण्य-गुणकारवत् विधान करना। जैसे सैंतीस के आधा कौ तेरह की चौथाई का भाग देना होइ तहा ऐसे |३७/२|१३/४| लिखिए बहुरि भाजक के हार अर अंश पलटै ऐसे |३७/२|४/१३| लिखिना। बहुरि गुणनविधि कीए एक सौ अडतालीस हार अर छव्वीस अंश १४८/२६ भए। तहा अंश का हार कौ भाग दीए पाच पाए। अर अवशेष अठारह छव्वीसवा भाग, ताका दोय करि अपवर्त्तन कीए नव तेरहवा भागमात्र भया। ऐसे ही अन्यत्र जानना।

बहुरि भिन्न वर्ग अर घन का विधान गुणकारवत् ही जानना। जातै समान राशि दोय कौ परस्पर गुणे वर्ग हो है। तीन कौ परस्पर गुणे घन हो है। जैसे तेरह का चौथा भाग कौ दोय जायगा माडि |१३/४|१३/४| परस्पर गुणे ताका वर्ग एक सौ गुणहत्तर का सोलहवां भागमात्र १६९/१६ हो है। अर तीन जायगा माडि |१३/४|१३/४|१३/४| परस्पर गुणे इकईस सै सत्याणवै का चौसठवा भाग मात्र २१९७/६४ घन हो है। बहुरि भिन्न वर्गमूल, घनमूल विषै हारनि का अर अंशनि का पूर्वोक्त विधान करि जुदा-जुदा मूल ग्रहण करिए। जैसे वर्गित राशि एक सौ गुणहत्तरि का सोलहवा भाग १६९/१६। तहा पूर्वोक्त विधान तै एक सौ गुणहत्तरि का वर्गमूल तेरह, अर सोलह का च्यारि ऐसे तेरह का चौथा भागमात्र १३/४ वर्गमूल आया। बहुरि घनराशि इकईस सै सत्याणवै का चौसठवा भाग २१९७/६४। तहा पूर्वोक्त विधान करि इकईस सै सत्याणवे का घनमूल तेरह, चौसठि का च्यारि ऐसे तेरह का चौथा भागमात्र १३/४ घनमूल आया। ऐसे ही अन्यत्र जानना।

बहुरि अब शून्यपरिकर्माष्ट लिखिए है। शून्य नाम बिंदी का है, ताके संकलनादिक कहिए है। तहा बिंदी विषै अंक जोडे अंक ही होय। जैसे पचास विषै पांच जोडिए। तहां एकस्थानीय बिंदी विषै पांच जौडे पाच भए। दशस्थानीय पाच है ही, ऐसे पचावन भए। बहुरि अंक विषै बिंदी घटाए अंक ही रहै। जैसे पचावन मे दश

घटाए एक स्थानीय पाच मे बिंदी घटाए पाच ही रहे, दशस्थानीय पाच मे एक घटाए च्यारि रहे असैं पैतालीस भए । बहुरि गुणकार विषै अंक को बिंदीकरि गुणे बिंदी होय । जैसैं वीस कौ पाच करि गुणिए, तहा गुण्य के दूवा कौ पांच करि गुणे दश भए । बहुरि बिंदी कौ पाच करि गुणे, बिंदी ही भई असैं सौ भए ।

बहुरि अक कौ बिंदी का भाग दीए खहर कहिए । जातैं जैसैं-जैसैं भागहार घटता होइ, तैसैं-तैसैं लब्धराशि बधती होइ । जैसैं दश कौ एक का छठ्ठा भाग का भाग दिए साठि होइ, एक का वीसवा भाग का भाग दीए दोय सै होय, सो बिंदी शून्यरूप, ताका भाग दीए फल का प्रमाण अवक्तव्य है । याका हार बिंदी है, इतना ही कह्या जाए । बहुरी बिंदी का वर्गघन, वर्गमूल, घनमूल विषै गुणकारादिवत् बिंदी ही हो है । असैं लौकिक गणित अपेक्षा परिकर्माष्टक का विधान कह्या ।

बहुरि अलौकिक गणित अपेक्षा विधान है, सो सातिशय ज्ञानगम्य है । जातैं तहा अकादिक का अनुक्रम व्यक्तरूप [१] नाही है । तहा कही तौ संकलनादि होतैं जो प्रमाण भया ताका नाम कहिए है। जैसैं उत्कृष्ट असंख्यातासख्यात विषैं एक जोडैं जघन्य परीतानत होइ, (जघन्य परीतानत मे एक घटाए उत्कृष्ट असख्यातासख्यात होइ) [२] अर जघन्य परीतासख्यात विषै एक घटाए उत्कृष्ट सख्यात होइ । पल्य कौ दशकोडाकोडि करि गुणे सागर होइ जगत् श्रेणी कू सात का भाग दीए राजू होइ । जघन्य युक्तासख्यात का वर्ग कीए जघन्य असख्यातासख्यात होइ । सूच्यगुल का घन कीये घनागुल होइ । प्रतरागुल का वर्गमूल ग्रहे सूच्यगुल होइ । लोक का घनमूल ग्रहे जगत् श्रेणी होइ, इत्यादि जानना ।

बहुरि कही सकलनादि होते जो प्रमाण भया, ताका नाम न कहिए है, सकलनादिरूप ही कथन कहिए है । जाते सर्व सख्यात, असख्यात, अनतनि के भेदनि का नाम वक्तव्यरूप नाही है । जैसैं जीवराशि करि अधिक पुद्गलराशि कहिए वा सिद्ध राशि करि हीन जीवराशि कहिए, वा असख्यात गुणा लोक कहिए वा सख्यात प्रतरागुल करि भाजित जगत्प्रतर कहिए, वा पल्य का वर्ग कहिए, वा पल्य का घन कहिए, वा केवलज्ञान का वर्गमूल कहिए, वा आकाश प्रदेशराशि का घनमूल कहिए, इत्यादि

---

१ घ प्रति 'वक्तव्यरूप' ऐसा पाठ है ।

२ यह वाक्य सिर्फ छपी प्रति मे है, हस्तलिखित छह प्रतियो मे नहीं है

जानना । बहुरि अलौकिक मान की सहनानी स्थापि, तिनके लिखने का वा तहां सक-लनादि होतै लिखने का जो विधान है, सो आगै सदृष्टि अधिकार विषै वर्णन करेंगे, तहां तै जानना । बहुरि तहां ही लौकिक मान का भी लिखने का वा तहां सकलनादि होतै लिखने का जो विधान है, सो वर्णन करेंगे । इहां लिखै ग्रन्थ विषै प्रवेश करते ही शिष्यनि कौ कठिनता भासती, तहां अरुचि होती, तातै इहां न लिखिए है । उदाहरण मात्र इतना ही इहां भी जानना, जो सकलन विषै तौ अधिक राशि कौ ऊपरि लिखना जैसै पच अधिक सहस्र "५" १००० असै लिखने । व्यवकलन विषै हीन राशि कौ ऊपरि लिखि तहां पूछडीकासा आकार करि बिंदी दीजिए जैसै पच हीन सहस्र ५~ १००० असै लिखिए । गुणकार विषै गुण्य के आगै गुणक कौ लिखिए । जैसै पंचगुणा सहस्र १०००×५ असै लिखिए । भागहार विषै भाज्य के नीचै भाजक कौ लिखिए । जैसै पांच करि भाजित सहस्र १०००/५ असै लिखिए । वर्ग विषै राशि कौ दोय बार बराबर मांडिए । जैसैं पांच का वर्ग कौ ५×५ असैं लिखिए । घन विषै राशि कौ तीन बार बराबरि माडिए । जैसै पांच का घन कौ ५×५×५ असै लिखिए । वर्गमूल-घनमूल विषै वर्गरूप-घनरूप राशि के आगै मूल की सहनानी करनी । जैसै पचीस का वर्गमूल कौ "२५ व० मू०" असै लिखिए । एक सौ पचीस का घनमूल कौ "१२५ घ० मू०" असै लिखिए । असै अनेक प्रकार लिखने का विधान हैं । असै परिकर्माष्टक का व्याख्यान कीया सो जानना ।

बहुरि त्रैराशिक का जहां-तहां प्रयोजन जानि स्वरूप मात्र कहिए है । तहां तीन राशि हो है – प्रमाण फल, इच्छा । तहां जिस विवक्षित प्रमाण करि जो फल प्राप्त होइ, सो प्रमाणराशि अर फलराशि जाननी । बहुरि अपना इच्छित प्रमाण होइ, सो इच्छा राशि जाननी । तहां फल कौ इच्छा करि गुणि, प्रमाण का भाग दीए अपना इच्छित प्रमाण करि प्राप्त जो फल, ताका प्रमाण आवै है, इसका नाम लब्ध है । इहां प्रमाण अर इच्छा [१] की एकजाति जाननी । बहुरि फल अर लब्ध की एक जाति जाननी । इहां उदाहरण जैसै पाच रुपैया का सात मण अन्न आवै तौ सात रुपैया का केता अन्न आवै असै त्रैराशिक कीया । इहां प्रमाण राशि पाच, फल राशि सात, इच्छा राशि सात, तहां फलकरि इच्छा कौ गुणि प्रमाण का भाग दीए गुणचास

१ छपी प्रति 'इच्छा' शब्द और अन्य हस्तलिखित प्रतियो मे 'फल' शब्द है ।

का पाचवा भाग मात्र लब्ध प्रमाण आया। ताका नव मण अर च्यारि मण का पाचवां भाग मात्र लब्धराशि भया।

अैसे ही छह सै आठ (६०८) सिद्ध छह महीना आठ समय विषै होइ, तौ सर्व सिद्ध केते काल मे होइ, अैसे त्रैराशिक करिए, तहा प्रमाण राशि छह सै आठ, अर फलराशि छह मास आठ समयनि की संख्यात आवली, इच्छा राशि सिद्धराशि। तहा फल करि इच्छा कौ गुणि, प्रमाण का भाग दीए लब्धराशि सख्यात आवली करि गुणित सिद्ध राशि मात्र अतीत काल का प्रमाण आवै है। अैसे ही अन्यत्र जानना।

बहुरि केतेइक गणितनि का कथन आगै इस शास्त्र विषै जहां प्रयोजन आवैगा तहा कहिएगा। जैसे श्रेणी व्यवहार का कथन गुणस्थानाधिकार विषै करणनि का कथन करते कहिएगा। बहुरि एक बार, दोय बार आदि सकलन का कथन ज्ञानाधिकार विषै पर्यायसमासज्ञान का कथन करते कहिएगा। बहुरि गोल आदि क्षेत्र व्यवहार का कथन जीवसमासादिक अधिकारनि विषै कहिएगा। अैसे ही और भी गणितनि का जहा प्रयोजन होइगा तहा ही कथन करिएगा सो जानना। बहुरि अज्ञात राशि ल्यावने का विधान वा सुवर्णगणित आदि गणितनि का इहां प्रयोजन नाही, तातै तिनका इहा कथन न करिए है। अैसे गणित का कथन किया। ताकौ यादि राखि जहा प्रयोजन होइ, तहा यथार्थरूप जानना। बहुरि अैसै ही इस शास्त्र विषै करणसूत्रनि का, वा केई संज्ञानि का वा केई अर्थनि का स्वरूप एक बार जहा कह्या होइ, तहातै यादि राखि, तिनका जहा प्रयोजन आवै, तहा तैसा ही स्वरूप जानना।

या प्रकार श्रीगोम्मटसार शास्त्र की सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका नामा भाषाटीका विषै पीठिका समाप्त भई।
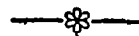
—-※—-

आचार्यप्रवर श्रीमन्नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ति विरचित

लब्धिसार

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका
भाषाटीका सहित

॥ मंगलाचरण ॥

सम्यग्दर्शनचरनगुन पाय कुकर्म खिपाय ।
केवलज्ञान उपाय प्रभु भए भजौ शिवराय ॥१॥

जिनवानी के ज्ञान तै होत तत्व श्रद्धान ।
चरण धारि केवल लहै पावै पद निरवान ॥२॥

नेमिचन्द आल्हादकर माधवचन्द प्रधान ।
नमौ जास उज्जास तै जाने निजगुण थान ॥३॥

लब्धिसार कौ पाय कै करि कै क्षपणासार ।
हो है प्रवचनसार सों समयसार अविकार ॥४॥

लब्धिसार भूमिका

ऐसै मगलाचरण करि लब्धिसार के सूत्रनि का भाषा रूप व्याख्यान करिए है, ताका प्रयोजन कहा ? सो कहिए है —

श्रीमद् गोम्मटसार शास्त्र विषै जीवकाड कर्मकाड अधिकारनि करि जीव अर कर्म का स्वरूप प्रगट कीया, ताकौ यथार्थ जानि मोक्षमार्ग विषै प्रवर्तना । जातै आत्महित मोक्ष है, तिसही के अर्थि विवेकी जीवनि का उपाय है । सो मोक्षमार्ग सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र है, सम्यग्ज्ञान भी मोक्षमार्ग है, सो सम्यग्दर्शन का सहकारी ही जानना । तहा सम्यग्दर्शन तीन प्रकार है औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक । बहुरि सम्यक्चारित्र दोय प्रकार - देश चारित्र, सकलचारित्र । तहा देश चारित्र तौ क्षायोपशमिक ही है । अर सकलचारित्र तीन प्रकार है क्षायोपशमिक, औपशमिक, क्षायिक ।

सो ऐसै सम्यग्दर्शन सम्यक्चारित्र की लब्धि भए केवलज्ञान कौ पाइ तहा सयोगी अयोगी जिन होइ, सिद्ध पद कौ प्राप्त हो है ।

सो इनि सबनि का स्वरूप नीकै जान्या चाहिए, जातै एई आत्मा के प्रयोजन भूत कार्य है, तातै इनिकौ होतै पूर्वै भए कर्मनि के बध, उदय, सत्त्व की कैसी-कैसी अवस्था हो है अर जीव का परिणमन कैसै-कैसै हो है ? इत्यादि विशेष जानना युक्त है । बहुरि याकौ जानै चौदह गुणस्थाननि का भी स्वरूप विशेषपने नीके जानिए है । अर जीव कर्मादि की सर्व चर्चानि विषै गुणस्थाननि की चर्चा प्रधान है, तातै 'इहा तिन औपशमिक सम्यक्त्व आदि का वर्णन अवश्य करना' ऐसा प्रयोजन विचारि उद्यम कीया। तब हम यत्रादि रचना सहित लब्धिसार नाम शास्त्र का मूल गाथानि का एक पुस्तक देख्या, तहा तिन औपशमिक सम्यक्त्वादिकनि का विशेष वर्णन जानि, तिनि गाथानि का भाषारूप व्याख्यान करने का विचार भया । बहुरि लब्धिसार की टीका के पुस्तक देखे, तहा औपशमिक चारित्र का वर्णन पर्यंत गाथानि ही की सस्कृत टीका करि समाप्त करी । अवशेष क्षायिक चारित्रादिक का वर्णन रूप गाथानि की सस्कृत टीका नाही । बहुरि एक क्षपणासार नामा जुदा ग्रथ, शास्त्र ताके पुस्तक देखे, तहा गाथा तौ नाही अर सस्कृत धारा रूप ही क्षायिक चारित्रादिक का वर्णन है, सो याके अर्थ का अर तिन अवशेष लब्धिसार की गाथानि के अर्थ का प्रयोजन समानसा देख्या, सो ऐसै अवलोकि यह विचार कीया, जो औपशमिक चारित्र पर्यंत गाथानि का व्याख्यान तौ

संस्कृत टीका के अनुसारि करना । अर अवशेष गाथानि का व्याख्यान क्षपणासार के अनुसारि करना, सो असें अनुसार लीए लब्धिसार की गाथानि का संक्षेप अर्थ इहा लिखिए है । विस्तार होने के भए तें विशेष नाही लिखिए है । वा कोई कठिन अर्थ मेरी समझि मैं नीके न आवने तें इहा न लिखिए है, सो संस्कृत टीका वा क्षपणासार तें जानियो ।

बहुरि असें व्याख्यान करतें कही चूक होइ, बुद्धि की मंदता तें अन्यथा लिखों, तहा विशेषज्ञानी संवारि शुद्ध करियो; जातें अर्थ तौ गंभीर है अर बुद्धि मेरी तुच्छ है. तातें कही चूक भी परैं । असें विचारि करि इस भाषा करने का प्रारंभ कीजिए हैं । तहा प्रथम केते इक अर्थ वा संज्ञा विशेष दिखाइए है । जिनिकों जानें आगें तिनिका वर्णन जहा आवै तहा इनिकौं यादि करि नीके अर्थज्ञानी होंइ । तहां इस शास्त्र विषै दश करणनि का विशेष प्रयोजन है, तातें प्रथम इनिका स्वरूप कहिए है —

कर्मनि की दश अवस्था है–१बंध, २ सत्त्व, ३ उदय, ४ उदीरणा, ५ उत्कर्षण, ६अपकर्षण, ७ संक्रमण, ८ उपशम, ९ निधत्ति, १० निकाचना ए दश करण है । सो इनिका स्वरूप गोम्मटसार का कर्मकाड विषै दश करण चूलिका नामा अधिकार है, तहां कह्या है, सो जानना । इहा भी प्रयोजन जानि किछू लिखिए है—

तहा नवीन पुद्गलनि का कर्मरूप आत्मा कै सम्बन्ध होना ताका नाम बन्ध है । सो च्यारि प्रकार है, १ प्रकृति बंध, २ प्रदेश बंध, ३ स्थिति बंध, ४ अनुभाग बंध ।

तहा कर्मरूप होने योग्य जे कार्माण वर्गणारूप पुद्गल, तिनिका ज्ञानावरणादि मूलप्रकृति वा तिनकी उत्तरप्रकृतिरुप परिणमना, सो प्रकृतिबंध है । तहा जेती प्रकृतिनि का जहा बंध संभवै तहा तितना प्रकृतिबंध जानना ।

बहुरि तिनि प्रकृतिरूप जितनी पुद्गल परमाणू परिणमी तिनिका प्रमाणरूप प्रदेश बंध है, जातें इहा प्रदेश नाम पुद्गल परमाणू का है, सो अभव्य राशि तें अनन्त गुणा असा जो सिद्धराशि के अनन्तवा भागमात्र प्रमाण तिस प्रमाण मात्र परमाणू मिलि एक कार्माण वर्गणा हो है । अर तितनी ही वर्गणा मिलि एक समयप्रबद्ध हो है । इतनी परमाणू समय समय विषै कर्मरूप होइ एक जीव कै बधैं, तातें याका नाम समयप्रबद्ध है । सो यहु सामान्य प्रमाण है । विशेष योगनि की अधिक हीनता के अनुसारि समयप्रबद्ध विषै परमाणूनिकी अधिक हीनता जाननी । बहुरि

एक समय विषै ग्रह्या हूवा जो समयप्रबद्ध सो यथासम्भव मूल प्रकृति वा उत्तर प्रकृतिरूप परिणमै तहा तिन प्रकृतिनि के परमाणूनि के विभाग का विधान गोम्मटसार का बध, सत्त्व, उदय अधिकार विषै प्रदेश बध का व्याख्यान करते कह्या है सो जानना। सो जिस प्रकृति कै जितनी परमाणू बट में आवै तिस प्रकृति का तितने परमाणूनि का समूह मात्र समयप्रबद्ध जानना।

बहुरि जे परमाणू प्रकृतिरूप बधी ते परमाणू तिस रूप इतना काल रहसी अैसा बध होतं स्थिति का प्रमाण होना, सो स्थिति बध है।

तहा एक समय विषै जो स्थितिबध भया, ता विषै बध समय तै लगाय आबाधाकाल पर्यंत तौ तहा बधी हुई परमाणूनि के उदय आवने योग्यपने का अभाव है, तातै तहा निषेक रचना है नाही। ताके पीछै प्रथम समय तै लगाइ बधी हुई स्थिति का अन्त समय पर्यत एक एक समय विषै एक एक निषेक उदय आवने योग्य हो है। तातै प्रथम निषेक की स्थिति एक समय अधिक आबाधाकाल मात्र है। द्वितीय निषेक की स्थिति दोय समय अधिक आबाधाकाल मात्र है। अैसे क्रम तै द्विचरम निषेक की स्थिति एक समय घाटि स्थितिबंध प्रमाण है। अन्त निषेक की स्थिति सम्पूर्ण स्थितिबध प्रमाण है।

जैसे मोह की सत्तर कोडाकोडी सागर की स्थिति बधी, तहा सात हजार वर्ष का आबाधाकाल है अर प्रथम निषेक की स्थिति एक समय अधिक सात हजार वर्ष है। द्वितीयादि निषेकनि की क्रम तै एक एक समय अधिक होइ, अन्त निषेक की सत्तर कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति जाननी अैसे ही आयु बिना सात कर्मनि का विधान है। बहुरि आयु का स्थिति बध विषै आबाधाकाल नाही गिनिए है, जातै ताका आबाधाकाल पूर्व पर्याय विषै ही व्यतीत हो है। तहा तिस आयु के उदय होने योग्यपना का अभाव है, तातै आयु का प्रथम निषेक की स्थिति एक समय, द्वितीय निषेक की दोय समय अैसे क्रम तै अन्त निषेक की सम्पूर्ण स्थितिबध मात्र स्थिति जाननी। अैसे एक समय विषै बधी जो स्थिति तिहि विषै विशेष जानना। बहुरि सामान्यपनै जो अत निषेक की स्थिति तिस प्रमाण है तहा स्थितिबध कहिए है, जातै सामान्य कथन विषै उत्कृष्ट का ग्रहण कीजिए है

बहुरि एक समय विषै बध्या जो प्रकृति का समयप्रबद्ध, ताके परिमाणूनि विषै प्रथमादि निषेकनि का कैसै विभाग हो है ?

ताके जानने कौ गोम्मटसार विषै कर्मकांड का कर्मस्थिति रचना सद्भाव नामा अंत का जो अधिकार, तहा द्रव्यस्थिति, गुणहानि, नाना गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त राशि, दो गुणहानि का प्रमाण कहि तहा विधान कह्या है, सो जानना। इहां भी आगै संक्षेपसा विधान कहिएगा। बहुरि इनि प्रथमादि निषेकनि की रचना उपरि उपरि लिखिए है जे तातै प्रथमादि पहले, निषेकनि कौ नीचे के निषेक कहिए है अर पिछले निषेकनि कौ उपरिके निषेक कहिए है अैसा जानना।

बहुरि जैसै भाजनादि निमित्त तै पुष्पादिक है, ते मदिरा रूप परिणमै, तिनमै असी शक्ति हो है जो भक्षणकाल विषै हीनाधिक विशेष लीए पुरुष कौ उन्मत्तता करै तैसै रागादि निमित्त तै पुद्गल है, ते कर्मरूप परिणमै, तिनमै असी शक्ति हो है जे उदयकाल विषै हीनाधिक विशेष लीए जीव कै ज्ञान आच्छादनादि करै। अैसे बध होतै शक्ति का होना, ताका नाम अनुभाग बध है। तहा एक प्रकृति के एक समय विषै बधे जे परमाणू, तिन विषै नाना प्रकार शक्ति हो है सो कहिए है —

शक्ति का अविभाग अंश, ताका नाम अविभाग प्रतिच्छेद है। बहुरि तिनके समूह करि युक्त जो एक परमाणू, ताका नाम वर्ग है। बहुरि समान अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग, तिनके समूह का नाम वर्गणा है। तहा स्तोक अनुभाग युक्त परमाणू का नाम जघन्य वर्ग है। तिनके समूह का नाम जघन्य वर्गणा है। बहुरि जघन्य वर्ग तै एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग, तिनके समूह का नाम द्वितीय वर्गणा है। अैसे क्रम तै एक-एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक वर्गनि का समूह रूप वर्गणा यावत् होइ तावत् तिन वर्गणानि के समूह का नाम जघन्य स्पर्धक है। बहुरि जघन्य वर्ग तै दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा हो है। बहुरि ताके उपरि एक-एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक क्रम लीए जे वर्ग, तिनिका समूहरूप वर्गणा यावत् होइ तावत् तिनि वर्गणानि का समूहरूप द्वितीय स्पर्धक हो है। अैसे ही तृतीय चतुर्थादि स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के वर्ग विषै तौ जघन्य स्पर्धक तै तिगुणे, चौगुणे आदि अविभाग प्रतिच्छेद जानने। बहुरि इहा सर्व परमाणूनि का प्रमाण उपरि पूर्वोक्त एक-एक अधिक का क्रम जानना। सो अैसा विधान यावत् सर्व परमाणू सपूर्ण होइ तावत् जानना। बहुरि इहा सर्व परमाणूनि का प्रमाण मात्र तौ द्रव्य है अर वर्गणानि का प्रमाण मात्र अनत प्रमाण लीए स्थिति है अर अनुभाग सबधी यथासभव अनत प्रमाण लीएं गुणहानि अर नाना गुणहानि अर अन्योन्याभ्यस्त राशि अर दो गुणहानि है। सो इनिकौ स्थापि, तहां

'दिवड्ढगुणहाणि भाजिदे पढमा' इत्यादि आगे कहिए है सो विधान, तातै प्रथमादि गुणहानिनि की प्रथमादि वर्गणानि विषै वर्गनि का प्रमाण ल्यावना। असी वर्गणा एक स्पर्धक विषै जितनी पाइए, ताका नाम एक स्पर्धक वर्गणा शलाका है। बहुरि एक गुणहानि विषै जेता स्पर्धक पाइए, ताका नाम एक गुणहानि स्पर्धक शलाका है। असै अविभाग प्रतिच्छेदनि का समूह वर्ग है। वर्गनि का समूह वर्गणा है। वर्गणानि का समूह स्पर्धक है। स्पर्धकनि का समूह गुणहानि है। गुणहानि का प्रमाण सोई नाना गुणहानि है, असा जानना। सो यहु कथन गोम्मटसार विषै भी है तथा इहां भी आगै नीके कहिएगा।

बहुरि इन प्रथमादि स्पर्धकनि की रचना उपरि उपरि करिए है तातै प्रथमादि पहिले स्पर्धकनि कौ नीचले स्पर्धक कहिए। अर पिछले स्पर्धकनि कौ ऊपरले स्पर्धक कहिए। बहुरि पूर्वोक्त विधान तै प्रथमादि स्पर्धकनि विषै क्रम तै परमाणुनि का प्रमाण तौ घटता घटता है अर अनुभाग बधता-बधता है। तहा प्रथमादि सर्व स्पर्ध-कनि का च्यारि विभाग करिए है, ते घातियानि का तौ लता, दारु, अस्थि, शैल समान अर अप्रशस्त अघातियानि का निंब, काजीर, विष, हलाहल समान अर प्रशस्त अघातियानि का गुड, खड, शर्करा, अमृत समान च्यारि भाग जानने।

बहुरि घातियानि विषै लता भाग के अर केताइक दारु भाग के स्पर्धक देशघाती है। अवशेष सर्वघाती है। सो विशेष आगै आवेगा असै अनुभाग विषै विशेष है। सो स्थिति सबधी एक एक निषेक के परमाणूनि विषै असा अनुभाग का विशेष पाइए है। जैसै स्थिति के पहिले निषेक पहलै उदय आवै, पिछलै पीछे उदय आवै तैसै अनुभाग के पहिले स्पर्धक पहिले उदय आवने का पिछले स्पर्धक पीछे उदय आवने का नियम नाही है। बहुरि सामान्यपनै जहा जो उत्कृष्ट अनुभाग पाइए सोई तहा अनुभाग वध का प्रमाण कहिए है। असै बध का स्वरूप कह्या।

बहुरि अनेक समयनि विषै बधे हुए कर्मनि का विवक्षित कालादिक विषै जीव कै अस्तित्व ताका नाम सत्त्व है, सो च्यारि प्रकार प्रकृति सत्त्व, प्रदेश सत्त्व, स्थिति सत्त्व, अनुभाग सत्त्व।

तहा अनेक समयनि विषै बधी जो ज्ञानावरणादिक मूल प्रकृति वा तिनकी उत्तर प्रकृति, तिनिका जो अस्तित्व, सो प्रकृति सत्त्व है।

बहुरि तिनि प्रकृतिरूप परिणमी असैं जे अनेक समयनि विषै ग्रही हुई पुद्गल परमाणू, तिनिका अस्तित्व, सो प्रदेशसत्व है; सो समय-समय विषै एक एक समय-प्रबद्ध ग्रहे तिनके पूर्वोक्त प्रकार एक एक निषेक क्रम तैं निर्जरैं, तहा जिनि समय प्रबद्धनि के सर्व निषेक गले, तिनिका तौ अस्तित्व रह्या ही नाही। बहुरि कोई समयप्रबद्ध का अन्य निषेक गलि एक निषेक अवशेष रह्या, कोई के अन्य निषेक गलि दोय निषेक अवशेष रहे, असैं क्रम तैं जाका एक निषेक गल्या ताके तिस बिना सर्व निषेक अवशेष रहै है। जाका कोई निषेक न गल्या, ताके सर्व ही निषेक अवशेष रहे, असैं अवशेष रहे समस्त निषेक, तिनके परमाणूनि का मिल्या हुवा प्रमाण किंचित् ऊन ड्योढ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है, सो याका विधान गोम्मटसार का कर्मस्थिति रचना सद्भाव अधिकार विषै त्रिकोण रचना करि दिखाया है, सो जानना। असैं इनि परमाणूनि का अस्तित्व, सो प्रदेशसत्व जानना।

इहां जो एक प्रकृति की विवक्षा होइ तौ एक प्रकृति संबधी समयप्रबद्ध ग्रहण करना। जो सर्व प्रकृति की विवक्षा होइ तौ सर्व प्रकृति सबंधी समयप्रबद्ध जानना।

बहुरि तिनि अनेक समयनि विषै बंधी प्रकृतिनि की स्थिति, ताका नाम स्थितिसत्व है। तहा तिनि प्रकृतिनि का जिस समयप्रबद्ध का एक निषेक अवशेष रह्या, ताकी एक समय की स्थिति है, जाका दोय निषेक अवशेष रहे ताके प्रथम निषेक की एक समय अर द्वितीय निषेक की दोय समय स्थिति है। असैं क्रमतैं जाका एक हू निषेक न गल्या ताकी प्रथमादि निषेकनि की एक, दोय आदि समयनि करि अधिक आबाधाकाल मात्र स्थिति का क्रम करि तहा अत निषेक की सपूर्ण स्थिति बधमात्र स्थिति है। इहा सत्व विषै अनेक समयप्रबद्धनि के एक समय विषै उदय आवने योग्य अनेक निषेक मिलै जो होइ, सो एक निषेक जानना। सो इनि विषै परमाणूनि का प्रमाण आगै कहेगे। बहुरि सामान्यपनै जो एक प्रकृति की विवक्षा होइ तौ ताके पहिले बध्या वा पीछे बध्या समयप्रबद्धनि विषै जाके बहुत निषेक सत्ता विषै पाइए, तिस समयप्रबद्ध के अत का निषेक की जेती स्थिति तिस प्रमाण स्थितिसत्व कहना। अर सर्व प्रकृति की विवक्षा होइ तौ जिस प्रकृति का समयप्रबद्ध के अत निषेक की बहुत स्थिति होइ, ताका अत निषेक की स्थिति प्रमाण स्थिति सत्व कहना।

बहुरि तिन अनेक समयनि विषै बधी जे प्रकृति, तिनिका जो अनुभाग सत्ता रूप है, ताका नाम अनुभाग सत्त्व है। तहा एक समय विषै उदय आवने योग्य अनेक

समयप्रबद्धनि के निषेक मिलि भया सत्ता सबधी एक निषेक, ताके परमाणूनि विषै अथवा अनेक समयनि विषै बंधे समयप्रबद्धनि के गले पीछे अवशेष निषेक रहे, तिन सबनि के परमाणूनि विषै पूर्वोक्त प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्धकरूप अनुभाग का विशेष जानना। तहा परमाणूनि का प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार ल्यावना। बहुरि सामान्यपनै तहा पूर्वोक्त च्यारि प्रकार अनुभाग का ग्रहण जानना। ऐसै सत्त्वनि का निरूपण कीया।

बहुरि कर्मनि का अपने काल आए फल देनेरूप होइ खिरने कौ सन्मुख होना सो उदय है; सो च्यारि प्रकार प्रकृति उदय, प्रदेश उदय, स्थिति उदय, अनुभाग-उदय।

तहा यथासभव मूल प्रकृति वा उत्तर प्रकृति का फल देनेरूप उदय आवना, सो प्रकृति उदय है।

बहुरि तिस उदयरूप प्रकृति के जे परमाणू खिरने कौ सन्मुख होइ उदय आवै, सो प्रदेश उदय है।

तहा अनेक समयनि विषै बधे समयप्रबद्धनि का तिस विवक्षित एक समय विषै उदय आवने योग्य जे निषेक, तिन सब निषेकनि के परमाणू, तिस विवक्षित एक समय विषै उदय हो है, सो कहिए है।

जिस समयप्रबद्ध का एकहू निषेक न गल्या, ताका प्रथम निषेक उदय हो है। जाका प्रथम निषेक पूर्वै गल्या, ताका द्वितीय निषेक तहा उदय हो है। ऐसै क्रम तै जाके दोय निषेक अवशेष रहे ताका तहा उपात निषेक उदय हो है। जाका एक निषेक ही अवशेष रह्या, ताका सोई अत निषेक तहा उदय हो है। ऐसै सर्व निषेक मिलि एक समयप्रबद्ध मात्र परमाणूनि का उदय हो है। बहुरि तहा उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण आदि का वश तै विशेष है सो कहिए है।

जो उपरले-नीचले अन्य समयनि विषै उदय आवने योग्य निषेकनि के परमाणू, तिस विवक्षित समय विषै उदय आवने योग्य निषेकनि विषै मिलाया होइ तौ ते परमाणु भी तिन ही की साथि तिसही समय विषै उदय हो है।

जैसे अंक सदृष्टि करि तरेसठि सै परमाणू तौ तिस विवक्षित समय उदय आवने योग्य निषेकनि के थे अर हजार परमाणू अन्य निषेकनि के तहा मिलाए तौ

तहां तिहत्तरि सै परमाणूनि का उदय हो है । असैं ही तिस समय विषै उदय आवने योग्य निषेक, तिनिके परमाणू अन्य निषेकनि विषै मिलाए होइ तौ तहा तिनिके अवशेष परमाणू उदय हो है । जैसैं तिरेसठि सै परमाणू तिस समय विषै उदय आवने योग्य निषेकनि के थे, तिनमै हजार परमाणू अन्य निषेकनि विषै मिलाए तौ तहां तरेपन सै परमाणूनि ही का उदय हो है । बहुरि तिस समय विषै उदय आवने योग्य निषेकनि का केते इक परमाणू अन्य निषेकनि विषै अन्य निषेकनि का परमाणू तिन विषै मिलाए होइ तौ तहां जेते परमाणू हीन अधिक भए तिनि ही का उदय हो है । जैसैं तिरेसठि सै परमाणू तिस समय उदय आवने योग्य निषेक के थे तिनमै सात सै परमाणू तौ अन्य निषेकनि के मिले अर हजार परमाणू अन्य निषेकनि विषै दीए तौ तिस समय विषै छह हजार परमाणू ही का उदय हो है । असैं उदीरणादिक की अपेक्षा विशेष जानना । तहां विशेष इतना है – जो उदयावली के निषेकनि का उत्कर्षण नाही हो है । बहुरि विवक्षित एक समय विषै जे तिस समय विषै उदय आवने योग्य निषेक, तिनिका ही उदय होइ । ताका उदय होतै सत्तारूप स्थिति विषै एक समय घटै है । तातै तहा एक समय मात्र स्थिति उदय जानना । बहुरि काडक विधान तै अनेक समयमात्र स्थिति घटाइए है, सो विधान आगै लिखेगे ।

बहुरि तिस एक समय विषै अनुभाग का उदय होना, सो अनुभाग उदय है। तहा तिस समय विषै उदय आवने योग्य परमाणूनि विषै पूर्वोक्त प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद, वर्ग, वर्गणा, स्पर्धक आदि विशेष जानना । बहुरि जो उत्कर्षण, अपकर्षण काडकादि विधान तै अनुभाग का घटना-बधना भया होइ, तौ तहा जैसा अनुभाग संभवै तितना ही का उदय जानना ।

इहां प्रश्न – जो तिस समय विषै उदय आवने योग्य परमाणूनि विषै कोई परमाणू विषै स्तोक अनुभाग है, कोइ विषै बहुत है, तिनि सबनि का एक समय विषै कैसै उदय हो है ?

ताका समाधान – जैसैं कोई वस्तु स्तोक शीतलता करने कौ कारण है, कोई बहुत शीतलता करने कौ कारण है, तिनि सबनि की गोली एक भई, ताका एक काल भक्षण कीया, तहा सबनिकी शीतलता मिलै, जैसी शीतलता होनी सभवै, तैसी भक्षण करनें वाले कै शीतलता हो है ।

तैसैं कोई परमाणूनि विषै स्तोक अनुभाग है, कोई विषे बहुत अनुभाग है, तिनि सबनि का एक निषेक भया, ताका एक काल विषै उदय आया, तहा सबनि का

अनुभाग मिलैं, जैसा अनुभाग होना सभवै तैसा उदय वाले के अनुभाग उदय हो है। सामान्यपनै च्यारि प्रकार अनुभाग यथासभव तहां जानना। अैसे उदय का स्वरूप कह्या।

बहुरि अपक्वपाचन कहिए जो पच्या नाही, उदय काल कौ प्राप्त न भया जो कर्म, ताका पाचन कहिए पचावना, उदय काल विषै प्राप्त करना अैसा है लक्षण जाका, सो उदीरणा कहिए है।

तहा वर्तमान समय तै लगाए आवली मात्र काल विषै उदय आवने योग्य जे निषेक, तिनिका नाम उदयावली है। ताके उपरिवर्त्ती निषेकनि कौ उदयावली बाह्य कहिए है।

तहा उदयावली बाह्य तिष्ठते जे निषेक तिनके परमाणूनि कौ उदयावली के निषेकनि विषै मिलावना। अैसे बहुत काल विषै उदय आवते जे अपक्व कहिए तिनिकौ उदयावली के निषेकनि का साथी उदय होने योग्य करना, सो पाचन कहिए अैसा कार्य जिस समय विषै होइ, तिस समय विषैं उदीरणा नाम पावै है। तिस समय विषै पीछे सोई द्रव्य सत्ता रूप वा उदयरूप कहिए है। अैसे उदीरणा का स्वरूप कह्या।

बहुरि स्थिति-अनुभाग का बधना, ताका नाम उत्कर्षण है।

तहा स्तोक काल मे उदय आवने योग्य जे नीचे के निषेक तिनिके परमाणू, ते बहुत काल मे उदय आवने योग्य जे उपरि के निषेक, तिनि विषै मिलै अैसे बहुत स्थिति का बहुत स्थिति होने का नाम स्थिति उत्कर्षण है।

बहुरि स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचे के स्पर्धक, तिनिके परमाणू, ते बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरि के स्पर्धक, तिनि विषै मिलै अैसे स्तोक अनुभाग का बहुत अनुभाग होने का नाम अनुभाग उत्कर्षण है।

बहुरि अैसे ही स्थिति अनुभाग के घटने का नाम अपकर्षण जानना। तहा बहुत काल मे उदय आवने योग्य जे उपरि के निषेक तिनके जे परमाणू ते स्तोक काल मे उदय आवने योग्य जे नीचे के निषेक तिनि विषै मिलै अैसे बहुत स्थिति का स्तोक स्थिति होने का नाम स्थिति अपकर्षण है।

बहुरि बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरि के स्पर्धक, तिनिके जे परमाणू, ते स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचे के स्पर्धक तिनि विषै मिलै असै बहुत अनुभाग का स्तोक अनुभाग होने का नाम अनुभाग अपकर्षण है ।

बहुरि तहां विवक्षित सर्व परमाणूनि के समूह कौ उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार का भाग दीएं जो एक भागमात्र परमाणू, तिनिकौ ग्रहि यथायोग्य नीचै वा उपरि मिलाइए तहा उत्कर्षण वा अपकर्षण का होना सभवै है, सो उत्कर्षण का वा अपकर्षण भागहार का प्रमाण आगे कहिए है जो गुण संक्रमण भागहार तातै तौ असंख्यात गुणा अर अध प्रवृत्त संक्रमण भागहार के असंख्यातवे भाग असा पल्य के अर्धच्छेदनि के असंख्यातवां भाग मात्र जानना । असै उत्कर्षण अर अपकर्षण का स्वरुप कह्या ।

बहुरि अन्य प्रकृति का परमाणू अन्य प्रकृतिरुप जो होइ, ताका नाम संक्रमण है । जैसै सक्लेशपने तै पूर्वै असाता वेदनीय बाधी थी, पीछे विशुद्धता के बलतै ताके परमाणू साता वेदनीय रूप होइ परिणमै असै ही यथायोग्य अन्य अन्य प्रकृति का भी संक्रम जानना ।

तहा सक्रमण होने विषै पाच प्रकार भागहार सभवै है १. उद्वेलन, २ विध्यात, ३. अध प्रवृत्त, ४ गुणसक्रम, ५. सर्वसक्रम, ६. सो इनका कथन गोम्मटसार का कर्मकाड विषै पंच भागहार चूलिका अधिकार है, तहा जानना वा इहा यथावसर कहेगे । किछू स्वरूप अब भी कहिए है ।

उद्वेलन प्रकृति के जे परमाणू, तिनकौ उद्वेलन भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र परमाणू जहा अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमै तहा उद्वेलन सक्रमण कहिए ।

बहुरि जहा मद विशुद्धता युक्त जीव कै जाका बध न पाइए असी जो विवक्षित प्रकृति होई ताके परमाणूनि कौ विध्यात-भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमै, तहा विध्यात संक्रमण कहिए ।

बहुरि जहा जाका बध संभवै असी जो विवक्षित प्रकृति, ताके परमाणूनि कौं अधःप्रवृत्त भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमै, तहां अध· प्रवृत्त सक्रमण कहिए ।

बहुरि जहां विवक्षित अशुभ प्रकृति के परमाणूनि कौ गुण सक्रमण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र परमाणू अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमै । बहुरि प्रथम

समय जेते परमाणू परिणमैं, तातैं दूसरे समय असख्यात गुणे परिणमैं, तातैं तीसरे समय असख्यात गुणे परिणमैं असें समय समय गुणकार सभवै, तहा गुण संक्रमण भागहार कहिए ।

बहुरि जहा विवक्षित प्रकृति के परमाणू अन्य प्रकृतिरूप समय समय परिणमता सता अन्त समय विषै अन्त फालिरूप ही अवशेष परमाणू ते सर्व ही अन्य प्रकृतिरूप होइ परिणमैं, तहा सर्व सक्रमण कहिए । अब इनि भागहारनि का प्रमाण कहिए है ।

सर्व सक्रमण भागहारनि का तौ प्रमाण एक है, जातैं अवशेष रही परमाणूनि कौ एक का भाग दीए सर्व परमाणू मात्र प्रमाण आवै है; तातैं असख्यात गुणा असा पल्य का अर्धच्छेद प्रमाण के असख्यातवे भाग मात्र गुण सक्रमण भागहार का प्रमाण है । बहुरि तातैं असख्यात गुणा जो उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार, तिस तैं भी असख्यात गुणा असा पल्य के अर्धच्छेदनि के असख्यातवें भागमात्र अध.प्रवृत्त सक्रमण भागहार का प्रमाण है । बहुरि तातैं असख्यात गुणी जो सख्यात पल्य मात्र कर्म की स्थिति, तातैं भी असख्यात गुणा असा सूच्यगुल का असख्यातवा भाग मात्र विध्यात सक्रमण भागहार का प्रमाण है । बहुरि तातैं असख्यात गुणा असा सूच्यगुल का असख्यातवा भाग मात्र उद्वेलन संक्रमण भागहार का प्रमाण है । असें सक्रमण का स्वरूप कह्या ।

बहुरि विवक्षित प्रकृति के जे उदयावली तैं बाह्य निषेक, तिनिके परमाणू जे उदयावली विषै प्राप्त करने योग्य न होइ, सो उपशात द्रव्य कहिए । इहा उपशम विधान तैं मोह का उपशम करिए है, ताका ग्रहण न करना, जातैं उपशमभाव मोह ही का है अर उपशात करण सर्व प्रकृतिनि के पाइए है । अर उपशात आदि तीन करण अष्टम गुणस्थान पर्यंत ही कह्या । अर उपशमभाव ग्यारह्वा गुणस्थान पर्यंत ही पाइए है ।

बहुरि जे विवक्षित प्रकृति के परमाणू सक्रमण होने कौ वा उदयावली विषै प्राप्त होने कौ योग्य न होइ सो निधत्तिकरण द्रव्य है ।

बहुरि जो विवक्षित प्रकृति के परमाणू सक्रमण करने कौ वा उदयावली विषै प्राप्त करने कौ वा उत्कर्षण अपकर्षण करने को योग्य न होइ सो नि.काचना द्रव्य है ।

असें इन तीन करणनि का स्वरूप कह्या । इहा असा नियम जानना जो उपशांतादिरूप द्रव्य है, सो उपशांतादिरूप ही रहै है । पूर्वं उपशातादिरूप था । पीछे उदीरणा आदि रूप होइ तौ पीछे किछू दोष नाही है । या प्रकार दश करणनि का स्वरुप पहिचानना ।

अब इहां दर्शनचारित्र लब्धि करि मोक्ष का साधन करिए है ।

सो मोक्ष की प्राप्ति संवर-निर्जरा तै होइ । सवर-निर्जरा है, ते बंध-सत्व की हानि भएं होंइ, सो दर्शन-चारित्र लब्धि विषै बंध-सत्व की हानि कैसे होइ, सामान्य स्वरूप इहा कहिए है । विशेष आगै कहिएगा ।

तहा च्यारि प्रकार बध मिटने का क्रम कहिए है—

दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तै पहिलै मिथ्यात्व, नारक गति आदि अति अप्रशस्त प्रकृतिनि का, पीछे ज्ञानावरणादि अप्रशस्त प्रकृतिनि का वा प्रशस्त प्रकृतिनि का बंध अभाव हो है । तहा प्रकृति बध का क्रम तै घटना, ताका नाम प्रकृति बधापसरण कहिए है, जातै अपसरण नाम घटने का है ।

बहुरि प्रदेश बध योगनि के अनुसारि है; तातै योगनि की चचलता हीन भए प्रदेश बध हीन हो है । सर्वथा योग नाश भएं प्रदेश बध का सर्वथा अभाव हो है ।

बहुरि स्थिति बंध कषायनि के अनुसारि है, सो मिथ्यात्व कषायादिक कौ हीन होतै स्थितिबध घटै है । तहा बहुरि स्थितिबध का क्रम तै घटना, सो स्थितिबंधापसरण है, सो पूर्वं जेता स्थिति बंध होता था, तातै विवक्षित काल विषै जेता स्थिति बंध घट्या तिस प्रमाण लिए तहा स्थितिबंधापसरण जानना । बहुरि घटे पीछे अवशेष जेता रह्या तितना तहा स्थिति बध जानना । बहुरि स्थितिबधापसरण भए जेता काल विषै समान स्थिति बंध सम्भवै, सो स्थितिबधापसरण का काल जानना ।

इहा दृष्टान्त जैसै पूर्वं लक्ष वर्ष मात्र स्थितिबध सभवै था, तातै एक हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबधापसरण भया तब अवशेष निन्याणवै हजार वर्ष मात्र स्थिति बध रह्या, सो स्थितिबधापसरण के काल का पहिला समय विषै इतना स्थिति बध होइ, बहुरि इतना ही दूसरे समय होइ, असे स्थिति बधापसरण के काल का अत समय पर्यंत समान स्थिति बध हूवा करै, पीछे आठ सै वर्षमात्र अन्य स्थितिबधापसरण भया, तब अठचाणवै हजार दोय सै वर्षमात्र अवशेष स्थिति बध रह्या, सो तिस स्थिति

बधापसरण काल के प्रथमादि समयनि विषै तितना समान स्थिति बध हूवा करै अैसै ही यथासम्भव प्रमाण जानि स्वरूप जानना । अैसै स्थिति बध घटतै अपना व्युच्छित्ति होने का समय विषै जघन्य स्थिति बध हो है पीछै स्थिति बध का नाश है, सो आयु बिना सर्व प्रकृतिनि का अैसे क्रम जानना । आयु का स्थितिबधापसरण न सभवै है; जातै नरक बिना तीन आयु का स्थिति बंध विशुद्धता तै अधिक हो है । बहुरि अन्य सर्व शुभाशुभ प्रकृतिनि का स्थिति बध सक्लेशता तै तौ बहुत हो है अर विशुद्धता तै स्तोक हो है ।

बहुरि अनुभाग बध है सो पाप प्रकृतिनि का तौ सक्लेशता तै बहुत हो है अर विशुद्धता तै स्तोक हो है । बहुरि पुण्य प्रकृतिनि का सक्लेशता तै स्तोक हो है अर विशुद्धता तै बहुत हो है । सो अनतगुणा वा यथासम्भव घटता वा बधता अप्रशस्त वा प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग बध अधिक हीन क्रम तै जैसे जहां सभवै तैसे तहा जानना । बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग बध अधिक होने तै किछू आत्मा का बुरा होता नाही, जातै ससार विषै रहना तौ स्थिति बंध के अनुसारि है अर घातियानि तै आत्मा का बुरा होइ, सो घातिया अप्रशस्त ही है, तातै दर्शन–चारित्र की लब्धि तै प्रशस्त प्रकृतिनि के अनुभाग की अधिकता अप्रशस्त प्रकृतिनि के अनुभाग की हीनता हो है । तहां कषायनि का अभाव भए सर्वथा अनुभाग बध का अभाव हो है । अैसै बंध के अभाव तै सवर होने का विधान जानना ।

अब सत्व नाश का क्रम कहिए है । दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तै पहलै मिथ्यात्वादि अति अप्रशस्त प्रकृतिनि का, पीछै ज्ञानावरणादि अप्रशस्त प्रकृतिनि का वा प्रशस्त प्रकृतिनि का सत्त्व नाश हो है, सो सत्त्वनाश स्वमुख उदय करि अर परमुख उदय करि दोय प्रकार हो है ।

तहा जो प्रकृति अपने ही रूप रहि, अपनी स्थिति सत्त्व का अत निषेक का उदय भए अभाव कौ प्राप्त होइ, ताका स्वमुख उदय करि सत्त्वनाश कहिए । जैसै सज्वलन लोभ है, सो क्षपक सूक्ष्म सापराय का अत विषै अपने ही रूप उदय होइ नाश कौ प्राप्त हो है ।

बहुरि जो प्रकृति सक्रमण के वश तै अन्य प्रकृति रूप परिणमि करि अपना अभाव कौ प्राप्त होइ, ताका परमुख उदय करि सत्त्वनाश कहिए । जैसै अनतानुबधी का विसयोजन होतै अनतानुबधी कषाय है सो अन्य कषायरूप परिणमि नाश कौ प्राप्त हो है । अैसै ही यथासभव अन्यत्र जानना ।

बहुरि एक एक सत्ता के निषेक के परमाणू एक एक समय विषै उदय रूप होइ निर्जरै। बहुरि दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तै उपरि के निषेकनि के परमाणू नीचले निषेक रूप होइ परिणमै है। तहा एक एक समय विषै साधिक समयप्रबद्ध की वा अनेक समयप्रबद्धनि की निर्जरा होइ अर बंध समय समय प्रति एक एक समयप्रबद्ध का ही होइ। तातै तहा निर्जरा बहुत हो है अर बंध स्तोक हो है। अथवा किसी काल विषै कोइ प्रकृतिका बध नाही हो है, केवल निर्जरा ही हो है। असै सर्व कर्म परमाणूनि का नाश भए सर्वथा प्रदेश सत्त्व का नाश हो है।

बहुरि स्थिति सत्त्व जो पाइए है, तातै एक एक समय व्यतीत होतै तौ एक एक घटै ही है। बहुरि दर्शन-चारित्र लब्धि के निमित्त तै स्थिति काडक विधान तै वा अपकृष्टि विधान तै स्थिति सत्त्व का घटना हो है। तहा प्रथम काडक विधान कहिए है–

बहुरि प्रमाण लीए स्थिति सत्त्व था, ताके समय समय विषै उदय आवने योग्य बहुत ही निषेक थे, तिन विषै केते इक उपरि के निषेकनि का नाश करि स्थिति सत्त्व घटावना। तहा तिनि नाश करने योग्य निषेकनि के जे सर्व परमाणू, तिनिकौ नाश कीए पीछै जो अवशेष स्थिति रहेगी, ताके आवली मात्र उपरि के निषेक छोडि सर्व निषेकनि विषै मिलाइए है। तहा तिनि सर्व परमाणूनि विषै केते इक परमाणू पहिले समय मिलाइए है, केते इक दूसरे समय मिलाइए है, असै यथासभव अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत परमाणूनि कौ नीचले निषेकनि विषै प्राप्त करिए तहा अत समय विषै अवशेष रहे सर्व परमाणूनि कौ नीचले निषेकनि विषै प्राप्त होते सतै तिनि नाश करने योग्य निषेकनि का नाश भया तब जितने निषेकनि का नाश भया, तितना समय प्रमाण स्थिति सत्त्व तहा घटता भया।

इहा दृष्टात – जैसै स्थिति सत्त्व अठतालीस समय मात्र था, ताके अठतालीस ही निषेक अर तिनि सर्व निषेकनि की पचीस हजार परमाणू थी, तिनि विषै आठ निषेकनि का नाश करना तहा तिनि निषेकनि एक हजार परमाणू, तिनिके अवशेष रहेगे जे चालीस निषेक, तिनि विषै उपरि के दोय निषेक छोडि, नीचे के अठतीस निषेकनि विषै मिलाइए है, तहा तिन एक हजार परमाणूनि विषै केते इक परमाणू तौ पहिले समय मिलाइये, केते इक दूसरे समय मिलाइए असै च्यारि समय पर्यंत मिलाइए है। तहा चौथे समय अवशेष सर्व परमाणूनि कौ तिनि अठतीस निषेकनि विषै मिलाए तिनि आठ निषेकनि का अभाव हो है। तिनिके अभाव होतै अठतालीस समय का स्थिति सत्त्व था, सो चालीस समय ही का रहै है। असै ही यथा सभव प्रमाण जानि दार्ष्टान्त विषै विधान जानना।

अब इहा सज्ञा कहिए है । ऐसै उपरिके निषेकनि कौ क्रम तै नीचले निषेक रूप परिणमाइ स्थिति का घटावना ताका नाम स्थितिकाडक है, वा स्थितिखड है । बहुरि इस एक काडक विषै निषेकनि का नाश करि जेती स्थिति घटाई, ताके प्रमाण का नाम स्थितिकाडक आयाम है । जैसै दृष्टात विषै आठ समय । बहुरि तिनिका नाश करने योग्य निषेकनि का जो सर्व द्रव्य, ताका नाम काडकद्रव्य है । जैसै दृष्टात विषै एक हजार । बहुरि इस द्रव्य कौ अवशेष स्थिति के निषेकनि विषै मिलावना तहा आवलीमात्र निषेकनि विषै न मिलाया, ताका नाम **अतिस्थापनावली** है । जैसे दृष्टात विषै दोय निषेक । बहुरि या बिना अन्य अवशेष स्थिति के निषेकनि विषै तिस काडक द्रव्य कौ मिलावना, ताका नाम **कांडकोत्करण** है वा **कांडघात** है । बहुरि एक काडक का उत्कर्षण अतर्मुहूर्त काल करि पूर्ण होइ, ताका नाम **कांडकोत्करण काल** है । जैसे दृष्टांत विषै च्यारि समय । बहुरि इस काल के प्रथम समय विषै तिस कांडक द्रव्य कौ ग्रहि जेते परमाणू अवशेष निषेकनि विषै मिलाए ताका नाम **प्रथम फालि** है । द्वितीय समय विषै मिलाए ताका नाम **द्वितीय फालि** है । ऐसे ही क्रम तै अंत समय विषै मिलाए, ताका नाम **चरम फालि** है । अत समय तै पहिले समय विषै मिलाए, ताका नाम **द्विचरम फालि** है । ऐसे एक काडक समाप्त भए द्वितीय काडक प्रारंभ हो है । ऐसे ही अनेक काडक भएं स्तोक स्थितिसत्त्व अवशेष रहि जाइ तब कांडक क्रिया न हो है । एक एक समय व्यतीत होतै एक एक समय क्रम तै घाटि, तिस अवशेष स्थिति का नाश हो है । ऐसै काडक विधान कह्या ।

अब अपकृष्टि विधान कहिए है–

विवक्षित कर्म प्रकृति के सर्व निषेक सबधी सर्व परमाणू, तिनकौं अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र परमाणू ग्रहे, ताका नाम **अपकृष्ट द्रव्य** है । तिस अपकृष्ट द्रव्य विषै केते इक परमाणू तौ उदयावली विषै मिलाए केते इक परमाणू गुणश्रेणी आयाम विषै मिलाए, अवशेष परमाणू उपरितन स्थिति विषै मिलाए, तहा वर्तमान समय तै लगाय आवलीमात्र समय सबधी जे निषेक, तिनका नाम **उदयावली** है । तिन विषै उदयावली विषै देने योग्य जो द्रव्य ताकौ निषेक निषेक प्रति एक एक चय घटता क्रम करि मिलाइए । बहुरि तिनि आवलीमात्र निषेकनि के उपरिवर्ती यथासभव अतर्मुहूर्त के समय संबंधी जे निषेक तिनिका नाम **गुणश्रेणी आयाम** है । तिनि विषै गुणश्रेणी आयाम विषै देने योग्य जो द्रव्य, ताकौ निषेक निषेक प्रति असख्यातगुणा क्रम लीएं मिलाइए है । बहुरि तिनके उपरिवर्ती अवशेष सर्व स्थिति

सबंधी निषेक, तिनका नाम **उपरितन स्थिति** है। तिन विषै अंत के आवली मात्र निषेकनि विषै तौ द्रव्य न मिलाइए है, ताका नाम तौ **अतिस्थापनावली** है। अर तिस बिना अन्य निषेकनि विषै उपरितन स्थिति विषै देने योग्य जो द्रव्य, ताकौ नाना गुण हानि रचना करि निषेक निषेक प्रति चय घटता क्रम लीएं मिलाइए है।

इहा दृष्टात – जैसें विवक्षित कर्म प्रकृति की स्थिति अठतालीस समय, ताके निषेक अठतालीस, तिनके सर्व परमाणू पचीस हजार, तिनिकौ अपकर्षण भागहार का प्रमाण पाच ताका भाग दीए, पाच हजार पाए, सो सर्व परमाणूनि मै स्यो इतनी परमाणू ग्रहि करि तिनि विषै दोय से पचास परमाणू तौ उदयावली विषै देई सो अठतालीस निषेकनि विषै प्रथमादि च्यारि निषेक उदयावली के है, तिन विषै चय घटता क्रम करि मिलाइए। बहुरि एक हजार परमाणू गुणश्रेणी आयाम विषै देई सो पाचवा आदि बारह्वा पर्यंत आठ निषेक गुणश्रेणी आयाम के है, तिन विषै असख्यात गुणा क्रम लीएं मिलाइए। बहुरि तीन हजार सात सै पचास परमाणू उपरितन स्थिति विषै देई, सो छत्तीस निषेक अवशेष रहे, तिनि विषै अत के च्यारि निषेक अतिस्थापना रूप छोडि, अवशेष तेरह्वा आदि चवालीसवा पर्यंत बत्तीस निषेकनि विषै नाना गुणहानि की रचना लीए चय घटता क्रम करि मिलाइए। ऐसें ही दार्ष्टांत विषै यथासभव प्रमाण जानि स्वरूप जानना।

चय घटता क्रम करि वा असंख्यात गुणा क्रम करि मिलावने का विधान आगे कहेगे। इहा यहु उदयावली तै बाह्य गुणश्रेणी आयाम का स्वरूप दिखाया। बहुरि कही उदयादिक गुणश्रेणी आयाम हो है। तहा अपकृष्ट द्रव्य विषै केता इक द्रव्य कौं तौ गुणश्रेणी आयाम प्रमाण जे वर्तमान समय सबधी निषेक तै लगाय निषेक तिनि विषै असख्यात गुणा क्रम करि मिलावै। अवशेष कौ उपरितन स्थिति विषै मिलावै, सो इहा गुणश्रेणी आयाम विषै उदयावली गर्भित भई, तातै उदयादि गुणश्रेणी आयाम कहिए।

बहुरि गुणश्रेणी के निषेकनि का प्रमाण मात्र जो यह गुणश्रेणी आयाम कह्या, सो कही गलितावशेष हो है, कही अवस्थित हो है। तहा गलितावशेष गुणश्रेणी का प्रारभ करने कौ प्रथम समय विषै जो गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण था, तातै एक-एक समय व्यतीत होतै ताके द्वितीयादि समयनि विषै गुणश्रेणी आयाम क्रम तै एक-एक निषेक घटता होइ अवशेष रहै ताका नाम **गलितावशेष** है। बहुरि

अवस्थित गुणश्रेणी आयाम के प्रारंभ करने का प्रथम द्वितीयादि समयनि विषै गुण श्रेणी आयाम जेताका तेता ही रहै । ज्यू-ज्यू एक-एक समय व्यतीत होइ, त्यू-त्यू गुणश्रेणी आयाम के अनतरिवर्ती अैसा उपरितन स्थिति का एक-एक निषेक गुण-श्रेणी आयाम विषै मिलता जाइ, तहा **अवस्थित गुणश्रेणी आयाम** कहिए है । बहुरि इस गुणश्रेणी आयाम के अन्त के बहुत निषेकनि का नाम कही गुणश्रेणी शीर्ष कह्या है । कही अंत के एक निषेक का ही नाम **गुणश्रेणी शीर्ष** है । जातै शीर्ष नाम उपरिवर्ती अग का है । अैसे विवक्षित स्थान विषै यथासभव प्रमाण जानि गुण-श्रेणी निर्जरा का विधान जानना ।

बहुरि इहा उदयावली विषै दीया द्रव्य, ताका नाम उदीरणा जानना । बहुरि जहां स्तोक स्थिति सत्त्व अवशेष रहै है, तहा गुणश्रेणी का भी अभाव हो है । अप-कृष्ट द्रव्य विषै केता इक द्रव्य कौ उदयावली विषै देइ, अवशेष कौ उपरितन स्थिति विषै दे है । बहुरि एक समय अधिक आवली मात्र अवशेष स्थिति रहे आवली के उप-रिवर्ती जो एक निषेक ताका द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदयावली के निषेकनि विषै एक समय घाटि आवली का दोय त्रिभाग मात्र निषेकनि कौ अतिस्थापना रूप छोडि समय अधिक आवली कौ त्रिभाग मात्र निषेकनि विषै मिलावै है । तहा जघन्य उदीरणा नाम पावे है । अैसे अपकृष्टि विधान है ।

इहां अैसा जानना—

काडकविधान तै तौ स्थिति, सत्त्व का घटना मूल तै हो है, जातै तहा उपरि के केते इक निषेकनि का नाश करि स्थिति घटाइए है । बहुरि अपकृष्टि विधान विषै उपरि की निषेकनि की केती इक परमाणूनि ही की स्थिति घटाइए है । मूल तै निषेक नाश नाही होइ, तातै मूल तै स्थिति सत्त्व घटना न हो है । बहुरि स्थिति सत्त्व विषै आवली मात्र अवशेष रहै, ताका नाम **उच्छिष्टावली** है । तहां उदीरणा आदि कार्य न हो है । पूर्वै कार्य भए थे, तिनि करि एक-एक समय विषै उदय आवने योग्य अैसे अनेक समयप्रबद्ध मात्र परमाणू के समूहरूप निषेक भए तिनकौ क्रम तै एक समय विषै गलै है निर्जरै है याका नाम **अधोगलन** है । अैसे उच्छिष्टावली व्यतीत भए सर्वथा स्थिति, सत्त्व का नाश हो है । अैसै मुख्यपनै संक्षेप स्वरूप दिखाया है । विशेष आगे कहेगे ही । बहुरि सत्तारूप विवक्षित कर्म प्रकृति के जे परमाणू तिन विषै अनुभाग की अधिकता हीनता करि स्पर्धक रचना है, सो पूर्वै विधान कह्या है ।

तहा नीचे के स्पर्धक स्तोक अनुभाग युक्त है । उपरि के स्पर्धक बहुत अनुभाग युक्त है । तहा जो निषेक उदय आवै है, ताके अनुभाग का भी उदय पूर्वोक्त प्रकार हो है । बहुरि दर्शन चारित्र लब्धि तै अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग का घटावना हो है । तहां जैसै स्थिति घटावने विषै काडक विधान कह्या, तैसै इहा भी विधान जानना । सो कहिये है–

बहुत अनुभाग युक्त उपरि के बहुत स्पर्धकनि का अभाव करि तिनके परमाणूनि कौ स्तोक अनुभाग युक्त नीचे के स्पर्धकनि विषै क्रम तै मिलाइ अनुभाग का घटावना ताका नाम **अनुभाग कांडक** वा **अनुभाग खंडन** है । ताकौ लाछित करना कहिए खडन करना सो **अनुभाग कांडकोत्करण** वा **अनुभाग कांडक घात** है । बहुरि एक अनुभाग कांडक का घात अतर्मुहूर्त काल करि सपूर्ण होइ, तिस काल का नाम **अनुभाग कांडकोत्करण काल** है । तिस काल विषै नाश करने योग्य स्पर्धकनि के परमाणूनि कौ ग्रहि नाश कीएं पीछे जे अवशेष स्पर्धक रहे तिनिविषै केते इक उपरि के स्पर्धक अतिस्थापनारूप छोडि अन्य सर्व स्पर्धकनि विषै मिलावै है ।

इहां दृष्टांत–जैसै विवक्षित प्रकृति के पाच सै स्पर्धक थे, तिनिका अनत का प्रमाण पांच, ताका भाग दीएं तहां बहुभाग प्रमाण च्यारि सै स्पर्धकनि का नाश करना । तहा तिनिके परमाणूनि कौ अवशेष सो स्पर्धक रहैंगे, तिनि विषै दश स्पर्धक अतिस्थापना रूप छोडि निव्वै स्पर्धकनि विषै मिलावै है । अैसे ही यथासभव प्रमाण जानि दृष्टात विषै स्वरूप जानना । बहुरि इहा एक अनुभाग काडक करि जेता अनुभाग घटाया, ताका नाम **अनुभाग कांडक आयाम** है । बहुरि नाश करने योग्य स्पर्धकनि के सर्व परमाणूनि तै ग्रहि करि अनुभाग कांडक का प्रथम समय विषै जेते परमाणु अवशेष स्पर्धकनि विषै मिलाये, ताका नाम **प्रथम फालि** है । द्वितीय समय विषै मिलाये ताका नाम **द्वितीय फालि** है । अैसै ही क्रम जानना ।

या प्रकार एक काडक कौ समाप्त भए अन्य काडक का प्रारभ हो है, सो अैसें अनेक अनुभाग काडकनि करि अनुभाग घटाइए है । बहुरि जहा विशुद्धता बहुत हो है तहा अतर्मुहूर्त करि होता था जो काडकघात ताका अभाव हो है । अर अनुसमयापवर्तन हो है । तहा समय समय प्रति अनत गुणा क्रम करि अनुभाग घटाइए है । पूर्व समय विषै जो अनुभाग था, ताकौ अनत का भाग दीए बहुभाग का नाश करि एक भाग मात्र अनुभाग अवशेष राखै है । अैसें समय समय प्रति अनुभाग का घटावना भया; तातै याका नाम **अनुसमयापवर्तन** है ।

बहुरि सज्वलन कषाय विषै अनुभाग घटने का क्रम करि अपूर्व स्पर्धक रचना अर बादर कृष्टि रचना हो है। सज्वलन लोभ विषै सूक्ष्म कृष्टि रचना हो है सो इनिका विशेष व्याख्यान आगे होगा। बहुरि सर्वत्र स्तोक अनुभाग युक्त की तौ नीचे रचना अर बधती अनुभाग युक्त की उपरि रचना जानना। ताकी अपेक्षा स्पर्धकनि कौं कृष्टिनि कौ नीचे उपरि कहिए है। ऐसै क्रम तै अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग सत्त्व का नाश हो है। प्रकृतिसत्त्व नाश भए सर्वथा तिनिका अनुभाग सत्त्व नाश हो है। बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनि का काडकादि विधान तै अनुभाग सत्त्व का नाश करिए है। प्रकृति सत्त्व का नाश के साथि तिनिका अनुभाग सत्त्व का नाश जानना। या प्रकार सत्त्वनाश का क्रम करि निर्जरा होने का विधान जानना। बहुरि सवर निर्जरा के हेतु तै सर्व कर्म का सर्वथा नाश भए शुद्धात्म की व्यक्त अवस्थारूप मोक्ष हो है, सो यहु दर्शन चारित्र लब्धि का फल है। इहा कोई क्रियानि का किचित् स्वरूप दिखाया है। इनिका भी वा अन्य क्रिया अनेक हो है। तिनिका विशेष व्याख्यान आगे ग्रथ विषै होइगा ही।

अब इहा केती एक संज्ञा कही वा आगे सज्ञा कहैगे, तिनका स्वरूप दिखाइए है।

कर्म प्रकृतिनि का कथन विषै तिनिकी परमाणूनि का नाम द्रव्य है। जैसै बधरूप परमाणूनि का नाम **बंध द्रव्य** है। सत्त्व रूप परमाणूनि का नाम **सत्त्व द्रव्य** है। स्थिति काडक के निषेकनि की परमाणूनि का नाम **कांडक द्रव्य** है। तहा प्रथमादि फालिनि के परमाणूनि का नाम **प्रथमादि फालनि का द्रव्य** है। उपरि के वा नीचे के निषेक छोडि बीचि के केते इक निषेकनि का अभाव करनेरूप अतरकरण हो है। तहा अभाव करनेरूप निषेकनि के परमाणूनि का नाम **अंतरकरण द्रव्य** है। उदय आवने कौं अयोग्य कीए परमाणूनि का नाम **उपशम द्रव्य** है। विवक्षित सत्तारूप निषेक था तिस विषै नवीन परमाणू मिलाये तिनका नाम **दीयमान द्रव्य** है। आगे सत्तारूप थी अर ए नवीन मिली इनि सब परमाणूनि के समूह का नाम **दृश्यमान द्रव्य** है। ऐसै ही अन्यत्र जानना।

बहुरि काडक नाम पर्व का है। अर जैसै सांठा विषै पैली हो है, तैसै मर्यादारूप स्थान का नाम **पर्व** है। जैसै स्थितिविषै घटने करि मर्यादारूप स्थान भया, ताका नाम **स्थिति कांडक** है। अनुभाग विषै घटने करि मर्यादारूप स्थान भया,

ताका नाम **अनुभाग कांडक** है। बहुरि अनंतानुबधी की स्थिति विषै च्यारि स्थान कहे तहा च्यारि पर्व कहे। बहुरि अपकृष्ट द्रव्य के मिलावने के जहा तीन स्थान है तहा तीन पर्व कहे, असै ही अन्यत्र जानना।

बहुरि आयाम नाम लबाई का है सो काल के समय भी युगपत् न हो है; तातै काल का प्रमाण विषै आयाम सज्ञा कहिए है वा कही उपरि उपरि रचना होइ तहा तिनिका प्रमाण विषै भी आयाम सज्ञा कहिए है। जैसे स्थिति के प्रमाण का नाम **स्थिति आयाम** है। स्थिति काडक के निषेकनि के प्रमाण का नाम **स्थिति कांडक आयाम** है। अतरकरण विषै जितने निषेकनि का अभाव कीया है ताका नाम **अंतरायाम** है। गुणश्रेणी के निषेकनि के प्रमाण का नाम **गुणश्रेणी आयाम** है। अैसै ही अन्यत्र जानना।

बहुरि गुण नाम गुणकार का है। तहा गुणकार की पक्ति लीए जहा निषेकनि विषै द्रव्य दीजिए, ताका नाम **गुणश्रेणी** है। समय समय गुणकार लीएं विवक्षित प्रकृति के परमाणू अन्य प्रकृतिरूप सक्रमण करै, ताका नाम **गुणसंक्रमण** है। गुणकार लीएं हानि कहिये हीनता, घटवारी जहा होइ, ताका नाम **गुणहानि** है। असे ही अन्यत्र जानना।

बहुरि कर्मस्थिति विषै निषेकनि का प्रमाणरूप स्थिति कहिए है।

जैसे विवक्षित निषेकनि के उपरिवर्ती निषेकनि का नाम **उपरितन स्थिति** है। गुणश्रेणी का कथन विषै तौ गुणश्रेणी आयाम तै उपरिवर्ती निषेकनि का नाम **उपरितन स्थिति** है। केवल उदीरणा का कथन विषै उदयावली तै उपरिवर्ती निषेकनि का नाम **उपरितन स्थिति** है। इत्यादि जानना।

बहुरि विवक्षित प्रमाण लीए नीचले निषेकनि का नाम **प्रथम स्थिति** है। बहुरि उपरिवर्ती सर्व स्थिति के निषेकनि का नाम **द्वितीय स्थिति** है। जैसे अतरायाम तै नीचले निषेकनि का नाम **प्रथम स्थिति** उपरले निषेकनि का नाम **द्वितीय स्थिति** है। अथवा सज्वलन क्रोध की जेता प्रमाण लीए प्रथम स्थिति स्थापी, ताके निषेकनि का नाम **प्रथम स्थिति** है। अवशेष सर्व स्थिति के निषेकनि का नाम द्वितीय स्थिति है। इत्यादि जानना।

बहुरि समुदायरूप एक क्रिया विषै जुदा जुदा खंड करि विशेष करना ताका नाम **फालि** है। जैसे काडक द्रव्य का काडकोत्करण काल विषै अन्यत्र प्राप्त करना

तहां प्रथम समय प्राप्त कीया सो काडक की **प्रथम फालि**, द्वितीय समय विषै प्राप्त कीया सो **द्वितीय फालि** इत्यादि। बहुरि ऐसै ही उपशमन काल विषै पहले समय जेता द्रव्य उपशमाया सो **उपशम की प्रथम फालि**, द्वितीय समय उपशमाया सो ताकी **द्वितीय फालि** इत्यादि ऐसै ही अन्यत्र जानना।

बहुरि अन्य निषेक के परमाणू अन्य निषेक विषै मिलाइए तहा मिलावना वा देना वा **निक्षेपरण करना** कहिए। जिनि निषेकनि विषै दीए ते निषेक, **निक्षेपरणरूप** जानने। अर जिनि निषेकनि विषै न मिलाइए ते निषेक **अतिस्थापनारूप** जानने। बहुरि द्वितीय स्थिति के निषेकनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि प्रथम स्थिति के निषेकनि विषै मिलाइए तहा **आगाल** सज्ञा कहिए है। अर प्रथम स्थिति के निषेकनि का द्रव्य कौं उत्कर्षण करि द्वितीय स्थिति के निषेकनि विषै मिलाइए तहां **प्रत्यागाल** सज्ञा कहिए।

बहुरि विवक्षित के काल का जो प्रमाण सोई ताका काल है। जैसै एक काडक का घात करने का जो काल ताका नाम **कांडकोत्करण काल** है। तहा प्रथम समय विषै प्रथम फालि का पतन जो नीचले निषेकनि विषै प्राप्त होना सो हो है। तातै तिस प्रथम समय कौ प्रथम फालिका पतन काल कहिए। द्वितीय समय कौ द्वितीय फालि का पतन काल कहिए। ऐसै ही अन्त समय कौ चरम फालि का पतन काल कहिए। ताके पूर्व समय कौ द्विचरम फालि का पतन काल कहिए। बहुरि जिस काल विषै अतरकरण करिए ताका नाम अतरकरण काल है। बहुरि जिस काल विषै क्रोध कौ वेदै ताके उदय कौ भोगवै, ताका नाम क्रोध वेदक काल है ऐसे ही अन्यत्र जानना।

बहुरि आवली मात्र काल का वा तितने ही काल सबधी निषेकनि का नाम आवली है। तहा वर्तमान समय तै लगाय आवली मात्र काल कौ आवली कहिए वा तिनिके निषेकनि कौ भी **आवली** कहिए वा **उदयावली** कहिए। अर ताके उपरिवर्ती जो आवली ताकौ **द्वितीयावली** कहिए वा **प्रत्यावली** कहिए। बहुरि बध समय तै लगाय आवली पर्यंत उदीरणादि क्रिया न होइ सकै ताका नाम **बंधावली** है वा अचलावली है वा आबाधावली है। बहुरि द्रव्य निक्षेपण करतै जिनि आवलीमात्र निषेकनि विषै नाही निक्षेपण करिए ताका नाम **अतिस्थापनावली** है। बहुरि स्थिति सत्त्व घटते जो आवलीमात्र स्थिति अवशेष रहि जाय ताका नाम **उच्छिष्टावली** है। बहुरि

जिस आवली विषै सक्रमण पाइए सो **संक्रमणावली** अर उपशमन करना पाइए सो **उपशमावली**। इत्यादि ऐसै ही अन्यत्र जानना।

बहुरि अन्त नाम माही (अन्दर) का है, सो उक्त प्रमाण तै किछू घाटि होइ तहा **अन्त** सज्ञा हो है। तहा कोडाकोडी के नीचै कोडी के उपरि ताकौ **अन्तः कोडाकोडी** कहिए। मुहूर्त तै घाटि आवली तै अधिक ताकौ **अन्तर्मुहूर्त** कहिए। दिवस तै किछू घाटि ताकौ **अन्तर्दिवस** कहिए इत्यादि। बहुरि तीन के उपरि नव के नीचै ताका नाम **पृथक्त्व** है। वा कही बहुत हजारों का भी नाम पृथक्त्व है। सो यथासंभव जानना। बहुरि कही दृष्टात अपेक्षा संज्ञा हो है। जैसै कोऊ गाय का पूंछ क्रम तै घटता हो है तैसै इहां एक-एक चय घटता क्रम करि निषेक पाइए तहा **गोपुच्छ** सज्ञा कहिए। बहुरि द्रव्य देने विषै जहा ऊंट की पीठिवत् हीन अधिकपना होइ तहा **उष्ट्रकूट** संज्ञा कहिए। बहुरि जहा समान पाटीका आकारवत् सर्वस्थाननि विषै समान रचना होइ तहा **समपट्टिका** कहिए इत्यादि जानना। या प्रकार जैसै व्याकरण विषै केती इक संज्ञा तौ संज्ञासंधि विषै कही केती इक संज्ञा जहा प्रयोजन भया तहा कही तैसै इस ग्रन्थ विषै केती इक सज्ञा तौ इहा पीठ बंध विषै कही है। केती इक संज्ञा आगै शास्त्र विषै जहा प्रयोजन होगा तहा कहिएगी।

अब इहा द्रव्य का विभाग करने का विधान कौ कारण करणसूत्र कहिए है। तहा नाना गुणहानि विषै चय घटता क्रमरूप द्रव्य के विभाग का विधान कहिए है—

पहिलै १ द्रव्य, २ स्थिति, ३ गुणहानि, ४ नाना गुणहानि, ५ दो गुणहानि, ६ अन्योन्याभ्यस्त राशि इनिका स्वरूप वा प्रमाण जानना। तहा प्रथम सम्बन्ध विषै स्थिति रचना की अपेक्षा कहिए है।

विवक्षित समय विषै ग्रहण कीए जे समयप्रबद्ध परिमाण परमाणू सो **द्रव्य** है। ताकी आबाधा रहित स्थिति बध के समयनि का जो प्रमाण सो **स्थिति** है। तहां एक गुणहानि विषै निषेकनि का प्रमाण सो **गुणहानि आयाम** है। स्थिति विषै गुणहानि का जो प्रमाण सो **नाना गुणहानि** है। गुणहानि आयाम तै दूणा प्रमाण सो **दो गुणहानि** है। नाना गुणहानि मात्र दूवा मांडि परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ सो **अन्योन्याभ्यस्त** राशि है।

जैसै मिथ्यात्व का द्रव्य तौ अपने समयप्रबद्ध मात्र है। स्थिति सत्तर कोडाकोडी सागर है। स्थिति कौ नाना गुणहानि का भाग दीए जो प्रमाण होइ तितना

गुणहानि आयाम है। पल्य के अर्धच्छेदनि विषै पल्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेद घटाए जो होइ तितना नाना गुणहानि है। गुणहानि आयाम तैं दूणा दो गुणहानि है। पल्य कौं पल्य की वर्गशलाका का भाग दीजिए इतना अन्योन्याभ्यस्त राशि है। ऐसैं ही अन्य प्रकृतिनि विषै यथासभव प्रमाण जानना।

अब अनुभाग रचना की अपेक्षा कहिए है। विवक्षित कर्मप्रकृति के परमाणूनि का प्रमाण सो तो **द्रव्य** है। तहा सर्व वर्गणानि का जो प्रमाण सो **स्थिति** है। एक गुणहानि विषै वर्गणानि का प्रमाण सो **गुणहानि आयाम** है। स्थिति विषै गुणहानि का प्रमाण सो **नाना गुणहानि** है। दूणा गुणहानि मात्र दो गुणहानि है। नाना गुणहानि मात्र दूवानि कौं परस्पर गुणैं जो होइ सो अन्योन्याभ्यस्त राशि है। सो सर्व प्रकृतिनि की अनुभाग रचना विषै इन छहौंनि का प्रमाण यथासम्भव हीनाधिक-पना कौं लीए अनंत प्रमाण जानना।

बहुरि जहा काडकादि द्रव्य ग्रहि करि यथायोग्य निषेकनि विषै निक्षेपण करना होइ, तहा कहिए है—जेता द्रव्य ग्रह्या होइ सो तीहि प्रमाण तो द्रव्य है। जितने निषेकनि विषै देना होइ, तिनिका प्रमाण मात्र स्थिति है। गुणहानि का प्रमाण बंध की स्थिति रचना विषै कह्या तितना है। याका भाग इहा सम्भवती स्थिति कौं दीए नाना गुणहानि का प्रमाण आवै दूणा गुणहानि मात्र दो गुणहानि है। नाना गुणहानि मात्र दूवानि कौं परस्पर गुणैं अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण हो है। सो इहा इन छहौं का प्रमाण विवक्षित स्थान विषै जैसा सभवै तैसा जानना।

अब इहा स्थिति रचना अपेक्षा निषेकनि विषै द्रव्य का प्रमाण ल्यावने कौं विधान कहिए है—प्रथम दृष्टात—जैसैं द्रव्य तरेसठि सै (६३००), स्थिति अठतालीस (४८), गुणहानि आठ (८), नाना गुणहानि छह (६), दो गुणहानि सोलह (१६), अन्योन्याभ्यस्त राशि चौसठि (६४) स्थापि विधान कहिए है—**"दिवड्ढगुणहाणिभजिदे पढमा"** सर्व द्रव्य कौं साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए प्रथम निषेक होइ। जैसैं तरेसठि सै कौं साधिक बारह का भाग दीए पाच सै बारा होइ। बहुरि **"तं दो गुणहाणिणा भजिदे पचय"** तिस प्रथम निषेक कौं दो गुणहानि का भाग दीए चय का प्रमाण आवै है। जैसें पाच सै बारा कौं सोलह का भाग दीए बत्तीस होइ, सो द्वितीयादि निषेकनि विषै एक एक चय प्रमाण द्रव्य घटता जानना। जैसैं द्वितीय निषे-कनि विषै च्यारि सै असी, तृतीय विषै च्यारि सैं अठतालीस इत्यादि जानना।

बहुरि अैसै क्रम तै जिस निषेक विषै प्रथम निषेक तै आधा प्रमाण होइ, तहां तै लगाय दूसरी गुणहानि जाननी । जैसै दूसरी गुणहानि का प्रथम निषेक दोय सै छप्पन बहुरि तहां चय का प्रमाण प्रथम गुणहानि तै आधा है । जैसै सोलह, सो इहा भी द्वितीयादि निषेकनि विषै एक एक चय घटता क्रम जानना । अैसै प्रथम गुणहानि तै द्वितीय गुणहानि विषै द्रव्य चय निषेकनि का प्रमाण आधा भया । याही प्रकार तृतीयादि गुणहानिनि विषै पूर्व पूर्व गुणहानि तै द्रव्य, चय, निषेकनि का प्रमाण क्रम तै आधा आधा जानना । सो जितनी नाना गुणहानि का प्रमाण होइ तितनी गुणहा-निनि विषै अैसैं रचना करनी । जैसै दृष्टात विषै रचना अैसी–

२२८	१४४	७२	३६	१८	९
३२०	१६०	८०	४०	२०	१०
३५२	१७६	८८	४४	२२	११
३८४	१९२	९६	४८	२४	१२
४१६	२०८	१०४	५२	२६	१३
४४८	२२४	११२	५६	२८	१४
४८०	२४०	१२०	६०	३०	१५
५१२	२५६	१२८	६४	३२	१६

बहुरि अन्य प्रकार विधान कहिए है–

सर्व द्रव्य कौ एक घाटि अन्योन्याभ्यस्त राशि का भाग दीए अन्त गुणहानि के द्रव्य का प्रमाण आवै है । जैसै तरेसठि सै कौ तरेसठि का भाग दीए सौ होइ । बहुरि द्विचरम गुणहानि आदि विषै दूणा-दूणा होइ, आधा अन्योन्याभ्यस्त राशि करि अन्त गुणहानि के द्रव्य कौ गुणै प्रथम गुणहानि का द्रव्य हो है । जैसै सौ कौं बत्तीस करि गुणै बत्तीस सै होइ अैसै गुणहानि के द्रव्य का प्रमाण ल्याइ । अब गुणहानिनि विषै निषेकनि के द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है । तहा प्रथम गुणहानि का सर्व द्रव्य वा निषेकनि का प्रमाण जानना ।

जैसै द्रव्य बत्तीस सै (३२००), निषेक आठ, तहा "अद्धाणेण सव्वधणे **खंडिदे मज्झिम धणमागच्छदि**' अध्वान जो निषेकनि का प्रमाण मात्र गच्छ, ताकरि सर्वधन जो सर्वद्रव्य, सो भाजित कीए वीचि के निषेक का प्रमाण मात्र मध्यम धन आवै है । जैसै बत्तीस कौं आठ का भाग दीए च्यारि सै होइ । बहुरि 'तं रूऊणद्धा-**णूणेणणिसेयभागहारेण हृदे पचयं**' तिस मध्यम धन कौं एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो निषेक भागहार दो गुणहानि ताका भाग दीए, चय का प्रमाण

आवै है। जैसैं सात का आधा साढा तीन ताकरि हीन सोलह कौं कीए साढा बारह, ताका भाग च्यारि सैं कौं दीए बत्तीस पाये सो चय का प्रमाण है। बहुरि **'तं दो गुणहाणिणा गुणिदे आदिणिसेयं'** तिस चय कौं दो गुणहानि करि गुणैं प्रथम निषेक का प्रमाण आवै है। जैसैं बत्तीस कौं सोलह करि गुणैं पांच सैं बारा होइ। बहुरि **'तत्तो विशेषहीणकमं'** तहां पीछे द्वितीयादि निषेकनि विषैं विशेष कहिए चय का प्रमाण, ताकरि हीनक्रम जानना। एक-एक चय मात्र घटता क्रम तैं जानना। तहां एक-एक अधिक गुणहानि करि चय कौं गुणैं अन्त निषेक का प्रमाण हो है। जैसे नव करि बत्तीस कौं गुणैं दोय सैं अठचासी होइ। बहुरि ऐसैं ही द्वितीयादि गुणहानि का द्रव्य स्थापि, तहां निषेकनि के द्रव्य का प्रमाण ल्यावना। द्वितीयादि गुणहानिनि विषैं पूर्व गुणहानि तैं द्रव्य का वा चय का वा निषेक का प्रमाण क्रम तैं आधा आधा जानना ऐसैं विधान कह्या।

बहुरि अनुभाग रचना विषैं भी ऐसैं ही विधान जानना। विशेष इतना-इहां द्रव्यादिक का प्रमाण जैसा सभवै तैसा जानना। बहुरि तहां जैसैं निषेकनि विषैं परमाणूनि का प्रमाण ल्याया तैसैं इहां वर्गणानि विषै परमाणूनि का प्रमाण ल्यावना। बहुरि ऐसैं ही देने योग्य द्रव्य विषैं भी विधान जानना। विशेष इतना – इहां द्रव्यादिक का प्रमाण जैसा सभवै तैसा जानना। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार तहां निषेकनि का प्रमाण ल्याइ प्रथमादि निषेकनि का जो प्रमाण आवै तितना द्रव्य पूर्वै जिनि विषैं द्रव्य देना तिनि सत्ता के प्रथमादि निषेकनि विषैं याकौं मिलाय देना।

बहुरि जहां द्रव्य कौं स्तोक निषेकनि ही विषैं देना होइ तहां गुणहानि रचना तौ सभवै नाहीं। तहां द्रव्य कैसैं देना ? सो कहिए है–जैसैं एक गुणहानि के निषेकनि विषैं द्रव्य के प्रमाण ल्यावने का विधान कह्या है, तैसैं ही **"अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे मज्झिमधणमागच्छदि"** इत्यादि विधान तैं तहां प्रथमादि निषेकनि का प्रमाण ल्यावना। विशेष इतना–इहां जितने निषेकनि विषैं द्रव्य देना होइ तीहि प्रमाण गच्छ स्थापना। अर जेता द्रव्य तहां देने योग्य होइ तीहि प्रमाण द्रव्य स्थापना। ऐसे कीए जो प्रथमादि निषेकनि का प्रमाण आवै तितने द्रव्य कौं विवक्षित के पूर्वै सत्ता रूपी जे प्रथमादि निषेक पाइए है, तिन विषैं मिलाय देना। उदयावली विषैं द्रव्य देना होइ तहां वा स्तोक स्थिति रहि गए उपरितन स्थिति विषैं द्रव्य देना होइ, तहां वा अन्यत्र ऐसा विधान जानना। बहुरि गुणश्रेणी आयाम आदि विषैं द्रव्य देना होइ तहां विधान कहिए है।

'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंडप्रक्षेपकाणां गुणको भवेदिति' इस करणसूत्र अनुसारि विधान जानना। सो कहिए है-जैसैं सीर के द्रव्य का नाम तौ मिश्रपिंड है। अर सीरीनि के विसवानि का नाम प्रक्षेप है। सो प्रक्षेप का जोड़ देइ, ताका भाग मिश्रपिंड कौं दीए जो एक भाग का प्रमाण आवै सो प्रक्षेपक, जे अपने अपने विसवे तिनिका गुणकार हो है। सो इनकौ परस्पर गुणैं जो जो प्रमाण आवै सो सो अपने अपने विसवानि के स्वामी जे सीरी, तिनिका द्रव्य जानना। इहां सीर का द्रव्य मिश्रपिंड सो सतरह सै (१७००) बहुरि सीरीनि के विसवे एक का एक, दूसरे के च्यारि, तीसरे के सोलह, चौथे के चौसठि (१।४।१६।६४) ए प्रक्षेप। बहुरि इनिका जोड़ पिच्यासी, ताका भाग मिश्रपिंड कौं दीएं बीस पाए, ताकरि अपने अपने प्रक्षेप जे विसवे, तिनकौं गुणैं पहिले का बीस, दूसरे का असी, तीसरा का तीन सै बीस, चौथा का बारह सै असी द्रव्य आवै है। ऐसैं ही गुणश्रेणी का आयाम विषै जेता द्रव्य देना, सो तौ मिश्रपिंड जानना। बहुरि गुणश्रेणी आयाम के प्रथम समय की एक शलाका, द्वितीय समय की तातैं असख्यात गुणी शलाका, तृतीय समय की तातैं असंख्यात गुणी शलाका इस ही प्रकार असख्यात गुणा क्रम लीए ताका अंत समय पर्यन्त की शलाका जाननी। इनका नाम प्रक्षेपक है। इनिकौं जोडैं जो प्रमाण आवै, ताका भाग तिस सर्व द्रव्य कौं दीए जो प्रमाण होइ तिस करि अपनी शलाकानि का प्रमाण कौं गुणैं गुणश्रेणी आयाम के प्रथमादि समय सबधी निषेकनि विषै द्रव्य देने का प्रमाण आवै है। इतना-इतना द्रव्य गुणश्रेणी आयाम के प्रथमादि निषेकनि विषैं मिलाइए है। बहुरि ऐसैं ही गुण सक्रमण विषैं विधान जानना। इहां जो गुण सक्रमण करि अन्य प्रकृतिरूप परिणमावने योग्य सर्व द्रव्य, सो मिश्रपिंड अर गुण सक्रमण काल के प्रथमादि समय सबधी एक आदि क्रम तैं असख्यात गुणी शलाका सो प्रक्षेपक है। इनिके जोड़ का भाग मिश्रपिंड कौं देइ लब्ध करि अपनी अपनी शलाका कौं गुणैं गुण सक्रमण काल का प्रथमादि समयनि विषै अन्य प्रकृतिरूप परिणमावने योग्य द्रव्य का प्रमाण आवै है। याही प्रकार अन्यत्र भी यथासभव मिश्रपिंड वा प्रक्षेपकनि का प्रमाण जानि जैसा जहां संभवै तैसा तहां जानना। या प्रकार द्रव्य देना आदि विषै विधान कह्या।

अब सत्ता विषै जे निषेक पाइए हैं तिनके द्रव्य जानने का विधान कहिए है-विवक्षित कोई एक समय विषै जो सत्तारूप कर्म परमाणूनि का द्रव्य है, तहां स्थिति सत्त्व का प्रथम समय वर्तमान है। तीहि विषै उदय आवने योग्य जो द्रव्य सो

प्रथम निषेक का द्रव्य है। ताका प्रमाण तौ सपूर्ण समयप्रबद्ध मात्र है। काहे तै ? सो कहिए है– पूर्वं जे समय समय प्रति समयप्रबद्ध बाधे, तिनि विषै जिस समयप्रबद्ध का एक हू निषेक पूर्वं गल्या नाही, ताका तौ प्रथम निषेक इस समय विषै उदय होने योग्य है। जाका एक निषेक पूर्वं गल्या, ताका द्वितीय निषेक इस समय विषै उदय होने योग्य है। इस ही क्रम तै जाका एक निषेक बिना अवशेष सर्व निषेक पूर्वं गले, ताका अत निषेक इस समय विषै उदय होने योग्य है। ऐसे एक-एक समयप्रबद्ध का एक-एक निषेक मिली इस विवक्षित समय विषै उदय आवने योग्य संपूर्ण समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य भया, सो सत्ता का प्रथम निषेक है। जैसै एक समयप्रबद्ध का पाच सै बारह, दूसरे का च्यारि सै असी इत्यादि निषेकनि का द्रव्य मिलि तिरेसठि सै होइ।

बहुरि स्थिति सत्त्व का दूसरे समय विषै उदय आवने योग्य द्रव्य प्रथम निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र है। कैसै ? सो कहिए है — प्रथम समय विषै जिस समयप्रबद्ध का प्रथम निषेक गलै, ताका तो दूसरा निषेक अर जाका दूसरा निषेक गलै, ताका तीसरा निषेक इत्यादि क्रम तै दूसरे समय उदय आवने योग्य निषेक है सो सर्व मिलि प्रथम निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र हो है। सो यह सत्ता का द्वितीय निषेक है। इहां प्रथम निषेक मात्र चय घटता भया जैसै एक समयप्रबद्ध का च्यारि सै असी, दूसरे का च्यारि सै अठतालीस इत्यादि निषेकनि का द्रव्य मिलि सत्तावन सै अठचासी होइ। इहा प्रथम समय विषै जाका अन्त निषेक गल्या, ताका तौ कोई निषेक रह्या नाही। अर प्रथम निषेक जाका इस दूसरे समय विषै उदय होयगा ऐसा समयप्रबद्ध बधैगा तब वाका सत्त्व होइगा नवीन इस समय विषै है नाही तातै सत्ता के द्वितीय निषेक का प्रमाण पूर्वोक्त जानना।

बहुरि स्थिति सत्त्व का तृतीय समय विषै उदय आवने योग्य प्रथम द्वितीय निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य है। कैसै ? सो कहिए है – दूसरे समय जाका द्वितीय निषेक गल्या, ताका तीसरा निषेक, जाका तीसरा निषेक गल्या, ताका चौथा निषेक इत्यादि क्रम तै तीसरे समय विषै उदय आवने योग्य है। सो सर्व मिलि प्रथम, द्वितीय निषेक घाटि समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य है। सो सत्ता का तृतीय निषेक है। इहा द्वितीय निषेक मात्र चय घटता भया।

जैसे एक समयप्रबद्ध का च्यारि सै अठतालीस, दूसरे का च्यारि सै सोला इत्यादि मिलि तरेपन सै आठ होइ। इहा भी पूर्ववत् कारण जानना। ऐसै ही क्रम

तै स्थिति सत्त्व का अन्त समय विषै उदय आवने योग्य समयप्रबद्ध को अंत निषेक मात्र द्रव्य है। काहे तै ? सो कहिए है – इस वर्तमान समय विषै जो सत्त्व द्रव्य है, तिस विषै स्थिति सत्त्व का अंत समय विषै एक समयप्रबद्ध कौ एक अंत निषेक अवशेष रहेगा। अवशेष सर्व समयनि विषै गलैगे। बहुरि जिनिका आगामी काल विषै बंध होइगा तिन समयप्रबद्धनि का तिस समय विषै उदय आवने योग्य निषेक होगे, तिनिका अबार अस्तित्व नाही। तातै समयप्रबद्ध का एक अंत निषेक मात्र ही सत्ता का अन्त निषेक जानना। जैसै अंत निषेक के परमाणू नव। या प्रकार इन सर्व सत्ता के निषेकनि का जोड़ दीए किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र प्रमाण हो है; सोई सत्त्व द्रव्य जानना। जैसै तरेसठि सै अर सत्तावन सै अठ्यासी इत्यादि एक - एक निषेक घाटि क्रम लीए सत्ता के निषेक लिखि, तिनिका जोड दीए गुणहानि आयाम आठ, ताका ड्योढ बारह, तामै किछू घटाइ, ताकरि समयप्रबद्ध का प्रमाण तरेसठि सै, ताकौ गुणै इकहत्तरि हजार तीन सै च्यारि हो है। सो कहु कथन त्रिकोण यंत्र की रचना करि गोम्मटसार विषै दिखाया है सो जानना। या प्रकार स्थिति सत्त्व के के निषेकनि का द्रव्य स्वयसिद्ध तौ अैसा क्रम लीए जानना।

बहुरि जो उत्कर्षण, अपकर्षण, गुणश्रेणी, संक्रमण आदि के वश तै अन्य निषेकनि का द्रव्य अन्य निषेकनि विषै प्राप्त भया होइ वा अन्य प्रकृति का द्रव्य अन्य प्रकृति विषै प्राप्त भया होइ तौ तहां यथासम्भव आय द्रव्य की अधिकता कीए व्यय द्रव्य की हीनता कीएं जिस प्रमाण लीए संभवै तिस प्रमाण लीए सत्ता के निषेकनि की रचना जाननी। इहा जैसै लोक विषै जमा खरच कहिए तैसै विवक्षित विषै और परमाणू आनि मिलै, ताका नाम आय द्रव्य है। विवक्षित मै स्यो परमाणू निकसि अन्यत्र प्राप्त भए, ताका नाम व्यय द्रव्य जानना।

विशेष इतना–जहां निषेकनि का द्रव्य चय घटता क्रम लीए निकसै। जैसै निषेकनि का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग ग्रहण कीया, तहा पूर्वै निषेकनि का सत्त्व जैसे चय घटता क्रम लीए था, तैसै ही चय घटता क्रम लीए द्रव्य का ग्रहण भया। बहुरि जहां निषेकनि विषै चय घटता क्रम लीएं द्रव्य मिलाया, जैसै उदयावली आदि के निषेक पूर्वै चय घटता क्रम लीए थे, तिन विषै चय घटता क्रम लीएं ही द्रव्य दीया। तहा तौ आय व्यय होत सतै भी यथासम्भव चय घटता अनुक्रम रहै है। बहुरि जहा निषेकनि का द्रव्य हीनाधिक क्रम लीएं ग्रहण करिए वा केई निषेकनि का द्रव्य ग्रहण करिए, केई निषेकनि का नाही

ग्रहण करिए । बहुरि जहां हीनाधिक क्रम करि वा गुणकार क्रम करि द्रव्य दीया होइ, तहा जो निकस्या वा मिलाया द्रव्य स्तोक होइ अर सत्त्व द्रव्य बहुत होइ तौ यथासम्भव चय घटता क्रम रहै अर निकस्या वा मिलाया द्रव्य बहुत होइ अर सत्त्व द्रव्य स्तोक होइ तौ तहा चय घटता क्रम नाही रहै है। ऐसे स्थिति सत्त्व विषै निषेकनि का प्रमाण आवै है ।

बहुरि अनुभाग सत्त्व विषै वर्गणानि का प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार ल्यावना वा वर्गणानि विषै यथासम्भव द्रव्य निकासै वा मिलाएं पूर्वोक्त प्रकार चय घटता क्रम का रहना वा न रहना जानना ।

बहुरि अनिवृत्तिकरण विषै अपूर्व स्पर्धक वा कृष्टिनि का नवीन सत्त्व हो है । ताका विधान तहा अवसर आएं लिखेगे, सो जानना ।

ऐसे सत्त्व द्रव्य विषै क्रम जानना ।

या प्रकार इहा द्रव्य देना आदि विषै विधान कह्या है, सो ऐसै इहां जो यहु कथन कीया है, ताकौ नीकै यादि करि लेना । जो इस कथन का स्मरण होइगा तौ आगै ग्रथ विषै नीकै प्रवेश होगा अर अर्थ कौ नीकै पहिचानौगे । इस ही वास्तै पहिलै यहु केताइक कथन कीया है । जाका इहा व्याख्यान कीया, ताका प्रयोजन ग्रन्थ विषै जहा आवै तहा कथन कीया, ताके अनुसारि स्वरूप जानना । बहुरि व्याख्यान तौ सर्व आगे ग्रथ विषै होइगा ही । ऐसै पीठ बध कीया ।

अब कर्तव्य का प्रारभ करिए है । आगै चामु डराय नामा राजा के प्रश्न के वश तै कषाय प्राभृत अर ताही का द्वितीय नाम जयधवल ताके पद्रह अधिकार तिनि विषै पश्चिम स्कध नामा पद्रहवा अधिकार ताका अर्थ कौ ग्रहण करि श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती लब्धिसार नामा ग्रन्थ कीया ताके सूत्रनि का सक्षेप मात्र अर्थ लिखिए है । तहा प्रथम लब्धिसार टीका के अनुसारि केते इक सूत्रनि का अर्थ लिखिए टीका विषै विस्तार तै व्याख्यान है । इहा ग्रन्थ बधने के भय तै सकोचरूप व्याख्यान करिए है ।

पहला अधिकार : प्रथमोपशमसम्यक्त्व प्ररूपण

तहा प्रथम ही मंगल करिए है–

चौपाई– श्री अरहंत सिद्धवर सूरि । उपाध्याय धारै गुणभूरि ।।
साधु परम मंगल जग जेष्ठ । जय शरणागत कौ परमेष्ठ ।।

अथ मूल सूत्र–

सिद्धे जिणिदचंदे आयरिय उवज्भाय साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धि परूवेमो ।।१।।

सिद्धान् जिनेंद्रचंद्रान् आचार्योपाध्यायसाधुगणान् ।
वंदित्वा सम्यग्दर्शनचारित्र लब्धि प्ररूपयामः ।।१।।

टीका – जिनेंद्र जे अरहंत तेई भए सकल लोक के प्रकाशन तै वा आल्हाद करनै तै चंद्रमा तिनिकौ अर कृतकृत्य भए सिद्ध भगवान तिनिकौ अर पंचाचार के प्रवर्तक आचार्य तिनिकौ अर अध्ययन करना करवाना विषै अधिकारी उपाध्याय, तिनकौ अर मोक्षमार्ग के साधक साधु समूह, तिनिकौ मे बदि करि सम्यग्दर्शन सम्यक् चारित्र की लब्धि कहिए प्राप्ति, सो जिस विषै प्रतिपादन करिए असा लब्धिसार नामा शास्त्र ताकौ हम प्ररूपै है । असी आचार्य प्रतिज्ञा करी ।

तहा प्रथम ही प्रथमोपशम सम्यक्त्व विधान कहिए है –

चदुगदिमिच्छो सण्णी, पुण्णो गब्भज विसुद्ध सागारो ।
पढमुवसमं स गिण्हदि, पंचमवरलद्धिचरिमम्हि[1] ।।२।।

चतुर्गतिमिथ्यः संज्ञी, पूर्णः गर्भजो विशुद्धः साकारः ।
प्रथमोपशमं स गृह्णाति पंचमवरलब्धिचरमे ।।२।।

टीका – च्यारचों गतिवाला अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टी सज्ञी पर्याप्ति गर्भज मद कषायरूप जो विशुद्धता ताका धारक, गुण दोष विचार रूप जो साकार ज्ञानोपयोग, ताकरि संयुक्त जो जीव सोई पाचवी करण लब्धि विषै उत्कृष्ट जो अनिवृत्तिकरण, ताका अंत समय विषै प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौ ग्रहण करै है ।

---

१ षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०७ ।

इहा अैसा जानना—

जो मिथ्यादृष्टो गुणस्थान तै छूटि उपशम सम्यक्त्व होइ, ताका नाम प्रथमोपशम सम्यक्त्व है। बहुरि उपशम श्रेणी चढता क्षयोपशम सम्यक्त्व तै जो उपशम सम्यक्त्व हो है, ताका नाम द्वितीयोपशम सम्यक्त्व है, तातै मिथ्यादृष्टी का ग्रहण कीया है।

बहुरि सो प्रथमोपशम सम्यक्त्व तिर्यंच गति विषै असंज्ञी जीव है तिनकै न हो है। अर मनुष्य तिर्यंच गति विषै लब्धि अपर्याप्तक अर सन्मूर्छन हैं, तिनकै न हो है। बहुरि च्यारचो गति विषै सक्लेशता करि युक्त जीव कै न हो है। बहुरि अनाकार दर्शनोपयोग का धारी कै न हो है। जातै तहां तत्त्वविचार न संभवै है। बहुरि तीन निद्रा के उदय का अभाव कहैंगे तातै सूता जीव कै न हो है। अर भव्य ही के सम्यक्त्व हो है, तातै अभव्य कै न हो है। ए भी विशेषण इहा सभवै है।

आगै प्रथमोपशम सम्यक्त्व होने तै पहलै मिथ्यादृष्टी गुणस्थान विषै पंच लब्धि हो हैं, तिनिका व्याख्यान कहिए है—

खयउवसमियविसोही, देसणपाउग्गकरणलद्धी य।
चत्तारि वि सामण्णा, करणं सम्मत्तचारित्ते[1] ॥३॥

क्षयोपशमविशुद्धी, देशनाप्रायोग्यकरणलब्धयश्च।
चतस्रोपि सामान्यात्, करणं सम्यक्त्वचारित्रे ॥३॥

टीका – क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना, प्रायोग्यता, करण ए पाच लब्धि है। तहा आदि की च्यारि तौ साधारण है। भव्य कै वा अभव्य कै भी हो हैं। बहुरि करणलब्धि भव्य ही कै सम्यक्त्व वा चारित्र कौ साध्यभूत होत सतै ही हो है।

कम्ममलपडलसत्ती, पडिसमयमणंतगुणविहीणकमा।
होदूणुदीरदि जदा, तदा खओवसमलद्धी दु ॥४॥

कर्ममलपटलशक्तिः प्रतिसमयमनंतगुणविहीनक्रमा।
भूत्वा उदीर्यते यदा, तदा क्षयोपशमलब्धिस्तु ॥४॥

---

१ षट्खण्डागम धवला पुस्तक-६, पृष्ठ २०५।

टीका – कर्मनि विषै मलरूप जे अप्रशस्त ज्ञानावरणादिक, तिनिका पटल जो समूह ताकी शक्ति जो अनुभाग, सो जिस काल विषै समय समय प्रति अनंत गुणा घटता अनुक्रमरूप होइ उदय होइ तिस काल विषै क्षयोपशम लब्धि हो है । जातै उत्कृष्ट अनुभाग का अनंतवां भागमात्र जे देशघाती स्पर्धक तिनिके उदय होतै भी उत्कृष्ट अनुभाग का अनंत बहुभाग मात्र जे सर्वघाती स्पर्धक, तिनिके उदय का अभाव, सो तौ क्षय अर तेई सर्वघाती स्पर्धक जे उदय अवस्था कौं न प्राप्त भए, तिनकी सत्ता अवस्था, सो उपशम, तिनकी प्राप्ति सो क्षयोपशम लब्धि जाननी ।

आदिमलद्धिभवो जो, भावो जीवस्स सादपहुदीणं ।
सत्थाणं पयडीणं, बंधणजोगो विसुद्धलद्धी सो[1] ॥५॥

आदिमलब्धिभवो यः, भावो जीवस्य सातप्रभृतीनाम् ।
शस्तानां प्रकृतीनां, बंधनयोग्यो विशुद्धिलब्धिः सः ॥५॥

टीका – पहली जो क्षयोपशम लब्धि तातै उपज्या जो जीव कै साता आदि प्रशस्त प्रकृति बंध करने कौं कारण धर्मानुरागरूप शुभ परिणाम होइ, ताकी जो प्राप्ति, सो विशुद्धि लब्धि है । सो अशुभ कर्म का अनुभाग घटै सक्लेशता की हानि अर ताकी प्रतिपक्षी विशुद्धता की वृद्धि होनी युक्त ही है ।

आगै देशना लब्धि का स्वरूप कहै हैं–

छद्दव्व-णवपयत्थोपदेसयरसूरिपहुदिलाहो जो ।
देसिदपदत्थधारणलाहो वा तदियलद्धी दु[2] ॥६॥

षड्द्रव्यनवपदार्थोपदेशकरसूरिप्रभृतिलाभो यः ।
देशितपदार्थधारणलाभो वा तृतीयलब्धिस्तु ॥६॥

टीका – छह द्रव्य, नव पदार्थ का उपदेश करनेवाले आचार्यादिक का लाभ, तिनके उपदेश की प्राप्ति अथवा उपदेशित पदार्थ के धारने की प्राप्ति, सो तीसरी देशना लब्धि है । तु शब्द करि नारकादि विषै जहा उपदेश देने वाला नाही तहा पूर्वभव विषै धरचा हूवा तत्त्वार्थ के सस्कार बल तै सम्यग्दर्शन की प्राप्ति जाननी ।

---

१. षट्खण्डागम धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ २०४ ।
२. षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ २०४ ।

अंतोकोडाकोडी, बिट्ठाणे ठिदिरसाण जं करणं ।
पाउग्गलद्धिणामा भव्वाभव्वेसु सामण्णा[१] ॥७॥

अन्तःकोटाकोटि द्विस्थाने स्थितिरसयोः यत्करणम् ।
प्रायोग्यलब्धिर्नाम, भव्याभव्येषु सामान्यात् ॥७॥

टीका – पूर्वोक्त तीन लब्धि सयुक्त जीव समय समय विशुद्धता करि वर्धमान होता सता आयु बिना सात कर्मनि की अन्त कोडाकोडी मात्र स्थिति अवशेष राखै । तिस काल विषै जो पूर्वै स्थिति थी, ताकौ एक काडकघात करि छेदि तिस काडक के द्रव्य कौ अवशेष रही स्थिति विषै निक्षेपण करै है । बहुरि घातियानि का लता दारुरूप, अघातियानि का निब काजीरूप द्वि स्थानगत अनुभाग इहा अवशेष रहै है । पूर्वै अनुभाग था, तामैं अनन्त का भाग दीए बहुभाग मात्र अनुभाग कौ छेदि अवशेष रह्या अनुभाग विषै प्राप्त करै है । तिस कार्य करने की योग्यता की प्राप्ति, सो प्रायोग्यता लब्धि है । सो भव्य कै वा अभव्य कै भी समान हो है ।

जेट्ठवरट्ठिदिबंधे, जेट्ठवरट्ठिदितियाण सत्ते य ।
ण य पडिवज्जदि पढमुवसमसम्मं मिच्छजीवो हु[२] ॥८॥

ज्येष्ठावरस्थितिबंधे ज्येष्ठावरस्थितित्रिकाणां सत्त्वे च ।
न च प्रतिपद्यते प्रथमोपशमसम्यक्त्वं मिथ्यजीवो हि ॥८॥

टीका - सक्लेशी सज्ञी पचेद्री पर्याप्त के सभवता ऐसा उत्कृष्ट स्थिति बध अर उत्कृष्ट स्थिति अनुभाग प्रदेश का सत्त्व, बहुरि विशुद्ध क्षपक श्रेणीवाला के सभवता ऐसा जघन्य स्थिति बध अर जघन्य स्थिति अनुभाग प्रदेश का सत्त्व, इनि कौ होतें जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौ न ग्रहै है ।

सम्मत्तहिमुहमिच्छो, विसोहिवड्ढीहि वड्ढमाणो हु ।
अंतोकोडाकोडिं, सत्तण्हं बंधणं कुणई[३] ॥९॥

सम्यक्त्वाभिमुखमिथ्यः विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धमानः खलु ।
अंतः कोटाकोटिं, सप्तानां बंधनं करोति ॥९॥

---

१ षट्खण्डागम धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ २०४ ।
२ षट्खण्डागम धवला, पुस्तक ६, पृष्ठ २०३ ।
३ जीवस्थान चूलिका–८, सूत्र ३ ।

टीका – प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौं सन्मुख भया मिथ्यादृष्टी जीव, सो विशुद्धता की वृद्धि करि वर्धमान होत सता प्रायोग्य लब्धि का प्रथम समय तै लगाय पूर्व स्थितिबंध के सख्यातवें भाग मात्र अन्त. कोडा-कोडी सागर प्रमाण आयु बिना सात कर्मनि का स्थितिबध करै है ।

तत्तो उदय सदस्स य, पुधत्तमेत्तं पुणो पुणोदरिय ।
बंधम्मि पयडि बंधुच्छेदपदा होंति चोत्तीसा[1] ॥१०॥

ततः उदये शतस्य च, पृथक्त्वमात्रं पुनः पुनरुदीर्य ।
बंधे प्रकृतिबंधोच्छेदपदानि भवंति चतुश्चत्वारिंशत् ॥१०॥

टीका – तिस अत: कोडाकोडी सागर स्थितिबंध तै पल्य का सख्यातवा भाग मात्र घटता स्थितिबंध अन्तर्मुहूर्त पर्यंत समानता लीए करै । बहुरि तातै पल्य का संख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबंध अतर्मुहूर्त पर्यंत करै । अैसै क्रम तै सख्यात स्थिति बंधापसरणनि करि पृथक्त्व सौ सागर घटै, पहला प्रकृति बधापसरण स्थान होइ । बहुरि तिस ही क्रमतै तिसतै भी पृथक्त्व सौ सागर घटै दूसरा प्रकृति बधापसरण स्थान होइ । अैसै इस ही क्रमतै इतना-इतना स्थिति बध घटै एक-एक स्थान होइ । अैसै प्रकृति बंधापसरण के चौतीस स्थान हो है । इहां पृथक्त्व नाम सात वा आठ का है, तातै इहां पृथक्त्व सौ सागर कहने तै सात सै वा आठ सै सागर जाननें ।

अब चौतीस स्थाननि विषै क्रम तै कैसी प्रकृति का व्युच्छेद हो है, सो कहिए है –

आऊ पडि णिरयदुगे, सुहुमतिये सुहुमदोणि पत्तेयं ।
बारदजुत दोण्णि पदे, अपुण्णजुद बितिचसण्णिसण्णीसु[2] ॥११॥

आयुः प्रति निरयाद्विकं, सूक्ष्मत्रयं सूक्ष्मद्वयं प्रत्येकं ।
बादरयुतं द्वे पदे, अपूर्णयुतं द्वित्रिचतुरसंज्ञिसंज्ञिषु ॥११॥

टीका – पहला नरकायु का व्युच्छित्ति स्थान है । इहा तै लगाय उपशम सम्यक्त्व पर्यंत नरकायु का बंध न होइ अैसै ही आगै जानना । दूसरा तिर्यञ्चायु का

---

१ षट्खण्डागम धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ १३५, जयधवला भाग १२, पृष्ठ २२१ ।

२. षट्खण्डागम ' धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ १३५ से १३६ ।

है । तीसरा मनुष्यायु का है । चौथा देवायु का है । इहा प्रथमोपशम सम्यक्त्व विषै आयुबध का अभाव है । तातै सर्व आयुबध की व्युच्छित्ति कही है । बहुरि पाचवा नरक गति, नरकानुपूर्वी का है । छठा सयोगरूप सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारणनि का है ।

इहा संयोगरूप कहने करि तीनों का मिलाप लीएं तौ इहा ही पर्यंत बंध होइ । अर इन तीनो विषै कोई प्रकृति बदले, यथासम्भव इनि प्रकृतिनि विषै कोई प्रकृति का वध आगै भी होइ अैसा सयोगरूप कहने का अभिप्राय जानना । आगै भी सयोगरूप कहने का अैसै ही अर्थ समझना ।

वहुरि सातवा सयोगरूप सूक्ष्म, अपर्याप्त, प्रत्येक का है । आठवां सयोगरूप बादर, अपर्याप्त, साधारणनि का है । नवमा सयोगरूप बादर, अपर्याप्त, प्रत्येक का है । दशवा सयोग रूप बेद्री जाति, अपर्याप्त का है । ग्यारहवां संयोगरूप तेद्री, अपर्याप्त का है । बारहवा सयोगरूप चौद्री, अपर्याप्त का है । तेरहवा सयोगरूप असज्ञी पचेद्रिय, अपर्याप्त का है । चौदहवा सयोगरूप सज्ञी पचेद्रिय अपर्याप्त का है ।

अट्ठ अपुण्णपदेसु वि, पुण्णेण जुदेसु तेसु तुरियपदे ।
एइंदिय आदावं, थावरणामं च मिलिदव्वं ।।१२।।

अष्टौ अपूर्णपदेष्वपि, पूर्णेन युतेषु तेषु तुर्यपदे ।
एकेंद्रियमातपं, स्थावरनाम च मेलयितव्यम् ।।१२।।

टीका – पद्रहवा सयोगरूप सूक्ष्म, पर्याप्त, साधारणनि का है । सोलहवा सयोगरूप सूक्ष्म, पर्याप्त, प्रत्येकनि का है । सतरहवा सयोगरूप बादर, पर्याप्त, साधारणनि का है । अठारहवा सयोगरूप बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, एकेद्री, आतप, स्थावरनि का है । उगणीसवा सयोगरूप बेद्री, पर्याप्त का है । बीसवा सयोगरूप तेद्री, पर्याप्त का है । इकवीसवा चौद्री, पर्याप्त का है । बावीसवा असज्ञी पचेद्री, पर्याप्त का है ।

तिरिगदुगुज्जोवो विय, णीचे अपसत्थगमण दुभगतिए ।
हुंडासंपत्ते वि य, णओसए वामखीलीए ।।१३।।

तिर्यग्द्विकोद्योतोऽपि च नीचैः, अप्रशस्तगमनं दुर्भगत्रिकं ।
हुंडासंप्राप्तेऽपि च, नपुसकं वामनकीलिते ।।१३।।

टीका – तेईसवा सयोगरूप तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, उद्योत का है। चौईसवा नीच गोत्र का है। पचीसवा सयोगरूप अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भग, दु-स्वर, अनादेयनि का है। छबीसवा हुडसस्थान, सृपाटिका सहनन का है। सत्ताईसवा नपुसक वेद का है। अठाईसवा वामन सस्थान, कीलित सहनन का है।

खुज्जद्धं णाराए, इत्थीवेदे य सादिणाराए।
णग्गोधवज्जणाराए, मणुओरालदुगवज्जे ॥१४॥

कुब्जार्धनाराचं, स्त्रीवेदं च स्वातिनाराचे।
न्यग्रोधवज्रनाराचे, मनुष्यौदारिकद्विकवज्रे ॥१४॥

टीका – गुणतीसवा कुब्ज सस्थान, अर्धनाराच सहनन का है। तीसवा स्त्री वेद का है। इकतीसवां स्वाति सस्थान, नाराच सहनन का है। बत्तीसवा न्यग्रोध संस्थान, वज्रनाराच सहनन का है। तेतीसवा सयोगरूप मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी, औदारिक-ओदारिक अगोपाग, वज्रवृषभनाराच सहनन का है।

अथिरसुभगजस अरदी, सोयअसादे य होंति चोतीसा।
बंधोसरणट्ठाणा, भव्वाभव्वेसु सामण्णा[१] ॥१५॥

अस्थिरसुभगयशः अरतिः, शोकासाते च भवंति चतुश्चत्वारिंशत्।
बंधापसरणस्थानानि, भव्याभव्येषु सामान्यानि ॥१५॥

टीका – चौतीसवा सयोगरूप अस्थिर, अशुभ, अयश, अरति, शोक, असा-तानिका बध व्युच्छित्ति स्थान है। अैसें ए कहे चौतीस स्थान ते भव्य वा अभव्य के समान हो है।

णरतिरियाणं ओघो, भवणतिसोहम्मजुगलए बिदियं।
तिदियं अट्ठारसमं, तेवीसदिमादि दसपदं चरिमं ॥१६॥

नरतिरश्चामोघः, भवनत्रिसौधर्मयुगलके द्वितीयं।
तृतीयं अष्टादशमं, त्रयोविंशत्यादिदशपदं चरमम् ॥१६॥

---

१ षट्खण्डागम : धवला, पुस्तक–६, पृष्ठ १३९।

टीका – मनुष्य तिर्यंचनि कै तौ समान्योक्त चौतीसौ स्थान पाइए है । तिनके बध योग्य एक सौ सतरह प्रकृतिनि विषै चौतीस स्थाननि करि छियालीस प्रकृति की व्युच्छित्ति हो है । तहा आदि के छह स्थाननि विषै नव अर अठारहवा स्थाननि विषै एकेंद्रियादिक तीन अर उगणीसवां आदि बीचि के स्थाननि विषै बेद्री, तेद्रि चौद्री ए तीन अर तेईसवां आदि बारह स्थाननि विषै इकतीस ऐसे छियालीस की व्युच्छित्ति हो है । अवशेष इकहत्तरि बाधिए है ।

बहुरि भवनत्रिक सौधर्म युगल विषै दूसरा, तीसरा, अठारहवां अर तेईसवा आदि दश अर अत का चौतीसवा ए चौदह स्थान ही सभवै है । तहा इकतीस प्रकृति की व्युच्छित्ति हो है । बध योग्य एक सौ तीन विषै बहत्तरि प्रकृतिनि का बध अवशेष रहै है ।

ते चेव चोदसपदा, अट्ठारसमेण हीणया होंति ।
रयणादिपुढविछक्के, सणक्कुमारादिदसकप्पे ॥१७॥

तानि चैव चतुर्दश पदानि, अष्टादशेन हीनानि भवंति ।
रत्नादिपृथ्वीषट्के, सनत्कुमारादिदशकल्पे ॥१७॥

टीका – रत्नप्रभा आदि छह नरक पृथ्वीनि विषै अर सनत्कुमारादि दश स्वर्गनि विषै पूर्वोक्त चौदह स्थान अठारहवा बिना पाइए है । तिन तेरह स्थाननि करि अठाईस प्रकृति व्युच्छित्ति हो है । तहा बध योग्य सौ प्रकृतिनि विषै बहत्तरि का वध अवशेप रहे है ।

ते तेरस बिदिएण य, तेवीसदिमेण चावि परिहीणा ।
आणदकप्पादुवरिमगेवेज्जंतो त्ति ओसरणा ॥१८॥

तानि त्रयोदश द्वितीयेन च, त्रयोविंशतिकेन चापि परिहीनानि ।
आनतकल्पाद्युपरिमग्रैवेयकांतमित्यपसरणाः ॥१८॥

टीका – आनत स्वर्गादि उपरिम ग्रैवेयक पर्यंत विषै तेरह स्थान दूसरा तेईसवा बिना पाइए । तहा तिनि ग्यारह स्थाननि करि चौबीस घटाइ वध योग्य छिनवै प्रकृतिनि विषै बहत्तरि वाधिए है ।

ते चेवेक्कारपदा, तदिऊणा बिदियठाणसंजुत्ता ।
चउवीसदिमेणूणा, सत्तमिपुढविम्हि ओसरणा ॥१९॥

तानि चैवैकादश पदानि, तृतीयोनानि द्वितीय स्थान संयुक्तानि ।
चतुर्विंशतिकेनोनानि, सप्तमीपृथिव्यामपसरणानि ॥१९॥

टीका – सातवी नरक पृथ्वी विषै जे ग्यारह स्थान, तीसरा करि हीन अर दूसरा करि सहित चौईसवा करि हीन पाइए तहा तिनि दश स्थाननि करि तेईसवा उद्योत सहित चौबीस घटाइ, बंध योग्य छिनवै प्रकृतिनि विषै तेहत्तरि वा बहत्तरि वांधिए है, जातै उद्योत कौ बध वा अबध दोनो सभवै है ।

घादिति सादं मिच्छं, कसायपुंहस्सरदि भयस्स दुगं ।
अपमत्तडवीसुच्चं बंधंति विसुद्धणरतिरिया[1] ॥२०॥

घातित्रयं सातं मिथ्यं कषायपुंहास्यरतयः भयस्य द्विकम् ।
अप्रमत्ताष्टविंशोच्चं बध्नन्ति विशुद्धनरतिर्यंचः ॥२०॥

टीका – असै व्युच्छित्ति भए प्रथम सम्यक्त्व कौ सन्मुख मिथ्यादृष्टी मनुष्य वा तिर्यच हैं, ते ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अतराय की उगणीस (१९), सातावेदनीय, मिथ्यात्व, कषाय सोलह, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, अप्रमत्त की अठाईस, अरु उच्च गोत्र असै इकहत्तरि प्रकृति बाधै है ।

देवतसवण्णअगरुचउक्कं समचउरतेजकम्मइयं ।
सग्गमणं पंचिंदी थिरादिछण्णिमिणमडवीसं ॥२१॥

देवत्रसवर्णागुरुचतुष्क समचतुरस्रतेजः कार्मणकम् ।
सद्गमनं पचेंद्रियस्थिरादिषण्णिर्माणमष्टाविंशम् ॥२१॥

टीका – देव चतुष्क (४), त्रस चतुष्क (४), वर्ण चतुष्क (४), अगुरुलघु चतुष्क (४), समचतुरस्र, कार्माण, तैजस, शुभविहायोगति, पचेद्री, स्थिर आदि छह, निर्माण ए अठाईस प्रकृति अप्रमत्त सबधी जाननी ।

---

१. जीवस्थान चूलिका–३, सूत्र २ । जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सख्या २११ ।

तं सुरचउक्कहीणं, णरचउवज्जजुदं पयडिपरिमाणं ।
सुरछप्पुडवीमिच्छा, सिद्धोसरणा हु बंधंति[१] ॥२२॥

तत् सुरचतुष्कहीनं, नरचतुर्वज्रयुतं प्रकृतिपरिमाणं ।
सुरषट्पृथिवीमिथ्याः, सिद्धापसरणा हि बध्नंति ॥२२॥

टीका – तिन इकहत्तरि विषै देव चतुष्क घटाइ मनुष्य चतुष्क, वज्रवृषभनाराच मिलाए बहत्तरि प्रकृतिनि कौ सिद्ध भए है बंधापसरण जिनके असे मिथ्यादृष्टी देव छह पृथ्वीनि के नारकी बाधै है । इहा देव चतुष्क विषै देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, वैक्रियिक, वैक्रियिक अगोपाग जानना । अर मनुष्य चतुष्क विषै मनुष्य गति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, औदारिक, औदारिक अगोपाग जानने ।

तं णरदुगुच्चहीणं, तिरियदु णीचजुदं पयडिपरिमाणं ।
उज्जोवेण जुदं वा सत्तमखिदिगा हु बंधंति[२] ॥२३॥

तत् नरद्विकोच्चहीनं, तिर्यग्द्विकं नीचयुतं प्रकृतिपरिमाणं ।
उद्योतेन युतं वा, सप्तमक्षितिगा हि बध्नति ॥२३॥

टीका – तिनि बहत्तरनि विषै मनुष्य द्विक उच्च गोत्र बिना अर तिर्यंच द्विक, नीच गोत्र सहित बहत्तरि अथवा उद्योत सहित तेहत्तरि प्रकृतिनि कौ सातवी नरक पृथ्वीवाले बाधै है ।

असे प्रकृति बध-अबध का विभाग कह्या ।

अंतोकोडाकोडीठिदं, असत्थाण सत्थगाणं च ।
बिचउट्ठाणरसं च य, बंधाणं बंधणं कुणइ[३] ॥२४॥

अन्तःकोटाकोटिस्थितिं, अशस्तानां शस्तकानां च ।
द्विचतुःस्थानरसं च च, बंधाना बंधनं करोति ॥२४॥

टीका – प्रथम सम्यक्त्व कौ सन्मुख च्यारयो गतिवाला मिथ्यादृष्टी जीव बध्यमान प्रकृतिनि की चौतीस बधापसरण स्थाननि विषै एक एक स्थान प्रति पृथ-

---

१ जीवस्थान चूलिका-४ सूत्र २ । जयधवला भाग-१२ पृष्ठ स. २११ ।
२ जीवस्थान चूलिका-५ सूत्र २ । जयधवला भाग-१२ पृष्ठ स. २१२ ।
३ षट्खण्डागम धवला पुस्तक-६, पृष्ठ २०६ । जयधवला भाग-१२, पृष्ठ स. २१३ ।

त्व सौ सागर घटता क्रम लीए अन्तःकोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति बाधै है। अर अनुभाग अप्रशस्त प्रकृतिनि का तौ दोय स्थान कौ प्राप्त समय समय अनंत गुणा घटता बाधै है। प्रशस्त प्रकृतिनि का च्यारि स्थान कौ प्राप्त समय-समय अनत गुणा बधता बांधै है।

मिच्छणथीणति सुरचउ, समवज्जपसत्थगमणसुभगतियं।
णीचुक्कस्सपदेसमणुक्कस्सं वा पबंधदि हु[1] ॥२५॥

मिथ्यानस्त्यानत्रिकं सुरचतुःसमवज्रप्रशस्तगमनसुभगत्रिकं।
नीचोत्कृष्ट प्रदेशमनुत्कृष्टं वा प्रबध्नाति हि ॥२५॥

टीका – यहु जीव मिथ्यात्व, अनतानुबधी चतुष्क (४), स्त्यानगृद्धि त्रिक (३), देव चतुष्क (४), समचतुरस्र, वज्रवृषभनाराच, प्रशस्तविहायोगति, सुभगादि तीन (३), नीच गोत्र इन उगणीस प्रकृतिनि का उत्कृष्ट वा अनुत्कृष्ट प्रदेश बंध करै है।

एदेहिं विहीणाणं, तिण्णि महादंडएसु उत्ताणं।
एकट्ठिपमाणाणमणुक्कस्सपदेसबंधणं कुणइ[2] ॥२६॥

एतैर्विहीनानां, त्रिषुमहादंडकेषूक्तानाम्।
एकषष्टिप्रमाणानामनुत्कृष्टप्रदेशबंधनं करोति ॥२६॥

टीका – इन करि जे हीन जे महादण्डकनि विषै कही ऐसी प्रकृतिनि विषै इकसठि प्रकृतिनि का अनुत्कृष्ट प्रदेश बध करै है।

पढमे सव्वे बिदिये, पण तिदिये चउ कमा अपुणरुत्ता।
इदि पयडीणमसीदी, तिदण्डएसु वि अपुणरुत्ता ॥२७॥

प्रथमे सर्वे द्वितीये, पंच तृतीये चतुः क्रमादपुनरुक्ताः।
इति प्रकृतीनामशीतिः, त्रिदंडकेष्वपि अपुनरुक्ताः ॥२७॥

टीका – मनुष्य तिर्यंच कै बंध योग्य जो पहला दडक, तीहि विषै सर्व इकहत्तर ही अपुनरुक्त है। बहुरि भवनत्रिकादिक कै योग्य जो दूसरा दडक तीहि विषै

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ स. २१३। धवला पुस्तक–६ पृष्ठ स २१०।
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २१३। धवला पुस्तक–६ पृष्ठ स. २१०।

मनुष्य चतुष्क, वज्रवृषभनाराच ए पांच अपुनरुक्त हैं। अन्य प्रकृति पहला दंडक विषै कही ही थी। अर सातवी पृथ्वीवालों के योग्य तीसरा दंडक विषै तिर्यंच द्विक, नीच गोत्र, उद्योत ए च्यारि अपुनरुक्त है। अन्य प्रकृति पहिला, दूसरा दंडक विषै कही ही थी। ऐसे तीनो दंडकनि विषै अपुनरुक्त असी (८०) प्रकृति जाननी। ऐसें बंध कहि।

अब तिस ही जीव कै उदय कहै हैं–

उदये चउदसघादी, णिद्दापयलाणमेक्कदरगं तु।
मोहे दस सिय णामे, वचिठाणं सेसगे सजोगेक्कं[1] ॥२८॥

उदये चतुर्दश घातिनः, निद्राप्रचलानामेकतरकं तु।
मोहे दश स्यात् नामनि, वचःस्थानं शेषकं सयोग्येकम् ॥२८॥

टीका – प्रथम सम्यक्त्व सन्मुख जीव कै नरकगति विषै ज्ञानावरण की पांच (५), दर्शनावरण की निद्रादि पांच विना च्यारि (४), अन्तराय की पांच (५), मोहनीय की दश (१०) वा नव वा आठ, आयु की एक नरकायु, नाम की भाषापर्याप्ति काल विषै उदय आवने योग्य गुणतीस, तिनिके नाम - गति, जाति, शरीर ३, अंगोपांग, निर्माण, सस्थान, वर्ण चतुष्क (४), अगुरुलघु, स्थिर युगल (२), शुभ युगल (२), त्रस, वादर, पर्याप्त, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, प्रत्येक, उपघात, परघात, उश्वास, अशुभविहायोगति, दुःस्वर ए जाननी। बहुरि वेदनीय की एक कोई, गोत्र की एक नीच गोत्र ऐसें इनि प्रकृतिनि का उदय है। इहां मोहनीय की वा नाम की उदय प्रकृतिनि का अर प्रकृति बदलने तैं भंग हो है; तिनिका गोम्मटसार विषै कर्मकांड का जो स्थान समुत्कीर्तन अधिकार, तीहि विषै विशेष वर्णन है; तहां तैं जानना। ऐसे मोहनीय की मिथ्यात्व अर अनंतानुबंधी आदि च्यारि प्रकार क्रोधादि विषै कोई एक अर नपुंसक वेद अर हास्य शोक युगल विषै एक, रति अरति युगल विषै एक ऐसे आठ प्रकृति सहित कोई जीव कै चौवन प्रकृति का उदय हो है। तहां मोहनीय के च्यारि कषाय अर दोय युगल के बदलने तैं अर आठ भंग अर दोय वेदनीय के भंगनि तैं गुणै सोलह भंग हो हैं। नाम की अप्रशस्त ही नि का इहां उदय है; तातैं नामकर्म की अपेक्षा भंग नाही हैं। बहुरि भय वा जुगुप्सा विषै कोई एक मिलाएं मोह की नव सहित पचावन का उदय होइ। तहां पूर्वोक्त सोलह भंगनि कौं भय जुगु-

---

[1] षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ सं. २१०।

प्सा करि गुणें बत्तीस भंग हो है। बहुरि भय जुगुप्सा दोऊनि करि युक्त मोह की दश सहित छप्पन प्रकृति का उदय होइ तहां सोलह ही भंग जानने। जातै इहां दोऊनि का उदय युगपत् है। इहा क्रोध सहित अन्य अन्य प्रकृति लगाएं प्रथम भंग क्रोध की जायगा मान कहै दूसरा भंग। ऐसै ही प्रकृति बदलने तै भंगनि का होना जानना। बहुरि तिर्यंच गति विषै पूर्वोक्त प्रकृतिनि विषै एक सहनन मिलाएं पचावन, छप्पन, सत्तावन का उदय जानना।

तहां पचावन का उदय विषै इहां तीनों वेद पाइए तातै तिनके बदलने तै मोह के भंग चौईस हो है। अर वेदनीय के दोय है ही। अर नाम के **'संठाणे संहडणे'** इत्यादि सूत्र करि छह संस्थान, छह संहनन, विहायोगति युगल, सुभगयुगल, स्वर-युगल, आदेय युगल, यशस्कीर्ति युगल इनिके बदलने तै ग्यारह सै बावन भंग हो हैं। जातै इहां इन सबनि का उदय संभव है। ऐसै ए भंग कहे। इनिकौ परस्पर गुणे पचावन हजार दोय सै छिनवै भंग भए।

बहुरि छप्पन का उदय विषै भय जुगुप्सा तै गुणें तिन तै दूणे ११०५९२ भंग भए।

बहुरि सत्तावन का उदय विषै पचावनके वत् ही ५५२९६ भग ही जानने। बहुरि तिन विषै उद्योत प्रकृति मिलाए तहां छप्पन, सत्तावन, अट्ठावन का उदय हो है। तहा भंग तीनो जायगा पूर्वोक्त प्रकार ही जानने।

बहुरि मनुष्य गति विषै तिर्यंचवत् उदय जानना। विशेष इतना–तहां उद्योत सहित उदय नाही है। बहुरि तहा दोऊ गोत्रनि का उदय संभवै है तातै तिर्यञ्च गति विषै कहे भगनि तै तीनो जायगा गोत्र के बदलने तै दूणे भंग जानने।

बहुरि देवगति विषै नरकवत् उदय जानना। विशेष इतना–इहा नाम की प्रशस्त प्रकृतिनि ही का अर उच्च गोत्र का अर मोह विषै नपुसक वेद बिना स्त्री पुरुष विषै कोई एक वेद का उदय पाइए है। तहा दोय वेद के बदलने तै नरक गति विषै कहे भगनि तै तीनो जायगा दूणे भग जानने। ऐसै ए भंग निद्रा का उदय रहित जीवनि की अपेक्षा कहे। बहुरि इन च्यारचो गति विषै जे उदय कहे तिन विषै जे उदय निद्रा प्रचला विषै कोई एक प्रकृति मिलाए एक-एक प्रकृतिनि करि अधिक उदय हो है। तहा इन दोऊ प्रकृतिनि के बदलने तै सर्वत्र पूर्वोक्त भंगनि तै दूणे भंग जानने।

उदइल्लाणं उदये, पत्तेक्कठिदिस्स वेदगो होदि ।
विचउट्ठाणमसत्थे, सत्थे उदयल्लरसभुत्ती [१] ॥२९॥

उदयवतामुदये, प्राप्ते एकस्थितिकस्य वेदको भवति ।
द्विचतुः स्थानमशस्ते, शस्ते उदीयमानरसभुक्तिः ॥२९॥

टीका – उदयवान प्रकृतिनि का उदय अपेक्षा एक स्थिति जो उदय कौं प्राप्त भया एक निषेक ताही का भोक्ता सो जीव हो है । बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनि का द्विस्थान रूप अर प्रशस्त प्रकृतिनि का चतु स्थान रूप अनुभाग का भोगवना ताकौ हो है ।

अजहण्णमणुक्कस्सप्पदेसमणुभवदि सोदयाणं तु ।
उदयिल्लाणं पयडिचउक्कण्णमुदीरगो होदि [२] ॥३०॥

अजघन्यमनुत्कृष्ट प्रदेशमनुभवति सोदयानां तु ।
उदयवतां प्रकृतिचतुष्काणामुदीरको भवति ॥३०॥

टीका – उदय प्रकृतिनि का अजघन्य वा अनुत्कृष्ट प्रदेश कौं भोगवै है । जघन्य वा उत्कृष्ट परमाणूनि का इहा उदय नाही । बहुरि प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभाग जे उदय रूप कहे तिनही का यहु उदीरणा करने वाला हो है । जातै जाकै जिनिका उदय ताकौ तिनही की उदीरणा भी सभवै है । ऐसै उदय उदीरणा कहि ।

अब सत्त्व कहै है –

दुति आउ तित्थहारचउक्कणा सम्मगेण हीणा वा ।
मिस्सेणूणा वा वि य, सव्वे पयडी हवे सत्तं [३] ॥३१॥

द्वित्रिआयुः तीर्थाहारचतुष्काणां सम्यक्त्वेन हीना वा ।
मिश्रेणोना वापि च, सर्वेषां प्रकृतीनां भवेत् सत्त्वम् ॥३१॥

टीका – सम्यक्त्व सन्मुख अनादि मिथ्यादृष्टी कै अबद्धायु कै तौ भुज्यमान विना तीन आयु, तीर्थंकर, आहारक चतुष्क (४), सम्यग्मोहनी, मिश्र मोहनी इनि

१ षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१३, जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २२० ।
२ गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा २७८ ।
१. षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०६ । जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २०७ ।

दश बिना एक सौ अठतीस का सत्त्व है। बहुरि तिस ही बद्धायु कै एक बध्यमान आयु सहित एक सौ गुणतालीस का सत्त्व हो है। बहुरि सम्यक्त्व सन्मुख सादि मिथ्यादृष्टी कै अबद्धायु कै तौ भुज्यमान बिना तीन आयु, तीर्थंकर, आहारक चतुष्क (४) इनि आठ बिना एक सौ चालीस का सत्त्व है। सम्यक्त्व मोहनी की उद्वेलना भए एक सौ गुणतालीस का सत्त्व हो है। मिश्र मोहनी की उद्वेलना भए एक सौ अठतीस का सत्त्व हो है। बहुरि तिस ही बद्धायु कै बध्यमान आयु सहित एक सौ इकतालीस, एक सौ चालीस, एक सौ गुणतालीस का सत्त्व हो है। जातै आहारक चतुष्टय की उद्वेलना भए बिना तीर्थंकर सत्तावाला जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्व के सन्मुख न हो है।

अजहण्णमणुक्कस्सं, ठिदीतियं होदि सत्तपयडीणं।
एवं पयडिचउक्कं, बंधादिसु होदि पत्तेयं[1] ॥३२॥

अजघन्यमनुत्कृष्टं, स्थितित्रिकं भवति सत्त्वप्रकृतीनाम्।
एवं प्रकृतिचतुष्कं, बंधादिषु भवति प्रत्येकम् ॥३२॥

टीका – तिन सत्तारूप प्रकृतिनि का स्थिति, अनुभाग, प्रदेश है, ते अजघन्य अनुत्कृष्ट हैं। जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति अनुभाग प्रदेश का सत्त्व इहां न संभवै है। ऐसे प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशरूप चतुष्क है, सो बध, उदय, उदीरणा, सत्त्व विषै प्रत्येक कह्या। सो प्रायोग्यता लब्धि का अत पर्यंत जानना।

तत्तो अभव्वजोग्गं, परिणामं बोलिऊण भव्वो हु।
करणं करेदि कमसो, अधापवत्तं अपुव्वमणियट्टिं[2] ॥३३॥

ततः अभव्ययोग्यं, परिणामं मुक्त्वा भव्यो हि।
करणं करोति क्रमशः, अधः प्रवृत्तमपूर्वमनिवृत्तिम् ॥३३॥

टीका – तहा पीछे अभव्य कै भी योग्य ऐसा च्यारि लब्धिरूप परिणाम कौं समाप्त करि भव्य है, सोई अध प्रवृत्त अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण कौं करै है। सो इन तीनों करणनि का व्याख्यान गोम्मटसार विषै जीवकाड का गुणस्थाना-

---

१. षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २०८–२०९। जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २०७।
२. षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१७, जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २३३।
धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१४।

धिकार विषै व कर्मकाड का त्रिकोण चूलिका अधिकार विषै विशेष व्याख्यान है, तहा तै जानना । इहा भी सामान्यसा गाथानि का अर्थ कहिए है ।

अंतोमुहुत्तकाला, तिण्णि वि करणा हवंति पत्तेयं ।
उवरीदो गुणियकमा, कमेण संखेज्जरूवेण ॥३४॥

अंतर्मुहूर्तकालानि, त्रीण्यपि करणानि भवंति प्रत्येकम् ।
उपरितः गुणितक्रमाणि, क्रमेण संख्यातरूपेण ॥३४॥

टीका – तीनो ही करण प्रत्येक अतर्मुहूर्त कालमात्र स्थिति युक्त है । तथापि उपर तै सख्यात गुणा क्रम लीए है । अनिवृत्तिकरण का काल स्तोक है । तातै अपूर्वकरण का सख्यात गुणा है । तातै अध प्रवृत्तकरण का संख्यात गुणा है ।

जम्हा हेट्ठिमभावा, उवरिमभावेहिं सरिसगा होंति ।
तम्हा पढमं करणं, अधापवत्तो त्ति णिद्दिट्ठं[1] ॥३५॥

यस्मादधस्तनभावा, उपरितनभावैः सदृशा भवंति ।
तस्मात् प्रथमं करण, अधःप्रवृत्तमिति निर्दिष्टम् ॥३५॥

टीका – जातै इहा नीचले समयवर्ती कोई जीव के परिणाम उपरले समयवर्ती कोई जीव के परिणामनि के सदृश हो है, तातै याका नाम अध प्रवृत्त करण है ।

भावार्थ – करणनि का नाम नाना जीव अपेक्षा है, सो अध करण माडै कोई जीव कौ स्तोक काल भया कोई जीव कौ बहुत काल भया तिनके परिणाम इस करण विषै सख्या वा विशुद्धताकर समान भी हो है असा जानना ।

समए समए भिण्णा, भावा तम्हा अपुव्वकरणो हु ।
अणियट्ठी वि तहं वि य, पडिसमयं एक्कपरिणामो[2] ॥३६॥

समये समये भिन्ना, भावा तस्मादपूर्वकरणो हि ।
अनिवृत्तिरपि तथैव च, प्रतिसमयमेकपरिणामः ॥३६॥

---

१ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २१७ । जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २३३ । गोम्मटसार जीवकाड गाथा–४८ ।

२ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २५४ । षट्खण्डागम . धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २२०, गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा–५१, ५६, ५७ । धवला पुस्तक ६, पृष्ठ स० २२१ ।

टीका – समय समय विषै जीवनि के भाव भिन्न ही होंइ, सो अपूर्वकरण है।

भावार्थ – कोई जीव कौं अपूर्वकरण माडे स्तोक काल भया, कोई कौं बहुत काल भया; तहां तिनके परिणाम सर्वथा सदृश न होंइ। नीचले समयवालों के परिणाम तै उपरले समयवालो का परिमाण अधिक सख्या वा विशुद्धता युक्त होइ अर इहां जिनकौ करण माडै समान काल भया तिनके परिणाम परस्पर सदृश भी होंइ अथवा असदृश भी होंइ अैसा जानना।

बहुरि जहां समय समय एक ही परिणाम होइ सो अनिवृत्तिकरण है।

भावार्थ – जिनिकौ अनिवृत्तिकरण माडै समान काल भया; तिनिके परिणाम समान ही होइ। बहुरि नीचले समयवर्तीनि तै उपरि समयवर्तीनि के अधिक होंइ अैसा जानना।

गुणसेढी गुणसंकम, ठिदिरसखंडं च णत्थि पढमम्हि।
पडिसमयमणंतगुणं, विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु[1] ॥३७॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं, स्थितिरसखंडं च नास्ति प्रथमे।
प्रतिसमयमनंतगुणं, विशुद्धिवृद्धिभिर्वर्धते हि ॥३७॥

टीका – पहिला अधःकरण विषै गुणश्रेणी, गुणसंक्रमण, स्थितिकाडकघात, अनुभागकांडकघात न होइ। बहुरि इहा समय समय प्रति अनतगुणी विशुद्धता बधै है।

सत्थाणमसत्थाणं, चउविट्ठाणं रसं च बंधदि हु।
पडिसमयमणंतेण य, गुणभजियकमं तु रसबंधे ॥३८॥

शस्तानामशस्तानां चतुर्द्विस्थानं रसं च बध्नाति हि।
प्रतिसमयमनंतेन च, गुणभजितक्रमं तु रसबंधे ॥३८॥

टीका – अर सातादि प्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय प्रति अनत गुणा चतुस्थान रूप अनुभाग बाधै है। अर असातादि अप्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय प्रति अनंतवे भाग मात्र अनुभाग बाधै है।

---

१ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६ पृष्ठ स. २२२।

पल्लस्स संखभागं, मुहुत्तअंतेण ओसरदि बंधे ।
संखेज्जसहस्साणि य, अधापवत्तम्मि ओसरणा ।।३९।।

पल्यस्य संख्यभागं, मुहूर्तांतरेण अपसरति बंधे ।
संख्येयसहस्राणि च, अधःप्रवृत्ते अपसरणानि ।।३९।।

टीका – अधःप्रवृत्त का प्रथम समय तै लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत पूर्व स्थिति बंधतै पल्य का सख्यातवां भाग मात्र घटता स्थितिबध हो है । बहुरि तहा पीछै अंत-र्मुहूर्त पर्यंत तातै भी पल्य का असख्यातवा भाग मात्र घटता स्थितिबंध है । असै एक अतर्मुहूर्त करि पल्य का असख्यातवा भाग मात्र घटता स्थितिबधापसरण होइ । असै अपसरण अध प्रवृत्त विषै सख्यात हजार हो है ।

आदिमकरणद्धाए, पढमट्ठिदिबंधदो दु चरिमम्हि ।
संखेज्जगुणविहीणो, ठिदिबंधो होइ णियमेण ।।४०।।

आदिमकरणाद्धायां, प्रथमास्थितिबंधतस्तु चरमे ।
संख्यातगुणविहीनः, स्थितिबंधो भवति नियमेन ।।४०।।

टीका – असै होतै प्रथम करण के काल विषै प्रथम समय सबधी अन्त.कोडा कोडी सागर प्रमाण स्थितिबध तै ताके अन्त समय विषै संख्यात गुणा घाटि हो है ।

तच्चरिमे ठिदिबंधो, आदिमसम्मेण देससयलजमं ।
पडिवज्जमाणगस्स वि, संखेज्जगुणेण हीणकमो[1] ।।४१।।

तच्चरमे स्थितिबंध, आदिमसम्येन देशसकलयमम् ।
प्रतिपद्यमानस्यापि, संख्येयगुणेन हीनक्रम ।।४१।।

टीका – तीहि अन्त समय विषै जो स्थितिबंध कह्या, तातै देशसयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौ प्राप्त होने वाले जीव कै सख्यात गुणा घाटि स्थिति बध हो है । तातै सकल सयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौ प्राप्त होनेवाले कै सख्यात गुणा घाटि हो है ।

आदिमकरणद्धाए, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो[2] ।।४२।।

---

१ षट्खण्डागम धवला, पुस्तक ६, पृष्ठ सख्या २२३ ।
२ धवला पुस्तक-६ पृष्ठ स २१४ । जयधवला भाग-१२ पृष्ठ २३५ । गोम्मटसार जीवकाड गाथा ४९ ।

आदिमकरणाद्धायां, प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे, मुहूर्तान्तर्हि प्रतिभागः ॥४२॥

टीका – पहिला करण विषै त्रिकालवर्ती जीवनि के जे कषायनि के विशुद्ध स्थान कहे है, तिनि विषै अध प्रवृत्तकरण विषै सभवते असख्यात लोक मात्र हैं। तिन विषै समय समय प्रति सभवते असख्यात लोक मात्र परिणाम है । ते प्रथम समय तै द्वितीयादि समयनि विषै क्रम तै समान प्रमाण रूप एक एक विशेष जो चय ता करि बधते जानने । तहा आदि धन जो प्रथम समय सम्बन्धी परिणाम ताकौ अतर्मुहूर्त मात्र भागहार का भाग दीए विशेष का प्रमाण आवै है । **'पदकदिसखेणे भाजिदे पचय'** इस सूत्र करि गच्छ का वर्ग सख्यात गुणा, ताका भाग सर्व धन कौ दीएं जो चय का प्रमाण आवै है, सो प्रथम समय सबधी परिणामनि कौ किंचिदून सख्यात गुणा अधःप्रवृत्तकरण काल मात्र जो अतर्मुहूर्त, ताका भाग दीए भी इतना ही प्रमाण आवै है ।

ताए अधापवत्तद्धाए, संखेज्जभागमेत्तं तु ।
अणुकट्ठीए अद्धा, णिव्वग्गणकंडयं तं तु[1] ॥४३॥

तस्या अधःप्रवृत्ताद्धायाः, संख्येयभागमात्रं तु ।
अनुकृष्टचा अद्धा, निर्वर्गणकांडकं तत्तु ॥४३॥

टीका – तीहि अध प्रवृत्त काल प्रमाण जो ऊर्ध्वगच्छ ताके सख्यातवे भागमात्र अनुकृष्टि का गच्छ हो है । एक एक समय सबधी परिणामनि विषै एते एते हो है, ते वर्गणा काडक समान जानने । वर्गणा जो समयनि की समानता ताकरि रहित उपरि समयवर्ती परिणाम खड तिनिका काडक जो पर्व, ताका नाम निर्वर्गणा काडक है । ते अध करण के काल विषै सख्यात हजार हो है ।

पडिसमयगपरिणामा, णिव्वग्गणसमयमेत्तखंडकमा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो[2] ॥४४॥

प्रतिसमयगपरिणामा, निर्वर्गणसमयमात्रखडक्रमाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे मुहूर्तान्तर्हि प्रतिभागः ॥४४॥

---

१ षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ स. २१५ । जयधवला भाग १२ पृष्ठ सं २३६ ।
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ स. २३६ । धवला पुस्तक ६ पृष्ठ स २१५

टीका – समय समय सबधी परिणामनि निर्वर्गण काडक समान खड कीजिए ते भी प्रथम खण्ड तैं द्वितीयादि खड क्रम तैं विशेष जो समान प्रमाण लीए चय, ताकरि वधता है । तहा प्रथम खड कौ अतर्मुहूर्त का भाग दीए विशेष का प्रमाण आवै है ।

पडिखंडगपरिणामा, पत्तेयमसंखलोगमेत्ता हु ।
लोयाणमसंखेज्जा, छट्ठाणाणी विसेसे वि[1] ॥४५॥

प्रतिखंडगपरिणामाः, प्रत्येकमसंख्यलोकमात्रा हि ।
लोकानामसंख्येया', षट्स्थानानि विशेषेऽपि ॥४५॥

टीका – तहा एक एक खड विषै जघन्य, मध्यम, उत्कृष्टता लीए विशुद्ध परिणामनि के भेद असख्यात लोक मात्र है । तहा जैसे गोम्मटसार का ज्ञानाधिकार विषै पर्याय समास विषै षट् स्थान पतित वृद्धि का अनुक्रम कह्या है तैसे इहा एक एक खड विषै वा एक एक अनुकृष्टि विशेष विषै भी असंख्यात लोक मात्र बारह षट् स्थान पतित वृद्धि सभवै है ।

पढमे चरिमे समये, पढमं चरिमं च खंडमसरित्थं ।
सेसा सरिसा सव्वे, अट्ठुव्वंकादिअंतगया[2] ॥४६॥

प्रथमे चरमे समये, प्रथमं चरमं च खंडमसदृशम् ।
शेषाः सदृशाः सर्वे, अष्टोर्वंकाद्यंतगताः ॥४६॥

टीका – प्रथम समय का प्रथम खड अत समय का अत खड ए तौ कोऊ खडनि के समान नाही, अवशेष सर्व खड अन्य खडनि करि यथायोग्य समानता धरै है । तहा खडनि विषै जो परिणाम पुज कह्या, तीहि विषै पहला परिणाम तौ अष्टाक कहिए पूर्व परिणाम तै अनत गुणा वृद्धिरूप है । अर अत का परिणाम उर्वक कहिए पूर्व परिणाम तै अनत भाग वृद्धि रूप है । जातै षट् स्थाननि की आदि तौ अष्टाक अर अत उर्वक कह्या है ।

चरिमे सव्वे खंडा, दुचरिमसमओ त्ति अवरखंडाए ।
असरिसखंडाणोली, अधापवत्तम्हि करणम्हि ॥४७॥

---

1. जयधवल भाग-१२ पृष्ठ नं. २३४ । षट्खण्डागम धवला पुस्तक-६ पृष्ठ सं. २१४ ।
2. षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ नं. २१६ ।

चरमे सर्वे खंडा, द्विचरमसमय इति अपरखंडैः ।
असदृशखंडानामावलिरधःप्रवृत्ते करणे ॥४७॥

टीका – अध प्रवृत्तकरण काल विषै अंत समय संबंधी तौ सर्व खंड अर दूसरा समय तै लगाय द्विचरम समय पर्यंत का प्रथम प्रथम खंड है, ते तिनिके उपरि के समय संबंधी जे सर्व खंड तिनि तै समान नाही तातै असदृश है ।

पढमे करणे अवरा, णिव्वग्गणसमयमेत्तगा तत्तो ।
अहिगदिणा वरमवरं, तो वरपंती अणंतगुणियकमा[1] ॥४८॥

प्रथमे करणे अवरा, निर्वर्गणसमयमात्रकाः ततः ।
अहिगतिना वरमवमतो वरपंक्तिरनंतगुणितक्रमा ॥४८॥

टीका – प्रथम करण विषै विशुद्धता के अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा समय समय संबंधी प्रथम खंड, तिनके जघन्य परिणाम है, ते उपरि उपरि अनंत गुणे है । बहुरि तहा पीछै निर्वर्गण कांडक का अंत समय संबंधी प्रथम खंड का जघन्य परिणाम तै पहिले समय के अंत खण्ड का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणा है । तातै द्वितीय कांडक के प्रथम समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम अनंत गुणा है । तातै प्रथम कांडक का द्वितीय समय के अंत खंड का परिणाम अनंत गुणा है । तातै द्वितीय कांडक के द्वितीय समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम अनंत गुणा है । ऐसे जैसे सर्प इधर तै उधर, उधर तै इधर गमन करै है; तैसे जघन्य उत्कृष्ट का उत्कृष्ट तै जघन्य का अनंत गुणा क्रम है । यावत् अंत कांडक का अंत समय के प्रथम खंड का जघन्य परिणाम होइ बहुरि तातै अंत कांडक का प्रथम समय के अंत खंड का उत्कृष्ट परिणाम अनंत गुणा है । तातै समय समय प्रति अंत खंड के उत्कृष्ट परिणामनि की पंक्ति अनंत गुणा क्रम लीए है यावत् अंत कांडक का अंत समय के अंत खण्ड का उत्कृष्ट परिणाम होइ ।

इहा इतना जानना – जघन्य तै उत्कृष्ट है सो तौ असंख्यात लोक मात्र वार अनंत गुणा है । अर उत्कृष्ट तै जघन्य है सो एक वार अनंत गुणा है । बहुरि सर्व तै जघन्य विशुद्धता के भी अविभाग प्रतिच्छेद जीव राशि तै अनंत गुणे है तातै इहा षट् स्थान संभवै है ।

---

१. जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २४५ से २५० । षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ स. २१८ ।

पढमे करणे पढमा, उड्ढगसेढीय चरिमसमयस्स ।
तिरियगखंडाणोली, असरित्थाणंतगुणियकमा ।।४९।।

प्रथमे करणे प्रथमा, ऊर्ध्वगश्रेण्याः चरमसमयस्य ।
तिर्यग्गतखडानामावलिरसदृशी अनंतगुणितक्रमा ।।४९।।

टीका – प्रथम करण विषे समय समय के परिणाननि की उपरि उपरि पंक्ति कीएं अर अत समय के परिणामनि की बरोबरि तिर्यक् रूप पक्ति कीएं अकुशाकार रचना हो है । सो इनके उपरि के परिणामनि तैं समानता नाही, तातैं असदृश हैं । बहुरि ए परिणाम अनत गुणा क्रम लीए विशुद्धता रूप जानने । ऐसैं अध करण का स्वरूप कह्या ।

पढमं व बिदियकरणं, पडिसमयमसंखलोगपरिणामा ।
अहियकमा हु विसेसे, मुहुत्तअंतो हु पडिभागो[1] ।।५०।।

प्रथमं व द्वितीयकरणं, प्रतिसमयमसंख्यलोकपरिणामाः ।
अधिकक्रमा हि विशेषे, मुहूर्तातर्हि प्रतिभागः ।।५०।।

टीका – प्रथम अध करणवत् दूसरा अपूर्वकरण है । तहा विशेष – जो असख्यात लोक मात्र अध करण के परिणामनि तैं अपूर्वकरण के परिणाम असख्यात लोक गुणे है । ते समय समय प्रति विशेष जो समान प्रमाणरूप चय, ताकरि अधिक है । सो प्रथम समय सबधी परिणाम कौं अतर्मुहूर्त का भाग दीए चय का प्रमाण आवै है ।

जम्हा उवरिमभावा, हेट्ठिमभावेहिं णत्थि सरिसत्तं ।
तम्हा बिदियं करणं, अपुव्वकरणे त्ति णिद्दिट्ठं[2] ।।५१।।

यस्मादुपरिभावानामधस्तनभावे नास्ति सदृशत्वम् ।
तस्मात् द्वितीय करणमपूर्वकरणमिति निर्दिष्टम् ।।५१।।

टीका – जातैं उपरि समय सम्बन्धी परिणाम है ते नीचले समय सबन्धी परिणामनि के समान इहा न होइ । प्रथम समय की उत्कृष्ट विशुद्धता तैं भी द्वितीय समय

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ म २५३,

२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ स २५३ ।

संबंधी जघन्य विशुद्धता भी अनंत गुणी है । असैं परिणामनि का अपूर्वपना है । तातैं दूसरा करण अपूर्वकरण कह्या है ।

बिदियकरणादिसमयादंतिमसमश्रो त्ति अवरवरसुद्धी ।
अहिगदिणा खलु सव्वे, होंति-अणंतेण गुणियकमा[1] ॥५२॥

द्वितीयकरणादिसमयादंतिमसमय इति अवरवरशुद्धी ।
अहिगतिना खलु सर्वे, भवंत्यनंतेन गुणितक्रमाः ॥५२॥

टीका – दूसरे करण का प्रथम समय तै लगाय अंत समय पर्यंत अपने जघन्य तैं अपना उत्कृष्ट अर पूर्व समय के उत्कृष्ट तैं उत्तर समय का जघन्य परिणाम क्रम तैं अनंत गुणी विशुद्धता लीए सर्प की चालवत् जानने । इहा अनुकृष्टि नाही है ।

गुणसेढीगुणसंकमठिदिरसखंडा अपुव्वकरणादो ।
गुणसंकमेण सम्मा, मिस्साणं पूरणो त्ति हवे[2] ॥५३॥

गुणश्रेणीगुणसंक्रमस्थितिरसखंडा अपूर्वकरणात् ।
गुणसंक्रमेण समा मिश्राणां पूरण इति भवेत् ॥५३॥

टीका – अपूर्वकरण के प्रथम समय तै लगाय यावत् सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्र मोहनीय का पूरणकाल जो जिस काल विषै गुण सक्रमण करि मिथ्यात्व कौ सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्रमोहनी रूप परिणमावै है, तिस काल का अंत समय पर्यंत गुणश्रेणी, गुण सक्रमण, स्थिति खडन, अनुभाग खडन ए च्यारि आवश्यक हो है ।

ठिदिबंधोसरणं पुण, अधापवत्तादुपूरणो त्ति हवे ।
ठिदिबंधट्ठिदिखंडुक्कीरणकाला समा होंति[3] ॥५४॥

स्थितिबंधापसरणं पुनः अधःप्रवृत्तादापूरण इति भवेत् ।
स्थितिबंधस्थितिखंडोत्कीरणकालाः समा भवंति ॥५४॥

टीका – बहुरि स्थितिबधापसरण है सो अधःप्रवृत्तकरण का प्रथम समय तैं लगाय तिस गुण सक्रमण पूरण होने का काल पर्यंत हो है । यद्यपि प्रायोग्य लब्धि

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ स. २५२ ।

२. जयधवला भाग–१२, पृष्ठ स. २६० आदि ।

३ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ स २६६ ।

तै ही स्थितिबंधापसरण हो है । तथापि प्रायोग्य लब्धि कै सम्यक्त्व होने का अनवस्थितपना है । नियम नाही तातै ग्रहण न कीया । बहुरि स्थितिबंधापसरण काल अर स्थितिकांडकोत्करण काल ए दोऊ समान अंतर्मुहूर्त मात्र है ।

गुणसेढीदीहत्तमपुव्वदुगादो दु साहियं होदि ।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेवो[1] ।।५५।।

गुणश्रेणिदीर्घत्वमपूर्वद्विकात् तु साधिकं भवति ।
गलितावशेषे उदयावलिबाह्यतस्तु निक्षेपः ।।५५।।

टीका – गुणश्रेणी का दीर्घत्व कहिए निषेक निषेकनि का प्रमाण मात्र आयाम, सो अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण के काल तै साधिक है । सो अधिक का प्रमाण अनिवृत्तिकरण काल के सख्यातवे भाग मात्र जानना । सो यहु गुणश्रेणी आयाम गलितावशेष है । समय व्यतीत होतै यहु गुणश्रेणी आयाम भी घटता होता जाय है । बहुरि उदयावली तै बाह्य है, जातै उदयावली तै उपरि गुणश्रेणी आयाम के निषेक है । तिस गुणश्रेणी आयाम विषै गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य का निक्षेपण करिए है ।

अब इहा प्रसग पाइ निक्षेपण के अतिस्थापना का स्वरूपादिक कहिए है ।

तहा अपकर्षण कीया हुवा वा उत्कर्षण कीया हुवा द्रव्य कौ जिनि निषेकनि विषै मिलाइए ते निषेक निक्षेपण रूप जानने । जिनि निषेकनि विषै न मिलाइए, ते अतिस्थापन रूप जानने ।

सो स्थिति घटाइ उपरि के निषेकनि का द्रव्य नीचले निषेकनि विषै जहा दीजिए तहा अपकर्षण कहिए ।

बहुरि स्थिति बधाय नीचले निषेकनि का द्रव्य कौ उपरि के निषेकनि विषै जहा दीजिए तहा उत्कर्षण कहिए । सो इनकी अपेक्षा निक्षेपण अतिस्थापन निषेकनि का प्रमाण कहिए है ।

णिक्खेवमदित्थावणमवरं, समऊणआवलितिभागं ।
तेणूणावलिमेत्तं, विदियावलियादिमणिसेगे[2] ।।५६।।

---

१. जयधवला भाग-१२, पृष्ठ सं २६४, २६५ ।
२ जयधवला भाग-८, पृष्ठ सं २४४ ।

निक्षेपमतिस्थापनमवरं समयोनमावलित्रिभागम् ।
तेन न्यूनावलिमात्रं द्वितीयावलिकादिमनिषेके ।।५६।।

टीका – जहा स्थिति काडक घात न पाइए, सो अव्याघात कहिए । तिस विषै प्रथम वर्णन करिए है–द्वितीय आवली का प्रथम निषेक का अपकर्षण करि नीचै निक्षेपण करिए । तहां प्रथम आवली के निषेकनि विषै समय घाटि आवली का त्रिभाग एक समय अधिक प्रमाण निषेक तौ निक्षेपरूप है । इनि विषै सो द्रव्य दीजिए है । बहुरि अवशेष निषेक अतिस्थापनरूप है । तिनि विषै सो द्रव्य न दीजिए है । असै यहु जघन्य निक्षेप जघन्य अतिस्थापन जानना ।

अंक संदृष्टि करि–जैसे प्रथमादि सोलह निषेक तौ प्रथमावली के अर ताके उपरि सोलह निषेक द्वितीयावली के है । तहां सतरह्वा निषेक का द्रव्य अपकर्षण करि नीचे दीया । तहां सोलह मै एक घटाएं पद्रह, ताका त्रिभाग पाच, तामै एक मिलाए छह, सो प्रथमादि छह निषेकनि विषै द्रव्य दीया, सो यहु जघन्य निक्षेप है । बहुरि ताके ऊपरि दश निषेकनि विषै द्रव्य नाही मिलाया, सो यहु जघन्य अति-स्थापन है ।

एत्तो सऊमणावलितिभागमेत्तो तु तं खु णिक्खेवो ।
उवरिं आवलिवज्जिय, सगट्ठिदी होदि णिक्खेवो[1] ।।५७।।

अतः समयोनावलित्रिभागमात्रस्तु तत्खलु निक्षेपः ।
उपरि आवलिवर्जिता स्वकस्थितिर्भवति निक्षेपः ।।५७।।

टीका – यातै उपरि द्वितीयावली के द्वितीय निषेक का अपकर्षण कीया, तहा एक समय अधिक आवली मात्र याके निषेक है । तिनिविषै निक्षेप तौ निषेक घाटि आवली का त्रिभाग एक समय अधिक ही है । अतिस्थापन पूर्व तै एक समय अधिक है, असै क्रमतै द्वितीयावली के तृतीयादि निषेकनि का अपकर्षण होतै निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण ही अर अतिस्थापन एक-एक समय अधिक क्रमतै जानना । तहां समय घाटि आवली का त्रिभाग एक समय अधिक प्रमाण जे द्वितीय आवली के निषेक, तिनिके उपरिवर्ती जे निषेक, ताका अपकर्षण कीए तहा निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण अर अतिस्थापन आवली मात्र हो है; सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है ।

---

१ जयधवला भाग–८, पृष्ठ २४४ आदि ।

अक सदृष्टि करि – जैसे अठारहवा, उगणीसवां, वीसवा आदि निषेकनि का द्रव्य अपकर्पण करि प्रथमादि छह निषेकनि विषै ही दीजिए है अर ग्यारह, बारह, तेरह आदि निषेकनि विषै न दीजिए है। तहा तेईसवा निषेक का द्रव्य अपकर्षण कीएं आदि के छह निषेक तौ निक्षेप रूप हैं। अर सोलह निषेक अतिस्थापन भए सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है।

बहुरि इहातै ऊपरि के निषेकनि का द्रव्य अपकर्षण कीएं सर्वत्र अतिस्थापन तौ आवलीमात्र ही जानना। अर निक्षेप एक-एक समय क्रम तै बधता जानना। तहा स्थिति के अत निषेक का अपकर्षण होतै ताके नीचे के आवलीमात्र निषेक तौ अतिस्थापन रूप जानने। तिस बिना अवशेष सर्व निषेक निक्षेप रूप जानने।

अक संदृष्टि करि जैसे—चौईसवा पचीसवां आदि निषेकानि का अपकर्षण होतै प्रथमादि छह, सात आदि एक-एक बधता निषेक तौ निक्षेप रूप हो है। अर अतिस्थापन रूप सर्वत्र सोलह ही निषेक है। सो यहु क्रम अंत निषेक का अपकर्षण पर्यंत जानना।

उक्कस्सट्ठिदिबंधो, समयजुदावलिदुगेण परिहीणो।
उक्कट्ठिदिम्मि चरिमे, ठिदिम्मि उक्कस्सणिक्खेवो[1] ॥५८॥

उत्कृष्टस्थितिबंध, समययुतावलिद्विकेन परिहीनः।
उत्कृष्टस्थितौ चरमे, स्थितौ उत्कृष्टनिक्षेपः ॥५८॥

टीका – स्थिति का अन्त निषेक का द्रव्य कौ अपकर्षण करि नीचले निषेकनि विषै निक्षेपण करतै तिस अन्त के निषेक के नीचै आवली मात्र निषेक तौ अतिस्थापन रूप है, अर समय अधिक दोय आवली करि हीन उत्कृष्ट स्थितिमात्र निक्षेप हो है, सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप जानना। इहा बध भए पीछे आवली काल पर्यंत तो उदीरणा होइ नाही, तातै एक आवली तौ आबाधा विषै गई अर एक आवली अतिस्थापन रूप रही अर अत निषेक का द्रव्य ग्रह्या ही है तातै उत्कृष्ट स्थिति विषै दोय आवली एक समय घटाया है।

अक सदृष्टि करि – जैसे उत्कृष्ट स्थिति हजार समय, तहा सोलह समय तौ आबाधा विषै गये अर नव सै चौरासी निषेक है। तहा अत के निषेक का द्रव्य अपकर्षण

---

१ जयधवला भाग-८, पृष्ठ २५२।

करि प्रथमादि नव सै सतसठि निषेकनि विषै दीया, सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप है। अर ताके उपरि सोलह निषेकनि विषै न दिया, सो यहु अतिस्थापनावली है।

उक्कस्सट्ठिदि बंधिय, मुहुत्तअंतेण सुज्झमाणेण।
इगिकंडएण घादे, तम्हि य चरिमस्स फालिस्स ॥५६॥

चरिमणिसेउक्कट्ठे, जेट्ठमदित्थावणं इदं होदि।
समयजुदंतोकोडाकोडि विणुक्कस्सकम्मठिदी[1] ॥६०॥

उत्कृष्टस्थितिं बंधयित्वा, मुहूर्तान्तः शुद्ध्यता।
एककांडकेन घाते, तस्मिन् च चरमस्य फालेः ॥५९॥

चरमनिषेकोत्कर्षे, ज्येष्ठमतिस्थापनमिदं भवति।
समययुतान्तः कोटिकोटि विना उत्कृष्टकर्मस्थितिः ॥६०॥

टीका – अब जहां स्थितिकांडक घात होइ सो व्याघात कहिए। तहा कहिए है – कोई जीव उत्कृष्ट स्थिति बाधि, पीछे क्षयोपशम लब्धि करि विशुद्ध भया तब वधी थी जो स्थिति, तीहि विषै आबाधारूप बधावली कौ व्यतीत भए पीछे एक अतर्मुहूर्त काल करि स्थितिकाडक का घात कीया। तहा जो उत्कृष्ट स्थिति बाधी थी, तिस विषै अन्तः कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थिति अवशेष राखि अन्य सर्व स्थिति का घात तिस काडक करि हो है। तहा काडक विषै जेती स्थिति घटाई, ताके सर्व निषेकनि का परमाणूनि कौ समय-समय प्रति असख्यात गुणा क्रम लीए अवशेष राखी स्थिति विषै अतर्मुहूर्त पर्यत निक्षेपण करिए है। सो समय-समय विषै जो द्रव्य निक्षेपण कीया, सोई फालि है। तहा अत की फालि विषै स्थिति के अन्त निषेक का जो द्रव्य, ताकौ ग्रहि, अवशेष राखी स्थिति विषै दीया, तहा एक समय अधिक अत कोडाकोडी सागर करि हीन उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है, जातै इस विषै सो द्रव्य न दीया। इहा उत्कृष्ट स्थिति विषै अत: कोडा कोडी सागर प्रमाण मात्र स्थिति अवशेष रही, तिस विषै द्रव्य दीया, सो यहु निक्षेपरूप भया तातै यहु घटाया। अर एक अन्त निषेक का द्रव्य ग्रह्या ही है, तातै एक समय घटाया है। अक सदृष्टि करि जैसै - हजार समय की स्थिति विषै कांडक घात करि

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २४८, २४९।

सौ समय की स्थिति राखी, तहा हजारवा समय सम्बन्धी निषेक का द्रव्य कौं आदि के सौ समय सम्बन्धी निषेकनि विषै दीया, तहा आठ सै निन्याणवै समय मात्र उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है ।

सत्तग्गट्ठिदिबंधो, आदिठिदुक्कट्टणे जहण्णेण ।
आवलिअसंखभागं, तेत्तियमेत्तेव णिक्खिवदि[1] ॥६१॥

सत्ताग्रस्थितिबन्ध आदिस्थित्युत्कर्षणे जघन्येन ।
आवल्यसंख्यभागं तावन्मात्रमेव निक्षिपति ॥६१॥

टीका – अव्याघात विषै वा व्याघात विषै कर्म स्थिति का उत्कर्षण होतै विधान कहिए है – पूर्वै जे सत्तारूप निषेक थे, तिनि विषै जो अत का निषेक था, ताका द्रव्य कौ उत्कर्षण करने का समय विषै बध्या जो समयप्रबद्ध, तीहि विषै जो पूर्व सत्ता का अत निषेक जिस समय उदय आवने योग्य है, तिस समय विषै उदय आवने योग्य जो बध्या समयप्रबद्ध का निषेक तिस निषेक के उपरिवर्ती आवली का असख्यातवा भाग मात्र निषेकनि कौ अतिस्थापन रूप राखि तिनके उपरिवर्ती जे तितने ही आवली के असख्यातवा भाग मात्र निषेक तिनि विषै तिस सत्ता का अत निषेक का द्रव्य कौ निक्षेपण करिए है । यहु उत्कर्षण विषै जघन्य अतिस्थापन अर जघन्य निक्षेप जानना ।

अकसदृष्टि करि जैसै – पूर्व सत्ता का अत निषेक जिस समय उदय होइगा, तिस समय विषै अब वध्या समयप्रबद्ध का पचासवा निषेक उदय होगा । बहुरि तिस सत्ता का अत निषेक का द्रव्य कौ ग्रहि आवली का प्रमाण सोलह ताका असख्यातवां भाग च्यारि सो पचासवां निषेक के उपरि इक्यावनवा आदि च्यारि निषेकनि कौ अतिस्थापनरूप राखि, पचावनवा आदि च्यारि निषेकनि विषै निक्षेपण करिए है ।

तत्तोदित्थावणगं, वड्ढदि जावावली तदुक्कस्सं ।
उवरीदो णिक्खेओ, वरं तु बंधिय ठिदि जेट्ठं ॥६२॥

बोलिय बंधावलियं, उक्कट्टिय उदयदो दु णिक्खिविय ।
उवरिमसमये विदियावलिपढमुक्कट्टणे जादे[2] ॥६३॥

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २५७ से २५६ ।
२. जयधवला भाग ८, पृष्ठ २५६ से २६१ ।

तक्कालवज्जमाणे, वारट्ठिदीए अदित्थियाबाहं ।
समयजुदावलियाबाहूणो उक्कस्सठिदिबंधो[1] ॥६४॥

ततोतिस्थापनकं, वर्धते यावादावलिस्तदुत्कृष्टम् ।
उपरितो निक्षेपो, वरं तु बंधयित्वा स्थितिर्ज्येष्ठम् ॥६२॥

अपलाप्य बंधावलिकामुत्कर्ष्य उदयतस्तु निक्षिप्य ।
उपरितनसमये द्वितीयावलिप्रथमोत्कर्षणे जाते ॥६३॥

तत्कालवर्ज्यमाने, वरस्थित्या अतिस्थिताबाधां ।
समययुतावलिकाबाधोनः उत्कृष्टस्थितिबन्धः ॥६४॥

टीका – तिस पूर्व सत्त्व के अंत निषेक तै लगाय तै नीचे के निषेक, तिनिका उत्कर्षण होतै निक्षेप तौ पूर्वोक्त प्रमाण ही रहै अर अतिस्थापन क्रम तै एक एक समय बधता होइ, सो यावत् आवली मात्र उत्कृष्ट अतिस्थापन होइ तावत् यहु क्रम जानना । अंक संदृष्टि करि सत्ता का अंत निषेक के नीचला उपात निषेक जिस समय विषै उदय होगा तिस समय हाल बंध्या समयप्रबद्ध का गुणचासवा निषेक उदय होगा, सो तिस उपात निषेक का द्रव्य उत्कर्षण करि ताकौ पचासवा आदि पाच निषेकनि का अतिस्थापन रूप राखि तिनके उपरि पचावनवा आदि च्यारि निषेकनि विषै निक्षेपण करिए है । बहुरि ऐसे ही उपशात निषेक तै नीचले निषेकनि का द्रव्य उत्कर्षण करि बंध्या समयप्रबद्ध का क्रम तै गुणचासवा अडतालीसवा आदि तै लगाय छह सात आदि एक एक बधते निषेक अतिस्थापन रूप राखि पचावनवा आदि च्यारि निषेकनि विषै निक्षेपण करिए है । तहा हाल बंध्या समयप्रबद्ध का अडतीसवा निषेक जिस समय विषै उदय होगा, तिस समय विषै उदय आवने योग्य जो पूर्व सत्ता का निषेक ताका द्रव्य कौ उत्कर्षण कर तै हाल बंध्या समयप्रबद्ध का गुणतालीसवा आदि सोलह निषेकनि कौ अतिस्थापन रूप राखै है सो यहु उत्कृष्ट अतिस्थापन है । इहा पर्यंत पचावनवा आदि च्यारि निषेकनि विषै निक्षेप जानना । बहुरि आवली मात्र अतिस्थापन भए पीछै ताके नीचे नीचे के निषेकनि का उत्कर्षण करतै अतिस्थापन तौ आवली मात्र ही रहै है अर निक्षेप क्रम तै एक एक निषेक करि बधता हो है ।

---

१. जयधवला भाग–८, पृष्ठ २५६ से २६१ ।

अक सदृष्टि करि जैसै - हाल बध्या समयप्रबद्ध का सैंतीसवा निषेक जिस समय विषै उदय होगा तिस समय विषै उदय आवने योग्य सत्ता के निषेक कौ उत्कर्पण होतै अडतीसवा आदि सोलह निषेक अतिस्थापन रूप हो है । चौवनवां आदि पाच निषेक निक्षेपरूप हो है । वहुरि ताके नीचे के निषेक का उत्कर्षण होतै सैंतीसवा आदि सोलह निपेक अतिस्थापनरूप हो है । तरेपनवा आदि छह निषेक निक्षेप रूप हो है। अँसै अतिस्थापन तितना ही अर निक्षेप क्रम तैं बधता जानना ।

अर उत्कृष्ट निक्षेप कहा होइ सो कहिए है—कोई जीव पहिलै उत्कृष्ट स्थिति वाधि पीछै ताकी आबाधा विषै एक आवली गमाइ, ताके अनतरि तिस समयप्रबद्ध का जो अन्त का निषेक था ताका अपकर्षण कीया तहा ताके द्रव्य कौ अत के एक समय अधिक आवली मात्र निषेकनि विषै तौ न दीया अवशेष वर्तमान समय विषै उदय योग्य निषेक तैं लगाय सर्व निषेकनि विषै दीया । अँसै पहले अपकर्षण क्रिया करी । वहुरि ताके उपरिवर्ती अनतर समय विषै पूर्वे अपकर्षण क्रिया करकै जो द्रव्य उदयावली का प्रथम निषेक विषै दीया था, ताका उत्कर्षण कीया तब ताके द्रव्य कौ तिस उत्कर्षण करने का समय विषै बध्या जो उत्कृष्ट स्थिति लीए समय-प्रवद्ध ताके आबाधा कौ उल्लघि पाइए है जे प्रथमादि निषेक तिनि विषै अत के समयप्रवद्ध ताके समय अधिक आवली मात्र निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषै निक्षेपण करिए है । इहा एक समय अधिक आवली करि हीन जो आबाधा काल, तीहि प्रमाण तौ प्रतिस्थापन जानना । काहे तैं सो कहिए है—

जिस द्वितीयावली का प्रथम निषेक का उत्कर्षण कीया, सो तौ वर्तमान समय तै लगाय एक समय अधिक आवली काल भए उदय आवने योग्य है । अर जिनि निपेकनि विषै निक्षेपण कीया ते वर्तमान समय तैं लगाय बधी स्थिति का आवाधा काल भए उदय आवने योग्य है सो इनि दोऊनि के बीचि एक समय अधिक आवली करि हीन आवाधा काल मात्र अतराल भया । द्वितीयावली के प्रथम निषेक का द्रव्य कौ वीचि मैं इतनेक उल्लघि उपरि के निषेकनि विषै दीया सोई इहां अति स्थापन का प्रमाण जानना । वहुरि इहा एक समय आवली करि युक्त जो आवाधा काल तीहि करि हीन जो उत्कृष्ट कर्मस्थिति तीहि प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप जानना । काहे तै सो कहिए है—

एक समय अधिक आवली मात्र तौ अत के निषेकनि विपै न दीया अर आवाधा काल विपै निपेक रचना है ही नाही, तातै उत्कृष्ट स्थिति विपै इतना

घटाया । यहा इतना जानना – अपकर्षण द्रव्य का नीचले निषेकनि विषै निक्षेपण कीया ताका जो उत्कर्षण होइ तौ जेती बाकी शक्ति-स्थिति होइ तहा पर्यंत ही उत्कर्षण होइ उपरि न होइ ।

शक्ति स्थिति कहा ? सो कहिए है – विवक्षित समयप्रबद्ध का जो अत का निषेक, ताकै तौ सर्व ही स्थिति व्यक्ति स्थिति है । बहुरि ताकै नीचे नीचे के निषेकनि के क्रम तै एक समय घाटि, दोय समय घाटि आदि स्थिति व्यक्ति स्थिति है । बहुरि प्रथमादि निषेकनि कै सर्व ही स्थिति शक्ति स्थिति है । सो उत्कर्षण कीया द्रव्य कौ जेती शक्ति स्थिति होइ तहा पर्यंत ही दीजिए है ।

बहुरि पूर्वै निक्षेप अतिस्थापन कह्या ताका अंक सदृष्टि करि स्वरूप दिखाइए है – जैसै पूर्वे समयप्रबद्ध हजार समय की स्थिति लीए बध्या तामै सोलह समय व्यतीत भए अत निषेक का द्रव्य कौ अपकर्षण करि आबाधा के उपरि तिस स्थिति के जे निषेक थे, तिन विषै सतरह निषेक अन्त के छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषै द्रव्य दीया । बहुरि ताके अनतर समय विषै जो तिस अत निषेक का द्रव्य जो उत्कर्षण करने का समय तै लगाय सतरहवा समय विषै उदय आवने योग्य ऐसा द्वितीयावली का प्रथम निषेक, तिस विषै दीया था, ताका उत्कर्षण कीया, तब तीहि समय विषै हजार समयप्रबद्ध प्रमाण स्थितिबंध भया, ताकी पचास समय प्रमाण तौ आबाधा है अर नव सै पचास निषेक हैं, तिनि निषेकनि विषै अत के सतरह निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषै तिस उत्कर्षण कीया द्रव्य कौ निक्षेपण करिए है । ऐसै इहा वर्तमान समय तै लगाय जाका उत्कर्षण कीया, सो तौ सतरहवा समय विषै उदय आवने योग्य था अर जिस बन्ध्या समयप्रबद्ध का प्रथम निषेक विषै दीया, सो इकावनवा समय विषै उदय आवने योग्य भया, सो इनिके बीचि अन्तराल तेतीस समय भया, सोई अतिस्थापन जानना । बहुरि हजार समय की स्थिति विषै पचास समय आबाधा के सतरह निषेक अत के घटाए अवशेप नव सै तेतीस निषेकनि विषै द्रव्य दीया, सो यहु उत्कृष्ट निक्षेप जानना ।

अहवावलिगदवरठिदियढमणिसेगे वरस्स बंधस्स ।
बिदियणिसेगप्पहुदिसु, णिक्खित्ते जेट्ठणिक्खेओ[1] ॥६५॥

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ सख्या २५६ ।

अथचावलिगतवरस्थितिप्रथमनिषेके वरस्य बंधस्य ।
द्वितीयनिषेकप्रभृतिषु, निक्षिप्ते ज्येष्ठनिक्षेपः ।।६५।।

टीका – अथवा केई आचार्यनि के मत करि निक्षेपण विषै असै निरूपण है । उत्कृष्ट स्थिति बंध बांध्या था, ताकी बंधावली कौं गमाइ पीछे ताका प्रथम निषेक का उत्कर्षण करि ताके द्रव्य कौं तिस उत्कर्षण करने के समय विषै बंध्या जो उत्कृष्ट स्थिति लीए समयप्रबद्ध, ताका द्वितीय निषेक का आदि दै करि अंत विषै अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि सर्व निषेकनि विषै निक्षेपण कीया । तहां एक समय अर एक आवली अर बन्धी स्थिति का आबाधा काल इन करि हीन उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप हो है । इहां बंधी जो उत्कृष्ट स्थिति, ता विषै आबाधा काल विषै तौ निषेक रचना नाही अर प्रथम निषेक विषै द्रव्य दीया नाहीं अर अंत विषै अतिस्थापनावली विषै द्रव्य न दीया तातै पूर्वोक्त प्रमाण उत्कृष्ट निक्षेप जानना ।

इहा पूर्वोक्त प्रकार अंक संदृष्टि करि कथन जानना ।

उक्कस्सट्ठिदिबंधे, आबाहागा ससमयमावलियं ।
उदरियणिसेगेसुक्कट्ठे सु अवरस्सावलियं[1] ।।६६।।

उत्कृष्टस्थितिबंधे, आबाधाग्रा ससमयामावलिकाम् ।
उदीर्यमाणनिषेकेषुत्कर्षेषु अवरमावलिकम् ।।६६।।

टीका – उत्कृष्ट स्थिति लीए जो उत्कर्षण करने के समय विषै बध्या समय प्रबद्ध, ताकी आबाधा काल का जो अग्र कहिए अत समय, तीहि सेती लगाय एक समय अधिक आवली मात्र समय पहलै उदय आवने योग्य असा जो पूर्व सत्ता का निषेक, ताका उत्कर्षण कर तै आवली मात्र जघन्य अतिस्थापन हो है, जातै तिस द्रव्य कौं आबाधा विषै जो एक आवली मात्र काल रह्या, ताकौं अतिक्रम्य कहिए उल्लघि करि तिस बध्या समयप्रबद्ध के प्रथमादि निषेकनि विषै अत विषै अतिस्थापनावली छोडि निक्षेपण करिए है ।

अक सदृष्टि करि जैसे हजार समय की स्थिति लीएं समयप्रबद्ध बध्या, ताका पचास समय आबाधा काल, ताके अत समय तै लगाय सतरह समय पहलै उदय आवने

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ सं २५३ ।

योग्य अैसा वर्तमान समय तै चौतीसवा समय विषै उदय आवने योग्य पूर्व सत्ता का निषेक, ताका उत्कर्षण करि तत्काल बध्या समयप्रबद्ध का आबाधा काल व्यतीत भए पीछै प्रथमादि समय विषै उदय आवने योग्य नव सै पचास निषेक, तिनि विषै अन्त के सतरह निषेक छोडि प्रथमादि नव सै तेतीस निषेकनि विषै निक्षेपण करिए है। इहां उत्कर्षण कीया निषेकनि के अर दीया प्रथम निषेकनि के बीचि अतराल सोलह समय का भया सोई जघन्य अतिस्थापना जानना।

ओदरिय तदो बिदीयावलिपढमुक्कट्टणे वरं हेट्ठा।
अइत्थावणमाबाहा, समयजुदावलियपरिहीणा[1] ॥६७॥

उदीर्य ततो द्वितीयावलिप्रथमोत्कर्षणे वरमधस्तना।
अतिस्थापना आबाधा, समययुतावलिकपरिहीना ॥६७॥

टीका – तहा तै उतरि तिस तै पहलै उदय आवने योग्य अैसा अन्य कोई सत्तारूप समयप्रबद्ध सम्बन्धी द्वितीयावली का प्रथम निषेक, जो वर्तमान समय तै आवली काल भए पीछै उदय आवने योग्य है, ताका उत्कर्षण होतै नीचै एक समय अधिक आवली करि हीन आबाधाकाल प्रमाण उत्कृष्ट अतिस्थापन हो है। समय अधिक आवली करि हीन जो आबाधा, ताकौ उल्लघि उपरि के जे निषेक तिनि विषै अति के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि अन्य निषेकनि विषै तिस द्रव्य कौ दीजिए है।

इहा पूर्वोक्त प्रकार अक सदृष्टि आदि करि कथन जानि लेना।

अैसै प्रसग पाइ इहा उत्कर्षण अपेक्षा निक्षेप अतिस्थापन का विधान कह्या सो जहा उत्कर्षण करि वा अपकर्षण करि उपरि के वा नीचे के निषेकनि विषै द्रव्य देना होइ तहा इस कथन के अनुसारि विधान जानना। जिस निषेक का द्रव्य ग्रह्या होइ तिस निषेक के द्रव्य कौ इहा निक्षेपरूप निषेक कहे, तिनि विषै तौ दीजिए है अर अतिस्थापन रूप निषेक कहे, तिनि विषै न दीजिए है। वहुरि बहुत निषेकनि का द्रव्य एकै काल ग्रहण करिए तो तहा भी जुदे जुदे निषेकनि के द्रव्य देने का वा न देने का विधान इहा कह्या कथन के अनुसारि जानना।

---

१. जयधवला भाग–१२ पृष्ठ स. २५६।

इहा जो व्याख्यान कीया, तिस विषै मंद बुद्धिनि के समझावने के अर्थि अंक संदृष्टि आदि कथन कीया है अर लब्धिसार की संस्कृत टीका विषै न था तिस विषै कही चूक होइ सो ज्ञानी जन संवारि शुद्ध करियो। या प्रकार प्रसंग पाइ कथन करि।

अब गुणश्रेणी का विधान कहिए है–

उदयाणमावलिम्हि य, उभयाणं बाहिरम्मि खिवणट्ठं।
लोयाणमसंखेज्जो, कमसो उक्कट्ठणो हारो[1] ॥६८॥

उदीयमानानामावलौ, चोभयानां बाह्ये क्षेपणार्थम्।
लोकानामसंख्येयः, क्रमश उत्कर्षणो हारः ॥६८॥

टीका – जिनि प्रकृतिनि का उदय पाइए है, तिन ही के द्रव्य का उदयावली विषै निक्षेपण हो है। ताके अर्थि असंख्यात लोक का भागहार जानना। बहुरि जिनि प्रकृतिनि का उदय पाइए वा जिनि का उदय न पाइए तिनि दोऊनि के द्रव्य का उदयावली तै बाह्य गुणश्रेणी विषै वा उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण हो है। ताके अर्थि अपकर्षण भागहार जानना। क्रमशः इस वचन करि पल्य का असंख्यातवां भाग का भी भाग प्रकट कीजिए है। सो इस कथन कौ आगै व्यक्त करि कहै है।

ओक्कड्डिदइगिभागे, पल्लासंखेण भाजिदे तत्थ।
बहुभागमिदं दव्वं, उव्वरिल्लठिदीसु णिक्खिवदि ॥६९॥

उत्कर्षितैकभागे, पल्यासंख्येन भाजिते तत्र।
बहुभागमिदं द्रव्यमुपरितनस्थितिषु निक्षिपति ॥६९॥

टीका – अपकर्षण भागहार का भाग दीए तहां एक भाग कौ पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण करै है, इहां ऐसा जानना। कर्म के सत्तारूप स्थिति के निषेक, तिनि विषै वर्तमान समय तै लगाइ आवली काल विषै उदय आवने योग्य निषेक, तिनि विषै जो द्रव्य दीया, ताकौ उदयावली विषै दीया कहिए। बहुरि ताके उपरि गुणश्रेणी आयाम प्रमाण जे निषेक, तिनि विषै जो द्रव्य मिलाया, सो गुणश्रेणी विषै दीया कहिए। बहुरि ताके

---

1 जयधवला भाग-१२ पृष्ठ म २६५। षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २२४।

उपरि अंत के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि सर्व निषेकनि विषै जो द्रव्य दीया, सो उपरितन स्थिति विषै दीया द्रव्य कहिए ।

अब इहां मिथ्यात्व के उदाहरण करि विधान कहिए है – सर्व कर्म का सत्त्व रूप द्रव्य है, सो किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समय प्रमाण है, तामें आयु का द्रव्य घटावने कौं किंचित ऊन करि अवशेष कौं सात मूल प्रकृतिनि का विभाग के अर्थि सात का भाग दीए मोहनीय का द्रव्य होइ । बहुरि ताकौं देशघाती सर्वघाती का भाग के अर्थि अनंत का भाग दीएं तहां एक भाग मात्र सर्वघातिनि का द्रव्य हो है । बहुरि ताके सोलह कषाय एक मिथ्यात्व के विभाग करने कौं सतरह का भाग दीए मिथ्यात्व का द्रव्य हो है, सो याकौं पूर्वै पीठबंध विषै उक्त प्रमाण लीए जो अपकर्षण नामा भागहार ताका भाग दीए तहां एक भाग बिना अवशेष बहुभाग थे, ते तौ पूर्वै सत्ता विषै जैसैं अपने निषेक रचनारूप तिष्ठै थे तैसें ही रहे । बहुरि जो एक भाग रह्या, ताकौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीए तहां बहुभाग उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण करैं है ।

सेसगभागे भजिदे, असंखलोगेण तत्थ बहुभागं ।
गुणसेढीए सिंचदि, सेसेगं च उदयम्हि ॥७०॥

शेषकभागे भजितेऽसंख्यलोकेन तत्र बहुभागम् ।
गुणश्रेण्यां सिंचति, शेषैकं च उदये ॥७०॥

टीका – अवशेष एक भाग रह्या, ताकौं असंख्यात लोक का भाग देइ, तहां बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै देना । अर अवशेष एक भाग उदयावली विषै देना ।

उदयावलिस्स दव्वं, आवलिभजिदे दु होदि मज्झधणं ।
रूऊणद्धाणद्धेणूणेण[1] णिसेयहारेण ॥७१॥

मज्झिमधणमवहरिदे, पचयं पचयं णिसेयहारेण ।
गुणिदे आदिणिसेयं, विसेसहीणे कमं तत्तो[2] ॥७२॥

१ घ प्रति मे 'भाग' शब्द मिलता है ।
२ षट्खण्डागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ स. २२४ ।

उदयावलेर्द्रव्यमावलिभजिते तु भवति मध्यधनम् ।
रूपोनाद्ध्वानार्धेनोनेन निषेकहारेण ॥७१॥

मध्यमधनमवहरिते, प्रचयं प्रचयं निषेकहारेण ।
गुणिते आदिनिषेकं, विशेषहीनं क्रमं ततः ॥७२॥

टीका – तहां उदयावली विषै दीया जो द्रव्य, ताकौ आवली के समय प्रमाण का भाग दीए मध्य धन आवै । बहुरि तिस मध्य धन कौ एक घाटि जो आवली प्रमाण गच्छ, ताका आधा कौ निषेकहार जो दो गुणहानि, तामें घटाइ अवशेष का भाग दीए चय का प्रमाण आवै है । बहुरि तिस चय कौ दो गुणहानि करि गुणें आवली के प्रथम निषेक विषै दीया द्रव्य का प्रमाण हो है, तातै द्वितीयादि निषेकनि विषै दीया द्रव्य क्रम तै एक एक चय करि घटता प्रमाण लीएं जानना । तहां एक घाटि आवली मात्र चय घटै अत निषेकनि विषै दीया द्रव्य का प्रमाण हो है । ऐसें उदयावली के निषेकनि विषै दीया द्रव्य का विभाग है ।

उक्कट्ठिदम्हि देदि हु, असंखसमयप्पबद्धमादिम्हि ।
संखातीतगुणक्कममसंखहीणं विसेसहीणकमं ॥७३॥

अपकर्षिते ददाति हि, असंख्यसमयप्रबद्धमादौ ।
संख्यातीतगुणक्रममसंख्यहीनं विशेषहीनक्रमम् ॥७३॥

टीका – गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य, ताकौ प्रथम समय की एक शलाका, यातै दूसरे की असख्यात गुणी, यातै तीसरे की असंख्यात गुणी ऐसें अत समय पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए जे शलाका, तिनिका जोड देइ, ताकौ भाग दीए जो प्रमाण आवै, ताकौ अपनी अपनी शलाका करि गुणें गुणश्रेणी आयाम का प्रथम निषेक विषै दीया द्रव्य असख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है । जातै इहां भाग हार पल्य के असख्यातवा भाग ही का है । बहुरि तातै द्वितीयादि निषेकनि विषै द्रव्य क्रम तै असख्यात गुणा अन्त समय पर्यंत (क्रमतै)[1] जानना । ऐसें गुणश्रेणी आयाम के निषेकनि विषै दीया द्रव्य का विभाग है । बहुरि उपरितन स्थिति विषै दीया द्रव्य कौ 'दिवड्ढगुणहाणि भाजिदे पढमा' इस सूत्र करि साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग

---

[1] क्रम तैं शब्द छपी प्रति मे मिलता है, हस्तलिखित प्रतिओ मे नही मिलता ।

दीए, ताका प्रथम निषेक विषै[1] दीया द्रव्य का प्रमाण हो है। सो गुणश्रेणी का अंत निषेक विषै दीया द्रव्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण है। तातै प्रथम गुणहानि का द्वितीयादि निषेकनि विषै दीया द्रव्य चय घटता क्रम लीए है। उपरि गुणहानि गुणहानि प्रति निषेकनि का आधा आधा द्रव्य जानना। अैसै गुणश्रेणी करने का प्रथम समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य कौ तीन जायगा दीया, ताकी सदृष्टि आगे लिखेंगे तहां देखनी।

पडिसमयं उक्कट्टदि, असंखगुणियक्कमेण सिंचदि य।
इदि गुणसेढीकरणं, आउगवज्जाण कम्माणं[2] ॥७४॥

प्रतिसमयमपकर्षति, असंख्यगुणितक्रमेण सिंचति च।
इति गुणश्रेणीकरणमायुष्कवर्ज्यानां कर्मणाम् ॥७४॥

टीका – गुणश्रेणी करने कौ द्वितीयादिक अंत पर्यंत समयनि विषै समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य कौ अपकर्षण करै है। बहुरि **सिंचति** कहिए पूर्वोक्त प्रकार उदयावली आदि विषै ताका निक्षेपण करै है। अैसै मिथ्यात्ववत् आयु बिना सात कर्मनि का गुणश्रेणी विधान समय समय प्रति हो है; सो जानना।

आगै गुण संक्रमण का स्वरूप कहिए है—

पडिसमयमसंखगुणं, दव्वं संकमदि अप्पसत्थाणं।
बंधुज्झियपयडीणं, बंधंतसजादिपयडीसु ॥७५॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणं, द्रव्यं संक्रामति अप्रशस्तानां।
बन्धोज्झितप्रकृतीनां, बध्यमानसजातिप्रकृतिषु ॥७५॥

टीका – गुण संक्रमण है सो अपूर्वकरण के पहले समय विषै न हो है। अपने योग्य काल विषै हो है। तथापि याका स्वरूप इहां कहिए है–

जिनका बंध न पाइए अैसी जे अप्रशस्त प्रकृति, तिनिका द्रव्य है, सो समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए जिनका बंध न पाइए अैसी जे स्वजाति प्रकृति तिनि विषै संक्रमण करै है। अपने स्वरूप कौ छोडि तद्रूप परिणमै है।

---

१ ध प्रति मे 'द्वितीयादि निषेकनि' इतना अधिक है।

२ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ स. २६४।

एवंविह संकमणं, पढमकसायाण मिच्छमिस्साणं ।
संजोजणखवणाए, इदरेसिं उभयसेढिम्मि ॥७६॥

एवंविधं संक्रमणं प्रथमकषायाणां मिथ्यमिश्रयोः ।
संयोजनक्षपणयोरितरेषामुभयश्रेण्यौ ॥७६॥

टीका – अैसा असख्यात गुणा क्रम लीए जो सक्रमण, ताकौ गुण सक्रमण कहिए, सो अनतानुबधी कषायनि का तौ गुण सक्रमण ताका विसयोजन विषै हो है। अर मिथ्यात्व, मिश्र मोहनी का गुण सक्रमण, तिनका क्षपणा विषै हो है। अर अन्य प्रकृति का गुण सक्रमण उपशमक वा क्षपक श्रेणीनि विषै पाइए है। जैसे श्रेणी विषै बध रहित जो असाता, ताका द्रव्य है, सो बध्यमान जो स्वजातीय साता, तीहि विषै सक्रमण करै है, सो कहिए है।

साता निरतर बधने का काल अतर्मुहूर्त अर असाता का तीहिस्यो सख्यात गुणा, सो दोऊनि कौ मिलाय ताका भाग वेदनीय कर्म के द्रव्य कौ देइ अपने अपने काल करि गुणे सातावेदनीय का द्रव्य वेदनीय का द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र आवै है अर असाता का तातै सख्यात गुणा आवै है, सो श्रेणी विषै अैसे असाता का द्रव्य समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीए साता रूप होइ परिणमै है। तहां गुण सक्रमण जानना। अैसे ही अन्य का यथासभव जानना।

आगै स्थितिकाडक घात का स्वरूप कहै है–

पढमं अवरवरट्ठिदिखंडं पल्लस्स संखभागं तु ।
सायरपुधत्तमेत्तं, इदि संखसहस्सखंडाणि[1] ॥७७॥

प्रथममवरवरस्थितिखंडं, पल्यस्य संख्येयभागं तु ।
सागरपृथक्त्वमात्रमिति संख्यसहस्रखंडानि ॥७७॥

टीका – अपूर्वकरण का पहिला समय विषै कीया अैसा स्थिति खड कहिए स्थितिकाडकायाम, सो जघन्य तौ पल्य का सख्यातवा भाग मात्र अर उत्कृष्ट पृथक्त्व सागर प्रमाण है। पृथक्त्व नाम सात वा आठ का जानना। एक काडक करि एती

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ २६०। षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६, पृष्ठ स २२४।

स्थिति घटावै है । यद्यपि तहा सत्त्व स्थिति सामान्य तै अत कोडाकोडी है तथापि कोइ कै तौ अतःकोडाकोडी पल्य मात्र जघन्य स्थिति सत्त्व है कोई कै अतःकोडा-कोडी सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति सत्व है, तातै स्थिति के अनुसारि काडक भी जघन्य उत्कृष्ट है, मध्य विषै काडक के भेद असख्याते है । तिनि मैं सख्यात गुणे स्थिति के भेद है । तातै संख्यात स्थिति भेदनि विषै एक काडक भेद पाइए है । अक संदृष्टि करि काडक भेद पाच, स्थिति भेद पद्रह तहा त्रैराशिक कीए एक काडक भेद विषै तीन स्थिति भेद पावै । असै एक एक स्थिति काडक का घात अतर्मुहूर्त काल करि होइ सो असै स्थिति खड अपूर्वकरण के काल विषै सख्यात हजार हो है जातै अपूर्वकरण के काल के सख्यातवे भाग मात्र स्थिति काडक का काल है ।

आउगवज्जाणं ठिदिघादो पढमादु चरिमठिदिसत्तो ।
ठिदिबंधो य अपुव्वो, होदि हु संखेज्जगुणहीणो[1] ॥७८॥

आयुष्कवर्ज्यानां, स्थितिघातः प्रथमाच्चरमस्थितिसत्त्वं ।
स्थितिबंधश्चापूर्वो, भवति हि संख्येयगुणहीनः ॥७८॥

टीका – अपूर्वकरण के पहले समय जे स्थिति खड अर स्थिति सत्व अर स्थिति बंध पाइए है तिनतै ताके अत समय विषै ते सख्यात गुणे घाटि है । इहा सख्यात हजार स्थिति काडक घाति करि स्थिति सत्व का अर स्थिति के अनुसारि अर स्थिति काडक है ताते स्थिति काडक का असख्यात हजार स्थिति बधापसरण करि स्थिति का अनुसार स्थिति बध का सख्यात गुणा घाटि होना जानना ।

आगै अनुभाग काडक घात कौ कहिए है–

एक्केक्कट्ठिदिखंडयणिवडणठिदिबंधओसरणकाले ।
संखेज्जसहस्साणि य, णिवडंतिरसस्स खंडाणि[2] ॥७९॥

एकैकस्थितिकांडकनिपतनस्थितिबन्धापसरणकाले ।
संख्येयसहस्राणि च, निपतन्ति रसस्य खंडानि ॥७९॥

---

१ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ स. २६१, २६८, २६६ । षट्खण्डागम धवला पुस्तक पृष्ठ स २२८, २२६ ।
२ जयधवला भाग–१२, पृष्ठ स २६६, २६७ । षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६, पृष्ठ स २२८ ।

टीका – जाकरि एक बार स्थिति सत्त्व घटाइए ऐसा स्थितिकांडकोत्करण काल अर जाकरि एक बार स्थिति बंध घटाइये सो स्थितिबंधापसरण काल ए दोऊ समान अंतर्मुहूर्त मात्र है । बहुरि तिस एक विषै जाकरि अनुभाग सत्त्व घटाइए ऐसा अनुभाग खंडोत्करण काल संख्यात हजार हो है, तातैं तिस काल तै अनुभाग कांडोत्करण यहु काल संख्यातवें भाग मात्र है ।

असुहाणं पयडीणं, अणंतभागा रसस्स खंडाणि ।
सुहपयडीणं णियमा, णत्थि त्ति रसस्स खंडाणि[1] ॥८०॥

अशुभानां प्रकृतीनामनन्तभागा रसस्य खण्डानि ।
शुभप्रतीना नियमान्नास्तीति रसस्य खण्डानि ॥८०॥

टीका – अप्रशस्त जे असातादि प्रकृति, तिनका अनुभाग कांडकायाम अनंत बहुभाग मात्र है । अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जो पाइए अनुभाग सत्त्व, ताकौं अनंत का भाग दीए, तहां एक भाग बिना बहुभाग घटावै, एक भाग अवशेष राखै है । यहु प्रथम खंड भया ताको अनंत का भाग दीए तहां एक भाग बिना बहुभाग घटाइ एक भाग अवशेष राखै है । ऐसे एक एक अंतर्मुहूर्त करि एक एक अनुभाग कांडक घात हो है, तहां एक अनुभाग कांडकोत्करण काल विषै समय समय प्रति एक एक फालि का घटावना हो है । बहुरि साता वेदनीय आदि प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग कांडक घात नियम तै नाहीं है ।

रसगदपदेसगुणहाणिट्ठाणगफड्डयाणि थोवाणि ।
अइत्थावणणिक्खेवे, रसखंडेणतगुणियकमा[2] ॥८१॥

रसगतप्रदेशगुणहानिस्थानकस्पर्धकानि स्तोकानि ।
अतिस्थापननिक्षेपे, रसखण्डेऽनन्तगुणितक्रमाणि ॥८१॥

टीका – अनुभाग कौं प्राप्त ऐसे कर्म परमाणु संबंधी एक गुणहानि विषै स्पर्धकनि का प्रमाण सो स्तोक है । तातैं अनंत गुणे अतिस्थापना रूप स्पर्धक हैं । तातैं अनंत गुणे निक्षेप स्पर्धक हैं । तातैं अनंत गुणे अनुभाग कांडकायाम है । इहां ऐसा जानना –

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ स. २६६, २६७, षट्खंडागम . पुस्तक ६, पृष्ठ २२८ ।
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ स २६१ ।

कर्मनि के अनुभाग विषै स्पर्धक रचना है, तहां प्रथमादि स्पर्धक स्तोक अनुभाग युक्त हैं। उपरि के स्पर्धक बहुत अनुभाग युक्त हैं। तहां तिनि सर्व स्पर्धकनि कौं अनंत का भाग दीएं बहुभाग मात्र जे उपरि के स्पर्धक तिनके परमाणूनि कौं एक भाग मात्र जे नीचले स्पर्धक, तिनि विषै केते इक उपरि के छोडि अवशेष नीचले स्पर्धकनिरूप परणमावै है। तहां केते इक परमाणू पहले समय परिणमावै है. केते एक दूसरे समय परिणमावै है, असें अंतर्मुहूर्त काल करि सर्व परमाणू परिणमाइ, तिनि ऊपरि के स्पर्धकनिका अभाव करै है। इहा समय समय प्रति जो द्रव्य ग्रह्या, ताका तौ नाम फालि है असैं अतर्मुहूर्त करि जो कार्य कीया, ताका नाम काडक है। तिस कांडक करि जिनि स्पर्धकनि का अभाव कीया सो कांडकायाम है। बहुरि तिनिका द्रव्य कौं जे कांडकघात कीएं पीछैं अवशेष स्पर्धक रहै, तिनि विषै तिन प्रथमादि स्पर्धकनि विषै मिलाया ते तौ निक्षेप रूप हैं अर जिनि उपरि के स्पर्धकनि विषै न मिलाया ते अतिस्थापन रूप है।

पढमापुव्वरसादो, चरिमे समये पसत्थइदराणं।
रससत्तमणंतगुणं, अणंतगुणहीणयं होदि ॥८२॥

प्रथमापूर्वरसात्, चरमे समये प्रशस्तेतरेषाम्।
रससत्वमनन्तगुणमनन्तगुणहीनकं भवति ॥ ८२ ॥

टीका – अपूर्वकरण के प्रथम समय सम्बन्धी प्रशस्त-अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग सत्व जो है, तातैं ताके अंत समय विषै प्रशस्तनि का अनत गुणा बधता अर अप्रशस्तनि का अनंत गुणा घटता अनुकम तैं अनुभाग सत्त्व हो है। इहा समय-समय प्रति अनंत गुणी विशुद्धता होने तैं प्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा अर अनुभाग कांडक घात का महात्म्य करि अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनतवें भाग अनुभाग अंत समय विषै संभवै है।

आगैं अनिवृत्तिकरण के कार्य कहै है –

बिदियं व तदियकरणं, पडिसमयं एक्क एक्क परिणामो।
अण्णं ठिदिरसखंडे, अण्णं ठिदिबंधमाणुवई [१] ॥८३॥

---

१ जयधवला भाग-१२ पृष्ठ २७१। षट्खण्डागम : धवला पुस्तक-६, पृष्ठ २२६।

द्वितीयमिव तृतीयकरणं, प्रतिसमयमेक एकः परिणामः ।
अन्ये स्थितिरसखंडे, अन्यत् स्थितिबंधमाप्नोति ।। ८३ ।।

टीका – दूसरा अपूर्वकरण विषै कहे स्थिति खडादि कार्य विशेष, ते तिस अनिवृत्तिकरण विषै भी जानने । विशेष इतना – इहा समान समयवर्ती नाना जीव के एकसा परिणाम है तातै नाही है निवृत्ति कहिए परस्पर परिणामनि विषै भेद जिनकै, ते अनिवृत्तिकरण है, तातै समय-समय प्रति एक-एक परिणाम ही है । बहुरि इहा और ही प्रमाण लीए स्थिति खड, अनुभाग खड स्थितिबध का प्रारम्भ हो है, जातै अपूर्वकरण सम्बन्धी जे स्थिति खडादिक तिनका ताके अन्त समय विषै ही समाप्तपना भया ।

संखेज्जदिमे सेसे, दंसणमोहस्स अंतरं कुणई ।
अण्णं ठिदिरसखंडं, अण्णं ठिदिबंधणं तत्थ[1] ।।८४।।

संख्येये शेषे दर्शनमोहस्यांतरं करोति ।
अन्यत् स्थितिरसखंडमन्यत् स्थितिबंधनं तत्र ।।८४ ।।

टीका – ऐसै स्थिति खडादि करि अनिवृत्तिकरण काल का सख्यात भागनि विषै बहुभाग व्यतीत भए एक भाग अवशेष रहै दर्शन मोह का अन्तर करै है । विवक्षित केई निषेकनि का सर्व द्रव्य कौ अन्य निषेकनि विषै निक्षेपण करि तिनि निषेकनि का जो अभाव करना, सो अन्तरकरण कहिए । तहा ताके काल का प्रथम समय विषै और ही स्थिति खड, अनुभाग बध, स्थिति बध का प्रारम्भ हो है ।

एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरस्स णिप्पत्ती ।
अंतोमुहुत्तमेत्तो, अंतरकरणस्स अद्धाणं[2] ।।८५।।

एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरस्य निष्पत्तिः ।
अंतर्मुहूर्तमात्रमंतरकरणस्याध्वा ।। ८५ ।।

टीका – एक स्थिति खडोत्करण काल विषै अन्तर की निष्पत्ति हो है । एक स्थिति काडकोत्करण का जितना काल, तितने काल करि अन्तर करिए है याकौ अतरकरण काल कहिए है, सो यहु अतर्मुहूर्त मात्र है ।

---

१ जयधवला भाग—१२, पृष्ठ २७२ । षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २६० ।
२ जयधवला भाग—१२, पृष्ठ २७३ । षट्खण्डागम : धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २३२ ।

गुणसेढीए सीसं, तत्तो संखगुणं उवरिमठिदिं च ।
हेट्ठुवरिम्हि य आबाहुज्झिय बंधम्हि संथुहदि [1] ।। ८६ ।।

गुणश्रेण्याः शीर्ष, ततः संख्यगुणं उपरितनस्थितिं च ।
अधस्तनोपरि चाबाधोज्झित्वा बंधे संपातयति ।। ८६ ।।

टीका – गुणश्रेणी आयाम विषै अपूर्व, अनिवृत्ति करण तै जो अधिक प्रमाण अनिवृत्ति करण का सख्यातवा भाग मात्र कह्या था, ताका नाम इहा गुणश्रेणी शीर्ष है। सो गुणश्रेणी शीर्ष के सर्व निषेक अर यातै सख्यात गुणा गुणश्रेणी शीर्ष के उपरिवर्ती असे उपरितन स्थिति के सर्व निषेक इनि दोऊनि कौ मिलाए अतरायाम हो है। एते निषेकनि का अभाव करिए है सो भी अतर्मुहूर्त मात्र है। इहा शीर्ष के नीचै अनिवृत्तिकरण का अवशेष काल मात्र गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम अनिवृत्ति करण काल के सख्यातवे भाग प्रमाण है सो भी शीर्ष तै सख्यात गुणा जानना। तहा अतरायाम विषै तिष्ठते जे निषेक, तिनिके द्रव्य के समय-समय अनत गुणा क्रम लीए जे फालि, तिनिकौ ग्रहण करि तिस समय बधता जो मिथ्यात्व कर्म, ताकी स्थिति का आबाधा काल छोडि अतरायाम समान निषेकनि के नीचै वा ऊपरि जे निषेक तिनि विषै निक्षेपण करै है। अतरायाम समान काल सबन्धी जे निषेक, तिन विषै नाही निक्षेपण करै है। तहा **अनादि मिथ्यादृष्टि जीव तौ मिथ्यात्व ही का अर सादि मिथ्यादृष्टी तीनों दर्शन मोह का अन्तर करै है।** बहुरि अतरकरण करने के काल का प्रथम समय तै लगाय जो अनिवृत्तिकरण काल का सख्यातवा भाग मात्र काल अवशेष रह्या ताकौ सख्यात का भाग दीए तहा एक भाग मात्र तौ अतरकरण काल है अर ताके उपरि अवशेष वहुभाग मात्र प्रथम स्थिति का काल है। बहुरि ताके उपरि जिनि निषेकनि का अभाव कीया सो अतर्मुहूर्त मात्र अतरायाम है।

अंतरकदपढमादो, पडिसमयमसंखगुणिदमुवसमदि ।
गुणसंकमेण दंसणमोहणियं जाव पढमठिदी [2] ।। ८७ ।।

अन्तरकृतप्रथमतः, प्रतिसमयमसंख्यगुणितमुपशाम्यति ।
गुणसंक्रमेण दर्शनमोहनीयं यावत् प्रथमस्थितिः ।। ८७ ।।

---

१ षट्खण्डागमः धवला पुस्तक–६, पृ. २३२, जयधवला भाग–१२ पृ २७४।
२ जयधवला भाग–१२, पृ २७६, षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६ पृ. २३२, २३३।

टीका – ग्रैसै एक स्थिति काडकोत्करण काल समान काल करि कीया है ग्रतर जातै ग्रैसा ग्रन्तर कृत भया तिस काल के ग्रनतरवर्ती जो समय सो प्रथम स्थिति का प्रथम समय है, तातै लगाय ताही का ग्रत समय पर्यन्त समय-समय प्रति ग्रसख्यात गुणा क्रम लीए जे ग्रतरायाम के उपरिवर्ती निषेक, तिनरूप जो द्वितीय स्थिति तीहि विषै तिष्ठता जो दर्शन मोह, ताके द्रव्य कौ पीठ विषै उक्त प्रमाण लिए जो गुण सक्रमण भागहार, ताका भाग दीए जो प्रमाण ग्राया, तितने द्रव्य का समूह रूप जे फालि, तिनकौ उपशमावै है । उदय ग्रादि होने कौ ग्रयोग्य करना, सो उपशम करना जानना । यद्यपि ग्रध.करण ही तै यहु जीव दर्शन मोह का उपशमक ही है तथापि तिस दर्शन मोह के प्रकृति, स्थिति, ग्रनुभाग, प्रदेशनि का निरवशेषपनै इहां उपशमक कहिए है ।

पढमट्ठिदियावलिपडिआवलिसेसेसु णत्थि आगाला ।
पडिआगाला मिच्छत्तस्य य, गुणसेढिकरणं पि ॥ ८८ ॥

प्रथमस्थितावावलिप्रत्यावलिशेषेषु नास्ति आगालाः ।
प्रत्यागाला मिथ्यात्वस्य च, गुणश्रेणिकरणमपि ।।८८।।

टीका – प्रथम स्थिति विषै ग्रावली, प्रत्यावली कहिए उदयावली ग्रर द्वितीयावली एक समय ग्रधिक ग्रवशेप रहै, तहा ग्रागाल, प्रत्यागाल ग्रर मिथ्यात्व की गुणश्रेणी न हो है । दर्शन मोह बिना ग्रौर कर्मनि की गुणश्रेणी होय ही है ।

तहा मिथ्यात्व की उदयावली विषै निक्षेपण करने रूप केवल उदीरणा ही पाइए है, सो कहिए है ।

समय ग्रधिक द्वितीयावली के निषेकनि के द्रव्य कौ ग्रसख्यात लोक का भाग दीए जो प्रमाण ग्रावै तितने द्रव्य कौ उदयावली के निषेकनि विषै ग्रंत के समय घाटि ग्रावली के दोय तीसरा भाग मात्र निषेक ग्रतिस्थापन करि नीचे के एक समय ग्रधिक ग्रावली के त्रिभाग मात्र निषेकनि विषै निक्षेपण करै है । ग्रैसै समय समय प्रति उदीरणा पाइए है ।

द्वितीय स्थिति के निषेकनि के द्रव्य कौ ग्रपकर्षण करि प्रथम स्थिति के निषेकनि विपै प्राप्त करना ताका नाम ग्रागाल है ।

अर प्रथम स्थिति के निषेकनि के द्रव्य कौ उत्कर्षण करि द्वितीय स्थिति के निषेकनि विषै प्राप्त करना ताका नाम प्रत्यागाल है ।

बहुरि तिस प्रथम स्थिति विषै एक प्रत्यावली ही अवशेष रहै उदीरणा भी न हो है । तिस प्रत्यावली के निषेकनि का समय समय प्रति अधोगलन ही है । एक एक समय व्यतीत होतै एक एक समय निर्जरै है । बहुरि उपशम विधान प्रथम स्थिति का अंत पर्यंत है । तहां दर्शन मोह के द्रव्य कौ गुणसंक्रमण भागहार का भाग दीए प्रथम स्थिति का प्रथम समय विषै उपशम करने योग्य जो प्रथम फालि, ताका द्रव्य हो है, तातै असंख्यात गुणा द्वितीय समय सम्बन्धी द्वितीय फालि का द्रव्य हो है । ऐसै क्रम तै एक घाटि प्रथम स्थिति का समय प्रमाण बार असंख्यात का गुणकार भए अंत फालि का द्रव्य हो है ।

अंतरपढमं पत्ते, उपसमणामो हु तत्थ मिच्छत्तं ।
ठिदिरसखंडेण विणा, उवइट्ठादूण कुणदि तिधा[1] ॥८९॥

अंतरप्रथमं प्राप्ते, उपशमनाम हि तत्र मिथ्यात्वम् ।
स्थितिरसखंडेन विना, उपस्थापयित्वा करोति त्रिधा ॥८९॥

टीका – ऐसै अनिवृत्तिकरण काल समाप्त भए, ताके अनंतरि अंतरायाम का प्रथम समय कौ प्राप्त होतै दर्शन मोह अर अनंतानुबन्धी चतुष्क, इनिके प्रकृति, प्रदेश, स्थिति, अनुभागनि का समस्तपनै उदय होने अयोग्य रूप उपशम होने तै औपशमिक तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप सम्यग्दर्शन कौ पाइ जीव औपशमिक सम्यग्दृष्टी हो है । तहां प्रथम समय विषै द्वितीय स्थिति विषै तिष्ठता मिथ्यात्व रूप द्रव्य कौ स्थिति कांडक अनुभाग कांडक का घात बिना गुण संक्रमण का भाग देइ तीन प्रकार परिणमावै है ।

मिच्छत्तमिस्ससम्मसरूवेणय तत्तिधा य दव्वादो ।
सत्तीदो य असंखाणंतेण य होंति भजियकमा[2] ॥९०॥

मिथ्यात्वमिश्रसम्यस्वरूपेण च तत्त्रिधा च द्रव्यतः ।
शक्तितश्च असंख्यानंतेन च भवंति भजितक्रमाः ॥९०॥

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८०, २८१, षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २३४
२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८२, षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २३५.

टीका – मिथ्यात्व, मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी रूप करि तीन प्रकार हो है, सो क्रम तें द्रव्य अपेक्षा असंख्यातवा भाग मात्र अनुभाग अपेक्षा अनंतवा भाग मात्र जानने। साई कहिए है – मिथ्यात्व का परमाणु रूप जो द्रव्य, ताकौ गुण संक्रमण भागहार का भाग देइ एक अधिक असंख्यात करि गुणिए। इतना द्रव्य बिना समस्त द्रव्य मिथ्यात्वरूप ही रह्या। अर गुणसंक्रम भागहार करि भाजित मिथ्यात्व द्रव्य कौं असंख्यात करि गुणिए इतना द्रव्य मिश्रमोह रूप परिणम्या। अर गुण संक्रम भागहार करि भाजित मिथ्यात्व द्रव्य कौ एक करि गुणिए इतना द्रव्य सम्यक्त्व मोह रूप परिणम्या, तातैं द्रव्य अपेक्षा असंख्यातवा भाग का क्रम आया। बहुरि अनुभाग अपेक्षा संख्यात अनुभाग कांडकनि के घात करि जो मिथ्यात्व का अनुभाग पूर्व अनु-भाग के अनंतवां भाग मात्र अवशेष रह्या, ताके अनंतवे भाग मिश्रमोह का अनुभाग है। वहुरि याके अनंतवे भाग सम्यक्त्व मोह का अनुभाग है ऐसैं अनुभाग अपेक्षा अनंतवा भाग का क्रम आया।

पढमादो गुणसंकमचरिमो त्ति य सम्ममिस्ससम्मिस्से।
अहिगदिणाऽसंखगुणो, विज्झादो संकमो तत्तो[1] ॥६१॥

प्रथमात् गुणसंक्रमचरम, इति च सम्यग्मिश्रसंमिश्रे।
अहिगतिनासंख्यगुणो, विध्यातः संक्रमः ततः ॥६१॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के अनंतरि गुणसंक्रमण काल का प्रथम समय तैं लगाय अंत समय पर्यंत समय समय सर्प की चालवत् असंख्यात गुण संक्रमण लीए मिथ्यात्व का द्रव्य है, सो सम्यक्त्व मिश्र प्रकृति रूप परिणमैं है सोई कहिए है–

पहिले समय सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य स्तोक है। तातैं असंख्यात गुणा मिश्र प्रकृति का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा दूसरे समय सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य है। तातें असंख्यात गुणा मिश्र का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा तीसरे समय सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य है। तातैं असंख्यात गुणा मिश्र का द्रव्य है। ऐसैं सर्प की चालवत् सम्यक्त्व मोहनी तैं मिश्र मोहनी रूप, मिश्रमोहनी तैं सम्यक्त्व मोहनीरूप परिणया द्रव्य असंख्यात गुणा क्रम तै अन्त समय पर्यंत जानना। तहां अन्त समय विषैं गुण संक्रम काल संख्यात आवली मात्र है। तातैं दोय घटाइ ताकौ दूणा करि तामैं दोय मिला-

1 जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८४। षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २३६

इए इतनी बार सम्यक्त्व मोहनी कै असख्यात का गुणकार हो है। सख्यात आवली मैं एक घटाइ ताकौ दूणा करि तामे एक मिलाइए इतनी बार मिश्रमोहनी कै असख्यात का गुणकार हो है। बहुरि गुणसक्रम काल का अन्त समय पर्यंत मिथ्यात्व बिना अन्य कर्मनि की गुणश्रेणी, स्थिति काडक घात, अनुभाग काडक घात पाइए है। ताके अनतरि तिस गुण सक्रम भए पीछै अवशेष रह्या मिथ्यात्व द्रव्य, ताकौ विध्यात सक्रम नामा भागहार का भाग दीए जो प्रमाण आवै, तितने द्रव्य कौ सम्यक्त्व मोहनी, मिश्रमोहनीरूप परिणमावै है। विध्यात शब्द का अर्थ मद है सो इहा विशुद्धता मन्द भई है, तातै सूच्यगुल का असख्यातवा भाग प्रमाण जो विध्यात सक्रम, ताका भाग दीए स्तोक द्रव्य आया, तिस ही कौ तिनि रूप परिणमावै है।

बिदियकरणादिमादो, गुणसंकमपूरणस्सकालो त्ति।
वोच्छं रसखंडुक्कीरणकालादीणमप्प बहु[1] ॥६२॥

द्वितीयकरणादिमात्, गुणसंक्रमपूरणस्य काल इति।
वक्ष्ये रसखंडोत्करणकालदीनामल्पं बहु ॥६२॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय गुण सक्रमण काल का पूर्णपना पर्यंत सभवते अनुभाग काडकोत्करण कालादिक, तिनिका अल्प बहुत्व कहस्यों।

अंतिमरसखंडुक्कीरणकालादो दु पढमओ अहिओ।
तत्तो संखेज्जगुणो, चरिमट्ठिदिखंडहदिकालो[2] ॥६३॥

अंतिमरसखंडोत्करणकालतस्तु प्रथमो अधिकः।
ततः संख्यातगुणः, चरमस्थितिखंडहतिकालः ॥६३॥

टीका – दर्शन मोह का तौ प्रथम स्थिति का अत विषै सभवता अन्य कर्मनि का गुणसक्रम काल का अन्त समय विषै सभवता ऐसा जो अनुभाग काडक, ताके घात करने का जो अतर्मुहूर्त मात्र काल, सो अन्त का अनुभाग खडोत्करण काल है सो आगै जे कहिए है तिनि तै स्तोक है। यातै याही का सख्यातवा भाग मात्र विशेष

---

१ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८५, २८६, षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २३६.

२ जयधवला भाग–१२ पृष्ठ २८६, २८७।

वरि प्रथिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जाका प्रारभ भया असा अनुभाग काडकोत्करण का काल है। यातै सख्यात गुणा अन्त का स्थितिकाडकोत्करण काल अर स्थिति बधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान है।

तत्तो पढमो अहिओ, पूरणगुणसेढिसीसपढमठिदी।
संखेण य गुणियकमा, उवसमगद्धा विसेसहिया[1] ॥६४॥

ततः प्रथमः अधिकः, पूरणगुणश्रेणीशीर्षप्रथमस्थितिः।
संख्येन च गुणितक्रमा, उपशमकाद्धा विशेषाधिकाः ॥६४॥

टीका – तातै ताही का सख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक अन्तर करण काल अर तहा अन्तर करण करतै ही सभवता स्थिति बधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान है। तातै ताही का सख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण के पहिले समय जिनिका प्रारभ भया असे स्थिति काडकोत्करण काल अर स्थिति बधापसरण काल ए दोऊ परस्पर समान है। तातै सख्यात गुणा गुण सक्रम पूरण करने का काल है। तातै सख्यात गुणा गुणश्रेणी शीर्ष है। तातै सख्यात गुणा प्रथम स्थिति का आयाम है। तातै समय घाटि दोय आवली मात्र विशेष करि अधिक दर्शन मोह के उपशमावने का काल है।

अणियट्टीसंखगुणो, णियट्टिगुणसेढियायदं सिद्धं।
उवसंतद्धा अंतर, अवरवराबाह संखगुणियकमा[2] ॥६५॥

अनिवृत्तिसंख्यगुणं, निवृत्तिगुणश्रेण्यायतं सिद्धम्।
उपशांताद्धा अंतरमवरवराबाधा संख्यगुणितक्रमा ॥६५॥

टीका – तातै सख्यात गुणा अनिवृत्ति करण का काल है। तातै सख्यात गुणा अपूर्व करण का काल है। तातै अनिवृत्ति करण का काल अर याका सख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक गुणश्रेणी आयाम है। तातै संख्यात गुणा औपशमिक सम्यक्त्व का काल है। तातै सख्यात गुणा अतरायाम है। तातै सख्यात गुणा जघन्य आबाधा है, सो मिथ्यात्व की तौ (पृथक्त्व का

---

[1] जयधवला भाग-१२ पृष्ठ २८७-२९०.
[2] जयधवला भाग-१२ पृष्ठ २९० से २९३.

काल है सो)[1] प्रथम स्थिति का अंत समय विषै अर अन्य कर्मनि की गुण संक्रमण काल का अंत समय विषै जो स्थिति बंधै ताकी आबाधा जाननी। तातैं संख्यातगुणी उत्कृष्ट आबाधा है, सो अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै संभवता जो स्थितिबंध, ताकी आबाधा ग्रहण करनी।

पढमापुव्वजहण्णट्ठिदिखंडमसंखसंगुणं तस्स।
अवरवरट्ठिदिबंधा, तट्ठिदिसत्ता य संखगुणियकमा[2] ॥९६॥

प्रथमापूर्वजघन्यस्थितिखंडमसंख्यसंगुणं तस्य।
अवरवरस्थितिबंधस्तत्स्थितिसत्वं च संख्यगुणितक्रमं ॥९६॥

टीका – तातैं असंख्यात गुणा[3] जघन्य स्थिति कांडकायाम है, सो प्रथम स्थिति विषै एक स्थिति कांडकोत्करण काल अवशेष रहै जो अंत का स्थिति खंड पल्य का असंख्यातवां भाग प्रमाण प्रारंभ कीया सो ग्रहणा। तातैं संख्यात गुणा अपूर्व करण का प्रथम समय विषै संभवता उत्कृष्ट स्थिति कांडकायाम पृथक्त्व सागर प्रमाण है। तातैं संख्यात गुणा (अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै)[4] प्रथम स्थिति का अंत समय विषै संभवता मिथ्यात्व का जघन्य स्थिति बंध है। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै संभवता उत्कृष्ट स्थिति बंध है। तातैं संख्यात गुणा प्रथम स्थिति का अंत समय विषै संभवता मिथ्यात्व का जघन्य स्थिति सत्त्व है। तातैं संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै संभवता उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है। इहां जघन्य स्थिति बंधादि च्यारि पदनि का प्रमाण सामान्य पनै अंत कोडाकोडी सागर प्रमाण है। ऐसैं पचीस जायगा अल्प बहुत्व कह्या।

अंतो कोडाकोडी, जाहे संखेज्जसायरसहस्से।
णूणा कम्माण ठिदी, ताहे उवसमगुणं गहइ ॥९७॥

अंतः कोटीकोटिर्यदा संख्येयसागरसहस्रेण।
न्यूना कर्मणां स्थितिः तदा उपशमगुणं गृह्णाति ॥९७॥

---

१ (पृथक्त्व का काल है सो) यह अंश सिर्फ प्राप्त छपी प्रति मे मिलता है।
२ "वरमवरट्ठिदिसत्ता एदे य संखगुणियकमा।" ऐसा पाठभेद मिलता है। जयधवला भाग-१२, पृष्ठ २९३ से २९६
३ अ, ख, च, घ–हस्तलिखित प्रतियो मे 'संख्यात गुणा' मिलता है।
४ इतना अंश प्राप्त छपी प्रति मे मिलता है।

टीका – जिस अन्तरायाम का प्रथम समय विषे सख्यात हजार सागर करि हीन अंत कोडाकोडी मात्र स्थिति सत्त्व होइ तिस समय विषै उपशम सम्यक्त्व गुण कौ ग्रहण करै है ।

तट्ठाणे ठिदिसत्तो, आदिमसम्मेण देससयलजमं ।
पडिवज्जमाणगस्स वि, संखेज्जगुणेण हीणकमो[1] ॥९८॥

तत्स्थाने स्थितिसत्त्वं, आदिमसम्येन देशसकलयमं ।
प्रतिपद्यमानस्याऽपि, संख्येयगुणेन हीनक्रमं ॥९८॥

टीका – तिस ही अन्तरायाम का प्रथम समय रूप स्थान विषै जो देशसयम सहित प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौ ग्रहै तौ ताकै स्थिति सत्त्व पूर्वोक्त तैं संख्यात गुणा घाटि हो है अर जो सकल सयम सहित प्रथम सम्यक्त्व कौ ग्रहै प्राप्त होइ ताकै स्थिति सत्त्व तिसतै भी सख्यात गुणा घाटि हो है । जातै अनत गुणी विशुद्धता के विशेषतै स्थितिखडायाम सख्यात गुणा हो है । तिनि करि घटाई हुई अवशेष स्थिति सख्यातवे भाग सभवै है ।

उवसामगो य सव्वो, णिव्वाघादो तहा णिरासाणो ।
उवसंते भजियव्वो, णिरासणो चेव खीणम्हि[2] ॥९९॥

उपशामकश्च सर्वः, निर्व्याघातस्तथा निरासानः ।
उपशांते भजितव्यो निरासनश्चैव क्षीणे ॥ ९९ ॥

टीका – सर्व ही दर्शनमोह का उपशम करनेवाला जीव निर्व्याघात कहिए विच्छेद वा मरण करि रहित है अर निरासादक कहिए सासादन कौ प्राप्त न हो है । बहुरि उपशम भए पीछे उपशम सम्यक्त्वी होइ तब भजनीय है – कोई जीव सासादन कौ प्राप्त न हो है, कोई जीव सासादन हो है । बहुरि क्षीणे कहिए उपशम सम्यक्त्व का काल समाप्त भए पीछै सासादन न होइ । तहा नियम तै दर्शनमोह की तीनि प्रकृतिनि विषै एक का उदय होय ।

उवसमसम्मत्तद्धा, छावलिमेत्ता दु समयमेत्तो त्ति ।
अवसिट्ठे आसाणो, अणअण्णदरुदयदो होदि[3] ॥१०० ॥

---

१ षट्खडागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ २६८
२ कसाय पहुड गाथा १०० । जयधवला भाग–१२ पृष्ठ ३०९
३ जयधवला भाग–१२, पृ ३०३ ।

उपशमसम्यक्त्वाद्धा, षडावलिमात्रस्तु समयमात्र इति ।
अवसिद्धे आसादनः, अनान्यतमोदयतो भवति ।।१००।।

टीका – उपशम सम्यक्त्व का काल विषै उत्कृष्ट छह आवली, जघन्य एक समय अवशेष रहै, अनतानुबधी क्रोधादि विषै एक कोई उदय होने तै सम्यक्त्व कौं विराधि मिथ्यात्व कौं प्राप्त न होइ बीचि मे सासादन हो है ।

सायारे वट्ठवगो, णिट्ठवगो मज्झिमो य भजणिज्जो ।
जोगे अण्णदरम्हि दु, जहण्णए तेउलेस्साए[1] ।। १०१ ।।

साकारे प्रस्थापको, निष्ठापकः मध्यमश्च भजनीयः ।
योगे अन्यतरस्मिन् तु, जघन्यके तेजोलेश्यायाः ।।१०१।।

टीका – साकार जो ज्ञानोपयोग, ताकौ होतै ही जीव कै प्रथमोपशम सम्यक्त्व का प्रारम्भ हो है । अर ताका निष्ठापक कहिए सम्पूरण करने वाला अर मध्य अवस्थावर्ती जीव भजनीय है । साकार अथवा अनाकार उपयोग युक्त होइ ।

भावार्थ यहु – दर्शनोपयोगी होइ कै ज्ञानोपयोगी होइ, बहुरि तीन योगनि विषै कोई एक योग विषै वर्तमान प्रथम सम्यक्त्व का प्रारभक हो है । बहुरि तिर्यंच मनुष्य है, सो मद विशुद्धता युक्त है । तौ भी तेजो लेश्या का जघन्य अश ही विषै वर्तमान जीव प्रथम सम्यक्त्व का प्रारम्भक हो है । अशुभ लेश्या विषै न हो है । बहुरि यद्यपि नरक विषै नियम तै अशुभ लेश्या है, तथापि तहा जो लेश्या पाइए है, तिस लेश्या का मद उदय होतै प्रथम सम्यक्त्व का प्रारभक हो है । बहुरि देव कै नियम तै शुभ लेश्या है, तहा वर्तमान जीव, ताका प्रारभक हो है ।

अंतोमुहुत्तमद्धं, सव्वोवसमेण होदि उवसंतो ।
तेण परं उदओ खलु, तिण्णेकदरस्स कम्मस्स[2] ।। १०२।।

अंतर्मुहूर्तमद्धा, सर्वोपशमेन भवति उपशांतः ।
तेन परं उदयः, खलु त्रिष्वेकतरस्य कर्मणः ।।१०२।।

टीका – अतर्मुहूर्त काल पर्यत सर्व दर्शनमोह का उपशम करि उपशम सम्यग्दृष्टी हो है । तातै पीछै तीन दर्शनमोह की प्रकृतिनि विषै एक कोई का उदय नियम तै होइ (उपशम सम्यक्त्व के उपरि ताका उदय है[3]) ।

---

१ जयधवला भाग–१२ पृ ३०६, कषाय पाहुड ८९.
२ जयधवला भाग–१२, पृ ३१४, कषाय पाहुड गाथा–१०३.
३ इतना अश छपी प्रति मे ही मिलता है ।

उवसमसम्मत्तुवरिं, दंसणमोहं तुरंत पूरेदि ।
उदयिल्लस्सुदयादो, सेसाणं उदयबाहिरदो ॥१०३॥

उपशमसम्यक्त्वोपरि, दर्शनमोहं त्वरितं पूरयति ।
उदीयमानस्योदयतः, शेषाणामुदयबाह्यतः ॥१०३॥

टीका – उपशम सम्यक्त्व के उपरि, ताका अन्त समय के अनतरि दर्शनमोह की अन्तरायाम के ऊपरिवर्ती जो द्वितीय स्थिति ताके निषेकनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि अन्तर कौ पूरै है ।

भावार्थ – उपशम सम्यक्त्व का काल तै सख्यात गुणा जो (अन्तरायाम के ऊपरिवर्ती जो द्वितीय)[1] अन्तरायाम तीहि विषै उपशम सम्यक्त्व का काल प्रमाण निषेक रूप तौ अभाव रूप रहे, ते उपशम सम्यक्त्व काल विषै व्यतीत भए । बहुरि अवशेष अन्तरायाम के निषेक रहे, ते अभावरूप थे, तिनि विषै द्वितीय स्थिति का द्रव्य निक्षेपण करि बहुरि तिनिका सद्भाव करै है । तहा जिस प्रकृति का उदयावली के प्रथम निषेक तै लगाय अर उदय हीन प्रकृतिनि का उदयावली तै बाह्य निषेक तै लगाय तिस अपकर्षण कीया द्रव्य कौ अन्तरायाम विषै वा द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है ।

उक्कट्टिदइगिभागं, समपट्टीए विसेसहीणकमं ।
सेसासंखाभागे, विसेसहीणेण खिवदि सव्वत्थ ॥१०४॥

अपकर्षितैकभागं, समपट्ट्या विशेषहीनक्रमम् ।
शेषासंख्यभागे, विशेषहीनेन क्षिपति सर्वत्र ॥१०४॥

टीका – तहा उदयवान् सम्यक्त्व मोहनी होइ तौ ताका द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहा बहुभाग तौ जैसे थे, तैसे रहे । बहुरि एक भाग कौ असख्यात लोक का भाग देइ तहा एक भाग तौ उदयावली विषै देना सो **'उदयावलिस्स दव्व'** इत्यादि सूत्र करि जैसे पूर्वे विधान कह्या है, तैसे उदयावली के निषेकनि विषै चय घटता क्रम करि निक्षेपण करना । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषै अवशेष बहुभाग मात्र रह्या, ताका नाम अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य है । सो तिस विषै अन्तरायाम

---

[1] इतना अश छपी प्रति मे मिलता है ।

के निषेकनि का अभाव था, तिनिका सद्भाव करने कौ कितना इक द्रव्य तौ तहां देना। सो कितना देना ताकौ जानने कौ विधान कहिए है।

नाना गुणहानि विषै तिष्ठता अैसा जो सम्यक्त्व मोहनी की द्वितीय स्थिति का द्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग जुदा कीए अवशेष बहुभाग मात्र जो द्रव्य रह्या, ताकौ **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इस सूत्र करि साधिक ड्योढ गुणहानि प्रमाण का भाग दीए, तिस द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक होइ, सो याके समान अन्तरायाम के सर्व निषेक चय रहित स्थापि, जोडै आदि धन होइ सो **'पदहतमुखमादिधनं'** इस सूत्र करि अन्तरायाम प्रमाण गच्छ करि तिस प्रथम निषेक कौ गुणै अन्तरायाम के निषेकनि का आदि धन भया। बहुरि द्वितीय स्थिति के नीचै अन्तरायाम के निषेक है, तातै द्वितीय स्थिति का आदि निषेक तै चय बधता क्रम रूप अन्तरायाम कौ निषेक (कहिए) चाहिए; सो चय का प्रमाण ल्याइए है—

द्वितीय स्थिति की प्रथम गुणहानि, ताका प्रथम निषेक ताके नीचैवर्ती जो अन्तरायाम सम्बन्धी गुणहानि, ताका प्रथम निषेक दूणा प्रमाण लीए चय चाहिए (कहिए)। याकौ दो गुणहानि का भाग दीए अन्तरायाम विषै चय का प्रमाण आवै है। सो **'सैकपदाहतपददलचयहतमुत्तरधनं'** इस सूत्रकरि इहा गच्छ अन्तरायाम मात्र, सो एक अधिक गच्छ करि आदि गच्छ का आधा कौ गुणि, बहुरि चय करि गुणै उत्तर धन हो है। सो अैसै आदि धन उत्तर धन कौ मिलाए जो प्रमाण भया, तितना द्रव्य तिस अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य तै ग्रहि करि अन्तरायाम विषै देना। तहा द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक तै गच्छ मात्र चयनि करि अधिक द्रव्य तौ अन्तरायाम का प्रथम निषेक विषै देना। इहां गच्छ का प्रमाण अन्तरायाम अर चय का प्रमाण पूर्वोक्त जानना। बहुरि द्वितीयादि निषेकनि विषै एक-एक चय घटता क्रम लीए देना। अन्त निषेकनि विषै एक चय अधिक देना। अैसै दीए जैसै क्रम लिए चाहिए तैसै अन्तरायाम के निषेकनि का अभाव भया था, तिनिका सद्भाव भया। अब अपकृष्टावशिष्ट द्रव्य विषै इतना द्रव्य दीए किंचित् ऊन भया, तिस अवशेष द्रव्य कौ अतरायाम वा द्वितीय स्थिति विषै देना। तहा अन्तरायाम विषै तौ पूर्वै जैसै आदि धन उत्तर धन मिलाइ द्रव्य प्रमाण ल्यावने का विधान कह्या था, तैसै प्रमाण ल्याइ, तितने द्रव्य कौ अन्तरायाम के निषेकनि विषै देना। याकौ दीए पीछै जो अवशेष रह्या, ताकौ **'दिवड्ढ गुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान करि द्वितीय स्थिति के नाना गुणहानि सम्बन्धी जे

निषेक, तिन विषै अन्त के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि सर्वत्र देना । ऐसैं तौ उदय योग्य सम्यक्त्व मोहनी का विधान कह्या ।

बहुरि उदय कौं अयोग्य जे मिश्र मिथ्यात्व प्रकृतिनि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग उदयावली तैं बाह्य जो अन्तरायाम, तीहि विषै अर द्वितीय स्थिति विषै पूर्ववत् निक्षेपण करना । उदयावली विषै निक्षेपण न करना । ऐसैं ही जो मिश्र मोहनी अथवा मिथ्यात्व मोहनी उदय योग्य होइ अवशेष दोय उदय योग्य न होइ तौ तहा यथासम्भव विधान जानना । सर्वत्र जैसैं गाय का पूछ क्रम तैं मोटाई करि हीन हो है, तैसैं चय घटता क्रम पाइए है, तहा एक गौपुच्छाकार कहिए ।

सम्मुदये चलमलिणमगाढं सद्दहदि तच्चयं अत्थं ।
सद्दहदि असब्भावं, अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥ १०५ ॥

सुत्तादो तं सम्मं, दरसिज्जंतं जदा ण सद्दहदि ।
सो चेव हवदि मिच्छाइट्ठी जीवो तदो पहुदी[1] ॥१०६॥

सम्यक्त्वोदये चलमलिनमगाढं श्रद्दधाति तत्त्वमर्थम् ।
श्रद्धाति असद्भावमजानन् गुरुनियोगात् ॥१०५॥

सूत्रतस्तं सम्यक्, दर्शयंतं यदा न श्रद्दधाति ।
स चैव भवति मिथ्यादृष्टिर्जीवः ततः प्रभृति ॥१०६ ॥

टीका – उपशम सम्यक्त्व का काल पूर्ण भए पीछै नियम तैं तीनो विषै एक दर्शन मोह की प्रकृति का उदय होइ, तहा सम्यक्त्व मोहनी का उदय होतैं जीव वेदक सम्यग्दृष्टी हो है । सो चल, मलिन, अगाढरूप तत्त्वार्थ कौं श्रद्धै है । सम्यक्त्व मोहनी के उदय तैं श्रद्धान विषै चलपनौं हो है वा मल लागै है वा शिथिल भाव हो है । बहुरि सो जीव आप विशेष न जानता अज्ञात गुरु के निमित्त तैं असत् श्रद्धान भी करै है । परन्तु यहु सर्वज्ञ आज्ञा ऐसैं ही है ऐसैं जानि श्रद्धान करै है,, तातैं सम्यग्दृष्टी है । अर जो कदाचित् कोई ज्ञात गुरु सूत्र तै सम्यक् स्वरूप दिखावै अर तिस ज्ञानी तैं श्रद्धान न करै तो तिस काल तैं लगाय सो मिथ्यादृष्टी हो है ।

---

१ कषाय पाहुड गाथा १०७, १०८/जयधवला भाग–१२, पृ. ३२१, ३२२ ।

मिस्सुदये सम्मिस्सं, दहिगुडमिस्सं व तच्चमियरेण।
सद्दहदि एक्कसमये, मरणे मिच्छो व अयदो वा ॥१०७॥

मिश्रोदये संमिश्रं, दधिगुडमिश्रं वा तत्त्वमितरेण ।
श्रद्दधात्येकसमये, मरणे मिथ्यो वा असंयतो वा ॥१०७॥

टीका – मिश्र जो सम्यग्मिथ्यात्व प्रकृति, ताका उदय होतें जीव मिश्र गुणस्थानवर्ती होइ सो एक समय विषै तत्त्व अर इतर अतत्त्व, इनिकौ मिश्ररूप श्रद्धै है। जैसैं दही गुड मिल्या हूवा और ही रसातर कौं प्राप्त हो है तैसैं इहा सत्य, असत्य श्रद्धान मिल्या हूवा जानना । इहा मरण होने तैं अतर्मुहूर्त पहिलै ही नियम तैं मिथ्यादृष्टी वा असयत हो है। मिश्र विषै मरण नाही है ।

मिच्छत्तं वेदंतो, जीवो विवरीयदंसणं होदि ।
ण य धम्मं रोचेदि हु, महुरं खु रसं जहा जुरिदो ॥१०८॥

मिथ्यात्वं वेदयन्, जीवो विपरीतदर्शनो भवति ।
न च धर्मं रोचते हि, मधुरं खलु रसं यथा ज्वरितः ॥१०८॥

टीका – मिथ्यात्व प्रकृति के उदय कौ जीव अनुभवता मिथ्यादृष्टी होइ, सो विपरीत श्रद्धानी होइ। जैसैं ज्वर वाले कौ मीठा न रुचै, तैसैं ताकौ धर्म जो अनेकात वस्तु का स्वभाव या रत्नत्रय रूप मोक्षमार्ग, सो रुचै नाही, ऐसैं जानना ।

मिच्छाइट्ठी जीवो, उवइट्ठं पवयणं ण सद्दहदि ।
सद्दहदि असब्भावं, उवइट्ठं वा अणुवइट्ठं ॥१०९॥

मिथ्यादृष्टिर्जीवः, उपदिष्टं प्रवचनं न श्रद्दधाति ।
श्रद्दधात्यसद्भावमुपदिष्टं वा अनुपदिष्टम् ॥१०९॥

टीका – मिथ्यादृष्टी जीव 'जिनेश्वर करि उपदेश्या वचन कौ नाही श्रद्धान करै है। बहुरि अन्य करि उपदेश्या वा न उपदेश्या असद्भाव जो अतत्त्व, ताकौ श्रद्धान करै है ।

इति प्रथमोपशमसम्यक्त्वप्ररूपरण समाप्त भया ॥१॥

दूसरा अधिकार : क्षायिकसम्यक्त्व प्ररूपण

जयंत्यर्हद्विधूतांगसूर्युपाध्यायसाधवः ।
लोकेऽस्मिन् भव्यलोकानां शरणोत्तममंगलम् ।।१।।

अथ क्षायिक सम्यक्त्व प्ररूपणा लिखिए है—

दंसणमोहक्खवणापट्ठवगो कम्मभूमिजो मणुसो ।
तित्थयरपायमूले, केवलिसुदकेवलीमूले ।।११०।।

दर्शनमोहक्षपणाप्रस्थापकः कर्मभूमिजो मनुष्यः ।
तीर्थंकरपादमूले, केवलिश्रुतिकेवलिमूले ।।११०।।

टीका – जो मनुष्य कर्मभूमि विषै उपज्या तीर्थंकर वा अन्य केवली वा श्रुतकेवली के पादमूल विषै तिष्ठता होइ, सोई दर्शनमोह की क्षपणा का प्रस्थापक कहिए प्रारंभक हो है, जातै अन्यत्र असा विशुद्ध ज्ञान न हो है । अध करण का प्रथम समय स्यो लगाय, यावत् मिथ्यात्व मिश्रमोहनी का द्रव्य सम्यक्त्व प्रकृति रूप होइ संक्रमण करै तावत् अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत दर्शनमोह की क्षपणा का प्रारंभक कहिए ।

णिट्ठवगो तट्ठाणे, विमाणभोगावणीसु धम्मे य ।
किदकरणिज्जो चदुसुवि, गदीसु उप्पज्जदे जम्हा ।।१११।।

निष्ठापकः तत्स्थाने, विमानभोगावनिषु धर्मे च ।
कृतकृत्यः चतुर्ष्वपि, गतिषु उत्पद्यते यस्मात् ।।१११।।

टीका – तिस प्रारंभक काल के अनंतर समयवर्ती समय तै लगाय क्षायिक सम्यक्त्व ग्रहण समय तै पहिले निष्ठापक हो है । सो जहा प्रारंभक कीया था, तहा ही वा सौधर्मादिक कल्प वा कल्पातीत विषै वा भोगभूमिया मनुष्य तिर्यंच विषै वा धर्मा नाम नरक पृथ्वी विषै भी निष्ठापक हो है, जातै बद्धायु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी मरि च्यारयो गति विषै उपजै है, तहा निष्ठापन करै, सो कथन आगै होयगा ।

पुव्वं तियरणविहिणा, अणं खु अणियट्टिकरणचरिमम्हि ।
उदयावलिबाहिरगं, ठिदिं विसंजोजदे णियमा ॥११२॥

पूर्वं त्रिकरणविधिना, अनंतं खलु अनिवृत्तिकरणचरमे ।
उदयावलिबाह्यां स्थितिं विसंयोजयति नियमात् ॥११२॥

टीका – दर्शनमोह क्षपरा के पहिलै तीन करण विधान करि अनतानुबधी क्रोध, मान, माया, लोभनि के उदयावली तै बाह्य जे सर्व निषेक, तिनकौ विसयोजन करता अनिवृतिकरण का अत समय विषै नियम तै विसयोजन करै है, बारह कषाय, नव नोकषाय रूप परिणमावै है । सोई कहिए है–

असयत वा देशसयत वा प्रमत्त वा अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती वेदक सम्यग्दृष्टी जीव, सो पहलै अध करण करै, ताका विधान प्रथमोपशम सम्यक्त्व ग्रहण विषै कह्या, तैसै जानना । तहा समय-समय अनत गुणी विशुद्धता करि बधता, ताकौ समाप्त करि अपूर्वकरण कौ प्राप्त होइ; तहा गुणश्रेणी, गुणसक्रमण, स्थिति काडकघात, अनुभाग काडकघात ए च्यारि कार्य होइ, तहा प्रथम सम्यक्त्व की उत्पत्ति सबधी गुणश्रेणी का द्रव्य तै देशसयत का अर तातै सकल सयत का अर तातै इस अनतानुबधी विसयोजन का गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य क्रम तै असख्यात गुणा है, अर तिनके गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण क्रम तै सख्यात गुणा घाटि है । सो अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण के काल तै साधिक गलितावशेष रूप जानना । बहुरि इहा अनुभाग काडक आयाम पूर्व तै अनत गुणा है । बहुरि स्थिति काडक आयाम पूर्व तै सख्यात गुणा है । बहुरि गुण सक्रमण द्रव्य है, सो पूर्व तै असख्यात गुणा है । इहा गुण सक्रमण अनतानुबधीनि का ही है औरनि का नाही है, असा जानना । असै सख्यात हजार स्थिति खड वा स्थितिबध वा अनुभाग खडनि करि अपूर्वकरण कौ समाप्त करि अनिवृतिकरण कौ प्राप्त हो है ।

अणियट्टीअद्धाए, अणस्स चत्तारि होंति पव्वाणि ।
सायरलक्खपुधत्तं, पल्लं दूरावकिट्ठिउच्छिट्ठं[1] ॥११३॥

अनिवृत्त्यद्धायां, अनंतस्य चत्वारि भवंति पर्वाणि ।
सागरलक्षपृथक्त्वं,पल्यं दूरापकृष्टिरुच्छिष्टम् ॥११३॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०० । षट्खडागम धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २५१ ।

टीका – अनिवृत्तिकरण का काल विषै अनतानुबधी का जो स्थितिसत्त्व, ताके च्यारि पर्व हो है। स्थिति घटने की मर्यादा करि च्यारि विभाग हो है। तहा पहले समय पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण स्थिति सत्त्व हो है, जातै अत कोडा-कोडी स्थिति सत्त्व था सो अपूर्वकरण विषै स्थिति खडनि करि घटाए इतना अवशेष रहे है। अनतानुबधी बिना अन्य कर्मनि का स्थिति सत्त्व इहा अत कोडाकोडी सागर ही जानना। यहु प्रथम पर्व भया।

बहुरि पीछै सख्यात हजार स्थिति खड भए क्रम तै असज्ञी पचेद्री, चौद्री, तेद्री, बेद्री, एकेद्री बध समान हजार सागर अर सौ सागर अर पचास सागर अर पचीस सागर अर एक सागर स्थिति सत्त्व हो है। बहुरि सख्यात हजार स्थिति खड भए पल्य मात्र स्थिति सत्व हो है। इहा इन स्थिति खडनि का आयाम जो एक-एक स्थिति खड विषै स्थिति सत्त्व घटने का प्रमाण, सो पल्य का सख्यातवा भाग मात्र जानना। यहु दूसरा पर्व भया।

बहुरि पल्य कौ सख्यात का भाग दीजिए, तहा एक भाग बिना बहुभाग मात्र आयाम करि युक्त अैसा हजारौ स्थिति खड भए दूरापकृष्टि है नाम जाका अैसा पल्य का (अ) सख्यातवा भाग मात्र स्थिति सत्त्व हो है। यहु तीसरा पर्व भया।

बहुरि पल्य कौ असख्यात का भाग दीए, तहा एक भाग बिना बहुभाग मात्र आयाम धरै अैसै हजारौ स्थिति खड भए उच्छिष्टावली है नाम जाका अैसा आवली मात्र स्थिति सत्व अवशेष रहै है। यहु चौथा पर्व भया। अैसै ए च्यारि पर्व जानने।

पल्लस्स संखभागो, संखा भागा असंखगा भागा।
ठिदिखंडा होंति कमे, अरणस्स पव्वादु पव्वोत्ति[1] ॥११४॥

पल्यस्य संख्यभागः, संख्या भागा असंख्यका भागाः।
स्थितिखंडा भवंति, क्रमेण अनंतस्य पर्वात् पर्वान्तं ॥११४॥

टीका – अनतानुबधी का स्थिति सत्त्व के पहले पर्व तै दूसरे पर्व पर्यत अर दूसरे तै तीसरे पर्यंत अर तीसरे तै चौथे पर्यंत जे स्थिति काडक हो हैं, तिनिका आयाम क्रम तै पल्य का सख्यातवा भाग अर पल्य का सख्यात बहुभाग अर पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र है, सो कथन कीया ही है।

१ षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ २५१-२५२, जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०० ।

अणियट्टीसंखेज्जाभागेसु गदेसु अणगठिदिसत्तो ।
उदधिसहस्सं तत्तो, वियले य समं तु पल्लादी ॥११५॥

अनिवृत्तिसंख्यातभागेषु गतेषु अनंतगस्थितिसत्वं ।
उदधिसहस्रं ततो, विकले च समं तु पल्यादि ॥११६॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के काल कौ सख्यात का भाग दीजिए, तहा बहु-भाग द्रव्य व्यतीत भए एक भाग अवशेष रहै अनतानुबधी का स्थितिसत्त्व कही हजार सागर मात्र, पीछै विकलेद्री का बध समान, पीछै पल्य अर आदि शब्द तै दूरापकृष्टि अर आवली मात्र हो है ।

उवहिसहस्सं तु सयं, पण्णं पणवीसमेक्कयं चेव ।
वियलचउक्के एगे, मिच्छुक्कस्सट्ठिदी होदि ॥११६॥

उदधिसहस्रं तु शतं, पंचाशत् पंचविंशतिरेकं चैव ।
विकलचतुष्के एकस्मिन्, मिथ्योत्कृष्टस्थितिर्भवति ॥११६॥

टीका – विकल चतुष्क कहिए असज्ञी पचेद्री, चौद्री, तेद्री अर एकेद्री इनि कै मिथ्यात्व का उत्कृष्ट स्थितिबध क्रम तै हजार अर सौ अर पचास अर पचीस अर एक सागर प्रमाण हो है । इन समान स्थिति सत्त्व अनतानुबधी का ही हो है । सो कथन कीया ही है ।

बहुरि अनतानुबधी का द्रव्य, ताकौ गुणश्रेणी करि जो नीचले निषेकनि विषै प्राप्त किया अर स्थिति काडक करि घटाई हुई स्थिति के निषेक अवशेष स्थिति के निषेकनि विषै प्राप्त कीए बहुरि गुण सक्रम करि तिस द्रव्य कौ गुण सक्रमण भाग-हार का भाग दीए जो प्रमाण, तिस प्रमाण मात्र द्रव्य का समूह रूप प्रथम फालि है अर तातै समय-समय प्रति असख्यात गुणा द्रव्य रूप द्वितीयादि फालि है, तिनकौ विसयोजन करै असै अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै उच्छिष्टावली मात्र निषेक रहित अत कांडक .का अत फालि का द्रव्य कौ विसयोजन करै है । बहुरि उच्छिष्टा-वली मात्र निषेकनि का द्रव्य कौ एक-एक समय विषै एक-एक निषेकनि कौ विसयो-जन करै है । इनिके परमाणूनि कौ बारह कषाय, नव नोकषाय रूप परिणमाय अभाव करने का नाम विसयोजन है । असै अनंतानुबंधी के विसयोजन का विधान कह्या ।

अंतोमुहुत्तकालं, विस्समिय पुणोवि तिकरणं किरिय ।
अणियट्टीए मिच्छं, मिस्सं सम्मं कमेण णासेइ ॥११७॥

अंतर्मुहूर्तकालं, विश्राम्य पुनरपि त्रिकरणं कृत्वा ।
अनिवृत्तौ मिथ्यं, मिश्रं सम्यक्त्वं क्रमेण नाशयति ॥११७॥

टीका – अनतानुबधी का विसयोजन कीए पीछै अतर्मुहूर्त काल विश्राम करि अन्य क्रिया न करि, तहा पीछै बहुरि तीन करणनि करि अनिवृत्तिकरण का काल विषै मिथ्यात्व, मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी कौ क्रम तै नष्ट करै है । सोई कहिए है –

दर्शनमोह की क्षपणा के सन्मुख होत सता जीव समय-समय अनत गुणी विशुद्धता युक्त होइ । दर्शनमोह का उपशमन विषै जैसै विधान कह्या तैसै अध.प्रवृत्तकरण करि पीछै अपूर्वकरण कौ प्राप्त भया । तहा प्रथम समय ही गुणश्रेणी का प्रारभ भया । याके अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य है, सो अनतानुबधी विसयोजन वाले का गुणश्रेणी द्रव्य तै असख्यात गुणा है अर गुणश्रेणी आयाम इहा ताके गुणश्रेणी आयाम तै सख्यात गुणा घाटि (है) अपूर्व, अनिवृत्ति करण काल तै साधिक जानना । जातै सम्यक्त्वोत्पत्ति विषै जे तीन करण हो है, तिनतै उत्तरोत्तर तीन करणनि का काल सख्यात गुणा घाटि है । तहा पर्व स्थिति खडादिक तै घटता अन्य ही स्थिति खड वा अनुभाग खड का प्रारभ हो है अर अन्य ही स्थितिबध पल्य का सख्यातवा भाग घटता प्रारभ हो है । बहुरि मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनी के द्रव्य का गुण सक्रमण करै है । सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमावै है । बहुरि अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै पूर्व तै सख्यात गुणा घाटि अैसा अत कोडाकोडी सागर प्रमाण जघन्य स्थिति सत्त्व है । यातै उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व सख्यात गुणा है । जातै कोई जीव उपशम श्रेणी चढि तहा बहुत स्थिति खडन करि तहांतै उपरि पीछै शीघ्र ही दर्शनमोह की क्षपणा का प्रारभ करै है ताकै जघन्य स्थिति सत्त्व हो है । अन्य कोई जीव श्रेणी न चढ्या होइ, ताकै उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है । तहा जघन्य स्थिति सत्व का स्थिति काडकायाम पल्य के सख्यातवे भाग मात्र है । उत्कृष्ट स्थिति सत्व का पृथक्त्व सागर प्रमाण है । जातै स्थिति के अनुसारि स्थितिकाडक हो है । अैसै सख्यात हजार स्थिति काडक घातनि करि अर तातै सख्यात गुणे अनुभाग काडक घातनि करि अर समय-समय असख्यात गुणा द्रव्य की गुणश्रेणी निर्जरा करि अर गुण सक्रम विधान करि अपूर्वकरण के अत समय कौ प्राप्त भया, तहां कर्मनि का स्थिति अनुभाग सत्त्व प्रथम समय के तिस

स्थिति सत्त्व तै (अ) सख्यात गुणा घाटि हो है । और भी दर्शन मोह का उपशम विधान विषै जो प्ररूपण कीया है, सो इहा भी यथासभव जानना ।

अणियट्टिकरणपढमे, दंसणमोहस्स सेसगाण ठिदी ।
सायरलक्खपुधत्तं, कोडीलक्खगपुधत्तं च[1] ॥११८॥

अनिवृत्तिकरणप्रथमे, दर्शनमोहस्य शेषकानां स्थितिः ।
सागरलक्षपृथक्त्वं, कोटिलक्षकपृथक्त्वं च ॥११८॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै दर्शनमोह का तौ स्थिति सत्व पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण है । इहा पृथक्त्व नाम बहुत का है, सो कोटि के नीचै असा अत कोडि प्रमाण जानना । बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थिति सत्त्व पृथक्त्व लक्ष कोटि सागर प्रमाण है, सो कोडाकोडी के नीचै असा अत कोडाकोडी जानना । अपूर्व-करण विषै सख्यात हजार स्थिति काडक घात कीए पीछे इतना अवशेष स्थिति सत्त्व रहै है । इहा सर्व जीवनि के परिणाम समान है, तातै स्थिति सत्त्व विषै जघन्य उत्कृष्ट भेद नाही है । बहुरि यातै परै दर्शन मोह की स्थिति पल्य प्रमाण रहै तहां पर्यंत स्थिति काडकायाम का प्रमाण पल्य के सख्यातवे भाग मात्र जानना ।

अमणंठिदिसत्तादो, पुधत्तमेत्ते पुधत्तमेत्ते य ।
ठिदिखंडेय हवंति हु, चउ ति वि एयक्ख पल्लठिदी ॥११९॥[2]

अमनःस्थितिसत्त्वतः, पृथक्त्वमात्रं पृथक्त्वमात्रं च ।
स्थितिकांडके भवंति हि, चतुस्त्रि द्वि एकाक्षे पल्यस्थितिः ॥११९॥

टीका – दर्शन मोह की पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण स्थिति, प्रथम समय विषै सभवै है । तातै सख्यात हजार काडक भए असज्ञी का बध समान हजार सागर स्थिति सत्त्व रहै है । ताके पीछै बहुत-बहुत स्थिति कांडक भए क्रम तै चौद्री, तेद्री, बेद्री, एकेद्री का स्थिति बध के समान सौ सागर, पचास सागर, पचीस सागर, एक सागर स्थिति सत्त्व हो है । पीछै बहुत स्थिति खड भए पल्य प्रमाण स्थिति सत्त्व हो है । असे यहु दूसरा पर्व भया ।

---

१ – जयधवला भाग १३ पृष्ठ ४१ / षट्खडागम : धवला पुस्तक ६ पृष्ठ २५४.
२ – जयधवला भाग १३ पृष्ठ ४१–४३.

पल्लट्ठिदिदो उवरिं, संखेज्जसहस्समेत्तठिदिखंडे ।
दूरावकिट्ठिसण्णिद, ठिदिसत्तं होदि णियमेण[१] ॥१२०॥

पल्यस्थितित उपरि, संख्येयसहस्रमात्रस्थितिखंडे ।
दूरापकृष्टिसंज्ञितं, स्थितिसत्त्वं भवति नियमेन ॥१२०॥

टीका – तातै ऊपरि पल्य कौ सख्यात का भाग दीए तहा बहुभाग मात्र आयाम धरै असै सख्यात हजार स्थिति खड भए[२] दूरापकृष्टि नामा स्थिति सत्व नियम करि हो है । पल्य कौ उत्कृष्ट सख्यात का भाग दीए जो प्रमाण आवै, तातै एक घटता क्रम करि पल्य कौ जघन्य परीतासख्यात का भाग दीए जो प्रमाण आवै, तहां पर्यन्त दूरापकृष्टि के सर्व भेद जानने । तिनि विषै इहा कोई संभवता भेद जानना । यहु तीसरा पर्व भया ।

पल्लस्स संखभागं, तस्स पमाणं तदो असंखेज्जं ।
भागपमाणे खंडे, संखेज्जसहस्सगेसु तीदेसु ॥१२१॥

सम्मस्स असंखाणं, समयप्रबद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो उवरिं तु पुणो, बहुखंडे मिच्छउच्छिट्ठं[३] ॥१२२॥

पल्यस्य संख्यभागं, तस्य प्रमाणं ततः असंख्येयं ।
भागप्रमाणे खंडे, संख्येयसहस्रकेषु अतीतेषु ॥१२१॥

सम्यक्त्वस्यासंख्यानां, समयप्रबद्धानामुदीरणा भवति ।
तत उपरि तु पुनः, बहुखंडे मिथ्योच्छिष्टम् ॥१२२॥

टीका – तिस दूरापकृष्टि नामा स्थिति सत्व का प्रमाण पल्य के सख्यातवे भाग मात्र जानना । तातै परै पल्य कौ असख्यात का भाग दीए तहां बहुभाग मात्र आयाम धरै असै सख्यात हजार स्थिति कांडक भएं सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौ अपकर्षण कीया, तिस विषै असख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदीरणा द्रव्य कौ उदयावली विषै दीजिए है । सोई कहिए है—

---

१ – जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ४३, ४४, ४५.

२ – हस्तलिखित अ, ख, घ प्रतिओ मे 'भए' के जगह 'गए' शब्द मिलता है ।

३ – जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ४८ / षट्खडागम : धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २५६.

सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा बहुभाग तो जैसै थे तैसै ही रहै, अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा बहुभाग उपरितन स्थिति विषै देना । अवशेष एक भाग कौ बहुरि पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै देना अर एक भाग उदयावली विषै देना । सो इहां उदयावली विषै दीया द्रव्य कौ उदीरणा द्रव्य जानना; सो पूर्वै तौ उदयावली विषै द्रव्य देने के अर्थि असख्यात लोक का भाग देने तै द्रव्य का प्रमाण स्तोक आवै था, इहातै लगाय परै सर्वत्र पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देना सो भागहार घटता होने तै द्रव्य का प्रमाण एक भाग विषै भी असख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है अैसा जानना । बहुरि तातै मिथ्यात्व प्रकृति के पल्य कौ असख्यात का भाग दीए, तहा बहुभाग मात्र आयाम धरै अैसे बहुत स्थिति खड भए इस मिथ्यात्व प्रकृति के अन्त काडक की अन्त फालि पतन का समय विषै मिथ्यात्व के उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहै है । अन्य सर्व मिथ्यात्व प्रकृति का द्रव्य है, सो मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमै है । जे आवली मात्र निषेक रहै है, ते समय समय प्रति एक एक निषेक रूप होइ यावत् दो समय अवशेष रहै, तावत् क्रम तै निर्जरै है ।

जत्थ असंखेज्जाणं, समयप्रबद्धाणुदीरणा तत्तो ।
पल्लासंखेज्जदिमो, हारो णासंखलोगमिदो[1] ॥१२३॥

यत्रासंख्येयानां, समयप्रबद्धानामुदीरणा ततः ।
पल्यासंख्येयः हारो, नासंख्यलोकमितः ॥१२३॥

टीका – जिस अवसर विषै असख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होइ उपरि के निषेकनि का द्रव्य उदयावली विषै प्राप्त होइ, तिस समय तै लगाय उत्तर काल विषै उदयावली विषै द्रव्य देने के अर्थि भागहार पल्य का असख्यातवा भाग मात्र ही जानना । पूर्ववत् असख्यात लोक मात्र न जानना ।

मिच्छुच्छिट्ठादुवरिं, पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे ।
संखेज्जे समतीदे, मिस्सुच्छिट्ठं हवे णियमा[2] ॥१२४॥

---

१ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ४६ ।
२ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५३ / षट्खण्डागम धवला पुस्तक, पृष्ठ २५८ ।

मिथ्योच्छिष्टादुपरि, पल्यासंख्येय भागगे खंडे ।
संख्येये समतीते मिश्रोच्छिष्टं भवेत् नियमात् ।।१२४।।

टीका – मिथ्यात्व की उच्छिष्टावली मात्र स्थिति अवशेष रहने के समय तै लगाय मिश्रमोहनी की स्थिति विषै पल्य कौ असख्यात का भाग दीए तहा बहुभाग मात्र आयाम धरै असै सख्यात हजार स्थिति काडक भए तहा अत काडक की अत-फालि का पतन विषै मिश्र मोहनी के निषेक उच्छिष्टावली मात्र अवशेष रहे है ।

मिस्सुच्छिट्ठे समये, पल्लासंखेज्जभागिगे खंडे ।
चरिमे पडिदे चेट्ठदि, सम्मस्सडवस्सठिदिसत्तो[1] ।।१२५।।

मिश्रोच्छिष्टे समये, पल्यासंख्येयभागगे खंडे ।
चरमे पतिते चेष्टते, सम्यक्त्वस्याष्टवर्षस्थितिसत्त्वम् ।।१२५।।

टीका – जिस समय मिश्रमोहनी की उच्छिष्टावली मात्र स्थिति रहै है, तिस ही समय विषै सम्यक्त्व मोहनी की स्थिति विषै पल्य कौ असख्यात का भाग दीए तहा बहुभाग मात्र आयाम धरै असै सख्यात हजार स्थिति खड व्यतीत होने तै इहां तिस सम्यक्त्व मोहनी का अष्ट वर्ष प्रमाण स्थिति सत्त्व अवशेष रहै है ।

भावार्थ यहु–मिश्रमोहनी की उच्छिष्टावली मात्र स्थिति रहने का अर सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष मात्र स्थिति रहने का एक ही काल है ।

मिच्छस्स चरमफालिं, मिस्से मिस्सस्स चरिमफालिं तु ।
संछुहदि हु सम्मत्ते, ताहे तेसिं च वरदव्वं[2] ।।१२६।।

मिथ्यस्य चरमफालिं, मिश्रे मिश्रस्य चरमफालिं तु ।
संक्रामति हि सम्यक्त्वे, तस्मिन् तेषां च वरद्रव्यं ।।१२६।।

टीका – मिथ्यात्व प्रकृति का अत काडक की अन्त फालि है, सो जिस समय विषै मिश्रमोहनी विषै सक्रमण होइ तिस समय विषै मिश्रमोहनी का द्रव्य उत्कृष्ट हो है । अर मिश्रमोहनी अत काडक की अत फालि का द्रव्य जिस समय सम्यक्त्व मोहनी विषै सक्रमण होइ, तिस समय विषै सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य उत्कृष्ट हो है ।

---

१ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५४ ।
२ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५१ व ५५ ।

जादि होदि गुणिदकम्मो, दव्वमणुक्कस्समण्णहा तेसिं ।
अवरठिदी मिच्छदुगे, उच्छिट्ठे समयदुगसेसे ।।१२७।।[1]

यदि भवति गुणितकर्मा, द्रव्यमनुत्कृष्टमन्यथा तेषाम् ।
अवरस्थितिर्मिथ्यद्विके, उच्छिष्टसमयद्विकशेषे ।।१२७।।

टीका – यहु दर्शनमोह का क्षय करनेवाला जीव, जो गुणितकर्मांश कहिए उत्कृष्ट कर्मसचय युक्त होई तौ ताके तिनि दोऊ प्रकृतिनि का द्रव्य तिस समय विषै उत्कृष्ट हो है अर जो वह जीव उत्कृष्ट कर्म का सचय युक्त न होइ तौ ताकै तिनिका द्रव्य तहा अनुत्कृष्ट हो है । बहुरि मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनी की स्थिति उच्छिष्टावली मात्र रही सो क्रम तै एक एक समय विषै एक एक निषेक गलि तहा दोय समय अवशेष रहै जघन्य स्थिति हो है ।

भावार्थ यहु–तहां उदयावली का अत निषेक मात्र स्थिति सत्त्व हो है ।

मिस्सदुगचरिमफाली, किंचूणदिवड्ढसमयपबद्धपमा ।
गुणसेढिं करिय तदो, असंखभागेण पुव्वं व[2] ।।१२८।।

मिश्रद्विकचरमफालिः, किंचिदूनद्व्यर्धसमयप्रबद्धप्रमा ।
गुणश्रेणिं कृत्वा ततः, असंख्यभागेन पूर्वं वा ।।१२८।।

टीका – मिश्र मोहनी अर सम्यक्त्व मोहनी की जे अन्त की दोय फालि तिनिका द्रव्य किचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है, सोई कहिए है –

मिश्र मोहनी का जो द्रव्य, ताविषै उच्छिष्टावली बिना अन्य सर्व मिथ्यात्व प्रकृति के द्रव्य कौं सख्यात हजार स्थिति कांडक अर गुण सक्रम विधान करि निक्षेपण कीया तहा जो मिश्रमोहनी का द्रव्य भया, तहा भी सख्यात हजार स्थिति काडक अर गुण सक्रमण विधान करि जो अन्त काडक की जो अन्त फालि का द्रव्य भया, सो तौ जुदा राख्या अर इसके अन्य काडकनि द्रव्य सर्व द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है, ताका सम्यक्त्व मोहनी विषै निक्षेपण कीया अर सम्यक्त्व मोहनी का आठ वर्ष की

---

१ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ५१ व ५५ ।
२ – जयधवला भाग १३, पृष्ठ ६४ / षट्खण्डागम धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २५६.

स्थिति के उपरिवर्ती जो अन्त काडक की अन्त फालि का द्रव्य ताकौ छोडि और सर्व काडकनि का द्रव्य कौ भी सक्रमण काल का द्विचरम समय पर्यन्त तहा अष्ट वर्ष मात्र अवशेष स्थिति विषै निक्षेपण करि तिस सक्रमण काल का अन्त समय विषै मिश्र मोहनी की अर सम्यक्त्व मोहनी की अन्त की जे दोय फालि, तिनिका द्रव्य मिलाए किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रवद्ध प्रमाण द्रव्य हो है।

भावार्थ यहु – मिश्रमोहनी का गुण सक्रम करि यावत् सम्यक्त्व मोहनी रूप परिणमै तावत् गुण सक्रम काल कहिए, ताका अन्त समय विषै मिश्रमोहनी का उच्छिष्टावली मात्र सम्यक्त्व मोहनी का अष्ट वर्ष मात्र निषेक बिना अन्य सर्व द्रव्य, तिनि की अन्त दोय फालिनि का जानना, सो किंचिदून द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है। अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करण के समय विषै इनि दोय फालिनि के पतन करने के अर्थि तिनि के द्रव्य कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए तहा एक भाग कौ उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम विषै देना सो उदयावली का प्रथम समय तै लगाय पूर्वै जो गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम का प्रारम्भ कीया था, तामै व्यतीत भए पीछे जो अवशेष गुणश्रेणी आयाम रह्या, ताका अन्त पर्यंत अर एक समय उपरितन स्थिति का तिनि विषै देना।

भावार्थ – इहातै पहिलै तौ उदयावली तै बाह्य गुणश्रेणी आयाम था, अब इहांतै लगाय उदय रूप वर्तमान समय तै लगाय ही गुणश्रेण्यायाम भया, तातै याकौ उदयादि कहिए है। अर पूर्वै तौ समय व्यतीत होतै गुणश्रेणी आयाम घटता होता जाता था अब एक समय व्यतीत होतै उपरितन स्थिति का एक समय मिलाय गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण समय व्यतीत होतै भी जेताका तेता रहै। तातै अवस्थित कहिए, तातै याका नाम उदयादि अवस्थिति गुणश्रेण्यायाम है, ताके निषेकनि विषै सो द्रव्य असख्यात गुणा क्रम लीए दीजिए है, ऐसै तिन दोऊ फालिनि के द्रव्य कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ एक भाग तौ गुणश्रेणी विषै दीया।

सेसं विसेसहीणं, अडवस्सुवरिमठिदीए संखुद्धे
चरमावलिं व सरिसी, रयणा संजायदे एत्तो ॥१२६॥

शेषं विशेषहीनमष्टवर्षस्योपरिस्थित्यां सक्षुब्धे।
चरमावलिरिव सदृशी, रचना संजायतेऽतः ॥ १२६ ॥

---

१ जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ६५

टीका – अवशेष बहुभागनि के द्रव्य कौ गुणश्रेणी आयाम मात्र अन्तर्मुहूर्त घाटि अष्ट वर्ष प्रमाण जो उपरितन स्थिति, ताके निषेकनि विषै **'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे'** इत्यादि विधान करि प्रथम निषेकनि विषै द्रव्य निक्षेपण करै अर तातै द्वितीयादि निषेकनि विषै समान प्रमाण रूप चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है असै ही दीए गुणश्रेणी के अन्त निषेक का द्रव्य तै उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक का द्रव्य असख्यात गुणा हो है। जातै इहा बहुभाग का निक्षेपण है अर स्थिति का प्रमाण स्तोक है।

अडवस्सादो उवरिं, उदयादिअवट्ठिदं च गुणसेढी ।
अंतोमुहुत्तियं ठिदिखंडं च य होदि सम्मस्स[1] ॥१३०॥

अष्टवर्षादुपरि, उदयाद्यवस्थितं च गुणश्रेणी ।
अंतर्मुहूर्तिकं स्थितिखंडं च च भवति सम्यस्य ॥ १३० ॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तै लगाय उपरि सर्व समयनि विषै उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है। बहुरि सम्यक्त्व मोहनी की स्थिति विषै स्थिति खड अन्तर्मुहूर्त मात्र आयाम धरै है। इहा तै अब एक एक स्थिति काडक करि अन्तर्मुहूर्त स्थिति घटाइए है।

बिदियावलिस्स पढमे, पढमस्संते च आदिमणिसेये ।
तिट्ठाणेणंतगुणेणूणकमोवट्टणं चरमे[2] ॥१३१॥

द्वितीयावलेः प्रथमे, प्रथमस्यांते चादिमनिषेके ।
त्रिस्थानेऽनंतगुणेनोनक्रमापवर्तनं चरमे ॥ १३१ ॥

टीका – जिस समय विषै सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष राखी अर मिश्रमोहनी, सम्यक्त्व मोहनी का अन्त काडक की दोय फालि का पतन भया तिस ही समय विषै सम्यक्त्व मोहनी का अनुभाग पूर्व समय के अनुभाग तै अनत गुणा घटता अनुभाग अवशेष रहै है। सोई कहिए है –

सम्यक्त्व मोहनी का अन्त काडक की द्विचरम फालि पतन समय (मात्र सम्यक्त्व मोहनी का अष्ट वर्ष मात्र निषेक विना अन्य सर्व द्रव्य तिनिका अन्त दोय फालिनि

---

१ जयधवला भाग—१३, पृ. ५६,६४।
२. जयधवला भाग—१३, पृ. ६३।

का जानना सो किंचित् ऊन द्व्यर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है ।)[१] जो अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय तै पूर्व समय तहा पर्यंत तौ लता दारु रूप द्विस्थानगत अनुभाग है, सो अनुभाग काडकघात तै अनत गुणा घटता भया । बहुरि यहु चरम फालि पतन समय जो अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय तिस विषै अनत गुणा घटता होई लता समान एक स्थान कौ प्राप्त अनुभाग भया । इहातै लगाय जो पूर्वै अन्तर्मुहूर्त काल करि अनुभाग कांडक का घात होता था, ताका अभाव भया अर समय समय प्रति अनत गुणा घटता क्रम लीए अनुभाग का अपवर्तन होने लगा तहां अनतरवर्ती अष्ट वर्ष करने के समय तै जो पूर्व समय तीहिविषै निषेकनि का जो अनुभाग सत्त्व था, तातै अनत गुणा घटता अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय विषै उदयावली के उपरिवर्ती जो उपरितनावली, ताके प्रथम निषेक का अनुभाग सत्त्व अवशेष रहै है । अवशेष अनत वहुभाग रूप अनुभाग का विशुद्धता विशेष तै अपवर्तन भया, नाश भया । वहुरि तिस ही समय विषै उदयावली के अन्त निषेक का अनुभाग सत्त्व तिस अपने उपरिवर्ती उपरितनावली का प्रथम निषेक का अनुभाग सत्त्व तै अनत गुणा घटता रहै है । अवशेष का नाश हो है । बहुरि तातै अनत गुणा घटता उदयावली के प्रथम निषेक का अनुभाग सत्व रहै है । अवशेष का नाश हो है । बहुरि तातै अनत गुणा घटता अष्ट वर्ष करने के समय तै लगाय तै अनतरवर्ती आगामी समय विषै अनत गुणा घटता अनुभाग सत्त्व हो है, ऐसै समय-समय प्रति अनत गुणा घटता अनुक्रम करि उच्छिष्टावली का अन्त समय पर्यंत अनुभाग का अपवर्तन जानना ।

अडवस्से उवरिमि वि, दुचरिमखंडस्स चरिमफालित्ति ।
संखातीदगुणक्कमं, विशेषहीणक्कमं देदि[२] ॥१३२॥

अष्टवर्षात् उपरि अपि, द्विचरमखंडस्य चरमफालीति ।
संख्यातीतगुणक्रमं, विशेषहीनक्रमं ददाति ॥ १३२ ॥

टीका – जैसै अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय विषै मिश्र मोहनी, सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालिनि के द्रव्य कौ उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम विषै अर तातै उपरिवर्ती उपरितन स्थिति विषै देने का विधान पूर्वै कह्या, तैसै ही तिस अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तै ऊपर भी जे समय तिनिविषै अन्तर्मुहूर्त

---

१ हस्तलिखित घ प्रति मे यह वाक्य मिलता है ।
२ जयधवला भाग—१३, पृ. ६४ तथा ७० ।

आयाम धरे काडक प्रारम्भ भए तिनिविषै प्रथम काडक की प्रथम फालिका पतन रूप जो प्रथम समय तातै लगाय द्विचरम काडक की अन्त फालि का पतन समय पर्यंत गुणश्रेणी आदि के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य, ताका अर स्थिति घटावने का अर्थि ग्रह्या स्थिति काडक की फालि का द्रव्य, ताकी उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम विषै असख्यात गुणा क्रम लीए अर अन्तर्मुहूर्त घाटि अष्ट वर्ष प्रमाण उपरितन स्थिति विषै चय घटता क्रम लीए निक्षेपण हो है ।

अब इहा स्पष्ट अर्थ जानने के अर्थि अष्ट वर्ष करने का समय तै पहले समय विषै वा अष्ट वर्ष करने के समय विषै वा आगामी समयनि विषै सभवता विधान कहिए है –

अडवस्से संपहियं, पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिं पुण संपहियं, असंखसंखं च भागं तु ॥ १३३ ॥

अष्टवर्षे संप्रहितं, पूर्वस्मात् असंख्यसंगुणितम् ।
उपरि पुनः संप्रहितं, असंख्यसंख्यं च भागं तु ॥१३३॥

टीका – अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तै (पहिले समय विषै)[१] अनतरवर्ती पूर्व समय विषै मिश्रमोहनी अर सम्यक्त्व मोहनी की द्विचरम फालि का पतन हो है । तिस समय विषै गुण सक्रम काल का प्रथम समय तै लगाय असख्यात गुणा क्रम लीए गुण सक्रमण द्रव्य होतै जो सम्यक्त्व मोहनी का सत्त्व द्रव्य पाइये है, सो **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान करि तहा स्थिति विषै सभवती जो नाना गुणहानि, तिनके निषेकनि विषै पाइए है । तिस समय विषै जो तिस द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य अपकर्षण कीया, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ बहुभाग तौ उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण करिए है, तहा जिसका द्रव्य अपकर्षण कीया तिस निषेक का द्रव्य कौ तिस निषेक के नीचै अतिस्थापनावली छोडि **'दिवड्ढ गुणहाणि भाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान करि देना । बहुरि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै देना अर एक भाग उदयावली विषै देना । इहा अपकर्षणादि

---

१ 'पहिले समय विषै'–इतना अश छपी प्रति मे ही मिलता है । हस्तलिखित प्रतिओ मे नही मिलता ।

भए पीछै, जो विवक्षित विषै सत्ता रूप पूर्वै द्रव्य पाइए, सो सत्त्व-द्रव्य कहिए। अर अपकर्षणादि कीया हुआ जो नवीन द्रव्य, तहा मिलाया सो दीयमान-द्रव्य कहिए। इन दोऊनि कौ मिलै जो देखने मैं आया द्रव्य का प्रमाण सो दृश्यमान-द्रव्य कहिए। सो इहा उदयावली विषै तौ दीयमान द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है, ताकरि साधिक सत्त्व द्रव्य मात्र दृश्यमान द्रव्य, तहा जानना अर गुणश्रेण्यायाम विषै दीयमान द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य तै असख्यात गुणा है। यद्यपि इहा गुणश्रेणी विषै दीया द्रव्य सर्व सत्त्व द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है तथापि निषेक इहा थोरे है, तातै असख्यात गुणा पाइए है, तिस विषै पूर्व सत्त्व द्रव्य साधिक कीए तहा दृश्यमान द्रव्य होइ अर उपरितन स्थिति विषै दीयमान द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है। ताकरि अधिक सत्त्व द्रव्य कीए तहां दृश्यमान द्रव्य हो है। तहा उपरितन स्थिति के जे प्रथमादि निषेक, तिनिविषै अपकर्षण करि जेता द्रव्य घटाया, सो तौ ऋण जानना। बहुरि जो इहा निक्षेपण कीया द्रव्य, सो धन जानना। सो धन विषै ऋण घटाइ अवशेष कौ पूर्व सत्त्व विषै मिलाए द्वितीयादि निषेक है, ते प्रथमादि निषेकनि तै एक-एक चय करि घटता क्रम तै होइ असै करतै मिश्र सम्यक्त्व मोहनी की द्विचरम फालि का जाविषै पतन होइ तिस गुण सक्रम काल का अन्त समय विषै सम्यक्त्व मोहनी के दृश्य द्रव्य का प्रमाण आवै है। बहुरि ताके अनतरवर्ती अष्ट वर्ष स्थिति करने का समय, तिस विषै मिश्रमोहनी सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालि का द्रव्य सो अष्ट वर्ष के जेते समय तितने सम्यक्त्व मोहनी के निषेकनि का द्रव्य प्रमाण करि हीन असै किचिदून द्वयर्ध गुणहानि मात्र है, ताकौ **'मिस्स दुगे'** इत्यादि गाथा व्याख्यान विषै जैसै पूर्वै वर्णन कीया है तैसै उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम विषै वा उपरितन स्थिति विषै द्रव्य देने का विधान जानना। बहुरि ताके अनतरवर्ती जो अष्ट वर्ष स्थिति करने का द्वितीय समय, तिस विषै सर्व सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहा एक भाग ग्रहि, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा एक भाग तौ उदय रूप प्रथम समय तै लगाय अप्ट वर्ष करने के समय जो गुणश्रेणी आयाम था, ताका शीर्ष पर्यंत अर एक समय व्यतीत भया सो एक समय उपरितन स्थिति का मिलाए जो उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम, ताके निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम करि निक्षेपण करना। अर अवशेष बहुभागनि का द्रव्य कौ ताके उपरिवर्ती अवशेष रही जो उपरितन स्थिति, ताके निषेकनि विषै **'अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे'** इत्यादि विधान तै चय घटता क्रम करि निक्षेपण करना। बहुरि इस ही समय विषै अन्तर्मुहूर्त मात्र जो

स्थिति काडकायाम, ताके निषेकनि का जो द्रव्य, ताकौ पीठबध विषै उक्त प्रमाण लीए जो अध प्रवृत्त भागहार, ताका भाग देइ एक भाग का प्रमाण मात्र जो फालि का द्रव्य, सो अपकृष्ट का द्रव्य के असंख्यातवे भाग मात्र है, ताकौ अपकृष्ट द्रव्य विषै अधिक जानना। पूर्वं अपकृष्ट द्रव्य दीया, ताकी साथि फालि द्रव्य भी दीया सो सर्व द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार दीएं प्रमाण आया था, ताका नाम अपकृष्ट द्रव्य जानना। अर स्थिति काडकायाम मात्र निषेकनि का जो द्रव्य ताकौ काडक द्रव्य कहिए, ताकौ इहा अध प्रवृत्त का भाग दीए जो प्रमाण आया, ताका नाम फालि द्रव्य है। बहुरि असै ही सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति करने का तीसरा समय तै लगाय प्रथम काडक की द्विचरम फालि का पतन समय पर्यत समय-समय असख्यात गुणा क्रम लीए जो अपकृष्ट द्रव्य वा फालि द्रव्य, ताकौ एक समय व्यतीत भए एक-एक समय उपरितन स्थिति का मिलाए भया जो उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम, ता विषै असख्यात गुणा क्रम करि अर तातै उपरितन स्थिति विषै चय घटता क्रम करि देना। बहुरि काडक काल का अन्त समय विषै अन्त फालि का पतन हो है। ताके द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है – जो अन्तर्मुहूर्त आयाम लीए एक काडक होइ तो अष्ट वर्ष स्थिति विषै केते काडक होइ ? असै त्रैराशिक कीए काडकनि का प्रमाण सख्यात आया, बहुरि जो इन सर्व काडकनि करि सम्यक्त्व मोहनी का सर्व द्रव्य निक्षेपण करिए तौ एक काडक विषै केता करिए ? असै त्रैराशिक करि काडक द्रव्य का प्रमाण सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य के सख्यातवे भाग मात्र आवै है। बहुरि याकौ अध प्रवृत्त भागहार का भाग दीए प्रथम फालि का द्रव्य होइ, तातै असख्यात भाग गुणा क्रम लीए द्विचरम फालि पर्यत फालिनि का द्रव्य होइ। सो इन सर्व फालिनि का द्रव्य काडक द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र भया। ताकौ तिस काडक द्रव्य विषै घटाए अवशेष अन्त फालि का द्रव्य जानना। असै सर्व काडकनि विषै अन्त फालि के द्रव्य का प्रमाण ल्यावने का विधान जानना। सो याका उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम विषै असख्यात गुणा क्रम करि अर उपरितन स्थिति विषै चय घटता क्रम करि निक्षेपण करना-असै विधान जानि इस गाथा का अर्थ असै जानना। जो **'अडवस्से संपहियं'** कहिए अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करने का समय विषै जो मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालिनि का द्रव्य है, सो **'पुव्विल्लादो असंख संगुणियं'** कहिए यातै पूर्व समय सम्बन्धी द्विचरम फालि का अन्त पर्यत जो गुण संक्रमण द्रव्य सहित जो सम्यक्त्व मोहनी का सत्त्व द्रव्य, तातै असख्यात गुणा है। जातै तहा यथायोग्य गुण सक्रमण का भागहार सभवै है। इहा अन्त दोय फालिनि

का द्रव्य विषै सो नाही है, तातै असख्यात गुणापना जानना । बहुरि **'उवरिं पुण संपहिय'** कहिए उपरि अष्ट वर्ष करने का द्वितीय समय तै लगाय अष्ट वर्ष करने का प्रथम समय सम्बन्धी जो दोय फालिनि का द्रव्य तातै **'असख संखं च भागं तु'** कहिए प्रथम काडक की द्विचरम फालि पर्यत तौ असख्यातवै भाग मात्र ही दीयमान द्रव्य है । तातै तहा अपकर्षण भागहार सर्व द्रव्य कौ दीए अपकृष्ट द्रव्य हो है । अर अन्त फालि का द्रव्य सख्यातवै भाग मात्र है । जातै सर्व द्रव्य कौ काडक प्रमाण मात्र सख्यात का भाग देइ किंचिदून कीए अन्त फालि का द्रव्य हो है ।

ठिदिखंडाणुक्कीरणं, दुचरिमसमओ त्ति चरिमसमये च ।
उक्कट्ठिदफालीगददव्वाणि णिसिंचदे जम्हा ॥१३४॥

स्थितिखंडानुत्करणं, द्विचरमसमय इति चरमसमये च ।
अपकर्षितफालिगतद्रव्याणि निषिचति यस्मात् ॥ १३४ ॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष प्रमाण स्थिति के अन्तर्मुहूर्त मात्र आयाम लीए स्थिति काडक का अष्ट वर्ष करने के दूसरे समय विषै प्रारम्भ कीए, तिनिका स्थितिकाडकोत्करण काल यथासम्भव अन्तर्मुहूर्त मात्र है । तिस काल के प्रथम समय तै लगाय द्विचरम समय पर्यंत जे फालि द्रव्य सहित अपकृष्ट द्रव्य निक्षेपण करिए है, सो सम्यक्त्वमोहनी के सत्त्व द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता है, जातै तहा अपकर्षण भागहार सभवै है । बहुरि ताका अन्त समय विषै जो अन्त फालि का द्रव्य दीजिए है, सो सर्व द्रव्य के सख्यातवे भाग मात्र है । यातै पूर्वं कह्या **'उवरिं पुण संपहियं असंखसंखं च भागं तु'** ताका अर्थ सिद्ध भया ।

अडवस्से संपहियं, गुणसेढीसीसयं असंखगुणं ।
पुव्विल्लादो णियमा, उवरि विसेसाहियं दिस्सं ॥१३५॥

अष्टवर्षे संप्रहितं, गुणश्रेणीशीर्षकं असंख्यगुणम् ।
पूर्वस्मात् नियमात्, उपरि विशेषाधिकं दृश्यम् ॥१३५॥

टीका – गुणश्रेणी आयाम का अन्त का निषेक, ताकौ इहा गुणश्रेणी शीर्ष कहिए, जातै गुण जो असंख्यात का गुणकार, ताकी श्रेणी कहिए पंक्ति, ताका शीर्ष कहिए अग्रभाग, सो गुणश्रेणी शीर्ष कहिए । तहां अष्ट वर्ष करने के समय विषै गुणश्रेणी का शीर्ष जो अवस्थित गुणश्रेण्यायाम विषै उपरितन स्थिति का एक निषेक

मिलाया था, सो जानना । ताके पूर्व सत्त्व द्रव्य कौ अर निक्षेपण कीया द्रव्य कौ मिलाए दृश्यमान द्रव्य का जो प्रमाण है, सो याके अनतर पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का जो दृश्यमान द्रव्य, तातै असख्यात गुणा है । बहुरि अष्ट वर्ष करने का समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का दृश्यमान द्रव्य तौ उपरि अष्ट वर्ष करने का द्वितीयादि समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य क्रम तै पूर्व-पूर्व गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य तै विशेष करि अधिक है, असख्यात गुणा नाही है । ताका स्वरूप सदृष्टचादि करि सस्कृत टीका तै वा सदृष्टि वर्णन विषै जानना ।

अडवस्से य ठिदीदो, चरिमेदरफालिपडिददव्वं खु ।
संखासंखगुणूणं, तेणुवरिमदिस्समाणमहियं सीसे ॥१३६॥

अष्टवर्षे च स्थितितः चरमेतरफालिपतितद्रव्य खलु ।
संख्यासंख्यगुणोनं, तेनोपरिमदृश्यमानमधिकं शीर्षे ॥ १३६ ॥

टीका – अष्ट वर्ष करने का प्रथम समय विषै मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी की अन्त दोय फालिनि का द्रव्य दीया सता उदयरूप प्रथम समय तै लगाय स्थिति का अन्त समय पर्यत सबधी निषेक जे सत्तारूप पाइए हैं, तिनि विषै प्रथम काडक की अन्त फालि का द्रव्य कौ कांडक काल का अन्त समय विषै जो निक्षेपण कीया, तिसका प्रमारग एक-एक निषेक विषै पूर्व सत्तारूप द्रव्य का प्रमाण तै सख्यात गुणा घटता जानना । अर अष्ट वर्ष स्थिति करने का द्वितीय समय तै लगाय प्रथम काडक की द्विचरम फालि का पतन समय पर्यन्त समयनि विषै जो अपकर्षण कीया द्रव्य कौ तिनि निषेकनि विषै निक्षेपण कीया तिसका प्रमाण एक-एक निषेकनि विषै पूर्व सत्तारूप द्रव्य का प्रमारग तै असख्यात गुरगा घटता जानना । तातै विवक्षित समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य जो गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया सो ताके नीचे के निषेक विषै दीया अपकृष्ट द्रव्य तै असख्यात गुणा धन आवै है । बहुरि सर्व सत्तारूप द्रव्य अर निक्षेपण कीया द्रव्य कौ मिलाए जो दृश्यमान द्रव्य भया, सो पूर्व-पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य तै उत्तर-उत्तर समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य किछू विशेष करि ही अधिक है, गुणकाररूप नाही है ।

जदि गोउच्छविसेसं, रिणं हवे तोवि धणपमाणादो ।
जस्सि असंखगुणूणं, ण गणिज्जदि तं तदो एत्थ ॥१३७॥

यदि गोपुच्छविशेषं, ऋणं भवेत् तथापि धनप्रमाणात् ।
यस्मात् असंख्यगुणोनं, न गण्यते तत्ततोत्र ।। १३७ ।।

टीका – जैसैं गौ का पूछ क्रम तै घटता हो है, तैसैं चय घटता क्रम जहा होइ, तहा गोपुच्छ कहिए । अर यावत् समान चय होइ तावत् गोपुच्छ विशेष कहिए । सो नीचले गुणश्रेणी निषेक का सत्व द्रव्य तै उपरि के गुणश्रेणी शीर्ष का सत्व द्रव्य विषै गोपुच्छ विशेष मात्र यद्यपि ऋण है ।

भावार्थ – यहु निषेकनि विषै चय घटता क्रम है, तातै पूर्व समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का सत्व द्रव्य तै उत्तर समय सम्बन्धी गुणश्रेणी शीर्ष का सत्व द्रव्य विषै चय प्रमाण द्रव्य घटता चाहिए ताकौ न घटाया अर विशेष अधिक कह्या, सो कारण कहा ?

अैसै प्रश्न कीए, उत्तर कहै है – जु यद्यपि अैसै है तथापि यहु मिलाया हूवा जो अपकृष्ट द्रव्य तातै यहु चय प्रमाण घटता द्रव्य है, सो असख्यात गुणा घटता है । सो इहा घटावने योग्य ऋण कौ मिलावने योग्य धन तै असख्यातवे भागि जानि स्तोकपने तै गिण्या नाही । पूर्व गुणश्रेणी शीर्ष का दृश्य द्रव्य तै उत्तर गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य विशेष अधिक ही कह्या ।

तत्तक्काले दिस्सं, वज्जिय गुणसेढिसीसयं एक्कं ।
उवरिमठिदीसु वट्टदि, विसेसहीणक्कमेणेव ।।१३८।।

तत्तत्काले दृश्यं, वर्जयित्वा गुणश्रेणिशीर्षकमेकम् ।
उपरिमस्थितिषु वर्तते, विशेषहीनक्रमेणैव ।।१३८।।

टीका – अैसै कहे विधान तै जिस-जिस विवक्षित समय विषै सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदयादि स्थिति का अत पर्यंत निषेकनि विषै निक्षेपण करै है, तिस-तिस समय विषै गुणश्रेणी शीर्षरूप भया जो एक-एक निषेक ताकौ छोडि ताके उपरिवर्ती जे उपरितन स्थिति के सर्व निषेक तिनि विषै तत्काल सभवता जो दृश्यमान द्रव्य, सो विशेष घटता अनुक्रम लीए ही जानना । जातै तहा दीया द्रव्य वा पूर्व द्रव्य चय घटता क्रम लीए हो है । या प्रकार अष्ट वर्ष मात्र सम्यक्त्व मोहनी की स्थिति विषै जैसै प्रथम काडक का विधान कह्या, तैसै ही द्वितीय काडकादि द्विचरम कांडक की अत फालि पर्यंत अपकृष्टि द्रव्य अर फालि द्रव्य, तिनके निक्षेप

करने का अनुक्रम अर भया जो दृश्यमान द्रव्य, ताका अनुक्रम जानना । ग्रैसें अष्ट वर्ष स्थिति अवशेष करने का समय तै लगाय सम्यक्त्व मोहनी का अत काडक तैं पहिला जो द्विचरम काडक,ताकी अत फालिका पतन समय पर्यत क्षपणाविधान कहि ।

अब अत काडक का विधान कहिए है–

गुणसेढिसंखभागा, तत्तो संखगुणं उवरिमठिदीओ ।
सम्मत्तचरिमखंडो, दुरचरिमखंडादु संखगुणो ।।१३९।।

गुणश्रेणिसंख्यभागाः, ततः संख्यगुणं उपरितनस्थितयः ।
सम्यक्त्वचरमखंडो, द्विचरमखंडात् संख्यगुणः ।।१३९।।

टीका – अष्ट वर्ष स्थिति करने का प्रथम समय तै लगाय इहा द्विचरम कांडक का अत पर्यत जो अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है, ताकौ सख्यात का भाग दीए, तहा बहुभागनि का जो प्रमाण अर अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय आठ वर्ष स्थिति करने का समय तै पूर्व समय पर्यत जो गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम था, ताविषै जो अनिवृत्तिकरण काल का सख्यातवा भाग मात्र जो गुणश्रेणी शीर्ष कह्या, ताकौ सख्यात का भाग दीए एक भाग का जो प्रमाण अर अवस्थिति गुण-श्रेणी का अत निषेकरूप जो शीर्ष ताके उपरिवर्ती निषेक रूप जो उपरितन स्थिति तीहि विषै द्विचरम काडक विषै जिनि निषेकनि का अभाव कीया तिनिके नीचै जे निषेक अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम का बहुभाग तै सख्यात गुणे अवशेष रहे । ग्रैसे अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम का सख्यातवा बहुभाग अर गलितावशेष गुणश्रेणी का सख्यातवा भाग अर उपरितन स्थिति के अवशेष निषेक इन तीनौ कौ जोडै जो प्रमाण होइ, सोई अत काडकायाम का प्रमाण है ।

भावार्थ यहु – गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम का सख्यातवा भाग तै लगाय उपरितन स्थिति के निषेक अवशेष रहे, तिनिका अत पर्यंत काडकायाम का प्रमाण है । सो यहु द्विचरम काडकायाम प्रमाण तो सख्यात गुणा है तौ भी यथायोग्य अत-र्मुहूर्त मात्र ही है । बहुरि तिस अत काडक करि घात कीए पीछै जो नीचै अवशेष स्थिति रहै, ताका प्रमाण अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम के सख्यातवे भाग मात्र है, सो पूर्वै जो गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषै अनिवृत्तिकरण काल का सख्यातवे भाग मात्र जो गुणश्रेणी शीर्ष कह्या था, ताकौ सख्यात का भाग दीए, बहुभाग मात्र

तौ कृतकृत्यवेदक काल अर व्यतीत भए पीछै अवशेष रह्या जो अनिवृत्तिकरण का काल, तीहि प्रमाण अत काडकोत्करण काल इनि दोऊनि कौ मिलाए तिस अवशेष स्थिति का प्रमाण हो है ।

सम्मत्तचरिमखंडे, दुचरिमफालि त्ति तिण्णि पव्वाओ ।
संपहियपुव्वगुणसेढीसीसे सीसे य चरिमम्हि ।।१४०।।

सम्यक्त्वचरमखंडे, द्विचरमफालीति त्रीणि पर्वाणि ।
संप्राप्तपूर्वगुणश्रेणीशीर्षे शीर्षे च चरमे ।।१४०।।

टीका – सम्यक्त्व मोहनी का अत काडक, ताकी प्रथम फालि का पतन समय तै लगाय द्विचरमफालि का पतन समय पर्यंत द्रव्य निक्षेपण करने विषै तीन पर्व जानने । **पर्व नाम विभाग का है ।** सो विभाग करि तीन जायगा द्रव्य देना । तहा अतकोत्करण काल का प्रथम समय विषै जाका आरभ भया असा जो उदयरूप प्रथम समय तै लगाय अवशेष स्थिति का अत निषेक पर्यंत इहा जाका प्रारभ भया असा जो गुणश्रेणी आयाम, ताका शीर्ष पर्यंत तौ एक पर्व जानना । बहुरि तातै ऊपरि पूर्वै जो अवस्थित गुणश्रेणी अयाम था ताका शीर्ष पर्यत दूसरा पर्व जानना । बहुरि तातै उपरिवर्ती जो उपरितन स्थिति, ताका प्रथम समय तै लगाय अत समय पर्यन्त तीसरा पर्व जानना । तहा काडक द्रव्य विषै ग्रहण कीया जो फालि द्रव्य, ताका निक्षेपण तौ पहले ही पर्व विषै हो है । अर सर्व द्रव्य विषै अपकर्षण कीया जो अपकृष्ट द्रव्य, ताका निक्षेपण तीनो पर्व विषै हो है, असा जानना ।

तत्थ असंखेज्जगुणं, असंखगुणहीणयं विसेसूणं ।
संखातीदगुणूणं, विसेसहीणं च दत्तिकमो ।।१४१।।

उक्कट्टिदबहुभागे, पढमे सेसेक्कभागबहुभागे ।
बिदिए पव्वेवि सेसिगभागं तदिये जहा देदि ।।१४२।।

तत्रासंख्येयगुणं, असंख्यगुणहीनकं विशेषोनम् ।
सख्यातीतगुणोनं, विशेषहीनं च दत्तिक्रमः ।।१४१।।

अपकर्षितबहुभागे, प्रथमे शेषैकभागबहुभागे ।
द्वितीये पर्वेऽपि शेषैकभागं तृतीये यथा ददाति ।।१४२।।

टीका – तहा प्रथम पर्व विषै द्रव्य असख्यात गुणा दीजिए है, सो कहिए है – सम्यक्त्व मोहनी का सर्व द्रव्य विषै पूर्व निषेकनि करि सर्व द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र द्रव्य घटाए अवशेष किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र अत कांडक का द्रव्य है। ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग ग्रहि, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग तौ प्रथम पर्व विषै **'प्रक्षेपयोगोद्धत'** इत्यादि विधान तै असख्यात गुणा क्रमकरि देना। बहुरि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग देइ तहा बहुभाग दूसरा पर्व विषै **'श्रद्धाणेण सव्वधणे'** इत्यादि विधान तै चय घटता क्रम करि देना। प्रथम पर्व तै दूसरा पर्व का आयाम सख्यात गुणा जानना। बहुरि अवशेष एक भाग तीसरा पर्व विषै **'श्रद्धाणेण सव्वधणे'** इत्यादि विधान तै चय घटता क्रम करि अपकर्षण कीया निषेक नीचै अति-स्थापनावली छोडि नीचै निक्षेपण करना। द्वितीय पर्व तै सख्यात गुणा द्विचरम कांडक का आयाम है, तातै भी तीसरे पर्व का आयाम सख्यात गुणा है। निषेकनि के प्रमाण का नाम इहा आयाम जानना। इहा अब जाका प्रारभ भया असा जो गुणश्रेणी का आयाम रूप प्रथम पर्व, ताका शीर्ष जो अत निषेक, ताविषै जो द्रव्य निक्षेपण कीया तातै काडक का प्रथम निषेक जो दूसरे पर्व का प्रथम निषेक, तीहि विषै निक्षेप कीया द्रव्य असख्यात गुणा घाटि है। बहुरि द्वितीय पर्व का अत निषेक विषै जो द्रव्य निक्षेपण कीया, तातै तृतीय पर्व का प्रथम निषेक विषै निक्षेपण कीया द्रव्य असख्यात गुणा घाटि है। जातै पूर्व कथन के अनुसारि असै ही सभवै है। असै ही अत काडक की प्रथम फालि का पतनरूप जो अन्त काडकोत्करण काल का प्रथम समय तै लगाय द्विचरम फालि का पतन रूप जो अन्त काडकोत्करण काल का उपात समय तहा पर्यंत द्रव्य निक्षेपण करने का विधान जानना।

उदयादिगलिदसेसा, चरिमे खंडे हवेज्ज गुणसेढी।
फाडेदि चरिमफालिं, अणियट्टीकरणचरिमम्हि ॥१४३॥

उदयादिगलितशेषा चरमे खंडे भवेत् गुणश्रेणी।
पातयति चरमफालिमनिवृत्तिकरणचरमे ॥१४३॥

टीका – सम्यक्त्वमोहनी का अत कांडक की प्रथम फालि का पतन समय तै लगाय द्विचरम फालि का पतन समय पर्यत उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम जानना। उदयरूप वर्तमान समय तै लगाय इहां गुणश्रेणी आयाम पाइए

है, तातै उदयादि कहिए अर एक-एक समय व्यतीत होतै एक-एक समय गुणश्रेणी आयाम विषै घटता जाय है, तातै गलितावशेष कह्या है । असै उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम जानना । बहुरि पूर्वोक्त विधान करि अत काडक की द्विचरम फालि का पतन होतै काडकोत्करण काल का अनिवृत्तिकरण काल विषै एक समय अवशेष रहै । बहुरि अवशेष रह्या अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै अत काडक की अतिम फालि का पतन हो है ।

चरिमं फालिं देदि दु, पढमे पव्वे असंखगुणियकमा ।
अंतिमसमयम्हि पुणो, पल्लासंखेज्जमूलाणि[1] ।।१४४।।

चरमं फालिं ददाति तु, प्रथमे पर्वे असंख्यगुणितक्रमाणि ।
अंतिमसमये पुनः, पल्यासंख्येयमूलानि ।।१४४।।

टीका – इहा अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै व्यतीत भए पीछै अवशेष रह्या असा गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम, सो कृतकृत्य वेदक काल का प्रमाण है । ताका द्विचरम समय पर्यंत तौ प्रथम पर्व अर ताका अंत समय सो दूसरा पर्व जानना । तहा सम्यक्त्व मोहनी का सर्व द्रव्य विषै व्यतीत भए निषेक अर अवशेष रहे कृतकृत्य काल मात्र निषेक तिनिका द्रव्य घटाए अवशेष किंचिदून द्वयर्ध गुणहानि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण अत काडक का अत फालि का द्रव्य है । ताकौ असख्यात गुणा जो पल्य का प्रथम वर्गमूल, ताका भाग देइ तहा एक भाग तौ प्रथम पर्व विषै **'प्रक्षेपयोगोद्धत'** इत्यादि विधान तै असख्यात गुणा क्रम करि देना ।

इतना विशेष – जो इहा असख्यात का गुणकार समान रूप नाही । प्रथम निषेक तै जिस असख्यात करि गुणै दूसरा निषेक पर्यंत (क्रम तै गुणकार)[2] होइ तिसतै असख्यात गुणा असख्यात करि दूसरा निषेक कौ गुणै तीसरा निषेक होइ असै द्विचरम निषेक पर्यंत क्रम तै गुणकार असख्यात गुणा जानना । बहुरि एक भाग असै दीए अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य गुणश्रेणी का अत निषेकनि विषै निक्षेपण करै है ।

चरिमे फालिं दिण्णे, कदकरणिज्जे त्ति वेदगो होदि ।
सो वा मरणं पावइ, चउगइगमणं च तट्ठाणे ।।१४५।।

---

१ जय धवला भाग–१३, पृष्ठ ७९ ।

२. इतना छपी प्रति मे ही मिलता है, हस्तलिखित प्रतियो मे नही ।

देवेसु देवमणुए, सुरणरतिरिए चउग्गईसुं पि ।
कदकरणिज्जोपत्ती, कमेण अंतोमुहुत्तेण[1] ॥१४६॥

चरमे फालिं दत्ते,कृतकरणीयेति वेदको भवति ।
स वा मरणं प्राप्नोति, चतुर्गतिगमनं च तत्स्थाने ॥१४५॥

देवेषु देवमनुष्ये, सुरनरतिरश्चि चतुर्गतिष्वपि ।
कृतकरणीयोत्पत्तिः, क्रमेण अन्तर्मुहूर्तेन ॥१४६॥

टीका – असैं अनिवृतिकरण के अंत समय विषै सम्यक्त्व मोहनी का अत काडक की अत फालि का द्रव्य कौ नीचले निषेकनि विषै निक्षेपण कीए पीछैं अनतर समय तै लगाय अनिवृतिकरण काल का संख्यातवा भाग मात्र (अंतर्मुहूर्त्त काल पर्यन्त)[2] जो पुरातन गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम का शीर्ष, ताकौ सख्यात का भाग दीएं तहा बहुभाग मात्र अतर्मुहूर्त काल पर्यंत कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी हो है, जातै दर्शन मोह की क्षपणा योग्य स्थिति काडकादि कार्य सो अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै ही समाप्त भया, तातै कीया है करने योग्य कार्य जाने असा कृतकृत्य नाम पावै है, सो जीव भुज्यमान आयु के नाश तै मरण पावै तौ सम्यक्त्व ग्रहण तै पहलै जो बाध्या था आयु, ताके वश तै चार्यों गतिनि विषै उपजै है । तहा कृतकृत्य वेदक के काल का च्यारि भाग एक-एक अंतर्मुहूर्त मात्र करिए ।

तहा प्रथम भाग विषै मूवा तो देव ही विषै, दूसरा भाग विषै मूवा देव वा मनुष्य विषै, तीसरा भाग विषै मूवा देव, मनुष्य, तिर्यंच विषै, चौथा भाग विषै मुवा च्यारचों गति विषै उपजै है । जातै तहा तिनही विषै उपजने योग्य परिणाम हो है असैं क्रम करि कृतकृत्य वेदक की उत्पत्ति जाननी ।

करणपढमादु जावय, किदुकिच्चुवरिं मुहुत्तअंतो त्ति ।
ण सुहाण परवत्ती, सा धि कओदावरं तु वरिं[3] ॥१४७॥

करणप्रथमात् यावत्, कृतकृत्योपरि मुहूर्तांत इति ।
न शुभानां परावृत्तिः, सा हि कपोतावरं तु उपरि ॥ १४७ ॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ८६, ८७ ।
२. इतना भाग मात्र छपी प्रति मे ही मिलता है ।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ८१,८२ तथा ८८ ।

टीका – अध करण का प्रथम समय विषै दर्शनमोहक्षपरणा का प्रारभक जीव के पीत, पद्म, शुक्ल लेश्या जो होइ सो समय समय अनत गुरणी विशुद्धता का क्रम करि अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै तिस लेश्या का उत्कृष्ट अश सपूर्ण होइ ।

बहुरि ताके अनतरि कृतकृत्य वेदक काल विषै प्रथम भाग विषै मरै तौ लेश्या पलटै ही नाही, जातै इहा मरि देव ही विषै उपजना है ।

बहुरि जो दूसरा, तीसरा, चौथा भाग विषै मरै तौ शुभ लेश्या की क्रम तै हानि होइ करि मरण समय कपोत लेश्या का जघन्य अश होइ । जातै द्वितीय भाग विषै मरि भोगभूमिया मनुष्य भी हो है ।

तीसरा भाग विषै मरि भोगभूमिया मनुष्य वा तिर्यच भी हो है ।

चौथा भाग विषै मरि जाकै नरकायु बध्या सो जीव प्रथम नारक पृथ्वि विषै भी उपजै है । बहुरि जो देव गति विषै ही उपजना होइ तौ जाकै च्यारचो ही भागनि विषै लेश्या की पलटनि न हो है । असै वेदक काल विषै मरण होइ तीहि अपेक्षा कथन कीया । बहुरि जो तहा मरण न होइ अर पूर्वै च्यारचों गति विषै कोई गति सम्बन्धी आयु बाध्या है, ताकै क्षायिक सम्यक्त्व भए पीछै मरण समय गति के अनुसारि लेश्यानि की पलटन जाननी ।

अणुसमओ वट्टणयं, कदकिज्जंतो त्ति पुव्वकिरियादो ।
वट्टदि उदीरणं वा, असंखसमयप्पबद्धाणं[1] ॥१४८॥

अनुसमयोपवर्तनं, कृतकरणीय इति पूर्वक्रियातः ।
वर्तते उदीरणा वा, असंख्यसमयप्रबद्धानाम् ॥ १४८॥

टीका – अनिवृत्तिकरण काल का सख्यातवा भाग अवशेष रहे, जैसै दर्शन मोह के अनुभाग का काडक घात कौ मेटि समय समय अनत गुणा घटता क्रम लीए अनुभाग का अपवर्तन कह्या था, सो ही इस कृतकृत्य वेदक काल का अत समय पर्यंत पाइए है, जातै करण परिणामनि की विशुद्धता का सस्कार का अवशेष इहा सभवै है । बहुरि तिस कृतकृत्य वेदक का काल विषै यावत् एक समय अधिक उच्छिष्टावली अवशेष रहै तावत् समय समय असख्यात गुणा क्रम लीए असख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा पाइए है । ताका विधान कहै है —

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ८९ ।

उदयबहिं उक्कट्टिय, असयगुणमुदयआवलिम्हि खिवे ।
उवरिं विसेसहीणं, कदकिज्जो जाव अइत्थवणं ।।१४६।।

जदि संकिलेसजुत्तो, विसुद्धिसहिदो वतोपि पडिसमयं ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, उक्कट्टदि णत्थि गुणसेढी ।।१५०।।

जदि वि असंखेज्जाणं, समयपबद्धाणुदीरणा तो वि ।
उदयगुणसेढिठिदिए, असंखभागो हु पडिसमयं ।।१५१।।

उदयबहिरपकर्षितं, असंख्यगुणं उदयावलौ क्षिपेत् ।
उपरि विशेषहीनं, कृतकृत्यो यावदतिस्थापनम् ।।१४६।।

यदि संक्लेशयुक्तो, विशुद्धिसहितो अतोऽपि प्रतिसमयम् ।
द्रव्यमसंख्येयगुणमपकर्षति नास्ति गुणश्रेणी ।। १५० ।।

यद्यपि असंख्येयानां, समयप्रबद्धानामुदीरणा तथापि ।
उदयगुणश्रेणिस्थितेरसंख्यभागो हि प्रतिसमयम् ।।१५१।।

टीका – कृतकृत्य वेदक काल मात्र सम्यक्त्व मोहनी के निषेक रहैं, तिनिका द्रव्य किंचिदून द्व्यर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण है ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग प्रमाण द्रव्य कौं जे उदयावली तें बाह्य उपरिवर्ती निषेक हैं, तिनतैं ग्रहि करि ताकौं पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा एक भाग तौ उदयावली विषैं **'प्रक्षेपयोगोद्धत'** इत्यादि विधान करि प्रथम समय तें लगाय अंत निषेक पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीए दीजिए है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य तिस उदयावली तें उपरिवर्ती जो अवशेष अंतर्मुहूर्त मात्र उपरितन स्थिति, तहा अंत विषैं समय अधिक अतिस्थापनावली छोडि सर्व निषेकनि विषैं 'अद्धाणेण सव्वधणे' इत्यादि विधान करि विशेष हीन क्रम लीए निक्षेपण करैं । असैं उपरितन स्थिति का द्रव्य जो उदयावली विषैं दीजिए ताका नाम उदीरणा है ।१४९।

यद्यपि कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टी लेश्या की पलटनि तें संक्लेश संयुक्त होइ वा विशुद्धता सहित होइ तथापि पूर्व भए थे करण रूप परिणाम, तीनि की विशुद्धता का जो संस्कार, ताके वश तें समय समय प्रति असंख्यात गुणा द्रव्य कौं अपक-

र्षण करि उदीरणा करै है । गुणश्रेणी आयाम विना किंचित् द्रव्य कौ उदयावली विषै देइ अवशेष कौ उपरितन स्थिति विषै दीया, तातै इहा गुणश्रेणी नाही है ।१५०।

यद्यपि असख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा पूर्व पूर्व समय सम्बन्धी उदीरणा द्रव्य तै असख्यात गुणा क्रम लीए है, तथापि अत काडक की अत फालि का द्रव्य कौ (गुणे)[1] गुणश्रेणी आयाम विषै दीया था, तिस गुण श्रेणीरूप जो उदय आया निषेक ताका द्रव्य तै यहु उदीरणा द्रव्य असख्यातवा भाग मात्र ही है । जातै यहु उदीरणा द्रव्य तौ सर्व द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र है अर जो तिस गुणश्रेणी का निषेक उदयरूप है, ताका द्रव्य सर्व द्रव्य कौ असख्यात गुणा पल्य वर्गमूल का भाग दीए एक भाग मात्र है, तातै कृतकृत्य वेदक का प्रथमादि समय सम्बन्धी निषेकनि विषै इहा उदयावली विषै दीया द्रव्य, उदीरणा द्रव्य सो पूर्वं पाइए है जो सत्तारूप द्रव्य, तातै असख्यात गुणा घाटि है । बहुरि कृतकृत्य वेदक काल विषै एक समय अधिक आवली अवशेष रहे पूर्वै अपकर्षण कीया द्रव्य तै असख्यात गुणा द्रव्य कौ स्थिति का अत निषेक जो उदयावली तै उपरिवर्ती एक निषेक तातै अपकर्षण करि ताके नीचै एक समय घाटि आवली का दोय तीसरा भाग प्रमाण निषेकनि कौ अतिस्थापनरूप राखी, ताके नीचै एक समय अधिक आवली का त्रिभाग मात्र निषेकनि विषै द्रव्य दीजिए है । तहा तिस अपकर्षण कीया हूआ द्रव्य कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग मात्र द्रव्य कौ उदय तै लगाय यथायोग्य असंख्यात समय सम्बन्धी निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम करि दीजिए है । तहा तिस अपकर्षण कीया हुआ द्रव्य कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग मात्र द्रव्य तो उदय समय तै लगाय यथायोग्य असख्यात समय सम्बन्धी निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम करि दीजिए है अर अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौ अतिस्थापना ताका जो नीचे का समय ताकौ छोडि ताके नीचे अवशेष आवली का त्रिभाग मात्र निषेकनि विषै विशेष घटता क्रम करि निक्षेपण करिए है । यहु ही उत्कृष्ट उदीरणा है । यातै अधिक उदीरणा का द्रव्य नाही । अैसे अनुभाग का तौ अनुसमय अपवर्तन करि अर कर्म परमाणूनि की उदीरणा करि यहु कृतकृत्य वेदक सम्यग्दृष्टि, रही थी जो सम्यक्त्व मोहनी की अत-र्मुहूर्त स्थिति तामै उच्छिष्टावली बिना सर्व स्थिति है, सो प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेशनि का सर्वथा नाश लीए जो एक एक निषेक का एक एक समय विषै उदय रूप होइ

---

१. (गुणे) यह शब्द मात्र छपी हुई प्रति मे ही मिलता है ।

निर्जरना ताकरि नष्ट हो है, बहुरि ताका अनंतर समय विषै उच्छिष्टावली मात्र स्थिति अवशेष रहै उदीरणा का भी अभाव भया, केवल अनुभाग का उपवर्तन है सो पूर्व अनुभाग अपवर्तन कह्या था, तातै याका अन्य लक्षण है, उदयरूप प्रथम समय तै लगाय समय समय अनंत गुणा क्रम करि वर्तै है, ताकरि प्रकृति, स्थिति, अनुभाग प्रदेशनि का सर्वथा नाश पूर्वक समय समय प्रति उच्छिष्टावली के एक एक निषेक कौ गालि निर्जरा रूप करि, ताका अनंतर समय विषै जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो है ।

बिदियकरणादिमादो, कदकरणिज्जस्स पढमसमओ त्ति ।
वोच्छं रसखंडुक्कीरणकालादीणमप्पबहु[1] ॥१५२॥

द्वितीयकरणादिमात्, कृतकृत्यस्य प्रथमसमय इति ।
वक्ष्ये रसखंडोत्करणकालादीनामल्पबहुत्वम् ॥१५२॥

टीका – दूसरा जो अपूर्वकरण, ताका प्रथम समय तै लगाय कृतकृत्य वेदक का प्रथम समय पर्यंत अनुभाग कांडकोत्करण कालादिक, तिनिका अल्प बहुत्व के तेतीस स्थान कहौगा ।

रसठिदिखंडुक्कीरणअद्धा अवरं वरं च अवरवरं ।
सव्वत्थोवं अहियं, संखेज्जगुणं विसेसहियं[2] ॥१५३॥

कदकरणसम्मखवणाणियट्टिअपुव्वद्ध संखगुणिदकमं ।
तत्तो गुणसेढिस्स य, णिक्खेओ साहियो होदि[3] ॥१५४॥

सम्मदुचरिमे चरिमे, अडवस्ससस्सादिमे च ठिदिखंडा ।
अवरवराहावि य, अडवस्सं संखगुणियकमा[4] ॥१५५॥

सम्मे असंखवस्सिय, चरिमट्ठिदिखंडओ असंखगुणो ।
मिस्से चरिमे खंडियसहियं अडवस्समेत्तेण[5] ॥१५६॥

---

१ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ६० ।
२ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ६१, ६२ ।
३ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ६२, ६३ ।
४ जयधवला भाग १३, पृष्ठ ६४, ६५ ।
५ जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ६५ ।

मिच्छे खवदे सम्मदुगाणं ताणं च मिच्छसंतं हि ।
पढमंतिमठिदिखंडा, असंखगुणिदा हु दुट्ठाणे[1] ॥१५७॥

मिच्छंतिमठिदिखंडो, पल्लासंखेज्जभागमेत्तेण ।
हेट्ठिमठिदिप्पमाणेणब्भहियो होदि णियमेण[2] ॥१५८॥

दूरावकिट्टिपढमं, ठिदिखंडं संखसंगुणं तिण्णं ।
दूरावकिट्ठिहेट्ठूठिदिखंडं संखसंगुणियं[3] ॥१५९॥

पलिदोवमसंतादो, बिदियो पल्लस्स हेट्ठगो जो दु ।
अवरो अपुव्वपढमे, ठिदिखंडो संखगुणिदकमा[4] ॥१६०॥

पलिदोवमसंतादो, पढमो ठिदिखंडओ दु संखगुणो ।
पलिदोवमठिदिसंतं, होदि विसेसाहियं तत्तो[5] ॥१६१॥

बिदियकरणस्स पढमे, ठिदिखंडविसेसयं तु तदियस्स ।
करणस्स पढमसमये, दंसणमोहस्स ठिदिसांतं[6] ॥१६२॥

दंसणमोहूणाणं, बंधो संतो य अवर वरगो य ।
संखेये गुणियकमा, तेत्तीसा एत्थ पदसंखा[7] ॥१६३॥

रसस्थितिखंडोत्करणाद्धा अवरं वरं अवरवरं ।
सर्वस्तोकं अधिकं, संख्येयगुणं विशेषाधिकम् ॥१५३॥

कृतकरणसम्यक्क्षपणानिवृत्यपूर्वाद्धा संख्यगुणितक्रमं ।
ततो गुणश्रेण्याश्च, निक्षेपः साधिको भवति ॥१५४॥

---

१ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९५ ९६ ।
२ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९६ ।
३ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९७ ।
४ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९८, ९९ ।
५ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९८, ९९ ।
६ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९९ ।
७ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ९९, १०० ।

सम्यग्द्विचरमे चरमे, अष्टवर्षस्यादिमे च स्थितिखंडानि ।
अवरवराबाधापि च, अष्टवर्ष संख्यातगुणितक्रमाणि ॥१५५॥

सम्येऽसंख्यवर्षे, चरमस्थितिखंडकोऽसंख्यगुणः ।
मिश्रे चरमे खंडितमधिकमष्टवर्षमात्रेण ॥१५६ ॥

मिथ्ये क्षपिते सम्यग्द्विकानां तेषां च मिथ्यसत्त्वं हि ।
प्रथमांतिमस्थितिखंडान्यसंख्यगुणितानि हि द्विस्थाने ॥१५७॥

मिथ्यांतिमस्थितिखंडं, पल्यासंख्येयभागमात्रेण ।
अधस्तनस्थितिप्रमाणेनाभ्यधिकं भवति नियमेन ॥१५८॥

दूरापकृष्टिप्रथमं, स्थितिखंडं संखसंगुणं त्रयं ।
दूरापकृष्टिहेतुः, स्थितिखंडः संख्यसंगुणितः ॥१५६॥

पलितोपमसत्त्वतो, द्वितीयं पल्यस्य हेतुकं यत्तु ।
अवरमपूर्वप्रथमे, स्थितखंडं संख्यगुणितक्रमम् ॥१६०॥

पल्योपमसत्त्वतः, प्रथमं स्थितिखंडकं तु संख्यगुणं ।
पल्योपमस्थितिसत्त्वं, भवति विशेषाधिकं ततः ॥१६१॥

द्वितीयकरणस्य प्रथमे, स्थितिखण्डविशेषकं तु तृतीयस्य ।
करणस्य प्रथमसमये, दर्शनमोहस्य स्थितिसत्त्वम् ॥१६२॥

दर्शनमोहोनानां, बंधः सत्त्वं च अवरं वरकं च ।
संख्येयगुणितक्रम, त्रार्यास्त्रिशदत्र पदसंख्या ॥१६३॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी का तौ अष्ट वर्ष स्थिति करने के समय तै पहले समयनि विषै संभवता अर आयु बिना अन्य कर्मनि का अनिवृत्तिकरण काल का अंत भाग विषै सभवता अैसा जो जघन्य अनुभाग खण्डोत्करण काल सो सख्यात आवली मात्र है तौ भी वक्ष्यमाण सर्व स्थाननि तै स्तोक है ।१। तातै याका संख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जाका प्रारभ भया अैसा उत्कृष्ट अनुभाग खडोत्करण का काल है ।२। तातै सख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का अंत भाग विषै सभवता अैसा जघन्य स्थिति काडकोत्करण काल है ।३। तातै याका सख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण की आदि विषै सभवता अैसा उत्कृष्ट स्थिति काडकोत्करण का काल है ।१५३।

टीका – तातै सख्यात गुणा कृतकृत्य वेदक का काल है ।५। तातै सख्यातगुणा अष्ट वर्ष करने का समय तै लगाय कृतकृत्य वेदक का अत समय पर्यंत सम्यक्त्व मोहनी का क्षपणा का काल है ।६। तातै सख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का काल है ।७। तातै सख्यात गुणा अपूर्वकरण का काल है ।८। तातै अनिवृत्तिकरण काल अर याका सख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जाका प्रारभ भया अैसा गुणश्रेणी आयाम है ।१५४।

टीका – तातै सख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनी का द्विचरम स्थिति काडक का आयाम है ।१०। तातै सख्यातगुणा सम्यक्त्व मोहनी को अत स्थितिकाडक का आयाम है ।११। तातै सख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनी की अष्ट वर्ष स्थिति का प्रथम काडक आयाम है ।१२। तातै सख्यातगुणा कृतकृत्यवेदक का प्रथम समय विषै सभवता जो ज्ञानावरणादिक कर्मनि का स्थितिबध, ताका जघन्य आबाधा है ।१३। तातै सख्यात-गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता स्थितिबध का उत्कृष्ट आबाधा काल है ।१४। इहा पर्यंत ए सर्व काल प्रत्येक यथासभव अंतर्मुहूर्त मात्र ही जानने । तातै सख्यातगुणी सम्यक्त्व मोहनी की अवशेष अष्ट वर्ष प्रमाण स्थिति है ।१५५।

टीका – तातै असख्यात गुणा सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष मात्र स्थिति करने के अर्थि पल्य का असख्यातवा भाग मात्र अत का स्थिति काडक आयाम है ।१६। तातै उच्छिष्टावली घाटि अष्ट वर्ष मात्र विशेष करि अधिक मिश्रमोहनी का अंत का स्थिति काडक आयाम है ।१७। तातै असंख्यात गुणा अंत स्थिति काडक की अंत फालि का द्रव्य कौ मिश्र मोहनो विषै सक्रमण करि मिथ्यात्व का क्षय करने का समय तै अनतरवर्ती समय विषै सभवता मिश्रमोहनी व सम्यक्त्व मोहनी का प्रथम स्थिति काडक आयाम है ।१८। तातै असख्यात गुणा मिथ्यात्व का सत्व द्रव्य अंत काडक प्रमाण अवशेष जहा रहै, तिस काल विषै सभवता मिश्रमोहनी वा सम्यक्त्व मोहनी का अंत काडक का आयाम है ।१५६।

टीका – तातै मिथ्यात्व का सत्त्व जिस काल विषै पाइए, तिस विषै मिश्र, सम्यक्त्व मोहनी का अंत काडक का घात भए पीछे अवशेष रही जो तिन दोउनि की नीचे की स्थिति पल्य का असख्यातवा भाग मात्र, ताकरि अधिक मिथ्यात्व का अंत काडक का आयाम है ।१५७।

टीका – तातै असख्यात गुणा दर्शन मोहत्रिक की दूरापकृष्टि नामा स्थिति विषै प्राप्त भया अैसा पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र स्थिति काडक आयाम है ।२१।

तातै संख्यात गुणा दूरापकृष्टि स्थिति कौ कारण असा पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र स्थिति काडक आयाम सख्यात गुणा है ।२२।१५९।

टीका -तातै संख्यात गुणा पल्य मात्र अवशेष स्थिति होतै पाइए असा द्वितीय स्थिति काडक का आयाम है ।२३। तातै सख्यात गुणा पल्य मात्र स्थिति कौ कारण-भूत असा पल्य का सख्यातवा भाग मात्र स्थिति काडक आयाम है ।२४। तातै सख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जाका प्रारभ भया जो जघन्य स्थिति काडक ताका आयाम है ।२५।१६०।

टीका – तातै सख्यात गुणा पल्य मात्र अवशेष स्थिति विषै प्राप्त असा पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र प्रथम काडक का आयाम है ।२६। तातै पल्य का सख्यातवा भाग मात्र विशेष करि अधिक पल्य मात्र स्थिति सत्त्व है ।२७।१६१।

टीका – तातै सख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जघन्य अर उत्कृष्ट काडकनि विषै वीचि के विशेष का प्रमाण पल्य का सख्यातवा भाग करि हीन पृथक्त्व सागर प्रमाण है ।२८। तातै संख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै सभवता दर्शन मोह का स्थितिसत्व है ।२९। तातै संख्यात गुणा कृतकृत्य वेदक का प्रथम समय विषै सभवता दर्शन मोह बिना अन्य कर्मनि का जघन्य स्थितिबध है ।३०। तातै सख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता तिनही कर्मनि का उत्कृष्ट स्थिति वध है ।३१। तातै सख्यात गुणा अनिवृत्तिकरण का अत भाग विषै सभवता तिन ही कर्मनि का जघन्य स्थिति सत्त्व है ।३२। तातै सख्यात गुणा अपूर्व-करण का प्रथम समय विषै सभवता तिनही कर्मनि का उत्कृष्ट स्थिति सत्व है ।३३। असै दर्शन मोह की क्षपणा का अवसर विषै सभवते अल्प बहुत्व के तेतीस स्थान है ।१६२-१६३।

सत्तण्हं पयडीणं, खयादु खइयं तु होदि सम्मत्तं ।
मेरु व णिप्पकंपं, सुणिम्मलं अक्खयमणंतं ।।१६४।।

दंसणमोहे खविदे, सिज्झदि तत्थेव तदियतुरियभवे ।
णादिक्कदि तुरियभवे, ण विणस्सति सेससम्मे व ।।१६५।।

सत्तण्हं पयडीणं, खयादु अवरं तु खइयलद्धी दु ।
उक्कस्सखइयलद्धी, घाइचउक्कखएण हवे ।।१६६।।

उवणेउमंगलं वो, भवियजणा जिणवरस्स कमकमलजुयं ।
जसकुलिसकलससत्थियससंकसंखंकुसादिलक्खणभरियं ।।१६७।।

सप्तानां प्रकृतीनां, क्षयात् क्षायिकं तु भवति सम्यक्त्वम् ।
मेरुरिव निष्प्रकंपं, सुनिर्मलमक्षयमनंतम् ।।१६४।।

दर्शनमोहे क्षपिते, सिद्धयति तत्रैव तृतीयतुर्यभवे ।
नातिक्रामति तुर्यभवं, न विनश्यति शेषसम्यगिव ।।१६५।।

सप्तानां प्रकृतीनां, क्षयादवरा तु क्षायिकलब्धिस्तु ।
उत्कृष्टक्षायिकलब्धिर्घातिचतुष्कक्षयेण भवेत् ।।१६६।।

उपनयतु मंगलं वो, भविकजनान् जिनवरस्य क्रमकमलयुगं ।
झषकुलिशकलशशविथकशशांकशंखांकुशादिलक्षणभरितम् ।।१६७।।

टीका – अनतानुबधी चतुष्क, दर्शन मोहत्रिक इन सात प्रकृतिनि का क्षय तै क्षायिक सम्यक्त्व हो है, सो निष्कप कहिए निश्चल है। सुनिर्मल कहिए शकादि मल करि रहित है। अक्षय कहिए शिथिलता के अभाव तै गाढा है। अनंत कहिए अत रहित है।१६४।

दर्शन मोह का क्षय होतै तिस ही भव विषै वा तीसरा भव विषै वा मनुष्य तिर्यंच का पूर्वै आयु बाध्या होइ तौ भोगभूमि अपेक्षा चौथा भव विषै सिद्ध पद पावै। चौथा भव कौ उलंघै नाही। बहुरि औपशमिक क्षायोपशमिक सम्यक्त्ववत् यहु नाश कौ प्राप्त न हो है।१६५।

सात प्रकृतिनि के क्षय तै असयत सम्यदृष्टी कै क्षायिक सम्यक्त्वरूप जघन्य क्षायिक लब्धि हो है। बहुरि च्यारि घातिया कर्मनि के क्षय तै परमातमा कै केवल ज्ञानादि रूप उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि हो है।१६६।

विशेष–१६७ नम्बर की गाथा भाषा टीका मे नही है। उसका अर्थ यह है कि–मत्स्य, वज्र, कलश, शख आदि नाना शुभ लक्षणो से सुशोभित जिनेंद्र भगवान् के चरण कमल भव्य लोगो को मगल प्रदान करें।

।। इति क्षायिकसम्यक्त्वप्ररूपणं समाप्तम् ।।

तीसरा अधिकार : चारित्रलब्धि

दुविहा चरित्तलद्धी, देसे सयले य देसचारित्तं ।
मिच्छो अयदो सयलं, तेवि व देसो य लब्भेई[1] ॥१६८॥

द्विधा चारित्रलब्धिः, देशे सकले च देशचारित्रम् ।
मिथ्योऽयतः सकलं, तावपि च देशश्च लभते ॥१६८॥

टीका – चारित्र की लब्धि कहिए प्राप्ति, सो चारित्रलब्धि देश, सकल भेद तै दोय प्रकार है। तहा देश चारित्र कौ मिथ्यादृष्टी वा असयत सम्यग्दृष्टी प्राप्त हो है। अर सकल चारित्र कौ ते देऊ अर देशसयत प्राप्त हो है।

अंतोमुहुत्तकाले, देसवदी होहिदि त्ति मिच्छो हु ।
सोसरणो सुज्झंतो, करणं पि करेदि सगजोग्गं[2] ॥१६९॥

अंतर्मुहूर्तकाले, देशव्रती भविष्यतीति मिथ्यो हि ।
सापसरणः शुध्यन् करणान्यपि करोति स्वकयोग्यम् ॥१६९॥

टीका – अतर्मुहूर्त काल पीछै जो देशव्रती होसी, सो मिथ्यादृष्टी जीव समय समय अनत गुणी विशुद्धता करि वर्धमान हो तौ आयु बिना सात कर्मनि का बध वा सत्त्व अत कोडाकोडी मात्र अवशेष करने करि तौ स्थिति बधापसरण कौ करता अर अशुभ कर्मनि का अनुभाग अनतवा भाग मात्र करने करि अनुभागबधापसरण कौ करता अपने करण योग्य परिणाम कौ करै है।

मिच्छो देसचरित्तं, उवसमसम्मेण गिण्हमाणो हु ।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा, तिकरणचरिमम्हि गेण्हदि हु[3] ॥१७०॥

मिथ्यो देशचारित्रं, उपशमसम्येन गृह्णन् हि ।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव, त्रिकरणचरमे गृह्णाति हि ॥१७०॥

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १०७ ।
२ जलधवला भाग–१३, पृष्ठ १२४ ।
३ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ११३ ।

टीका – अनादि वा सादि मिथ्यादृष्टी जीव उपशम सम्यक्त्व सहित देश चारित्र कौ ग्रहै है सो दर्शन मोह का उपशम विधान जैसे पूर्वं वर्णन कीया है, तैसे ही विधान करि तीन करणनि का अत समय विषै देश चारित्र कौ ग्रहै है। प्रकृतिबधापसरण स्थितिबधापसरण आदि जे कार्य विशेष तहा कहे है ते सर्व हो है, विशेष किछू नाही।

मिच्छो देसचरित्तं, वेदगसम्मेण गेण्हमाणो हु।
दुकरणचरिमे गेण्हदि, गुणसेढी णत्थि तक्करणे[1] ॥१७१॥

सम्मत्तुप्पत्तिं वा, थोवबहुत्तं च होदि करणाणं।
ठिदिखंडसहस्सगदे, अपुव्वकरणं समप्पदि हु[2] ॥१७२॥

मिथ्यो देशचारित्रं, वेदकसम्येन गृह्णन् हि।
द्विकरणचरमे गृह्णाति, गुणश्रेणी नास्ति तत्करणे ॥१७१॥

सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव, स्तोकबहुत्वं च भवति करणानाम्।
स्थितिखंडसहस्रगतं, अपूर्वकरणं समाप्यते हि ॥१७२॥

टीका – सादि मिथ्यादृष्टी जीव वेदक सम्यक्त्व सहित देश चारित्र कौ ग्रहण करै, ताकै अध करण, अपूर्वकरण ए दोय ही करण होइ, तिन विषै गुणश्रेणी निर्जरा न हो है, अन्य स्थिति खडादिक सर्व कार्य हो है, सो अपूर्वकरण का अत समय विषै युगपत् वेदक सम्यक्त्व अर देशचारित्र कौ ग्रहै है। जातै अनिवृत्तिकरण बिना ही इन की प्राप्ति सभवै है। तहा प्रथमोपशम सम्यक्त्व का उत्पत्तिवत् करणनि का अल्प बहुत्व है, तातै इहा अध करण काल तै अपूर्वकरण का काल संख्यातवे भाग प्रमाण है। बहुरि अपूर्वकरण का काल विषै सख्यात हजार स्थिति खड भएं अपूर्वकरण का काल समाप्त हो है।

ऐसे ही असयत वेदक सम्यग्दृष्टी भी दोय करण का अत समय विषै देश चारित्र कौ प्राप्त हो है। मिथ्यादृष्टी ही का व्याख्यान तै सिद्धात के अनुसारि असयत का भी ग्रहण करना। इहा उपशम सम्यक्त्व का तौ अभाव, तातै तिस सबधी गुणश्रेणी नाही अर देश संयत का अब ताई ग्रहण भया नाही तातै तिस सम्बन्धी

१ जयधवला भाग-१३, पृष्ठ १२१
२. जयधवला भाग-१३, पृष्ठ १२२

गुणश्रेणी नाही अर वेदक सम्यक्त्व गुणश्रेणी का कारण है नाही, तातै इहा अपूर्व करण विषै गुणश्रेणी का अभाव कह्या है ।

बहुरि कर्मनि का उपशम वा क्षय विधान ही विषै अनिवृत्तिकरण हो है । क्षयोपशम विषै होता नाही, तातै अनिवृत्तिकरण न कह्या असा जानना ।

से काले देसवदी, असंखसमयप्पबद्धमाहरियं ।
उदयावलिस्स बाहिं, गुणसेढीमवट्ठिदं कुणदि[1] ।।१७३।।

तस्मिन् काले देशव्रती, असंख्यसमयप्रबद्धमाहृत्य ।
उदयावलेर्बाह्यां, गुणश्रेणीमवस्थितां करोति ।।१७३।।

टीका – अपूर्वकरण का अत समय के अनतरवर्ती समय विषै जीव देशव्रती होइ करि अपने देशव्रत का काल विषै आयु बिना अन्य कर्मनि का सर्व सत्त्व द्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार मात्र असख्यात का भाग देइ एक भाग विषै असख्यात समय प्रबद्ध प्रमाण द्रव्य कौ ग्रहि करि ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ बहु-भाग उपरितन स्थिति विषै देना, अवशेष एक भाग कौ असख्यात लोक का भाग देइ एक भाग उदयावली विषै देना अरु बहुभाग असख्यात समयप्रबद्ध मात्र है, सो गुण-श्रेणी आयाम विषै देना सो यहु गुणश्रेणी आयाम अवस्थित है, गलितावशेष नाही है अर प्रथमोपशम सम्यक्त्व सबधी गुणश्रेणी आयाम तै सख्यात गुणा घटता है । असें देशव्रती होइ उदयावली तै बाह्य अवस्थिति गुणश्रेणी करै है ।

दव्वं असंखगुणियक्कमेण एयंतवड्ढिकालो त्ति ।
बहुठिदिखंडे तीदे, अधापवत्तो हवे देसो[2] ।।१७४।।

द्रव्यमसंख्यगुणितक्रमेण एकांतवृद्धिकाल इति ।
बहुस्थितिखंडेऽतीते, अधाप्रवृत्तो भवेद्देशः ।।१७४।।

टीका – देशसयत का प्रथम समय तै लगाय अतर्मुहूर्त पर्यंत समय-समय अनंत गुणा विशुद्धता करि बधै है, सो याकौ एकात वृद्धि कहिए, सो याका काल विषै समय-समय असख्यात गुणा क्रम करि द्रव्य कौ अपकर्षण करि अवस्थिति गुणश्रेणी

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२४, १२५
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२४

आयाम विषै निक्षेपण करै है। तहा एकात वृद्धि का काल विषै स्थिति काडकादि कार्य हो है। बहुरि बहुत स्थिति खड भए एकात वृद्धि का काल समाप्त होने के अनतरि विशुद्धता की वृद्धि रहित होइ, स्वस्थान देशसयत होइ याकौ अधाप्रवृत्त देश संयत भी कहिए, ताका काल जघन्य अतर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट देशोन कोडि पूर्ववर्ष प्रमाण है।

ठिदिरसघादो णत्थि हु, अधापवत्ताभिधाणदेसस्स।
पडिउट्ठदेमुहुत्तं, संतेण हि तस्स करणदुगा[1] ॥१७५॥

स्थितिरसघातो नास्ति हि, अधाप्रवृत्ताभिधानदेशस्य।
प्रतिपतिते मुहूर्तं, संयतेन हि तस्य करणद्विकम् ॥१७५॥

टीका – अधाप्रवृत्त देशसयत का काल विषै स्थिति खडन वा अनुभाग खडन न हो है। जो एकात वृद्धि देशसयत का अत समय विषै घात कीए पीछै अवशेष स्थिति अनुभाग रह्या सोई तहा रहै है। बहुरि जो जीव तीव्र सक्लेश का कारण बाह्य निमित्त बिना केवल अतरग कर्म का उदय करि निपज्या सक्लेश करि देशसयत तै भ्रष्ट होइ करि असयत सम्यदृष्टी होइ तहा स्तोक अंतर्मुहूर्त काल मात्र रहि शीघ्र ही देश सयम कौ ग्रहै ताकै भी स्थिति अनुभाग काडक का घात न हो है, जातै दोय करण कीए बिना ही यहु देशसंयम कौ ग्रहै है। बहुरि जो जीव बाह्य कारण तै सम्यक्त्व वा देशसयम तै भ्रष्ट होइ करि मिथ्यादृष्टी होइ तहा बडा अतर्मुहूर्त वा सख्यात असख्यात वर्ष पर्यंत रहि बहुरि वेदक सम्यक्त्व सहित देशसयम कौ ग्रहै, ताकै अध-प्रवृत्त, अपूर्वकरण हो है। तातै स्थिति अनुभाग काडक घात भी हो है।

देसो समये समये, सुज्झंतो संकिलिस्समाणो य।
चउवड्ढिहाणिदव्वादवट्ठिदं कुणदि गुणसेढिं[2] ॥१७६॥

देशः समये समये, शुध्यन् संक्लिश्यन् च।
चतुर्वृद्धिहानिद्रव्यादवस्थितां करोति गुणश्रेणीम् ॥१७६॥

टीका – अधाप्रवृत्त देशसयत जीव, सो कदाचित् विशुद्ध होइ कदाचित् सक्लेशी होइ तहा विवक्षित कर्म का पूर्व समय विषै जो द्रव्य अपकर्षण कीया तातै अन-

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२७
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १२९, १३०

तर समय विषै विशुद्धता की वृद्धि के अनुसारि कदाचित् असख्यातवे भाग बधता कदाचित् सख्यातवा भाग बधता, कदाचित् सख्यात गुणा, कदाचित् असख्यात गुणा द्रव्य कौ अपकर्षण करि गुणश्रेणी विषै निक्षेपण करै है। बहुरि विशुद्धता की हानि के अनुसारि कदाचित् असख्यातवे भाग घटता, कदाचित् सख्यातवे भाग घटता, कदाचित् संख्यात गुणा घटता, कदाचित् असख्यात गुणा घटता द्रव्य कौ अपकर्षण करि गुणश्रेणी विषै निक्षेपण करै है। असै अधाप्रवृत्त देश सयत का सर्व काल विषै समय समय यथासभव चतुःस्थान पतित वृद्धि हानि लीए गुणश्रेणी विधान पाइए है।

बिदियकरणादु जावय, देसस्सेयंतवड्ढिचरिमे त्ति।
अप्पाबहुगं वोच्छं, रसखंडद्धाण पहुदीणं[1] ॥१७७॥

द्वितीयकरणात् यावत्, देशस्यैकांतवृद्धिचरमे इति।
अल्पबहुत्वं वक्ष्ये, रसखण्डाद्धानां प्रभृतीनाम् ॥१७७॥

टीका – अपूर्वकरण तै लगाय एकात वृद्धि देशसयत का अत पर्यत सम्भवते जे जघन्य अनुभागखंडोत्करण कालादिकरूप अठारह स्थान, तिनि का अल्पबहुत्व कहौगा।

अंतिमरसखंडुक्कीरणकालादो दु पढमओ अहिओ।
चरिमट्ठिदिखंडुक्कीरणकालो संखगुणिदो हु[2] ॥१७८॥

पढमट्ठिदिखंडुक्कीरणकालो साहियो हवे तत्तो।
एयंतवड्ढिकालो, अपुव्वकालो य संखगुणियकमा[3] ॥१७९॥

अवरा मिच्छतियद्धा, अविरद तह देससंजमद्धा य।
छप्पि समा संखगुणा, तत्तो देसस्स गुणसेढी[4] ॥१८०॥

चरिमाबाहा तत्तो, पढमाबाहा य संखगुणियकमा।
तत्तो असंखगुणियो, चरिमट्ठिदिखंडओ णियमा[5] ॥१८१॥

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३२
२ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३३
३. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३३, १३४
४. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३४
५. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३५

पल्लस्स संखभागं, चरिमट्ठिदिखंडयं हवे जम्हा ।
तम्हा असंखगुणियं, चरिमट्ठिदिखंडयं होई ॥१८२॥

पढमे अवरो पल्लो, पढमुक्कस्सं च चरिमठिदिबंधो ।
पढमो चरिमं पढमट्ठिदिसंतं संखगुणियकमा[1] ॥१८३॥

अंतिमरसखडोत्करणकालतस्तु प्रथमोऽधिकः ।
चरमस्थितिखंडोत्करणकालः संख्यगुणितो हि ॥१७८॥

प्रथमस्थितिखंडोत्करणकालः साधिको भवेत् ततः ।
एकांतवृद्धिकालैः, अपूर्वकालश्च सख्यगुणितक्रमः ॥१७९॥

अवरा मिथ्यत्रिकाद्धा, अविरता तथा देशसंयमाद्धा च ।
षडपि समाः संख्यगुणा, ततो देशस्य गुणश्रेणी ॥१८०॥

चरमाबाधा ततः, प्रथमाबाधा च संख्यगुणितक्रमा ।
ततः असंख्यगुणितः, चरमस्थितिखंडको नियमात् ॥१८१॥

पल्यस्य संख्यभागं, चरमस्थितिखंडकं भवेत् यस्मात् ।
तस्मादसंख्यगुणितं, चरमं स्थितिखडकं भवति ॥१८२॥

प्रथमे अवरः पल्यः, प्रथमोत्कृष्टं च चरमस्थितिबंधः ।
प्रथमः चरमं प्रथमस्थितिसत्त्वं संख्यगुणितक्रमाणि ॥१८३॥

टीका – सर्व तै स्तोक तौ देशसयत का एकातवृद्धि काल का अत विषै सभवता जघन्य अनुभाग खडोत्करण काल है ।१। तातै किछू विशेष करि अधिक अपूर्व करण का प्रथम समय विषै सम्भवता उत्कृष्ट अनुभाग खडोत्करण काल है ।२। तातै सख्यात गुणा देशसयत का एकात वृद्धि काल का अत समय विषै संभवता जघन्य स्थिति काडकोत्करण काल है ।३।१७८।

तातै किछु विशेष करि अधिक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता उत्कृष्ट स्थिति खडोत्करण काल है ।४। तातै सख्यात गुणा एकांत वृद्धि का काल है ।५। तातै सख्यात गुणा अपूर्वकरण का काल है ।६।१७९।

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ १३५, १३७

तातै सख्यात गुणा मिथ्यात्व अर सम्यग्मिथ्यात्व अर सम्यक्त्व मोहनी, इन तीनो का उदय काल अर असयम अर देशसयम अर सकल सयम इन छहौ का जघन्य काल परस्पर समान है ।७। तातै सख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जाका आरभ भया अैसा देशसयम सम्बन्धी गुणश्रेणी आयाम है ।८।१८०।

तातै संख्यात गुणा एकांतवृद्धि का अंत समय विषै सम्भवते स्थिति बंध का जघन्य आबाधा काल है ।९। तातै संख्यात गुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवते स्थितिबध का उत्कृष्ट आबाधा काल है ।१०। इहा पर्यंत ए कहे सर्व काल, ते प्रत्येक अतर्मुहूर्त मात्र ही जानने। तातै असख्यात गुणा एकांतवृद्धिका अंत समय विषै सभवता जघन्य स्थिति काडक आयाम है ।११।१८१।

यहु कह्या अत विषै सभवता जघन्य स्थिति काडकायाम सो पल्य का संख्यातवां भाग मात्र है। तातै पूर्वोक्त अतर्मुहूर्त काल तै यहु अन्त खण्ड असख्यात गुणा कह्या है ।१८२।

तातै संख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता जघन्य स्थिति कांडक आयाम है ।१२। तातै सख्यात गुणा पल्य है ।१३। तातै संख्यात गुणा अपूर्व करण का प्रथम विषै सभवता पृथक्त्व सागर प्रमाण उत्कृष्ट स्थिति काडकायाम है ।१४। तातै सख्यात गुणा एकातवृद्धि का अंत समय विषै संभवता अैसा जघन्य स्थितिबध है ।१५। तातै सख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता अैसा उत्कृष्ट स्थितिबध है ।१६। तातै सख्यात गुणा एकातवृद्धि का अत समय विषै सभवता अैसा जघन्य स्थिति सत्त्व है ।१७। तातै संख्यातगुणा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता अैसा उत्कृष्ट स्थिति सत्त्व है ।१८।१८३। अैसे काल का अल्प बहुत्व के स्थान कहि।

देश संयम विषै परिणामनि की विशुद्धतारूप लब्धि, ताका अल्प बहुत्व कहिए है—

अवरवरदेसलद्धी, से काले मिच्छसंजमुववण्णे।
अवरादु अणंतगुणा, उक्कस्सा देसलद्धी दु[१] ॥१८४॥

अवरवरदेशलब्धिः, स्वकाले मिथ्यसंयममुपपन्ने।
अवरादनंतगुणा, उत्कृष्टा देशलब्धिस्तु ॥१८४॥

१. जयधवला भाग-१३, पृष्ठ स० १३९-१४१।

टीका – जो जीव देशसयम का घाती जो कर्म, ताके उदय के वश तै देश-सयम तै पडतो जो मिथ्यात्व के सन्मुख भया मनुष्य, ताके तिस देशसंयम का अत समय विषै जघन्य देशसंयम लब्धि है। बहुरि अनंत गुणी विशुद्धता करि देशसयम के उत्कृष्टपना कौ पाइ अनतर समय विषै सकल सयम कौ प्राप्त होसी अैसा मनुष्य कै उत्कृष्ट देशसयम लब्धि हो है। बहुरि जघन्य देशसयम के अविभाग प्रतिच्छेदनि तै अनतानत गुणा जीवराशि प्रमाण मात्र गुणकार करि गुणित उत्कृष्ट देशसयम के अविभाग प्रतिच्छेद है।

अवरे देसट्ठाणे, होंति अणंताणि फड्ढयाणि तदो।
छट्ठाणगदा सव्वे, लोयाणमसंखछट्ठाणा[1] ॥१८५॥

अवरे देशस्थाने, भवंत्यनन्तानि स्पर्धकानि ततः।
षट्स्थानगतानि सर्वाणि लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ॥१८५॥

टीका – सर्व तै जघन्य पूर्वोक्त देशसयम का स्थान, ता विषै स्पर्धक कहिए अविभाग प्रतिच्छेद अनतानत पाइए है। ते उत्कृष्ट देश सयम के अविभाग प्रति-च्छेदनि तै अनतानत गुणे घाटि हैं तौ भी सर्व जीवराशि तै अनंत गुणे है। बहुरि इस जघन्य स्थान तै लगाय असख्यात लोक मात्र देशसयम लब्धि के स्थान है। एक जीव कै एक काल विषै जो सभवै ताका नाम स्थान जानना। ते षट्स्थानपतित वृद्धि लीए है, सो इनिका अनुक्रम गोम्मट्टसार का ज्ञान मार्गणा अधिकार विषै पर्याय समास श्रुतज्ञान का स्थान वर्णन विषै जैसै कीया है तैसै जानना, सो एक अधिक सूच्यगुल कौ पाच बार मोडि परस्पर गुणै, जो प्रमाण होइ, तितने स्थाननि विषै जो एक बार षट्स्थानपतित वृद्धि पूर्ण होइ तौ देशसयत के असख्यात लोक प्रमाण सर्व स्थाननि केती बार होइ असै त्रैराशिक कीए देशसयत के स्थाननि विषै प्रतिपादित पूर्व कहे, तिनि विषै वा मिलि करि स्थानति विषै असख्यात लोक मात्र बार षट्स्थानपतित वृद्धि सभवै है।

तत्थय पडिवायगया, पडिवच्चगया त्ति अणुभयगया त्ति।
उवरुवरिलद्धिठाणा, लोयाणमसंखछट्ठाणा[2] ॥१८६॥

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १४३–१४६।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १४६, १४७, १४९।

तत्र च प्रतिपागता, प्रतिपद्यगता इति अनुभयगता इति ।
उपर्युपरि लब्धिस्थानानि, लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ।।१८६।।

टीका – तहा देशसयम के स्थान तीन प्रकार है – १ प्रतिपातगत, २ प्रतिपद्यमानगत, ३ अनुभयगत । तहा देशसयम तै भ्रष्ट होतै अत समय विषै सभवते जे स्थान, ते प्रतिपातगत है । बहुरि देशसयम के प्राप्त होतै प्रथम समय विषै सभवते जे स्थान ते प्रतिपद्यमानगत है । इन बिना अन्य समयनि विषै सभवते जे स्थान ते अनुभयगत है । ते उपरि उपरि है । सोई कहिए है–

देशसयम का जो जघन्य स्थान सब तै सभवते थोरी विशुद्धता युक्त सो तौ नीचै ही नीचै लिख्या । ताके ऊपरि तातै अनंतवा भाग मात्र अधिक विशुद्धता युक्त द्वितीय स्थान लिख्या । असै क्रम तै उपरि-उपरि उत्कृष्ट स्थान पर्यत रचना भई । तहां जघन्य स्थान आदि केतेइक नीचे के स्थान, ते तौ प्रतिपात रूप जानने । बहुरि तिनके ऊपरि जिनका कोई स्वामी नाही, असे असख्यात लोक मात्र स्थान षट्स्थान पतित वृद्धि लीएं अंतराल विषै होइ तब तिनके ऊपरि प्रतिपद्यमान स्थान पाइए है । बहुरि तिनके ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान षट्स्थान पतित वृद्धि लीएं अतराल विषै होंइ तब तिनके ऊपरि अनुभयगत स्थान पाइए है । तहा प्रतिपातस्थान थोरे है; तेऊ असंख्यात लोक मात्र है अर तिनतै असख्यात लोक गुणे प्रतिपद्यमान स्थान है । अर तिनतै असख्यात लोक गुणे अनुभय स्थान है ।

णरतिरिये तिरियणरे, अवरं अवरं वरं वरं तिसु वि ।
लोयाणमसंखेज्जा, छट्ठाणा होंति तम्मज्झे ।।१८७।।

नरतिरश्चि तिर्यग्नरे, अवरं अवरं वरं वर त्रिष्वपि ।
लोकानामसंख्येयानि, षट्स्थानानि भवति तन्मध्ये ।।१८७।।

टीका – देशसयम का सर्व तै जघन्य प्रतिपात स्थान मनुष्य कै हो हैं । तातै ऊपरि पट्स्थान पतित वृद्धि लीए असख्यात लोक मात्र प्रतिपात स्थान असे है, जे मनुष्य ही कै होइ तातै परै तिर्यच कै सभवता जघन्य प्रतिपात स्थान होइ । तातै उपरि मनुष्य वा तिर्यच दोऊनि कै सभवै असे तो असख्यात लोक प्रमाण स्थान होइ उपरि तिर्यंच का उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हैं । तातै परै मनुष्य ही कै संभवै असे असंख्यात लोक मात्र स्थान होइ, उपरितन मनुष्य का उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान है । ताके

उपरि असख्यात लोक मात्र स्थान असे है जिनका कोऊ स्वामी नाही, ते किसी जीव के न होइ तिनका अतराल करि ताते परै मनुष्य का जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान है, ताते परै मनुष्य कै होइ असे असख्यात लोक मात्र स्थान होइ परै तिर्यञ्च का जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान है। ताते परै मनुष्य वा तिर्यच के सभवते असे असख्यात लोक मात्र स्थान होइ उपरि तिर्यच का उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान हो है। ताते उपरि मनुष्य ही के सभवते असख्यात लोक मात्र स्थान होइ। उपरि मनुष्य का उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान है। ताते परै असख्यात लोक मात्र स्थान असे है जिनका कोऊ स्वामी नाही, तिनि का अतराल करि परै मनुष्य का जघन्य अनुभय स्थान हो है। ताते परै मनुष्य ही के सभवते असख्यात लोक मात्र स्थान होइ। उपरि तिर्यंच का जघन्य अनुभय स्थान है। ताते परै मनुष्य वा तिर्यच के सभवते असख्यात लोक मात्र स्थान होइ। उपरि तिर्यंच का उत्कृष्ट अनुभय स्थान है। ताते परै मनुष्य ही के सभवते असख्यात लोक मात्र स्थान होइ। उपरि मनुष्य का उत्कृष्ट अनुभय स्थान हो है। असे क्रम ते मनुष्य तिर्यंच का जघन्य अर जघन्य, उत्कृष्ट अर उत्कृष्ट प्रत्येक प्रतिपात, प्रतिपद्यमान, अनुभय स्थान विषै सभवै है, ते जानने। अर बीचि मे अतराल स्थान जानने, ते स्थान असख्यात लोक मात्र षट्स्थानपतित वृद्धि युक्त हैं। असे गाथा का अर्थ समझना।

पडिवाददुगवरवरं, मिच्छे अयदे अणुभयगजहण्णं।
मिच्छवरबिदियसमये, तत्तिरियवरं तु सट्ठाणे[1] ॥१८८॥

प्रतिपातद्विकावरवरं, मिथ्ये अयते अनुभयगजघन्य।
मिथ्यावरद्वितीयसमये, तत्तिर्यग्वरं तु स्वस्थाने ॥१८८॥

टीका – प्रतिपात नाम सयम ते भ्रष्ट होने का है, सो सक्लेश परिणामनि ते सयम ते भ्रष्ट होते देशसयत का अत समय विषै प्रतिपात स्थान हो है। अर प्राप्त भया का नाम प्रतिपद्यमान स्थान है। सो देश सयत का प्रथम समय विषै प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर दोऊ रहित का नाम अनुभय है। सो देश सयत के इनि विना अन्य समयनि विषै अनुभय स्थान हो है। तहा मिथ्यात्व कौ सन्मुख मनुष्य के जघन्य प्रतिपात स्थान हो है अर मिथ्यात्व कौ सन्मुख तिर्यंच के जघन्य प्रतिपात स्थान हो है। अर असंयत कौ सन्मुख तिर्यंच के उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हो है। अर

---
१ जयधवला भाग–१३, पृ०१४६ से १५३।

असयत कौ सन्मुख मनुष्य कै उत्कृष्ट प्रतिपात स्थान हो है। अर मिथ्यात्व तै चढ्या मनुष्य कै जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर मिथ्यात्व तै चढ्या तिर्यंच कै जघन्य प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर असयत तै चढ्या तिर्यंच कै उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर असयत तै चढ्या मनुष्य के उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान हो है। अर मिथ्यादृष्टी तै भया देशसयत का दूसरा समय विषै मनुष्य कै जघन्य अनुभय स्थान हो है। अर मिथ्यादृष्टी तै भया देशसयत का दूसरा समय विषै तिर्यच कै जघन्य अनुभय स्थान हो है। अर असंयत तै भया देशसयत कै एकात वृद्धि का अन्त समय विषै तिर्यच कै उत्कृष्ट अनुभय स्थान हो है। अर असंयत तै भया देशसंयत कै एकात वृद्धि का अन्त समय विषै सकल सयम कौ सन्मुख मनुष्य कै उत्कृष्ट स्थान हो है।

ए बारह स्थानक कहे, तिन विषै पूर्व-पूर्व स्थान की विशुद्धता तै उत्तर उत्तर स्थान विषै असख्यात लोक बार भई जो षट्स्थान पतित वृद्धि, ताकरि वर्धमान अैसी अनंत गुणी विशुद्धता क्रम तै जाननी। बहुरि इतना विशेष जानना–

प्रतिपात स्थाननि विषै मनुष्य का जघन्य तै लगाय तिर्यंच का अनुत्कृष्ट स्थान पर्यंत जे स्थान है, ते तौ मिथ्यात्व कौ समुख जीव ही कै होंइ। अर तिर्यंच का उत्कृष्ट तै लगाय मनुष्य का उत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान है ते असयत का सन्मुख जीव कै ही हो हैं। बहुरि प्रतिपद्यमान स्थाननि विषै मनुष्य का जघन्य तै लगाय तिर्यंच का अनुत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान है, ते तौ मिथ्यादृष्टी तै देशसंयत भया, ताही कै होंइ अर तिर्यच का उत्कृष्ट तै लगाय मनुष्य का उत्कृष्ट पर्यत जे स्थान है, ते असंयत भया ताकै होइ। बहुरि अनुभय स्थाननि विषै मनुष्य का जघन्य तै लगाय तिर्यंच का अनुत्कृष्ट पर्यंत जे स्थान है, ते तौ मिथ्यादृष्टी तै भया देशसंयत ही कै होइ। अर तिर्यंच का उत्कृष्ट तै लगाय मनुष्य का उत्कृष्ट पर्यत जे स्थान है, ते असयत तै भया देश सयत ही कै होंइ।

॥ इति देशचारित्राभिधानप्ररूपणं समाप्तम् ॥

अथ सकल चारित्र कौं प्ररूप है—

सयलचरित्तं तिविहं, खयउवसमि उवसमं च खइयं च ।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा, उवसमसम्मेण गिण्हदो पढमं[1] ॥१८९॥

सकलचारित्रं त्रिविधं, क्षायोपशमिकं औपशमिकं च क्षायिकं च ।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव, उपशमसम्येन गृह्णन् प्रथमम् ॥१८९॥

टीका – सकल चारित्र तीन प्रकार है - क्षायोपशमिक, औपशमिक, क्षायिक। तहां पहला क्षायोपशमिक चारित्र सातवे वा छठे गुणस्थान विषै पाइए है, ताकौं जो जीव उपशम सम्यक्त्व सहित ग्रहण करै है, सो मिथ्यात्व तै ग्रहण करै है, ताका तौ सर्व विधान प्रथमोपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति विषै कह्या है, सो जानना । क्षायोपशम चारित्र कौ ग्रहता जीव पहलै अप्रमत्त गुणस्थान कौ प्राप्त हो है ।

वेदगजोगो मिच्छो, अविरददेसो य दोण्णिकरणेण ।
देसवदं वा गिण्हदि, गुणसेढी णत्थि तक्करणे ॥१९०॥

वेदकयोगो मिथ्यो, अविरतदेशश्च द्विकरणेन ।
देशव्रतमिव गृह्णाति, गुणश्रेणी नास्ति तत्करणे ॥१९०॥

टीका – वेदक सम्यक्त्व सहित क्षायोपशम चारित्र कौ मिथ्यादृष्टी वा अविरत वा देश सयत जीव है, सो देशव्रत ग्रहणवत् अधःप्रवृत्त वा अपूर्वकरण इन दोय ही करण करि ग्रहै है । तहा करण विषै गुणश्रेणी नाही है । सकल सयम का ग्रहण समय तै लगाय गुणश्रेणी हो है ।

एत्तो उवरिं विरदे, देसो वा होदि अप्पबहुगो त्ति ।
देसो त्ति य तट्ठाणे, विरदो त्ति य होदि वत्तव्वं ॥१९१॥

अत उपरि विरते, देश इव भवति अल्पबहुकत्वमिति ।
देश इति तत्स्थाने, विरत इति च भवति वक्तव्यम् ॥१९१॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १०७

टीका – इहा तै ऊपरि अल्प बहुत्व पर्यंत जैसै पूर्वं देश विरत विषै व्याख्यान किया है तैसे सर्व व्याख्यान इहा जानि ।

विशेष इतना – वहा जहां देश विरत कह्या है, इहां तहां सकल विरत कहना सो कहिए है । अध प्रवृत्त करणादिक के काल का अल्पबहुत्व अर प्रथमोपशम सम्यक्त्ववत् जो हजारौ स्थितिखण्ड भए अपूर्वकरण कौ समाप्त करि अनतर समय विषै सकल सयम कौ ग्रहै तहां प्रथम समय तै लगाय एकात वृद्धि का अत समय पर्यत समय-समय असख्यातगुणा अैसा असख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण द्रव्य कौ ग्रहि अवस्थिति गुणश्रेणी करै है । तहा बहुत स्थितिकाडक भए एकात वृद्धि का अत समय पीछे अनंतर समय तै लगाय स्वस्थान सकलसयमी हो है । तहां स्थिति अनुभाग काडक का घात नाही है, गुणश्रेणी है ही । जो जीव सकल सयम तै भ्रष्ट होइ असंयत होइ शीघ्र ही सकल सयम कौ प्राप्त होइ ताकै करण वा स्थिति काडकादि न हो है अर जो सकल संयम तै भ्रष्ट होइ मिथ्यात्व कौ प्राप्त होइ तहा बडा अतर्मुहूर्त वा बहुत काल रहि स्थिति, अनुभाग बधाय बहुरि वेदक सम्यक्त्व सहित सकल संयम कौ ग्रहै है ताकै दोय करण वा स्थितिकांडक घातादि हो है । बहुरि स्वस्थान सकल संयमी विशुद्धता की वृद्धि हानि तै चतुःस्थान पतित वृद्धि हानि लीए द्रव्य कौ अपकर्षण करि समय समय गुणश्रेणी करै है । बहुरि जघन्य अनुभाग खडोत्करण कालादिक अठारह स्थाननि विषै पूर्वोक्तवत् तहा अल्प बहुत्व जाननां ।

अवरे विरदट्ठाणे, होंति अणंताणि फड्ढयाणि तदो ।
छट्ठाणगया सव्वे, लोयाणमसंख छट्ठाणा ।।१९२।।

अवरे विरतस्थाने, भवंत्यनंतानि स्पर्धकानि ततः ।
षट्स्थानगतानि सर्वाणि, लोकानामसंख्यं षट्स्थानानि ।।१९२।।

टीका – सकल सयम का जघन्य स्थान विषै अनतानत स्पर्धक कहिए अविभाग प्रतिच्छेद है, ते जीवराशि तै अनंत गुणे जानने । तातै गोम्मटसार का ज्ञानाधिकार विषै पर्यायसमास के स्थानननि का अनुक्रम जैसै कह्या है तैसे षट्स्थान पतित वृद्धि लीए असंख्यात लोकमात्र स्थान है, तिनविषै असख्यात लोक मात्र वार षट्स्थान पतित वृद्धि संभवै है ।

तत्थ य पडिवादगया, पडिवज्जगया त्ति अणुभयगया त्ति ।
उवरुवरि लद्धिठाणा, लोयाणमसंखछट्ठाणा[1] ।।१९३।।

तत्र च प्रतिपातगता, प्रतिपद्यगता इति अनुभयगता इति ।
उपर्युपरि लब्धिस्थानानि, लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ।।१९३।।

टीका – तहा प्रतिपातगत, प्रतिपद्यमानगत और अनुभयगत अैसे उपरि-उपरि तीन प्रकार स्थान है ।

भावार्थ यहु – नीचैं ही नीचैं तौ जघन्य स्थान लिख्या, ताके ऊपरि अनत-भाग वृद्धि रूप द्वितीय स्थान लिख्या, ताके ऊपरि अनत भाग वृद्धिरूप तृतीय स्थान लिख्या । अैसे पर्याय समास श्रुतज्ञान के स्थानवत् स्थाननि की अनुक्रम तै ऊपरि-ऊपरि रचना करनी । इहा अनत भागादिक वृद्धि विशुद्धता की अपेक्षा जाननी । तहा नीचे के स्थान प्रतिपातगत है । प्रतिपद्यमान तिनके ऊपरि है । अनुभयगत तिनके भी ऊपरिवर्ती हैं । ते प्रत्येक असंख्यात लोक मात्र है । तहा असख्यात लोक मात्र बार षट्स्थान वृद्धि सभवै है ।

पडिवादगया मिच्छं, अयदे देसे य होंति उवरुवरिं ।
पत्तेयमसंखमिदा, लोयाणमसंखछट्ठाणा[2] ।।१९४।।

प्रतिपातगतानि मिथ्ये, अयते देशे च भवंति उपर्युपरि ।
प्रत्येकमसंख्यमितानि, लोकानामसंख्यषट्स्थानानि ।।१९४।।

टीका – तहा प्रतिपातगत स्थान सकल सयम तै भ्रष्ट होते ताका अत समय विषै पाइए है । तहा जघन्य तै लगाय असख्यात लोक मात्र स्थान तौ मिथ्यात्व कौं जो सन्मुख होइ तिनकै होइ । तिनके ऊपरि असख्यात लोक मात्र स्थान, जे जीव असयत कौ सन्मुख होइ तिनकै हो है । तिनके ऊपरि असख्यात लोक मात्र स्थान, जे जीव देशसयत कौ सन्मुख होइ तिनके हो है । अैसे प्रतिपात स्थान तीन प्रकार है । तहां तीनो जायगा जघन्य स्थान तौ यथायोग्य तीव्र सक्लेशवाला कै अर उत्कृष्ट स्थान मद सक्लेशवाला कै हो है । बहुरि एक विषै असख्यात लोक मात्र षट्स्थान सभवै है ।

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १७५ से १७६

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १८२, १८३

तत्तो पडिवज्जगया, अज्जमिलेच्छे मिलेच्छअज्जे य ।
कमसो अवरं अवरं, वरं वरं होदि संखं वा[1] ॥१९५॥

ततः प्रतिपद्यगता, आर्यम्लेच्छे म्लेच्छार्ये च ।
क्रमशोऽवरमवरं, वरं वरं भवति संख्यं वा ॥१९५॥

टीका – प्रतिपात स्थाननि के ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थान असे है जिनका कोऊ स्वामी नाही, तिनिका अंतराल करि प्रतिपद्यमान स्थान हो है । सो सकल सयम की प्राप्ति का समय विषै जे संभवै ते प्रतिपद्यमान स्थान जानना । तहां प्रथम आर्य खड का मनुष्य मिथ्यादृष्टी तै सकल सयमी भया, ताके जघन्य स्थान हो है । बहुरि ताके ऊपरि असख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाय **म्लेच्छ खंड का मनुष्य मिथ्यादृष्टी तै सकल संयमी भया, ताका जघन्य स्थान हो है** । ताके ऊपरि असख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ **म्लेच्छ खंड का मनुष्य देशसंयत तै सकल संयमी भया, ताका उत्कृष्ट स्थान हो है** । बहुरि तातै असख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ आर्य खड का मनुष्य देश सयत तै सकल सयमी भया, ताका उत्कृष्ट स्थान हो है । इहा असख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ कह्या तहा असख्यात लोक मात्र षट्स्थान पतित वृद्धि जाननी । बहुरि इहा आर्य म्लेच्छ के जघन्य अर मध्य के बीचि के जे स्थान है, ते मिथ्यादृष्टी तै वा असयत तै वा देशसयत तै सकल सयमी भए तिनके यथासभव जानने । जातै किछू नियम कह्या नाही ।

बहुरि इहां कोऊ कहै कि म्लेच्छ खंड का उपज्या मनुष्य कै सकल संयम इहां कह्या, सो कैसै संभवै ?

ताका समाधान–जो म्लेच्छ मनुष्य चक्रवर्ती का साथि आर्यखंड विषै आवै अर तिनसेती चक्रवर्ती आदिक कै विवाहादि संबंध पाइए है, तिनकै दीक्षा का ग्रहण संभवै है । अथवा म्लेच्छ की कन्या जे चक्रवर्ती आदि परणे, तिनके जे पुत्र होइ, तिनकौ माता पक्ष करि म्लेच्छ कहिए, तिनकै दीक्षा ग्रहण सभवै है ।

तत्तोणुभयट्ठाणे, सामइयछेदजुगलपरिहारे ।
पडिबद्धा परिणामा असंखलोगप्पमा होंति[2] ॥१९६॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १८३ से १८५
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १८५, १८६

ततोऽनुभयस्थाने, सामायिकछेदयुगलपरिहारे ।
प्रतिबद्धाः परिणामा, असंख्यलोकप्रमा भवंति ।।१९६।।

टीका – तिस उत्कृष्ट प्रतिपद्यमान स्थान के ऊपरि असख्यात लोक मात्र स्थान असे है, जिनिका कोऊ स्वामी नाही, तिनका अंतराल करि उपरि अनुभय स्थान है सो पूर्वोक्त दोऊ बिना अन्य समयनि विषै जे संभवै ते अनुभय स्थान है ।

तहा प्रथम मिथ्यादृष्टि तै सकल संयमी भया, ताकै दूसरा समय विषै सामायिक छेदोपस्थापन सबधी जघन्य स्थान हो है । ताके ऊपरि असख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ परिहारविशुद्धि का जघन्य स्थान हो है सो यहु स्थान तिस परिहार विशुद्धि सयम तै छूटि सामायिक छेदोपस्थापन कौ सन्मुख होतै ताका अंत समय विषै हो है । इहा इस सयम तै छूटि सकल संयमी ही रह्या, तातै याकौ सकल सयम की अपेक्षा अनुभय स्थान कह्या, प्रतिपात स्थान न कह्या । बहुरि ताके ऊपरि असख्यात लोक मात्र षट्स्थान जाइ परिहारविशुद्धि का उत्कृप्ट स्थान हो है। बहुरि ताके ऊपरि असख्यात लोक मात्र पट्स्थान जाइ सामायिक छेदोपस्थापन का उत्कृष्ट स्थान हो है । सो यहु क्षपक अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषै सभवै है, असा जानना । असें जघन्य तै लगाय उत्कृष्ट पर्यंत कहे जे अनुभय स्थान ते सर्व सामायिक छेदोस्थापन सवधी सभवै है । परिहारविशुद्धि सवधी स्थान कहे ते सामायिक छेदोपस्थापन विषै भी अर तहा भी सभवै है, असा जानना ।

बहुरि असे ए स्थान कहे, तिनिविषै प्रतिपात स्थान थोरे है, तेऊ असख्यात लोक मात्र हैं । तिनितै असख्यात लोक गुणे प्रतिपद्यमान स्थान है । तिनतै असख्यात लोक गुणे अनुभय स्थान है । इनि सबनि कौ मिलाएं भी असख्यात लोक प्रमाण ही सकल सयम के स्थान हो है, जातै असख्यात के भेद बहुत है ।

तत्तो य सुहुमसंजम, पडिवज्जय संखसमयमेत्ता हु ।
तत्तो दु जहाखादं, एयविहं संजमे होदि[1] ।।१९७।।

ततश्च सूक्ष्मसंयमं, प्रतिवर्ज्य संख्यसमयमात्रा हि ।
ततस्तु यथाख्यातमेकविधं संयमे भवति ।।१९७।।

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ १ ८६.

टीका – तिस सामायिक छेदोपस्थापन का उत्कृष्ट स्थान तै उपरि असंख्यात लोक मात्र स्थाननि का अंतराल करि उपशम श्रेणि तै उतरतै अनिवृत्तिकरण के सन्मुख जीव कै अपना अंत समय विषै संभवता ऐसा सूक्ष्म सांपराय का जघन्य स्थान हो है। ताके ऊपरि असंख्यात समय मात्र स्थान जाइ क्षपक सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषै संभवता ऐसा सूक्ष्मसांपराय का उत्कृष्ट स्थान हो है। तातै ऊपरि असंख्यात लोक मात्र स्थाननि का अंतराल करि यथाख्यात चारित्र का एक स्थान हो है। सो यहु सबनि तै अनंतगुणी विशुद्धता लीए उपशांतकषाय, क्षीणकषाय, सयोगी, अयोगी कै हो है। यामै सर्व कषायनि का सर्वथा उपशम वा क्षय है, तातै जघन्य, मध्य, उत्कृष्ट भेद ही नाहीं।

पडचरिमे गहणादीससये पडिवाददुगमणुभयं तु।
तम्मज्झे उवरिमगुणगहणाहिमुहे य देसं वा ॥१९८॥

पडिवादादीतिदयं, उवरुवरिमसंखलोगगुणिदकमा।
अंतरछक्कपमाणं, असंखलोगा हु देसं वा ॥१९९॥

मिच्छयददेसभिण्णे, पडिवादट्ठाणगे वरं अवरं ॥
तप्पाउग्गकिलिट्ठे, तिव्वकिलिट्ठे कमे चरिमे ॥२००॥

पडिवज्जजहण्णदुगं, मिच्छे उक्कस्सजुगलमविदेसे।
उवरिं सामइयदुगं, तम्मज्झे होंति परिहारा ॥२०१॥

परिहारस्स जहण्णं, सामयियदुगे पडंत चरिमम्हि।
तज्जेट्ठं सट्ठाणे, सव्वविसुद्धस्स तस्सेव ॥२०२॥

सामयियदुगजहण्णं, ओघं अणियट्टिखवगचरिमम्हि।
चरिमणियट्टिस्सुवरिं, पडंत सुहुमस्स सुहुमवरं ॥२०३॥

खवगसुहुमस्स चरिमे, वरं जहाखादमोघ जेट्ठं तं।
पडिवाददुगा सव्वे, सामाइयछेदपडिबद्धा ॥२०४॥

पतनच्चरमे ग्रहणादिसमये प्रतिपाताद्विकमनुभयं तु।
तन्मध्ये उपरिगुणग्रहणाभिमुखे च देशमिव ॥१९८॥

प्रतिपातादित्रितयं, उपर्युपरितनमसंख्यलोकगुणितक्रमं ।
अंतरषट्कप्रमाणमसंख्यलोका हि देशमिव ॥१९९॥

मिथ्यायतदेशभिन्ने, प्रतिपातस्थानके वरमवरम् ।
तत्प्रायोग्यक्लिष्टे, तीव्रक्लिष्टे क्रमेण चरमे ॥२००॥

प्रतिपद्यजघन्यद्विकं, मिथ्ये उत्कृष्टयुगलमपि देशे ।
उपरि सामायिकद्विकं, तन्मध्ये भवंति परिहाराणि ॥२०१॥

परिहारस्य जघन्यं, सामायिकद्विके पततः चरमे ।
तज्ज्येष्ठं स्वस्थाने, सर्वविशुद्धस्य तस्येव ॥२०२॥

सामायिकद्विकजघन्यमोघं अनिवृत्तिक्षपकचरमे ।
चरमानिवृत्तेरुपरि, पततः सूक्ष्मस्य सूक्ष्मवरम् ॥२०३॥

क्षपकसूक्ष्मस्य चरमे, वरं यथाख्यातमोघज्येष्ठं तत् ।
प्रतिपातद्विकं सर्वाणि, सामायिकच्छेदप्रतिबद्धानि ॥२०४॥

टीका – सयम तै पडतै अत समय विषै अर, सयम कौं ग्रहतै प्रथम समय विषै क्रमतै प्रतिपात अर प्रतिपद्यमान ए दोय स्थान है। बहुरि इनके बीचि वा ऊपरि के गुणस्थान कौं सन्मुख होते अनुभय स्थान हो है, सो देश सयतवत् इहा भी जानना ॥१९८॥

प्रतिपात आदि तीन प्रकार स्थान अपने अपने जघन्यतै उत्कृष्ट पर्यत उपरि उपरि असख्यात लोक गुणा क्रम लीए है। तिन छहो विषै प्रत्येक असख्यात लोक मात्र बार षट्स्थानवृद्धि देशसंयतवत् जाननी ॥१९९॥

तहा प्रतिपातस्थान मिथ्यात्व, असयत, देशसयत कौ सन्मुख होने की अपेक्षा तीन भेद लीए है। तहा जघन्य स्थान तौ तीव्र सक्लेशवाला कै संयम का अत समय विषै हो है अर उत्कृष्ट स्थान यथायोग्य मद सक्लेशवाला कै हो है ॥२००॥

प्रतिपद्यमान स्थान आर्य म्लेच्छ की अपेक्षा दोय प्रकार, सो तिनका जघन्य तौ मिथ्यादृष्टि तै संयमी भया ताकै हो है। उत्कृष्ट देशसंयत तै सयमी भया

ताकै हो है। तिनके ऊपरि अनुभय स्थान है, ते सामायिक छेदोपस्थापना सबधी है। तिनका जघन्य उत्कृष्ट के बीचि परिहारविशुद्धि के स्थान है ॥२०१॥

परिहारविशुद्धि का जघन्य स्थान तौ सामायिक छेदोपस्थापना विषै पडता जीव कै ताका अंत समय विषै हो है। अर ताका उत्कृष्ट स्थान सर्व तै विशुद्ध अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती तिस ही जीव कै एकांत वृद्धि का अत समय विषै हो है ॥२०२॥

सामायिक छेदोपस्थापना का जघन्य स्थान मिथ्यात्व कौ सन्मुख जीव कै समय का अत समय विषै जो जघन्य संयम का स्थान सो ही है। ताका उत्कृष्ट स्थान अनिवृत्तिकरण क्षपक श्रेणिवाला, ताका अत समय विषै हो है। बहुरि उपशम श्रेणी विषै पडतै सूक्ष्मसापराय का अत समय विषै अनिवृत्तिकरण कौं सन्मुख होतै सूक्ष्मसांपराय का जघन्य स्थान हो है ॥२०३॥

क्षपक सूक्ष्मसापराय का क्षीणकषाय के सन्मुख भया ताका अत समय विषै सूक्ष्मसापराय का उत्कृष्ट स्थान हो है। बहुरि यथाख्यात चारित्र सर्व सामान्य चारित्र का उत्कृष्ट स्थान अभेद रूप है। बहुरि प्रतिपात प्रतिपद्यमान के जे स्थान कहे, ते सर्व ही सामायिक, छेदोपस्थापना सबधी ही जानने। जातै सकल संयम तै भ्रष्ट होतै अत समय विषै अर सकल सयम कौ ग्रहतै प्रथम समय विषै सामायिक छेदोपस्थापना सयम ही हो है। अन्य परिहार विशुद्धि आदि न हो है।

इहां कोऊ कहै – उपशमश्रेणी विषै मरण की अपेक्षा सूक्ष्मसापराय यथाख्यात तै पडि, देव पर्याय सबधी असयत विषै पडना हो है, तहा प्रतिपात का अभाव कैसै कहिए ?

ताका समाधान – इहा सयम का घातक कषायनि के उदय तै वा गुणस्थान के काल का क्षय होने तै जो पडना होइ ताहीकी विवक्षा है। पर्याय नाश तै पडना होई, ताकी विवक्षा नाही। जो यहु विवक्षा होइ तौ ताका प्रतिपात विषै देव संबंधी असयत ही के सन्मुखपना सभवै है, जातै सकल सयम ही विषै जो मूवा, ताकै अन्य गति वा मिथ्यात्व देशसयतपना सभवै नाही है। अैसै प्रसंग पाइ सामायिक आदि पच प्रकार सकलचारित्र के स्थान कहे। मुख्यपने प्रमत्त गुणस्थान विषै सभवता जो क्षायोपशमिक सकल चारित्र, ताका प्ररूपण कीया।

॥ इति क्षायोपशमिकसकलचारित्रप्ररूपणं समाप्तम् ॥

चारित्रोपशमना अधिकार

अथ उपशात कीए है सकल दोष जिनि, असे उपशात कषाय वीतराग, तिनहि प्रणाम करि उपशम चारित्र का विधान कहिए है–

उवसमचरियाहिमुहो, वेदगसम्मो अणं विजोयित्ता ।
अंतोमुहुत्तकालं, अधापवत्तोऽपमत्तो य ॥२०५॥

उपशमचरित्रामुखो, वेदकसम्यक् अनं वियोज्यम् ।
अंतर्मुहूर्तकालं, अधाप्रवृत्तोऽप्रमत्तश्च ॥२०५॥

टीका – उपशम चारित्र के सन्मुख भया ऐसा वेदक सम्यग्दृष्टि जीव, सो पहिलै पूर्वोक्त विधान तै अनतानुबधी का विसंयोजन करि अतर्मूहूर्त काल पर्यंत अध.-प्रवृत्त अप्रमत्त कहिए स्वस्थान अप्रमत्त हो है । तहा प्रमत्त-अप्रमत्त विषै हजारो बार गमनागमन करि पीछै अप्रमत्त विषै विश्राम करै है । तहां पीछै कोई जीव तीन दर्शन मोह कौ खिपाइ क्षायिक सम्यग्दृष्टी होइ चारित्र मोह के उपशमन का प्रारभ करै, ताकै तौ क्षायिक सम्यक्त्व होने का विधान पूर्वै कह्या है सो जानना । बहुरि कोई जीव द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सहित उपशम श्रेणी चढै, ताकै दर्शन मोह के उप-शमन का विधान कहिए है ।

तत्तो तियरणविहिणा, दंसणमोहं समं खु उवसमदि ।
सम्मत्तुप्पत्तिं वा, अण्णं च गुणसेढिकरण विही ॥२०६॥

ततः त्रिकरणविधिना दर्शनमोहं समं खलु उपशमयति ।
सम्यक्त्वोत्पत्तिमिव अन्यं च गुणश्रेणिकरणं विधिः ॥२०६॥

टीका – स्वस्थान अप्रमत्त विषै अंतर्मुहूर्त विश्राम करि तहां पीछै तीन करण विधि करि युगपत् दर्शन मोह कौं उपशमावै है । तहा अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय प्रथमोपशम सम्यक्त्ववत् गुण संक्रमण बिना अन्य स्थिति अनुभाग काडक का घात वा गुणश्रेणि निर्जरा आदि सर्व विधान जानना । अर अनंतानुबंधी का विसयोजन याकै हो है, ताविषै भी सर्व स्थिति खडनादि पूर्वोक्तवत् जानना ।

दंसणमोहुवसमणं, तक्खवणं वा हु होदि णवरिं तु ।
गुणसंकमो ण विज्जदि, विज्झद वाधापवत्तं च[1] ॥२०७॥

दर्शनमोहोपशमनं, तत्क्षपणं वा हि भवति नवरि तु ।
गुणसंक्रमो न विद्यते, विध्यातं वा अधःप्रवृत्तं च ॥२०७॥

टीका – चारित्र मोह के उपशमावने कौ सन्मुख भया जीव कै दर्शन मोह का उपशम होइ वा ताकी क्षपणा होइ । तहा उपशम विधान विषै केवल गुण सक्रमण नाही है । विध्यात सक्रमण है अथवा अध प्रवृत्त सक्रम है, सो विशेष आगे कहेगे ।

ठिदिसत्तमपुव्वदुगे, संखगुणूणं तु पढमदो चरिमं ।
उवसामण अणियट्टीसंखाभागासु तीदासु[2] ॥२०८॥

स्थितिसत्त्वमपूर्वद्विके, संख्यगुणोनं तु प्रथमतः चरमम् ।
उपशामनमनिवृत्तिसंख्यभागेष्वतीतेषु ॥२०८॥

टीका – अपूर्वकरण वा अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय सम्बन्धी स्थिति सत्वतै अत समय विषै स्थिति सत्व है, सो काडक घात करने तै सख्यात गुणा घाटि हो है ।

बहुरि अनिवृत्तिकरण काल कौ सख्यात का भाग दीजिए । तहा बहुभाग व्यतीत भएं अवशेष एक भाग रहै है सो कहै है—

सम्मस्स असंखेज्जा, समयपबद्धाणुदीरणा होदि ।
तत्तो मुहुत्तअंते, दंसणमोहंतरं कुणई[3] ॥२०९॥

सम्यस्य असंख्येयानां समयप्रबद्धानामुदीरणा भवति ।
ततो मुहूर्तातः दर्शनमोहांतरं करोति ॥२०९॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जो साधिक अपूर्व अनिवृत्ति का काल मात्र आयाम धरे गलितावशेष गुणश्रेणी का आरभ कीया था, सो अनिवृत्तिकरण का बहुभाग पर्यंत प्रवर्तै है । तहा अपकर्षण कीया द्रव्य कौ पल्य का असख्या-

१. षट्खण्डागम ' धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २८६
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०४ । षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ, २८६
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०५

तवा भाग का भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थिति विषै दीजिए है । अवशेष एक भाग कौ असंख्यात लोक का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै एक भाग उदयावली विषै दीजिए है । सो इहा उदयावली विषै दीया द्रव्य, समयप्रबद्ध के असख्यातवे भाग मात्र आवै है । बहुरि अनिवृत्तिकरण काल का सख्यातवां भाग अवशेष रहैं सम्यक्त्व मोहनी का द्रव्य कौ अपकर्षण करि याकौ पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थिति विषै देना । अवशेष एक भाग कौ पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ तहां बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै दीजिए है । एक भाग उदयावली विषै दीजिए है । सो इहां उदयावली विषै दीया जो उदीरणा द्रव्य, सो असख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है, जातै असा कह्या है – जहां असंख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होइ तहां भागहार पल्य का असख्यातवां भाग मात्र है । असंख्यात लोक प्रमाण नाही है । बहुरि यातै परै अतर्मुहूर्त काल व्यतीत भए दर्शन मोह का अंतर करै है ।

अंतोमुहुत्तमेत्तं, आवलिमेत्तं च सम्मतियठाणं ।
मोत्तूण य पढमट्ठिदि, दंसणमोहंतरं कुणइ[1] ॥२१०॥

अंतर्मुहूर्तमात्रं आवलिमात्रं च सम्यक्त्वत्रयस्थानम् ।
मुक्त्वा च प्रथमस्थिति दर्शनमोहांतरं करोति ॥२१०॥

टीका – नीचे के वा ऊपरि के निषेक छोडि बीचि के केतेइक निषेकनि का द्रव्य कौ अन्य निषेकनि विषै निक्षेपण करि तिनि निषेकनि का अभाव करना, सो अतर करन कहिए है; सो जाका उदय पाइए असी जो सम्यक्त्व मोहनी ताकी तौ अतर्मुहूर्त मात्र अर उदय रहित मिश्र वा मिथ्यात्व तिनिकी आवली मात्र जो प्रथम स्थिति तीहि प्रमाण नीचै निषेकनि कौ छोडि ताके ऊपरि अंतर्मुहूर्त काल प्रमाण निषेक, तिनिका अतर कहिए अभाव करै है । तहा सम्यक्त्व मोहनी का अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवा भाग मात्र है । गुणश्रेणी शीर्ष अर तातै सख्यात गुणे, तातै उपरिवर्ती उपरितन स्थिति के निषेक, तिनिका अतर करै है । अर मिथ्यात्व, मिश्रमोहनी का गले पीछे अवशेष रह्या जो सर्व गुणश्रेणी आयाम अर तातै संख्यात गुणे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनका अंतर करै है । सो जितने निषेकनि का अतर

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०५ ।

कीया ताके प्रमाण का नाम अतरायाम है। तिस अ तरायाम के नीचे जे निषेक छोडे, तिस प्रमाण प्रथम स्थिति है अर अतरायाम के उपरिवर्ती जे निषेक तिसका नाम द्वितीय स्थिति है। तहा द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक तौ तीनो ही प्रकृतिनि के समान है, जातै सो प्रथम निषेक अतरायाम के अतरि पाइए। अर प्रथम स्थिति का अत निषेक समान नाही है, जातै प्रथम स्थिति का प्रमाण हीनाधिक है।

सम्मत्तसयडिपढमट्ठिदिम्मि संछुहदि दंसणतियाणं।
उक्कीरयं तु दव्वं, बंधाभावादु मिच्छस्स[1] ॥२११॥

सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितौ संपातयति दर्शनत्रयाणाम्।
उत्कीर्णं तु द्रव्यं, बंधाभावात् मिथ्यस्य ॥२११॥

टीका – तहां जिनि निषेकनि का अभाव कीजिए है तिन तीनों दर्शन मोह की प्रकृति के निषेकनि के द्रव्य कौ उदयरूप जो सम्यक्त्व मोहनी, ताकी प्रथम ही स्थिति विषै निक्षेपण करै है। जातै जहा नवीन बंध हो है, तहा उत्कर्षण करि द्वितीय स्थिति विषै भी निक्षेपण हो है। सो इहां सातवे गुणस्थान विषै दर्शन मोह का बध है नाही, तातै द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण नाही करै है।

बिदियट्ठिदिस्स दव्वं, उक्कट्टिय देदि सम्मपढमम्मि।
बिदियट्ठिदिम्हि तस्स, अणुक्कीरिज्जंतमाणम्हि[2] ॥२१२॥

द्वितीयस्थितेर्द्रव्यमपकर्ष्य ददाति सम्यक्त्वप्रथमे।
द्वितीयस्थितौ तस्यानुत्कीर्यमाणे ॥२१२॥

टीका – इहा अतरकरण काल का प्रथमादि समयनि विषै गुणश्रेणी निर्जरा के अर्थि उदयावली तै बाह्य निषेकनि का अपकर्षण कीया जो द्रव्य, ताकौ पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ, बहुभाग तौ अतरायाम कौं छांडि ताके उपरिवर्ती जो उपरितन द्वितीय स्थिति ताविषै निक्षेपण करि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ बहुभाग कौ सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति रूप इहा गुणश्रेणी आयाम, ता विषै निक्षेपण करै है। अवशेष एक भाग उदयावली विषै निक्षेपण करै है। ऐसै अंतर करने का काल का प्रथम समय विषै फालिद्रव्य का अर

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०५
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०६

अपकृष्ट द्रव्य का निक्षेपण करिए है। तहां जिन निषेकनि का अंतर कीजिए है, तिनका द्रव्य अन्य निषेकनि विषै अंतर करने का काल अंतर्मुहूर्त है। ताकरि निक्षेपण करिए है। तहां तिनिका द्रव्य तिस काल के प्रथम समय विषै जेता निक्षेपण कीजिए, सो प्रथम फालि का द्रव्य दूसरे समय जेता निक्षेपण करिए सो दूसरी फालि का, द्रव्य ऐसै क्रम तै अंत समय विषै अवशेष रह्या तिनका द्रव्य कौ निक्षेपण करिए है, सो अंत फालि का द्रव्य जानना। बहुरि जो गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य, सो अपकृष्ट द्रव्य कहिए है। सो प्रथम समय सम्बन्धी फालिद्रव्य वा अपकृष्ट द्रव्य तै द्वितीयादि समय सम्बन्धी फालि द्रव्य का वा अपकृष्ट द्रव्य का प्रमाण समय समय प्रति असख्यात गुणा है। ताके निक्षेपण करने का विधान जैसै प्रथम समय विषै कह्या तैसै ही जानना।

सम्मत्तपयडिपढमट्ठिदीसु सरिसाण मिच्छमिस्साणं।
ठिदिदव्वं सम्मस्स य, सरिसणिसेयम्हि संकमदि[1] ॥२१३॥

सम्यक्त्वप्रकृतिप्रथमस्थितिषु सदृशानां मिथ्यमिश्राणाम्।
स्थितिद्रव्यं सम्यस्य च, सदृशनिषेके संक्रामति ॥२१३॥

टीका – मिथ्यात्व अर मिश्रमोहनी की प्रथम स्थिति के ऊपरि जो अंतरायाम के निषेक सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति के समानवर्ती पर्यंत पाइए हैं, तिनिका द्रव्य कौं अपने अपने समानवर्ती जे सम्यक्त्व मोहनी के निषेक, तिन विषैं ही निक्षेपण करै है। तहां द्रव्य देने का विधान नाहीं है।

भावार्थ ऐसा – जो मिथ्यात्व मिश्रमोहनी की प्रथम स्थिति तौ आवली मात्र है। अर सम्यक्त्व मोहनी की अंतर्मुहूर्त मात्र है। ताकौ छोडि ऊपरि के निषेकनि का अंतर करिए है। तहां मिथ्यात्व मिश्रमोहनी की प्रथम स्थिति के ऊपरि जो अंतरायाम का पहिला निषेक था, ताका द्रव्य कौ सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषै जो आवली तै ऊपरि पहिला निषेक है, तीहि विषै निक्षेपण कीया। ऐसै ही ताके अंतरायाम के दूसरा निषेक का द्रव्य कौ सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषै आवली तै ऊपरि दूसरा निषेक है तीहि विषै निक्षेपण कीया ऐसै सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति का अंत निषेक के समान जो मिथ्यात्व, मिश्र के अंतरायाम

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०६।

का निषेक, तीहि पर्यंत जे निषेक, तिनिका निक्षेपरण अपने सम्यक्त्वमोहनी की प्रथम स्थिति के निषेकनि विषै जानना, तहा द्रव्य विभाग नाही है । बहुरि तिसके ऊपरि तीनों ही दर्शनमोह के अ तरायाम के निषेकनि का द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार फालिरूप करि सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषै गुणश्रेणी विषै उदयावली विषै विभाग करि निक्षेपरण करिए है ।

जावंतरस्स दुचरिमफालिं पावे इमो कमो ताव ।
चरिमतिदंसणदव्वं, छुहेदि सम्मस्स पढमम्हि[1] ॥२१४॥

यावदंतरस्य द्विचरमफालिं प्राप्ते अयं क्रमस्तावत् ।
चरमत्रिदर्शनद्रव्यं, क्षेपयति सम्यस्य प्रथमे ॥२१४॥

टीका – यावत् अंतरकरण काल का द्विचरम समयवर्ती जो अंत की द्विचरम फालि सो प्राप्त होइ तहा पर्यंत फालि द्रव्य अर अपकृष्ट द्रव्य, ताके निक्षेपण करने का यहु ही पूर्वोक्त अनुक्रम जानना । बहुरि अतरकरण काल का अंत समय संबंधी जो दर्शनमोहत्रिक की अंत फालि का द्रव्य है, सो अर तहां अपकृष्ट द्रव्य है सो भी सर्व सम्यक्त्वमोहनी की प्रथम स्थिति ही विषै निक्षेपरण करिए है ।

भावार्थ यहु – पूर्वै जैसे अपकर्षण कीया द्रव्य विषै बहुभाग उपरितन स्थिति विषै देने कहे थे, तैसे इहा अपकर्षण कीया द्रव्य का बहुभाग द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपरण करना ।

बिदियट्ठिदिस्स दव्वं, पढमट्ठिदिमेदि जाव आवलिया ।
पडिआवलिया चिट्ठदि, सम्मत्तादिमठिदी ताव[2] ॥२१५॥

द्वितीयस्थितेर्द्रव्यं, प्रथमस्थितिमेति यावदावलिका ।
प्रत्यावलिका तिष्ठति, सम्यक्त्वादिमस्थितिः तावत् ॥२१५॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषै उदय आवली अर प्रत्यावलो ए दोय आवली अवशेष रहै, तहा पर्यंत द्वितीय स्थिति का द्रव्य कौं अपकर्षण का वश तै प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण करिए है । तहा ही पर्यंत दर्शन मोह की गुण-

१. जयधवला भाग—१३, पृष्ठ २०६
२. जयधवला भाग १३, पृष्ठ स २०६

श्रेणी प्रवर्तै है। सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषै दोय आवली अवशेष रहै दर्शन मोह की गुणश्रेणी नाही हो है। अन्य कर्मनि की सकल चारित्र संबंधी गुणश्रेणी तहा भी प्रवर्तै है। बहुरि सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति विषै एक समय अधिक आवली अवशेष रहै, तहा पर्यंत सम्यक्त्व मोहनी की उदीरणा प्रवर्तै है। ऊपरि के निषेकनि का द्रव्य कौ उदयावली विषै दीजिए है। बहुरि तिस प्रथम स्थिति का अंत समय विषै अनिवृत्तिकरण काल समाप्त हो है।

सम्मादिठिदिज्झीणे, मिच्छद्दव्वादु सम्मसंमिस्से।
गुणसंकमो ण णियमा, विज्झादो संकमो होदि[1] ॥२१६॥

सम्यगादिस्थितिक्षीणे, मिथ्यद्रव्यात् सम्यसंमिश्रे।
गुणसंक्रमो न नियमात्, विध्यासः संक्रमो भवति ॥२१६॥

टीका – सम्यक्त्व मोहनी की प्रथम स्थिति का क्षय होतै ताके अनंतरि अंतरायाम का प्रथम समय प्राप्त होइ तीहि विषै द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी हो है। तहां गुणसंक्रमण तौ नियम तै इहा है नाही, तातै मिथ्यात्व के द्रव्य कौ सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग मात्र जो विध्यात संक्रमण भागहार, ताका भाग देइ तहां एक भाग मात्र मिथ्यात्व के द्रव्य कौ मिश्र - सम्यक्त्व मोहनी विषै निक्षेपण करै है। बहुरि तातै द्वितीयादि समयनि विषै विशेष घटता क्रम लीए निक्षेपण करै है।

सम्मत्तुप्पत्तीए, गुणसंकमपूरणस्स कालादो।
संखेज्जगुणं कालं, विसोहिवड्ढीहिं वड्ढदि हु[2] ॥२१७॥

सम्यक्त्वोत्पत्तौ, गुणसंक्रमपूरणस्य कालात्।
संख्येयगुणं कालं, विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धते हि ॥२१७॥

टीका – प्रथमोपशम सम्यक्त्व की उत्पत्ति विषै पूर्वै गुणसंक्रम पूरण काल अंतर्मुहूर्त मात्र कह्या था, तातै संख्यातगुणा काल पर्यंत यहु द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी प्रथम समय तै लगाय समय समय प्रति अनंतगुणी विशुद्धता करि बधै है। ऐसै इहां एकांत विशुद्धता की वृद्धि का काल अंतर्मुहूर्त मात्र जानना।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०७

२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २०७

तेण परं हायदि वा, वड्ढदि तव्वड्ढिदो विसुद्धीहिं ।
उवसंतदंसणतियो, होदि पमत्तापमत्तेसु[1] ॥२१८॥

तेन परं हीयते वा, वर्धते तद्वृद्धितो विशुद्धिभिः ।
उपशांतदर्शनत्रिकः भवति प्रमत्ताप्रमत्तयोः ॥२१८॥

टीका – तिस एकांत वृद्धि काल तैं पीछैं विशुद्धता करि घटै वा बधै वा हानि वृद्धि बिना जैसा का तैसा रहै किछू नियम नाही । असैं उपशमाए हैं तीन दर्शन मोह जानैं, असा जीव बहुत बार प्रमत्त अप्रमत्तनि विषै उलटनि करि प्राप्त हो है ।

एवं पमत्तमियरं, परावत्तिसहस्सयं तु कादूण ।
इगवीसमोहणीयं, उवसमदि ण अण्णपयडीसु[2] ॥२१९॥

एवं प्रमत्तमितरं, परावृत्तिसहस्रकं तु कृत्वा ।
एकविंशमोहनीयं, उपशमयति न अन्यप्रकृतिषु ॥२१९॥

टीका – असैं अप्रमत्त तैं प्रमत विषै, प्रमत्त तै अप्रमत्त विषै हजारो बार उलटनि करि अनंतानुबंधी चतुष्क बिना अवशेष इकईस चारित्र मोह की प्रकृति के उपशमावने का उद्यम करै है । अन्य प्रकृतिनि का उपशम होता नाही, जातैं तिनकै उपशमकरण नाही है ।

तिकरणबंधोसरणं, कमकरणं देसघादिकरणं च ।
अंतरकरणं उवसमकरणं उवसामणे होंति ॥२२०॥

त्रिकरणं बंधापसरणं, क्रमकरणं देशघातिकरणं च ।
अंतरकरणमुपशमकरणं उपशामने भवंति ॥२२०॥

टीका – १ अधः करण, २ अपूर्वकरण, ३ अनिवृत्तिकरण ए तीन करण अर ४ स्थितिबंधापसरण, ५ क्रमकरण, ६ देशघातिकरण, ७ अंतरकरण, ८ उपशम करण असैं आठ अधिकार चारित्रमोह के उपशम विधान विषै पाइए है । तहां अधः

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ स २०८ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २१० ।

करण कौ सातिशय अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती मुनि करै है । ताका लक्षण वा ता करि-कीया कार्य जैसे प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौ सन्मुख होतै कहे है, तैसे इहां भी जानना ।

विशेष इतना – इहा संयमी कै सभवै असी प्रकृतिनि का बध उदय कहना । अर अनतानुबधी चतुष्क, नरक-तिर्यंच आयु बिना अन्य प्रकृतिनि का सत्त्व कहना ।

बिदियकरणादिसमये, उवसंततिदंसणे जहण्णेण ।
पल्लस्स संखभागं, उक्कस्स सायरपुधत्तं[1] ॥२२१॥

द्वितीयकरणादिसमये, उपशांतत्रिदर्शने जघन्येन ।
पल्यस्य संख्यभागं, उत्कृष्टं सागरपृथक्त्वम् ॥२२१॥

टीका – दूसरा अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टी कैं जघन्य स्थिति काडक आयाम पल्य का संख्यातवा भाग मात्र है । उत्कृष्ट पृथक्त्व सागर प्रमाण है ।

ठिदिखंडयं तु खइये, वरावरं पल्लसंखभागो दु ।
ठिदिबंधोसरणं पुण, वरावरं तत्तियं होदि[2] ॥२२२॥

स्थितिखडकं तु क्षायिके, वरावरं पल्यसंख्यभागस्तु ।
स्थितिबंधापसरणं पुनः, वरावरं तावत्कं भवति ॥२२२॥

टीका – तहां ही अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै क्षायिक सम्यग्दृष्टि कै जघन्य वा उत्कृष्ट स्थिति काडक आयाम पल्य के संख्यातवे भाग मात्र है । जातै दर्शन मोह की क्षपणा का काल विषै बहुत स्थिति घटाई है । अर स्थिति के अनुसारि काडक हो है, तथापि जघन्य तै उत्कृष्ट सख्यात गुणा है । बहुरि उपशम वा क्षायिक सम्यग्दृष्टि कै स्थितिबधापसरण पल्य का सख्यातवां भाग मात्र है, तथापि जघन्य तै उत्कृष्ट सख्यात गुणा है ।

असुहाणं रसखंडमणंतभागाण खंडमियराणं ।
अन्तोकोडाकोडी, सत्तं बंधं च तट्ठाणे[3] ॥२२३॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२३ ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२२ ।
३ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२४ ।

अशुभाना रसखंडमनंतभागानां खंडमितरेषाम् ।
अन्तः कोटीकोटिः, सत्त्वं बन्धश्च तत्स्थाने ।।२२३।।

टीका – अशुभ प्रकृतिनि का जो पूर्वं अनुभाग था, ताकौ अनत का भाग दीए तहा एक अनुभाग काडक विषै बहुभाग मात्र अनुभाग का खडन हो है, एकभाग मात्र अवशेष रहै है। विशुद्धता करि शुभ प्रकृतिनि का अनुभाग खडन न हो है अैसा जानना। इहां प्रथमादि निषेकनि का अनुभाग दिखाइए है–

तहां द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नाना गुणहानि, दो गुणहानि, अन्योन्याभ्यस्त राशि का प्रमाण पहले जानना। सो इनिका कर्मनि की स्थिति अपेक्षा तौ गोम्मटसार का योग मार्गणा अधिकार विषै वा कर्म स्थिति रचना अधिकार विषै वर्णन किया है, सो जानना। अर अनुभाग अपेक्षा तिन सब द्रव्यादिकनि का प्रत्येक प्रमाण यथायोग्य अनंत है। सो आयु बिना सात कर्मनि विषै विवक्षित कर्म के परमाणू का प्रमाण रूप जो द्रव्य ताकौ स्थिति संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए प्रथम गुणहानि का प्रथम निषेक का प्रमाण आवै है। याकों अनुभाग संबंधी साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए प्रथम निषेकनि विषै प्रथम गुणहानि का जो प्रथम स्पर्धक, ताकी प्रथम वर्गणा के परमाणूनि का प्रमाण आवै है। सब तै थोरे जिस परमाणू विषै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद पाइए, ताका नाम जघन्य वर्ग है, सो अैसे जेते परमाणू होंइ, तिनके समूह का नाम प्रथम वर्गणा है। बहुरि यातै द्वितीयादि वर्गणानि विषै एक एक चय घटता क्रम करि परमाणूनि का प्रमाण है। बहुरि द्वितीयादि गुणहानिनि विषै पूर्व गुणहानि सबधी वर्गणा तै आधा आधा क्रम लीए वर्गणा द्रव्य का प्रमाण है। अैसै प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा द्रव्य कौ अनुभाग सबधी अन्योन्याभ्यस्त राशि तै आधा प्रमाण का भाग दीए अत गुणहानि की प्रथम वर्गणा का द्रव्य हो है। यामै क्रम तै एक एक चय घटने तै एक घाटि गुणहानि मात्र चय घटैं अत गुणहानि की अत वर्गणा का द्रव्य हो है। इहां अैसा जानना –

प्रथम गुणहानि को प्रथम वर्गणा तै लगाय यावत् वर्गनि विषै एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधने का क्रम होइ, तहा पर्यत तिनि वर्गणानि के समूह का नाम प्रथम स्पर्धक है, तातै ऊपरि प्रथम स्पर्धक की वर्गणा के वर्गनि तै द्वितीय तृतीय चतुर्थादिक स्पर्धक की प्रथम वर्गणानि का वर्गनि विषै क्रम तै दूणे, तिगुणे, चौगुणे अविभाग प्रतिच्छेद होइ। उपरि द्वितीयादि वर्गणानि का वर्ग एक एक अविभाग प्रतिच्छेद

बधता क्रम लीए जानने। ऐसा अनुक्रम अंत गुणहानि का अंत[१] स्पर्धक की अंत वर्गणा पर्यंत जानना। ऐसे प्रथम निषेक विषै विभाग दीया। बहुरि स्थिति के द्वितीयादि निषेक क्रम तै चय घटता क्रम लीए है। गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम लीए हैं, तिन सबनि विषै ऐसा ही अनुभाग अपेक्षा क्रम जानना। इहा स्थिति की अंत गुणहानि का अंत निषेक विषै जो द्रव्य का प्रमाण तहा भी पूर्वोक्त प्रकार प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा के द्रव्य का प्रमाण ल्यावना। बहुरि क्रम तै पूर्वोक्त प्रकार अंत गुणहानि की अंत वर्गणा का द्रव्य ल्यावना ऐसे जो अनुभाग पाइए है, ताकौ अनंत का भाग दीए तहा बहुभाग मात्र अनुभाग कांडक है। अवशेष जो एक भाग मात्र रह्या,ताकौ अनंत का भाग देइ तहा एक भाग कौ अतिस्थापनरूप राखि, अवशेष बहुभाग रूप जिनि परमाणूनि का अनुभाग खंडन किया था, तिन परमाणूनि कौ परिणमावै है। इहा ऐसा जानना –

अनुभाग के स्पर्धक कहे थे, तिनकौ अनंत का भाग दीए तहा बहुभाग मात्र स्पर्धकनि के परमाणू है, तिनकौ अवशेष रहै एक भाग मात्र स्पर्धक, तिनिका अनंतवां भाग मात्र स्पर्धक ऊपरिके छोडि नीचे के जे बहुभाग मात्र स्पर्धक, तिनि विषै निक्षेपण करै है, ऐसी क्रिया एक अनुभाग कांडक का काल विषै हो है। बहुरि तिस ही अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थितिबंध अर स्थिति सत्व अंत कोडाकोडी सागर प्रमाण है। तहा विशेष इतना स्थितिबंध तै स्थिति सत्व संख्यात गुणा है।

उदयावलिस्स बाहिं गलिदवसेसा अपुव्वअणियट्टी।
सुहुमद्धादो अहिया, गुणसेढी होंति तट्ठाणे[२] ॥२२४॥

उदयावलेर्बाह्य, गलितावशेषा अपूर्वानिवृत्तेः।
सूक्ष्माद्धातो अधिका, गुणश्रेणी भवंति तत्स्थाने ॥२२४॥

टीका – तिस अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै उदयावली तै बाह्य गलितावशेष गुणश्रेणी का आरंभ भया। तिस गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय इनके मिलाये काल तै उपशांत कषाय के काल का संख्यातवा भाग मात्र अधिक जानना। तहा आयु बिना सात कर्मनि के उदयावली तै बाह्य निषेकनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार उदयावली विषै अर तातै

---

१ 'अंत' शब्द के स्थान पर ख, घ हस्तलिखित प्रतियो मे 'अनंत' शब्द मिलता है।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२४

ऊपरि गुणश्रेणी आयाम विषै अर तातै उपरितन स्थिति विषै दीजिए है । बहुरि नपुंसक वेदादिक का गुण सक्रम लीए भी इहा ही प्रारम्भ भया । जिनिका बध पाइए है, तिनिका गुण सक्रम है नाही । बहुरि ग्रैसे ही अपूर्वकरण के द्वितीयादि समयनि विषै भी स्थिति काडकादि विधान जानना ।

पढमे छट्ठे चरिमे, बंधे दुग तीस चदुर वोच्छिण्णा ।
छण्णोकसायउदयो, अपुव्वचरिमम्हि वोच्छिण्णा[1] ॥२२५॥

प्रथमे षट्के चरमे, बंधे द्विकं त्रिशत् चतस्रो व्युच्छिन्नाः ।
षण्णोकषायोदया, अपूर्वचरमे व्युच्छिन्नाः ॥२२५॥

टीका – अपूर्वकरण के काल का सात भाग, तहा प्रथम भाग विषै निद्रा प्रचला दोय अर छठा भाग विषै तीर्थकर आदि तीस अर सातवां भाग विषै हास्यादि च्यारि ग्रैसे छत्तीस प्रकृति बध तै व्युच्छित्ति भई । बहुरि अपूर्वकरण का अत समय विषै छह हास्यादि नोकषाय उदय तै व्युच्छित्ति भई ।

अणियट्टिस्स य पढमे, अण्णट्ठिदिखंडपहुदिमारवई ।
उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणा तत्थ वोच्छिण्णा[2] ॥२२६॥

अनिवृत्तेः च प्रथमे, अन्यस्थितिखंडप्रभृतिमारभते ।
उपशमनं निधत्तिः, निकाचना तत्र व्युच्छिन्ना ॥२२६॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै अपूर्वकरण का अत समय संबधी तै और ही प्रमाण धरै स्थितिखंड, स्थितिबधापसरण, अनुभाग खड प्रारभिए है । बहुरि तहा ही सर्व कर्मनि का उपशम, निधत्ति, निकाचन इनि तीनि करणनि की व्युच्छित्ति भई । उदय विषै प्राप्त करने कौ अयोग्य सो उपशम कहिए । अर सक्रमण विषै प्राप्त करने कौ अयोग्य सो निधत्ति कहिए । उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण, उदय विषै प्राप्त करने कौ अयोग्य सो निकाचना कहिए, सो इहां सर्व कर्मनि कौ उदयादि विषै निक्षेपण करनै कौ समर्थपना पाइए है, ग्रैसा जानना ।

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२५ से २२८।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २२९ से २३१ ।

अन्तोकोडाकोडी, अन्तोकोडी य सत्त बंधं च ।
सत्तण्हं पयडीणं, अणियट्टीकरणपढमम्हि[1] ॥२२७॥

अंतः कोटीकोटिः, अंतः कोटिश्च सत्त्वं बंधश्च ।
सप्तानां प्रकृतीनां, अनिवृत्तिकरणप्रथमे ॥२२७॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै आयु बिना सात प्रकृतिनि का स्थिति सत्त्व यथायोग्य अंतः कोडाकोडी सागर मात्र है । अर स्थितिबंध अंत कोडी सागर मात्र है । अपूर्वकरण विषै घटाए तै इतना अवशेष रहै है ।

ठिदिबंधसहस्सगदे, संखेज्जा बादर गदा भागा ।
तत्थ असण्णिस्स ठिदिसरिस ठिदीबंधणं होदि[2] ॥२२८॥

स्थितिबंधसहस्रगते, संख्येया बादरे गता भागाः ।
तत्र असंज्ञिनः स्थितिसदृश, स्थितिबंधनं भवति ॥२२८॥

टीका –अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय तै लगाय एक एक अंतर्मुहूर्त विषै पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध घटै असै स्थितिबंधापसरण का क्रम करि हजारों स्थिति बंध भए अनिवृत्तिकरण काल का संख्यात भागनि विषै बहुभाग व्यतीत भए एक भाग अवशेष रहै असंज्ञी का स्थितिबंध समान स्थितिबंध हो है । सो असंज्ञी कै सत्तर कोडाकोडी सागर उत्कृष्ट स्थिति का धारक दर्शन मोह का हजार सागर स्थितिबंध है, तिस का प्रतिभाग करि हजार सागर कौ सात का भाग देइ तहा एक भाग तै दूणा वीसियनि का, तिगुणा तीसियनि का, चौगुणा चारित्र मोह का स्थितिबंध हो है । जिनकी बीस कोडाकोडी की उत्कृष्ट स्थिति असे नाम गोत्र तिनकौ वीसिय कहिए । जिनकी तीस कोडाकोडी की उत्कृष्ट स्थिति असे ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, वेदनीय तिनकौं तीसीय कहिए । जाकी चालीस कोडाकोडी सागर की उत्कृष्ट स्थिति असा चारित्र मोह, ताकौ चालीसिय कहिए । असी संज्ञा आगें भी जानि लेनी ।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, पत्तेयं चदुर तिय वि एएदि ।
ठिदिबंधसमं होदि हु, ठिदिबंधमणुक्कमेणेव[3] ॥२२९॥

---

१ जयधवला भाग– १३, पृष्ठ २३१, २३२ ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २३२ ।
३ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २३३ ।

स्थितिबन्धपृथक्त्वगते, प्रत्येकं चतुस्त्रिद्विएकेति ।
स्थितिबंधसमो भवति हि, स्थितिबंधोऽनुक्रमेणैव ।।२२९।।

टीका – तातैं परैं पृथक्त्व कहिए संख्यात हजार स्थितिबंध भए सौ सागर कौ सात का भाग देइ तहा एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का असा चौद्री समान स्थितिबध हो है । बहुरि तातैं परैं सख्यात हजार स्थितिबध भएं पचास सागर कौ सात का भाग देइ तहां एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का, असा तेद्री समान स्थितिबध हो है । बहुरि तातैं परैं सख्यात हजार स्थितिबध भए पचीस सागर कौ सात का भाग देइ तहा एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का असा बेद्री समान स्थितिबध हो है । तातैं परैं सख्यात हजार स्थितिबंध भए एक सागर कौ सात का भाग देइ तहा एक भाग तैं दूणा बीसिय का, तिगुणा तीसिय का, चौगुणा चालीसिय का असा एकेद्री समान स्थितिबध हो है ।

एइंदियट्ठिदीदो, संखसहस्से गदे दु ठिदिबंधो ।
पल्लेक्कदिवड्ढदुगे, ठिदिबंधो बीसियतियाणं[1] ।।२३०।।

एकेंद्रियस्थितितः, संख्यसहस्रे गते तु स्थितिबन्धः ।
पल्यैकद्व्यर्धद्विके, स्थितिबंधो विंशतित्रिकरणम् ।।२३०।।

टीका – तिस एकेद्री समान स्थिति बध तैं परैं सख्यात हजार स्थिति बध भए बीसिय का एक पल्य, तीसिय का ड्योढ पल्य, चालीसिय का दोय पल्य प्रमाण स्थितिबध हो है । इहा असज्ञी कैं सत्तर कोडाकोडी सागर स्थिति का धारक दर्शन मोह का हजार सागर बध होइ तौ बीस कोडाकोडी स्थिति धारक नाम गोत्रनि का केता होइ ? असैं त्रैराशिक कीए हजार सागर को दोय सातवा भाग आवै तैं असैं औरनि विषैं भी त्रैराशिक विधान जानना ।

पल्लस्स संखभागं, संखगुणूणं असंखगुणहीणं ।
बंधोसरणं पल्लं, पल्लासंखंति संखवस्सं त्ति ।।२३१।।

पल्यस्य संख्यभागं, संख्यगुणोनमसंख्यगुणहीनम् ।
बंधापसरणं पल्यं, पल्यासंख्यमिति संख्यवर्षमिति ।।२३१।।

---

1. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ २३४ ।

टीका – अंतः कोडाकोडी स्थिति बध तै लगाय यावत् पल्यमात्र स्थिति बध भया तावत् स्थिति बंधापसरण का प्रमाण पल्य के सख्यातवे भाग मात्र है । बहुरि पल्य मात्र स्थिति बध तै लगाय दूरापकृष्टि स्थिति होइ, तहां पल्य कौ सख्यात का भाग देइ बहुभाग मात्र स्थिति बधापसरण हो है । पल्यस्थिति के अनतरि दूरापकृष्टि स्थिति पर्यंत क्रम तै संख्यात गुणा घाटि असा पल्य का संख्यातवा भाग मात्र स्थिति बध हो है । असा जानना । बहुरि दूरापकृष्टि स्थिति तै लगाय यावत् संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध होइ तहा पल्य कौ असंख्यात का भाग दीजिए बहुभाग मात्र स्थिति बधापसरण है । दूरापकृष्टि तै लगाय सख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति पर्यंत क्रम तै असख्यात गुणी घाटि असे पल्य के असंख्यातवै भाग मात्र स्थिति बंध हो है, असा जानना । एक स्थिति बधापसरण काल विषै जितना स्थिति बंध घटया सो तौ स्थिति बंधापसरण जानना अर ताकौ घट तै जितना स्थितिबध होइ, सो तहा स्थितिबंध जानना ।

एवं पल्ला जादा, बीसीया तीसिया य मोहो य ।
पल्लासंखं च कमे, बन्धेण य बीसियतियाओ[1] ।।२३२।।

एवं पल्ये जाते, वीसिया तीसिया च मोहश्च ।
पल्यासंख्यं च क्रमे, बंधेन च बीसियत्रिकाः ।।२३२।।

टीका – तिस पल्य स्थिति तै परै बीसिय, तीसिय मोहनीय का स्थिति बध है, सो क्रमकरणकाल का अत विषै पल्य का असख्यातवा भाग मात्र है । सोई कहिए है–

बीसियादिकनि का पल्य, ड्योढ पल्य, दोय पल्य स्थितिबध कै परै बीसियनि का तौ पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र अर तीसिय मोह का पल्य का संख्यातवा भाग मात्र आयाम धरै असे सख्यात हजार स्थितिबधापसरण गए वीसियनि का पल्य के सख्यातवे भाग मात्र, तीसीयनि का पल्य मात्र, मोह का त्रिभाग अधिक पल्य मात्र स्थितिबध एक काल विषै हो है । बहुरि तातै परै बीसीय, तीसीयनि का पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र मोह का पल्य का सख्यातवा भाग मात्र आयाम धरै असे सख्यात हजार स्थितिबधापसरण गए बीसिय, तीसियनि का पल्य के सख्यातवे भाग मात्र, मोह का पल्य मात्र स्थिति बंध हो है ।

---

[1] जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४० ।

इहा विशेष इतना-बीसियकै तै तीसिय का स्थितिबध सख्यात गुणा हो है। बहुरि तातै परै तीनो ही कै पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै असे सख्यात हजार स्थिति बधापसरण गए नाम गोत्र का दूरापकृष्टि है नाम जाका असा पल्य का सख्यातवां भागमात्र अर तीसिय मोह का यथायोग्य पल्य का सख्यातवां भागमात्र स्थितिबध भया।

इहा विशेष इतना--तीसीय के तै मोह का स्थितिबध सख्यात गुणा है। बहुरि तातै परै बीसीय का पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र अर तीसीय मोह का पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र प्रमाण धरै असे सख्यात हजार स्थिति बधापसरण गए बीसियनि का पल्य का असख्यातवा भाग मात्र तीसियनि का दूरापकृष्टि है नाम जाका असा पल्य का सख्यातवा भाग मात्र अर मोह का यथायोग्य पल्य का संख्यातवा भाग मात्र स्थितिबंध युगपत् हो है। इहा तीसीयकै तै चालीसिय का स्थितिबध संख्यात गुणा जानना। बहुरि तातै परै बीसीय, तीसीयनि का पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र मोह का पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र प्रमाण धरै असे संख्यात हजार स्थितिबधापसरण गए बीसीय तीसीयनि का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र मोह का दूरापकृष्टि है नाम जाका असा अत का पल्य का संख्यातवा भाग मात्र स्थितिबध हो है। इहा बीसीयकै तै तीसीय का स्थितिबंध असख्यात गुणा जानना। बहुरि तातै परै तीन्यो ही का पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र प्रमाण लीए असे सख्यात हजार स्थितिबधापसरण गएं तीनों ही का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र स्थितिबध हो है। इहां बीसीय के तै तीसीय का, तीसीय के तै मोह का स्थितिबध असख्यात गुणा जानना। इहा पर्यंत तौ असे अनुक्रम तै बध हो है।

आगे अन्य अनुक्रम हो है, सो दिखाइए है।

मोहगपल्लासंखट्ठिदिबन्धसहस्सगेसु तीदेसु ।
मोहो तीसिय हेट्ठा, असंखगुणहीणयं होदि[1] ॥२३३॥

मोहगपल्यासंख्यस्थितिबंधसहस्रेकष्वतीतेषु ।
मोहः तीसियं अधस्तना, असंख्यगुणहीनकं भवति ॥२३३॥

टीका – तिस पल्य के असख्यातवे भाग मात्र स्थितिबध तै परै पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै असे सख्यात हजार स्थितिबध गएं पूर्व स्थिति

---

१. जयधवला भाग-१३, पृष्ठ २४४।

बंध तै असख्यात गुणा घटता असा पल्य का असख्यातवां भाग मात्र स्थितिबध तीनों का हो है। तहा स्तोक तौ बीसीयनि का, तातै असख्यात गुणा मोह का, तातै असख्यात गुणा तीसीयनि का स्थितिबध जानना। इहां विशुद्धता विशेष तै तीसीयनि तै मोह का घटता स्थितिबधरूप क्रम भया।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे बीसियाण हेट्ठावि।
एक्कसराहो मोहो, असंखगुणहीणयं होदि[1] ॥२३४॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते बीसियानां अधस्तनापि।
एकसदृशः मोहोऽसंख्यगुणहीनको भवति ॥२३४॥

टीका – तातै परै पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै असे संख्यात हजार स्थितिबंध गए तीनों का पल्य का असख्यातवां भाग मात्र स्थितिबध हो है। तहा स्तोक मोह का, तातै असख्यात गुणा बीसियनि का, तातै असंख्यात गुणा तीसियनि का स्थितिबध जानना। इहा विशुद्धता विशेष तै बीसियनि का तै भी मोह का घटता स्थितिबधरूप क्रम भया।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे वेयणीयहेट्ठादु।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति[2] ॥२३५॥

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वेदनीयाधस्तनात्।
तीसियघातित्रिका, असख्यगुणहीनका भवंति ॥२३५॥

टीका – तातै परै पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै असे संख्यात हजार स्थितिबधापसरण गएं तीनो का पल्य का असख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है। तहा स्तोक मोह का, तातै असख्यात गुणा बीसीयनि का, तातै असख्यात गुणा तीसीयनि विषै तीन घातियनि का, तातै असख्यात गुणा वेदनीय का स्थितिबंध हो है। इहा विशुद्धता विशेष तै साता वेदनीय तै तीन घातिया कर्मनि का स्थितिबध घटता भया।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे बीसियाण हेट्ठादु।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति[3] ॥२३६॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४४।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४५।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४६।

तावन्मात्रे बंधे, समतीते बीसियानामधस्तनात् ।
तीसियघातित्रिका, असंख्यगुणहीनका भवंति ।।२३६।।

टीका – तातै परै पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै संख्यात हजार स्थितिबंध भए मोहादिक का पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थितिबंध हो है । तहां स्तोक मोह का, तातै असंख्यात गुणा तीसियनि का, तातै असंख्यात गुणा बीसीयनि का, तातै ड्योढा वेदनीय का स्थितिबध जानना, इहा विशुद्धता विशेष तै अैसा क्रम भया ।

तक्काले वेयणियं, णामागोदादु साहियं होदि ।
इदि मोहतीसवीसियवेयणियाणं कमो जादो[1] ।।२३७।।

तत्तकाले वेदनीयं नामगोत्रतः साधिकं भवति ।
इति मोहतीसवीसियवेदनीयानां क्रमो जातः ।।२३७।।

टीका – तीहिं क्रमकरण काल विषै नाम गोत्रके तै वेदनीय का साधिक बंध भया, सो इस ही अनुक्रम लीए अतर्मुहूर्त पर्यत पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र आयाम धरै सख्यात हजार स्थितिबधापसरण भए क्रमकरण काल का अत समय विषै अपने अपने योग्य पल्य का असख्यातवा भाग मात्र बध हो है । सख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबध इहा न हो है । अंतरकरण तै परै होगा । बहुरि सर्व कर्मनि का स्थितिसत्त्व इहा सख्यात हजार स्थिति काडक घात होतै भी अत कोडाकोडी सागर प्रमाण ही रहै है, जातै उपशम श्रेणी विषै स्थितिकाडक आयाम दीर्घ नाही है । स्तोक प्रमाण लीएं है ।

तीदे बंधसहस्से, पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधो ।
तत्थ असंखेज्जाणं, उदीरणा समयपबद्धाणं[2] ।।२३८।।

अतीते बंधसहस्रे, पल्यासंख्येयं तु स्थितिबंधः ।
तत्र असंख्येयानां, उदीरणा समयप्रबद्धानाम् ।।२३८।।

टीका – क्रमकरण प्रारभ का समय तै लगाय सख्यात हजार स्थितिबंधापसरण गएं जहां क्रमकरण का अत विषै मोहादिकनि का पल्य का असख्यातवा

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४७ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४८–२४९ ।

भाग मात्र स्थितिबध भया, तहा असख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा हो है । इहा तै पहिले गुणश्रेणी के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य कौ पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण करि अवशेष एक भाग कौ असख्यात लोक का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै एक भाग उदयावली विषै निक्षेपण होतै तहां उदयावली विषै दिया अैसा जो उदीरणा द्रव्य, सो समयप्रबद्ध के असख्यातवे भाग मात्र आवै है । बहुरि इहां तै लगाय अपकर्षण कीया द्रव्य कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण करि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असंख्यतवा भाग का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै एक भाग उदयावली विषै दीजिए है । सो इहा उदयावली विषै दीया अैसा जो उदीरणा द्रव्य, सो असंख्यात समयप्रबद्ध प्रमाण आवै है ।

ठिदिबंधसहस्सगदे, मणदाणा तत्तिये वि ओहिदुगं ।
लाभं व पुणो वि सुदं, अचक्खु भोगं पुणोचक्खु[1] ॥२३९॥

पुणरवि मदिपरिभोगं, पुणरवि विरयं कमेण अणुभागो ।
बंधेण देसघादी, पल्लासंखं तु ठिदिबंधे ॥२४०॥

स्थितिबंधसहस्रगते, मनोदाने तावन्मात्रेऽपि अवधिद्विक ।
लाभो वा पुनरपि श्रुतं,अचक्षुर्भोगं पुनश्चक्षुः ॥२३९॥

पुनरपि मतिपरिभागं, पुनरपि वीर्यं क्रमेण अनुभोगः ।
बंधेन देशघातिः, पल्यासख्यं तु स्थितिबंधे ॥२४०॥

टीका – क्रमकरण कहिए अब देशघाती करण कहै है, सो पूर्वै प्रकृतिनि का सर्वघाती स्पर्धकरूप अनुभाग बाध्या था, अब देशघाती करण तै लगाय दारु-लता समान द्विस्थानगत देशघाती स्पर्धकरूप ही अनुभाग कौ बांधै है । तहा असख्यात समयप्रबद्ध उदीरणा का प्रारभ तै परै सख्यात हजार स्थितिबधापसरण गए मन पर्यय ज्ञानावरण, दानातराय का देशघाती बंध हो है । तातै परै तितने तितनें ही स्थितिबधापसरण गए क्रम तै अवधिज्ञानावरण, अवधिदर्शनावरण, लाभातरायनि का अर श्रुतज्ञानावरण, अचक्षुदर्शनावरण, भोगातराय का, चक्षुदर्शनावरण का अर

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४६ से २५१ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५१ ।

मतिज्ञानावरण, उपभोगातराय का अर वीर्यातराय का देशघाती बध हो है। इहां प्रश्न-जो सज्वलन चतुष्क पुरुषवेदनि का देशघाति करण इहा क्यो न कह्या ?

ताका समाधान – जो तिनिका अनुभाग बध सयमासयम का ग्रहण समय तै लगाय समय समय अनत गुणा घटता क्रम लीए द्विस्थान गत हो है, तातै इहा न कह्या। बहुरि तिनि का सत्तारूप अनुभाग सर्वघाती वर्तै ही है। बहुरि देशघाती-करण का अत विषै भी मोहादिकनि का स्थितिबध अपने योग्य पल्य का असख्यातवा भाग मात्र ही है।

तो देसघातिकरणादुवरिं तु गदेसु तत्तियपदेसु।
इगिवीसमोहणीयाणंतरकरणं करेदीदि[1] ॥२४१॥

अतो देशघातिकरणादुपरि तु गतेषु तावत्कपदेषु।
एकविंशमोहनीयानामंतरकरणं करोतीति ॥२४१॥

टीका – तिस देशघाति करण तै उपरि सख्यात हजार स्थितिबंध गए इक-ईस मोहनीय की प्रकृतिनि का अतरकरण करै है। ऊपरि के वा नीचे के निषेक छोडि बीचि के विवक्षित केते इक निषेकनि का अभाव करना, सो अतर करण जानना।

संजलणाणं एक्कं, वेदाणेक्कं उदेदि तं दोण्हं।
सेसाणं पढमट्ठिदिं, ठवेदि अंतोमुहुत्त आवलियं[2] ॥२४२॥

संज्वलनानमेकं, वेदभामेकं उदेति तत् द्वयोः।
शेषाणां प्रथमस्थितिं, स्थापयति अंतर्मुहूर्तमावलिकां ॥२४२॥

टीका – सज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ विषै कोई एक का अर स्त्री, पुरुष, नपुसक वेदनि विषै कोई एक का उदय सहित श्रेणी चढै तिन उदय रूप दोय प्रकृतिनि की तौ प्रथम स्थिति अतर्मुहूर्त स्थापै है। अर अवशेष उगणीस प्रकृतिनि की प्रथम स्थिति आवली मात्र स्थापै है। इस प्रथम स्थिति प्रमाण निषेकनि कौ नीचै छोडि ऊपरि के निषेकनि का अतर करै है; ऐसा अर्थ जानना।

---

१ जयधवला भाग-१३, पृष्ठ २५२, २५३।
२ जयधवला भाग-१३, पृष्ठ २५३, २५४।

उवरि समं उक्कीरइ, हेट्ठा वि समं तु मज्झिमपमाणं।
तदुपरि पढमठिदीदो, संखेज्जगुणं हवे णियमा[1] ॥२४३॥

उपरि समं उत्कीर्यते, अधस्तनापि समं तु मध्यमप्रमाणं।
तदुपरि प्रथमस्थितितः, संख्येयगुणं भवेत् नियमात् ॥२४३॥

टीका – अन्तरायाम का अत निषेक तै उपरिवर्ती के निषेक, ते उदय रूप वा अनुदय रूप सर्व प्रकृतिनि का समान है, तातै अतरायाम के उपरि द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक सब प्रकृतिनि का तहा एक कालवर्ती होने तै समान है। बहुरि अंतरायाम का प्रथम निषेक के नीचै जो निषेक सो उदय प्रकृतिनि का परस्पर समान है वा अनुदय प्रकृतिनि का परस्पर समान है अर उदय-अनुदय प्रकृतिनि का समान नाही। जातै इनके प्रथम स्थिति विषै समानता नाही। जो प्रथम स्थिति का अंत का निषेक सोई अतरायाम का नीचे का निषेक है। बहुरि अतर्मुहूर्त वा आवली मात्र जो उदय-अनुदय प्रकृतिनि का प्रथम स्थिति, तातै सख्यात गुणा ऐसा अतर्मुहूर्त मात्र अतरायाम है। इतने निषेकनि का अभाव करिए है तहा उदयमान प्रकृतिनि कै तौ गुणश्रेणी शीर्ष के निषेक अर तिन तै सख्यात गुणे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनकौं ग्रहि अतर करै है। अर अनुदय प्रकृत्तिनि का अवशेष इहां पाइए जो गुणश्रेणी आयाम अर तिन तै सख्यात गुणे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनकौं ग्रह करि अतर करै है।

अंतरपढमे अण्णो, ठिदिबंधो ठिदिरसाण खंडो य।
एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरसमत्ती[2] ॥२४४॥

अतरप्रथमे अन्यः, स्थितिबंधः स्थितिरसयोः खंडश्च।
एकस्थितिखंडोत्करणकाले अंतरसमाप्तिः ॥२४४॥

टीका – अतर करण का प्रथम समय विषै पूर्व स्थिति बध तै असख्यात गुणा घटता ऐसा और ही स्थितिबध अर पूर्व स्थिति काडक तै किछू घटता ऐसा और ही स्थिति काडक अर पूर्व अनुभाग काडक तै अनत गुणा घटता ऐसा और ही अनुभाग काडक का प्रारभ हो है। तहा एक स्थिति काडकोत्करण का जेता काल तितने काल

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५४

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५५, २५६

करि अतर करण करिए है । ताकी समाप्ति होतै एक स्थिति काडक घात भया । तीहिं विषै सख्यात हजार अनुभाग काडकनि का घात भया, अैसा अर्थ जानना ।

अंतरहेदुक्कीरिददव्वं तं अंतरम्हि ण य देदि ।
बंधं ताणंतरजं, बंधाणं बिदियगे देदि[1] ॥२४५॥

अंतरहेतूत्कीरितद्रव्यं तदंतरे न च ददाति ।
बन्धं तेषामंतरजं, बन्धानां द्वितीयके ददाति ॥२४५॥

टीका – अतर के निमित्त उत्कीर्ण कीया द्रव्य कौ अंतरायाम विषै न दे है ।

भावार्थ– अतरायाम के निषेकनि का द्रव्य कौ तहां अभाव करि कोई अतरायामरूप निषेकनि विषै ही न मिलाइए है, तौ कहा मिलाइए है, सो कहै है–

जिनका उदय न पाइए केवल बध ही पाइए अैसी जे स्त्री वा नपुसक वेद अर एक कोई कषाय सहित श्रेणी चढनेवाले कै पुरुषवेद अर तीन संज्वलन कषाय ए च्यारि प्रकृति तिन का द्रव्य कौ उत्कर्षण करि तौ तत्काल जो अपना तिस ही प्रकृति का जो बध भया, ताकी आबाधा कौ छोडि, ताही का द्वितीय स्थिति कौ प्रथम निषेक तै लगाय यथायोग्य अत पर्यत निक्षेपण करै है अर अपकर्षण करि उदय रूप जो अन्य कषाय, ताकी प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण करै है ।

उदयिल्लाणंतरजं,सगपढमे देदि बंधबिदिये च ।
उभयाणंतरदव्वं, पढमे बिदिये च संछुहदि[2] ॥२४६॥

औदयिकानामंतरजं, स्वकप्रथमे ददाति बंधद्वितीये च ।
उभयानामंतरद्रव्यं, प्रथमे द्वितीये च संक्षिपति ॥२४६॥

टीका – जिनका बध न पाइए केवल उदय ही पाइए अैसा स्त्रीवेद वा नपुसकवेद, तिनका अतर सबधी द्रव्य कौ अपकर्षण करि अपनी प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण करै है अर उत्कर्षण करि तहा बधै है जे अन्य कषाय, तिनकी द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है । बहुरि अपकर्षण करि उदयरूप अन्य क्रोधादि कषाय

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६० ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २४८, २५६, २६० ।

की प्रथम स्थिति विषै सक्रमण रूप हो है। तिस उदय प्रकृतिरूप परिणमै है इतना भी सिद्धातोक्त विशेष जानना।

वहुरि जिनिका वध भी अर उदय भी पाइए अैसा पुरुषवेद वा कोई एक कपाय, तिनके अन्तर सबधी द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदयरूप प्रकृतिनि की प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण करै है। अर उत्कर्षण करि तहा बधै है जे प्रकृति, तिनकी द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है। इहा भी अन्य प्रकृति की प्रथम-द्वितीय स्थिति विषै उत्कर्षण अपकर्षण का वश करि अन्य प्रकृति परिणमनेरूप सक्रमण हो है अैसा विशेष जानना।

अणुभयगाणंतरजं, बंधं ताणं च बिदियगे देदि।
एवं अंतरकरणं, सिज्झदि अन्तोमुहुत्तेण[1] ॥२४७॥

अनुभयकानामंतरजं, बंधं तेषां च द्वितीयके ददाति।
एवंमंतरकरणं, सिद्धचति अंतर्मुहूर्तेन ॥२४७॥

टीका – बध उदय रहित जे अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान कषाय अर हास्यादि छह नोकषाय, तिनका अन्तर सबधी द्रव्य का अपकर्षण करि तिस काल विषै उदय-रूप जे अन्य प्रकृति, तिनकी प्रथम स्थिति विषै सक्रमण हो है; तद्रूप परिणमै हैं। अर उत्कर्षण करि तिस काल विषै बधै है जे अन्य प्रकृति, तिनकी द्वितीय स्थिति विषै सक्रमण हो है, तद्रूप परिणमै है; अैसे प्रकृतिनि का जिन निषेकनि का अभाव करि अन्तर कीया, तिनके द्रव्य कौ निक्षेपण करै हैं।

इहां इतना जानना– बध रहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौ तौ अपनी द्वितीय स्थिति विषै अर उदय रहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौ अपनी प्रथम स्थिति विषै नाही निक्षेपण करै है। बहुरि प्रथम स्थिति तौ अन्तरायाम के नीचै है, तातै तहां देने विषै स्थिति घटै है। तातै तहा अपकर्षण कह्या। अर द्वितीय स्थिति अ तरायाम के उप-रिवर्ती है, तातै तहा द्रव्य दीए स्थिति वधै है तहा उत्कर्षण कह्या। अैसे अतर्मुहूर्त काल करि अन्तर करने की समाप्तता हो है। इहा अन्तर करण का प्रथम समय तै लगाय प्रथम स्थिति अर अन्तरायाम का प्रमाण जेता का तेता रहै है। जब उदयावली का एक समय व्यतीत होई तब गुणश्रेणी का एक समय उदयावली विषै मिलै। अर तब

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २५६।

ही गुणश्रेणी विषै अन्तरायाम का एक समय मिलै अर तब ही अन्तरायाम विषै द्वितीय स्थिति का एक निषेक मिलै ऐसे द्वितीय स्थिति ही घटै है। प्रथम स्थिति अर अन्तरायाम जेताका तेता रहै है अैसा जानना।

सत्तकरणाणि यंतरकदपढमे होंति मोहणीयस्स।
इगिठाणिय बंधुदओ, ठिदिबंधे संखवस्सं च ॥२४८॥

अणुपुव्वीसंकमणं, लोहस्स असंकमं च संढस्स।
पढमोवसामकरणं, छावलितीदेसुदीरणदा[1] ॥२४९॥

सप्तकरणानि अंतरकृतप्रथमे भवंति मोहनीयस्य।
एकस्थानको बंधोदयः, स्थितिबंधः संख्यवर्षं च ॥२४८॥

आनुपूर्वी संक्रमणं, लोभस्यासंक्रमं च षंढस्य।
प्रथमोपशमकरणं, षडावल्यतीतेषूदीरणता ॥२४९॥

टीका – अन्तर कीए पीछै ताके अनन्तरि प्रथम समय विषै सात करणनि का युगपत् प्रारभ हो है। तहा पूर्वै अन्तर करने की समाप्ति पर्यंत मोह का दारु लता समान द्विस्थानगत बध अर उदय था अर अब लता समान एक स्थानगत बध उदय होने लगे, सो दोय करण तौ ए भए। बहुरि पूर्वै मोह का स्थिति बध असख्यात वर्ष का होता था, अब सख्यात वर्ष मात्र होने लगा, सो एक करण यहु भया।

बहुरि पूर्वै चारित्र मोह का परस्पर प्रकृतिनि का जहा तहां सक्रमण होता था अब आनुपूर्वी सक्रमण होने लगा सो इस विषै अैसा नियम भया– जो स्त्री नपुसक वेद का तौ पुरुष वेद ही विषै अर पुरुषवेद छह हास्यादिक, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान क्रोध का सज्वलन क्रोध ही विषै अर सज्वलन क्रोध, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यन मान का सज्वलन मान ही विषै अर सज्वलन मान, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान माया का सज्वलन माया ही विषै अर सज्वलन माया, अप्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान लोभ का सज्वलन लोभ ही विषै सक्रमण हो है अन्यथा न होइ सो एक करण यहु भया। बहुरि पूर्वै सज्वलन लोभ का सज्वलन क्रोधादि विषै वा पुरुषवेद विषै संक्रमण होता था। अब याका सक्रमण कही न होइ सो एक कारण यहु भया।

---

1. जयधवला भाग-१३, पृष्ठ २३३।

बहुरि अब नपुसक वेद की उपशम क्रिया का प्रारभ भया, सो एक करण यहु भया।

बहुरि पूर्वै बन्ध भए पीछे एक आवली काल व्यतीत भए ही उदीरणा करने की समर्थता थी अब तो बध हो है, ताकी बध समय तै छह आवली व्यतीत भए ही उदीरणा करने की समर्थता हो है, सो एक करण यहु भया।

अंतरपढमादु कमे, एक्केक्के सत्त चदुसु तिय पयडिं।
सममुच सामदि णवकं,समऊणावलिदुगं वज्जं ॥२५०॥

अंतरप्रथमात् क्रमेण, एकैकं सप्त चतुर्षु त्रयीं प्रकृतिं।
समुच्य शमयति नवकं, समयोनावलिद्विकं वर्ज्यम् ॥२५०॥

टीका – अन्तर कीएं पीछे प्रथम समय तै लगाय क्रम तै एक एक अंतर्मुहूर्त काल करि तौ एक एक सात प्रकृतिनि कौ अर च्यारी अन्तर्मुहूर्त विषै क्रम तै तीन प्रकृतिनि कौ उपशमावै है। तहां समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध कौ नाही उपशमावै है, सो याका स्वरूप आगै कहेगे, सो जानना।

एय णउंसयवेदं, इत्थीवेदं तहेव एयं च।
सत्तेव णोकसाया, कोहादितियं तु पयडीओ[1] ॥२५१॥

एको नपुंसकवेदः, स्त्रीवेदः तथैव एकः च।
सप्तैव नोकषाया,, क्रोधादित्रयं तु प्रकृतयः ॥२५१॥

टीका – एक नपुसक वेद, एक स्त्रीवेद तैसै ही सात नोकषाय अर तीन क्रोध, तीन मान, तीन माया, तीन लोभ ऐसै क्रम तै उपशम होनेरूप इकईस प्रकृति है।

अन्तरकदपढमादो, पडिसमयमसंखगुणविहाणकमे–।
णुवसामेदि हु संडं, उवसंतं जाण ण च अण्णं[2] ॥२५२॥

अंतरकृतप्रथमतः, प्रतिसमयमसंख्यगुणविधानक्रमे–।
णोपशाम्यति हि षढं, उपशांतं जानीहि न चान्यम् ॥२५२॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७२ से ३१८।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७२ से २७७।

टीका – अन्तर करने कै अनन्तरि प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति नपुसक वेद का उपशम हो है। तहा नपुसक वेद के द्रव्य कौ गुणसक्रम भागहार का असख्यातवा भाग का भागहार का भाग देइ तहा एक भाग मात्र द्रव्य कौ प्रथम समय विषै उपशमावै है। तातै असख्यात गुणा द्रव्य कौ द्वितीय समय विषै उपशमावै है। असै नपुसक वेद का उपशम काल की समाप्ति पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लिएं द्रव्य उपशमावै है। सो समय समय प्रति जो द्रव्य उपशमाया ताही का नाम उपशमन फालि का द्रव्य जानना।

संढादिमउवसमगे, इट्ठस्स उदीरणा य उदओ य।
संढादो संकमिदं, उवसमियमसंखगुणियकमा[1] ॥२५३॥

षंढादिमोपशामके, इष्टस्योदीरणा व उदयश्च।
षंढात् संक्रमितमुपशमितमसंख्यगुणितक्रमः ॥२५३॥

टीका – नपुसक वेद के उपशम का प्रथम समय विषै विवक्षित उदय कौ प्राप्त भया जो पुरुषवेद, ताका सर्व द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग कौं पल्य का असख्यातवा भाग देइ बहुभाग उपरितन स्थिति विषै दिया। अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ बहुभाग गुणश्रेणी विषै एक भाग कौं उदयावली विषै दीया सो उदयावली विषै जो दीया सो यहु उदीरणा द्रव्य जेता है तातै तिस ही पुरुषवेद का उदय द्रव्य असंख्यात गुणा है। जातै पूर्वै गुणश्रेणी का द्रव्य इस निषेकनि विषै दीया था, सो पल्य का असख्यातवां भाग का भाग दीए बहुभाग मात्र है। बहुरि तिसतै नपुसक वेद का द्रव्य सक्रमण करि पुरुष वेदरूप भया सो असख्यात गुणा है, जातै तिस भागहार तै गुण सक्रमण भागहार का प्रमाण असख्यात गुणा घटता है। बहुरि तातै नपुसक वेद की उपशम फालि का द्रव्य असख्यात गुणा है, जातै तहा भागहार तिस भागहार के असख्यातवे भाग मात्र है। असै ही द्वितीयादि समयनि विषै भी अल्पबहुत्व जानना।

अन्तरकरणादुवरिं ठिदिरसखंडाण मोहणीयस्य।
ठिदिबंधोसरणं पुण। संखेज्जगुणेण हीणकमं[2] ॥२५४॥

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७२ से २७४।

२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २७५।

अन्तरकरणादुपरि, स्थितिरसखंडानां मोहनीयस्य ।
स्थितिबंधापसरणं पुनः, संख्यगुणेन हीनक्रमम् ।।२५४।।

टीका – अन्तरकरण तै उपरि नपुसक वेद उपशमावने का प्रथम समय तै लगाय मोहनीय स्थिति काडकघात अर अनुभाग कांडकघात नाही है; जातै उपशमाव रूप होती जो कर्म की स्थिति ताकै कांडकघात न हो है ।

इहां कोऊ कहैगा कि – उपशम रूप न होती नपुसक वेद बिना अन्य प्रकृतिनि का तौ काडक घात होता होयगा

सो न हो है जातै इहां सर्व मोह प्रकृतिनि की स्थिति समान है अर स्थिति अनुसारी अनुभाग का भी कांडक घात बिना अवस्थितपना ही है । बहुरि मोहनीय का स्थितिबधापसरण का आयाम असख्यात गुणा घटता क्रम लीए वर्तै है ।

जत्तोपाये होदि हु, ठिदिबंधो संखवस्समेत्तं तु ।
तत्तो संखगुणूणं, बंधोसरणं तु पयडीणं ।।२५५।।

यत उपायेन भवति हि, स्थितिबंधः संख्यवर्षमात्रः तु ।
ततः संख्यगुणोनं, बंधापसरणं तु प्रकृतीनाम् ।।२५५।।

टीका – जातै इहां मोह का स्थितिबध संख्यात हजार वर्ष मात्र हो है, तातै पूर्व स्थिति बधापसरण तै इहा स्थिति बधापसरण सख्यात गुणा घटता सभवै है । बहुरि ज्ञानावरणादिकनि का स्थितिबध अन्तर करने का अंत समय सबंधी स्थितिबध तै असख्यात गुणा घटता है; जातै इनके स्थितिबधापसरण का प्रमाण पल्य कौं असख्यात का भाग दीए बहुभाग मात्र है । तहा तीसीयनि का स्थितिबंध पल्य का असख्यातवा भाग मात्र है । औरनि तै स्तोक है । तातै असख्यात गुणा बीसीयनि का है । तातै ड्योढा वेदनीय का है ।

वस्साणं वत्तीसादुवरिं अन्तोमुहुत्तपरिमाणं ।
ठिदिबंधाणोसरणं, अवरट्ठिबंदिधणं जाव[1] ।।२५६।।

वर्षाणां द्वात्रिंशदुपरि अंतर्मुहूर्तपरिमाणम् ।
स्थितिबंधानामपसरणमवरस्थितिबन्धनं यावत् ।।२५६।।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८६ ।

टीका – बत्तीस वर्ष का स्थितिबध जहां होइ तहा तै लगाय जहा जघन्य स्थितिबध होइ तहा पर्यंत तिस बधापसरण का प्रमाण अतर्मुहूर्त मात्र जानना ।

ठिदिबंधाणोसरणं, एयं समयप्पबद्धमहिकिच्चा ।
उत्तं णाणादो पुण, ण च उत्तं अणुववत्तीदो[1] ॥२५७॥

स्थितिबन्धानामपसरणमेकं समयप्रबद्धमधिकृत्य ।
उक्तं नानातः पुनः, न च उक्तमनुपपत्तितः ॥२५७॥

टीका – स्थितिबधापसरण है सो विवक्षित स्थितिबध का प्रथम समय विषै संभवता जो एक समय प्रबद्ध, ताकौ अधिकार करि कह्या है । बहुरि नाना समय प्रबद्धनि की अपेक्षा न कह्या है, जातै पूर्वस्थिति बध तै एक बार स्थितिबधापसरण भये प्रथम समय विषै जेता स्थितिबध का प्रमाण हो है तितना ही अतर्मुहूर्त काल पर्यंत बधते समयप्रबद्धनि के स्थितिबध का प्रमाण हो है । समय समय प्रति नाना समयप्रबद्धनि के स्थितिबधापसरण होने करि समय समय स्थितिबध घटने की अनुपपत्ति कहिए अप्राप्ति है ।

एवं संखेज्जेसु, ट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु ।
संढुवसमदेतत्तो, इत्थिं च तहेव उवसमदि ॥२५८॥

एवं संख्येयेषु, स्थितिबन्धसहस्रकेषु अतीतेषु ।
सढोपशांते ततः, स्त्रीं च तथैव उपशमयति ॥२५८॥

टीका – असै सख्यात हजार स्थितिबध व्यतीत भए अतर्मुहूर्त काल करि नपुंसक वेद कौ उपशम हो है । तहां पीछे तैसै ही नपुसक वेद उपशमवत् अतर्मुहूर्त काल करि स्त्री वेद कौ उपशमावै है । इहां स्त्रीवेद का द्रव्य कौ स्थापि सक्रमण फालि द्रव्यादिक का वा अल्प बहुत्व का वा समय समय असख्यात गुणा क्रम का वर्णन पूर्वोक्तवत् जानना । बहुरि इहां इतना जानना ज्ञानावरणादिकनि का स्थिति अनुभाग कांडक घात अर आयु बिना सात कर्मनि का स्थिति बध पूर्व प्रमाण तै अन्य प्रमाण धरै हो है ।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८६ ।

थीयद्धा संखेज्जदिभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो ।
संखतुवं रसबंधो, केवलणाणेगठाणं तु[1] ॥२५६॥

स्त्री अद्धा संख्येयभागेपगते त्रिघातिस्थितिबन्धः ।
संख्यातं रसबन्धः, केवलज्ञानैकस्थानं तु ॥२५६॥

टीका – स्त्रीवेद उपशमावने के काल का सख्यातवा भाग गए मोह का स्थितिवध सख्यात हजार वर्ष मात्र औरनि तै स्तोक हो है तातै सख्यात गुणा सख्यात हजार वर्ष मात्र तीन घातियानि का, तातै असख्यात गुणा पल्य का असंख्यातवा भाग मात्र नाम-गोत्र का, तातै किछू अधिक साता वेदनीय का स्थितिबध हो है । बहुरि इस ही काल विषै केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण बिना तीन घातियनि का लता समान एक स्थानगत ही अनुभाग बध हो है ।

थीउवसमदिणंतरसमयादो सत्त णोकसायाणं ।
उवसमगो तस्सद्धा, संखज्जदिमे गदे तत्तो[2] ॥२६०॥

स्त्रीउपशमितानंतरसमयात् सप्तनोकषायाणाम् ।
उपशामकः तस्याद्धा, संख्याते गते ततः ॥२६०॥

टीका – ऐसे स्त्रीवेद उपशमावने के अनतर समय तै लगाय पुरुषवेद, छह हास्यादिक इन सात प्रकृतिनि कौ उपशमाव है। तिनके उपशमावने का काल अतर्मुहूर्त मात्र है । ताका सख्यातवा भाग गए कहा? सो कहै हैं—

णामदुग वेयणियट्ठिदिबंधो संखवस्सयं होदि ।
एवं सत्तकसाया, उवसंता सेसभागंते[3] ॥२६१॥

नामद्विके वेदनीयस्थितिबन्धः संख्यवर्षको भवति ।
एवं सप्तकषाया, उपशाताः शेषभागांते ॥२६१॥

---

१ जयधवलाग–१३, पृष्ठ २८० ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८२ ५
३ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८४ ।

टीका – सर्व ही कर्मनि का स्थितिबध सख्यात हजार वर्ष प्रमाण हो है । तहा स्तोक मोह का, तातै सख्यात गुणा तीन घातियानि का, तातै सख्यात गुणा नामगोत्र का, तातै किछू अधिक वेदनीय का जानना । असै नपु सक वेद का उपशमवत् सात नोकसाय है, ते उपशमन का अवशेष बहुभाग रहै थे, तिनिका अत समय विषै उपशमाना है ।

णवरि य पु वेदस्स य, णवकं समऊणदोण्णिआवलियं ।
मुच्चा सेसं सव्वं, उवसंतं होदि तच्चरिमे[1] ॥२६२॥

नवरि च पुवेदस्य च, नवकं समयोनद्व्यावलिकाम् ।
मुक्त्वा शेषं सर्वमुपशांतं भवति तच्चरमे ॥२६२॥

टीका – इतना विशेष है जो तिस अत समय विषै पुरुष वेद का एक समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धनि कौ छोडि अवशेष सर्व उपशमावै है । नवीन जे समयप्रबद्ध बधै, ते नवक समय प्रबद्ध कहिए, सो बंध समय तै लगाय आवलीकाल कौ बधावली कहिए, तिस बधावली विषै सो बध्या द्रव्य उपशम होने योग्य नाही । अर एक समयप्रबद्ध के उपशमाने की समय समय सबधी आवली मात्र फालि इहा हो है, तातै समय घाटि दोय आवली मात्र समयप्रबद्ध उपशमै नाही । कैसे ? सो कहिए है –

उपशमकाल का अत विषै दोय आवली, तिनका नाम इहा द्विचरमावली अर चरमावली है । सो द्विचरमावली का प्रथम समय विषै जो समयप्रबद्ध बध्या था, सो बधावली व्यतीत भए चरमावली का प्रथम समय तै लगाय समय समय प्रति एक एक फालि का उपशमन करि चरमावली का अत समय विषै सर्व उपशम्या, बहुरि द्विचरमावली का द्वितीय समय विषै जो समयप्रबद्ध बध्या था, सो बधावली व्यतीत भए चरमावली का द्वितीय समय तै लगाय चरम आवली का अंत समय पर्यंत अन्य फालि तौ उपशमै अर एक अन्त फालि नाही उपशमी । बहुरि असै ही द्विचरमावली का तृतीयादि समयनि विषै बधे समयप्रबद्ध ते बधावली व्यतीत भए चरमावली का तृतीयादि समय तै लगाय अत समय पर्यंत समयनि विषै अन्य फालि तौ उपशमै अर क्रम तै दोय, तीन च्यारि आदि फालि उपशमी नाही । तहां असै क्रम तै द्विचरमा-

---

1 जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८४ ।

वली का अंत समय विषै बंध्या समयप्रबद्ध की चरमावली का अंत समय विषै एक फालि उपशमी, अवशेष उपशमी नाही। ऐसे तौ द्विचरमावली विषै बंधे समयप्रबद्धनि की फालि न उपशमी। बहुरि चरमावली के प्रथमादि सर्व समयनि विषै बंधे समय प्रबद्धनि के किछू भी द्रव्य का उपशम भया नाही। जातै तिनकी बंधावली व्यतीत नाही भई। बहुरि तातै उपरिवर्ती उच्छिष्टावली विषै पुरुषवेद का बंध भी अर उदय भी है नाही ऐसे पुरुषवेद कौ उपशम काल का अंत समय विषै द्विचरमावली के तौ एक समय घाटि आवली मात्र अर चरमावली के संपूर्ण आवली मात्र मिलि एक समय घाटि दोय आवली मात्र समय प्रबद्ध उपशमै नाही। इहां अंश कौ अंशीवत् कहिए इस न्याय करि उपशमी नाही जे समयप्रबद्ध की फालि, तिनका भी नाम समयप्रबद्ध ही कह्या है ऐसा जानना।

तच्चरिमे पुंबंधो, सोलसवस्साणि संजलणगाणं।
तद्दुगाणं सेसाणं, संखेज्जसहस्सवस्साणि[1] ॥२६३॥

तच्चरमे पुंबंधः, षोडशवर्षाणि संज्वलनकानाम्।
तद्द्विकानां शेषाणां, संख्यसहस्रवर्षाणि ॥२६३॥

टीका – तिस पुरुषवेद का उपशमन काल पर्यंत सवेद अनिवृत्तिकरण है, ताका अंत समय विषै पुरुषवेद का सोलह वर्ष मात्र, संज्वलन चतुष्क का बत्तीस वर्ष मात्र, औरनि का संख्यात हजार वर्ष मात्र, तहां स्तोक तीन घातियानि का, तातै संख्यात गुणा नाम-गोत्र का, तातै साधिक वेदनीय का स्थितिबंध हो है।

पुरिसस्स य पढमठिदि, आवलिदोसुवरिदासु आगाला।
पडिआगाला छिण्णा, पडियावलियादुदीरणदा[2] ॥२६४॥

पुरुषस्य च प्रथमस्थितिः, आवलिद्वयोरुपरतयोरागालाः।
प्रत्यागालाः छिन्नाः, प्रत्यावलिकात उदीरणता ॥२६४॥

टीका – पुरुषवेद की अंतरायाम के नीचै कही थी जो प्रथम स्थिति, तीहि विषै दोय आवली अवशेष रहै आगाल प्रत्यागाल का व्युच्छेद भया। बहुरि दोय

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८५।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८५।

आवली अवशेष रहै, तहा प्रथम समय तै लगाय पुरुषवेद की गुणश्रेणी निर्जरा का व्युच्छेद भया । तहां उदयावली तै बाह्य ऊपरि निषेकनि विषै तिष्ठता द्रव्य कौ उदयावली विषै दीजिए है । असी उदीरणा ही पाइए है । इनिका लक्षण पूर्वोक्त जानने ।

अन्तरकदादु छण्णोकसायदव्वं ण पुरिसगे देदि ।
एदि हु संजलणस्स य, कोधे अणुपुव्विसंकमदो[1] ॥२६५॥

अंतरकृतात् षण्णोकषायद्रव्यं न पुरुषके ददाति ।
एति हि संज्वलनस्य च, क्रोधे आनुपूर्विसंक्रमतः ॥२६५॥

टीका – अतर करने तै पीछै हास्यादि छह नोकषायनि का द्रव्य है, सो पुरुषवेद विषै सक्रमण नाही करै है, सज्वलन क्रोध विषै ही सक्रमण करै है, जातै इहा आनुपूर्वी सक्रमण पाइए है ।

पुरिसस्स उत्तणवकं, असंखगुणियक्कमेण उवसमदि ।
संकमदि हु हीणकमेणधापवत्तेण हारेण[2] ॥२६६॥

पुरुषस्य उक्तनवकं, असंख्यगुणितक्रमेण उपशमयति ।
संक्रमति हि हीनक्रमेणाधः प्रवृत्तेन हारेण ॥२६६॥

टीका – पुरुषवेद के पूर्वोक्त समयप्रबद्ध जे नाही उपशमाए थे, ते वेद रहित जो अपगत वेद अनिवृत्तिकरण, ताके प्रथमादि समयनि विषै असै उपशमाइए है । जो पुरुषवेद का उपशम काल की द्विचरमावली का द्वितीय समय विषै बध्या समय प्रबद्ध की एक फालि अवशेष रही थी, ताका अपगत वेद का प्रथम समय विषै उपशम हो है । ताकौ होतै सो समयप्रबद्ध सर्व उपशम्या अवशेष दोय समय घाटि दोय आवली मात्र समयप्रबद्ध रहै, तहा जाकी बधावली व्यतीत भई असा जो समयप्रबद्ध, ताका द्रव्य अपगत वेद का प्रथम समय विषै जितना उपशमाया तातै द्वितीयादि समयनि विषै अत फालि पर्यत क्रम तै असख्यात गुणा द्रव्य उपशमाइए है ऐसे अन्य समयप्रबद्धनि का द्रव्य विषै भी बधावली व्यतीत होतै समय समय असंख्यात

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६७ ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८७ से २८९ ।

गुणा क्रम लिए उपशम फालिनि का द्रव्य जानना। एक नवक समयप्रबद्ध एक आवली काल विषै उपशमै तातै तहा एक समयप्रबद्ध की आवली प्रमाण फाली जाननी। ऐसै अपगत वेद का प्रथम समय तै लगाय समय घाटि दोय आवली मात्र काल विषै पुरुषवेद सर्व नवक समयप्रबद्ध उपशमाइए है। ऐसै तौ उपशम विधान जानना।

बहुरि पुरुषवेद का कोइ एक नवक समयप्रबद्ध कौ अधः प्रवृत्त नामा भाग-हार का भाग देइ तहा एक भाग मात्र द्रव्य है, सो अपगत वेद का प्रथम समय विषै संज्वलन का क्रोध रूप होइ सक्रमण करै है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौ अधः प्रवृत्त भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग द्वितीय समय विषै सक्रमण करै है। बहुरि अवशेष बहुभाग कौ तैसै ही भाग दीए एक भाग तृतीय समय विषै सक्रमण करै। ऐसै समय घाटि दोय आवली का अंत पर्यंत विशेष घटता क्रम लीएं सक्रमण करै है। बहुरि अन्य कोइ नवक बध का समय प्रबद्ध समय समय प्रति असंख्यात भाग घटता क्रम करि, कोई सख्यात भाग का घटता क्रम करि, कोई संख्यात गुणा घटता क्रम, करि कोई असख्यात गुणा घटता क्रम करि कोई संख्यात भागवृद्धि क्रम करि, कोई असख्यात भागवृद्धि क्रम करि, कोई सख्यात गुणा वृद्धि क्रम करि, कोई असख्यात गुणा वृद्धि क्रम करि संज्वलन क्रोध विषै सक्रमण करै है। जातै चतुः स्थान पतित हानिवृद्धि रूप योगनि करि बंधे समय प्रबद्धनि का द्रव्य हीनाधिक सभवै है। तातै सक्रमण द्रव्य कै भी चतु स्थान पतित हानिवृद्धि का अनुक्रम सभवै है।

पढमावेडे संजलणाणं, अन्तोमुहुत्तपरिहीणं।
वस्साणं बत्तीसं, संखसहस्सियरगाणठिदिबंधो[1] ॥२६७॥

प्रथमावेदे संज्वलनानां, अन्तर्मुहूर्तपरिहीनम्।
वर्षाणां द्वात्रिंशत्, संख्यसहस्रमितरेषां स्थितिबंधः ॥२६७॥

टीका – अपगत वेद का प्रथम समय विषै सज्वलन चतुष्क का तो अंतर्मुहूर्त घाटि वत्तीस वर्ष मात्र स्थितिबंध है, जातै बत्तीस वर्ष स्थिति थी, तामै एक बार स्थितिबंधापसरण करि अंतर्मुहूर्त घटचा। बहुरि अन्य कर्मनि का पूर्व स्थिति बंध तै

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २८६।

संख्यात गुणा घटता पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिक क्रम लीए सख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बध हो है ।

पढमावेदो तिविहं, कोहं उवसमदि पुव्वपढमठिदी ।
समयाहियआवलियं, जाव य तक्कालठिदिबंधो[1] ॥२६८॥

प्रथमावेदस्त्रिविधं, क्रोधं उपशमयति पूर्वप्रथमस्थितिः ।
समयाधिकावलिकां, यावच्च तत्कालस्थितिबंधः ॥२६८॥

टीका – प्रथम समयवर्ती अपगतवेदी सयमी सो अपगत वेद का प्रथम समय तै लगाय पुरुषवेद का नवक समयप्रबद्ध सहित अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलन इनि तीनो क्रोधनि उपशमावै है । तहा उदय रूप जो संज्वलन क्रोध, ताकी प्रथम स्थिति पूर्वै जो अतर करण का प्रारभ विषै अतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति स्थापी थी । ताका प्रमाण पुरुषवेदकी प्रथम स्थिति तै साधिक था, तिस विषै व्यतीत भए पीछै जो अवशेष रह्या तामै एक समय अधिक आवली मात्र अवशेष रहै तहांतै पहिलै इहां संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति जाननी । जातै उच्छिष्टावली अवशेष रहै प्रथम स्थिति नाम न पावै है । बहुरि जैसे आगै मानादिक की नवीन प्रथम स्थिति का स्थापन करैगे तैसे क्रोध की प्रथम स्थिति नवीन न हो है; जातै सज्वलन क्रोध का ही उदय चल्या आवै है; तातै अतर करण विषै स्थापी जो प्रथम स्थिति, ताका ही इहा ग्रहण किया, सो इस प्रथम स्थिति विषै आवली, प्रत्यावली ए दोय अवशेष रहै; आगाल प्रत्यागाल का अर संज्वलन क्रोध की गुणश्रेणी निर्जरा का व्युच्छेद हो है । द्वितीयावली का द्रव्य कौ उदयावली विषै देनेरूप केवल उदीरणा ही पाइए है ।

संजलणचउक्काणं, मासचउक्कं तु सेसपयडीणं ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण[2] ॥२६९॥

संज्वलनचतुष्काणां, मासचतुष्कं तु शेषप्रकृतीनाम् ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ॥२६९॥

टीका – अपगत वेद का प्रथम समय तै लगाय अन्तर्मुहूर्त मात्र आयाम धरें असे संख्यात हजार स्थितिबध भएं क्रोधत्रिक का उपशम काल का अंत समय विषै

१. जयधवला भाग– १३, पष्ठ २६१,२६० ।
२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६२ ।

संज्वलन चतुष्क का स्थितिबध च्यारि मास मात्र हो है। बहुरि तिस ही अत समय विषै और कर्मनि का पूर्वस्थितिबध तै संख्यात गुणा घटता असा संख्यात हजार वर्ष मात्र पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिकपना लीए स्थितिबध हो है।

कोहदुगं संजलणगकोहे संछुहदि जाव पढमठिदी।
आवलितियं तु उवरिं, संछुहदि हु माणसंजलणे[1] ॥२७०॥

क्रोधद्विकं संज्वलनक्रोधे संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः।
आवलित्रिकं तु उपरि, संक्रामति हि मानसंज्वलने ॥२७०॥

टीका – अपगत वेद का प्रथम समय तै लगाय सज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषै तीन आवली अवशेष रहै तावत् अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान क्रोधादिक का द्रव्य कौ गुणसंक्रमण भागहार करि ग्रहि संज्वलन क्रोध विषै सक्रम कराइए है। बहुरि संक्रमावली, उपशमावली, उच्छिष्टावली, ए तीन आवलि रही, तीन विषै सक्रमावली का अत समय पर्यंत तिन दोऊनि का द्रव्य सज्वलन मान विषै संक्रमण हो है।

कोहस्स पढमठिदी, आवलिसेसे तिकोहमुवसंतं।
ण य णवकं तत्थंतिमबंधुदया होंति कोहस्स[2] ॥२७१॥

क्रोधस्य प्रथमस्थितिः, आवलिशेषं त्रिक्रोधमुपशांतम्।
न च नवकं तत्रांतिमबन्धोदया भवंति क्रोधस्य ॥२७१॥

टीका – सज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषै उच्छिष्टावली अवशेष रहै उपशमावनाली का अत समय विषै समय घाटि दोय आवलीमात्र नवक समयप्रबद्ध विना पूर्वोक्त प्रकार चरम फालिरूप करि समस्त संज्वलन क्रोध का द्रव्य अपने रूप ही रहता उपशम भया। तहा ही सज्वलन क्रोध का बंध वा उदय का व्युच्छेद भया। तिस ही समय विषै उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक है सो सज्वलन मान विषै वक्ष्यमाण लक्षणरूप जो थिउक्क सक्रमण, ताकरि सक्रमण रूप होइ उदय कौ प्राप्त होसी। यातै संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषै समय घाटि उच्छिष्टावली अवशेष रही कहिए है। असै कोधत्रिक का उपशम भया।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६३,२६४।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६३।

से काले माणस्स य, पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
पढमट्ठिदिम्मि दव्वं, असंखगुणियक्कमे देदि[1] ॥२७२॥

तस्मिन् काले मानस्य च, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
प्रथमस्थितौ द्रव्यं, असंख्यगुणितक्रमेण ददाति ॥२७२॥

टीका – तीनों क्रोध का उपशम होने की अनंतरि समय विषै यहु **संयमी,** संज्वलन मान की अतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति का कारक कहिए कर्ता अर वेदक कहिए उदय का भोक्ता हो है । सो कहिए है—

संज्वलन मान की प्रथम स्थिति के ऊपरिवर्ती जो द्वितीय स्थिति का द्रव्य ताकौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग कौ ग्रहि, ताकौ पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ, एक भाग कौ उदयावली का प्रथम समय तै लगाय इहां करी जो प्रथम स्थिति, ताका अत समय पर्यंत सबधी जो निषेक, तिन विषै **'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंड'** इत्यादि विधान तै असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करि है । अवशेष बहुभाग कौ द्वितीय स्थिति विषै अत के अतिस्थापनावली मात्र निषेक छोडि अन्य सर्व निषेकनि विषै **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तै विशेष घटता क्रम लीएं निक्षेपण करिए है । बहुरि द्वितीयादि समयनि विषै प्रथम समय विषैं अपकर्षण कीया द्रव्य तै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य कौ ग्रहि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है । बहुरि समय समय उदय आया प्रथम स्थिति का एक एक निषेक कौ भोगवै है ।

पढमट्ठिदिसीसादो, बिदियादिम्हि य असंखगुणहीणं ।
तत्तो विसेसहीणं, जाव अइच्छावणमपत्तं[2] ॥२७३॥

प्रथमस्थितिशीर्षतः, द्वितीयादौ च असंख्यगुणहीनम् ।
ततो विशेषहीनं, यावत् अतिस्थापनमप्राप्तम् ॥२७३॥

टीका – प्रथम स्थिति का शीर्ष जो अत समय, तीहि विषै निक्षेपण कीया जो द्रव्य, तातैं द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६५,२६६ ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६६ ।

गुणा घटता है । तातै प्रथम स्थिति का शीर्ष विषै तौ भागहार का पल्य ताका भागहार असंख्यात है । तातै असख्यात समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य निक्षेपण हो है । अर द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषै भागहार द्वयर्ध गुणहानि है । तातै समय प्रबद्ध का असख्यातवा भाग मात्र निक्षेपण हो है । बहुरि द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक तै उपरि निषेकनि विषै विशेष घटता क्रम लीए यावत् अतिस्थापनावली प्राप्त न होइ तावत् द्रव्य का निक्षेपण हो है । बहुरि संज्वलन मान की प्रथम स्थिति का प्रथम समय तै लगाय तीन मान का द्वितीय स्थिति विषै तिष्ठता द्रव्य कौ समय समय असख्यात गुणा क्रम लीए उपशमावै है । तहा ही संज्वलन क्रोध के समय घाटि उच्छिष्टावली मात्र निषेक, ते अपनी समान स्थिति लीए जे सज्वलन मान की उदयावली के निषेक, तिनविषै समय समय एक एक निषेक का अनुक्रम करि सक्रमण रूप होइ ताके अनतरवर्ती समय विषै उदय हो है । इसप्रकार संक्रम होइ ताही का नाम थिउक्क संक्रम कहिए है ।

माणस्स य पढलठिदी, सेसे समयाहिया तु आवलियं ।
तियसंजलणगबंधो, दुमास सेसाण कोह आलावो[1] ॥२७४॥

मानस्य च प्रथमस्थितिः, शेषे समयाधिकां तु आवलिकाम् ।
त्रिकसंज्वलनकबन्धो, द्विमासं शेषाणां क्रोध आलापः ॥२७४॥

टीका – सज्वलन मान की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहै संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण होने तै मान के उपशम काल का अंत समय विषै सज्वलन मान, माया, लोभ का स्थिति बंध दोय मास हो है । अर और कर्मनि का पूर्व स्थिति बध तै सख्यात गुणा घटता है तथापि पूर्वोक्तवत् अल्प बहुत्व लिये सख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति बंध हो है ।

माणदुगं संजलणगमाणे संछुहदि जाव पढमठिदी ।
आवलितियं तु उवरिं, मायासंजलणगे य संछुहदि[2] ॥२७५॥

मानद्विकं संज्वलनकमाने संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः ।
आवलित्रयं तु उपरि, मायासंज्वलनके च संक्रामति ॥२७५॥

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६८ ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६८ ।

टीका – सज्वलन मान की प्रथम स्थिति विषै तीन आवली अवशेष रहै तहां तै पहलै अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान मानद्विक है, सो संज्वलन मान ही विषै पूर्वोक्त विधान करि संक्रमण करै है । तातै परै सक्रमणावलि के अत समय पर्यंत तिन मानद्विक का द्रव्य संज्वलन माया विषै सक्रमण करै है । बहुरि संज्वलन मान का द्रव्य है सो पहलै वा इहां नियम करि संज्वलन माया ही विषै सक्रमण करै है ।

माणस्य य पढमठिदी, आवलिसेसे तिमाणमुवसंतं ।
ण य णवकं तत्थंतिमबंधुदया होंति माणस्स[1] ।।२७६।।

मानस्य च प्रथमस्थितौ, आवलिशेषे त्रिमानमुपशांतं ।
न च नवकं तत्रांतिम बन्धोदयौ भवतः मानस्य ।।२७६।।

टीका – संज्वलन मान की प्रथम स्थिति विषै आवली अवशेष रहै उपशमनावली का अत समय विषै समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध बिना अन्य समस्त तीन मान का द्रव्य उपशम्या तब ही उपशमावली का अत समय विषै संज्वलन मान का बंध वा उदय की व्युच्छित्ति भई । पूर्ववत् मानत्रिक का उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक माया विषै थिउक्क संक्रमण करि सक्रमण रुप होइ उदय होसी ।

से काले मायाए, पढट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
माणस्स य आलावो, दव्वस्स विभंजणं तत्थ[2] ।।२७७।।

तस्मिन् काले मायायाः, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
मानस्य च आलापो, द्रव्यस्य विभंजनं तत्र ।।२७७।।

टीका – तीन मान का अनतरि सज्वलन माया की प्रथम स्थिति का कारक अर वेदक हो है तहा संज्वलन माया द्रव्य का अपकर्षण निक्षेपण का विभाग मान द्रव्यवत् कहना । तब ही सज्वलन मान की उच्छिष्टावली के निषेक थिउक्क सक्रमण करि सज्वलन माया की उदयावली के अपने समान स्थिति रूप निषेकनि विषै सक्रम करि उदय होसी । बहुरि सज्वलन मान के समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समय प्रबद्ध, ते तब ही समय घाटि दोय आवली मात्र काल करि उपशमै है ।

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ २६६,२६०,२६६ ।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३०० ।

मायाए पढमठिदी, सेसे समयाहियं तु आवलियं ।
मायालोहगबंधो, मासं सेसाण कोह आलाओ[१] ।।२७८।।

मायायाः प्रथमस्थितौ, शेषे समयाधिकां तु आवलिकां ।
मायालोभगबन्धः, मासं शेषाणां क्रोधे आलापः ।।२७८।।

टीका – माया की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहै सज्वलन माया अर लोभ का तौ मास मात्र स्थितिबध हो है अर कर्मनि का क्रोधवत् आलाप करना । पूर्वोक्त प्रकार हीनाधिकपना लीए सख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति-बंध है ।

मायदुगं संजलणगमायाए छुहदि जाव पढमठिदी ।
आवलितियं तु उवरिं, संछुहदि हु लोहसंजलणे ।।२७९।।[२]

मायाद्विकं संज्वलनगमायायां संक्रामति यावत् प्रथमस्थितिः ।
आवलित्रिकं तु उपरि, संक्रामति हि लोभसंज्वलनम् ।।२७९।।

टीका – सज्वलन माया का प्रथम स्थिति विषै यावत् तीन आवली अवशेष रहै तावत् अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान मायाद्विक का द्रव्य का संज्वलन माया विषै ही सक्रमण करै है । तातै परै संक्रमणावली विषै तिनिका द्रव्य संज्वलन लोभ विषै संक्र-मण करै है ।

मायाए पढमठिदी, आवलिसेसे त्ति मायमुवसंतं ।
ण य णवकं तत्थंतिम, बंधुदया होंति मायाए ।।२८०।।[३]

मायायाः प्रथमस्थितौ, आवलिशेषे इति मायामुपशांतं ।
न च नवकं तत्रांतिमे, बन्धोदयौ भवतः मायायाः ।।२८०।।

टीका – माया की प्रथम स्थिति विषै आयली अवशेष रहै उपशमानवली का अत समय विपै समय घाटि का दोय आवली मात्र नवक समय प्रबद्ध बिना अन्य

---

१ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३०३ ।
२ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ०३ ।
३. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०४ ।

सर्व माया का द्रव्य उपशम्या । ताही समय विषै उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक है, सो सज्वलन लोभ का उदयावली का प्रथम निषेक विषै थिउक्क संक्रमण करि सक्रमै है । तिस ही समय विषै सज्वलन माया का बंध वा उदय की व्युच्छित्ति भई ।

से काले लोहस्स य, पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि ।
ते पुण बादरलोहो, माणं वा होदि णिक्खेओ[1] ॥२८१॥

स्वे काले लोभस्य च, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति ।
तत् पुनः बादरलोभः मानो वा भवति निक्षेपः ॥२८१॥

टीका – माया का उपशमने के अनतरि सज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का कारक और वेदक हो है । सो अनिवृत्तिकरण जीव है, सो बादर कहिए स्थूल जो लोभ, ताकौ अनुभवता बादर सापराय कहिए है । इहा सज्वलन लोभ का द्रव्य का अपकर्षण करि प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण कीजिए है । ताका विधान मान की प्रथम स्थिति विषै जैसै निक्षेपण कीया था तैसै जानना । तिस ही समय संज्वलन माया के समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धनि कौ पूर्वोक्त प्रकार करि उपशमावै है । अर समय घाटि उच्छिष्टावली मात्र माया के निषेकनि का संज्वलन लोभ विषै थिउक्क सक्रमण हो है ।

पढमट्ठिदिअद्धंते, लोहस्स य होदि दिणपुधत्तं तु ।
वस्ससहस्सपुधत्तं, सेसाणं होदि ठिदिबंधो[2] ॥२८२॥

प्रथमस्थित्यर्धांते, लोभस्य च भवति दिनपृथक्त्वं तु ।
वर्षसहस्रपृथक्त्वं, शेषाणां भवति स्थितिबंधः ॥२८२॥

टीका – माया उपशमन का अनतर समय तै लगाय अनिवृत्तिकरण का अंत समय पर्यंत बादर लोभ का वेदक काल है । तातै परै सूक्ष्मसापराय का अंत समय पर्यंत सूक्ष्म लोभ का वेदक काल है । दोऊ मिलाए लोभ का वेदक काल हो है, सो लोभ वेदक काल अतर्मुहूर्त मात्र है । ताकौ सख्यात का भाग देइ, तहा एक भाग विना वहुभाग कौ तीन का भाग देइ एक एक समान भाग तीन स्थाननि विषै स्थापना। वहुरि

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०४ ।
२ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०६ ।

अवशेष -क भाग कौ सख्यात का भाग देइ तहा बहुभाग कौ प्रथम समान भाग विषै मिलाए बादर लोभ वेदक काल का प्रथम अर्ध हो है बहुरि अवशेष एक भाग कौ सख्यात का भाग देइ तहा बहुभाग दूसरा समान भाग मे मिलाए बादर लोभ वेदक काल का द्वितीय अर्ध हो है, सो यहु सूक्ष्मकृष्टि करने का काल है । इनि दोउनि कौ मिलाए लोभ वेदक काल का दोय तीसरा भाग किछू अधिक प्रमाण बादर लोभ वेदक काल है । यातै आवली अधिक बादर लोभ की प्रथम स्थिति है । बहुरि लोभ वेदक काल का तीसरा भाग किछू अधिक प्रमाण बादर लोभ वेदक काल का प्रथम अर्ध है, सो अर्थ सदृष्टि करी प्रगट जानिए है । बहुरि जो एक भाग अवशेष रह्या था, ताकौ तीसरा समान भाग विषै मिलाएं सूक्ष्मकृष्टि का वेदक काल है, सोई सूक्ष्मसापराय गुणस्थान का काल जानना । इहा बादर लोभ वेदक काल का प्रथम अर्ध को अत समय विषै स्थितिबध सज्वलन लोभ का तौ पृथक्त्व दिन प्रमाण अर औरनि का पूर्वोक्त क्रम लीए पृथक्त्व हजार वर्ष प्रमाण है ।

विदियद्धे लोभावरफड्ढयहेट्ठा करेदि रसकिट्टिं ।
इगिफड्ढयवग्गणगद, संखाणमणंत भागमिदं[1] ॥२८३॥

द्वितीयार्धे लोभावरस्पर्धकाधस्तनां करोति रसकृष्टिम् ।
एकस्पर्धकवर्गणागतं, संख्यानामनंत भागमिदम् ॥ २८३ ॥

टीका – सज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का प्रथम अर्ध कौ पूर्वोक्त प्रकार व्यतीत करि द्वितीयार्ध का प्रथम समय विषै सज्वलन लोभ का अनुभाग सत्व विषै अपकर्षण करि सूक्ष्मकृष्टि करिए है । सो विधान कहिए है—

सज्वलन लोभ का अनुभाग सत्व विषै जघन्य अनुभाग शक्ति सहित जो परमाणू, ताविषै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद जीवराशि तै अनत गुणे है । सो याकौं जघन्य वर्ग कहिए । इतने इतने अविभाग प्रतिच्छेद सहित जेते कर्म परमाणू रूप वर्ग पाइए, तिनके समूह का नाम प्रथम वर्गणा है, सो सज्वलन लोभ के सत्ता रूप सर्व परमाणू तिनकौ अनुभाग सबधी किछू अधिक ड्योढ गुणहानिका भाग दीएं जो प्रमाण आवै, तितने प्रथम वर्गणा विषै परमाणू है । याकौ अनुभाग सबधी दो गुणहानि का भाग दीए विशेष का प्रमाण आवै है । विशेष कौ दोगुणहानि करि गुणे

[1] जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०७, ३०८

प्रथम वर्गणा विषै परिमाणूनि का प्रमाण आवै है। इस प्रथम वर्गणा कौ साधिक ड्योढ गुणहानि करि गुणें सज्वलन लोभ का सर्व सत्व द्रव्य का प्रमाण हो है। सो यातै द्रव्य कौ अपकर्षण करि अनुभाग की सूक्ष्म कृष्टि करै है। सो जघन्य स्पर्धक की लता समान प्रथम वर्गणा विषै अविभाग प्रतिच्छेद है, तिनकौ नीचै तितने भी अनत गुणा घाटि अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद रूप सूक्ष्मकृष्टि हो है। तिन सूक्ष्मकृष्टिनि का प्रमाण जो एक स्पर्धक विषै वर्गणानि का प्रमाण है, ताके अनतवे भाग मात्र जानना। पहलै अतर्मुहूर्त काल करि निपजै असा अनुभाग काडक घात होता था, तीहि बिना अब समय समय कृष्टि घात करने का प्रारभ करै है असा अर्थ जानना।

उक्कट्टिदइगिभागं, पल्लासंखेज्जखंडदिगिभागं।
देदि सुहुमासु किट्टिसु, फड्ढयगे सेसबहुभागं[1] ॥२८४॥

अपकर्षितैकभागं, पल्यासंख्येयखंडितैकभागं ।
ददाति सूक्ष्मासु कृष्टिषु, स्पर्धके शेषे बहुभागम् ॥२८४॥

टीका – संज्वलन लोभ का सर्व सत्वरूप द्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य कौ ग्रहि ताकौ बहुरि पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा बहुभाग कौ जुदा राखि, एक भाग मात्र द्रव्य कौ सूक्ष्मकृष्टि रूप परिणमावै है। तहा "**अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे**" इत्यादि विधान तै तिस एक भाग मात्र द्रव्य कौ कृष्टनि का प्रमाणरूप जो कृष्ट्यायाम, ताका भाग दीए मध्यधन आवै है। याकौ एक घाटि कृष्ट्यायाम का आधा करि हीन जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं चय का प्रमाण आवै है। याकौं दो गुणहानि करि गुणे आदि वर्गणा का द्रव्य हो है। सो इतने द्रव्य कौ तौ प्रथम कृष्टि विषै निक्षेपण करै है याकरि प्रथम कृष्टि निपजाइए है। यहु ही प्रथम समय विषै कीनी कृष्टिनि विषै जघन्य कृष्टि है। बहुरि यातै द्वितीयादि कृष्टिनि विषै एक एक चय प्रमाण घटता द्रव्य निक्षेपण करै है। असै एक घाटि कृष्ट्यायाम मात्र चय करि हीन प्रथम कृष्टि मात्र द्रव्य कौ अत कृष्टि विषै निक्षेपण करै है। अब इनिविषै शक्ति का प्रमाण कहिए है–

पूर्व स्पर्धकनि का जघन्य वर्ग विषै जो अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण है, ताकौ कृष्ट्यायाम का जो प्रमाण, तितनी बार अनत का भाग दीए, जो प्रमाण

---

१. जयधवला, भाग–१३ पृ ३०८,३०९।

आवैं, तितने प्रथम कृष्टि विषैं अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद है । बहुरि द्वितीयादि कृष्टि विषै क्रमतै अनत गुणे हैं । सो एक घाटि कृष्ट्यायाम मात्र बार अनत करि गुणे अतकृष्टि विषै ते अविभाग प्रतिच्छेद पूर्व स्पर्धक का जघन्य वर्ग के अनतवां भाग मात्र है । अैसै प्रथम समय विषै कीनी सूक्ष्मकृष्टि हो है । बहुरि जे अपकर्षण कीए द्रव्य विषैं बहुभाग जुदे स्थापे थे, तिनके द्रव्य कौ पूर्व सत्तारूप पाइए अैसे जे पूर्व स्पर्धक तिन सबधी नानागुणहानि विषै निक्षेपण करै है । तहा **"दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा"** इत्यादि विधान तै तिस बहुभाग द्रव्य कौ अनुभाग संबधी साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए जो द्रव्य आवे ताकौ प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा विषै निक्षेपण करै है । बहुरि द्वितीयादि वर्गणानि विषै एक चय घटता क्रम लीएं निक्षेपण करै है । द्वितीयादि गुणहानिनि की वर्गणानि विषै क्रम तै पूर्व गुणहानि तै आधा आधा द्रव्य निक्षेपण करै है । अैसै सूक्ष्मकृष्टि करण काल का प्रथम समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य का निक्षेपण करै है । इहा अंतकृष्टि विषै निक्षेपण कीया द्रव्य तातै पूर्व स्पर्धक की जघन्य वर्गणा विषै निक्षेपण कीया द्रव्य अनंत गुणा घाटि जानना । अब कृष्टि शब्द का अर्थ कहिए है–

कृश तनू करणे इस धातु करि **'कर्षणं कृष्टिः'** जो कर्म परमाणूनि की अनुभाग शक्ति का घटावना, ताका नाम कृष्टि है । अथवा **'कृश्यत इति कृष्टिः'** समय समय प्रति पूर्व स्पर्धक की जघन्य वर्गणा तै भी अनंत गुणा घटता अनुभागरूप जो वर्गणा, ताका नाम कृष्टि है ।

पडिसमयमसंखगुणा, दव्वादु असंखगुणविहीणकमे ।
पुव्वगहेट्ठा हेट्ठा, करेदि किट्टि स चरिमो त्ति[1] ॥२८५॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणा, द्रव्यात् असंख्यगुणविहीनक्रमेण ।
पूर्वगाधस्तना अधस्तनां, करोति कृष्टि स चरमे इति ॥२८५॥

टीका–कृष्टि करण काल का द्वितीय समय तै लगाय अत समय पर्यंत पूर्व समय विषै जितना द्रव्य अपकर्षण कीया, तातै असख्यात गुणा द्रव्य कौ संज्वलन लोभ का पूर्व स्पर्धक रूप सर्व सत्व द्रव्य तै ग्रहि करि अपूर्व कृष्टि करै है, सो पूर्व समयनि विषै भई ते पूर्व कृष्टि कहिए । विवक्षित समय विषै नवीन कृष्टि भई, ते

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३०९, ३१० ।

अपूर्व कृष्टि कहिए । सो पूर्व पूर्व समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण तै उत्तर उत्तर समय विषै करी कृष्टिनि का प्रमाण क्रम तै असख्यात गुणा घटता है अर अनुभाग अनंत गुणा घटता है । तहा कृष्टि करण काल का दूसरा समयनि विषै जो प्रथम समय विषै जो द्रव्य अपकर्षण कीया था, तातै असख्यात गुणा द्रव्य कौ सज्वलन लोभ का सर्व सत्त्व द्रव्य तै अपकर्षण करि, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग तौ पूर्व स्पर्धकनि विषै निक्षेपण करने । अवशेष एक भाग विषै कितना एक द्रव्य कौ प्रथम समय विषै करी जो जघन्य कृष्टि ताके नीचै अनत गुणा घटता अनुभाग लीए अपूर्व कृष्टि तिनि रूप परिणमावै है । अवशेष द्रव्य कौ प्रथम समय विषै कीनी कृष्टि, तिनिरूप परिणमावै है ।

हेट्ठासीसे उभयग दव्वविसेसे य हेट्ठकिट्टिम्मि ।
मज्झिमखंडे दव्वं, विभज्ज बिदियादिसमयेसु[1] ॥२८६॥

अधस्तनशीर्षे उभयग द्रव्यविशेषे च अधस्तन कृष्टौ ।
मध्यमखंडे द्रव्यं, विभज्य द्वितीयादिसमयेषु ॥ २८६ ॥

टीका – कृष्टि करण काल का दूसरा समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य, ताकौ अधस्तन शीर्ष विशेषनि विषै उभय द्रव्य विशेषनि विषै अधस्तन कृष्टिनि विषै मध्यम खडनि विषै च्यारि प्रकार विभाग करि निक्षेपण करै है । सोई कहिए है—

पूर्व समय विषै कीनी जे कृष्टि, तिनि विषै प्रथम कृष्टि विषै तौ बहुत परमाणू है । अर द्वितीयादि कृष्टिनि विषै एक एक चय घटता क्रम लीए है, तहा पूर्व कृष्टि विषै सभवता चय का प्रमाण ल्याय द्वितीय कृष्टि विषै एक चय अर तृतीय कृष्टि विषै दोय चय असै क्रम तै एक एक बधता चय प्रमाण परमाणू तिन द्वितीयादि कृष्टिनि विषै मिलाए सर्व कृष्टि है, ते प्रथम कृष्टि के समान होइ सो असै जेता द्रव्य दीया, ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है । याकौ दीए सर्व पूर्व कृष्टि प्रथम कृष्टि के समान हो है । सो इस द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है—

पूर्व समय विषै जो कृष्टि विषै द्रव्य दीया, ताकौ पूर्व समय विषै कीनी जे कृष्टि, तिनका प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीए मध्यधन आवै है । ताकं

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ स. ३१२ से ३१४ ।

एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि, ताका भाग दीए चय जो एक विशेष, ताका प्रमाण आवै है । तहा एक चय कौ आदि विषै स्थापना, जातै द्वितीय कृष्टि विषै एक चय देना है । बहुरि एक चय उत्तर स्थापना, जातै तृतीयादि कृष्टिनि विषै एक एक चय बधता देना है । बहुरि एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापना, जातै प्रथम कृष्टि विषै चय नाही मिलावना है । ऐसे स्थापि **"पदमेगेण विहीणं"** इत्यादि श्रेणि व्यवहार रूप गणित सूत्र करि एक घाटि गच्छ कौ दोय का भाग देइ, ताकौ उत्तर जो एक चय, ताकरि गुणि, तामै प्रभव जो आदि एक चय, ताकौ मिलाय बहुरि गच्छ करि गुणै चय धन आवै है । अक सदृष्टि करि जैसे एक घाटि कृष्टि प्रमाण गच्छ सात, तामै एक घटाए छह, ताकौ दोय का भाग दीए तीन, ताकौ चय का प्रमाण सोलह करि गुणे अठतालीस, यामै प्रभव जो एक चय सोलह ताकौ मिलाए चौसठि, याकौ गच्छ सात करि गुणै च्यारि सै अठतालीस चय धन होइ । तैसे विधान तै जो प्रमाण आवै, तितना अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य जानना । बहुरि जो पूर्व कृष्टिनि विषै प्रथम कृष्टि, ताका प्रमाण था, ताहीके समान प्रमाण लीए जे विवक्षित समय विषै अपूर्व कृष्टि करी तिनि विषै जो समान प्रमाण लीए समपटिट्का रूप द्रव्य देना । ताका नाम अधस्तन कृष्टि द्रव्य है । इस द्रव्य कौ दीए अपूर्व कृष्टि है ते प्रथम पूर्व कृष्टि के समान हो है, याका प्रमाण ल्याइए है—

पूर्वोक्त पूर्व कृष्टि सबधी चय, ताकौ दो गुणहानि करि गुणे, पूर्व कृष्टिनि विषै प्रथम कृष्टि के द्रव्य का प्रमाण आवै है । सो एक कृष्टि का इतना द्रव्य होइ तौ सर्व अपूर्व कृष्टिनि का केता होइ ? ऐसे त्रैराशिक करि तिस प्रथम पूर्व कृष्टि का द्रव्य कौ सर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणे अधस्तन कृष्टि द्रव्य का प्रमाण हो है । इहा प्रथम, समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण कौ असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीए द्वितीय समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण हो है ऐसा जानना । बहुरि पूर्वोक्त अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य दीए सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि समान प्रमाण लीए भई तहा अपूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि तै लगाय उपरि उपरि अपूर्व कृष्टि स्थापि, तिनके ऊपरि प्रथमादि पूर्व कृष्टि स्थापनी ऐसे स्थापि, तिनका चय घटता क्रमरूप एक गोपुच्छ करने के अर्थि सर्व कृष्टि सबधी सभवता चय का प्रमाण ल्याइ, अत की पूर्व कृष्टि विषै एक चय ताके नीचै उपात पूर्व कृष्टि विषै दोय चय ऐसे क्रम तै एक एक चय बधता प्रथम अपूर्व कृष्टि पर्यन्त द्रव्य देना । याका नाम उभय द्रव्य विशेष है । याकौ दीए सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का चय घटता क्रम रूप एक गोपुच्छ हो है, याका प्रमाण ल्याइए है—

पूर्व समयनि विषै जो कृष्टिनि विषै दीया द्रव्य था अर इस विवक्षित समय विषै जो कृष्टिनि विषै देने योग्य द्रव्य है इन दोऊनि कौं मिलाए जो द्रव्य का प्रमाण भया, ताकौ पूर्व कृष्टिनि का अर अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मिलाए जो गच्छ होइ, ताका भाग दीए मध्यधन आवै है। ताकौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दोगुणहानि, ताका भाग दीए इहा चय जो एक विशेष, ताका प्रमाण हो है। सो एक चय आदि स्थापि अर एक चय उत्तर स्थापि अर पूर्व अपूर्व कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापि **'पदमेगेण विहीणं'** इत्यादि सूत्र के अनुसारि एक घाटि गच्छ का आधा कौ चय करि गुणि, तामै चय मिलाय ताकौ गच्छ करि गुणै सर्व उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि जो विवक्षित समय विषै कृष्टि रूप परिणमावने योग्य द्रव्य अपकर्षण कीया, तीहि विषै पूर्वोक्त अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य अर अधस्तन कृष्टि द्रव्य अर उभय द्रव्य घटाए अवशेष द्रव्य रह्या, ताकौ सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषै समान भाग करि देना। याका नाम मध्यम खड द्रव्य है। बहुरि याकौ दीए तिस अपकर्षण द्रव्य की तौ समाप्तता हो है अर सर्व पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि विषै चय घटता क्रम रूप ज्यू का त्यू रहै है। याका प्रमाण ल्याइए है—

विवक्षित समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र द्रव्य कृष्टिनि विषै देने योग्य है। तीहिविषै पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य घटाए किंचिदून भया सो इतना द्रव्य सर्व कृष्टिनि विषै दीजिए तौ एक कृष्टि विषै केता दीजिए अैसै त्रैराशिक करि तिस द्रव्य कौ पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीए एक कृष्टि विषै देने योग्य एक खड का प्रमाण हो है। याकौ सर्वकृष्टि प्रमाण करि गुणै, सर्व मध्यमखड द्रव्य का प्रमाण हो है। याप्रकार इहां विवक्षित द्वितीय समय विषै कृष्टिरूप होने योग्य द्रव्य विषै बुद्धिकल्पना तै ते अधस्तन-शीर्ष विशेष आदि च्यारि प्रकार द्रव्य जुदे स्थापे। अैसै ही इहा तृतीयादि समयनि विषै कृष्टिरूप होने योग्य द्रव्य विषै विधान जानना। वा आगै क्षपक श्रेणी का वर्णन विषै अपूर्व स्पर्धकनि का बादर कृष्टिनि का वा सूक्ष्मकृष्टिनि का वर्णन करतै अैसै विधान कहेगे तहा अैसा ही अर्थ समझना। विशेष होइ सो विशेष जानि लेना।

इहा सदृष्टि करि चय घटता क्रम लीए पूर्व कृष्टिनि की रचना ऐसी—

बहुरि यामैं अधस्तनशीर्ष द्रव्य मिलाएं समानरूप पूर्वकृष्टिनि की रचना ऐसी—

बहुरि इनके नीचे अधस्तन कृष्टि द्रव्य करि अपूर्व कृष्टि की समपट्टिका रचना कीए ऐसी—
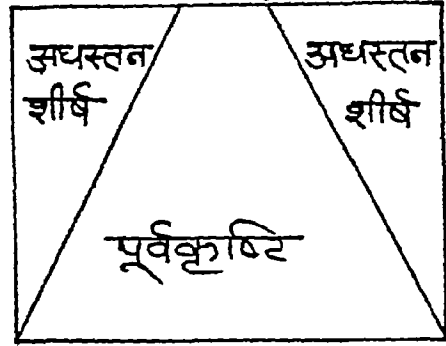
इहां उभय द्रव्य विशेष द्रव्य निक्षेपण कीए गोपुच्छ की ऐसी हो है—
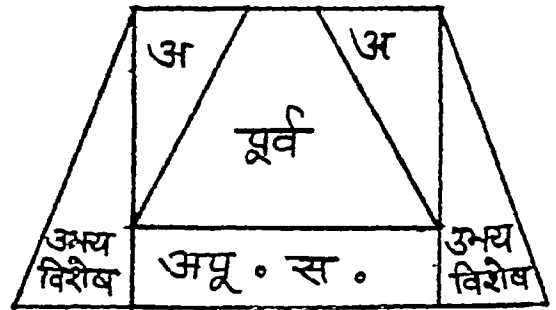
यामैं मध्यम खड द्रव्य मिलाएं ऐसी रचना हो है—
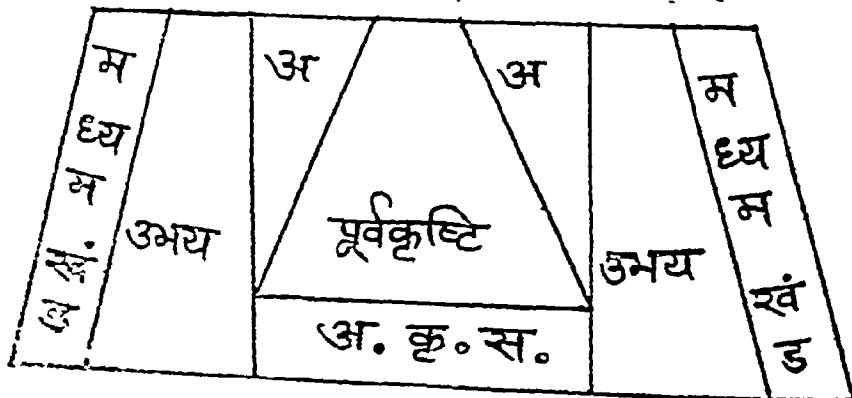
या प्रकार द्रव्य देने का विधान जानना । यद्यपि द्रव्य तौ युगपत् जेता देने योग्य है तितना दीजिए है तथापि समझने के अर्थि जुदा जुदा विभाग करि वर्णन किया है ।

हेट्ठासीसं थोवं, उभयविसेसे तदो असंखगुणं ।
हेट्ठा अणंतगुणिदं, मज्झिमखंडं असंखगुणं ॥२८७॥

अधस्तनशीर्ष स्तोकं, उभयविशेषे ततोऽसंख्यगुणं ।
अधस्तनमनंतगुणितं, मध्यमखंडं असंख्यगुणम् ॥२८७॥

टीका – ए कहे च्यारि द्रव्य, तिनविषै अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य सर्व तै स्तोक है । यातै उभय द्रव्य विशेष असंख्यात गुणा है । यातै अधस्तन कृष्टि द्रव्य अनत गुणा है । यातै मध्यम खड द्रव्य असख्यात गुणा है अैसा जानना ।

अवरे बहुगं देदि हु, विसेसहीणक्कमेण चरिमो त्ति ।
तत्तो णंतगुणूणं, विसेसहीणं तु फड्ढयगे ॥२८८॥

अवरस्मिन् बहुकं, ददाति हि विशेषहीनक्रमेण चरमे इति ।
ततोऽनंतगुणोनं, विशेषहीनं तु स्पर्धके ॥२८८॥

टीका – दूसरे समय विषै कीनी जे अपूर्वकृष्टि, तिनविषै जो जघन्य कृष्टि है, तिस विषै तौ बहुत द्रव्य दीजिए है बहुरि द्वितीय अपूर्व कृष्टि तै लगाय अपूर्व कृष्टि की अत कृष्टि पर्यत क्रम तै चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है । बहुरि तातै पूर्व स्पधर्क की प्रथम वर्गणा विषै निक्षेपण कीया द्रव्य अनत गुणा घटता है । । तातै परै ताकी द्वितीयादि वर्गणा जे नाना गुणहानि सम्बन्धी अत गुणहानि की अत वर्गणा पर्यत है, तिन विषै अपनी अपनी गुणहानि विषै सम्भवता चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है । सो इहा याकौ विशेष करि दिखाइए है—

तहा द्वितीय सयम विषै अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य है, ताकौ पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि विषै निक्षेपण करने का विधान श्रीमाधवचद्र गुरु के अनुसार तै कहै है–द्वितीय समय विषै कीनी जे अपूर्वकृष्टि, तिन विषै अधस्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य तौ न दीजिए है अर अवशेष तीन द्रव्य निक्षेपण करिए है । तहा अधस्त

कृष्टि द्रव्य तै एक कृष्टि का द्रव्य कौ अर मध्यम खड का द्रव्य तै एक खड का द्रव्य कौ अर उभय विशेष द्रव्य तै पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौ मिलाएं जो प्रमाण होइ तितने मात्र चयनि का द्रव्य कौ ग्रहि करि जघन्य कृष्टि विषै निक्षेपण करै है । तातै जघन्य कृष्टि विषै दीया द्रव्य बहुत जानना । बहुरि तातै ऊपरि अधस्तन कृष्टि द्रव्य तै एक एक कृष्टि द्रव्य कौ अर मध्यम खड द्रव्य तै एक-एक खंड द्रव्य कौ उभय विशेष द्रव्य तै पूर्व-अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण तै क्रम करि एक एक घटता प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौ ग्रहि करि अनुक्रम तै द्वितीयादि अपूर्व कृष्टिनि विषै निक्षेपण करै है । तहा अत कृष्टि विषै एक कृष्टि द्रव्य कौ अर एक मध्यम खड द्रव्य कौ अर एक अधिक पूर्व कृष्टि का प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौ निक्षेपण कीजिए है । इहां प्रथमादि कृष्टि तै द्वितीयादि कृष्टि विषै दीया द्रव्य एक-एक उभय द्रव्य विशेष मात्र घटता जानना । इहा अधस्तन कृष्टि का द्रव्य समाप्त भया । ऐसै तीन द्रव्य का स्थापन कह्या । या प्रकार इतने-इतने द्रव्य करि इहा अपूर्व कृष्टि निपजी ।

बहुरि प्रथम समय विषै करी ऐसी अपूर्व[1] कृष्टि, तिनि विषै जो जघन्य कृष्टि तीहि विषै दोय ही द्रव्य का निक्षेपण हो है । तहा मध्यम खड द्रव्य तै एक खड के द्रव्य कौ अर उभय विशेष द्रव्य तै पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौ ग्रहि निक्षेपण कीजिए है । यहु अपूर्व कृष्टिनि का अत कृष्टि विषै निक्षेपण कीया जो द्रव्य, तातै असख्यातवा भाग अर अनतवा भाग करि हीन जानना, जातै द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य तै असख्यातवे भाग मात्र तौ अधस्तन कृष्टि के एक कृष्टि का द्रव्य अर सर्व द्रव्य के अनतवे भाग मात्र जो उभय विशेष का चय, इनकरि घटता द्रव्य इहा निक्षेपण कीया है । बहुरि द्वितीयादि पूर्व कृष्टिनि विषै अधस्तन शीर्ष विशेष सहित तीन द्रव्य का निक्षेपण हो है । तहा द्वितीय पूर्व कृष्टि विषै अधस्तन शीर्ष विशेष तै एक चय के द्रव्य कौ मध्यम खंड द्रव्य तै एक खड के द्रव्य कौ उभय विशेष द्रव्य तै एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौ ग्रहि निक्षेपण करै है । बहुरि तृतीयादि पूर्व कृष्टिनि विषै अधस्तन शीर्ष विशेष तै दोय, तीन आदि क्रम तै एक-एक बधता चयनि के द्रव्य कौ अर मध्यम खड तै एक-एक खड के द्रव्य कौ उभय विशेष द्रव्य तै दोय, तीन आदि घटता पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र चयनि के द्रव्य कौ ग्रहि करि क्रम तै निक्षेपण करै है । तहा पूर्व कृष्टिनि की अंत कृष्टि विषै अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य तै एक घाटि पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र चयनि के

---

1. 'अपूर्व' की जगह ब तथा स प्रति में 'पूर्व' शब्द मिलता है ।

द्रव्य कौ मध्यम खंड द्रव्य तै एक खण्ड द्रव्य कौ उभय विशेष द्रव्य तै एक चय के द्रव्य कौ ग्रहि करि निक्षेपरग करि निक्षेपण करै है। इहा प्रथमादि कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै द्वितीयादि कृष्टि विषै दिया द्रव्य क्रम तै उभय द्रव्य विशेष के अनंतवे भाग मात्र जो अधस्तन शीर्ष विशेष, ताकरि हीन उभय द्रव्य विशेष मात्र जानना। ऐसे पूर्व कृष्टि थी, तिनविषै इतना द्रव्य और मिलाया या प्रकार दीया द्रव्य का निक्षेपण कीए प्रथम द्वितीय समय विषै कीनी जे कृष्टि, तिनिका द्रव्य सर्व ही एक गोपुच्छाकार हो है।

जैसै गाय का पूंछ क्रम तै घटता हो है, तैसै क्रम तै घटता द्रव्य प्रमाण लीएं हो है। सो अर्थसदृष्टि आदि करि विचारै यहु प्रकट जानिए है। सो सस्कृत टीका तै जानना। बहुरि बहुभाग मात्र जो पूर्व स्पर्धक, तिनि विषै देने योग्य द्रव्य था, ताकौ **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तै प्रथमादि वर्गणानि विषै चय घटता क्रम करि दीजिए है। इहा अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य क्रम तै प्रथम वर्गणा द्रव्य अनंतवे भाग मात्र है, जातै इहा भागहार द्वयर्ध गुणहानि है। या प्रकार इस गाथा का अर्थ जानना।

णवरि असंखाणंतिमभागूणं पुव्वकिट्टिसंधीसु।
हेट्ठिमखंडपमाणेणेव विसेसेण हीणादो ॥२८९॥

नवरि असंख्यानामंतिमभागोनं पूर्वकृष्टिसधिषु।
अधस्तनखंडप्रमाणेनैव विशेषेण हीनात् ॥२८९॥

टीका – इतना विशेष जो पूर्व-अपूर्व कृष्टि की सधिनि विषै अपूर्व कृष्टि की अत कृष्टि विषै निक्षेपण कीया द्रव्य तै पूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषै निक्षेपण कीया द्रव्य है, सो असख्यातवा भाग करि वा अनतवा भाग करि घटता है। जातै एक अधस्तन कृष्टि का द्रव्य अर एक उभय द्रव्य का विशेष ता करि हीन हो है। सो कथन पूर्वै किया ही है।

अवरादो चरिमोत्ति य, अणंतगुणिदक्कमादु सत्तीदो।
इदि किट्टीकरणद्धा, बादरलोहस्स बिदियद्धं[1] ॥२९०॥

---

१. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३१४, ३१५।

अवरस्मात् चरम इति च, अनंतगुणितक्रमात् शक्तितः ।
इति कृष्टिकरणाद्धा, बादरलोभस्य द्वितीयार्धम् ।।२९०।।

टीका – अपूर्वकृष्टि की जघन्य कृष्टि के अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद है, तिनतै द्वितीयादि पूर्व कृष्टि की अत कृष्टि पर्यत के अविभाग प्रतिच्छेद क्रम तै अनत अनत गुणे है । तहा पूर्व कृष्टि की अत कृष्टि विषै एक घाटि पूर्व अपूर्व कृष्टि का जो प्रमाण तितनी बार अनत का गुणकार हो है । असै द्वितीय समय विषै विधान कीया । बहुरि जैसै द्वितीय समय विषै विधान कह्या तैसै ही कृष्टि करण काल के तृतीयादि अत समय पर्यन्तनि विषै क्रम तै असख्यात गुणा द्रव्य कौ अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है । इस प्रकार बादर लोभ वेदक काल का द्वितीय अर्ध मात्र रूप सूक्ष्म कृष्टि करने का काल व्यतीत हो है । जैसै क्षपक श्रेणी विषै पूर्व-अपूर्व स्पर्धकनि का सर्व ही द्रव्य कौ अपकर्षण करि कृष्टि करै है । तैसे उपशम श्रेणी विषै भी कृष्टि करै है । विशेष इतना—

इहा पूर्व स्पर्धक के द्रव्य तै असख्यातवा भाग मात्र ही द्रव्य कौ ग्रहि सूक्ष्म कृष्टि करै है । अवशेष द्रव्य अपने स्वरूप रूप ही रहता सता उपशमै है ।

बिदियद्धा संखेज्जा, भागेसु गदेसु लोभठिदिबंधो ।
अंतोमुहुत्तमेत्तं, दिवसपुधत्तं तिघादीणं[1] ।।२९१।।

द्वितीयाद्धा संख्येयभागेषु गतेषु लोभस्थितिबंधः ।
अंतर्मुहूर्तमात्रं दिवसपृथक्त्वं त्रिघातिनाम् ।।२९१।।

टीका–सज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का द्वितीय अर्ध मात्र जो कृष्टि करण काल, ताकौ सख्यात का भाग दीए तहा बहुभाग व्यतीत होते अत समय विषै सज्वलन लोभ का अंतर्मुहूर्त मात्र अर तीन घातियानि का पृथक्त्व दिन मात्र स्थिति वध हो है ।

किट्टीकरणद्धाए, जाव दुचरिमं तु होदि ठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि अघादिठिदिबंधो[2] ।।२९२।।

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१५, ३१६ ।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१६ ।

कृष्टिकरणाद्धाया यावत् द्विचरमं तु भवति स्थितिबधः ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि अघातिस्थितिबंधः ॥२९२॥

टीका – कृष्टि करण काल का यावत् द्विचरम समय प्राप्त होइ तावत् तीन अघातिया कर्मनि का स्थिति बध यथासम्भव सख्यात हजार वर्षमात्र है । बहुरि संज्वलन लोभादिकनि का भी स्थिति बध है सो तिस द्विचरम समय पर्यंत पूर्वोक्त प्रमाण लीए समान रूप ही जानना ।

किट्टीयद्धाचरिमे, लोभस्संतो मुहुत्तियं बंधो ।
दिवसंतो घादीणं, बेवस्संतो अघादीणं[1] ॥२९३॥

कृष्ट्यद्धाचरमे, लोभस्यांतर्मुहूर्तकं बंधः ।
दिवसांतः घातिनां, द्विवर्षांतोऽघातिनाम् ॥२९३॥

टीका–कृष्टि करण काल का अंत समय विषै पूर्व स्थिति बध तै संख्यात गुणा घाटि संज्वलन लोभ का अतर्मुहूर्त मात्र अर तीन घातियानि का दिवसात कहिए एक दिन किछू घाटि अर तीन अघातियानि का द्वि वर्षात् कहिए दोय वर्ष किछू घाटि स्थिति बंध हो है । ए उपशमक अनिवृत्तिकरण के अत समय विषै स्थिति बंध कहे ते क्षपक अनिवृत्तिकरण के अत समय के स्थिति बध तै दूणे है ।

बिदियद्धा परिसेसे, समऊणावलितियेसु लोभदुगं ।
सट्ठाणे उवसमदि हु, ण देदि संजलणलोहम्मि[2] ॥२९४॥

द्वितीयार्धे परिशेषे, समयोनावलित्रिकेषु लोभद्विकम् ।
स्वस्थाने उपशाम्यति हि, न ददाति संज्वलनलोभे ॥२९४॥

टीका– सज्वलन लोभ की प्रथम स्थिति का द्वितीयार्ध विषै समय घाटि तीन आवली अवशेप रहै अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान लोभ है सो सज्वलन लोभ विषै सक्रमण नाही करै है, जातै सक्रमणावली का प्रथम समय विषै ही इस सक्रमण का विश्राम

---

१. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१६, ३१७ ।

२. जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३१७ ।

भया। तौ कहा है ? तिनि दोऊ लोभनि का द्रव्य है सो स्वस्थाने कहिए अपने रूप ही विषै होता सता उपशमै है। बहुरि संक्रमणावली व्यतीत भए तहां दोय आवली अवशेष रहै आगाल प्रत्यागाल की भी व्युच्छित्ति भई। बहुरि प्रत्यावली जो द्वितीयावली, ताका अंत समय पर्यंत उदीरणा वर्तै है, इनिका स्वरूप पूर्वै कह्या है तैसे जानना।

बादरलोभादिठिदी, आवलिसेसे तिलोहमुवसंतं।
णवकं किट्टिं मुच्चा, सो चरिमो थूलसंपराओ य[1] ॥२९५॥

बादरलोभादिस्थितौ आवलिशेषे त्रिलोभमुपशांतं।
नवकं कृष्टिं मुक्त्वा स चरमः स्थूलसांपरायो यः ॥२९५॥

टीका– बादर लोभ की प्रथम स्थिति विषै उच्छिष्टावली मात्र अवशेष रहै उपशमनावली का अंत समय विषै तीनो लोभ का सर्व द्रव्य उपशम रूप भया है। तहां विशेष जो सूक्ष्म कृष्टि कौं प्राप्त भया द्रव्य अर समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धनि का द्रव्य अर उच्छिष्टावली मात्र निषेकनि का द्रव्य नाही उपशम्या है, अवशेष उपशम्या है। ऐसे कृष्टि करण काल का अंत समयवर्ती जीव कौं चरम समयवर्ती अनिवृत्ति बादर सांपराय कहिए। या प्रकार अनिवृत्तिकरण का स्वरूप कह्या।

से काले किट्टिस्स य, पढमट्ठिदिकारवेदगो होदि।
लोहगपढमठिदीदो, अद्धं किंचूणयं गत्थ[2] ॥२९६॥

स्वे काले कृष्टेश्च, प्रथमस्थितिकारवेदको भवति।
लोभगप्रथमस्थितितः, अर्धं किंचिदूनकं गत्वा ॥२९६॥

टीका – अनिवृत्तिकरण के अनंतरि प्रथम समयवर्ती जो सूक्ष्म सांपराय है, सो अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति लिए जो समस्त सूक्ष्म कृष्टि का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहां एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि, ताकौ पल्य का असंख्यातवां भाग

---

१ जयधवला भाग–१३, पृष्ठ ३१८, ३१९।

२ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३१८ से ३२०।

का भाग देइ एक भाग कौ सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण करै है। सो याका प्रमाण बादर लोभ वेदक काल तै किछू घाटि तीसरा भाग मात्र है। जो सूक्ष्म सांपराय का काल, सोई सूक्ष्मकृष्टि का प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना। सो यहु (होय) उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम है। याके निषेकनि विषै **'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंड'** इत्यादि विधान तै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौ द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है। सो यहु तिस प्रथम स्थिति के उपरिवर्ती है। याका प्रमाण अतर्मुहूर्त्त मात्र है। यहु ही इहा उपरितन स्थिति है। याके निषेकनि विषै **"अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे"** इत्यादि विधान तै चय घटता क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है। असै बादर लोभ की प्रथम स्थिति का द्वितीय अर्ध तै किंचित् न्यून मात्र सूक्ष्मकृष्टिनि की प्रथम स्थिति करै है। बहुरि ज्ञानावरण आदि कर्मनि की अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम पूर्ववत् प्रवर्तै है। सो ताका इहां प्रमाण किंचित् अधिक सूक्ष्म सापराय काल मात्र है। बहुरि तिस ही सूक्ष्मसापराय का प्रथम समय विषै सूक्ष्मकृष्टि का उदय कौ वेदै है — भोगवै है ॥

पढमे चरिमे समये, कदकिट्टीणग्गदो दु आदीदो।
मुच्चा असंखभागं, उदेदि सुहुमादिमे सव्वे[1] ॥२९७॥

प्रथम चरमे समये कृतकृष्टीनामग्रतस्तु आदितः।
मुक्त्वा असंख्यभागं, उदेति सूक्ष्मादिमे सर्वे ॥२९७॥

टीका – सूक्ष्म कृष्टि करने के काल का प्रथम समय विषै अर अत समय विषै कीनी जे कृष्टि, तिनकौ पल्य का असख्यातवा भाग दीए एक भाग मात्र कृष्टि है, ते अपने स्वरूप करि उदय न हो है। अन्य कृष्टिरूप परिणमि उदय हो है। बहुरि अवशेष पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग दीए बहुभाग मात्र प्रथम समय अत समय विषै कीनी कृष्टि अर द्वितीयादि चरम समय विषै कीनी सर्व कृष्टि, ते अपने स्वरूप ही करि उदय हो हैं। प्रथम समय विषै जो कीनी कृष्टि तिनि विषै तौ अत कृष्टि तै लगाय पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र कृष्टि उदय कौ प्राप्त नाही, ते अपने स्वरुप कौ छोडि अपनी अनुभाग शक्ति तै अनत गुणी घाटि शक्तिरुप परिणमि उदय आवै है। बहुरि अत समय विषै कीनी जे कृष्टि, तिनविषै जघन्य कृष्टि

१ – जयधवला भाग –१३ पृष्ठ ३२०से ३२३

तैं लगाय पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एकभाग मात्र कृष्टि उदय (न) हो है[1]। ते अपने स्वरुप कौ छोडि, अपनी शक्ति तैं अनत गुणी शक्तिरुप परिणमि मध्यम कृष्टि रुप होइ उदय आवै है। असा तात्पर्य है। तहा समस्त कृष्टिनि का जो प्रमाण, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए बहुभाग मात्र कृष्टि तो अपने स्वरुप ही करि उदय हो हैं। अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा एक भाग कौ जुदा स्थापि, बहुभाग के दोय खड करने। तहां एक खड प्रमाण तौ अत समय सम्बन्धी अनुदय कृष्टि है। अर एक खड विषै जुदा राख्या एक भाग मिलाए जो प्रमाण होइ तितनी प्रथम समय सम्बन्धी अनुदय कृष्टि है। अैसै कृष्टिकरण काल का अत समय विषै कीनी अनुदय कृष्टि स्तोक है, तातै ताका प्रथम समय विषै कीनी अनुदय कृष्टि किछू अधिक हैं। तातै सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय विषै उदय आई कृष्टि असख्यात गुणी है।

इहा अैसा अर्थ जानना – कृष्टि करण का प्रथम समय विषै कीनी कृष्टि ऊपरि लिखि, तहा ऊपरि अतकृष्टि लिखि, ताके नीचै उपात आदि कृष्टि क्रम तैं लिखी। नीचै ही नीचै जघन्य कृष्टि लिखनी। बहुरि ताके नीचै नीचै द्वितीयादि समयनि विषै कीनी कृष्टि भी याही प्रकार लिखनी। बहुरि लिखि नीचै ही नीचै अंत समय विषै कीनी कृष्टि लिखि,तहा भी अत कृष्टि ऊपरि लिखि, नीचै उपात आदि कृष्टि लिखि नीचै ही नीचै जघन्य कृष्टि लिखनी। अैसै अत समय विषै कीनी कृष्टि की जघन्य कृष्टि तैं लगाय प्रथम समय विषै कीनी कृष्‌टि की अत कृष्‌टि पर्यंत लिखी। तिनिविषै ऊपरि ऊपरि क्रम तैं द्रव्य तौ एक एक चय प्रमाण घटता है। अर अनुभाग अनत गुणा अनंत गुणा है। सो सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय विषै अैसै (अंत)[2] कृष्टि-रूप परमाणू थी, तिनविषै इहा जेता प्रमाण कह्या तितनी ऊपरली वा नीचली कृष्टिनि के परमाणूनि कौ बीचि की कृष्टिरुप परिणमावै है। अक सदृष्टि करि जैसै सर्व कृष्टि नि का प्रमाण एक हजार, ताकौ पल्य का असंख्यातवा भाग का प्रमाण पांच, ताका भाग दीए बहु भाग मात्र आठ सै बीचि की कृष्टि है, ते तौ अपने रुप ही उदय हो हैं। दोय सै, ताकौ पाच का भाग दीए, चालीस जुदा स्थापि, अवशेष एक सौ साठि के एक भाग दोय भाग कीए, एक भाग मात्र असी तौ अत समय विषै कीनी कृष्टि की जघन्य कृष्टितैं लगाय जे नीचे की कृष्टि है, ते अनुदयरुप है। इनके परमाणू अनुभाग

---

[1] – 'उदय न हो है।' ऐसा पाठ 'घ' हस्तलिखित प्रति मे मिलता है।

[2] – 'अत' शब्द हस्तलिखित 'घ' प्रति मे मिलता है।

बधने तै बीचि की कृष्टि रुप परिणमि उदय हो है । बहुरि एक भाग विषै जुदा राख्या चालीस मिलाए एक सौ बीस सो इतनी प्रथम समय विषै कीनी कृष्टि की अतकृष्टि तै लगाय उपरि कृष्टि है, ते अनुदय रुप है । इनके परमाणू अनुभाग घटने तै बीचिकी कृष्टिरुप परिणमि उदय हो है । अैसै ही यथार्थ कथन समझना ।

बिदियादिसु समयेसु हि, छंडदि पल्लाअसंखभागं तु ।
आफुददि हु अपुव्वा, हेट्ठा तु असंखभागं तु[1] ॥२९८॥

द्वितीयादिषु समयेषु, हि, त्यजति पल्यासंख्यभागं तु ।
आस्पृशति हि अपूर्वा अधस्तनास्तु, असंख्यभागं तु ॥२९८॥

टीका– सूक्ष्म सांपराय कौ द्वितीय समय विषै जे प्रथम समय विषै उदय रूप कृष्टि है, तिनकी अत कृष्टि तै लगाय कृष्टिनि कौ छोडे है । उदय कौ प्राप्त न करै है । तिनका प्रमाण प्रथम समय विषै हीन शक्ति रूप होनै योग्य जे ऊपरि की कृष्टि अनुदय रूप कही थी, तिनके प्रमाण कौ पल्य का असख्यात का भाग दीए एक भाग मात्र जानना । इतनी नवीन ऊपरि की कृष्टि इहां उदय रूप न हो है । ए कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप परिणमि अन्य नीचली कृष्टि रूप परिणमि उदय आवै हैं । और प्रकार समय समय उदय कृष्टिनि का अनंत गुणी शक्तिनि का घटना न बनै है । बहुरि प्रथम समय विषै अनत गुणा शक्ति रूप परिणमनै योग्य जे अधस्तन अनुदय रूप कृष्टि है, तिनकौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग दीएं तहां एक भाग प्रमाण नीचै की नवीन कृष्टि, जे प्रथम समय विषै उदय न थी ते उदय रूप हो हैं । अैसै होतै प्रथम समय विषै उदय रूप कृष्टिनि का प्रमाण तै द्वितीय समय विषै उदय रूप कृष्टिनि का प्रमाण किछू विशेष करि घटता जानना । इहा नवीन उदय रूप करी कृष्टिनि का प्रमाण कौ नवीन अनुदय रूप करी कृष्टिनि का प्रमाण विषै घटाएं अवशेष प्रमाण प्रथम समय विषै अनुकृष्टि कौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र हैं । सो इतना प्रथम समय की उदय कृष्टि का प्रमाण तै द्वितीय समय की उदय कृष्टि का प्रमाण घटता जानना । इहां अैसा अर्थ जानना—

इस सूक्ष्म सापराय का द्वितीय समय विषै जे प्रथम समय विषै अनुदय[2] रूप कृष्टि कही थी, तिन विषै अत कृष्टि तै लगाय इहा जेता प्रमाण कह्या, तितनी कृष्टि

---

१ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३२४ ।

२. अ, ख, घ हस्तलिखित प्रतिओ मे उदय शब्द मिलता है ।

उदय रूप न हो है । ते अनत गुणी घटती जे मध्यम कृष्टि तिनरूप परिणमि उदय हो हैं । बहुरि तिस प्रथम समय विषै जे नीचे की अनुदय कृष्टि कही थी, तिन विषै अत कृष्टि तै लगाय इहा जेता प्रमाण कह्या, तितनी कृष्टि उदय रूप हो है। अकसदृष्टि करि जैसे प्रथम समय विषै उदय कृष्टि आठ सै थी, तिन विषै प्रथम समय विषै ऊपरि की अनुदय कृष्टि का प्रमाण एक सौ बीस था, ताकौ पांच का भाग दीए चौईस पाये, सो अवशेष रही कृष्टि की अंत कृष्टि तै लगाय इतनी कृष्टि तौ इहा नवीन उदय रूप न हो है। अर तिस प्रथम समय विषै नीचे की अस्सी कृष्टि उदय रूप न थी, तिनकौ पाच का भाग दीए सोलह पाए, सो इतनी नीचे की अनुदय कृष्टि की अत कृष्टि तै लगाय इहा उदय रूपभई ऐसे चौईस मे सोलह घटाएं आठ रहे, सो इतनी कृष्टि प्रथम समय तै दूसरा समय विषै घाटि उदय हो है, तातै दूसरे समय सात सै बाणवै कृष्टि का उदय जानना । ऐसे ही यथार्थ कथन समझना । इहां बहुत अनुभाग युक्त जे ऊपरि की कृष्टि तिनिका अभाव करने तै अर स्तोक अनुभाग युक्त जे नीचे की कृष्टि तिनका सद्भाव करने तै प्रथम समय विषै उदय आया अनुभागतै द्वितीय समय विषै उदय आया अनुभाग का घटना हो है ऐसा जानना । ऐसे ही सूक्ष्म सांपराय का तृतीय आदि अत समय पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए कृष्टिनि का उदय क्रम तै जानना विशेष का प्रमाण जेती पूर्व समय विषै घटी थी, ताकौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग दीए एक भाग मात्र जानना ।

किट्टि सुहुमादीदो, चरिमो त्ति असंखगुणिदसेढीए ।
उवसमदि हु तच्चरिमे, अवरट्ठिदिबंधणं छण्हं[1] ।।२६६।।

कृष्टि सूक्ष्मादितः, चरम इति असंख्यगुणितश्रेण्याः ।
उपशमयति हि तच्चरमे, अवरस्थितिबंधनं षण्णाम् ।।२६६।।

टीका– सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय विषै समस्त सूक्ष्म कृष्टिनि का द्रव्य कौं पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र जो द्रव्य, ताकौ उपशमावै है । दूसरे समय तातै असख्यात गुणा द्रव्य कौ उपशमावै है । ऐसे तृतीयादि अत पर्यंत समयनि विषै असंख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य कौ उपशमावै है । तहां अत समय विषै एक घाटि सूक्ष्म सापराय काल का समय प्रमाण मात्र बार असंख्यात का

---

१ जयधवला भाग—१३ पृष्ठ ३२३, ३२४

गुणाकार कीएं जो अंत फालिका द्रव्य भया, ताकौ उपशमावै है । बहुरि समय घाटि दोय आवली मात्र सज्वलन लोभ के नवक समयप्रबद्ध न उपशमे थे, तिनिका द्रव्य कौं सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीएं उपशमावै है । बहुरि सूक्ष्म सापराय का अंत समय विषै आयु और मोह बिना छह कर्मनि का जघन्य स्थिति बध हो है ।

अंतोमुहुत्तमेत्तं, घादितियाणं जहण्णठिदिबंधो ।
णामदुग वेयणीये, सोलस चउवीस य मुहुत्ता[1] ॥३००॥

अंतर्मुहूर्तमात्रं, घातित्रयाणां जघन्यस्थितिबंधः ।
नामद्विकवेदनीये, षोडश चतुर्विंशश्च मुहूर्ताः ॥३००॥

टीका – तहां तीनि घातियानि का अंतर्मुहूर्त, नाम गोत्र का सोलह मुहूर्त, साता वेदनीय का चौबीस मुहूर्त मात्र जघन्य स्थितिबंध हो है । इहां उपशम श्रेणी अपेक्षा जघन्य स्थितिबंध कह्या है । बहुरि जे पूर्वैं बादर लोभ के उच्छिष्टावली मात्र निषेक रहे थे, ते पूर्वोक्त थिउक्क संक्रम विधान करि कृष्टि रूप परिणमि उदय आवै हैं ।

आगें पूर्वोक्त अर्थ का उपसंहार करै हैं—

पुरिसादीणुच्छिट्ठं, समऊणावलिगदं तु पच्चिहिदि ।
सोदयपढमट्ठिदिणा, कोहादीकिट्टियंताणं[2] ॥३०१॥

पुरुषादीनामुच्छिष्टं समयोनावलिगतं तु प्रत्याहंति ।
सोदयप्रथमस्थितिना क्रोधादिकृष्ट्यंतानां ॥३०१॥

टीका – पुरुष वेदादिकनि का समय घाटि आवली मात्र निषेकनि का द्रव्य उच्छिष्टावलीरूप है, सो क्रोधादि सूक्ष्मकृष्टि पर्यंतनि के जे उदयरूप निषेक तैं लगाय प्रथम स्थिति के निषेकनि की साथि तद्रूप परिणमि करि **पक्ष्यति** कहिए उदयरूप होसी । पुरुषवेद के उच्छिष्ट मात्र निषेक रहे ते, तौ सज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति विषै तद्रूप परिणमि उदय हो है । तैसै ही सज्वलन क्रोध का सज्वलन मान विषै

---

१. जयधवला भाग—१३ पृष्ठ ३२५, ३२६ ।
२. जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ३२४ ।

इत्यादि क्रम तैं बादर लोभ का उच्छिष्टावली के निषेक सूक्ष्मकृष्टि विषै तद्रूप परिणमि उदय हो हैं । सो पूर्वै वर्णन कीया ही है ।

पुरिसादो लोहगयं, णवकं समऊण दोण्णि आवलियं ।
उवसमदि हु कोहादीकिट्टीअंतसु ठाणेसु[1] ॥३०२॥

पुरुषात् लोभगतं, नवकं समयोने द्वे आवलिके ।
उपशाम्यति हि क्रोधादिकृष्ट्यंतेषु स्थानेषु ॥३०२॥

टीका – पुरुषवेद आदि लोभ पर्यंतनि का समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समय प्रबद्धनि का द्रव्य है सो क्रोधादिक कृष्टि पर्यंत के प्रथम स्थिति के कालनि विषै समय समय असंख्यात गुणा क्रम लीए उपशमै है । सो भी पुरुषवेद का नवक समयप्रबद्ध संज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति का काल विषै उपशमै है, इत्यादि पूर्वै वर्णन कीया ही है । बहुरि सूक्ष्मकृष्टि का प्रथम स्थिति विषै दोय आवली अवशेष रहै, ताकी आगाल प्रत्यागाल क्रिया का व्युच्छेद हो है । अर समय अधिक आवली मात्र अवशेष रहैं पूर्वोक्तवत् जघन्य उदीरणा हो है । अर उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहे, ते अपने रूप ही विषै उदयरूप परिणमि निर्जरैं हैं ऐसैं सूक्ष्म सांपराय का अंत समय विषै सर्व कृष्टि द्रव्य कौं उपशमाय अनंतर समय विषै उपशांत कषाय हो है ।

उवसंतपढमसमये, उवसंतं सयलमोहणीयं तु ।
मोहस्सुदयाभावा, सव्वत्थ समाणपरिणामो[2] ॥३०३॥

उपशांतप्रथमसमये, उपशांतं सकलमोहनीयं तु ।
मोहस्योदयाभावात्, सर्वत्र समानपरिणामः ॥३०३॥

टीका – उपशांतकषाय का प्रथम समय विषै सकल चारित्र मोहनीय कर्म है, सो बंध, उदय, संक्रम, उदीरणा, उत्कर्षण, अपकर्षण आदि सर्व करणनि का न उपजने तैं सर्व प्रकार उपशम्या । उदयादि विषै निक्षेपण करने कौं समर्थरूप न रह्या, तिस उपशांत कषाय का प्रथम समय तैं अंत समय पर्यंत अंतर्मुहूर्त मात्र अपने गुणस्थान का काल विषै समान रूप विशुद्धि परिणाम है, जातैं इहां हीनाधिक विशुद्धता कौं कारण कषायनि के उदय का अभाव है । ऐसा यथाख्यात चारित्र है ।

---

१ जयधवला भाग—१३, पृष्ठ ३२४ ।
२ जयधवला भाग—१३ पृष्ठ ३२६, ३२७ ।

अंतोमुहुत्तमेत्तं, उवसंतकसायवीयरायद्धा ।
गुणसेढीदीहत्तं, तस्सद्धा संखभागो दु[1] ॥३०४॥

अंतर्मूहूर्तमात्रं, उपशांतकषायवीतरागाद्धा ।
गुणश्रेणीदीर्घत्वं, तस्याद्धा संख्यभागस्तु ॥३०४॥

टीका – उपशात कषाय वीतराग ग्यारह्वा गुणस्थान का काल अतर्मुहूर्त मात्र है, तातै परै नियम करि द्रव्यकर्म के उदय के निमित्त तै सक्लेशरूप भावकर्म प्रकट हो है । बहुरि इस काल के संख्यातवे भाग मात्र इहा उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है । इस विषै सूक्ष्मसांपराय का अत समय विषै जेता द्रव्य अपकर्षण कीया, तातै असंख्यात गुणा आयु व मोह बिना अन्य कर्मनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि "प्रक्षेपयोगोद्धतमिश्रपिंड" इत्यादि विधान तै असख्यात गुणा क्रम लीए निक्षपेण करै है ।

उदयादिअवट्ठिदगा, गुणसेढी दव्वमवि अवट्ठिदगं ।
पढमगुणसेढिसीसे, उदये जेट्ठं पदेसुदयं[2] ॥३०५॥

उदयाद्यवस्थितका, गुणश्रेणी द्रव्यमपि अवस्थितकं ।
प्रथमगुणश्रेणिशीर्षे, उदये ज्येष्ठं प्रदेशोदयम् ॥३०५॥

टीका – उपशात कषाय का प्रथम समय विषै उदयावली का प्रथम समय तै लगाय गुणश्रेणी आयाम जेता प्रमाण लीएं आरम्भ किया, तितना प्रमाण लीए ही द्वितीयादि समयनि विषै भी गुणश्रेणी आयाम है । जातै उदयावली विषै एक समय व्यतीत होतै उपरितन स्थिति का समय गुणश्रेणी आयाम विषै मिलै है । याही तै उदयादि अवस्थिति गुणश्रेणी आयाम है । बहुरि उपशात कषाय का प्रथम समय विषै जेता द्रव्य अपकर्षण करि गुणश्रेणी विषै दीया, तितना ही समय-समय प्रति दीजिए है, जातै इहा परिणाम अवस्थित है, ताके निमित्त तै अपकर्षणरूप द्रव्य का भी प्रमाण अवस्थित है । बहुरि प्रथम समय विषै कीनी जे गुणश्रेणी, ताका शीर्ष कहिए अंत निषेक, सो जिससमय उदय आवै, तिस समय उत्कृष्ट कर्म परमाणूनि का उदय जानना, जातै तिस समय विषै प्रथम समय विषै करी गुणश्रेणी का तौ अंत निषेक

---

१ जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३२७ ।
२. जयधवला भाग–१३ पृष्ठ ३२८ ।

अर दूसरा समय विषै करी गुणश्रेणी का द्विचरम निषेक आदि इस समय विषै करी गुणश्रेणी का प्रथम निषेक पर्यंत सर्व निषेक मिलि गुणश्रेणी मात्र द्रव्य भया, सो तिस समय सम्बन्धी निषेक विषै एकट्ठा हूवा सो तिस निषेक विषै पूर्वै सत्तारूप तिष्ठै था जो गोपुच्छ द्रव्य, तिस करि सहित उदय हो है। बहुरि यातै ऊपरि के समयनि विषै भी मिलि करि गुणश्रेणी मात्र द्रव्य एकठा हो है, परन्तु गोपुच्छ द्रव्य विषै एक-एक चय मात्र घटता द्रव्य पाइए, तातै तहां ही उत्कृष्ट प्रदेशनि का उदय रूप कह्या है। कोऊ कहैगा कि पूर्वै गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम था, ताका शीर्षरूप समय है, सो अब करी गुणश्रेणी आयाम के अभ्यंतरवर्ती है बीचि आय गया है, तिस समय बहुत गुणश्रेणी के निषेक अर तिस समय सम्बन्धी गोपुच्छ द्रव्य मिलि बहुत घणा द्रव्य उदय रूप हो है। तहां उत्कृष्ट द्रव्य का उदय क्यों न कह्यौ? ताकौ कहिए है—पूर्व गुणश्रेणी विषै निक्षेपण कीया सर्व द्रव्य तैं भी इहां गुणश्रेणी का जघन्य निषेक विषै भी निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा है, तातै ऊपरि नीचे के सर्व निषेकनि तैं इहा प्रथम समय विषै करी गुणश्रेणा का शीर्ष जिस समय विषै उदय होइ तिस समय विषै ही उत्कृष्ट द्रव्य का उदय है।

णामधुवोदयबारस, सुभगति गोदेक्क विग्घपणगं च।
केवल णिद्दाजुयलं, चेदे परिणामपच्चया होंति ॥३०६॥

नामध्रुवोदयद्वादश, सुभगत्रि गोत्रकं विघ्नपंचकं च।
केवलं निद्रायुगलं, चैते परिणामप्रत्यया भवंति ॥३०६॥

टीका – उपशात कषाय विषै जे उदय प्रकृति गुणसठि पाइए है, तिन विषै तैजसकार्माण शरीर २, वर्णादि ४, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, अगुरु लघु, निर्माण ए नाम कर्म की ध्रुवोदयी बारह प्रकृति अर सुभग आदेय यशस्कीर्ति ए तीन अर उच्चगोत्र अर पाच अतराय अर केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण अर निद्रा प्रचला ए पचीस प्रकृति परिणाम प्रत्यय है। इनका उदय होने के समय विषै आत्मा के विशुद्धि सक्लेश परिणाम हानि वृद्धि लीएं जैसे पाइए तैसे ही हानि वृद्धि लीएं इनके अनुभाग का तहा उदय होइ। वर्तमान परिणाम के निमित्त तैं इनका अनुभाग उत्कर्षण अपकर्षणादिरूप होइ उदय हो है।

तेंसि रसवेदमवट्ठाणं, भवपच्चया हु सेसाओ।
चोत्तीसा उवसंते, तेंसि तिट्ठाण रसवेदं[1] ॥३०७॥

---

१. जयधवला भाग–१३ पृ ३३० से ३३३।

तेषां रसवेदमवस्थानं, भवप्रत्यया हि शेषाः ।
चतुस्त्रिंशत् उपशांते, तेषां त्रिस्थानं रसवेदं ॥३०७॥

टीका– तिन पचीस प्रकृतिनि के अनुभाग का उदय उपशात कषाय का प्रथम समय तै लगाय अत समय पर्यंत अवस्थित समान रूप है, तातै तहा परिणाम समान है अर इन प्रकृतिनि के अनुभाग का उदय परिणामनि के अनुसारि है, तातै इनके अनुभाग का उदय विषै हानि वृद्धि नाही है । बहुरि अवशेष ज्ञानावरण की च्यारि, दर्शनावरण की तीन, वेदनीय की दोय, मनुष्य आयु, मनुष्य गति, पचेद्री जाति, औदारिक शरीर, औदारिक अगोपाग, आदिके तीन सहनन, सस्थान छह, उपघात, परघात उच्छ्वास, विहायो गति दोय, प्रत्येक, त्रस, बादर, पर्याप्त, स्वर की दोय ग्रैसें चौतीस प्रकृति भवप्रत्यय है । आत्मा के परिणाम जैसें होंइ तैसे होइ । तिनकी अपेक्षा रहित पर्याय ही का आश्रय करि इनके अनुभाग विषै षट्स्थान रूप हानि वृद्धि पाइए है; तातै इनका अनुभाग का उदय इहां तीन अवस्था लीए है । कदाचित् हानिरूप हो है, कदाचित् वृद्धि रूप हो है; कदाचित् अवस्थित-जैसा का तैसा रहै है । ग्रैसैं उपशात कषाय गुणस्थान का अत समय पर्यंत इकईस चारित्र मोह की प्रकृतिनि का उपशमन विधान समाप्त भया ।

अथ उपशात कषाय तै पडने का विधान कहै है—

उवसंते पडिवडिदे, भवक्खये देवपढमसमयम्हि ।
उग्घाडिदाणि सव्ववि, करणाणि हवंति णियमेण[1] ॥३०८॥

उपशांते प्रतिपतिते, भवक्षये देवप्रथमसमये ।
उद्घाटितानि सर्वाण्यपि करणानि भवंति नियमेन ॥३०८॥

टीका – उपशात कषाय तै पडना दोय प्रकार है– भव क्षय हेतु, उपशमकाल क्षय निमित्तक तहां मरण होतै पर्याय का नाश के निमित्त तै पडना होइ, सो भव क्षय हेतु कहिए । अर उपशम काल के क्षय के निमित्त तै पडना होइ सो उपशम काल क्षय निमित्तक कहिए ।

तहा भव क्षय हेतु विषै कहिए है– उपशात कषाय के काल विषै प्रथमादि अंत समयनि पर्यंत विषै जहा तहा आयु के नाशतै मरि करि देव पर्याय सम्बन्धी

असयत गुणस्थान विषै पडे, तहा असंयत का प्रथम समय विषै वध, उदीरणा, सक्रमरग आदि समस्त करण उघाडै है। अपने अपने स्वरूप करि प्रगट वर्तै है। जातै जे उपशात कपाय विपै उपशमे थे, ते सर्व असंयत विषै उपशम रहित भए है।

सोदीरणाण दव्वं, देदि हु उदयावलिम्हि इयरं तु।
उदयावलिबाहिरगे, उंछाये देदि सेढीये ॥३०९॥

सोदीरणानां द्रव्यं, ददाति हि उदद्यावलौ इतरत्तु।
उदयावलिबाह्यके, अन्तरे ददाति श्रेण्याम् ॥३०९॥

टीका – सो देव असयत जीव, प्रथम समय विषै उद्यरूप जो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलन रूप जे क्रोधादि च्यारि कषाय, तिनविषै कोई एक कषाय अर पुरुषवेद, हास्य, रति, अर भय, जुगुप्सा विषै यथासम्भव प्रकृति जे उदयरूप पाइए हैं तिनके द्रव्य कौ अपकर्षरण भागहार का भाग देइ तहा एक भाग कौ ग्रहरण करि ताकौ असख्यात लोक का भाग देइ एक भाग कौ उदयावली विषै दीजिए है अर अवशेष वहुभाग कौ उदयावली तै वाह्य प्रथम निषेक तै लगाय अवशेष अतरायाम विपै वा अतरायाम के उपरिवर्ती द्वितीय स्थिति विषै **'दिवड्ढगुणहारिणभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तै चय घटता क्रम करि दीजिए है। वहुरि उदय रहित जे नपु सक वेदादिक मोह की प्रकृति, तिनके द्रव्य कौ उपकर्षरण करि उदयावली विषै न दीजिए है, उदयावली तै वाह्य अतरायाम वा उपरितन स्थिति ही विपै चय घटता क्रम करि दीजिए है। इस विधान करि चारित्र मोह का अतर कौ पूरै है। अतर करने विपै निषेकनि का अभाव कीया था, तिनविपै उपशम काल व्यतीत भए पीछै जे अवशेप अतररूप निषेक रहैं, तिन विषै इहा द्रव्य का निक्षेपरण करि तिनका सद्भाव करै है। इहा गुणश्रेणी का असयत विषै अभाव जानना।

अद्धाखए पड़तो, अधापवत्तो त्ति पडदि हु कमेण।
सुज्झतो आरोहदि, पडदि हु सो संकिलिस्संतो ॥३१०॥

अद्धाक्षये पतन्, अधःप्रवृत्त इति पतति हि क्रमेण।
शुद्ध्यन् आरोहति, पतति स संक्लिश्यन् ॥३१०॥

टीका– आयु विद्यमान होतै अद्धा क्षय विपै अतर्मुहूर्त मात्र उपशात कषाय गुणस्थान भए पीछै करि सूक्ष्म सापराय होइ, पीछै अनिवृत्तिकरण होइ। पीछै

अपूर्वकरण होइ। पीछै अध प्रवृत्तकरण रूप अप्रमत्त हो है। असैं अधःप्रवृत्त करण पर्यंत तौ अनुक्रम तैं पडना होइ ही होइ। पीछै जो विशुद्धता युक्त होइ ऊपरि के गुणस्थान विषैं चढै अर सक्लेशता करि युक्त होइ तौ नीचे के गुणस्थाननि विषैं पडे किछू नियम नाही।

बहुरि या प्रकार संक्लेश विशुद्धता के निमित्त करि उपशांत कषाय तैं पडना चढना न हो है। जातै तहां परिणाम अवस्थित विशुद्धता लीएं वर्तैं है। बहुरि तहां तैं जो पडना हो है सो तिस गुणस्थान का काल भए पीछै नियम तैं उपशम काल का क्षय होइ तिसके निमित्ततैं हो है। विशुद्ध परिणामनि की हानि के निमित्त तैं तहां तैं नाहीं पडै है वा अन्य कोई निमित्त तैं नाहीं है असा जानना।

सुहुमप्पविट्ठसमयेणद्धुवसामण तिलोहगुणसेढी।
सुहुमद्धादो अहिया, अवट्ठिदा मोहगुणसेढी ॥३११॥

सूक्ष्मप्रविष्टसमयेनाध्रुवशमं त्रिलोभगुणश्रेणी।
सूक्ष्माद्धातोऽधिका, अवस्थिता मोहगुणश्रेणी ॥३११॥

टीका – उपशात कषाय तैं ऊपरि सूक्ष्म सापराय विषैं प्रवेश कीया, तहा प्रथम समय विषैं नष्ट भया है उपशम करण जिनिका असा जो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलन लोभ, तिनकी गुणश्रेणी का आरम्भ हो है। तिस गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण चढनेवाले सूक्ष्मसापराय के काल तैं एक आवलीमात्र अधिक है, सो इस अवसर विषैं मोह की गुणश्रेणी का आयाम अवस्थित रूप जानना।

उदयाणं उदयादो, सेसाणं उदयबाहिरे देदि।
छण्हं बाहिरसेसे, पुव्वतिगादहियणिक्खेओ ॥३१२॥

उदयानामुदयतः,शेषाणां उदयबाह्ये ददाति।
षण्णां बाह्यशेषे, पूर्वत्रिकादधिकनिक्षेपः ॥३१२॥

टीका – तहा उदयरूप जो सज्वलन लोभ, ताकी द्वितीय स्थिति विषैं तिष्ठता द्रव्यकौ अपकर्षण करि ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा एक भाग कौ उदय रूप प्रथम समय तैं लगाय गुणश्रेणी आयाम का अत निषेक पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए निक्षेपण करै है। अर बहुभाग मात्र द्रव्य कौ गुण-

श्रेणी आयाम का अत निषेक तै ऊपरि पाइए है जो अतरायाम, ताकौ छोडि ताके ऊपरि जो द्वितीय स्थिति, तीहिविषै चय घटता क्रम करि निक्षेपण करै है । बहुरि उदय रहित अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान लोभ, तिनकी द्वितीय स्थिति विषै तिष्ठता द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदयावली तै बाह्य प्रथम समय तै लगाय गुणश्रेणी आयाम का अत पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए अर ताके ऊपरि अतरायाम कौ छोडि द्वितीय स्थिति विषै चय घटता क्रम करि पूर्ववत् निक्षेपण करै है । बहुरि आयु और मोह बिना छह कर्मनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग कौं बहुरि पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा एक भाग उदयावली विषै दीजिए है । बहुभाग गुणश्रेणी आयाम विषै दीजिए है । सो इनका यहु गुणश्रेणी आयाम उतरनेवाले सूक्ष्मसांपराय अनिवृत्तिकरण अपूर्वकरणनि का मिलाया हुआ काल तै किछू अधिक प्रमाण लीए गलितावशेष रूप जानना । याविषै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषै बहुभाग रहे, तिनकौ उपरितन स्थिति विषै चय घटता क्रम लीए दीजिए है ।

ओदरसुहुमादीए, बंधो अंतोमुहुत्त बत्तीसं ।
अडदालं च मुहुत्ता, तिघादिणामदुगवेयणीयाणं ॥३१३॥

अवतरसूक्ष्मादिके, बंधो अंतर्मुहूर्त द्वात्रिंशत् ।
अष्टचत्वारिंशत् च मुहूर्ताः, त्रिघातिनामद्विकवेदनीयानाम् ॥३१३॥

टीका – उतर्‌या हुवा सूक्ष्मसापराय का प्रथम समय विषै तीन घातियानि का अतर्मुहूर्त, नाम गोत्र का बत्तीस मुहूर्त वेदनीय का अठतालीस मुहूर्त मात्र स्थिति-वध जानना । जातै आरोहक सूक्ष्मसांपराय का अत समय विषै जो स्थितिबध हो है; तातै अवरोहक सूक्ष्मसापराय का प्रथम समय विषै दूणा स्थितिबध है । उपशमश्रेणी चढनेवाला का नाम आरोहक कहिए । उतरनेवाला का नाम अवरोहक कहिए अथवा अवतारक कहिए है; ऐसी सज्ञा आगै भी जाननी ।

गुणसेढीसत्थेदररसबंधो उवसमादु विवरीयं ।
पढमुदओ किट्टीणमसंखाभागा विसेसअहियकमा ॥३१४॥

गुणश्रेणी शस्तेतररसबन्ध उपशमात् विपरीतम् ।
प्रथमोदय : कृष्टीनामसंख्यभागा विशेषाधिकक्रमाः ॥३१४॥

टीका – अवरोहक सूक्ष्मसापराय का द्वितीयादि समयनि विषै समय समय प्रति प्रथमादि समय सम्बन्धी तै असख्यात गुणा घाटि क्रम लीएं द्रव्य कौ अपकर्षण करि गुणश्रेणी करै है। अर प्रशस्त प्रकृतिनि का अनत गुणा घाटि क्रम लीए अर अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा बधता क्रम लीए अनुभाग बध हो है। जातै इहां समय-समय विशुद्ध सक्लेश की अनंत गुणी हानि वृद्धि हो है। यातै उपशम श्रेणी चढने से उतरने विषै विपरीतपना कह्यया है। बहुरि स्थितिबध है, सो तिस प्रथम समय तै लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यत समान ही है। बहुरि अतर्मुहूर्त अतर्मुहूर्त विषै आरोहक् के स्थितिबंध तै यथा ठिकाणै अवरोहक कै दूणा स्थितिबध सूक्ष्मसापराय का अंत समय पर्यंत जानना। चढतै जिस ठिकाने जो स्थितिबध होता था, तातै उतर तै उस ठिकानै आय दूणा स्थितिबध हो है। जैसै स्थितिबधापसरण करि चढतै स्थितिबंध घटाइ एक-एक अतर्मुहूर्त विषै समान बध करै था, तैसै इहा स्थितिबधोत्सरण करि स्थितिबंध बधाइ एक-एक अतर्मुहूर्त विषै समान बध करै है। बहुरि अवरोहक सूक्ष्मसांपराय का प्रथम समय विषै उदय आया जे निषेक कृष्टि पाइए है, तिनकौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग दीजिए तहा बहुभाग मात्र बीचि की कृष्टि उदय आवै है। अर अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग की सहनानी पांच का अंक, ताका भाग दीए तहा दोय भाग मात्र तो आदि कृष्टि तै लगाय जे नीचे की कृष्टि है, ते अनुदयरूप है अर तीन भाग मात्र अतकृष्टि तै लगाय जे ऊपरि की कृष्टि है ते अनुदयरूप है ते ये अनुदयरूप कृष्टि कही। ते अपने स्वरूप कौ छोडि जे आदि कृष्टि तै लगाय नीचली कृष्टि है ते तो अनत गुणा अनुभागरूप परिणमि मध्यम कृष्टिरूप होइ उदय आवै है। अर अत कृष्टि तै लगाय जे ऊपरि की कृष्टि है ते अनतवे भागि अनुभागरूप परिणमि मध्यम कृष्टि रूप होइ उदय आवै है। अक संदृष्टि करि जैसै उदय आया निषेक विषै कृष्टि हजार, तिनकौ पाच का भाग दीएं बहुभाग मात्र आठ सै बीचि की कृष्टि तौ उदयरूप जाननी। अवशेष एक भाग दोय सै, ताकौ पाँच का भाग देइ तहा एक भाग जुदा राखि अवशेष के दोय भाग करि तहां एकभाग मात्र अस्सी कृष्टि तौ जघन्य कृष्टि तै लगाय नीचे की कृष्टि अनुदयरूप है, ते अनुभाग-बधने तै मध्यम कृष्टिरूप होइ परिणमि उदय हो है। बहुरि एकभाग विषै जुदा राख्या भाग मिलाएं एक सौ बीस कृष्टि भई ते अत कृष्टि तै लगाय ऊपरि की कृष्टि अनुदयरूप हैं, ते अनुभाग घटने तै मध्यम कृष्टिरूप होइ उदय हो है, ऐसा अर्थ जानना।

वहुरि दूसरा समय विषै जे आदि कृष्टि पहले समय उदय रूप न थी, तिनकौ पल्य का असंख्यातवां (भाग का)[१] भाग दीए एक भाग मात्र नवीन कृष्टि अनुदय रूप करी अर अत की कृष्टि जे पहले समय उदय रूप न थी, तिनकौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र कृष्टिनि कौ नवीन उदय रूप करी। इहा उदय रूप करी कृष्टिनि का प्रमाण विषै अनुदयरूप करी कृष्टिनि प्रमाण घटाएं अवशेष जो प्रमाण रहै, तितना प्रमाण करि प्रथम समय संबंधी उदय कृष्टिनि तैं अधिक दूसरा समय विषै उदयकृष्टि हो है।

अंक सदृष्टि करि जैसे पहले समय उदयकृष्टि आठ सै थी, इहां द्वितीय समय विषै पहलै उदय ऊपरि की एक सौ बीस कृष्टि अनुदयरूप थी, तिनकौ पाच का भाग दीए चोईस पाए सो इतनी तौ ऊपरि की कृष्टि नवीन उदय भई अर जे नीचै की कृष्टि अस्सी अनुदयरूप थी, तिनकौ पांच का भाग दीएं सोलह पाए, सो इतनी कृष्टि इहां नवीन उदयरूप न हो है। ऐसे चौबीस मे से सोलह घटाए आठ रहे, सो इतनी कृष्टि वधने तै द्वितीय समय विषै आठ सै आठ कृष्टि उदय हो है। असे ही यथार्थ कथन समझना। इहा बहुत अनुभाग युक्त ऊपरि की कृष्टि के उदय होने तैं अर स्तोक अनुभाग युक्त नीचे की कृष्टि न उदय होने तै प्रथम समय तै द्वितीय समय विषै अनुभाग का बधना हो है, ऐसा अर्थ जानना। ऐसै ही तृतीयादि अंत समय पर्यंत समयनि विषै विशेष करि अधिक कृष्टि उदय हो है। याहीतै समय समय प्रति कृष्टिनि का अनत गुणा अनुभाग का उदय है। ऐसै सूक्ष्म सांपराय का काल व्यतीत भया।

बादरपढमे किट्टी, मोहस्स य आणुपुव्विसंकमणं।
णट्ठं ण च उच्छिट्ठं, फड्ढयलोहं तु वेदयदि ॥३१५॥

बादरप्रथमे कृष्टिः, मोहस्य च आनुपूर्विसंक्रमणं।
नष्टं न च उच्छिष्टं, स्पर्धकलोभ तु वेदयति ॥३१५॥

टीका – अवरोहक अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै सूक्ष्मकृष्टि है, ते उच्छिष्टावली मात्र निषेक विना अन्य सर्व ही स्वरूप करि नष्ट भई सूक्ष्मकृष्टि की अनुभागशक्ति तैं अनत गुणी शक्ति युक्त जो स्पर्धक, तिन स्वरूप होइ एक ही समय विषै परिणई। वहुरि कृष्टि के उच्छिष्टावली मात्र निषेक रहे ते समय-समय प्रति

१. 'भाग का' इतना अश छपी प्रति मे ही मिलता है, हस्तलिखित प्रतिओ मे नही मिलता।

एक-एक निषेक करि उदयमान जे स्पर्धक के निषेक, तिनविषै थिउक्क संक्रम करि तद्रूप परिणमि उदय होसी। बहुरि तिस ही प्रथम समय विषै मोह का आनुपूर्वी संक्रम भी नष्ट भया।

इतना विशेष – जो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान लोभ का बध्यमान जो संज्वलन लोभ, तिस ही विषैं संक्रम होने का प्रारंभ भया तथापि याविषै आनुपूर्वी संक्रम की विवक्षा नाहीं। बहुरि संज्वलन लोभ कै बध्यमान और कोई स्वजातीय प्रकृति नाही, तातै व्यक्ति अपेक्षा आनुपूर्वी संक्रम नष्ट भया। शक्ति अपेक्षा संज्वलन लोभ के आनुपूर्वी करि अन्य प्रकृति विषै संक्रम होने का परिणाम भया है। बहुरि सूक्ष्मसांपराय विषै मोह के बंध का अभाव तै संक्रम संभवै नाही। बहुरि तथैव स्पर्धकरूप जो बादर लोभ उदय आया, ताकौ भोगवता जो अनिवृत्तिकरण बादर सांपराय, ताका प्रथम समय विषै संज्वलन लोभ का द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदय रूप समय तै लगाय बादर लोभ वेदक काल का साधिक दोय तीसरे भाग आवली करि अधिक प्रमाण मात्र जो गुणश्रेणी आयाम, तिस विषै असंख्यात गुणा क्रम लीएं निक्षेपण करै है। अर प्रत्याख्यान, अप्रत्याख्यान लोभ का द्रव्य कौ उदयावली तै बाह्य पूर्वोक्त गुणश्रेणी आयाम विषै असंख्यात गुणा क्रम लीए निक्षेपण करै है। बहुरि अनिवृत्ति का द्वितीयादि समयनि विषै असंख्यात गुणा घटता क्रम लीएं द्रव्य कौ अपकर्षण करि अवस्थित गुणश्रेण्यायाम विषै पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है। अन्य कर्मनि की गलितावशेष गुणश्रेणी पूर्वै कही है, सोई जाननी।

ओदरबादरपढमे, लोहस्संतोमुहुत्तियो बंधो।
दुदिणंतो घदितिये, चउवस्संतो अघादितिये ॥३१६॥

अवतरबादरप्रथमे, लोभस्यांतर्मुहूर्तको बंधः।
द्विदिनांतो घातित्रिके, चतुर्वर्षान्तोऽघातित्रये ॥३१६॥

टीका – उतरनेवाला बादरसांपराय अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै संज्वलन लोभ का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त मात्र है, सो चढनेवाला अनिवृत्तिकरण का अंत समय संबंधी स्थितिबंध तै दूणा जानना। बहुरि तीन घातियानि का किछू घाटि दोय दिन, नाम-गोत्र का किछू घाटि च्यारि दिन, वेदनीय का तातै ड्योढ गुणा स्थितिबंध है। बहुरि अंतर्मुहूर्त पर्यंत ऐसा समान बंध भया पीछै संज्वलन लोभ का पूर्वतै किछू अधिक, तीन घातियानि का पृथक्त्व दिन मात्र, तीन अघातियानि का

संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबध भया । बहुरि ऐसे वृद्धिरूप संख्यात हजार स्थितिबंध भए लोभ वेदक काल का दूसरा त्रिभाग का संख्यातवा भाग व्यतीत भया तब संज्वलन लोभ का पृथक्त्व मुहूर्त, तीन घातियानि का पृथक्त्व हजार वर्ष, तीन अघातियानि का संख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबंध हो है । बहुरि हजारो स्थितिबंध गएं लोभ वेदक का काल समाप्त हो है । आरोहक के लोभ वेदक का कालतैं अवरोहक का लोभ वेदक काल किंचित् न्यून है । ऐसे ही माया वेदक कालादिकनि विषै किंचित् न्यूनता जाननी । जिस कषाय का जेता काल विषै उदय का भोगना होइ तिस प्रमाण ताका वेदक काल जानना ।

ओदरमायापढमे, मायातिण्हं च लोभतिण्हं च ।
ओदरमायावेदगकालादहियो दु गुणसेढी ॥३१७॥

अवतरमायाप्रथमे, मायात्रयाणां च लोभत्रयाणां च ।
अवतरमायावेदककालादधिका तु गुणश्रेणी ॥३१७॥

टीका – लोभ वेदक काल के अनतरि माया वेदक काल का प्रथम समय विषै उतरनेवाला अनिवृत्ति करण है, सो अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलन माया के द्रव्य कौ अपनी अपनी द्वितीय स्थिति विषै तै अपकर्षण करि उदय रूप जो सज्वलन नाम माया, ताके द्रव्य कौ तौ उदयावली का प्रथम समय तै लगाय अर उदय रहित दोय माया के द्रव्य कौ उदयावली तै बाह्य प्रथम समय तै लगाय आवली करि अधिक माया वेदक काल प्रमाण अवस्थिति आयाम विषै गुणश्रेणी करै है । बहुरि उदय रहित तीन लोभ, तिनका भी द्वितीय स्थिति के द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदयावली तै बाह्य साधिक माया वेदक काल मात्र अवस्थिति आयाम विषै गुणश्रेणी करै है । अर अवशेष छह कर्मनि की पूर्वोक्त गलितावशेष आयाम विषै गुणश्रेणी करै है । बहुरि तिस ही माया वेदक काल का प्रथम समय विषै तीन लोभ का द्रव्य दोय का द्रव्य है, सो सज्वलन माया विषै सक्रमण करै है । अथवा दोय माया का द्रव्य तीन लोभ का द्रव्य है, सो सज्वलन लोभ सक्रमण करै है; जातै इहा सज्वलन लोभ वा माया ही का बध है । अर बध विषै ही सक्रमण हो है । आनुपूर्वी सक्रमण के अभावतै ऐसे बध सभवै है ।

ओदरमायापढमे, मायालोभे दुमासठिदिबंधो ।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥३१८॥

अवतरमायाप्रथमे, मायालोभे द्विमासस्थितिबंधः ।
षण्णां पुनः वर्षाणां, संख्येयसहस्रवर्षाणि ॥३१८॥

टीका – उतरनेवाला मायावेदक काल का प्रथम समय विषै सज्वलन माया लोभ का दोय मास, तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष, तीन अघातियानि का तातै संख्यात गुणा स्थितिबंध हो है। अैसै संख्यात हजार स्थितिबंध भएं माया वेदक काल समाप्त भया ।

ओदरगमाणपढमे, तेत्तियमाणादियाण पयडीणं ।
ओदरगमाणवेदगकालादहियं दु गुणसेढी ॥३१९॥

अवतरकमानप्रथमे, तावन्मानादिकानां प्रकृतीनाम् ।
अवतरकमानवेदककालादधिकातु गुणश्रेणी ॥३१९॥

टीका – ताके अनतरि मान वेदक काल का प्रथम समय विषै सज्वलन मान का द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली का प्रथम समय तै लगाय अर दोय मान, तीन माया, तीन लोभनि के द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तै बाह्य प्रथम समय तै लगाय आवली अधिक मान (माया),[१] वेदक काल का प्रमाण अवस्थित आयाम विषै गुणश्रेणी करै है। औरनि की गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम है ही। बहुरि तिस ही समय विषै अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, संज्वलन लोभ, माया, मानरूप नव कषायनि का द्रव्य है, सो इहां बध्यमान संज्वलन मान, माया, लोभनि विषै आनुपूर्वी रहित जहां तहा संक्रमण करै है ।

ओदरगमाणपढमे, चउमासा माणपहुदिठिदिबंधो ।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्समेत्ताणि ॥३२०॥

अवतरकमानप्रथमे चतुर्मासा मानप्रभृतिस्थितिबंधः ।
षण्णां पुनः वर्षाणां संख्येयसहस्रमात्राणि ॥३२०॥

टीका – तिस ही उतरनेवाले मान वेदक काल का प्रथम समय विषै संज्वलन मान, माया, लोभनिका चारि मास, तीन घातियानि का सख्यात हजार वर्ष, तीन अघातियानि का तातै सख्यात गुणा स्थितिबंध हो है। अैसै सख्यात हजार थितिबंध भएं मान वेदक का काल समाप्त भया ।

---

१ हस्तलिखित प्रतिओ मे मात्र 'माया' शब्द ही मिलता है ।

ओदरगकोहपढमे, छक्कम्मसमाणया हु गुणसेढी ।
बादरकसायाणं पुण, एत्तो गलिदावसेसं तु ॥३२१॥

अवतरकक्रोधप्रथमे षट्कर्मसमानिका हि गुणश्रेणी ।
बादरकषायाणां पुनः इतः गलितावशेषं तु ॥३२१॥

टीका – ताके अनतरि उतरनेवाला अनिवृत्तिकरण है, सो सज्वलन क्रोध के उदय का प्रथम समय विषै अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, सज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ रूप बारह कषायनि की ज्ञानावरणादि छह कर्मनि के समान गलितावशेष गुणश्रेणी करै है । याके आयाम का प्रमाण उतरनेवाले का अनिवृत्तिकरण अपूर्वकरण के काल तै किछू अधिक है । इहां तै पहलै मोह का गुणश्रेणी आयाम अवस्थित था, अब गलितावशेषरूप प्रारभ भया । बहुरि इतना जानना—

जिस कषाय के उदय करि उपशमश्रेणी चढ्या होई बहुरि उतरने विषै तिस कषाय का जिस समय उदय होइ तिस समय तै लगाय सर्व मोह की गलितावशेष गुणश्रेणी करिए है । अर अतर का पूरना करिए है, सो इहा क्रोध की विवक्षा है, तातै तिस की अपेक्षा ही कथन करिए है—

तहा उदयवान् जो सज्वलन क्रोध, ताके द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहा एक भाग कौ ग्रहि, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग तौ उदय समय तै लगाय गुणश्रेणी आयाम विषै निक्षेपण करै है । बहुरि बहुभाग मात्र द्रव्य-विषै कितना इक द्रव्य कौ अ तरायाम विषै **"अद्धाणेण सव्वधणे खंडिदे"** इत्यादि विधान तै चय घटता क्रम लीए निक्षेपण करि अवशेष द्रव्य कौ तिस क्रोध की द्वितीय स्थिति विषै **'दिवड्ढगुणहाणिभाजिदे पढमा'** इत्यादि विधान तै नाना गुणहानि विषै अत विषै अतिस्थापनावली छोडि निक्षेपण करै है । इहा अतरायाम विषै कितना द्रव्य दीया, ताके जानने कौ उपाय कहै है—

द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक का जो द्रव्य का प्रमाण, ताकौ **'पदहतमुखमादिधनं'** इस सूत्र करि अतरायाम मात्र गच्छ करि गुणै अतरायाम विषै समपट्टिकारूप आदिधन हो है । बहुरि द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक कौं दो गुणहानि का भाग दीए द्वितीय स्थिति की प्रथम गुणहानि विषै चय का प्रमाण आवै है । ताकौ दोय करि गुणै ताके नीचै जो अतरायाम, तीहिविषै चय का प्रमाण आवै है । बहुरि

"सैकपदाहतपददलद्वयहतमुत्तरधनं" इस सूत्र करि एक अधिक गच्छ करि गच्छ का आधा प्रमाण कौ गुणि बहुरि ताकौ चय का प्रमाण करि गुणे उत्तर धन का प्रमाण आवै है। इहां प्रथम स्थान विषै भी चय मिल्या है, तातै असा सूत्र कह्या है, सो आदि धन उत्तर धन मिलाए जो प्रमाण भया, तितना द्रव्य इहा अतरायाम विषै दीजिए है। इहा द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक के नीचै अतरायाम है, तातै ताकी अपेक्षा तै कथन कीया है, सो इतना द्रव्य दीएं जिनि निषेकनि का अभाव कीया था तिनिका सद्भाव जैसा प्रथम स्थिति के नीचै चय घटता क्रम लीए सभवै तैसा हो है। असै निक्षेपण कीएं गुणश्रेणी शीर्ष के विषै निक्षेपण किया द्रव्य तै अतरायाम का प्रथम निषेक विषै निक्षेपण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है। बहुरि अतरायाम का अंत निषेक विषै निक्षेपण कीया द्रव्य तै द्वितीय स्थिति का प्रथम समय विषै निक्षेपण कीया द्रव्य असख्यात गुणा घटता है असा जानना।

बहुरि सज्वलन मानादिक तीन कषाय का द्रव्य विषै ताके अनतवे भाग मात्र सर्व घाती अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान आठ कषायनि का द्रव्य कौ अधिक कीए उदय रहित ग्यारह कषायनि का द्रव्य हो है। तिस द्रव्य तै अपकर्षण करि उदयावली तै बाह्य गुणश्रेणी आयाम विषै अंतरायाम विषै द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण पूर्वोक्त प्रकार कीजिए है। बहुरि क्रोध उदय का प्रथम समय विषै बारह कषायनि का द्रव्य कौ तत्काल बध्यमान जे संज्वलन क्रोधादिक च्यारि, तिनिविषै आनुपूर्वी बिना जहा तहां संक्रमण करै है।

ओदरगकोहपढमे, संजलणाणं तु अट्ठमासठिदी।
छण्हं पुण वस्साणं, संखेज्जसहस्सवस्साणि ॥३२२॥

अवतरकक्रोधप्रथमे, संज्वलनानां तु अष्टमासस्थितिः।
षण्णां पुनः वर्षाणां, संख्येयसहस्रवर्षाणि ॥३२२॥

टीका – उतरने वाले कै क्रोध उदय का प्रथम समय विषै सज्वलन च्यारि कषायनि का आठ मास, तीन घातियानि का सख्यात हजार वर्ष, नाम गोत्र का तातै संख्यात गुणा, वेदनीय का तातै ड्योढा स्थिति बध हो है।

ओदरगपुरिसपढमे, सत्तकसाया पणट्ठउवसमणा।
इगवीसकसायाणं, छक्कम्माणं समाणगुणसेढी ॥३२३॥

अवतरकपुरुषप्रथमे, सप्तकषायाः प्रणष्टोपशमकाः ।
एकोनविंशकषायाणां, षट्कर्मणां समानगुश्रेणी ।।३२३।।

टीका – संज्वलन क्रोध वेदक काल विषै पुरुष वेद का उदय होने का प्रथम समय विषै पुरुषवेद अर छह हास्यादिक ए सात कषाय हैं, ते नष्ट भया है उपशम करण जिनकौ तै असे भए । तब ही बारह कषाय अर सात नोकषायनि की ज्ञानावरणादि छह कर्मनि के समान आयाम विषै गुणश्रेणी करै है । तहां उदयरूप पुरुषवेद संज्वलन क्रोध के द्रव्य कौ तो अपकर्षण करि उदय समय तै लगाय अर अन्य कषायनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि उदयावली तै बाह्य समय तै लगाय पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणी आयाम अंतरायाम द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है । बहुरि तब ही सात नोकषायनि का द्रव्य आनुपूर्वी बिना जहां तहां संक्रमण करै है । बहुरि तब ही पुरुषवेद के बंध का प्रारंभ हो है ।

पुंसंजलणिदराणं, बस्सा बत्तीसयं तु चउसट्ठी ।
संखेज्जसहस्साणि य, तक्काले होदि ठिदिबंधो ।।३२४।।

पुंसंज्वलनेतरेषां, वर्षाणि द्वात्रिंशत् चतुःषष्टिः ।
संख्येयसहस्राणि च, तत्काले भवति स्थितिबंधः ।।३२४।।

टीका – उतरनेवाले कै पुरुषवेद उदय का प्रथम समय विषै पुरुष वेद का बत्तीस वर्ष, संज्वलन चतुष्क का चौसठि वर्ष, तीन घातियानि का संख्यात हजार वर्ष, नाम-गोत्र का तातै सख्यात गुणा, वेदनीय का तातै ड्योढा स्थितिबध हो है ।

पुरिसे दु अणुवसंते, इत्थी उवसंतगो त्ति अद्धाए ।
संखाभागासु गदेससंखवस्सं अघादिठिदिबंधो ।।३२५।।

पुरुषे तु अनुपशांते, स्त्री उपशांतका इति अद्धायाः ।
संख्यभागेषु गतेष्वसंख्यवर्षं अघातिस्थितिबंधः ।।३२५।।

टीका – पुरुषवेद का उदय काल विषै स्त्रीवेद का उपशम यावत् काल न विनसै तावत्काल के सख्यात बहुभाग व्यतीत भएं एक भाग अवशेष रहैं, अघातिया कर्मनि का स्थिति बध असंख्यात हजार वर्ष मात्र हो है ।

णवरि य णामदुगाणं, बीसियपडिभागदो हवे बंधो।
तीसियपडिभागेण य, बंधो पुण वेयणीयस्स ॥३२६॥

नवरि च नामद्विकयोः, बीसियप्रतिभागतो भवेद् बंधः ।
तीसियप्रतिभागेन च, बंधः पुनः वेदनीयस्य ॥३२६॥

टीका – तहां विशेष जो नाम गोत्रनि का पल्य के असंख्यातवे भाग मात्र स्थितिबंध है । अर बीसियनि का इतना भया तौ तीसीयनि का केता होइ? ऐसै त्रैराशिक कीए वेदनीय का ड्योढ गुणा पल्य का असंख्यातवा भाग मात्र स्थितिबध है। बहुरि तीन घातियानि का सख्यात हजार वर्ष मात्र, मोहनीय का तातै संख्यात गुणा घटता संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबध है ।

थी अणुवसमे पढमे, बीसकसायाण होदि गुणसेढी ।
संडुवसमो त्ति मज्झे, संखाभागेसु तीदेसु ॥३२७॥

स्त्री अनुपशमे प्रथमे, विंशकषायाणां भवति गुणश्रेणी ।
षंढोपशम इति मध्ये, संख्यभागेष्वतीतेषु ॥३२७॥

टीका – तातै बंधनेरूप संख्यात हजार स्थिति बंध भएं अंतर्मुहूर्त काल गएं स्त्रीवेद का उपशम नष्ट भया। तहां तै लगाय स्त्रीवेद का द्रव्य सक्रम, अपकर्षणादि करने योग्य भया । तिसका प्रथम समय विषै स्त्रीवेद का द्रव्य कौ अपकर्षण करि यहु उदय रहित है; तातै उदय बाह्यतै लगाय अन्य कर्मनि का गुणश्रेणी आयाम कै समान गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषै अर अंतरायाम विषै अर द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है । अर बारह कषाय, सात नोकषायनि का द्रव्य कौ अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार निक्षेपण करै है । ऐसै इहां बीस कषायनि की गुणश्रेणी हो है । बहुरि तिस ही काल विषै यावत् नपुंसक वेद का उपशम पाइए है, तावत्काल का संख्यात बहुभाग व्यतीत भए कहा ? सो कहै है—

घादितियाणं णियमा, असंखवस्सं तु होदि ठिदिबंधो ।
तक्काले दुट्ठाणं, रसबंधो ताण देसघादीणं ॥३२८॥

घातित्रयाणां नियमात्, असंख्यवर्षस्तु भवति स्थितिबंधः ।
तत्काले द्विस्थानं, रसबंधः तेषां देशघातिनाम् ॥३२८॥

टीका – तीन घातियानि का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र, नाम-गोत्र का तातै असख्यात गुणा, वेदनीय का तातै ड्योढा, मोह का सख्यात हजार वर्ष मात्र स्थितिबध हो है। इस ही अवसर विषै च्यारि ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण, पाच अतराय इन देश घातियानि का लता अर दारु समान द्विस्थानगत अनुभाग बध हो है।

संढणुवसमे पढमे, मोहिगिवीसाण होदि गुणसेढी।
अंतरकदो त्ति मज्झे, संखभागासु तीदासु ॥३२९॥

षंढानुपशमे प्रथम, मोहैकविंशानां भवति गुणश्रेणी।
अंतरकृत इति मध्ये, संख्यभागेष्वतीतेषु ॥३२९॥

टीका – तातै बधता क्रम करि सख्यात हजार स्थितिबध गए नपुंसक वेद का उपशम नष्ट भया, ताके प्रथम समय विषै नपुसक वेद के द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयावली तै बाह्य समय तै लगाय अन्य बीस मोह प्रकृतिनि के द्रव्य कौं अपकर्षण करि पूर्वोक्त प्रकार अन्य कर्मनि के समान गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषै अतरायाम विषै द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै। बहुरि नपुसक वेद का नाश होने के समय तै लगाय उतरता संता चढनेवाला जिस अवसर विषै अतर करण का समाप्तपना करै, तिस अवसर पावने पर्यंत अतर्मुहूर्त्त काल है, ताका सख्यात बहुभाग व्यतीत भए कहा ? सो कहैं है—

मोहस्स असंखेज्जा, वस्सपमाणा हवेज्ज ठिदिबंधो।
ताहे तस्स य जादं, बंधं उदयं च दुट्ठाण ॥३३०॥

मोहस्य असंख्येयानि, वर्षप्रमाणानि भवेत् स्थितिबंधः।
तस्मिन् तस्य च जातो, बंधं उदयश्च द्विस्थानम् ॥३३०॥

टीका – मोहनीय का असख्यात वर्ष, तीन घातियानि का तातै असख्यात गुणा, नाम-गोत्र का तातै असख्यात गुणा, वेदनीय का तातै अधिक स्थितिबध हो है। इस ही अवसर विषै मोहनीय का लता-दारुरूप द्विस्थानगत बध वा उदय भया।

लोहस्स असंकमणं, छावलितीदेसु दीरणत्तं च।
णियमेण पडंताणं, मोहस्सणुपुव्विसंकमणं ॥३३१॥

लोभस्य असंक्रमणं, षडावल्यतीतेषूदीरणत्वं च ।
नियमेन पततां, मोहस्यानुपूर्विसंक्रमणम् ।।३३१।।

टीका – उतरनेवाले कै सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय तै लगाय बधे थे जे कर्म, तिनकी आवली व्यतीत भए उदीरणा होने का नियम था, ताकौ छोडि अब बधावली व्यतीत होतै ही उदरीणा करिए है । बहुरि उतरने वाले कै अनिवृत्ति करण का प्रथम समय तै लगाय लोभ का सक्रमण था, सो चढनेवाले तै विपरीत रूप करि हणिए है । सज्वलन लोभ की मायादिक विषै सक्रम होने की शक्ति भई यहु अर्थ जानना ।

बहुरि मोह की सर्व प्रकृतिनि का जो आनुपूर्वी, सक्रम का नियम भया था, सो नष्ट भया, जहां तहा स्वजातीय कोई चारित्र मोह की प्रकृति का कोई चारित्र मोह की प्रकृतिनि विषै संक्रमण हो है ।

विवरीयं पडिहण्णदि, विरयादीणं च देसघादित्तं ।
तह य असंखेज्जाणं, उदीरणा समयपबद्धाणं ।।३३२।।

विपरीतं प्रतिहन्यते, वीर्यादीनां च देशघातित्वम् ।
तथा च असंख्येयानामुदीरणा समयप्रबद्धानाम् ।।३३२।।

टीका – अैसै बधता क्रमरूप हजारो स्थितिबंध गए वीर्यातराय का, तातै परै बहुत स्थिति बध गए मति ज्ञानावरण, उपभोगांतराय का, तातै परै बहुत स्थिति बंध गए चक्षुदर्शनावरण का, अर तातै परै बहुत स्थिति बध गएं श्रुतज्ञानावरणीय अर चक्षुर्दर्शनावरणीय, भोगांतराय का, बहुरि तातै परै बहुत स्थिति बध गए अवधि ज्ञानावरणीय, अवधि दर्शनावरण, लाभातरायनि का अर तातै परै बहुत स्थितिबध गए मन पर्यय ज्ञानावरण, दानातराय का क्रम तै पूर्वोक्त देशघाती बध होता था, ताकौ छोडि सर्वघाती रूप अनुभागबध होने लगा, तातै परै हजारो स्थिति बध भए असख्यात समयप्रबद्ध की उदीरणा होने का अभाव भया ।

लोयाणमसंखेज्जं, समयपबद्धस्स होदि पडिभागो ।
तत्तियमेत्तद्दव्वस्सुदीरणा वट्टदे तत्तो ।।३३३।।

लोकानामसंख्येयं, समयप्रबद्धस्य भवति प्रतिभागः ।
तावन्मात्रद्रव्यस्योदीरणा वर्तते ततः ।।३३३।।

टीका – गुणश्रेणी करने के अर्थि द्रव्य अपकर्षण कीया ताकौ चढनेवाले जीव कै उदयावली विषै द्रव्य देने के अर्थि पल्य का असंख्यातवा भाग मात्र भागहार पूर्वै कह्या था, सो इहां पर्यंत आया अब इस अवसर विषै नष्ट भया। अब असख्यात लोक का भागहार तहां भया। तातै असंख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा होती थी, ताका नाश होइ अब एक समयप्रबद्ध के असख्यातवां भाग मात्र द्रव्य की उदीरणा होने लगी।

अब क्रमकरण का नाश कहै है—

तक्काले मोहणियं, तीसीयं बीसियं च वेयणियं।
मोहं बीसिय तीसिय, वेयणियं कमं हवे तत्तो ॥३३४॥

तत्काले मोहनीयं, तीसियं बीसियं च वेदनीयं।
मोहं बीसियं तीसियं, वेदनीयं क्रमं भवेत् ततः ॥३३४॥

टीका – तिस असख्यात लोक मात्र भागहार सभवने का समय विषै मोह का सर्वतै स्तोक पल्य का असख्यातवा भाग मात्र, तातै असंख्यात गुणा तीन घातियानि का, तातै असख्यात गुणा नाम-गोत्रका, तातै साधिक वेदनीय का स्थितिबध हो है। तातै परै सख्यात हजार स्थितिबध गए मोह का स्तोक पल्य के असख्यातवा भाग मात्र, तातै असख्यात गुणा नाम-गोत्र का, तातै विशेष अधिक तीन घातियानि का, तातै विशेष अधिक वेदनीय का स्थिति-बध हो है।

मोहं वीसिय तीसिय, तो वीसिय मोहतीसयाण कमं।
वीसिय तीसिय मोहं, अप्पाबहुगं तु अविरुद्धं ॥३३५॥

मोहं वीसियं तीसियं, ततो वीसियं मोहतीसियानां क्रमं।
वीसियं तीसियं मोहं अल्पबहुकं तु अविरुद्धम् ॥३३५॥

टीका – तातै सख्यात हजार स्थितिबध गए सर्व तै स्तोक मोह का, तातै असख्यात गुणा नाम गोत्र का, तातै विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीय का स्थितिबध हो है। बहुरि तातै सख्यात हजार स्थिति बध गए सर्व स्तोक नाम-गोत्र का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र, तातै विशेष अधिक मोह का, तातै विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीय का स्थितिबध हो है। बहुरि तातै परै सख्यात हजार

स्थिति बध गए सर्व तै स्तोक नाम गोत्र का, तातै विशेष अधिक तीन घातिया अर वेदनीय का, तातै तीसरा भाग अधिक मोह का स्थितिबध हो है ।

कमकरणविणट्ठादो, उवरिट्ठविदा विसेसअहियाओ ।
सव्वासिं तणद्धे, हेट्ठा सव्वासु अहियकमं ॥३३६॥

क्रमकरणविनाशात् उपरि स्थिता विशेषाधिकाः ।
सर्वासां तदद्धायां अधस्तना सर्वासु अधिकक्रमं ॥३३६॥

टीका – क्रम करण का विनाश जिस काल विषै भया, तिस काल के ऊपरि तिस काल का अत समय विषै पल्य का असख्यातवां भाग मात्र स्थितिबध भया, तातै लगाय पीछै उत्तर काल विषै सर्व कर्म प्रकृतिनि का जे स्थितिबंध है, ते पूर्व स्थिति-बंध तै उत्तर स्थितिबध विशेष अधिक स्थापे है । गुणकार रूप नाही है । बहुरि क्रम करण का नाश के नीचै तिस क्रमकरण का काल की आदि विषै असख्यात वर्ष-मात्र स्थितिबध है, तातै पहिलै सख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिबध पर्यंत आयु बिना सात कर्मनि का बध हो है । ते भी पूर्व स्थितिबध तै उत्तर स्थितिबध अधिक क्रम लीए हो है, गुणकार रूप नाही है ।

जत्तोपाये होदि हु, असंखवस्सप्पमाणठिदिबंधो ।
तत्तोपाये अण्णं, ठिदिबंधमसंखगुणियकमं ॥३३७॥

यदुत्पादे भवति हि, असंख्यवर्ष प्रमाणस्थितिबंधः ।
तदुपायेन अन्यं, स्थितिबंधमसंख्यगुणितक्रमम् ॥३३७॥

टीका – जहातै लगाय नाम गोत्रादिकनि का असख्यात वर्ष मात्र स्थितिबध का प्रारभ भया, तहातै लगाय पहला पहला स्थितिबध तै पिछला पिछला और स्थितिबध भया सो असंख्यात गुणा है, यावत् सर्व तै पीछै पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबध होइ तावत् असा ही क्रम जानना ।

एवं पल्लासंखं, संखं भागं च होइ बंधेण ।
एत्तोपाये अण्णं, ठिदिबंधो संखगुणियकमं ॥३३८॥

एवं पल्यासंख्यं, संख्यं भागं भवति बंधेन ।
एतदुपायेन अन्यः, स्थितिबंधः संख्यगुणित क्रमः ॥३३८॥

टीका – ऐसैं यथासभव हीनाधिक प्रमाण लीए पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थितिबध बधता क्रम लीए सख्यात हजार व्यतीत भए तहा सर्वतै पीछै जो पल्य का असंख्यातवा भाग मात्र स्थितिबध भया, तातै परै एक एक काल विषै सातों कर्मनि का स्थिति बध पल्य के असख्यातवे भाग मात्र हो है ।

तहां विशेष – जो वीसियनि के तै तीसीयनि का ड्योढा, चालीसीयनि का दूणा स्थितिबध जानना । पल्य का असख्यातवे भाग के भेद घने, तातै हीनाधिक रुप घने स्थितिबधनि कौ आलाप करि पल्य का असख्यातवां भागमात्र ही कह्या है । चढनेवाले कै दूरापकृष्टि नामा स्थितिबध क्रम तै भया था, इहा उतरनेवाले कै प्रतिपाती परिणा-मनि करि एक ही बार दूरापकृष्टि नामा स्थितिबध हो है, यातै परै अनतर और स्थितिबध हो है, सो सातो कर्मनि का सख्यात गुणा हो है ।

मोहस्स य ठिदिबंधो, पल्ले जादे तदा दु परिवड्ढी ।
पल्लस्स संखभागं, इगिविगलासण्णिबंधसमं ॥३३६॥

मोहस्य च स्थितिबंधः, पल्ये जाते तदा तु परिवृद्धिः ।
पल्यस्य संख्यभागं, एकविकलासंज्ञिबंधसमं ॥३३९॥

टीका – ऐसै सख्यात गुणा क्रम लीए सख्यात हजार स्थितिबधोत्सरण भए सब तै पीछै नाम गोत्र का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र, तातै ड्योढा तीसीयनि का, दूना मोह का स्थितिबध होइ । ताके अनतरि मोह का पल्य मात्र तीसीयनि का पल्य का तीन चौथा भाग मात्र, वीसीयनि का आधा पल्य मात्र स्थितिबध हो है, पूर्व पूर्व स्थितिबध के प्रमाण कौ उत्तर उत्तर स्थितिबध का प्रमाण विषै घटाए अवशेष रहै सोई पूर्वोक्त स्थितिबध तै उत्तर स्थिति बध विषै वृद्धि का प्रमाण हो है । सो इहा भी साधन करि जानना । बहुरि चालीसीयनि का स्थितिबध पल्यमात्र होइ तौ तीसीय अथवा बीसीयनि का केता होइ ? ऐसै त्रैराशिक करि तीसीयनि का पल्य का तीन चौथा भाग मात्र, बीसीयनि का आधा पल्यमात्र स्थितिबध सिद्ध हो है । ऐसै अन्यत्र, भी त्रैराशिक जानना जैसै स्थिति घटावने विषै पूर्वै स्थिति बधापसरण सज्ञा कही थी, तैसे स्थिति वधावने विषै इहा स्थितिबधोत्सरणसज्ञा जाननी, सो एक एक स्थितिबधो-त्सरण, विषै पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थिति बधै ऐसै प्रत्येक सख्यात हजार स्थितिवध होइ क्रम तै एकेद्री, वेइ द्री, तेइंद्री, चोइद्री, असज्ञी पचेद्री का स्थितिबध के समान स्थितिवध हो है ।

मोहस्स पल्लबंधे, तिसदुगे तत्तिपादमद्धं च ।
दुतिचरुसत्तमभागा, वीसतिये एयवियलठिदी ।।३४०।।

मोहस्य पल्यबंधे, त्रिंशद्द्विके तत्त्रिपादमर्धं च ।
द्वित्रिचतुः सप्तम भागा, वीसत्रिके एकविकलस्थिति ।।३४०।।

टीका– जब मोह का स्थितिबध पल्यमात्र भया तब तीसीयनि का पल्य का तीन चौथा भाग मात्र, बीसीयनि का आधा पल्य मात्र स्थितिबंध हो है, सोई कही आए हैं । बहुरि एकेंद्री समान स्थिति बंध भया तहां मोह का सागर के च्यारि सातवां भागमात्र तीसीयनि का सागर के तीन सातवा भागमात्र, वीसीयनि का सागर के दोय सातवां भागमात्र स्थितिबध जानना । बहुरि बेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असज्ञी समान स्थिति-बंध जहा भया तहां क्रम तै एकेन्द्री समान बध तै पचीस गुणा, पचास गुणा, सौ गुणा, हजार गुणा क्रम तै जानना ।

तत्तो अणियट्टिस्स य, अंतं पत्तो हु तत्थ उदधीणं ।
लक्खपुधत्तं बंधो, से काले पुव्वकरणो हु ।।३४१।।

ततः अनिवृतेश्च, अंतं प्राप्तो हि तत्र उदधीनाम् ।
लक्षपृथक्त्वं बंधः, स्वे काले अपूर्वकरणो हि ।।३४१।।

टीका – तहा पीछे असज्ञी समान बध तै परै सख्यात हजार स्थितिबधोत्सरण भए उतरनेवाला अनिवृत्तिकरण के अत समय को प्राप्त भया । तहा मोह, वीसीय, तीसीयनि का क्रम तै पृथक्त्व लक्ष सागरनि का च्यारि सातवा भाग अर तीन सातवा भाग अर दोय सातवा भाग मात्र स्थितिबध हो है । बहुरि ताके अनतरि समय विषै उतरने वाला अपूर्वकरण भया ।

उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणुग्घाडिदाणि तत्थेव ।
चदुतीसदुगाणं च य, बंधो अद्धापवत्तो य ।।३४२।।

उपशामना निधत्तिः, निकाचना उद्घटितानि तत्रैव ।
चतुस्त्रिंशद्द्विकानां च च, बंधो अधाप्रवृत्तः च ।।३४२।।

टीका - ताके प्रथम समय तै लगाय अप्रशस्तोपशम करण अर निधत्ति करण अर निष्काचन करण ए युगपत उघाडे प्रगट कीए इनिका लक्षण पूर्वै कह्या

ही था । बहुरि अपूर्वकरण काल के सात भाग कीए तहा प्रथम भाग विषै हास्य, रति, भय, जुगुप्सा इन च्यारि प्रकृतिनि का दूसरे भाग विषै तीर्थंकरादि तीस प्रकृतिनि का छठा भाग का अत समय तै लगाय निद्रा प्रचला का बंध हो है । बहुरि तातै सख्यात हजार स्थिति बधोत्सरण भए उतरनेवाला अपूर्वकरण का अत समय विषै मोह, तीसीय, वीसीयनि का क्रम तै पृथक्त्व लक्ष कोटि सागरनि का च्यारि सातवा भाग, तीन सातवां भाग, दोय सातवां भाग मात्र स्थितिबध हो है । सर्व कर्मनि की गुणश्रेणी गलितावशेष आयाम लीए इहां पर्यन्त वर्तै है । ताके अनंतरि समय विषै उतरि अप्रमत्त गुणस्थान विषै अध करण परिणाम कौ प्राप्त हो है ।

पढमो अधापवत्तो, गुणसेढिमवट्ठिदं पुराणादो ।
संखगुणं तच्चंतोमुहुत्तमेत्तं करेदी हु ।।३४३।।

प्रथमोऽधाप्रवृत्तः, गुणश्रेणीमवस्थितां पुराणात् ।
संख्यगुणं तच्च अंतर्मुहूर्तमात्रं करोति हि ।।३४३।।

टीका – ताका प्रथम समय विषै उतरने वाला अपूर्वकरण का अत समय विषै जेता द्रव्य अपकर्षण कीया, तातै असख्यात गुणा घटता द्रव्य कौ अपकर्षण करि गुणश्रेणी करै है । सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय विषै जाका प्रारभ भया असा पुराणा गुणश्रेणी का आयाम तै सख्यात गुणा है, तौ भी अतर्मुहूर्त्त मात्र याका अवस्थित आयाम जानना । इहा विशुद्धता की हानि होने तै गुणश्रेणी विषै द्रव्य का प्रमाण घटि गया, आयाम का प्रमाण बधि गया है ।

ओदरसुहुमादीदो, अपुव्वचरिमो त्ति गलिदसेसे व ।
गुणसेढी णिक्खेवो, सट्ठाणे होदि तिट्ठाणं ।।३४४।।

अवतरसूक्ष्मादितो, अपूर्वचरम इति गलितशेषो वा ।
गुणश्रेणी निक्षेपः, स्वस्थाने भवति त्रिस्थानम् ।।३४४।।

टीका – उतरनेवाला सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तै लगाय अपूर्वकरण का अत समय पर्यंत ज्ञानावरणादिकनि का गुणश्रेणी आयाम है, सो गलितावशेष है, अवशेष अवस्थित नाही है ।

इतना विशेष– सूक्ष्म सांपराय का प्रथम समय तै लगाय केते इक काल मोह का गुणश्रेणी आयाम अवस्थित हो है । पीछे और कर्मनि का गुणश्रेणी आयाम के

समान मोह का भी गुणश्रेणी आयाम गलितावशेष हो है । जाते तीन स्थाननि विषै बधि करि अवस्थित गुणश्रेणी आयाम हो है । सो कहिए है—

उतरनेवाला सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय तै लगाय अवस्थित आयाम ही है । बहुरि स्पर्धक रूप बादर लोभ का द्रव्य के अपकर्षण विषै एक बार गुणश्रेणी आयाम बधिकरि बादर लोभ वेदक काल पर्यन्त अवस्थित रहै है । बहुरि माया के द्रव्य का अपकर्षण विषै दूसरी बार बधिकरि माया का वेदक काल पर्यन्त अवस्थित गुणश्रेणी आयाम रहै है । बहुरि मान के द्रव्य का अपकर्षण विषै तीसरी बार बधि करि मान का वेदक काल पर्यन्त अवस्थित गुणश्रेणी आयाम रहै है । असै तीन बार अवस्थित गुणश्रेणी आयाम हो है । बहुरि चौथी बार क्रोध का अपकर्षण विषै बधि करि अपूर्वकरण का अत पर्यन्त अन्य कर्मनि के समान मोह का भी गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम आया । बहुरि अध प्रवृत्तकरण का प्रथम समय तै लगाय अतमुर्हूर्त पर्यन्त पुराना गुणश्रेणी आयाम तै सख्यात गुणा ज्ञानावरणादि कर्मनि का अवस्थित गुणश्रेणी आयाम प्रवर्तै है । अध प्रवृत्तकरण का जेता अतर्मुहूर्त काल है, तितना काल विषै समय समय एकांतपनै अनत गुणी घाटि विशुद्धता करि उतरि पीछै स्वस्थान अप्रमत्त हो है ।

सट्ठाणे तावदियं, संखगुणूणं तु उवरि चडमाणे ।
विरदाविरदाहिमुहे, संखेज्जगुणं तदो तिविहं ।३४५।।

स्वस्थाने तावत्कं, संख्यगुणोनं तु उपरि चटमाने ।
विरताविरताभिमुखे, संख्येयगुण ततः त्रिविध ।।३४५।।

टीका – तहा प्रमत्त वा अप्रमत्त गुणस्थान विषै स्वस्थान सयत होइ वृद्धि हानि रहित अवस्थित गुणश्रेणी आयाम करै है । बहुरि सोई जीव जो विरताविरत पंचम गुणस्थान कौ सन्मुख होइ तौ सक्लेशता करि पूर्वै गुणश्रेणी आयाम तै सख्यात गुणा बधता गुणश्रेणी आयाम करै है । अर पलटि करि उपशम वा क्षपकश्रेणी चढने कौ सन्मुख होइ तो विशुद्धता करि तिस गुणश्रेणी आयाम तै सख्यात गुणा घटता गुणश्रेणी आयाम करै है । असै स्वस्थान सयमी कै गुणश्रेणी की वृद्धि हानि अवस्थित रूप तीन स्थान कहे ।

करणे अधापवत्ते, अधापवत्तो दु संकमो जादो ।
विज्झादमबंधाणे, णट्ठो गुणसंकमो तत्थ ।।३४६।।

करणे अधःप्रवृत्ते, अधःप्रवृत्तस्तु सक्रमो जातः ।
विध्यातमबंधने, नष्टो गुणसंक्रमस्तत्र ।।३४६।।

टीका – उतरनेवाला अधःप्रवृत्तकरण विषै जिनि प्रकृतिनि का बध पाइए, तिनकै तौ अधःप्रवृत्त नामा संक्रम भया, इनका अन्य प्रकृत्ति विषै संक्रम होने विषै अध.प्रवृत्त नाना भागहार संभवै है । बहुरि जिनका बध न पाइए तिनकै विध्यात संक्रमण पाइए है । इनका अन्य प्रकृति विषै संक्रम होने विषै विध्यात नामा भागहार संभवै है अर गुण संक्रम का नाश ही भया । इनका स्वरूप पूर्वे कह्या है, सो जानना ।

चडणोदरकालादो, पुव्वादो पुव्वगोत्ति संखगुणं ।
कालं अधापवत्तं, पालदि सो उवसमं सम्मं ।।३४७।।

चटनावतरकालतोऽपूर्वात् अपूर्वक इति सख्यगुणं ।
कालं अधःप्रवृत्तं पालयति स उपशमं सम्यं ।।३४७।।

टीका – द्वितीयोपशम सम्यक्त्व सहित जीव चढतै अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय उतरतै अपूर्वकरण का अंत समय पर्यन्त जितना काल भया, तातै सख्यात गुणा अैसा अतर्मुहूर्त मात्र द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल है । सो इस काल पर्यन्त अध प्रवृत्तकरण सहित इस द्वितीयोपशम सम्यक्त्व कौ पालै है ।

तस्सम्मत्तद्धाए, असंजमं देससंजमं वापि ।
गच्छेज्जावलिछक्के, सेसे सासणगुणं वापि ।।३४८।।

तत्सम्यक्त्वाद्धायां, असंयमं देशसंयमं वापि ।
गत्वावलिषट्के, शेषे सासनगुणं वापि ।।३४८।।

टीका – तिस ही द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का काल विषै अधःप्रवृत्तकरण काल कौं समाप्त करि अप्रत्याख्यान के उदय तै असंयम कौ प्राप्त होइ, तौ चौथे गुणस्थान आवै है ।

अथवा प्रत्याख्यान के उदय तै देश सयम कौ प्राप्त होइ तौ पांचवे गुणस्थान आवै अथवा असंयत होइ तहा अतर्मुहूर्त्त तिष्ठि देश संयम होइ अथवा देश संयत होइ तहा अतर्मुहूर्त्त तिष्ठि असंयत होइ अथवा तिस काल विषै छह आवली अवशेष रहैं अनंतानुबंधो क्रोधादि विषै किसी का उदय तै सासादन कौ भी प्राप्त होइ ।

जदि मरदि सासणो सो, णिरयतिरक्खं णरं ण गच्छेदि ।
णियमा देवं गच्छदि, जइवसहमुणिंदवयणेण ॥३४६॥

यदि म्रियते सासनः स, निरयतिर्यञ्चं नरं न गच्छति ।
नियमात् देव गच्छति, यतिवृषभमुनींद्रवचनेन ॥ ३४९ ॥

टीका – उपशम श्रेणी तै उतर्‍या जो सासादन जीव जो आयु नाश तै मरै तौ नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य गति कौ प्राप्त न होइ, नियम तै देवगति ही कौ प्राप्त होइ । असै उपशम श्रेणी तै उतर्‍या जीव कै सासादन गुणस्थान की प्राप्ति वा ताके मरण होने का विशेष कह्या है, सो कषाय प्राभृत नामा दूसरा महाधवल[1] शास्त्र विषै यतिवृषभ नामा आचार्य प्रतिपादन किया है । ताके अनुसारि इहा कथन कीया है ।

णरतिरियक्खणराउगसत्तो सक्को ण मोहमुवसमिदुं ।
तम्हा तिसुवि गदीसु, ण तस्स उप्पज्जणं होदि ॥३५०॥

नरकतिर्यग्नरायुष्कसत्त्वः शक्यो न मोहमुपशमयितुम् ।
तस्मात् त्रिष्वपि गतिषु, न तस्य उत्पादो भवति ॥३५०॥

टीका – नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य आयु का सत्त्व सहित जीव चारित्र मोह उपशमावने कौ समर्थ नाही, जातै नरक, तिर्यञ्च, मनुष्यायु का सत्त्व सहित जीव कै देश संयम वा सकल सयम की भी प्राप्ति का अभाव है । तातै उपशम श्रेणी तै उतर्‍या सासादन कै देव बिना अन्य तीन गतिनि मै उपजना न हो है । बहुरि पूर्वै आयु जाकै बध्या होइ तिस ही उपशम श्रेणी तै उतर्‍या सासादन का मरण हो है, अबद्धायु का न हो है ।

उवसमसेढीदो पुण, ओदिण्णो सासणं ण पाउणदि ।
भुदबलिणाहणिम्मलसुत्तस्स फुडोवदेसेण ॥३५१॥

उपशमश्रेणीतः पुनरवतीर्णः सासनं न प्राप्नोति ।
भूतबलिनाथनिर्मलसूत्रस्य स्फुटोपदेशेन ॥३५१॥

---

१. 'महाधवल' के स्थान पर 'जयधवल' शब्द चाहिए ।

टीका – उपशम श्रेणी तै उतर्या जीव, सासादन कौ प्राप्त न होइ, जातै पूर्वें अनतानुबधी का विसयोजन करि उपशम श्रेणी चढ्या है, ताके अनतानुबधी का उदय न सभवै है । असै भूतबलि नामा मुनिनाथ, ताका कह्या जो महाकर्म प्रकृत्ति प्राभृत नामा पहला धवल शास्त्र तिस विषै पूर्वापर दोष रहित निर्मल प्रगट उपदेश है, ताकरि हम निश्चय कीया है ।

आगें उपशम श्रेणी चढने वाले बारह प्रकार जीव हैं, तिनकी क्रिया विषै विशेष है सो कहै है—

पुंकोधोदयचलियस्सेसाह परूवणा हु पुंमाणे ।
मायालोभे चलिदस्सत्थि विसेसं तु पत्तेयं ॥३५२॥

पुंक्रोधोदयचटितस्य, शेषा अथ प्ररूपणा हि पुंमाने ।
मायालोभे चटितस्यास्ति विशेषं तु प्रत्येकं ॥३५२॥

टीका – पूर्वें कही जो सर्व प्ररूपणा, सो पुरुषवेद अर क्रोध कषाय सहित उपशम श्रेणी चढनेवाले जीव की कही है । बहुरि पुरुषवेद अर सज्वलन मान वा माया वा लोभ सहित उपशम श्रेणी चढने वालो कै क्रिया विशेष है । सोइ कहिए है—

दोण्हं तिण्हं चउण्हं कोहादीणं तु पढमठिदिमित्तं ।
माणस्स य मायाए, बादरलोहस्स पढमठिदी ॥३५३॥

द्वयोः त्रयाणां चतुर्णां, क्रोधादीनां तु प्रथमस्थितिमात्रम् ।
मानस्य च मायाया, बादरलोभस्य प्रथमस्थितिः ॥३५३॥

टीका – पुरुषवेद अर क्रोध का उदय सहित चढ्या जीव की क्रोध अर मान की प्रथम स्थिति मिलाई हुई जेती होइ, तितनी मान का उदय सहित चढ्या जीव कै मान की प्रथम स्थिति हो है ।

भावार्थ – जो क्रोध सहित श्रेणी चढने वाले कै तौ पहिलै क्रोध का उदय हो है । पीछे मान का उदय हो है । अर मान का उदय सहित श्रेणी चढ्या कै क्रोध का उदय न हो है मान का ही उदय हो है । ताकै तिन दोऊनि का उदय काल के समान याकै मान का उदय काल है, इस वास्ते तै तिनि दोऊनि की प्रथम स्थिति समान याकै मान की प्रथम स्थिति कही है । असै ही आगे समझना । बहुरि क्रोध

का उदय सहित चढ्या जीव कै क्रोध अर मान अर माया की प्रथम स्थिति मिलाई हुई जेती होइ तितनि माया का उदय सहित चढ्या जीव कै लोभ की प्रथम स्थिति हो है । इहा असा जानना—

क्रोध का उदय सहित श्रेणी चढ्या कै तौ क्रम तै च्यार्यो कषाय का उदय हो हैं। मान सहित चढ्या कै क्रोध बिना तीन का ही उदय हो है । माया सहित चढ्या कै माया अर लोभ का ही उदय है । लोभ सहित चढ्या कै केवल लोभ ही का उदय हो है, तातै पूर्वोक्त प्रकार प्रथम स्थिति कही है । बहुरि च्यार्यों विषै किसी कषाय का उदय सहित चढै सर्व ही जीवनि का सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति समान है । अर तिन कै नपुसक, स्त्रीवेद सात नोकषायनि का उपशमन काल समान है ।

जस्सुदयेणारूढो, सेढीं तस्सेव ठविदि पढमठिदि ।
सेसाणावलिमेत्तं, मोत्तूण करेदि अंतरं णियमा ॥३५४॥

यस्योदयेनारूढो, श्रेणि तस्यैव स्थापयति प्रथमस्थितिः ।
शेषाणामावलिमात्रं, मुक्त्वा करोति अंतरं नियमात् ॥३५४॥

टीका – जिस वेद वा कषाय का उदय करि जीव श्रेणी चढ्या होइ, ताकी तौ अंतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है । तिस प्रथम स्थिति के ऊपरि के निषेकनि का अतर करै है । बहुरि उदय रहित वेद वा कषायनि की आवली मात्र स्थिति छोडि, ताके ऊपर के निषेकनि का अंतर करै है ।

जस्सुदयेणारूढो, सेढिं तक्कालपरिसमत्तीए ।
पढमट्ठिदिं करेदि हु, अणंतरुवरुदयमोहस्स ॥३५५॥

यस्योदयेनारूढः, श्रेणि तत्कालपरिसमाप्तौ ।
प्रथमस्थितिं करोति हि, अनतरोपर्युदयमोहस्य ॥३५५॥

टीका – जिस कषाय का उदय सहित श्रेणी चढ्या है, तिस कषाय की प्रथम स्थिति समाप्त भए, ताके अनतरवर्ती कषाय की प्रथम स्थिति करै है । सोई कहिए है– क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव कै क्रोध की प्रथम स्थिति का काल पूर्ण भएं पीछै मान की प्रथम स्थिति हो है । असै ही ऊपरि मायादिक की जाननी ।

बहुरि मान सहित चढ्या जीव कै मान को प्रथम स्थिति समाप्त भएं पीछैं माया की प्रथम स्थिति हो है, असैं ही ऊपरि जानना। बहुरि माया सहित चढ्या जीव कै माया की प्रथम स्थिति पूर्ण भएं पीछैं लोभ की प्रथम स्थिति करै है। असैं ही उपरि जाननी। बहुरि लोभ सहित श्रेणी चढ्या कै लोभ की प्रथम स्थिति भएं पीछै सूक्ष्म लोभ की प्रथम स्थिति हो है।

माणोदएण चडिदो, कोहं उवसमदि कोहअद्धाए।
मायोदएण चडिदो, कोहं माणं सगद्धाए ॥३५६॥

मानोदयेन चटितः, क्रोध उपशमयति क्रोधाद्धायाम्।
मायोदयेन चटितः, क्रोधं मानं स्वकाद्धायाम् ॥३५६॥

टीका – क्रोध का उदय सहित चढ्या जीव कै जो क्रोध के उदय का काल है, तिस काल विषै ही मान का उदय सहित चढ्या जीव उदय रहित तीन क्रोधनि कौं उपशमावै है। बहुरि तैसे ही माया का उदय सहित चढ्या जीव, उदय रहित तीन क्रोध अर तीन मान का क्रम तै क्रोध सहित चढ्या जीव कै जो क्रोध की प्रथम स्थिति अर मान की प्रथम स्थिति का काल है, तिस काल विषै ही उपशमावै है।

लोभोदएण चडिदो, कोहं माणं च मायमुवसमदि।
अप्पप्पण अद्धाणे, ताणं पढमट्ठिदी णत्थि ॥३५७॥

लोभोदयेन चटितः, क्रोधं मानं च मायामुपशमयति।
आत्मात्मनः अध्वाने, तेषां प्रथमस्थितिर्नास्ति ॥३५७॥

टीका – लोभ का उदय सहित चढ्या जीव है, सो उदय रहित तीन क्रोध, तीन मान, तीन माया, तिनकौं क्रोध सहित चढ्या जीव कै जो क्रोध की अर मान की अर माया की प्रथम स्थिति का काल है, तिस काल विषैं क्रम तै उपशमावै है। अर याकै तिन क्रोधादिकनि की प्रथम स्थिति का अभाव है, जातैं लोभ सहित चढ्या जीव कै क्रोधादिकनि का उदय न पाइए है।

माणोदयचडपडिदो, कोहोदयमाणमेत्तमाणुदओ।
माणतियाणं सेसे, सेससमं कुणदि गुणसेढी ॥३५८॥

मानोदयचटपतितः, क्रोधोदयमानमात्रमानोदयः।
मानत्रयाणां शेषे, शेषसमं करोति गुणश्रेणीं ॥३५८॥

टीका – मान का उदय सहित श्रेणी चढि पड्या जो जीव, ताकै क्रोध उदय सहित चढ्या जीव कै क्रोध मान का उदय काल मिलाया हुवा जितना होइ तितना मान का उदय काल है । असै ही माया उदय सहित चढि पड्या जीव कै क्रोध सहित चढ्या कै क्रोध, मान, माया के उदय का जितना काल होइ, तितना माया का उदय काल है । लोभ उदय सहित चढि पड्या जीव कै क्रोध सहित चढ्या कैं जितना क्रोध, मान, माया, लोभ का उदय काल होइ तितना एक लोभ ही का उदय काल हो है बहुरि, मान, माया सहित चढि करि पडे जीव क्रम तै मान, माया, लोभ का द्रव्य कौ अपकर्षण करि ज्ञानावरणादिकनि की गुणश्रेणी आयाम के समान गलितावशेष आयाम करि गुणश्रेणी करै है ।

भावार्थ यहु – मान का उदय सहित चढि जो जीव पड्या, ताकै क्रम तै लोभ मान का उदय होइ । तहां मान का उदय भए मोह का गुणश्रेणी आयाम और कर्मनि के समान करै है । जातै याकै क्रोध का उदय होना नाही । असै ही माया सहित चढि पड्या, कै लोभ का उदय आया पीछै माया का उदय आए अर लोभ का उदय सहित चढि पड्या कैं लोभ ही का उदय है; तातै पहलै ही अन्य कर्मनि के समान मोह का गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम हो है ।

माणादितियाणुदये, चडपडिये सगसगुदयसंपत्ते ।
णवछत्तिकसायाणं, गलिदवसेसं करेदि गुणसेढी ॥३५९॥

मानादित्रयाणामुदये, चटपतिते स्वकस्वकोदयसंप्राप्ते ।
नवषट्त्रिकषायाणां, गलितावशेषां करोति गुणश्रेणि ॥३५९॥

टीका – मान, माया, लोभ का उदय सहित चढि पड्या जीव है, ते अपनी अपनी कषाय का उदय कौ प्राप्त होत सते क्रम तै नव कषायनि की अर छह कषायनि की अर तीन कषायनि की पूर्वोक्त प्रकार गलितावशेष आयाम गुणश्रेणी करै है ।

भावार्थ यहु– जैसै क्रोध का उदय सहित चढि पड्या जीव क्रोध का उदय आएं बारह कषायनि का पूर्वोक्त प्रकार गलितावशेष आयाम लीए गुणश्रेणी करै है; तैसे मान का उदय सहित चढि पड्या जीव मान का उदय आए क्रोध बिना नव कषायनि का करै है । माया सहित चढि पड्या जीव माया का उदय भएं लोभ, मायारूप

छह कषायनि का करै है। लोभ सहित चढि पड्या जीव लोभ का उदय आए तीन प्रकार लोभ ही का अन्य कर्मनि के समान गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम करै है।

जस्सुदएण य चडिदो, तम्हि य उक्कट्टियम्हि पडिऊण।
अंतरमाऊरेदि हु, एवं पुरिसोदए चडिदो ॥३६०॥

यस्योदयेन च चटितः, तस्मिश्च अपकर्षिते पतित्वा।
अतरमापूरयति हि, एव पुरुषोदये चटितः ॥३६०॥

टीका – जिस कषाय का उदय सहित चढि पड्या होइ, तिस ही कषाय का द्रव्य का अपकर्षण होत सतै अतर कौ पूरै है। नष्ट कीए निषेकनि का सद्भाव करै है।

भावार्थ यहु – जैसे क्रोध सहित चढि पड्या जीव, क्रोध का उदय आए द्रव्य कौ अपकर्षण करि अतर कौ पूरै है; तैसे मान सहित चढि पड्या जीव मान का उदय आए अर माया सहित चढि पड्या माया का उदय आए अर लोभ सहित चढि पड्या जीव, लोभ का उदय आए प्रथम समय विषै द्रव्य कौ अपकर्षण करि जे अतरकरण विषै निषेक नष्ट कीए थे, तिनविषै द्रव्य का निक्षेपण करि तिनका सद्भाव करै है। इस प्रकार पुरुषवेद सहित क्रोधादि युक्त श्रेणी चढने उतरनेवाला का व्याख्यान जानना।

थी उदयस्स य एवं, अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे।
सममुवसामदि संढस्सुदए चडिदस्स वोच्छामि ॥३६१॥

स्त्री–उदयस्य च एवं, अपगतवेदो हि सप्तकर्मांशान्।
सममुपशमयति षंढस्योदये चटितस्य वक्ष्यामि ॥३६१॥

टीका – स्त्रीवेद युक्त क्रोधादिकनि का उदय सहित श्रेणी चढ्या च्यारि प्रकार जीव है, सो वेद उदय रहित होत सता पुरुषवेद अर छह हास्यादिकनि का, इन सात नोकषायनि कौ युगपत् उपशमावै है। अन्य सर्व विधान पुरुषवेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव के समान जानना।

अब नपुंसक वेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या कै विशेष है, ताहि कहस्यों–

संढुदयंतरकरणो, संढद्धाणम्हि अणुवसंतेसे।
इत्थिस्स य अद्धाए, संढं इत्थिं च समगमुवसमदि ॥३६२॥

षंढोदयांतरकरणः, षंढाद्धायां अनुपशांतांशे ।
स्त्रियः च अद्धायां, षंढं स्त्री च समकमुपशमयति ॥३६२॥

टीका – नपुंसक वेद युक्त क्रोधादिकनि का उदय सहित श्रेणी चढचा च्यारि प्रकार जीव, सो नपुंसक वेद का अतर करत सता पुरुषवेद सहित चढचा जीव कै नपुंसक वेद स्त्री वेद कौ उपशम करने का जितना काल है तावन्मात्र नपुसक वेद की प्रथम स्थिति कौं स्थापै है । स्थापि करि पुरुष वेद सहित चढचा जीव के नपुंसक वेद कै उपशमन काल जो पाइए है, ताका अत पर्यंत काल कौ नपुसक वेद कौ उपशमावता संता प्राप्त भया परि याकै नपुंसक वेद का उपशम समाप्त न भया । तहा पीछे स्त्री वेद, नपुंसक वेद इनि दोऊनि का युगपत् उपशम करने लगा ।

तहा पुरुष वेद सहित चढ्या जीव कै स्त्री वेद के उपशम करने का जो काल, तिस काल कौं प्राप्त होइ सो कहै है–

ताहे चरिमसवेदो, अवगदवेदो हु सत्तकम्मंसे ।
सममुवसामदि सेसा, पुरिसोदयचलिदभंगा हु ॥३६३॥

तस्मिन् चरमसवेदो, अवगतवेदो हि सप्तकर्मांशान् ।
सममुपशमयति शेषाः, पुरुषोदयचलितभङ्गा हि ॥३६३॥

टीका – तहां सवेद अवस्था का अत समय कौ प्राप्त होता सता स्त्री वेद, नपुंसक वेद के उपशमन कौ युगपत् समाप्त करै है । तातै परै अवगतवेदी होत सता पुंवेद अर छह हास्यादिक इन सात नोकषायनि कौ युगपत् उपशमावै है । अन्य सर्व पुरुषवेद सहित श्रेणी चढ्या जीव कै समान विधान जानना ।

पुंकोहस्स य उदए, चलपलिदेऽपुव्वदो अपुव्वो त्ति ।
एदिस्से अद्धाणं, अप्पाबहुगं तु वोच्छामि ॥३६४॥

पुंक्रोधस्य च उदये, चटपतितेऽपूर्वतः अपूर्व इति ।
एतस्य अद्धानामल्पबहुकं तु वक्ष्यामि ॥३६४॥

टीका – पुरुष वेद का अर क्रोध कषाय का उदय सहित चढि पड्या जीव कै आरोहक अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय अवरोहक अपूर्वकरण का अत समय पर्यंत काल विषै संभवते जे अलपबहुत्व के स्थान, तिनकौ कहोगा । इहां श्रेणी

चढनेवालो का नाम तो आरोहक जानना, उतरनैवाला का नाम अवरोहक जानना। बहुरि जहा विशेष अधिक है, तहा पूर्व ते किछु अधिक जानना असी सज्ञा है ।

अवरादो वरमहियं, रसखंडुक्कीरणस्स अद्धाणं ।
संखगुणं अवरट्ठिदिखंडस्सुक्कीरणो कालो ॥३६५॥

अवरात् वरमधिकं, रसखण्डोत्करणस्याध्वानम् ।
संख्यगुणं अवरस्थितिखंडस्योत्करणः कालः ॥३६५॥

टीका – सर्व ते स्तोक जघन्य अनुभागकांडकोत्करण का काल अंतर्मुहूर्त मात्र है, सो यहु ज्ञानावरणादि कर्मनि का तौ आरोहक सूक्ष्म सांपराय के अत का अनुभाग कांडकोत्करण जानना अर मोह का अतर करत संता अत का अनुभाग कांडकोत्करण जानना ।१। तातै उत्कृष्ट अनुभागकाडकोत्करण काल विशेष अधिक है, सो यहु सर्व कर्मनि का आरोहक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवै है ।२। तातै सूक्ष्म सांपराय का अन्त समय विषै संभवता असा ज्ञानावरणादि कर्मनि का जघन्य स्थिति काडकोत्करण काल अर अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै सभवता असा मोहनीय का जघन्य स्थिति बध जेते काल पडै, सो काल संख्यात गुणे है । अर ते दोऊ परस्पर समान है ।३।

पडणजहण्णट्ठिदिबंधद्धा, तम अंतरस्स करणद्धा ।
जेट्ठट्ठिदिबंधठिदीउक्कीरद्धा य अहियकमा ॥३६६॥

पतनजघन्यस्थितिबंधाद्धा, तथा अंतरस्य करणाद्धा ।
ज्येष्ठस्थितिबंधस्थित्युत्करणाद्धा च अधिकक्रमाः ॥३६६॥

टीका – तातै अवरोहक सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय विषै सभवता ज्ञानावरणादि कर्मनि का जघन्य स्थिति बधापसरण काल अर अवरोहक अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै संभवता मोह का जघन्य स्थिति बंधापसरण काल विशेष अधिक है। ते दोऊ परस्पर समान है ।४। तातै अतरकरण करने का काल विशेष अधिक है ।

इहां कोऊ कहै – पूर्वै स्थितिकाडकोत्करण काल के समान अतरकरण काल कह्या था, इहां अधिक कैसै कहो हो ?

ताका समाधान – पूर्वै तहा संभवता जो मध्य स्थिति काडकोत्करण काल, ताके समान अन्तरकरण काल कह्या था, इहां जघन्य स्थिति काडकोत्करण काल तै अधिक कह्या है ।५। तातै आरोहक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै सभवता असा उत्कृष्ट स्थितिबध काल कहिए, जेते काल समानरूप उत्कृष्ट स्थितिबध होइ असा स्थितिबंधापसरण काल अर उत्कृष्ट स्थिति काडकोत्करणकाल विशेष अधिक है, ते दोऊ परस्पर समान है ।६।

सुहमंतिमगुणसेढी, उवसंतकसायगस गुणसेढी ।
पडिवदसुहुमद्धावि य, तिण्णिवि संखेज्जगुणिदकमा ॥३६७॥

सूक्ष्मांतिमगुणश्रेणी, उपशांतकषायकस्य गुणश्रेणी ।
प्रतिपतत्सूक्ष्माद्धापि च, तिस्रोऽपि संख्येयगुणितक्रमाः ।३६७॥

टीका – तातै आरोहक सूक्ष्म सापराय का अत समय विषै सभवता असा गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम सख्यात गुणा है ।७। तातै उपशांतकषाय का प्रथम समय विषै आरभ्या असा गुणश्रेणी आयाम सख्यात गुणा है ।८। तातै पडनेवाला सूक्ष्मसापराय का काल सख्यात गुणा है ।९।

तग्गुणसेढी अहिया, चलसुहुमो किट्टिउवसमद्धा य ।
सुहुमस्स य पढमठिदी, तिण्णिवि सरिसा विसेसहिया ॥३६८॥

तद्गुणश्रेणी अधिका, चलसूक्ष्मः कृष्टयुपशमाद्धा च ।
सूक्ष्मस्य च प्रथमस्थितिः तिस्रोऽपि सदृशा विशेषाधिकाः ॥३६८॥

टीका – तातै पडनेवाला सूक्ष्मसापराय कै सूक्ष्म लोभ का गुणश्रेणी आयाम आवली मात्र विशेष करि अधिक है ।१०। तातै आरोहक सूक्ष्मसापराय का काल अर सूक्ष्मकृष्टि उपशमावने का काल अर सूक्ष्म सापराय की प्रथम स्थिति आयाम यथासंभव अतर्मुहूर्त मात्र विशेष करि अधिक है । ए तीनो परस्पर समान है ।

किट्टीकरणद्धहिया, पडबादरलोभवेदगद्धा हु ।
संखगुणा तस्सेव य, तिलोहगुणसेढिणिक्खेओ ॥३६९॥

कृष्टिकरणाद्धाधिका, पतद्बादरलोभवेदकाद्धा हि ।
संख्यगुणं तस्यैव च, त्रिलोभगुणश्रेणिनिक्षेपः ॥३६९॥

टीका – तातैं सूक्ष्म कृष्टि करने का काल विशेष अधिक है। सो यहु अनिवृत्ति करण काल का किंचित् न्यून त्रिभाग मात्र है।१२। तातैं पडनेवाले बादर सूक्ष्म सांपराय के बादर लोभ वेदक का काल संख्यात गुणा है।१३। तातैं पडनेवाले अनिवृत्तिकरण के तीन लोभ की गुणश्रेणी का आयाम आवली मात्र अधिक है।१४।

चडबादरलोहस्स य, वेदगकालो य तस्स पढमठिदी।
पडलोहवेदगद्धा, तस्सेव य लोहपढमठिदी ॥३७०॥

चटबादरलोभस्य च, वेदककालश्च तस्य प्रथमस्थितिः।
पतल्लोभवेदकाद्धा, तस्यैव च लोभप्रथमस्थितिः ॥३७०॥

टीका – तातैं आरोहक अनिवृत्तिकरण के बादर लोभ का वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है।१५। तातैं आरोहक अनिवृत्तकरण के बादर लोभ की प्रथम स्थिति का आयाम विशेष अधिक है।१६। तातैं पडनेवाले कैं बादर लोभ का वेदक काल विशेष अधिक है।१७। तातैं उतरनेवाले कै लोभ की प्रथम स्थिति का आयाम आवली मात्र अधिक है।१८।

तम्मायावेदद्धा, पडिवडछण्हं पि खित्तगुणसेढी।
तम्माणवेदगद्धा तस्स णवण्हं पि गुणसेढी ॥३७१॥

तन्मायावेदकाद्धा, प्रतिपतत्षण्णामपि क्षिप्तगुणश्रेणी।
तन्मानवेदकाद्धा, तस्य नवानामपि गुणश्रेणी ॥३७१॥

टीका – तातैं पडनेवाले कै मायावेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है।१९। तातैं पडनेवाले कै माया वेदक के छह कषायनि का गुणश्रेणी आयाम आवली करि अधिक है।२०। तातैं पडनेवाले कै मान वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है।२१। तातैं तिस ही कै नव कषायनि का गुणश्रेणी आयाम आवली करि अधिक है।२२।

चडमायावेदद्धा, पढमट्ठिदिमायउवसमद्धा य।
चडमाणवेदगद्धा,पढमट्ठि दिमाणउवसमद्धा य ॥३७२॥

चटमायावेदाद्धा प्रथमस्थितिमायाउपशमाद्धा च।
चटमानवेदकाद्धा प्रथमस्थितिमानोपशमाद्धा च ॥३७२॥

टीका – तातै चढनेवाले कै माया वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२३। तातै तिस तै मायाकी प्रथम स्थिति का आयाम उच्छिष्टावली करि अधिक है ।२४। तातै माया के उपशमावने का काल समय घाटि आवली मात्र अधिक है ।२५। तातै चढनेवाले कै मान वेदक काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२६। तातै ताकी प्रथम स्थिति का आयाम आवली मात्र अधिक है ।२७। तातै ताकै मान उपशमावने का काल समय घाटि आवली मात्र अधिक है ।२८।

कोहोवसामणद्धा, छप्पुरिसित्थीण उवसमाणं च ।
खुद्दभवगहणं च य, अहियकमा एक्कवीसपदा ।।३७३।।

क्रोधोपशामनाद्धा, षट्पुरुषस्त्रीनामुपशमानां च ।
क्षुद्रभवग्रहणं च च, अधिकक्रमाणि एकविंशपदानि ।।३७३।।

टीका – तातै क्रोध के उपशमावने का काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।२६। तातै छह नोकषायनि के उपशमावने का काल विशेष अधिक है ।३०। तातै पुरुषवेद के उपशमावने का काल समय घाटि दोय आवली करि अधिक है ।३१। तातै स्त्रीवेद उपशमावने का काल अतर्मुहूर्त करि अधिक है ।३२। तातै नपुसकवेद उपशमावने का काल अंतर्मुहूर्त करि अधिक है ।३३। तातै क्षुद्रभव का काल विशेष अधिक है, सो यहु एक उश्वास के अठारहवे भागमात्र है ।३४।३५।

उवसंतद्धा दुगुणा, तत्तो पुरिसस्स कोहपढमठिदी ।
मोहोवसामणद्धा, तिण्णिवि अहियक्कमा होंति ।।३७४।।

उपशांताद्धा द्विगुणा, ततः पुरुषस्य क्रोधप्रथमस्थिति. ।
मोहोपशमनाद्धा, त्रीण्यपि अधिकक्रमाणि भवंति ।।३७४।।

टीका – तिस क्षुद्रभव तै उपशात कषाय का काल दूणा है ।३५। तातै पुरुष वेद की प्रथम स्थिति का आयाम विशेष अधिक है ।३६। तातै सज्वलन क्रोध की प्रथम स्थिति का आयाम किचित् न्यून त्रिभाग मात्र करि अधिक है ।३७। तातै सर्व मोहनीय का उपशमावने का काल है, सो नपुसक वेद के उपशमावने का प्रारम्भ तै लगाय मान, माया, लोभ का उपशम कालनि करि साधिक है ।३८।

पडणस्स असंखाणं, समयपबद्धाणुदीरणाकालो ।
संखगुणो चडणस्स य, तक्कालो होदि अहियो य ।।३७५।।

पतनस्यासंख्यानां, समयप्रबद्धानामुदीरणाकालः ।
संख्यगुणः चटनस्य च, तत्कालो भवत्यधिकश्च ।।३७५।।

टीका – तातै पडनेवाले कै असख्यात समयप्रवद्ध की उदीरणा होने का काल सख्यात गुणा है ।३९। तातै चढनेवाले कै असंख्यात समयप्रवद्ध का उदीरणा होने का काल अतर्मुहूर्त मात्र अधिक है ।४०।

पडणाणियट्टियद्धा, संखगुणा चडणगा विसेसहिया ।
पडमाणा पुव्वद्धा, संखगुणा चडणगा अहिया ।।३७६।।

पतनानिवृत्त्यद्धा, संख्यगुणा चटनका विशेषाधिका ।
पतंत्यापूर्वाद्धाः, सख्यगुणाः चटनका अधिकाः ।।३७६।।

टीका – तातै पडनेवाले कै अनिवृत्तिकरण का काल सख्यात गुणा है ।४१। तातै चढनेवाले कै अनिवृत्तिकरण का काल अतर्मुहूर्त मात्र करि अधिक है ।४२। तातै पडनेवाले कै अपूर्वकरण का काल संख्यात गुणा है ।४३। तातै चढनेवाल कै अपूर्वकरण का काल अतर्मुहूर्त करि अधिक है ।४४।

पडिवडवरगुणसेढी, चडमाणापुव्वपढमगुणसेढी ।
अहियकमा उवसामगकोहस्स य वेदगद्धा हु ।।३७७।।

प्रतिपतद्वरगुणश्रेणी, चटदपूर्वप्रथमगुणश्रेणी ।
अधिकक्रमा उपशामकक्रोधस्य च वेदकाद्धा हि ।।३७७।।

टीका – तातै पडनेवाले कै सूक्ष्मसापराय का प्रथम समय विषै आरंभ्या ऐसा उत्कृष्ट गुणश्रेणी आयाम सो अतर्मुहूर्त करि अधिक है ।४५। तातै चढनेवाले कै अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जाका आरंभ भया ऐसा उत्कृष्ट गुणश्रेणी आयाम, सो अन्तर्मुहूर्त करि अधिक है ।४६। तातै चढनेवाले कै क्रोध वेदक काल संख्यात गुणा है, जातै याका आरभ तो अध करण का प्रथम समय तै ही है अर गुणश्रेणी आयाम का आरभ अपूर्वकरण के प्रथम समय तै है, तातै असख्यात गुणापना संभवै है ।४७।

संजदअधापवत्तगगुणसेढी दंसणोवसंतद्धा ।
चारित्तंतरिगठिदी, दंसणमोहंतरठिदीओ ।।३७८।।

संयताधः प्रवृत्तकगुणश्रेणी दर्शनोपशांताद्धा ।
चारित्रांतरिकस्थितिः, दर्शनमोहांतरस्थितिः ।।३७८।।

टीका – तातै पडनेवाला अप्रमत्त संयमी कै प्रथम समय विषै कीया गुणश्रेणी आयाम सो संख्यात गुणा है ।४८। तातै दर्शन मोह का उपशम अवस्था का काल संख्यात गुणा है, जातै चारित्र मोह कै उपशमन काल तै पीछे वा पहलै अप्रमत्तादि असंयत पर्यंत द्वितीयोपशम सम्यक्त्व का सद्भाव करै है ।४९। तातै चारित्र मोह का अन्तर आयाम सख्यात गुणा है ।५०। तातै दर्शन मोह का अन्तर आयाम सख्यात गुणा है ।५१।

अवराजेट्ठाबाहा, चडपडमोहस्स अवरठिदिबंधो ।
चडपडतिघादिअवरट्ठिदिबंधंतोमुहुत्तो य ।।३७९।।

अवराज्येष्ठाबाधा, चटपतमोहस्य अवरस्थितिबंधः ।
चटपतत्रिघात्यवरस्थितिबंधांतर्मुहूर्तश्च ।।३७९।।

टीका – तातै चढनेवाले के सूक्ष्म सापराय का अन्त समय विषै सभवता ज्ञानावरणादिक का अर अनिवृत्तिकरण का अन्त समय विषै संभवता मोह का स्थितिबध की जघन्य आबाधा, सो सख्यात गुणी है ।५२। तातै उतरनेवाले कै अपूर्व करण का अन्त समय विषै सभवती सर्व कर्मनि की स्थितबध की उत्कृष्ट आबाधा सख्यात गुणी है ।५३। तातै चढनेवाले कै अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै सभवता मोह का जघन्य स्थितबध का प्रमाण, सो सख्यात गुणा है ।५४। तातै उतरनेवाले कै अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै सभवता मोह का जघन्य स्थितिबध का प्रमाण सख्यात गुणा है, इहा सख्यात का प्रमाण दोय जानना ।५५। तातै चढनेवाले कै सूक्ष्मसापराय का अन्त समय विषै सभवता असा तीन घातिया कर्मनि का जघन्य स्थिति बध, सो सख्यात गुणा है ।५६। तातै उतरनेवाले कै सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय विषै सभवता तीन घातिया कर्मनि का जघन्य स्थितिबध, सो सख्यात गुणा है, सो दूणा जानना ।५७। तातै उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त सख्यात गुणा है, सो एक समय घाटि दोय घडी प्रमाण जानना ।५८। इहा अन्तदीपक न्याय करि पूर्वै जे सर्व काल कहे थे, ते सर्व अतर्मुहूर्त मात्र ही जानने । जातै अतर्मुहूर्त के भेद बहुत हैं ।

चडमाणस्स य णामागोदजहण्णट्ठिदीण बंधो य ।
तेरसपदासु कमसो, संखेण य होंति गुणियकमा ।।३८०।।

चटतः च नामगोत्रजघन्यस्थितीनां बंधश्च ।
त्रयोदशपदेषु क्रमशः, संख्येन च भवंति गुणितक्रमाः ॥३८०॥

टीका – तातै चढनेवाले कै नामगोत्र का जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणा है, सो सोलह मुहूर्त मात्र है ।५९। सो यहु जघन्य बंध अपनी अपनी व्युच्छित्ति का अंत समय विषै जानना ।

चलतदियअवरबंधं, पडणामगोदअवरठिदिबंधो ।
पडतदियस्स य अवरं, तिण्णि पदा होंति अहियकमा ॥३८१॥

चटतृतीयावरबंधं, पतन्नामगोत्रावरस्थितिबंधः ।
पतत्तृतीयस्य च अवरं, त्रीणि पदानि भवंति अधिकक्रमाणि ॥३८१॥

टीका – तातै चढनेवाले कै वेदनीय का जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है, सो चौईस मुहूर्त मात्र है ।६०। तातै पडने वाले के नाम गोत्र का जघन्य स्थिति बंध विशेष अधिक है, सो बत्तीस मुहूर्त मात्र है ।६१। तातै पडनेवाले कै वेदनीय का जघन्य स्थितिबंध विशेष अधिक है, सो अठतालीस मुहूर्त मात्र है ।६२।

चडमायमाणकोहो, मासादीदुगुण अवरठिदिबंधो ।
पडणे ताणं दुगुणं, सोलसवस्साणि चलणपुरिसस्स ॥३८२॥

चटमायामानक्रोधो, मासादिद्विगुणावरस्थितिबंधः ।
पतने तेषां द्विगुणं, षोडशवर्षाणि चटनपुरुषस्य ॥३८२॥

टीका – तातै चढनेवाले कै संज्वलन माया का जघन्य स्थितिबंध संख्यात गुणा है, सो एक मास मात्र है ।६३। तातै तिस ही कै मान का जघन्य स्थितिबंध दूणा है ।६४। तातै तिस ही कै क्रोध का जघन्य स्थितिबंध दूणा है ।६५। बहुरि उतरनेवाले कै तिन ही मायादिकनि का जघन्य स्थितिबंध चढनेवाले तै दूणा है, सो माया का दोय मास, मान का च्यारि मास, क्रोध का आठ मास मात्र जानना । बहुरि चढनेवाले कै पुरुषवेद का जघन्य स्थितिबंध सोलह वर्ष मात्र है ।

पडणस्स तस्स दुगुणं, संजलणाणं तु तत्थ दुट्ठाणे ।
बत्तीसं चउसट्ठी, वस्सपमाणेण ठिदिबंधो ॥३८३॥

पतनस्य तस्य द्विगुणं, संज्वलनानां तु तत्र द्विस्थाने ।
द्वात्रिंशत् चतुः षष्टिः वर्षप्रमाणेन स्थितिबंधः ।।३८३।।

टीका – पडनेवाले कै पुरुषवेद का जघन्य स्थितिबध तातै दूणा बत्तीस वर्ष मात्र है । बहुरि तिस काल विषै सज्वलन चतुष्क का स्थितिबंध चढनेवाले कै बत्तीस वर्ष, उतरनेवाले कै चौसठि वर्ष मात्र हो है ।

चडपडणमोहपढमं, चरिमं तु तहा तिघादियादीणं ।
संखेज्जवस्सबंधो, संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ।।३८४।।

चटपतनमोहप्रथमं चरमं तु तथा त्रिघातकादीनाम् ।।
संख्येयवर्षबधः संख्येयगुणक्रमः षण्णाम् ।।३८४।।

टीका – तातै चढनेवाले कै अतरकरण करने की समाप्ति होने के अनतर समय विषै संभवता असा मोहनीय का प्रथम स्थितिबध सख्यात गुणा है, सो संख्यात हजार वर्ष मात्र है । तातै उतरनेवाले कै तिस समय को समान अवस्था विषै सभवता असा मोह का अतस्थितिबंध है, सो सख्यात गुणा है । सो भी सख्यात हजार वर्ष मात्र है । जैसे पूर्वै चढनेवाले तै उतरनेवाले कै दूणा स्थितिबध कह्या था, तैसै अब न जानना । अब यथासभव सख्यात गुणा जानना । तातै चढनेवाले कै तीन घातियानि का प्रथम स्थितिबंध संख्यात गुणा है । तातै उतरनेवाले कै तिनका तहा अ तस्थितिबध संख्यात गुणा है । तातै चढनेवाले कै सप्त नोकषायनि का उपशम काल विषै तीन अघातिया कर्मनि का प्रथम स्थितिबध सख्यात गुणा है । तातै उतरनेवाले कै तहां अंत स्थितिबध सख्यात गुणा है ।

चडपडणमोहचरिमं, पढमं तु तहा तिघादियादीणं ।
असंखेज्जवस्सबंधो, संखेज्जगुणक्कमो छण्हं ।।३८५।।

चटपतनमोहचरमं, प्रथमं तु तथा त्रिघातकादीनाम् ।
असंख्येयवर्षबंधः संख्येयगुणक्रमः षण्णाम् ।।३८५।।

टीका – तातै चढनेवाले कै मोहनीय का असख्यात वर्ष मात्र अंत स्थितिबध है, सो असंख्यात गुणा है । यहु पल्य का असख्यातवा भाग मात्र है, अतरकरण करने का प्रारंभ समय विषै सभवै है । तातै उतरनेवाले कै मोह का असख्यात वर्ष मात्र

प्रथम स्थितिबंध है, सो असंख्यात गुणा है । तातै चढनेवाले कै तीन घातियानि का असख्यात वर्ष मात्र अत स्थितिबध है, सो असंख्यात गुणा है । सो यहु स्त्रीवेद का उपशम काल का सख्यात भाग गए हो है । तातै उतरनेवाले कै तीन घातियानि का असख्यात वर्ष मात्र पहिला स्थितिबंध, सो असख्यात गुणा है । तातै चढनेवाले कै तीन घातियानि का अत स्थितिबध असंख्यात गुणा है, सो सप्त नोकषायनि का उपशम काल विषै सख्यात भाग भएं हो है । तातै उतरनेवाले कै तिन ही का प्रथम स्थितिबन्ध है, सो असख्यात गुणा है । सो यहु भी पल्य का असख्यातवा भाग मात्र है । इहा उतरनेवाले कै जे स्थितिबन्ध कहे है, ते सर्व ही चढनेवाले का तिस स्थितिबन्ध होने का काल कौ अंतर्मुहूर्त करि अप्राप्ति होइ सभवै हैं । चढनेवाले कै जो प्रथम स्थितिबन्ध होइ, उतरनेवाले कै ताके निकटवर्ती अवस्था कौ पाए अंत स्थिति बन्ध होइ, जातै चढनेवाला जिस अवस्था कौ पहलै पावै, तिस अवस्था कौ उतरनेवाला अंत विषै पावै है ।

चडणे णामदुगाणं, पढमो पलिदोवमस्स संखेज्जो ।
भागो ठिदिस्स बंधो, हेट्ठिल्लादो असंखगुणो ।।३८६।।

चटने नामद्विकयोः, प्रथमः पलितोपमस्यासंख्येयः ।
भागः स्थितेर्बंधः, अधस्तनादसंख्यगुणः ।।३८६।।

टीका – तातै चढनेवाले कै नाम गोत्र का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र भया पहला स्थितिबन्ध, सो नीचे का घातित्रय का स्थितिबन्ध तै असख्यात गुणा है ।

तीसियचउण्ह पढमो, पलिदोवमसंखभागठिदिबंधो ।
मोहस्सवि दोण्णि पदा, विसेसअहियक्कमा होंति ।।३८७।।

तीसियचतुर्णा प्रथमः, पलितोपमासंख्यभागास्थितिबंधः ।
मोहस्यापि द्वे पदे, विशेषाधिकक्रमा भवंति ।।३८७।।

टीका – तातै चढनेवाले कै तीसिय चतुष्क का पहलै स्थितिबन्ध विशेष अधिक है, सो भी पल्य के असख्यातवे भाग मात्र है, तातै चढनेवाले कै मोह का तहा चालीसिय स्थितिबध है, सो ताही का त्रिभाग मात्र विशेष करि अधिक है ।

ठिदिखंडयं तु चरिमं, बंधोसरणट्ठिदी य पल्लद्धं ।
पल्लं चडपडबादरपढमो चरिमो य ठिदिबंधो ।।३८८।।

स्थितिखंडकं तु चरमं, बंधापसरणस्थिती च पल्यार्धं ।
पल्यं चटपतद्बादरप्रथमः चरमश्च स्थितिबन्धः ॥३८८॥

टीका – तातै अंत का स्थिति खंड, जो स्थितिकांडकायाम संख्यात गुणा हैं, सो ज्ञानावरणादि कर्मनि का तो सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषै अर मोह का अंतर करण काल विषै संभवै है, तातै पल्य मात्र स्थिति की उत्पत्ति के निमित्त पल्य का संख्यातवां भाग पर्यंत स्थितिबंधापसरणनि करि उपजे पल्य के संख्यातवे भाग प्रमाण स्थितिबंध, ते सर्व ही क्रम तै संख्यात गुणे है । बहुरि पल्य का संख्यातवा भाग तै पल्य का प्रमाण संख्यात गुणा है, तातै चढनेवाले कै अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै संभवता स्थितिबंध सो संख्यात गुणा है, सो पृथक्त्व लक्ष सागर प्रमाण है । तातै उतरनेवाले कै अनिवृत्तिकरण का अंत समय विषै संभवता स्थितिबंध संख्यात गुणा है ।

चडपडअपुव्वपढमो, चरिमो ठिदिबंधओ य पडणस्से ।
तच्चरिमं ठिदिसंतं, संखेज्जगुणक्कमा अट्ठ ॥३८९॥

चटपतदपूर्वप्रथमः, चरमस्थितिबंधकश्च पतनस्य ।
तच्चरमं स्थितिसत्त्वं, सख्येयगुणक्रमं अष्ट ॥३८९॥

टीका – तातै चढनेवाले कै अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थितिबंध संख्यात गुणा है । सो अंत कोडाकोडी सागर मात्र है । तातै पडनेवाला अपूर्वकरण का अंत समय विषै स्थितिबंध संख्यात गुणा है । सो दूणा अथवा यथासंभव संख्यात गुणा जानना । तातै पडनेवाले कै अपूर्वकरण का अंत समय विषै स्थिति सत्त्व संख्यात गुणा है ।

तप्पढमट्ठिदिसत्तं, पडिवडअणियट्ठिचरिमठिदिसत्तं ।
अहियकमा चलबादरपढमट्ठिदिसत्तयं तु संखगुणं ॥३९०॥

तत्प्रथमस्थितिसत्त्वं प्रतिपतदनिवृत्तिचरमस्थितिसत्त्वं ।
अधिकक्रमं चटबादरप्रथमस्थितिसत्त्वकं तु संख्यगुणम् ॥३९०॥

टीका – तातै पडनेवाले कै अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थिति सत्त्व है, सो समय घाटि अपूर्वकरण का काल मात्र विशेष करि अधिक है, जातै उतरने विषै प्रथम समय स्थिति सत्त्व तै अंत समय विषै स्थिति सत्त्व की हीनता तितने समय मात्र

ही हो है । तातै पडनेवाले अनिवृत्ति करण का अंत समय विषै स्थिति सत्त्व एक समय करि अधिक है, तातै चढनेवाला अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै स्थिति सत्त्व सख्यात गुणा है, जातै याकौ अब भी अनिवृत्तिकरण के परिणामनि करि स्थिति सत्त्व का खड न सभवै है ।

चडमाणअपुव्वस्स य, चरिमट्ठिदिसत्तयं विसेसहियं ।
तस्सेव य पढमठिदिसत्तं संखेज्जसंगुणियं ॥३९१॥

चटदपूर्वस्य च, चरमस्थितिसत्त्वकं विशेषाधिकम् ।
तस्यैव च प्रथमस्थितिसत्त्वं संख्येयगुणितम् ॥३९१॥

टीका – तातै चढनेवाले के अपूर्वकरण का अत समय विषै स्थिति सत्त्व विशेष अधिक है, जातै तिसके अत काडक की अत फालिका प्रमाण पल्य के सख्यातवे भाग मात्र सभवै है, सो इतना अधिक जानना। तातै चढनेवाले के अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थिति सत्व सख्यात गुणा है । सो अत कोडाकोडी प्रमाण है । जातै अपूर्व करण का काल विषै सख्यात हजार स्थिति कांडक हो है, तिनकरि ताका प्रथम समय विषै जो स्थिति पाइए ताका सख्यात बहुभाग मात्र स्थिति का घात हो है । ताका अत समय विषै एक भाग मात्र स्थिति रहै है । अर तिस प्रथम समयवर्ती स्थिति सत्व तै पहलै स्थिति काडक का घात है नाही तातै ताका चरम समयवर्ती स्थिति सत्व तैं प्रथम समयवर्ती स्थिति सत्व सख्यात गुणा जानना । असै अल्प बहुत्व जानना । या प्रकार चारित्र मोह के उपशमावने का विधान समाप्त भया ।

दोहा

कर्म शांति के अर्थि जिन, नमौ शाति करतार ।
प्रशमित दुरित समूह सब, महावीर जिनसार ॥१॥

॥ इति लब्धिसारः समाप्तः ॥

अथ क्षपणासार

इहा पर्यंत गाथा सूत्रनि का व्याख्यान संस्कृत टीका के अनुसारि किया, जातै इहा पर्यत गाथानि ही की टीकाकरि कै सस्कृत टीकाकारने ग्रथ समाप्त कीना है। बहुरि इहातै आगे गाथा सूत्र है तिनिविषै क्षायिक चारित्र का वर्णन है, तिनकी सस्कृत टीका तो अवलोकने मे आई नाही, तातै तिनका व्याख्यान अपनी बद्धि अनुसारि इहा कीजिये है।

बहुरि भोज नामा राजा का बाहुबलि नामा मत्री कै ज्ञान उपजावने के अर्थि श्रीमाधवचद्र नामा आचार्य करि विरचित एक क्षपणासार ग्रथ है, तिसविषै क्षायिक चारित्र ही का विधान वर्णन है, सो इहा तिस क्षपणासार का अनुसारि लीए भी व्याख्यान करिए है। तहा प्रथम मगलाचरण करिए है-

श्रीवर धर्म जलधि के नंदन रत्नाकरवर्धक सुखकार।
लोक प्रकाशक अतुल विमल प्रभु संतनिकर सेवित गुणधार ।।
माधववरबलभद्रनमितपदपद्मयुगल धारें विस्तार।
नेमिचंद्र जिन नेमिचंद्र गुरु चंद्रसमान नमहुं सो सार ।।१।।

याके नेमिनाथ तीर्थकर वा नेमिचद्र आचार्य वा चद्रमा का विशेषण करने करि तोन अर्थ है। तहा 'माधववरबलभद्रनमितपदपद्मयुगल' का अर्थ – नेमिचद्र जिन-की पक्ष विषै तो नारायण बलभद्र करि अर नेमिचद्र गुरु की पक्ष विषै माधवचंद्र आचार्य अर कल्याण रूप बाहुबलि मत्री, तिनकरि अर चद्रमा की पक्ष विषै वसतराज उत्कृष्ट सप्तसेना विषै प्रधान, ताकरि नमित है चरण युगल जिनके असे है। अन्य अर्थ सुगम है।।

अब इहा गाथा सूत्र कहिए है-

तिकरणमुभयोसरणं, कमकरणं खवणदेसमंतरयं।
संकम अपुव्वफड्ढयाकिट्टीकरणाणुभवण खमणाये ।।३९२।।

त्रिकरणमुभयापसरणं, क्रमकरणं क्षपण देशमंतरकम्।
संक्रमं अपूर्वस्पर्धककृष्टिकरणानुभवनानि क्षपणायाम् ।।३९२।।

टीका – अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, ए तीन करण अर बधापसरण, सत्वापसरण ए दोय अपसरण, बहुरि क्रमकरण, अष्टकषाय, सोलह प्रकृतिनि की क्षपणा, देश घातिकरण, अतरकरण, सक्रमण, अपूर्व स्पर्धककरण, कृष्टिकरण, कृष्टिअनुभवन ऐसै ए चारित्र मोह की क्षपणा विषै अधिकार जानने। तहा पीछै ज्ञानावरणादि कर्मनि का क्षपणा अधिकार अर योग निरोध अधिकार का वर्णन होगा।

तहा प्रथम अध करण का वर्णन करिए है– पहलै पूर्वोक्त प्रकार तीन करण विधान तै सात प्रकृतिनि का नाश करि क्षायिक सम्यग्दृष्टि होइ, मोहनी की इकईस प्रकृतिनि का सत्वसहित होइ, सो जघन्य तो अतर्मुहूर्त अर उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त सहित आठ वर्ष करि हीन दोय कोटी पूर्व, तिनिकरि अधिक तेतीस सागर काल क्षायिक सम्यग्दृष्टि ससार मे रहै, तहा किसी काल विषै चारित्र मोह की क्षपणा कौं योग्य जे विशुद्ध परिणाम, तिनकरि सहित होइ प्रमत्त तै अप्रमत्त विषै, अप्रमत्त तै प्रमत्त विषै हजारो बार गमनागमन करि महामुनि चक्रवर्ती है, सो यथाख्यात चारित्र रूप एकछत्र राज्य करने के अर्थि क्षपक श्रेणीरूप दिग्विजय करने के सन्मुख होत सता प्रथम सातिशय अप्रमत्त गुणस्थान विषै अध करणरूप प्रस्थान करै है। ताका विशेष जानने कौ इहा प्रश्नोत्तर हो है —

कसायखवणो ठाणे, परिणामो केरिसो हवे।
कसाय उपजोगो को, लेस्सा वेदा य को हवे ॥१॥

काणि वा पुव्वबद्धाणि, को वा अंसेण बंधदि।
कदियावलि पविसंति, कदिण्हं वा पवेसगो ॥२॥

केट्टिय सेज्झीयदे, पुव्वं बन्धेण उदयेण वा।
अंतरं वा कहि किच्चा, के के संकामगो कहि ॥३॥

केट्टिदीयाणि कम्माणि, अणुभागेसु केसु वा।
उक्कट्टिदूण सेसाणि, कं ठाणं पडिवज्जदि ॥४॥

इनि च्यारि सूत्रनि करि प्रश्न कीए।

तहां प्रश्न – जो चारित्र मोह की क्षपणा का प्रारभक जीव कै परिणाम कैसा होइ ?

ताका उत्तर – अति विशुद्ध होइ ।

बहुरि प्रश्न – योग कैसा होइ ?

ताका उत्तर – च्यारि मनो योगनि विषै कोई एक वा च्यारि वचन योगनि विषै कोई एक वा सात काय योगनि विषै औदारिक काय योग होइ ।

बहुरि प्रश्न – कषाय कैसा होइ ?

ताका उत्तर – च्यारि सज्वलन विषै कोई एक होइ, सो भी हीयमान होइ वृद्धिरूप न होइ ।

बहुरि प्रश्न – उपयोग कैसा होइ ?

ताका उत्तर – बहुत मुनिनि कै प्रसिद्ध उपदेश करि तो श्रुतज्ञान ही उपयोग है। दर्शन उपयोग नाही है । अन्य आचार्यनि के मत करि मति, श्रुति ज्ञान विषै एक, चक्षु वा अचक्षु दर्शन विषै एक उपयोग है ।

बहुरि प्रश्न – लेश्या कैसी हो है ?

ताका उत्तर – शुक्ल ही हो है ।

बहुरि प्रश्न – वेद कैसा हो है ?

ताका उत्तर – भाव वेद तीनो विषै कोई एक हो है । द्रव्यवेद पुरुषवेद ही है ।

बहुरि प्रश्न – पूर्वबद्ध कर्म है, ते सत्त्व रूप कैसे हैं ?

ताका उत्तर – सात मोहनी अर नरक, तिर्यंच, देव आयु, इन दश बिना सर्व प्रकृतिनि का सत्त्व होइ, तहां आहारक, आहारकांगोपांग, तीर्थंकर ए भजनीय है । कोई के होइ कोइ कै न होइ । बहुरि स्थिति सत्त्व मनुष्यायु बिना तिन प्रकृतिनि का अंतः कोडाकोडी सागर प्रमाण है अर तिनविषै प्रशस्त प्रकृतिनि का गुड, खंड, शर्करा, अमृत रूप चतु स्थानक; अप्रशस्त प्रकृतिनि का दारु, लता वा निंब, कांजीर रूप द्वि-स्थानक अनुभागसत्त्व है । अर तिनका प्रदेशसत्त्व अजघन्य वा अनुत्कृष्ट संभवै है। जघन्य उत्कृष्ट कर्म परमाणूनि का समूह इहा न पाइए है ।

बहुरि प्रश्न – जो नवीन कर्म किसा अंशकरि बंधै है ?

ताका उत्तर – ज्ञानावरण पांच, दर्शनावरण की स्त्यानगृद्धित्रिक बिना छह, साता वेदनीय, संज्वलन चतुष्क, पुरुषवेद, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, उच्च गोत्र, अंत-

राय पाच, ऐसै सत्ताईस अर नाम कर्म विषै देवगति, पचेद्री जाति, वैक्रियिक, तैजस, कार्माण शरीर, समचतुरस्र सस्थान, वैक्रियिक अगोपाग, प्रशस्तवर्णादिक च्यारि, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उश्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशस्कीर्ति, निर्माण ए अठाईस वा कोई कै तीर्थकर सहित गुणतीस वा कोई कै आहारकद्विक सहित तीस वा कोई कै आहारक द्विक, तीर्थकर सहित इकतीस प्रकृति बधै है । अर तिनि प्रकृतिनि का स्थिति सत्त्व तै सख्यात गुणा घटता अत कोडाकोडी सागर प्रमाण स्थितिबंध हो है । अर तिनिविषै अप्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय अनत गुणा घटता क्रम लीएं द्विस्थानक अर प्रशस्त प्रकृतिनि का समय समय अनत गुणा बधता क्रम लीए चतु.-स्थानक अनुभाग बध हो है । अर तिनिका अजघन्य अनुत्कृष्ट प्रदेशबध हो है । इहां जघन्य वा उत्कृष्ट समयप्रबद्ध नाही बधै है ।

तहां विशेष – जो प्रचला, निद्रा हास्य, रति, भय, जुगुप्सा, देवगति, देवानुपूर्वी, वैक्रियिक द्विक, आहारक द्विक, प्रथम संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभग, सुस्वर, आदेय, तीर्थंकर इनि प्रकृतिनि का किसी प्रकार करि उत्कृष्ट प्रदेश बंध भी हो है ।

बहुरि प्रश्न – उदयावली प्रति कर्म कैसे प्रवेश करै है ?

ताका उत्तर – मूल प्रकृति तौ सर्व उदय रूप ही होइ खिरै है, उत्तर प्रकृति कोई उदय रूप होइ निर्जरै है, कोई बिना ही उदय दिये निर्जरै है ।

बहुरि प्रश्न – केते कर्म उदीरणा रूप होइ उदयावली प्रति प्रवेश करै हैं ?

ताका उत्तर – साता वेदनीय का अर मनुष्यायु बिना स्वमुखोदयी सर्व ही कर्म उदयावली विषै प्रवेश करै हैं, उदीरणारूप हो है ।

बहुरि प्रश्न – पूर्वै कौन कर्म उदय अर बंध करि विनशै है ?

ताका उत्तर – स्त्यानगृद्धि-त्रिक, असाता वेदनीय, मिथ्यात्व, कषाय बारह, अरति, शोक, स्त्री नपुसकवेद, आयु चारि, परावर्त अशुभ नाम की गुणतीस, मनुष्य गति, औदारिक शरीर वा अगोपाग वज्रवृषभ नाराच, मनुष्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, नीच गोत्र इतनी प्रकृतिनि की बध की व्युच्छित्ति पहलै भई है । इहां नरक तिर्यच गति, एकेद्रियादि च्यारि, सस्थान पाच, सहनन पाच, नरकतिर्यचानुपूर्वी, अप्रशस्त विहायोगति, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग,

दु स्वर, अनादेय, अयशस्कीर्ति ए गुणतीस प्रकृति परावर्त्त अशुभनाम कर्म की जाननी ।

बहुरि स्त्यानगृद्धि-त्रिक, दर्शन मोह ३, कषाय बारह, नरक तिर्यंच देव आयु, नरक तिर्यंच देव गति वा आनुपूर्वी ६, एकेंद्रियादि जाति च्यारि, वैक्रियिक, आहारक शरीर वा अगोपाग ४, वज्रवृषभ नाराच बिना सहनन पाच, मनुष्यानुपूर्वी, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, दुर्भग, अनादेय, अयशस्कीर्ति, तीर्थंकर, नीचगोत्र, इनके उदय की व्युच्छित्ति पहलै भई है, अवशेषनि का इहा उदय पाईए है ।

बहुरि प्रश्न – अतरकरण कौं कही करिकै कौन कौन कर्मनि का कहां संक्रमण करावनेवाला हो है ?

ताका उत्तर – अनिवृत्तिकरण काल का संख्यातवां भाग रहै, अंतरकरण अर संक्रमण क्रिया कौ करै है । इस अवसर विषै नाही करै है ।

बहुरि प्रश्न – किस स्थिति विषै वर्तमान कर्म है, सो काडक घात करि कैसे स्थिति स्थान कौ प्राप्त हो है ?

भावार्थ यहु – स्थिति काडक घात का प्रश्न किया, बहुरि किसा अनुभाग विषै वर्तमान कर्म है, सो काडक घात करि अवशेष कैसा स्थान कौ प्राप्त हो है ।

भावार्थ यहु – अनुभाग कांडक घात का प्रश्न किया ।

इनि दऊनि का उत्तर यहु – जो स्थितिकांडक घात अनुभाग कांडक घात, इस अध करण विषै नाही है अपूर्वकरण विषै हो है । असा यहु चारित्र मोह की क्षपणा कौ सन्मुख भया जीव प्रथम अधःप्रवृत्तकरण करै है ।

गुणसेढी गुणसंकमठिदिरसखंडाण णत्थि पढमम्हि ।
पडिसमयमणंतगुणं, विसोहिबढ्ढीहिं वड्ढदि हु ॥३९३॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं, स्थितिरसखंडनं नास्ति प्रथमे ।
प्रतिसमयमनंतगुण, विशुद्धिवृद्धिभिः वर्धते हि ॥३९३॥

टीका – पहलै अध प्रवृत्तकरण विषै गुणश्रेणी, गुणसंक्रम स्थिति कांडक घात, अनुभाग काडक घात ए नाही संभवै हैं । सो जीव समय समय प्रति अनंत गुणा क्रम लीए विशुद्धता की वृद्धि करि वर्धमान हो है ।

सत्थाणमसत्थाणं, चउविट्ठाणं रसं च बंधदि हु।
पडिसमयमणंतेण य, गुणभजियकमं तु रसबंधे ॥३९४॥

शस्तानामशस्तानां, चतुरपि स्थानं रसं च बध्नाति हि ।
प्रतिसमयमनंतेन च, गुणभजितक्रमं तु रसबंधे ॥३९४॥

टीका – बहुरि सो समय समय प्रति प्रशस्त प्रकृतिनि का अनंत गुणा क्रम लीए चतु:स्थानक अनुभाग बंध करै है। अर अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनंतवां भाग का क्रम लीए द्विस्थानिक अनुभाग बध करै है।

पल्लस्स संखभागं, मुहुत्तअंतेण ओसरदि बंधे।
संखेज्जसहस्साणि य, अधापवत्तम्हि ओसरणा ॥३९५॥

पल्यस्य संखभागं, मुहूर्तान्तरपसरति बंधे ।
संख्येयसहस्राणि च, अधः प्रवृते अपसरणानि ॥३९५॥

टीका – पुर्व स्थितिबंध तै पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध घटाइ एक अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत समय समय समान बंध होइ, सो यहु एक स्थिति बंधापसरण भया असै संख्यात हजार स्थिति बंधापसरण अध प्रवृत्तकरण विषै हो हैं।

आदिमकरणद्धाए, पढमट्ठिबंधदो दु चरिमम्हि।
संखेज्जगुणविहीणो, ठिदिबंधो होदि णियमेण ॥३९६॥

आद्यकरणाद्धायां, प्रथमस्थितिबंधतस्तु चरमे ।
संख्येयगुणविहीन, स्थितिबंधो भवति नियमेन ॥३९६॥

टीका – असैं स्थितिबंधापसरण होने तै प्रथम अध. प्रवृत्तकरण काल विषै प्रथम समय जो स्थितिबंध हो है, तातै सख्यात गुणा घटता अंत समय विषै स्थितिबध नियम करि हो है। असै इस अध करण विषै आवश्यक हो है। जहां अन्य जीव के नीचले समयवर्ती भावनि के समान अन्य जीव कै ऊपरि समयवर्ती भाव होहि, सो अध प्रवृत्त करण असा सार्थक नाम जानना।

आगै अपूर्वकरण का वर्णन करिए है–

गुणसेढी गुणसंकम, ठिदिखंडमसत्थगाण रसखंडं ।
बिदियकरणादिसमए, अण्णं ठिदिबंधमारभई ॥३९७॥

गुणश्रेणी गुणसंक्रमं, स्थितिखंडमशस्तकानां रसखंडम् ॥
द्वितीयकरणादिसमये अन्यं स्थितिबन्धमारभते ॥३९७॥

टीका – दूसरा जो अपूर्वकरण, ताका प्रथम समय विषै गुणश्रेणी, गुण-संक्रम अर स्थिति खडन अर अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग खंडन हो है । बहुरि अधःकरण का अंत समय विषै जो स्थितिबध होता था, तातै पल्य का असख्यातवा भाग मात्र घटता और ही स्थितिबध कौ प्रारभै है, जातै इहा एक स्थितिबधापसरण होने तै इतना स्थितिबध घटाइए है ।

गुणसेढीदीहत्तं, अपुव्वचउक्कादु साहियं होदि ।
गलिदवसेसे उदयावलिबाहिरदो दु णिक्खेओ ॥३९८॥

गुणश्रेणीदीर्घत्वं, अपूर्वचतुष्कात् साधिक भवति ।
गलितावशेषे उदयावलिबाह्यतस्तु निक्षेपः ॥३९८॥

टीका – इहा गुणश्रेणी आयाम का प्रमाण अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसांपराय, क्षीणकषाय इन च्यारि गुणस्थाननि का मिलाया हुआ काल तै साधिक है । सो अधिक का प्रमाण क्षीणकषाय काल तै सख्यातवे भागमात्र है, सो उदया-वली तै बाह्य गलितावशेष रूप जो यहु गुणश्रेणी आयाम, ताविषै अपकर्षण किया द्रव्य का निक्षेपण हो है ।

पडिसमयं उक्कट्टदि, असंखगुणिदक्कमेण संचदि य ।
इदि गुणसेढीकरणं, पडिसमयमपुव्वपढमादो ॥३९९॥

प्रतिसमयं अतिकर्षति, असंख्यगुणितक्रमेण सिंचति च ।
इति गुणश्रेणीकरणं, प्रतिसमयमपूर्वप्रथमात् ॥३९९॥

टीका – प्रथम समय विषै अपकर्षण किया द्रव्य तै द्वितीयादि समयनि विषै असंख्यात गुणा क्रम लीए समय समय प्रति द्रव्य कौ अपकर्षण करै है । अर सिचति कहिए उदयावली विषै गुणश्रेणी आयाम विषै उपरितन स्थिति विषै निक्षेपण

करैं है। ग्रैसैं अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय समय समय प्रति गुणश्रेणी का करना हो है। ग्रैसैं गुणश्रेणी का स्वरूप कह्या।

पडिसमयमसंखगुणं, दव्वं संकमदि अप्पसत्थाणं।
बंधुज्झियपयडीणं, बंधंतसजादिपयडीसु ॥४००॥

प्रतिसमयमसंख्यगुणं, द्रव्यं संक्रामति अप्रशस्तानाम्,
बन्धोज्झितप्रकृतीनां, बध्यमानस्वजातिप्रकृतिषु ॥४००॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय तैं लगाय जिनिका इहां बंध न पाइए ग्रैसी जे अप्रशस्त प्रकृति, तिनिका गुण संक्रमण हो है, सो समय समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए तिनि प्रकृतिनि का द्रव्य है सो इहां, जिनिका बंध पाइए ग्रैसी जे स्वजाति प्रकृति तिन विषैं संक्रम करैं है, तद्रूप परिणमैं है। जैसैं असाता वेदनीय का द्रव्य, साता वेदनीयरूप परिणमैं है। ग्रैसे ही अन्य प्रकृतिनि का जानना।

उव्वट्टणा जहण्णा, आउलियाऊणिया तिभागेण।
एसा ठिदिसु जहण्णा, तहाणुभागेसुणंतेसु[1] ॥४०१॥

अतिस्थापना जघन्या, आवलिकोनिका त्रिभागेन।
एषा स्थितिषु जघन्या, तथानुभागेष्वनंतेषु ॥४०१॥

टीका – संक्रमण विषैं जघन्य अतिस्थापन अपना त्रिभाग करि ऊन आवली मात्र है, सो यहु ही जघन्य स्थिति है। तैसैं ही अनंत अनुभागनि विषैं भी जानना।

संकामेदुक्कट्टदि, जे अंसे ते अवट्ठिदा होंति।
आवलियं से काले, तेण परं होंति भजियव्वा[2] ॥४०२॥

संक्रामे तु उत्कृष्यंते, ये अंशास्ते अवस्थिता भवंति।
आवलिकां स्वे काले, तेन परं भवंति भजितव्याः ॥४०२॥

टीका – संक्रमण विषैं जे प्रकृतिनि के परमाणू उत्कर्षणरूप करिए है, ते अपने कालविषैं आवली पर्यंत तौ अवस्थित ही रहे। तातैं परैं भजनीय हो हैं, अवस्थित भी रहे अर स्थित्यादिक की वृद्धि हानि आदि रूप भी होइ।

---

(१) कषाय पाहुड गाथा–१५२–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २७७।
(२) कषाय पाहुड गाथा–१५३– जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २८३।

उक्कट्टदि जे अंसे, से काले ते च होंति भजियव्वा।
वड्ढीए अवठाणे, हाणीए संकमे उदए[1] ॥४०३॥

उत्कृष्यंते ये अंशाः, स्वे काले ते च भवंति भजितव्याः।
वृद्धौ अवस्थाने, हानौ संक्रमे उदये ॥४०३॥

टीका – जे प्रकृतिनि के परमाणू अपकर्षण करिए है, ते अपने काल विषै भजनीय हो है; स्थित्यादिक की वृद्धि वा अवस्थान वा हानि अर संक्रमण अर उदय इनरूप होंइ भी अर न भी होंइ, किछू नियम नाही।

एक्कं च ठिदिविसेसं तु, असंखेज्जेसु ठिदिविसेसेसु।
वट्टेदि रहस्सेदि व, तहाणुभागेसुणंतेसु[2] ॥४०४॥

एकं च स्थितिविशेषं तु, असंख्येयेषु स्थितिविशेषेषु।
वर्त्यते रहस्यते वा तथानुभागेष्वनंतेषु ॥४०४॥

टीका – एक स्थिति विशेष जो एक निषेक का द्रव्य, सो असंख्यात निषेकनि विषै वर्तै है, निक्षेपण करिए है। तैसै ही अनंत अनुभागनि विषै भी एक स्पर्धक का द्रव्य अनंत स्पर्धकनि विषै निक्षेपण करिए है, ऐसा जानना।

इन च्यारि गाथानि का अर्थ नीकै मेरे जानने मे न आया, अर क्षपणासार विषै भी इनका प्रयोजन किछू लिख्या नाही, तातै बुद्धिमान होइ सो इनका यथासंभव विशेष अर्थ जानियो।

ऐसै गुणसंक्रम का स्वरूप कह्या।

पल्लस्स संखभागं, वरं पि अवरादु संखगुणिदं तु।
पढमे अपुव्विखवगे, ठिदिखंडपमाणयं होदि[3] ॥४०५॥

पल्यस्य संख्यभागं, वरमपि अवरात् संख्यगुणितं तु।
प्रथमे अपूर्वक्षपके, स्थितिखंडप्रमाणकं भवति ॥४०५॥

---

१ कषायपाहुड गाथा–१५४– जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २८५।

२. कषायपाहुड गाथा–१५६–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २८६।

३. षट्खंडागम. धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३४४।

टीका – क्षपक अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थितिखंड कहिए स्थिति-कांडकायाम, ताका जघन्य वा उत्कृष्ट प्रमाण पल्य के संख्यातवे भाग मात्र है; तथापि जघन्य तै उत्कृष्ट संख्यात गुणा है। तहां जो जीव क्षायिक सम्यग्दृष्टि होइ उपशम श्रेणी चढि पीछै क्षपक श्रेणी चढै, ताकै तहां उपशम श्रेणी विषै बहुत स्थिति कांडक घात होने करि स्थिति सत्व स्तोक रहै है। तातै ताकै इहा स्थिति काडकायाम जघन्य हो है। बहुरि जो जीव उपशम श्रेणी चढि क्षपकश्रेणी चढै, ताकै तिसतै स्थिति सत्व सख्यात गुणा है। ताकै स्थिति काडकायाम भी सख्यात गुणा हो है, जातै स्थिति के अनुसारि कांडक घात हो है अैसै दूसरा जघन्य काडक तै दूसरा उत्कृष्ट काडक, तीसरा तै तीसरा इत्यादि सर्वत्र जघन्य काडक तै उत्कृष्ट कांडक सख्यात गुणा जानना।

आउगवज्जाणं ठिदिघादो पढमादु चरिमठिदिसंतो।
ठिदिबंधो य अपुव्वे, होदि हु संखेज्जगुणहीणो ॥४०६॥

आयुष्कवर्ज्यानां स्थितिघातः प्रथमात् चरमस्थितिसत्त्वम्।
स्थितिबन्धश्च अपूर्वे, भवति हि संख्येयगुणहीनः ॥४०६॥

टीका – आयु बिना सात कर्मनि का स्थिति काडकायाम अर स्थिति सत्व अर स्थितिबध ए तीनो अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै जो पाइए है, तिनितै ताके अंत समय विषै सख्यात गुणे घाटि हो है।

अंतोकोडाकोडी, अपुव्वपढमम्हि होदि ठिदिबंधो।
बंधादो पुण सत्तं, संखेज्जगुणं हवे तत्थ[1] ॥४०७॥

अंतः कोटीकोटिः, अपूर्वप्रथमे भवति स्थितिबन्धः।
बन्धात् पुनः सत्त्वं, संख्येयगुणं भवेत् तत्र ॥४०७॥

टीका – अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थितिबध अत कोडाकोडी प्रमाण है सो पृथक्त्व लक्ष कोडि सागर प्रमाण है। बहुरि यहां स्थिति सत्त्व आलाप करि तितना ही है, तथापि स्थितिबध तै सख्यात गुणा है।

अैसै स्थिति काडक का स्वरूप कह्या।

---

१. षट्खडागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३४५।

एक्केक्कट्ठिदिखंडयणिवडणठिदिओसरणकाले ।
संखेज्जसहस्साणि य, णिवडंति रसस्स खंडाणि ।।४०८।।

एकैकस्थितिखंडकनिपतनस्थित्युत्करणकाले ।
संख्येयसहस्राणि च निपतंति रसस्य खंडानि ।।४०८।।

टीका – एक एक स्थितिखंडनिपतन कहिए स्थिति कांडकघात, जाविषै होइ अैसा स्थितिकांडकोत्करण काल, तीहिं विषै संख्यात हजार अनुभाग काडकनि का निपतन कहिए घात हो है ।

भावार्थ यहु – अपूर्वकरण का प्रथम समय विषै स्थिति काडक का अर अनुभाग कांडक का युगपत् प्रारभ भया । तहां यथायोग्य काल गए प्रथम अनुभाग कांडक पूरा भया अर स्थिति काडक सोई है । बहुरि अनुभाग कांडक दूसरा भया, बहुरि तीसरा भया अैसै संख्यात हजार अनुभाग कांडक भए प्रथम स्थिति काडक का काल पूर्ण हो है । अैसै द्वितीयादि स्थिति कांडक कालनि विषै क्रम जानना ।

असुहाणं पयडीणं, अणंतभागा रसस्स खंडाणि ।
सुहपयडीणं णियमा, णत्थि त्ति रसस्स खंडाणि[1] ।।४०९।।

अशुभानां प्रकृतीनां, अनंतभागा रसस्य खंडानि ।
शुभप्रकृतीनां नियमात्, नास्तीति रसस्य खंडानि ।।४०९।।

टीका – अशुभ प्रकृतिनि का अनत बहुभागमात्र अनुभाग कांडक का प्रमाण है । पूर्वै जो अनुभाग था, ताकौ अनत का भाग दीए, तहां बहुभाग मात्र प्रथम अनुभाग काडक विषै घटाइए है, अवशेष एक भागमात्र अनुभाग रहै है । बहुरि ताकौ अनत का भाग दीए तहा बहुभाग दूसरा अनुभाग कांडक विषै घटाइए है, अवशेष एक भाग अनुभाग रहै है । अैसै अत अनुभाग काडक पर्यंत क्रम जानना । या प्रकार अप्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग खड इहा हो है । बहुरि प्रशस्त प्रकृतिनि का अनुभाग खड नियम तै न हो है, जातै **विशुद्ध परिणामनि करि शुभ प्रकृतिनि के अनुभाग का घटावना संभवता नाहीं ।**

अैसै अनुभाग खड का स्वरूप कह्या ।

---

१. षट्खडागम धवला पुस्तक-६ पृष्ठ ३४५ ।

पढमे छट्ठे चरिमे, भागे दुग तीस चदुर वोछिण्णा।
बंधेण अपुव्वस्स य, से काले बादरो होदि ॥४१०॥

प्रथमे षट्के चरमे, भागे द्विकं त्रिंशत् चतस्रो व्युच्छिन्नाः।
बन्धेन अपूर्वस्य च, स्वे काले बादरो भवति ॥४१०॥

टीका – पूर्वोक्त प्रकार स्थिति बधापसरणनि करि घटिघटि सख्यात हजार स्थिति बंध भए, कहा ? सो कहिए है—

अपूर्वकरण का काल के समान सात भाग करिए, तहां प्रथम भाग का अंत समय विषै निद्रा प्रचला इनि दोऊनि के बंध की व्युच्छित्ति भई। इहां ही निद्रा प्रचला का द्रव्य है, सो गुण सक्रमण विधान करि इहा बध्यमान स्वजातीय चक्षु-अचक्षु-अवधि-केवलदर्शनावरणीय तिन विषै सक्रमण करै है। बहुरि यातै परै सख्यात हजार स्थिति बंध भएं, ताका छठा भाग का अंत समय विषै देवगति, पंचेंद्री जाति, वैक्रियिक, तैजस, आहारक, कार्माण शरीर, समचतुरस्र संस्थान, वैक्रियिक-आहारक अगोपांग २, वर्णादि च्यारि, देवानुपूर्वी, अगुरु-लघु, उपघात, परघात, उश्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, निर्माण, तीर्थंकर इन तीस प्रकृति के बध की व्युच्छित्ति हो है। बहुरि यातै सख्यात हजार स्थिति बध भए, अपूर्वकरण का अत समय विषै हास्य, रति, भय, जगुप्सा इन च्यारिनि के बध की व्युच्छित्ति हो है। अर इहां ही छह नोकषायनि के उदय की व्युच्छित्ति हो है। जहां उपरि समय सबंधी भाव सर्वदा नीचले समय संबधी भावनि के समान न होइ, सो कर्म नाश करनेवाला सार्थक नाम का धारक अपूर्वकरण जानना। याकौं समाप्त होतै ताके अनंतर समय निज काल विषै बादर कहिए अनिवृत्तिकरण हो है। ताका व्याख्यान करिए है––

अणियट्टस्स य पढमे, अण्णं ठिदिखंडपहुदिमारभई।
उवसामणा णिधत्ती, णिकाचणा तत्थ वोछिण्णा ॥४११॥

अनिवृत्तेश्च प्रथमे, अन्यं स्थितिखंडप्रभृतिमारभते।
उपशामना निधत्तिः, निकाचना तत्र व्युच्छिन्नाः ॥४११॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै और ही स्थिति खंडादिक प्रारभिए है। तहां अपूर्वकरण का अंत समयवर्ती तै अन्य ही पल्य का संख्यातवां

भाग मात्र तो स्थिति काडकायाम हो है । अर यातै पीछै अवशेष रह्या जो अनुभाग ताका अनंत बहुभाग मात्र और ही अनुभाग कांडक हो है । अर अपूर्वकरण का अंत समय सबंधी स्थिति बंध तै पल्य का सख्यातवा भागमात्र घटता और ही स्थिति बध इहा हो है । बहुरि इहां ही अप्रशस्तोपशम, निधत्ति, निकाचना, इन तीन कर-णनि की व्युच्छित्ति भई । अब सर्व ही कर्म उदय, सक्रमण, उत्कर्षण, अपकर्षण करनें कौ योग्य भए ।

बादरपढमे पढमं, ठिदिखंडं विसरिसं तु बिदियादि ।
ठिदिखंडयं समाणं, सव्वस्स समाणकालम्हि ॥४१२॥

बादरप्रथमे प्रथमं, स्थितिखंडं विसदृशं तु द्वितीयादि ।
स्थितिखंडकं समानं, सर्वस्य समानकाले ॥४१२॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै पहला स्थिति खड है, सो तो विसदृश है । नाना जीवनि कैं समान नाही । बहुरि द्वितीयादि स्थिति खड है, ते समान काल विषै सर्व जीवनि के समान है । अनिवृत्तिकरण मांडै जिनकौ समान काल भया, तिन कै परस्पर द्वितीयादि स्थिति काडक आयाम का समान प्रमाण जानना ।

पल्लस्स संखभागं, अवरं तु वरं तु संखभागहियं ।
घादादिमठिदिखंडो, सेसा सव्वस्स सरिसा हु ॥४१३ ॥

पल्यस्य संख्यभागं, अवरं तु वरं तु संख्यभागाधिकम् ।
घातादिमस्थितिखंडः शेषाः सर्वस्य सदृशा हि ॥४१३॥

टीका – सो प्रथम स्थितिखंड जघन्य तो पल्य का सख्यातवा भाग मात्र है । उत्कृष्ट ताका संख्यातवां भाग करि अधिक है । बहुरि अवशेष द्वितीयादि स्थिति खंड सर्व जीवनि कै समान हो हैं । इहां कारण कहिए है–

कोई जीव कै स्थिति सत्व स्तोक है । कोई कै तातै सख्यातवा भाग करि अधिक है तातै स्थिति सत्व के अनुसारि स्थिति कांडक भी कोई कै जघन्य, कोई कै उत्कृष्ट हो है, सो अपूर्वकरण का प्रथम समय तै लगाय अनिवृत्तिकरण विषै यावत् प्रथम खंड का घात न होइ तावत् असैं ही सभवै है । बहुरि तिस प्रथम कांडक का घात भए

पीछै समान समयनि विषै प्राप्त सर्व जीवनि कै स्थिति सत्त्व की समानता हो है, तातै द्वितीयादि स्थिति काडक आयामनि की भी समानता जाननी ।

उदधिसहस्सपुधत्तं, लक्खपुधत्तं तु बंध संतो य ।
अणियट्टीसादीए, गुणसेढी पुव्वपरिसेसा ।। ४१४ ।।

उदधिसहस्रपृथक्त्वं, लक्षपृथक्त्वं तु बन्धः सत्त्वं च ।
अनिवृत्तेरादौ, गुणश्रेणी पूर्वपरिशेषा ।। ४१४ ।।

टीका – अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय विषै पूर्वै स्थितिबध अंतः कोडाकोडि सागर प्रमाण था सो अपूर्वकरण विषै भए सख्यात हजार स्थिति बंधापसरण, तिनकरि घटता होइ पृथक्त्व हजार सागर प्रमाण स्थितिबध भया । बहुरि पूर्वै स्थितिसत्व अत कोडाकोडि सागर प्रमाण था, सो अपूर्वकरण विषै भए सख्यात हजार स्थिति काडक घात, तिनकरि घटता होइ पृथक्त्व लक्षसागर प्रमाण स्थिति सत्व भया । बहुरि गुणश्रेणी आयाम इहां अपूर्वकरण काल व्यतीत भए पीछै जो अवशेष रह्या, सो इहां जानना । समय समय प्रति असख्यात गुणा क्रम लीए पूर्ववत् गुणश्रेणी अर गुणसक्रम वर्तै है ।

आगे स्थिति बधापसरण का क्रम कहिए है –

ठिदिबंधसहस्सगदे, संखेज्जा बादरो गदा भागा ।
तत्थासण्णिस्स ट्ठिदिसरिसं ठिदिबंधणं होदि ।।४१५।।

स्थितिबन्धसहस्रगते, संख्येया बादरो गता भागाः ।
तत्र संज्ञिनः स्थितिसदृशं स्थितिबन्धनं भवति ।।४१५।।

टीका – ऐसे प्रथम समय विषै कह्या अनुक्रम लीए एक स्थिति बधापसरण करि स्थितिबध घटने तै एक स्थिति बध होइ, ऐसे सख्यात हजार स्थितिबध भएं अनिवृत्तिकरण के काल का सख्यात भागनि विषै बहुभाग व्यतीत भए, एक भाग अवशेष रह्या, तहा असज्ञी पचेद्री समान स्थिति बध हो है, सो हजार सागर के चारि सातवा भाग मात्र मोह का, तीन सातवा भाग मात्र तीसीयनि का, दोय सातवा भाग मात्र बीसीयनि का स्थितिबध हो है । चालीस, तीस, बीस, कोडाकोडी सागर स्थिति की अपेक्षा चारित्र मोह का नाम चालीसीय अर ज्ञानावरणादि च्यारि का नाम तीसीय, नाम -गोत्र का नाम बीसीय जानना ।

ठिदिबंधसहस्सगदे, पत्तेयं चदुरतियविएइंदी ।
ठिदिबंधसमं होदि हु, ठिदिबंधमणुक्कमेणेव ॥४१६॥

स्थितिबन्ध सहस्रगते, प्रत्येकं चतुस्त्रिद्विएकेंद्री ।
स्थितिबन्धसमं भवति हि स्थितिबंधमनुक्रमेणैव ॥४१६॥

टीका – पूर्वोक्त क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबंध प्रत्येक भए अनुक्रम तै चौंद्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्री समान स्थितिबंध हो है । तहा चौंद्री समान तौ सौ सागर का अर तेंद्री समान पचास सागर का, बेंद्री समान पचीस सागर का, एकेंद्री समान एक सागर का च्यारि सातवा भाग मात्र तौ मोह का, तीन सातवां भाग मात्र तीसीयनि का, दोय सातवा भाग मात्र वीसीयनि का स्थितिबंध हो है । तहा एकेंद्री, बेंद्री, तेंद्री, चौंद्री, असज्ञी कै सत्तर कोडाकोडी उत्कृष्ट स्थिति का धारक जो मिथ्यात्व ताका क्रम तै एक, पचीस, पचास, सौ, हजार सागर का स्थितिबंध होइ तौ चालीस, तीस, बीस, कोडाकोडी, उत्कृष्ट स्थिति का धारक जो मोह अर ज्ञानावरणादि अर नाम, गोत्र तिनका केता बंध होइ? असैं त्रैराशिक कीए पूर्वोक्त स्थिति बंध का प्रमाण आवै है । असैं ही त्रैराशिक का क्रम आगै भी जानना ।

एइंदियट्ठिदीदो, संखसहस्से गदे हु ठिदिबंधे ।
पल्लेकदिवड्ढदुगं, ठिदिबंधो वीसियतियाणं ॥४१७॥

एकेंद्रियस्थितितः, संख्यसहस्रे गते हि स्थितिबंधे ।
पल्यैकद्व्यर्धद्विकं, स्थितिबंधः वीसियत्रिकाणाम् ॥४१७॥

टीका – एकेंद्रिय समान स्थितिबंध तै परै संख्यात हजार स्थितिबंध गए, वीसीयनि का एक पल्य, तीसीयनि का ड्योढ पल्य, मोह का दोय पल्य मात्र स्थिति बंध हो है ।

तक्काले ठिदिसंत्तं, लक्खपुधत्तं तु होदि उवहीणं ।
बंधोसरणा बंधो, ठिदिखंडं संतमोसरदि ॥४१८॥

तत्काले स्थितिसत्त्वं, लक्षपृथक्त्वं तु भवति उदधीनाम् ।
बंधापसरणं बंधः स्थितिखंडं सत्त्वमपसरति ॥४१८॥

टीका – तिस काल विषै कर्मनि का स्थिति सत्व पृथक्त्व लक्षसागर प्रमाण हो है, सो अनिवृत्तिकरण का प्रथम समय सम्बन्धी स्थितिबंध तैं सख्यात गुणा घाटि जानना ।

बहुरि सर्वत्र असा जानना – स्थिति बंधापसरणनि करि स्थितिबंध घटै है अर स्थितिकांडकनि करि स्थिति सत्व घटै है ।

पल्लस्स संखभागं, संखगुणूणं असंखगुणहीणं ।
बंधोसरणे पल्लं, पल्लासंखं असंखवस्सं ति ॥४१६॥

पल्यस्य संख्यभागं, संख्यगुणोनमसंख्यगुणहीनम् ।
बंधापसरणे पल्यं पल्यासंख्यं असंख्यवर्षमिति ॥४१६॥

टीका – पल्य का संख्यातवा भाग अर पूर्व बंध तैं सख्यात गुणा घटता अर असख्यात गुणा घटता प्रमाण लीए स्थितिबंधापसरणनि करि पल्यमात्र अर पल्य-का असख्यातवां भाग मात्र अर असंख्यात वर्ष मात्र स्थिति बंध हो है ।

भावार्थ – पल्य मात्र स्थितिबंध होने पर्यंत तौ पल्य का संख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंधापसरण जानना । तहां पूर्व स्थिति बंध तैं अनंतरि स्थितिबंध किछू विशेष घटता हो है । बहुरि तातैं परैं पल्य का असंख्यातवां[1] भाग मात्र जो दूरापकृष्टि नामा स्थितिबंध, ताके होने पर्यंत पल्य कौ संख्यात का भाग दीएं, तहां एक भाग बिना वहुभाग मात्र स्थितिबंधापसरण जानना । तहां पूर्व स्थितिबंध तै अनंतर स्थितिबंध सख्यात गुणा घटता हो है । बहुरि तातैं परैं असंख्यात[2] हजार वर्ष मात्र स्थितिबंध होने पर्यंत पल्य कौं असख्यात का भाग दीएं तहां एक भाग बिना बहुभाग मात्र स्थिति-वधापसरण जानना । तहां पूर्व स्थितिबध तै अनतर स्थितिबध असंख्यात गुणा हो है । असै एक एक स्थितिवन्धापसरण विषै स्थितिबन्ध घटाए अवशेष स्थितिबन्ध रहै हैं । तहा पूर्व स्थितिवन्ध तैं अनंतर स्थितिबध किछु विशेष घटता हो है । बहुरि याही प्रकार प्रमाण लीए स्थिति काडकनि करि स्थिति सत्व कौं घटाइ पल्यादि मात्र स्थितिसत्व का होना जानना ।

एवं पल्लं जादा, वीसीया तीसिया य मोहो य ।
पल्लासंखं च कमं, बंधेण य वीसियतियाओ ॥४२०॥

---

१ अ, ब, घ, हस्तलिखित प्रतिओ मे 'संख्यात' शब्द मिलता है ।
२ " " " ।

एवं पल्यं जाते, बीसिया तिसीया च मोहश्च ।
पल्यासंख्यं च क्रमेण, बंधेन च बीसियत्रिकाः ॥४२०॥

टीका – ऐसैं वीसीयनि का पल्य मात्र स्थितिबंध भया, तहां पर्यंत तौ वीसीयनि के तैं ड्योढा तीसीयनि का अर दूणा मोह का स्थितिबध है । ऐसा ही क्रम जानना ।

बहुरि ताके अनंतरि एक स्थितिबंधापसरण होने करि वीसीयनि का तौ स्थितिबध सख्यात गुणा घटता भया । पल्य कौ संख्यात का भाग दीए तहां बहुभाग घटाएं एक भाग मात्र स्थितिबध रह्या । बहुरि अन्य कर्मनि का पल्यमात्र स्थितिबंध न भया है, तातैं पूर्व बध तैं पल्य का सख्यातवां भाग मात्र विशेषकरि हीन स्थितिबंध भया । तहा वीसीयनि का स्तोक स्थितिबध है । तातैं तीसीयनि का संख्यात गुणा है । जातैं इहा वीसीयनि का तौ पल्य के सख्यातवे भाग भया अर तीसीयनि का साधिक पल्य मात्र है ।

बहुरि तीसीयनि के तैं मोह का विशेष अधिक है । ऐसैं अल्पबहुत्व हुआ । इस क्रम करि सख्यात हजार स्थितिबध भए तीसीयनि का पल्य मात्र स्थितिबध भया । तहां तातैं तीसरा भाग अधिक मोह का स्थितिबंध हो है, जातैं तीसीयनि का पल्य मात्र स्थितिबध होइ तौ चालीसीयनि का केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि त्रिभाग अधिक पल्य मात्र मोह का स्थितिबध आवै है ।

बहुरि याके अनतरि तीसीयनि का पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र एक स्थितिबधापसरण करि पूर्व स्थितिबध तैं सख्यात गुणा घटता स्थितिबध हो है । तहा नाम गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का सख्यात गुणा, तातैं मोह का सख्यात गुणा स्थितिबध हो है । इहा वा आगै अल्पबहुत्व यथासम्भव स्थितिबधापसरण होने तैं सभवै है, सो विचारें प्रगट भासै है ।

बहुरि इस अनुक्रम तैं सख्यात हजार स्थितिबध भए, मोह का पल्य मात्र स्थितिबध हो है तहां अवशेष छह कर्मनि का स्थितिबध पल्य के सख्यातवे भाग मात्र हो है । ऐसैं वीसीय, तीसीय मोह का पल्य मात्र स्थितिबध होने का क्रम जानना । बहुरि ताके अनंतरि मोह का पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र एक स्थितिबधापसरण भया तब सातौ ही कर्मनि का स्थितिबध पल्य के सख्यातवे भाग मात्र भया । तहा

नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का संख्यात गुणा तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थितिबध जानना ।

बहुरि ऐसैं अनुक्रम करि संख्यात हजार स्थितिबध भएं, नाम गोत्र का दूरापकृष्टि नामा पल्य का संख्यातवा भाग मात्र स्थितिबंध हो है ।

बहुरि ताकै अनंतरि पल्य का असंख्यात बहुभाग मात्र एक स्थितिबंधापसरण होने तैं नाम-गोत्र का पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र स्थितिबंध हो है । तहां अन्य कर्मनि का पल्य कैं सख्यातवे भाग मात्र ही स्थितिबध है, जातैं इनकै दूरापकृष्टि का उलघन होने तैं स्थितिबधापसरण पल्य के सख्यात बहुभाग मात्र ही है । तहां नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का असख्यात गुणा, तातैं मोह का संख्यात गुणा स्थितिबध जानना । बहुरि इस क्रम तैं संख्यात हजार स्थितिबंध भए तीसीयनि का स्थितिबध दूरापकृष्टि कौ उलघि पल्य के असख्यातवे भाग मात्र भया । तहां नाम-गोत्र का स्तोक, तातैं तीसीयनि का असंख्यात गुणा, तातैं मोह का असंख्यात गुणा स्थितिबंध है । बहुरि इस क्रम लीएं संख्यात हजार स्थितिबध भएं मोह का भी पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थितिबंध भया । तहां सर्व ही कर्मनि का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र स्थितिबध हो है । ऐसैं वीसीय, तीसीय, चालीसीयनि का पल्य के असख्यातवे भाग मात्र स्थितिबध क्रमतैं हो है ।

उदधिसहस्सपुधत्तं, अब्भंतरदो दु सदसहस्सस्स ।
तक्काले ठिदिसंतो, आउगवज्जाण कम्माणं ॥४२१॥

उदधिसहस्रपृथक्त्वं, अभ्यंतरतस्तु शतसहस्रस्य ।
तत्काले स्थितिसत्त्वं आयुर्वर्जितानां कर्मणाम् ॥४२१॥

टीका - तिस मोहनीय का पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थितिबंध होने के काल विषै आयु बिना अन्य कर्मनि का स्थिति सत्व पृथक्त्व हजार सागर प्रमाण हो है, सो पृथक्त्व हजार शब्द करि इहा लक्ष के माही यथासम्भव प्रमाण जानना । पूर्वैं पृथक्त्व लक्ष सागर का स्थितिसत्व था, सो काडक घातनि करि इहा इतना रह्या है ।

मोहगपल्लासंखट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु ।
मोहो तीसिय हेट्ठा, असंखगुणहीणयं होदि ॥४२२॥

मोहगपल्यासंख्यस्थितिबंधसहस्रकेष्वतीतेषु ।
मोहः तीसियं अधस्तना, असंख्यगुणहीनकं भवति ।।४२२।।

टीका – मोह का पल्य के असंख्यातवे भाग मात्र स्थितिबध भया, तिस काल विषै नाम-गोत्र का स्तोक, तातै तीसीयनि का असख्यात गुणा, तातै मोह का असख्यात गुणा स्थितिबध हो है । बहुरि असा अल्पबहुत्व लीए सख्यात हजार स्थिति बंध भए, नाम-गोत्र का स्तोक, तातै मोह का असख्यात गुणा, तातै तीसीयनि का असख्यात गुणा असे अन्य प्रकार स्थितिबध हो है । इहा विशुद्धता के निमित्त तै तीसीयनि के नीचै अति अप्रशस्त जो मोह, ताका स्थितिबध असख्यात गुणा घटता भया ।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे बीसियाण हेट्ठादु ।
एक्कसराहे मोहे, असंखगुणहीणयं होदि ।।४२३।।

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वीसियानां अधस्तात् ।
एकसमये मोहोऽसंख्यगुणहीनको भवति ।।४२३।।

टीका – बहुरि असा अल्पबहुत्व का क्रम लीएं, तितने ही सख्यात हजार स्थितिबंध भएं एक ही बार अन्य प्रकार स्थितिबध भया । तहा मोह का स्तोक, तातै नाम-गोत्र का असख्यात गुणा, तातै च्यारचों तीसीयनि का असंख्यात गुणा स्थितिबध हो है । इहा विशुद्धता के बल तै अति अप्रशस्त मोह का स्थितिबध बीसीयनि के नीचै असख्यात गुणा घटता भया ।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे वेदणीयहेट्ठा दु ।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति ।।४२४।।

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वेदनीयाधस्तात् तु ।
तीसियघातित्रिका, असख्यगुणहीनका भवंति ।।४२४।।

टीका – बहुरि असा क्रम लीए तितने ही सख्यात हजार स्थितिबध व्यतीत भए और ही प्रकार स्थितिबध भया । तहा मोह का स्तोक, तातै नाम गोत्र का असख्यात गुणा तातै, तीन घातियानि का असंख्यात गुणा तातै वेदनीय का असख्यात गुणा स्थितिबध हो है । इहा विशुद्धता तै तीसीयनि विषै भी वेदनीय तै नीचै अप्रशस्त तीन घातिया कर्मनि का असख्यात गुणा घटता स्थितिबध भया ।

तेत्तियमेत्ते बंधे, समतीदे वीसियाण हेट्ठा दु ।
तीसियघादितियाओ, असंखगुणहीणया होंति ।।४२५।।

तावन्मात्रे बंधे, समतीते वीसियानामधस्तात् तु ।
तीसियघातित्रिका, असंख्यगुणहीनका भवति ।।४२५।।

टीका – बहुरि असा क्रम लीए सख्यात हजार स्थितिबध व्यतीत भए, तहा अन्त स्थितिबध तै अन्य प्रकार स्थितिबध भया । तहां मोह का स्तोक, तातै तीन घातियानि का असख्यात गुणा, तातै नाम गोत्र का असख्यात गुणा, तातै वेदनीय का साधिक स्थितिबध हो है । इहा विशुद्धता के बल तै बीसीयनि के नीचै अति अप्रशस्त तीन घातिया कर्मनि का असख्यात गुणा घटता स्थितिबध हो है ।

तक्काले वेयणियं, णामागोदाउ साहियं होदि ।
इदिमो हतीसवीसिय, वेयणियाणं कमो बंधे ।।४२६।।

तत्काले वेदनीय, नामगोत्रात् साधिकं भवति ।
इति मोहतीसियवीसिय, वेदनीयानां क्रमो बंधे ।।४२६।।

टीका – तिस काल विषै वेदनीय का स्थिति बध नाम-गोत्र के स्थितिबध तै साधिक है । ताका आधा प्रमाण करि अधिक हो है; जातै वीसीयनि का स्थितिबध तै तीसीयनि का स्थितिबध ड्योढ गुणा त्रैराशिक करि सिद्ध हो है । असै मोह, तीसीय, वीसीय, वेदनीय का क्रम तै बध भया, सोई क्रमकरण जानना । नाम-गोत्र तै वेदनीय का ड्योढा स्थितिबध रूप क्रम लीए अल्पबहुत्व होना, सोई क्रमकरण कहिए है ।

आगे स्थिति सत्त्वापसरण कहिए है—

बंधे मोहादिकमे, संजादे तेत्तियेहिं बंधेहिं ।
ठिदिसंतमसण्णिसमं, मोहादिकमं तहा संते ।।४२७।।

बंधे मोहादिक्रमे, सजाते तावद्भिर्बंधैः ।
स्थितिसत्वमसंज्ञिसमं मोहादिक्रमं तथा सत्वे ।।४२७।।

टीका – बहुरि मोहादि का क्रम लीए जो क्रमकरण रूप बध भया, तातै परै इस ही क्रम लीए तितने ही सख्यात हजार स्थितिबध भए असज्ञी पचेंद्री समान

स्थिति सत्व हो है । बहुरि तातै परै जैसै मोहादिक का क्रमकरण पर्यंत स्थितिबंध का व्याख्यान कीया, तैसै ही स्थिति सत्व का होना अनुक्रम तै जानना । तहां पल्य स्थिति पर्यंत पल्य का सख्यातवा भाग मात्र, तातै दूरापकृष्टि पर्यंत पल्य का सख्यात बहुभाग मात्र, तातै संख्यात हजार वर्ष स्थिति पर्यंत पल्य का असख्यात बहुभाग मात्र आयाम लीए जे स्थितिबधापसरण, तिनकरि स्थितिबध का घटना कह्या था, तैसे इहां तितने आयाम लीए स्थितिकांडकनि करि स्थिति सत्व का घटना हो है । बहुरि तहां सख्यात हजार स्थितिबध का व्यतीत होना कह्या, तैसे इहा भी कहिए वा तहा तितने स्थिति काडकनि का व्यतीत होना कहिए, जातै स्थितिबधापसरण का अर स्थितिकाडकोत्करण का काल समान है । बहुरि तहा स्थितिबध जहां कह्या था, इहा स्थिति सत्व तहां कहना । बहुरि अल्पबहुत्व त्रैराशिक आदि विशेष बधापसरणवत् ही इहां जानने । सो स्थिति सत्व का क्रम कहिए है—

प्रत्येक संख्यात हज़ार कांडक गएं क्रम तै असज्ञी पचेंद्री, चौद्री, तेंद्री, बेंद्री, एकेंद्रीनि कै स्थितिबंध के समान कर्मनि का स्थिति सत्व हजार, सौ, पचास, पचीस, एक सागर प्रमाण हो है ।

बहुरि सख्यात हजार स्थिति कांडक भएं वीसीयनि का पल्य, तीसीयनि का ड्योढ पल्य, मोह का दोय पल्य स्थिति सत्व हो है । तातै परै पूर्व सत्व का सख्यात बहुभाग मात्र एक काडक भए वीसीयनि का पल्य के सख्यात भाग मात्र स्थिति सत्व भया, तिस काल विषै वीसीयनि के तै तीसीयनि का सख्यात गुणा मोह का विशेष अधिक स्थितिसत्व भया । बहुरि इस क्रम तै सख्यात हजार स्थिति कांडक भए तीसीयनि का पल्य मात्र मोह का त्रिभाग अधिक पल्य मात्र स्थिति सत्व भया । ताके परै एक काडक भए तीसीयनि का भी पल्य के सख्यातवे भाग मात्र स्थिति सत्व भया तिस समय वीसीयनि का स्तोक, तातै तीसीयनि का सख्यात गुणा, तातै मोह का सख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । बहुरि इस क्रम लीए सख्यात हजार स्थिति काडक भए मोह का पल्य मात्र स्थिति सत्व हो है । बहुरि एक काडक भए मोह का भी पल्य के सख्यातवे भाग मात्र स्थिति सत्व हो है । तीहिं समय साती कर्मनि का स्थिति सत्व पल्य के सख्यातवे भाग मात्र भया । तहां वीसीयनि का स्तोक, तीसीयनि का सख्यात गुणा, तातै मोह का सख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । तातै परै इस क्रम लीए सख्यात हजार स्थिति कांडक भए वीसीयनि का स्थिति सत्व दूरापकृष्टि कौ उलंघि पल्य के असख्यातवे भाग मात्र भया, तिस समय वीसीयनि का स्तोक, तातै

तीसीयनि का असख्यात गुणा, तातै मोह् का सख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । तातै परै इस क्रम लीए सख्यात हजार स्थिति कांडक भए तीसीयनि का स्थिति सत्व दूरापकृष्टि कौं उलघि, पल्य के असंख्यातवे भाग मात्र भया, तब सर्व ही कर्मनि का स्थिति सत्व पल्य के असख्यातवे भाग मात्र भया । तहा वीसीयनि का स्तोक, तातै तीसीयनि का असख्यात गुणा, तातै मोह् का असख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । वहुरि इस क्रमकरि सख्यात हजार स्थिति काडक भए नाम-गोत्र का स्तोक, तातै मोह् का असंख्यात गुणा, तातै तीसीयनि का असख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । बहुरि इस क्रम लीए सख्यात हजार स्थिति काडक भएं मोह् का स्तोक, तातै वीसीयनि का असख्यात गुणा, तातै तीसीयनि का असख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । वहुरि इस क्रम लीएं सख्यात हजार स्थिति काडक भए मोह् का स्तोक, तातै वीसीयनि का असख्यात गुणा, तातै तोसीयनि का असख्यात गुणा स्थिति सत्व हो है । बहुरि इस क्रम लीए सख्यात हजार स्थिति काडक भए मोह् का स्तोक, तातै वीसियनि का असख्यात गुणा तातै तीन घातियानि का असख्यात गुणा, तातै वेदनीय का असख्यात गुणा, स्थिति सत्व हो है । वहुरि इस त्रम लीए सख्यात हजार स्थिति काडक भएं मोह् का स्तोक, तातै तीन घातियानि का असख्यात गुणा, तातै नाम गोत्र का असंख्यात गुणा, तातै वेदनीय का विशेष अधिक स्थिति सत्व हो है । अैसै अत विषै नाम गोत्र का तै वेदनीय का स्थिति सत्व साधिक भया तव मोहादि कै क्रम लीए स्थितिसत्व का क्रमकरण भया ।

तीदे बंधसहस्से, पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधे ।
तत्थ असंखेज्जाण, उदीरणा समयबद्धाणं ।।४२८।।

अतीते बंधसहस्रे, पल्यासंख्येयकं तु स्थितिबंधे ।
तत्र असंख्येयानां, उदीरणा समयबद्धानाम् ।।४२८।।

टीका – वहुरि इस क्रमकरण तै परै सख्यात हजार स्थितिवध व्यतीत भए जो पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थितिवध होइ, ताकौ होत सतै तहां असख्यात समयप्रबद्धनि की उदीरणा हो है । इहातै पहलै अपकर्षण कीया द्रव्य कौ उदयावली विषै देने के अर्थि असंख्यात लोक प्रमाण भागहार सभवै था, तहा समयप्रवद्ध के असख्यातवा भाग मात्र उदीरणा द्रव्य था, अव तहां पल्य का असख्यातवा भाग प्रमाण भागहार होने तै असख्यात समयप्रवद्ध मात्र उदीरणा द्रव्य भया ।

आगे क्षपणाधिकार का प्रारभ हो है–

ठिदिबंधसहस्सगदे, अट्ठकसायाण होदि संकमगो ।
ठिदिखंडपुधत्तेण य, तट्ठिदिसंतं तु आवलियविद्धं ।।४२९।।

स्थितिबंधसहस्रगते, अष्टकषायाणां भवति संक्रमकः ।
स्थितिखंडपृथक्त्वेन च, तत्स्थितिसत्त्वं तु आवलिकविद्धं ॥४२६॥

टीका – असख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदीरणा होने तै लगाय सख्यात हजार स्थितिकाडक व्यतीत भए अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ रूप आठ कषायनि का सक्रमक होइ है । इहा सक्रमक का अर्थ यहु–क्षपरणा का प्रारभक हो है । ए अति अप्रशस्त थे, तातै पहलै इनकी क्षपरणा सभवै है । सो इनका जो द्रव्य सो कितना एक क्षपरणा का प्रारभ का प्रथम समय विषै, कितना एक दूसरा समय विषै असैं समय समय प्रति एक एक फालि का सक्रमरण होते अतर्मुहूर्त के जेते समय तितनी फालि करि प्रथम काडक का सक्रमरण हो है । अैसै ही द्वितीय काडक का सक्रमरण हो है । असै क्रम करि सख्यात हजार स्थिति काडकनि करि आठ कषायनि के द्रव्य का च्यारि सज्वलन कषाय अर पुरुष वेद विषै सक्रमरण हो है । असैं ए परमुख करि नष्ट हो है । अन्य प्रकृतिरूप होने करि जाका नाश होइ, सो परमुख करि नष्ट कहिए । असै मोह राजा की सेना के नायक अष्ट कषाय, तिनका अत काडक का नाश होतै अवशेष स्थिति सत्व काल अपेक्षा आवली मात्र रहै है । अर निषेक अपेक्षा समय घाटि आवली मात्र रहै है । जातै अत काडक घात के समय विषै प्रथम निषेक का स्वमुख उदय युक्त जो कोई सज्वलन, तीहिविषै सक्रम होइ उदय हो है । बहुरि उदयावली विषै प्राप्त निषेक का काडकघात न होइ, तातै समय घाटि आवली मात्र निषेक अत फालि की साथि नाही विनसै है ।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, सोलसपयडीण होदि संकमगो ।
ठिदिखंडपुधत्तेण य, तट्ठिदिसंतं तु आवलिपविट्ठं ॥४३०॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते, षोडशप्रकृतीनां भवति संक्रमकः ।
स्थितिखंडपृथक्त्वेन च, तत्स्थितिसत्त्वं तु आवलिप्रविष्टम् ॥४३०॥

टीका – यातै ऊपरि पृथक्त्व कहिए सख्यात हजार स्थितिबध व्यतीत भए निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, स्त्यानगृद्धि ए तीन दर्शनावरण की अर नरक तिर्यंचगति वा आनुपूर्वी, एकेद्रियादि च्यारि जाति, आतप, उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, साधारण ए तेरह नाम कर्म की असै सोलह प्रकृतिनि का संक्रमक हो है । क्षपणा प्रारभ का समय तै लगाय समय समय प्रति इनके द्रव्य कौ पूर्वोक्त प्रकार एक एक फालि का सक्रमरण होतै प्रथम काडक होइ, असै संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि सक्रमरण

हो है। तहा अंत काडक घात होतै अवशेष स्थिति सत्व काल अपेक्षा आवली मात्र, निषेक अपेक्षा समय घाटि आवलि मात्र रहै है। ऐसै इनका उदयावली तैं बाह्य सर्व निषेक द्रव्यनि का द्रव्य है, स्वजाति अन्य प्रकृतिनि विषै संक्रमण होइ क्षय कौ प्राप्त हो है। अपनी जाति की अन्य प्रकृतिनि कौ स्वजाति कहिए है। जैसै स्त्यानगृद्धित्रिक की स्वजाति दर्शनावरण की अन्य प्रकृति हैं ऐसै अन्य जाननी। बहुरि यहातै लगाय पृथक्त्व शब्द का अर्थ सख्यात हजार जानना। या प्रकार इहां मोह की तौ आठ का नाश भए, तेरह का सत्व रह्या अर दर्शनावरण की तीन का नाश भए छह का सत्त्व रह्या अर नाम की तेरह का नाश भए अस्सी प्रकृति का सत्व रह्या। ज्ञानावरण, वेदनीय, गोत्र, अतरायनि विषै किसी प्रकृति का नाश न भया।

आगै देशघाति करण कहिए है—

ठिदिबंधपुधत्तगदे, मणदाणा तत्तियेवि ओहि दुगं।
लाभं च पुणोवि सुदं, अचक्खुभोगं पुणो चक्खु ॥४३१॥

पुणरवि मदिपरिभोगं, पुणरवि विरयं कमेण अणुभागो।
बंधेण देशघादी, पल्लासंखं तु ठिदिबंधो ॥४३२॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते, मनोदाने तावत्यपि अवधिद्विकम्।
लाभश्च पुनरपि श्रुतं, अचक्षुभोगं पुनः चक्षुः ॥४३१॥

पुनरपि मतिपरिभोगं, पुनरपि वीर्यं क्रमेण अनुभागः।
बंधेन देशघाति, पल्यासंख्यस्तु स्थितिबंधः ॥४३२॥

टीका – मन पर्यय आदि बारह प्रकृतिनि का पूर्वै सर्वघाति द्विस्थानगत अनुभाग बंध होता था, इहातै परै देशघाति दारु लतारूप द्विस्थानगत अनुभाग बंध होने लगा, सो देशघाति करण है। सोई कहिए है–

सोलह प्रकृति संक्रमण तैं परै पृथक्त्व सख्यात हजार स्थिति काडक भए मनःपर्यय-ज्ञानावरण अर दानांतराय का, बहुरि तितने स्थिति काडक व्यतीत भए अवधि-ज्ञानावरण, अवधि दर्शनावरण, लाभांतराय का, बहुरि तितने स्थिति कांडक भए श्रुतज्ञानावरण अचक्षु दर्शनावरण, भोगांतराय का, बहुरि तितने स्थिति काडक भए चक्षुदर्शनावरण का, बहुरि तितने स्थिति काडक भए मतिज्ञानावरण, उपभोगांतराय

का, बहुरि तितने स्थिति कांडक भए वीर्यांतराय का अनुभाग बंध देशघाति हो है। पुरुषवेद, संज्वलन कषाय का पूर्वं संयतासंयत आदि विषै ही देशघाति अनुभागबंध भया, तातैं इहां न कह्या। इस अवसर विषै स्थितिबंध यथासंभव पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र ही जानना।

आगे अंतरकरण कहिए है–

ठिदिखंडसहस्सगदे, चदुसंजलणाण णोकसायाणं।
एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरं कुणइ ॥४३३॥

स्थितिखंडसहस्रगते, चतुःसंज्वलनानां नोकषायाणां।
एकस्थितिखंडोत्कीरणकाले अंतरं करोति ॥४३३॥

टीका – देशघातिकरण तैं परैं संख्यात हजार स्थिति कांडक भए च्यारि संज्वलन अर नव नोकषाय, इनका अंतर करै है। औरनि का अंतर न हो है। नीचले ऊपरले निषेकनि कौं छोडि अंतर्मुहूर्त मात्र बीचि के निषेकनि का अभाव करना, सो अंतर करण जानना। तहां अंतरकरण काल का प्रथम समय विषै पूर्वं तैं अन्य प्रमाण लीए स्थिति कांडक अनुभाग कांडक स्थिति बंध हो है। बहुरि एक स्थिति कांडकोत्करण काल का जितना काल तितने काल करि अंतर कौं पूर्ण करै है। इस काल के प्रथमादि समयनि विषैं तिन निषेकनि का द्रव्य कौं अन्य निषेकनि विषैं निक्षेपण करै है।

संजलणाणं एक्कं, वेदाणेक्कं उदेदि तद्दोण्हं।
सेसाणं पढमट्ठिदि, ठवेदि अंतोमुहुत्तआवलियं ॥४३४॥

संज्वलनानामेकं, वेदानामेकमुदेति तद्द्वयोः।
शेषाणां प्रथमस्थिति, स्थापयति अंतर्मुहूर्तमावलिकां ॥४३४॥

टीका – संज्वलन चतुष्क विषै कोई एक अर तीनो वेदनि विषैं कोई एक ऐसैं उदय रूप दोय प्रकृतिनि की तौ अंतर्मुहूर्त मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। इन बिना जिनका उदय न पाइए ऐसी ग्यारह प्रकृतिनि की आवली मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है। जैसैं पुरुषवेद अर क्रोध का उदय सहित श्रेणी मांडी, तातैं इनि दोउनि की तौ अंतर्मुहूर्त मात्र औरनि की आवली मात्र प्रथम स्थिति स्थापै है, सो वर्तमान

समय संबधी निषेक तैं लगाय प्रथम स्थिति प्रमाण निषेकनि कौ नीचैं छोडि, इनके ऊपरि निषेकनि का अंतर करै है।

उक्कीरिदं तु दव्वं, संत्ते पढमट्ठिदिम्हि संथुहदि।
बंधेवि य आबाधमदित्थिय उक्कट्टदे णियमा ॥४३५॥

अपकर्षितं तु द्रव्यं, सत्त्वे प्रथमस्थितौ संस्थापयति।
बंधेऽपि च आबाधामतिक्रम्योत्कर्षति नियमात् ॥४३५॥

टीका – तिनि अतर रूप निषेकनि के द्रव्य कौं अतर करण काल का प्रथम समय विषै ग्रह्या सो प्रथम फालि, यातै असंख्यात गुणा दूसरे समय ग्रह्या, सो द्वितीय फालि ऐसै असख्यात गुणा क्रम लीएं अंतर्मूहूर्त मात्र फालिनि करि सर्व द्रव्य अन्य निषेकनि विषै निक्षेपण करै है। अतररूप निषेकनि विषै नाही निक्षेपण करै है। कहां निक्षेपण करिए सो कहिए है–

बंध-उदय रहित वा केवल बंध सहित, उदय रहित, जे प्रकृति, तिनिकी प्रथम स्थिति समय घाटि आवली मात्र कही, तिनके द्रव्य कौं अपकर्षण करि उदयरूप अन्य प्रकृतिनि की प्रथम स्थिति विषैं सक्रमणरूप करि निक्षेपण करै है। अर बंध-उदय रहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौं अपनी द्वितीय स्थिति विषैं नाहीं निक्षेपण करै है, जातै बध विना उत्कर्षण होना सभवै नाहीं। बहुरि केवल बंध सहित प्रकृतिनि का द्रव्य कौं उत्कर्षण करि अपनी द्वितीय स्थिति विषै निक्षेपण करै है वा बधती जो अन्य प्रकृति, ताकी द्वितीय स्थिति विषैं सक्रमण रूप करि निक्षेपण करै है। बहुरि जे प्रकृति केवल उदय सहित है वा बध-उदय सहित हैं, तिनकी प्रथम स्थिति अतर्मुहूर्त मात्र कही, तिन विषै जे केवल उदय सहित ही हैं, तिनका द्रव्य को अपकर्षण करि अपनी प्रथम स्थिति विषै निक्षेपण करै है। अन्य प्रकृतिनि का भी द्रव्य इनकी प्रथम स्थिति विषै सक्रमण रूप निक्षेपण करिए है। बहुरि इनका द्रव्य है, सो उत्कर्षण करि बंधती जे अन्य प्रकृति, तिनकी अंतरायाम तैं सख्यात गुणा जो आबाधा, ताकौं छोडि द्वितीय स्थिति विषै जो जघन्य निषेक, तींहिस्यों लगाय बंधती स्थिति के सर्व निषेकनि विषै निक्षेपण करिए है। केवल उदयमान प्रकृतिनि का द्रव्य अपना द्वितीय स्थिति विषै नाही निक्षेपण करिए है। बहुरि बंध उदय सहित प्रकृतिनि के द्रव्य कौं प्रथम स्थिति विषै वा बधती द्वितीय स्थितिनि विषै निक्षेपण करिए है।

इहां अंतरायाम के नीचै निषेक रूप तौ प्रथम स्थिति अर अतरायाम के उपरिवर्ती निषेक रूप द्वितीय स्थिति जाननी। तहा छह तौ नोकषाय अर पुरुषवेद सहित श्रेणी चढया कै तौ अन्य दोय वेद अर स्त्रीवेद सहित श्रेणी चढया कै नपुसक वेद अर नपुसकवेद सहित श्रेणी चढया कै स्त्रीवेद ए तौ बंध-उदय रहित है। बहुरि स्त्री वा नपुसकवेद सहित श्रेणी चढया-कै पुरुषवेद है, सो अर सबनि कै जिस कषाय सहित श्रेणी चढ्या तीहि बिना तीन संज्वलन कषाय ए उदय रहित केवल बध सहित है। बहुरि स्त्री वा नपुसक वेद सहित श्रेणी चढ्या जीव कै स्त्री वा नपुसक वेद केवल उदय सहित है। बहुरि पुरुष वेद सहित श्रेणी चढया कै पुरुष वेद अर सबनि कै जिस कषाय सहित श्रेणी चढ्या, सो कषाय ए बध-उदय सहित है। सो इनका अतररूप निषेकनि का द्रव्य कौ पूर्वोक्त प्रकार सत्त्व विषै अपकर्षण करि तौ प्रथम स्थिति विषै अर उत्कर्षण कीए आबाधा छोडि बधरूप स्थिति विषै निक्षेपण करिए है। इस अतरकरण काल विषै अनुभाग काडक हजारौ हो है। अर स्थिति काडक अर समान स्थिति बध अर अतरकरण, इन तीनौ का काल समान है, तातै युगपत् समान हो है।

आगै संक्रमण कहिए है—

सत्त करणाणि यंतरकदपढमे ताणि मोहणीयस्स।
इगिठाणियबंधुदओ, तस्सेव य संखवस्सठिदिबंधो ॥४३६॥

तस्साणुपुव्विसंकम, लोहस्स असंकमं च संढस्स।
आवेत्तकरणसंकम, छावलितीदेसुदीरणदा ॥४३७॥

सप्तकरणानि अंतरकृतप्रथमे तानि मोहनीयस्य।
एकस्थानिकबंधोदयौ तस्यैव च संख्यवर्षस्थितिबधः ॥४३६॥

तस्यनुपूर्विसंक्रमं, लोभस्यासंक्रमं च षंढस्य।
आवृत्तकरणसंक्रमं षडावल्यतीतेषूदीरणता ॥४३७॥

टीका – अतर जानै कीया असा अतरकृत जीव, ताकै प्रथम समय विषै सात करणनि का प्रारभ भया। ते कहिए है—

मोहनीय का बध-उदय है सो दारुपना छोडि, केवल लतारूप एक स्थानगत भए ए दोय करण बहुरि तिस ही मोहनीय का स्थितिबध पल्य का असख्यातवां भाग

प्रमाण तै घटि सख्यात वर्ष मात्र भया एक यहु करण बहुरि मोह प्रकृतिनि का पूर्वं जहा तहा स्वजातीय प्रकृतिनि विषै सक्रमण होता था अब आगे कहिए है तैसे आनु-पूर्वी सक्रमण होइ अन्यथा न होइ एक यहु करण, बहुरि पूर्वं लोभ का अन्य प्रकृतिनि विषे सक्रमण होता था अब न होइ एक यहु करण, बहुरि नपु सकवेद का आवृत्त करण सक्रमक भया, याकौ अन्य प्रकृतिरूप परिणमाइ नाश करने का उद्यमी भया एक यहु करण, बहुरि पूर्वं कर्म बध पीछै आवली व्यतीत भएं ही उदीरणा होती थी अब छह आवली व्यतीत भए पीछै ही उदीरणा होइ एक यहु करण इन सात करणनि का अतर करने के अनतर समय विषै युगपत् प्रारभ भया ।

संछुहदि पुरिसवेदे, इत्थीवेदं णउंसयं चेव ।
सत्तेव णोकसाए, णियमा कोहम्हि संछुहदि[1] ।।४३८।।

कोहं च छुहदि माणे, माणं मायाए णियमि संछुहदि ।
मायं च छुहदि लोहे, पडिलोमो संकमो णत्थि[2] ।।४३९।।

संक्रामति पुरुषवेदे, स्त्रीवेदं नपुसंकं चैव ।
सप्तैव नोकषायान्, नियमात् क्रोधे संक्रामति ४३८।।

क्रोधश्च क्रामति माने, मानो मायायां नियमेन संक्रामति ।
माया च क्रामति लोभे, प्रतिलोमः संक्रमो नास्ति ।।४३९।।

टीका – स्त्रीवेद अर नपु सक वेद का द्रव्य तौ पुरुषवेद विषै सक्रमण करै है। पुरुषवेद छह हास्यादि ऐसै सात नोकषायनि का द्रव्य सज्वलन क्रोधविषै सक्रमण करै है। क्रोध का द्रव्य मान विषै सक्रमण करै है। मान का द्रव्य माया विषै संक्रमण करै है। माया का द्रव्य लोभ विषै सक्रमण करै है ऐसै सक्रमण करि अन्य रूप परि-णमि आप नाश कौं प्राप्त हो है यहु आनुपूर्वी सक्रमण जानना। प्रतिलोम कहिए अन्यथा प्रकार सक्रमण अब न हो है।

इहा तै आगे स्थितिबध तै सख्यात गुणा घाटि स्थितिबधापसरण का प्रमाण मोहनीय का भया, जातै सख्यात वर्ष स्थितिबध होने तै परै स्थितिबधापसरण का

---

१. कषाय पाहुड गाथा १३८–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २५० ।
२. कषाय पाहुड गाथा १३८–जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २५१ ।

प्रमाण स्थितिबंध तैं सख्यात गुणा घटता हो है। अर बत्तीस वर्ष मात्र स्थितिबध भए पीछै स्थितिबधापसरण का प्रमाण अतर्मुहूर्त मात्र हो है, असी व्याप्ति सर्वत्र जाननी।

ठिदिबंधसहस्सगदे, संढो संकामिदो हवे पुरिसे।
पडिसमयमसंखगुणं, संकामगचरिमसमओ त्ति ॥४४०॥

स्थितिबंधसहस्रगते, षंढः संक्रामितो भवेत् पुरुषे।
प्रतिसमयमसंख्य गुणं, संक्रामकचरमसमय इति ॥४४०॥

टीका – अतरकरण के अनंतर समय तै लगाय सख्यात हजार स्थितिबध व्यतीत भए नपुसक वेद है, सो पुरुषवेद विषै सक्रमित हो है। नपुसकवेद की क्षपणा का प्रथम समय तै लगाय समय समय प्रति असख्यात गुणा क्रम लीए सक्रम काल का अत समय विषै नपुसक वेद के द्रव्य का पुरुषवेद विषै सक्रमण हो है। सो समय समय विषै जेता द्रव्य संक्रमण भया सो फालि है अर अतर्मुहूर्त मात्र फालिनि का समूह रूप काडक है सो असै गुण सक्रमणरूप अनुक्रम तै सख्यात हजार काडक भए अंत समय विषै जो अत काडक की अत फालि, ताकौ सर्व सक्रमण करि सक्रमावै है। असै नपुसक वेद कौ पुरुषवेदरूप परिणमाइ नाश कौ प्राप्त करै है। असा अर्थ स्त्री-वेद की क्षपणा आदि विषै भी जोडना।

बंधेण होदि उदओ, अहिओ उदएण संकमो अहिओ।
गुणसेढि असंखेज्जापदेसअंगेण बोधव्वा[1] ॥४४१॥

बंधेन भवति उदयः, अधिक उदयेन संक्रमोऽधिकः।
गुणश्रेणिरसंख्येयप्रदेशांगेन बोद्धव्या ॥४४१॥

टीका – नपुसकवेद का सक्रमण काल विषै पुरुषवेद का बध द्रव्य तै उदय द्रव्य अधिक है अर उदय द्रव्य करि सक्रम द्रव्य अधिक है, सो अधिकता असख्यात प्रदेश समूह करि गुणश्रेणी कहिए गुणकार की पक्ति तिस रूप जाननी।

भावार्थ – इहा पुरुषवेद का जितने प्रदेशनि का बंध हो है तातै असख्यात गुणा अधिक ताके प्रदेशनि का उदय हो है। अर तातै असख्यात गुणा अधिक प्रदेशनि का तहा सक्रमण हो है। सोई कहिए है–

---

१ कषाय पाहुड गाथ १४४– जयधवला भाग–१४ पृष्ठ २६३

प्रदेश शब्द करि परमाणू रूप द्रव्य जानना, सो इहा समयप्रबद्ध बधै है, तीहि कौ सात का भाग दीए मोह का द्रव्य होइ, ताकौ कषाय-नोकषाय का भाग के अर्थि दोय का भाग दीए पुरुषवेद का द्रव्य होइ, सो इतना तौ प्रदेशनि का बध हो है। बहुरि सर्व सत्तारूप पुरुषवेद का द्रव्य विषै गुणश्रेण्यादि करि दीया द्रव्य सहित इस समय विषै उदय आवने योग्य निषेक का द्रव्य जेता होइ तितने प्रदेशनि का उदय हो है, ते ए बध प्रदेशनि तै असख्यात गुणे है। बहुरि नपुसकवेद का सर्व द्रव्य कौ गुण सक्रम का भाग दीए जो प्रमाण आवै तितने नपुसकवेद के प्रदेशनि का पुरुषवेद विषै सक्रमण हो है। ते ए उदय प्रदेशनि तै असख्यात गुणे जानने। ऐसै अल्प बहुत्व कहने करि गुण सक्रमण द्रव्य का प्रमाण जानिए है।

गुणसेढिअसंखेज्जापदेसअंगेण संकमो उदओ।
से काले से काले, भज्जो बंधो पदेसंगो[1] ॥४४२॥

गुणश्रेण्यसंख्येयप्रदेशांगेन संक्रम उदयः।
स्वे काले स्वे काले, योग्यो बंधः प्रदेशांगः ॥४४२॥

टीका – अपने काल विषै स्वस्थान अपेक्षा सक्रम तै सक्रम अर उदय तै उदय है, सो प्रदेश अपेक्षा करि असख्यातरूप गुणकार की पक्ति लीए है।

भावार्थ – नपुसकवेद क्षपणा काल विषै प्रथम समय विषै जेते नपुसकवेद के प्रदेशनि का पुरुषवेद विषै सक्रमण हो है, तातै दूसरा समय विषै असख्यात गुणा हो है। तातै तीसरा समय विषै असख्यात गुणा हो है ऐसै अन्त समय पर्यत जानना। बहुरि अपना पुरुषवेद का उदय काल विषै प्रथम समय विषै जितने पुरुषवेद के प्रदेश-नि का उदय हो है, तातै दूसरे समय असख्यात गुणा तातै तीसरे समय असख्यात गुणा ऐसै अन्त समय पर्यत जानना। बहुरि अपने पुरुषवेद का बन्धकाल विषै प्रदेशरूप वन्ध है सो भजनीय है। जातै प्रदेश बन्ध है सो योगनि के अनुसारि है, तातै प्रथमादि समय तै द्वितीयादि समयनि विषै पुरुषवेद का बन्ध कदाचित् सख्यातवे भागि, असख्-यातवे भागि, सख्यात गुणा, असख्यात गुणा बधता कदाचित् ऐसै ही घटता कदाचित् जितने का तितने अवस्थित रूप पुरुषवेद के प्रदेश बन्ध इहा हो है।

इन अठाईस गाथानि का अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासार विषै नाही लिख्या। इहा मोकू प्रतिभास्या तैसै लिख्या है।

---

[1] कषायपाहुड गाथा १४६, जयधवला भाग– १४ पृष्ठ २७२।

इदि संढं संकामिय, से काले इत्थिवेदसंकमगो ।
अण्णंठिदिरसखंडं, अण्णं ठिदिबंधमारभई ।।४४३।।

इदि षंढं संक्राम्य, स्वे काले स्त्रीवेदसंक्रमकः ।
अन्यस्थितिरसखंडमन्यं स्थितिबंधमारभते ।।४४३।।

टीका – असै नपुसकवेद का सक्रमरण करि अपने काल विषै स्त्रीवेद का संक्रमक कहिए पुरुषवेद विषै सक्रमरण करि क्षपरणा करनेवाला हो है । तहा प्रथम समय विषै पूर्वतै अन्य प्रमारण धरै स्थितिकाडक, अनुभाग काडक, स्थितिबन्ध कौ आरभै है ।

थी अद्धा संखेज्जभागेपगदे तिघादिठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जं, थी संकंतापगद्धंते ।।४४४।।

स्त्री अद्धा संख्येयभागेपगते त्रिघातिस्थितिबंधः ।
वर्षारणां संख्येयं, स्त्री संक्रमोपगतार्धाते ।।४४४।।

टीका – तहा सख्यात हजार स्थितिकाडकनि करि स्त्रीवेद क्षपरणा काल का सख्यातवा भाग व्यतीत भए ज्ञानावररण, दर्शनावररण, अतराय इन तीन घातियानि का स्थितिबन्ध पल्य का असख्यातवा भाग मात्र होता था, ताकौ समाप्त करि सख्यात वर्ष प्रमारण स्थितिबन्ध करै है । तातै परै सख्यात हजार स्थितिकाडक व्यतीत भएं स्त्रीवेद क्षपरणा काल के अवशेष बहुभाग व्यतीत भए जो घात कीए पीछै स्त्रीवेद का स्थिति सत्व अवशेष पल्य का असख्यातवा भाग मात्र रह्या, ताकौ अत स्थिति काडक रूप करै है, तिस ही काल विषै अवशेष कर्मनिका स्थितिकाडक पल्य का असख्यातवा भाग मात्र स्थिति सत्व के असख्यातवे भाग मात्र था, सो ताका असख्यात वहुभाग मात्र आयाम धरै है । तहा अत काडक कौ सम्पूर्ण भए स्त्रीवेद भी सक्रमरण रूप भया । द्वितीय स्थिति विषै तिष्ठता असा पल्य का असख्यातवा भाग मात्र आयाम धरै जो अन्तस्थिति काडक, ताकी अन्त फालि कौ पुरुषवेद विषै सक्रमरण करि स्त्रीवेद की सत्ता का नाश करै है ।

ताहे संखसहस्सं, वस्साणं मोहणीयठिदिसंतं ।
से काले संकमगो, सत्तण्हं णोकसायाणं ।।४४५।।

तस्मिन् (अ) संख्यसहस्रं, वर्षाणां मोहनीयस्थितिसत्त्वम् ।
स्वे काले संक्रमकः, सप्तानां नोकषायाणाम् ॥४४५॥

टीका – तहा स्त्रीवेद क्षपणा काल का अंत विषै मोहनीय का स्थितिसत्व असख्यात वर्ष प्रमाण हो है। बहुरि ताके अनतरि अपने काल विषै सात नोकषायनि का सक्रमक कहिए सज्वलन क्रोधरूप परणमाइ नाश करणहारा हो है।

ताहे मोहो थोवो, संखेज्जगुणं तिघादिठिदिबंधो ।
तत्तो असंखगुणियो, णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥४४६॥

तत्र मोहः स्तोकः, संख्येयगुणं त्रिघातिस्थितिबंधः ।
ततोऽसंख्येयगुणितो, नामद्विकं साधिकं तु वेदनीयम् ॥४४६॥

टीका – तहा प्रथम समय विषै मोह का स्तोक, तातै तीन घातियानि का सख्यात गुणा, बहुरि तातै नाम-गोत्र का पल्य का असख्यातवा भाग मात्र है, तातै बहुरि असख्यात गुणा, तातै वेदनीय का त्रैराशिक तै आधा प्रमाण करि साधिक स्थितिबध हो है।

ताहे असंखगुणियं, मोहादु तिघादिपयडिठिदिसंतं ।
तत्तो असंखगुणियं, णामदुगं साहियं तु वेयणियं ॥४४७॥

तस्मिन् असंख्यगुणितं, मोहात् त्रिघातिप्रकृतिस्थितिसत्त्वम् ।
ततोऽसंख्यगुणितं, नामद्विकं साधिकं तु वेदनीयं ॥४४७॥

टीक – तहां ही प्रथम समय विषै सख्यात वर्ष मात्र मोह का स्थिति सत्व स्तोक है। तातै असख्यात गुणा तीन घातियानि का स्थिति सत्व पल्य का असख्यातवा भाग मात्र है। तातै असख्यात गुणा नाम गोत्र का स्थिति सत्व है। तातै साधिक वेदनीय का स्थिति सत्व है। क्रम करण के अल्पवहुत्व का अनुक्रम इहा पर्यं। भी प्रवर्तै है। ऐसा जानना।

सत्ताण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे दु मोहठिदिसंतं ।
संखेज्जगुणविहीणं, सेसाणमसंखगुणहीणं ॥४४८॥

सप्तानां प्रथमस्थितिखंडे पूर्णे तु मोहस्थितिसत्त्वं ।
संख्येयगुणविहीनं, शेषाणामसंख्यगुणहीनम् ॥४४८॥

टीका – सात नोकषायनि का पहिला स्थिति काडक कौ पूर्ण भए पूर्व स्थिति सत्त्व तै मोह का तौ स्थिति सत्व सख्यात गुरणा घटता भया, जातै सख्यात वर्ष स्थिति सत्व होने तै स्थिति काडक आयाम पूर्वस्थिति सत्व का सख्यात बहुभाग मात्र है । बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थिति सत्व पूर्व स्थिति सत्व तै असख्यात गुरणा घटता भया, जातै पल्य का असख्यातवां भाग मात्र स्थिति सत्व होने तै स्थिति कांडक आयाम पूर्वस्थिति सत्व के असंख्यात बहुभाग मात्र है ।

सत्तण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे ति घादिठिदिबंधो ।
संखेज्जगुणविहीणं, अघादितियाणं असंखगुणहीणं ॥४४९॥

सप्तानां प्रथमस्थितिखंडे पूर्णे इति घातिस्थितिबंधः ।
संख्येयगुणविहीनो, अघातित्रयाणामसंख्यगुणहीनः ॥४४९॥

टीका – सात नोकषायनि का प्रथम स्थिति खड कौ सपूर्ण होत सतै पूर्व स्थिति बध तै च्यारि घातिया कर्मनि का तौ सख्यात गुणा घटता अर तीन अघातिया-नि का असख्यात गुणा घटता स्थिति बध हो है । जातै एक स्थितिबधापसरण करि इतनी स्थिति का घटना सभवै है ।

ठिदिबंधपुधत्तगदे, संखेज्जदिमं गतं तदद्धाए ।
एत्थ अघादितियाणं, ठिदिबंधो संखवस्सं तु ॥४५०॥

स्थितिबंधपृथक्त्वगते, संख्येयं गतं तदद्धायाम् ।
अत्र अघातित्रयाणां, स्थितिबंधः संख्यवर्षस्तु ॥४५०॥

टीका – तातै परै पृथक्त्व कहिए सख्यात हजार स्थिति बध गए तिस सप्त नोकषाय क्षपरणा काल का सख्यातवा भाग व्यतीत भया, तहा नाम, गोत्र, वेदनीय इन तीन अघातियानि का स्थिति बध पल्य का असख्यातवा भागपना कौ छोडि सख्यात हजार वर्ष मात्र हो है ।

ठिदिखंडपुधत्तगदे, संखाभागा गदा तदद्धाए ।
घादितियाणं तत्थ य, ठिदिसंतं संखवस्सं तु ॥४५१॥

स्थितिखंडपृथक्त्वगते, संख्यभागा गता तदद्धायाः ।
घातित्रयाणां तत्र च, स्थितिसत्त्वं संख्यवर्षं तु ॥४५१॥

टीका – तातैं परैं सख्यात हजार स्थिति काडक गए सात नोकषाय काल का सख्यात बहुभाग व्यतीत भए एक भाग अवशेष रहैं, तीन घातियानि का स्थिति सत्त्व सख्यात वर्ष प्रमाण भया। तातैं आगे च्यारि घातियानि का स्थितिबध अर स्थितिसत्व एक काडक काल पर्यंत समान रूप होइ। बहुरि केई स्थितिबध अर स्थितिसत्व पूर्व तैं सख्यात गुणे घटते हो है, जातैं घातिकर्मनि का स्थितिबंध वा स्थिति सत्व सख्यात वर्ष मात्र होने तैं स्थितिबधापसरण वा स्थिति काडक का प्रमाण पूर्व स्थितिबध वा स्थिति सत्व तैं सख्यात बहु भाग मात्र है। बहुरि नाम गोत्र वेदनीय का स्थिति काडक पूर्ण होतैं पूर्व स्थिति सत्व तैं असख्यात गुणा घटता स्थिति सत्व हो है। अर इनका स्थितिबधापसरण पूर्ण होतैं पूर्व स्थिति बध तैं सख्यात गुणा घटता स्थिति बध हो है, ऐसा अनुक्रम सप्त नोकषाय क्षपणा काल का अत पर्यंत जानना।

पडिसमयं असुहाणं, रसबंधुदया अणंतगुणहीणा।
बंधो वि य उदयादो, तदणंतरसमय उदयोथ ॥४५२॥

प्रतिसमयमशुभानां, रसबंधोदयौ अनंतगुणहीनौ।
वंधोऽपि च उदयात्, तदनंतरसमय उदयोथ ॥४५२॥

टीका – अशुभ प्रकृतिनि का अनुभाग बध अर अनुभाग का उदय, सो समय समय प्रति अनत गुणा घटता हो है। प्रथम समय तैं दूसरे समय, दूसरा समयतैं तीसरे समय ऐसैं क्रम तैं अनुभाग का बध अर उदय अनत गुणा घटता इहा जानना। बहुरि पूर्व समय सबधी उदय तैं उत्तर समय का बध भी अर अनतरवर्ती समय का उदय हो है। सो अनत गुणा घटता अनुभाग रूप जानना।

वंधेण होदि उदओ, अहियो उदएण संकमो अहियो।
गुणसेढि अणंतगुणा, बोधव्वा होदि अणुभागे[1] ॥४५३॥

वधेन भवति उदयोऽधिक उदयेन संक्रमोऽधिकः।
गुणश्रेणिरनतगुणा, वोद्धव्या भवति अनुभागे ॥४५३॥

टीका – वंध करि तो उदय अधिक कहिए है अर उदय करि सक्रम अधिक है, ऐसे अनुभाग विषै अनंत गुणा गुणश्रेणी कहिए गुणाकार की पक्ति जाननी।

१ कसायपाहुड गाथा १४३–जयधवला भाग १४, पृष्ठ २६१

भावार्थ –विवक्षित एक समय विषै अनुभाग के बध तै अनंत गुणा अनुभाग का तो उदय है अर तातै अनत गुणा अनुभाग का सक्रम हो है ।

गुणसेढि अणंतगुणेणूणा य वेदगो दु अणुभागो ।
गणणादिकंतसेढी, पदेसअंगेण बोधव्वा[1] ॥४५४॥

गुणश्रेणिरनंतगुणेनोना च वेदकस्तु अनुभागः ।
गणनातिक्रांतश्रेणी, प्रदेशांगेन बोद्धव्या ॥ ४५४ ॥

टीका – यद्यपि वेदक कहिए उदयरूप अनुभाग सो समय समय प्रति अनत गुणा घटतारूप गुणकार पक्ति लीएं है तथापि प्रदेश अग (अश) करि गणनातिक्रात कहिए असंख्यात गुणा गुणकार की पक्तिरूप जानना ।

भावार्थ – समय समय प्रति अनुभाग का उदय अनत गुणा घटता है तथापि प्रदेश जे कर्म परमाणू, तिनका उदय समय समय प्रति असख्यात गुणा बधता जानना ।

बंधोदएहि णियमा, अणुभागो होदि णंतगुणहीणो ।
से काले से काले, भज्जो पुण संकमो होदि[2] ॥४५५॥

बंधोदयाभ्यां नियमादनुभागो भवति अनंतगुणहीनः ।
स्वे काले स्वे काले, भाज्यः पुनः संक्रमो भवति ॥ ४५५ ॥

टीका – अपने काल विषै अनुभाग है, सो बध अर उदय करि तो समय समय प्रति अनंत गुणा घटता ही है ।बहुरि अपने काल विषै सक्रम है, सो भजनीय है–घटने का नियम करि रहित है ।

संकमणं तदवट्ठं, जाव दु अणुभागखंडयं पडिदि ।
अण्णाणुभागखंडे, आढंते णंतगुणहीणं ॥४५६॥

संक्रमण तदवस्थं, यावत्तु अनुभागखंडकं पतति ।
अन्यानुभागखंडे, आरब्धे अनंत गुणहीनम् ॥ ४५६ ॥

---

१. कषायपाहुड गाथा १४६, जयधवला भाग – १४ पृष्ठ २६७.
२ कषायपाहुड गाथा १४८, जयधवला भाग – १४ पृष्ठ २७०,

टीका – जिस अनुभाग काडक विषै सक्रमण होइ, तिस अनुभाग काडक का घात न होइ निवरै तावत् समय समय प्रति अवस्थित समान रूप ही अनुभाग का सक्रमण हो है। वहुरि अन्य नवीन अनुभाग कांडक का प्रारम्भ भएं पूर्व तै अनत गुणा घटता अनुभाग का संक्रम हो है।

इन पाच गाथानि का अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासार विषै लिख्या नाही, इहा जैसै प्रतिभास्या तैसै अर्थ लिख्या है। बुद्धिमान होइ, सो स्पष्ट अर्थ जैसा होइ तैसा जानियो।

सत्तण्हं संकामगचरिमे पुरिसस्स बंधमडवस्सं।
सोलस संजलणाणं, संखसहस्साणि सेसाणं ॥४५७॥

सप्तानां संक्रामकचरमे पुरुषस्य बंधोऽष्टवर्षम्।
षोडश संज्वलनानां, संख्यसहस्राणि शेषाणाम् ॥४५७॥

टीका – सात नोकषाय संक्रमक काल का अंत समय विषै पुरुषवेद का अन्त स्थिति बन्ध अष्ट वर्ष प्रमाण हो है। बहुरि सज्वलन चतुष्क का सोलह वर्ष मात्र, अवशेष मोह, आयु बिना छह कर्मनि का संज्वलन हजार वर्ष मात्र स्थितिबन्ध हो है।

ठिदिसंतं घादीणं, संखसहस्साणि होंति वस्साणं।
होंति अघातियाणं, वस्साणमसंखमेत्ताणि ॥४५८॥

स्थितिसत्त्वं घातिनां, संख्यसहस्राणि भवंति वर्षाणां।
भवंति अघातित्रयाणां, वर्षाणामसंख्यमात्राणि ॥४५८॥

टीका – तहां ही स्थितिसत्व है, सो च्यारि घातियानि का सख्यात हजार वर्ष मात्र अर तीन अघातिनि का असख्यात वर्ष प्रमाण जानना।

पुरिसस्स य पढमट्ठिदि, आवलिदोसुवरिदासु आगाला।
पडिआगाला छिण्णा, पडिआवलियादुदीरणदा ॥४५९॥

पुरुषस्य च प्रथमस्थितौ, आवलिद्वयोरुपरतयोरागालाः।
प्रत्यागालाः छिन्नाः, प्रत्यावलिकाया उदीरणता ॥४५९॥

टीका – पुरुषवेद की प्रथम स्थिति विषै आवली प्रत्यावली ए दोय उवरै अवशेष रहे आगाल प्रत्यागाल नष्ट भए। द्वितीय स्थिति विषै तिष्ठते परमाणूनि कौ

अपकर्षण वश तैं प्रथम स्थिति विषैं प्राप्त करना, सो आगाल कहिए। प्रथम स्थिति विषैं तिष्ठते परमाणूनि कौं उत्कर्षण वश तैं द्वितीय स्थिति विषैं प्राप्त करना सो प्रत्यागाल कहिए। बहुरि प्रत्यावली जो द्वितीयावली तैं उदीरणा वर्तै है। प्रत्यावली के निषेकनि का द्रव्य उदयावली विषै दीजिए है। बहुरि एक समय अधिक प्रत्यावली अवशेष रहैं जघन्य स्थिति की उदीरणा हो है, जातैं प्रत्यावली का प्रथम एक निषेक की उदीरणा हो है, उदयावली विषैं ताकौं प्राप्त कीजिए है। बहुरि तीहि समय विषैं वेद सहितपना का अंत समय विषै हो है, जातैं उच्छिष्टावली है नाम जाका असी जो प्रत्यावली, ताके निषेकनि का उदय न हो है।

अंतरकदपढमादो, कोहे छण्णोकसाययं छुहदि।
पुरिसस्स चरिमसमए, पुरिसवि एणेण सव्वयं छुहदि ॥४६०॥

अंतरकृतप्रथमात् क्रोधे षण्णोकषायकं संक्रामति।
पुरुषस्य चरमसमये, पुरुषमपि एतेन सर्वं संक्रामति ॥४६०॥

टीका – अंतरकरण करने के अनन्तरवर्ती प्रथम समय तैं लगाय संक्रमण होता था, सो पुरुषवेद के उदय काल का अंत समय विषै छह नोकषायनि का सर्व सत्त्व कौं संज्वलन क्रोध विषैं संक्रमण करै है। तहां अन्त समय विषैं द्वितीय स्थिति विषैं प्राप्त संख्यात हजार वर्ष मात्र स्थिति सत्त्वरूप अन्त फालि, ताकौं सर्व संक्रमण तैं संज्वलन क्रोध विषैं निक्षेपण करि तिन छह नोकषायनि की सत्ता नाश करै है। बहुरि तिस ही समय विषैं पुरुषवेद भी सर्व संज्वलन क्रोध विषैं निक्षेपण करै है।

किछू अवशेष रहै है, सो कहिए है–

समऊणदोण्णिआवलिपमासमयप्पबद्धणवबंधो।
बिदिये ठिदिये अत्थि हु, पुरिसस्सुदयावली च तदा ॥४६१॥

समयोनद्व्यावलिप्रमाणसमयप्रबद्धनवबन्धः।
द्वितीयस्यां स्थितौ अस्ति हि, पुरुषस्योदयावली च तदा ॥४६१॥

टीका – तहां द्वितीय स्थिति विषैं तो समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध अर प्रथम स्थिति विषैं असंख्यात समयप्रबद्ध मात्र उदयावली कहिए उच्छिष्टावली के निषेक पुरुषवेद का सत्त्व विषैं अवशेष रहै अन्य सर्व संख्यात हजार

वर्ष मात्र स्थितिबध लीए पुरुपवेद का पुरातन सत्त्व था, सो सज्वलन क्रोध विषै संक्रमण रूप कीया । इहा द्वितीय स्थिति विषै समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध कैसे अवशेष रहै ? सो कहिए है–

नवीन बन्ध्या समयप्रबद्ध कौ नवक समयप्रबद्ध कहिए, सो क्षपणाकाल बन्धे पीछै आवली पर्यंत जो बन्धावली, तिसविषै तो क्षपावे नाही, पीछै समय समय विषै एक एक फालि करि आवली विषै एक एक समयप्रबद्ध कौं खिपावै है, तातै पुरुषवेद की प्रथम स्थिति विषै बन्धावली, क्षपणावली, उच्छिष्टावली ऐसे तीन आवली अवशेष रहै बन्धावली का प्रथम समय विषै जो समयप्रबद्ध बन्ध्या, ताकौ बन्धावली गमाइ क्षपणावली विषै एक एक फालि करि सर्व क्षपाया अर बधावली का द्वितीय, तृतीयादि समयनि विषै जे समयप्रबद्ध बधे तिनकी क्रम तै एक दोय, तीन आदि फालि अवशेष राखि क्षपणावलो विषै तिनकौ खिपाए । ऐसे बधावली का अत समय विषै बंध्या समयप्रबद्ध को क्षपणावली का अत समय विषै एक ही फालि खिपाई । समय घाटि आवली मात्र फालि अवशेष रही । बहुरि क्षपणावली के प्रथमादि समयनि विषै बधे समयप्रबद्ध, तिनकी एक हू फालि न खिपाई । बहुरि उच्छिष्टावली विषै बध है ही नाही । ऐसै इहा 'एकदेश कौ सर्व कहिए' इस न्याय तै अवशेष रही फालिनि कौ समयप्रबद्ध सज्ञा कहने करि बधावली विषै बंधे ऐसे एक घाटि आवली मात्र समयप्रबद्ध अर क्षपणावली विषै बंधे संपूर्ण आवली मात्र समयप्रबद्ध मिलि समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध अवशेष रहै है । सो अपगत वेद होइ उच्छिष्टावली का प्रथम समय तै लगाय एक एक समय विषै एक एक समयप्रवद्ध कौं सज्वलन क्रोधरूप परिणमाइ, समय घाटि दोय आवली काल विषै इन नवक समयप्रबद्धनि कौ भी नाश करै है । अब सवेद अनिवृत्तिकरण के अनंतरि अपगत वेदी होइ, अश्वकर्ण क्रिया सहित अपूर्व स्पर्धक करण का प्रारभ करे है । तहां घातै पीछै अवशेष रह्या जो सज्वलन चतुष्क का सत्त्व तिसविषै स्थिति अनुभाग काडक की प्रवृत्ति जाननी ।

अब अश्वकर्ण करण का स्वरूप कहिए है—

से काले ओवट्टणिउट्टण, अस्सकण्ण आदोलं ।
करणं तियसण्णगयं, संजलणरसेसु वट्टिहिदि ॥४६२॥

स्वे काले अपवर्तनोद्वर्तनं, अश्वकर्णमांदोलं ।
करणं त्रिसंज्ञागतं, संज्वलनरसेषु वर्तयति ॥४६२॥

टीका – अपने काल विषै अपवर्तनोद्वर्तन करण, अश्वकर्ण करण, आदोल करण अैसै तीन सज्ञा कौ प्राप्त किया है, सो संज्वलन चतुष्क का अनुभाग विषै प्राप्त हो है। तहां इहा आरंभ्या जो प्रथम अनुभागकांडक, ताका घात भए पीछै अवशेष अनुभाग क्रोध तै लगाय लोभ पर्यंत अनंत गुरगा घटता वा लोभ तै लगाय क्रोध पर्यंत अनंत गुरगा बधता हो है। तातै अपवर्तनोद्वर्तन करण संज्ञा कहिए। बहुरि जैसै घोडे का कान मध्य प्रदेश तै आदि पर्यंत क्रम तै घटता हो है, तैसै प्रथम अनुभाग काडक का घात भए पीछै क्रोध आदि लोभ पर्यंत का क्रम तै अनुभाग घटता हो है, तातै अश्वकर्ण सज्ञा कहिए। बहुरि जैसै ही वाकै रज्जु बधे है, सो रज्जु के बीचि का प्रदेश आदि तै अत पर्यंत क्रम तै घटता हो है, तैसै पूर्ववत् क्रोध तै लोभ पर्यंत अनुभाग घटता हो है, तातै आदोल करण सज्ञा कहिए है।

ताहे संजलणाणं, ठिदिसंतं संखवस्सयसहस्सं।
अंतोमुहुत्तहीणो, सोलसवस्साणि ठिदिबंधो ॥४६३॥

तत्र संज्वलनानां, स्थितिसत्त्वं संख्यवर्षसहस्रम्।
अंतर्मुहूर्तहीनः, षोडशवर्षाणि स्थितिबन्धः ॥४६३॥

टीका – तहा अश्वकर्ण का प्रारभ समय विषै सज्वलन चतुष्क का स्थितिसत्त्व सख्यात हजार वर्ष मात्र है। बहुरि स्थितिबध अतर्मुहूर्त घाटि सोलह वर्ष मात्र है। एक स्थितिबधापसरण करि पूर्व स्थितिबध तै अतर्मुहूर्त हीन स्थितिबध इहां भया और कर्मनि के बध सत्त्व का आलाप पूर्ववत् इहा ही कहना।

रससंतं आगहिदं, खंडेण समं तु माणगे कोहे।
मायाए लोभेवि य, अहियकमा होदि बंधे वि ॥४६४॥

रससत्त्वमागृहीतं, खंडेन समं तु मानके क्रोधे।
मायायां लोभेऽपि च, अधिकक्रमं भवति बन्धेऽपि ॥४६४॥

टीका – अपगत वेदी होइ, जो प्रथम अनुभागकांडक आगृहीतं कहिए प्रारभ किया तिस सहित इस प्रथम अनुभाग काडक का घात होने तै पहिले मान विषै क्रोध विषै माया विषै लोभ विषै अनुभाग सत्त्व है सो अधिक क्रम लीए है। एक गुणहानि विषै जेते स्पर्धक पाइए तिस प्रमाण कौं नानागुणहानि का प्रमाण करि गुणे मान के

स्पर्धक हो है, ते स्तोक हैं, तिनतैं क्रोध के विशेष अधिक है, तिनतैं माया के विशेष अधिक हैं। तिनतैं लोभ के विशेष अधिक हैं। इहा अपने अपने स्पर्धकनि का प्रमाण स्थापि, अनत का भाग दीए विशेष का प्रमाण आवै है, सो यहु विशेष भी अनत स्पर्धक मात्र है, याकरि अधिक अधिक जानने। जैसैं अंक सदृष्टि करि मान के स्पर्धक पांच सैं बारा अर तातैं क्रोध, माया, लोभके क्रम तै तीन तीन अधिक–क्रोध–५१५, मान–५१२, माया–५१८, लोभ–५२१ बहुरि इस अश्वकर्ण का प्रारभ समय विषैं जो अनुभाग बंध हो है, तिसविषैं भी ऐसैं ही अल्पबहुत्व का क्रम जानना। बहुरि यहु अनुभाग का कथन अत दीपक समान है, तातैं याके पहिले गुणस्थाननि विषैं जो अनुभाग सत्व है, तिस विषैं भी ऐसैं ही अल्पबहुत्व है ऐसैं जानना।

रसखंडफड्ढयाओ, कोहादीया हवंति अहियकमा।
अवसेसफड्ढयाओ, लोहादि अणंतगुणियकमा ॥४६५॥

रसखंडस्पर्धकानि, क्रोधादिकानां भवति अधिकक्रमाणि।
अवशेषस्पर्धकानि, लोभादेः अनंतगुणितक्रमाणि ॥४६५॥

टीका – घात करने कौ प्रथम अनुभाग काडकरूप ग्रहे जे स्पर्धक, ते क्रोध के स्तोक है। तातैं मान के विशेष अधिक है। तातैं माया के विशेष अधिक है। तातैं लोभ के विशेष अधिक हैं। इहातैं पहिले जे अनुभाग काडक भए, तिनविषैं अनुभाग सत्व के अनुसारि मान के स्तोक, तातैं क्रोध, माया, लोभ के क्रम तैं विशेष अधिक स्पर्धक ग्रहण होते थे, अब परिणामनि के विशेप तैं विशेष घात पाइ अपने अपने अनुभाग सत्व कौ अनत का भाग दीए तहां बहुभाग मात्र अब कीया इस काडक करि गृहीत जो अनुभाग है, सो क्रोध का स्तोक, तातैं मान, माया लोभ के क्रम तैं विशेष अधिक हो है। अक सदृष्टि करि इस काडक करि ग्रहे क्रोध के तीन सै सित्यासी, मान के च्यारि सै अस्सी, माया के पाच सै दश, लोभ के पाच सै उगणीस, स्पर्धक जानने (क्रोध–३८७, मान–४८०, माया–५१०, लोभ–५१९) बहुरि प्रथम अनुभाग काडक का घात भए पीछै अवशेप स्पर्धक रहे, ते लोभ के स्तोक, तातैं माया के अनत गुणे तातैं मान के अनत गुणे, तातैं क्रोध के अनत गुणे जानने। अक सदृष्टि करि जैसैं प्रथम काडक का घात भए पीछै अवशेष रहे स्पर्धक, ते लोभ के दोय, तातैं माया, मान, क्रोध के क्रम तैं चौगुणे चौगुणे जानने। क्रोध-१२८, मान-३२, माया-८, लोभ-२।

इहां आशंका – जो काडक विषै विशेष अधिकपना कह्या तो अवशेष अनुभाग विषै अनत गुणापना कैसै सभवै ?

ताका समाधान – अक सदृष्टि अपेक्षा कहिए है। मान का अनुभाग सत्व पांच सै बारह, तातै क्रोध का तीन अधिक, माया का छह अधिक, लोभ का नव अधिक है। तहा अधिक प्रमाण कौ जुदे राखि, पांच सै बारह कौं अनत की सदृष्टि च्यारि, ताका भाग देइ, तहा एक भाग बिना बहुभाग $\frac{५१२}{४}$ तीन सै चौरासी, तामै क्रोध विषै तीन अधिक कहे थे, ते मिलाए क्रोध काडक विषै तीन सै सित्यासी स्पर्धकनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भागमात्र $\frac{५१२}{४}$ एक सौ अठाईस स्पर्धक प्रमाण क्रोध का अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि इस अवशेष एक भाग कौ च्यारि का भाग देइ तहा बहुभाग $\frac{५१२।३}{४।४}$ छिनवै, तिनकौ पहले बहुभाग तीन सै चौरासी कहे थे, तिनमें जोडै मान कांडक का प्रमाण च्यारि सै अस्सी (४८०) हो है। अवशेष एक भाग $\frac{५१२}{४।४}$ मात्र बत्तीस स्पर्धक प्रमाण मान का अवशेष अनुभाग सत्व हो है। बहुरि यहु अवशेष एक भाग रह्या, ताकौ च्यारि का भाग देइ, तहा बहुभाग $\frac{५१२।३}{४।४।४}$ चौईस, तिनकौ पूर्वै मान काडक च्यारि सै अस्सी कह्या था, तामै जोडै अर माया का अधिक प्रमाण छह, तिनकौ अधिक कीएं माया कांडक का प्रमाण पांच सै दश (५१०) हो है। अवशेष एक भागमात्र $\frac{५१२}{४।४।४}$ आठ स्पर्धक प्रमाण माया का अवशेष सत्व हो है। बहुरि इस अवशेष एक भाग कौ च्यारि का भाग देइ तहां बहुभाग– $\frac{५१३।३}{४।४।४।४}$ छह, तिनकौ अधिक प्रमाण रहित जो माया काडक पाच सै च्यारि, तामै जोडि इहा लोभ का अधिक प्रमाण नव, तिन कौ अधिक कीए लोभ काडक का प्रमाण पाच सै उगणीस (५१९) आवै है। अवशेष एक भाग मात्र $\frac{५१२}{४।४।४।४}$ दोय स्पर्धक प्रमाण लोभ के अवशेष अनुभाग सत्व का प्रमाण हो है। असै क्रोध, मान, माया, लोभ काडक का प्रमाण तो विशेष अधिक क्रम लीएं हो है। अर अवशेष रह्या अनुभाग का प्रमाण अंनत गुणा क्रम लीएं हो है, तिनकी रचना असी —

नाम	क्रोध	मान	माया	लोभ
पूर्व अनुभाग	५१५	५१२	५१८	५२१
काडक अनुभाग	३८७	४८०	५१०	५१९
अवशेष अनुभाग	१२८	३२	८	२

इहा काडक अनुभाग अर अवशेष अनुभाग के बीचि ड्योढी लीक (लकीर) करी है, सो हीनाधिक अनुभाग प्रगट करने के अर्थि जानना। असे क्रोधादिक विषै घटता क्रम लीए अनुभाग काडक करना, सो अश्वकर्ण करण है, ताका वर्णन कीया।

अब अश्वकर्ण करण अवस्था विषै ही भए अर पूर्वै ससार अवस्था विषै सभवते थे जे पूर्व स्पर्धक, तिनतै अनत गुणा घटता अनुभाग लीए असे जे अपूर्व स्पर्धक, तिनका स्वरूप कहिए है। सो पहिले पूर्व स्पर्धकनि का स्वरूप जाने बिना अपूर्व स्पर्धकनि का ज्ञान न होइ, तातै इहा पूर्व स्पर्धकनि का किछू स्वरूप कहिए है–

सर्व कर्म परमाणू विषै जाविषै अनुभाग के थोरे अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है असे जो परमाणू सो जघन्य वर्ग कहिए। असे असे समान परमाणूनि का पुज, ताका नाम जघन्य वर्गणा है। वहुरि जघन्य वर्गणा तै एक अविभाग प्रतिच्छेद जिनमै अधिक पाइए असे एक एक वर्ग कहिए परमाणू, तिनका पुज कौ द्वितीय वर्गणा कहिए। असे क्रम तै एक एक अविभाग प्रतिच्छेद करि वधती जे वर्ग कहिए वर्गनि का पुजरूप एक एक वर्गणा यावत् होइ तावत् पर्यंत जेती वर्गणा भई तिन सर्व वर्गणानि का पुज कौ जघन्य स्पर्धक कहिए। वहुरि ताके अनतरि जघन्य वर्ग तै दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त जे वर्ग, तिनका समूहरूप द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा हो है। वहुरि पूर्ववत् यातै एक एक अविभाग प्रतिच्छेद वधती लीए वर्गनि का पुजरूप, तातै द्वितीयादि वर्गणा हो हैं। वहुरि असे ही जघन्य वर्गणा तै तिगुणा, चौगुणा आदि जेथवा स्पर्धक होइ तितना गुणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप जो वर्गणा होइ, सो तो तृतीय, चतुर्थ आदि स्पर्धकनि की

प्रथम वर्गणा जाननी । अर ऊपरि एक एक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक क्रम लीए वर्गनि का समूह रूप अपनी अपनी द्वितीयादि वर्गणा जाननी । इहा सर्व कर्म परमाणूनि का प्रमाण कौ किंचित् अधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीएं प्रथम वर्गणा के वर्गनि का प्रमाण आवे है । याकौ दोगुणहानि का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवे है, सो एक विशेष करि घटता द्वितीयादि वर्गणानि विषै वर्गनि का प्रमाण हो है, ऐसै प्रथम गुणाहानि विषै क्रम जानना ।

बहुरि प्रथम गुणहानि तै द्वितीयादि गुणहानिनि विषै आधा आधा प्रमाण लीए वर्गणा के वर्गनि का अर विशेष का प्रमाण जानना । ऐसै कर्म परमाणूनि विषै नाना गुणहानि पाइए है । इहा अनुभाग रचना विषै गुणाहानि वा नाना गुणहानिनि का प्रमाण यथासम्भव अनत है । तहा एक एक गुणहानि विषै पूर्वोक्त प्रकार स्पर्धक अनत है । एक एक स्पर्धक विषै वर्गणा अनती है । सो एक गुणहानि विषै जो वर्गणानि का प्रमाण, सोई गुणहानि आयाम का प्रमाण जानना । ऐसी गुणहानि जेती पाइए, तिनके प्रमाण का नाम नानागुणहानि है ।

अकसदृष्टि करि सर्व कर्म प्रदेशरूप द्रव्य इकतीस सै (३१००) गुणहानि प्रमाण आठ, नानागुणहानि पाच, तहा सर्व द्रव्य कौ किंचित् अधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै वर्ग दोय सै छप्पन है । याकौ दो गुणहानि का भाग दीए विशेष का प्रमाण सोलह, सो इतना इतना घाटि द्वितीयादि वर्गणा होइ । बहुरि ऐसै क्रम तै जिस वर्गणा विषै प्रथम गुणहानि का प्रथम वर्गणा तै आधा एक सौ अठाईस वर्ग पाइए, सो द्वितीय गुणहानि की प्रथम वर्गणा है । इस ही चय का प्रमाण भी आधा आठ है । तातै आठ आठ घटते द्वितीयादि वर्गणा के वर्ग जानने । ऐसै गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा प्रमाण जानना । ऐसी पाच गुणहानि सर्वत्र जाननी । ऐसै ही यथार्थ कथन का अर्थ जानना ।

तहा जघन्य स्पर्धक तै लगाय अनत स्पर्धक लता भागरूप है । तिनके ऊपरि अनत स्पर्धक दारु भागरूप है । तिनके ऊपरि अनत स्पर्धक अस्थिभागरूप है । तिनके ऊपरि उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत अनत स्पर्धक- शैल भागरूप है । तहा प्रथम स्पर्धक देशघाति का जघन्य स्पर्धक है । तातै लगाय लताभाग के सर्व स्पर्धक अर दारु भाग के अनतवां भाग मात्र स्पर्धक देशघाति है । तहा अंत विषै देशघाति उत्कृष्ट स्पर्धक भया ।

बहुरि ताके ऊपरि सर्वघाति का जघन्य स्पर्धक है। तातै लगाय ऊपरिके सर्व स्पर्धक सर्वघाति है। तहा अत स्पर्धक उत्कृष्ट सर्वघाति जानना। तहा केवल बिना च्यारि ज्ञानावरण, तीन दर्शनावरण अर सम्यक्त्व मोहनी, सज्वलन चतुष्क, नोकषाय नव, अतराय पाच इन छब्बीस प्रकृतिनि की लता समान स्पर्धक की प्रथम वर्गणा, सो एक एक वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा समान है।

बहुरि वेदनीय आयु नाम गोत्र इन अघाति कर्मनि की भी प्रथम वर्गणा तैसै ही परस्पर समान है।

बहुरि मिथ्यात्व बिना केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण, निद्रा पाच, मिश्रमोहनी, सज्वलन बिना बारह कषाय इन सर्वघाति वीस प्रकृतिनि के देशघाति स्पर्धक है नाही, तातै सर्वघाति जघन्य स्पर्धक वर्गणा तैसै ही परस्पर समान जाननी। तहा पूर्वोक्त देशघाति छब्वीस प्रकृतिनि की अनुभाग रचना देशघाति जघन्य स्पर्धक तै लगाय उत्कृष्ट देशघाति स्पर्धक पर्यंत होइ। तहा सम्यक्त्व मोहनी का तो इहा ही उत्कृष्ट अनुभाग होइ निवर्‌या, अवशेष पचीस प्रकृतिनि की रचना तहा तै ऊपरि सर्वघाति उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत जाननी। बहुरि सर्वघाति वीस प्रकृतिनि की रचना सर्वघाति का जघन्य स्पर्धक तै लगाय उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत है।

तहां विशेष इतना – सर्वघाति दारु भाग के स्पर्धकनि का अनतवां भाग मात्र स्पर्धक पर्यंत मिश्रमोहनी के स्पर्धक जानने, ऊपरि नाही हैं। बहुरि इहा पर्यत मिथ्यात्व के स्पर्धक नाही है। इहातै ऊपरि उत्कृष्ट स्पर्धक पर्यंत मिथ्यात्व के स्पर्धक है। बहुरि च्यारि अघातिया कर्मनि की भी देशघाति जघन्य तै लगाय उत्कृप्ट पर्यंत वा सर्वघाति जघन्य तै लगाय उत्कृष्ट पर्यंत परस्पर समान अनुभाग रचना जाननी। ऐसै ससार अवस्था विषै सभवते पूर्व स्पर्धक जानने।

अब इहा अश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषै भए ऐसे अपूर्व स्पर्धक, तिनिका व्याख्यान करिए है –

ताहे संजलणाणं, देसावरफड्ढयस्स हेट्ठादो।
णंतगुणूणमपुव्वं, फड्ढयमिह कुणदि हु अणंतं ॥४६६॥

तस्मिन् सज्वलनानां, देशावरस्पर्धकस्य अधस्तनात्।
अनंतगुणोनमपूर्वं, स्पर्धकमिह करोति हि अनंतं ॥ ४६६ ॥

टीका – तहां अश्वकर्ण का प्रारभ समय विषै च्यारयो सज्वलन कषायनि का युगपत् अपूर्व स्पर्धक देशघाति जघन्य स्पर्धक तै नीचै अनत गुणा घटता अनुभाग रूप करे है । पूर्व स्पर्धकनि विषै जघन्य स्पर्धक की जो जघन्य वर्गणा थी, ताके नीचै घटता अनुभाग लीए कोई वर्गणा थी नाही, सो अब इहा जघन्य स्पर्धक की जघन्य वर्गणा के नीचै अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा की रचना भई । तहां पूर्व स्पर्धकनि की जघन्य वर्गणा तै भी अपूर्व स्पर्धकनि की उत्कृष्ट वर्गणा विषै भी अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद अनतवा भाग मात्र हो है । ऐसै अपूर्व स्पर्धक हो है, तिनका प्रमाण अनंत जानना ।

गणणादेयपदेसगगुणहाणिट्ठाणफड्ढयाणं तु ।
होदि असंखेज्जदिमं, अवरादु वरं अणंतगुणं ।।४६७।।

गणनादेकप्रदेशकगुणहानिस्थानस्पर्धकानां तु ।
भवति असंख्येयं, अवरतो वरमनंतगुण ।। ४६७ ।।

टीका – सो अनत कैसा है ? सो कहिए है– गणना करि कै प्रदेश गुणहानि कहिए अनुभाग रचना विषै जे वर्गणा, तिनविषै प्रदेश जे परमाणू, तिनका प्रमाण एक एक विशेष घटतै सतै जहा आधा होइ, तहातै पहलै एक गुणहानि कहिए । तिस एक गुणहानि विषै स्पर्धकनि का प्रमाण अभव्यराशि तै अनत गुणा वा सिद्ध राशि के अनंतवे भाग मात्र है । ताकौ अपकर्षण भागहार तै असख्यात गुणा जो भागहार, ताका भाग दीए एक भाग मात्र अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनत सख्यातमात्र जानना । तहा जघन्य अपूर्व स्पर्धक तै उत्कृष्ट अपूर्व स्पर्धक विषै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद अनत गुणे जानना । सो अनुभाग के अल्पबहुत्व का विशेष इहा कहिए–

अपूर्व स्पर्धकनि विषै प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद जीवराशि तै अनत गुणे हैं, तथापि औरनि तै स्तोक है । बहुरि याकौ अनंत का भाग देइ तहा बहुभाग तिस ही मै मिलाए, द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद हो है । ऐसै ही अत स्पर्धक पर्यंत क्रम जानना । सो यहु अल्पबहुत्व वर्गणानि विषै पाइए है । जे सर्व परमाणू रूप वर्ग, तिन सबनि कै अविभाग प्रतिच्छेद मिलाय करि कह्या है । बहुरि एक एक वर्ग की अपेक्षा प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै द्वितीय तृतीयादि स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषै दूणे, तिगुणे आदि अविभाग प्रतिच्छेद जानने । जातै आदि वर्ग तै आदिवर्ग के अविभाग प्रतिच्छेद का प्रमाण जेथवा

स्पर्धक होइ तितना गुणा ही हो है । कषायप्राभृत द्वितीय नाम महाधवल[1] विषै भी असें ही कह्या है । सोई विशेष करि कहिए है–

स्थिति सबधी असख्यात प्रमाण लीए जो द्व्यर्ध गुणहानि, ताकरि गुणित समय प्रबद्ध प्रमाण अपना अपना द्रव्य स्थापि, ताकौ अनुभाग सबधी अनत प्रमाण लीए जो किंचिदून ड्योढ गुणहानि, ताका भाग दीए प्रथम वर्गणा विषै परमाणूनि का प्रमाण आवै है। एक गुणहानि विषै जेता स्पर्धकनि का प्रमाण सो एक गुणहानि स्पर्धक शलाका कहिए है। एक स्पर्धक विषै जेता वर्गणानि का प्रमाण, सो एक स्पर्धक वर्गणा शलाका कहिए । इन दोऊनि कौ परस्पर गुणै अनुभाग सबधी गुणहानि आयाम का प्रमाण होइ । बहुरि प्रथम वर्गणा कौं गुणहानि तै दूणा प्रमाण लीए जो दोगुणहानि, ताका भाग दीए विशेष का प्रमाण आवै है । वर्गणा वर्गणा प्रति जितने परमाणू घटै, ताका नाम इहा विशेष जानना, सो विशेष कौ दोगुणहानि करि गुणे प्रथम वर्गणा होइ । बहुरि एक परमाणू विषै जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए, तिनके समूह का नाम वर्ग है, याकरि प्रथम वर्गणा कौ गुणै प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है । बहुरि यातै दूणे द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद है । यातै द्वितीय भाग अधिक तृतीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के है, यातै तृतीय भाग अधिक चतुर्थ स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के हैं असैं क्रमतै उत्कृष्ट सख्यातवा भाग अधिक पर्यंत तौ सख्यात भाग वृद्धि, ताके ऊपरि उत्कृष्ट असख्यातवा भाग अधिक पर्यंत असख्यात भाग वृद्धि, ताके ऊपरि अत पर्यंत अनत वृद्धि हो है । तहा द्विचरम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि कौ एक घाटि अपूर्व स्पर्धक प्रमाण का भाग देइ तहा एक भाग तामे जोडै, चरम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है । सो प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि तै द्वितीय तृतीयादि स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रम तै दोय गुणा, तिगुणा आदि होइ, अतस्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै अपूर्व-स्पर्धक प्रमाण करि गुणित अविभाग प्रतिच्छेद हो है । सो यहु स्थूलपनै कथन है ।

सूक्ष्मपने करि जेते विशेष घटैं, तिन विशेषनि के जेते वर्ग होइ, तिनके अवि-भाग प्रतिच्छेद घटावने कौ द्वितीयादि स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणानि का स्थूलपनै जो अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कह्या, तामै किंचित् न्यूनपना जानना । तहा

१.–यहा जयधवल शब्द चाहिए ।

प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै द्वितीय वर्गणा विषै एक विशेष, तृतीय वर्गणा विषै दोय विशेष, चतुर्थ वर्गणा विषै तीन विशेष असैं क्रम तै विशेष घाटि घाटि पाइए है, तातै सिद्धराशि के अनंतवे भागि वा अभव्य राशि तै अनत गुणी जो एक स्पर्धक वर्गणा शलाका, तितने विशेष प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै घटते जानने । सो विशेषनि के परमाणूनि का प्रमाण कौ दूणा जघन्य वर्ग करि गुणै जो प्रमाण होइ, तितना द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै ऋण जानना। बहुरि तृतीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणानि विषै प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै दूणा एक स्पर्धक वर्गणा शलाका मात्र विशेष घटै, तिनके परमाणूनि का प्रमाण कौ तिगुणा जघन्य वर्ग करि गुणै तहा ऋण हो है । असैं क्रम तै अत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै एक घाटि अपूर्व स्पर्धक प्रमाण करि गुणित एक स्पर्धक वर्गणा शलाका मात्र विशेष घटै, तिनके परमाणूनि का प्रमाण कौ अपूर्व स्पर्धक का प्रमाण करि गुणित जो जघन्य वर्ग, ताकरि गुणै तहां ऋण हो है । असैं कह्या अपना अपना ऋण, ताकी पूर्वोक्त अपना अपना स्थूल प्रमाण मै घटाए सूक्ष्म तारतम्यरूप अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण आवै है । असै अव्यवधान कहिए निरंतरानै स्पर्धकनि का अल्पबहुत्व कह्या । बहुरि व्यवधान कहिए सातर ताहिं करि कहिए है –

प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै अत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद अनत गुणे है । किंचित् ऊन अपूर्व स्पर्धक प्रमाण करि गुणित जानने । असैं क्रोध मान माया लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि विषै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि का अल्पबहुत्व का व्याख्यान समान जानना ।

पुव्वाण फड्ढयाणं, छेत्तूण असंखभागदव्वं तु ।
कोहादीणमपुव्वं, फड्ढयमिह कुणदि अहियकमा ।।४६८।।

पूर्वान् स्पर्धकान्, छित्वा असंख्यभागद्रव्यं तु ।
क्रोधादीनामपूर्वं, स्पर्धकमिह करोति अधिकक्रमं ।। ४६८ ।।

टीका – संज्वलन क्रोध मान माया लोभ के पूर्व स्पर्धकनि का जो सर्व द्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार मात्र असख्यात का भाग दीएं, तहा एक भाग मात्र द्रव्य कौ ग्रहि इहा अपूर्व स्पर्धक करै है । सोई कहिए है —

स्थिति सम्बधी द्वयर्धगुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र मोहनीय का देशघाति द्रव्य है, जातै मोह के सर्वघाति द्रव्य का इहा अभाव है । ताकौ अनुभाग सवधी

समखंडं सविसेसं, णिक्खवियोकट्टिदादु सेसधणं ।
पक्खेवकरणसिद्धं, इगिगोउंछेण उभयत्थ ।।४६६।।

समखंडं सविशेषं, निक्षिप्यापकर्षितात् शेषधनं ।
प्रक्षेपकरणसिद्धं, एकगोपुच्छेन उभयत्र ।। ४६६ ।।

टीका – अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसविषै कितने इक द्रव्य तो विशेष सहित समखण्डरूप अपूर्व स्पर्धकनि विषै निक्षेपण करि अवशेष धन है, सो असैं एक गोपुच्छ करि उभयत्र कहिए पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै निक्षेपण करना सिद्ध भया । सोई कहिए है—

अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसविषै केता इक द्रव्य करि तो अपूर्व स्पर्धक पूर्वै न थे, ते नवीन सद्भावरूप करिए है अर अवशेष द्रव्य रहे, सो पूर्वस्पर्धक पूर्वै थे अर अपूर्व स्पर्धक नए भए, तिनविषै निक्षेपण करिए है ।

तहा अपूर्व स्पर्धक केते द्रव्य करि करिए है ? सो कहिए है —

पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै तिस द्रव्य करि केते इक वर्ग करिए है । बहुरि असैं ही दोय घाटि अपकर्षण भाग मात्र पूर्व स्पर्धक की द्वितीयादि वर्गणानि के परमाणूनिकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहा एक भागमात्र द्रव्यकौ ग्रहि, अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै निक्षेपण करिए है । इनकौ मिलाए वर्गणा के द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए तहा एक भाग बिना बहुभाग मात्र द्रव्य भया, सो वर्गणा का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देने तै अर एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र वर्गणा का द्रव्य ग्रह्या, तातै एक घाटि अपकर्षण भागहार करि गुणने तै यहु द्रव्य पूर्व स्पर्धक की वर्गणा का द्रव्य के समान हो है, जातै पूर्व स्पर्धकनि की सर्व वर्गणानि के द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग मात्र द्रव्य अपकर्षण कीया तब तहा बहुभाग मात्र द्रव्य रह्या सो पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का द्रव्य भी वर्गणाद्रव्य को अपकर्षण भागहार का भाग दीए बहुभाग मात्र रह्या, सो इतना ही यहु द्रव्य भया, सो इतने द्रव्य करि तौ अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा भई । बहुरि ताके ऊपरि इतने इतने द्रव्य ही करि अपूर्व स्पर्धक की अन्य द्वितीयादि वर्गणा भई, सो अपूर्व स्पर्धकनि का जो प्रमाण अर एक स्पर्धकनि विषै जो वर्गणानि का प्रमाण इन दोऊनि कौ परस्पर

गुणे, जेता प्रमाण होइ, तितनी अपूर्वस्पर्धकनि की वर्गणा है, सो एक वर्गणा का पूर्वोक्त प्रमाण द्रव्य होइ तो इतनी वर्गणा का केता द्रव्य होइ ऐसे त्रैराशिक करि पूर्वोक्त द्रव्यकौ अपूर्व स्पर्धक की वर्गणानि का प्रमाण करि गुणें अपूर्व स्पर्धक की वर्गणानि के आदि धनका प्रमाण हो है। सो यहु तौ पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के सदृश अपूर्व स्पर्धकनि की सर्व वर्गणानि की समान अपेक्षा करि समपट्टिका द्रव्य भया। अब इनविषै जो विशेष[1] कहिए चय, ते जैसे वधती पाइए है सो कहिए है—

पूर्व स्पर्धकनि विषै गुणहानि गुणहानि प्रति उपरि तै नीचै दूणा विशेष का प्रमाण है, सो इहा पूर्वस्पर्धक की प्रथम गुणहानि के नीचै अपूर्वस्पर्धकनि की रचना भई, तातै पूर्वस्पर्धकनि की प्रथम गुणहानि विषै जो विशेष का प्रमाण पूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा कौ दोगुणहानि का भाग दीए हो है, तातै दूणा अपूर्वस्पर्धकनि विषै विशेष का प्रमाण जानना, सो ऐसा एक विशेप तौ अपूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा के नीचै भई, जो अत अपूर्वस्पर्धक की अत वर्गणा, तीहिविषै अधिक हो है। बहुरि ताके नीचै द्विचरम वर्गणा विषै दोय विशेष अधिक हो है, ऐसे क्रमतै एक एक विशेष अधिक होइ, अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का जेता प्रमाण, तितने विशेष प्रथम अपूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै हो है, सो इहा आदि एक, उत्तर एक, गच्छ अपूर्वस्पर्धक वर्गणा मात्र स्थापि **"सैकपदाहतपददले"** इत्यादि सूत्र करि जेता सकलन धन होइ तितना उत्तर धन जानना। सो पूर्वोक्त आदि धन अर इस उत्तरधन कौ जोडै जो प्रमाण होइ तितना द्रव्य कौ तिस अपकर्षण कीया द्रव्यतै ग्रहि करि ऐसे अपूर्वस्पर्धकनि की रचना करिए है। पूर्वस्पर्धक तो पूर्वै थे अपूर्व स्पर्धक पूर्वै थे, तातै तिनका सद्भाव होने कौ इतना द्रव्य तौ जुदा ही अपूर्वस्पर्धकनि विषै दीया, सो जैसे गऊ का पूछ क्रम तै मोटाई की अपेक्षा घटता हो है, तैसे इहा चय घटता क्रम होने तै अपूर्वस्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया। बहुरि ताके ऊपरि पूर्वस्पर्धकनि की भी रचना चय घटता क्रम लीए है। तातै पूर्व अपूर्वस्पर्धकनि का मिल करि भी एक गोपुच्छ हो है, सो ऐसे एक गोपुच्छ होने करि तिस अपकर्पण किया द्रव्य विषै पूर्वोक्त द्रव्य घटाए जो अवशेष द्रव्य रह्या सो पूर्वस्पर्धक वा अपूर्वस्पर्धकनि विषै सर्वत्र विभाग करि देना। तहा अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण एक शलाका स्थापि, ताका भाग अपूर्वस्पर्धक वर्गणा प्रमाण कौं दीए, अपूर्वस्पर्धक सबधी तौ एक शलाका भई

---

१ 'विशेप' के स्थान पर 'अवशेष' शब्द ख व ध हस्तलिखित प्रतियो मे मिलता है।

अर ताहीका भाग ड्योढ गुणहानि गुणित पूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण कौ दीए असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार कौ ड्योढ गुणा करिए इतनी पूर्व स्पर्धक की वर्ग[1] शलाका भई। इहां पूर्व स्पर्धक की एक गुणहानि विषै जो स्पर्धकनि का प्रमाण है, ताकौं असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण हो है, तातै असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार कह्या। अर पूर्व स्पर्धकनि विषै नाना गुणहानि अनती है, तथापि द्रव्य की अपेक्षा ड्योढ गुणहानि गुणित वर्गणा मात्र ही है, तातै ड्योढ का गुणकार कीया है, अैसा जानना। सो पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि की शलाकानि कौ मिलाय ताका भाग तिस अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो अवशेष द्रव्य रह्या था, ताकौ दीए जो प्रमाण आया, ताकौ पूर्व स्पर्धक सबंधी बहुशलाका करि गुणै पूर्व स्पर्धकनि विषै देने योग्य द्रव्य का विभाग आवै है अर तिसही कौ अपूर्व स्पर्धक संबधी एक शलाका करि गुणै अपूर्व स्पर्धकनि विषै देने योग्य द्रव्य का विभाग आवै है, सो इस अपूर्व स्पर्धक का विभागरूप द्रव्य अर जिस द्रव्य करि पूर्वै अपूर्व स्पर्धक की रचना करनी कही थी, अैसै चयधन सहित समपट्टिकारूप धन इन दोऊनि कौ मिलाएं अपूर्व स्पर्धक संबंधी सर्व द्रव्य भया। सो **'अद्धाणेण सव्वधणे खडिदे'** इत्यादि सूत्र करि ताकौ अपूर्व स्पर्धक वर्गणा प्रमाण जो गच्छ, ताका भाग दीएं मध्यधन होइ। याकौ एक घाटि जो गच्छ, ताका आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं विशेष होइ, सो एक घाटि गच्छ का आधा जो प्रमाण होइ, तितने विशेष तिस मध्यधन विषै जोडे जो होइ, तितना द्रव्य अपूर्व स्पर्धकनि की आदि वर्गणा विषै दीजिए है। तातै एक एक विशेष घटता क्रम लीए द्वितीयादि वर्गणानि विषै क्रमतै दीजिए है। अैसै एक घाटि गच्छ प्रमाण चयनि करि हीन द्रव्य अत वर्गणा विषै दीजिए है, अैसै तौ अपूर्व स्पर्धक नवीन कीए।

बहुरि पूर्व स्पर्धकनि की रचना तौ पूर्वै थी ही अब इनविषै इहा पूर्वोक्त बहुशलाकानि का जो विभाग रूप द्रव्य कह्या था, सो देना। सो **'दिवड्ढगुणहाणि-भाजिदे पढमा'** इत्यादि सूत्र करि तिस पूर्व स्पर्धक सबधी विभाग रूप द्रव्य कौ साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए जेता प्रमाण होइ तितना द्रव्य तो पूर्व स्पर्धकनि की आदि वर्गणा विषै निरूपण करिए है। बहुरि याकौ दो गुणहानि का भाग दीए अवशेष का प्रमाण होइ सो ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषै प्रथम गुणहानि पर्यंत एक एक विशेष घटता क्रम लीए अर गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा क्रम लीए द्रव्य निक्षेपण करिए है।

---

१ हस्तलिखित घ प्रति मे 'वर्गणा' मिलता है।

उक्कट्टिदं तु देदि, अपुव्वादिमवग्गणाउ हीणकमं ।
पुव्वादिवग्गणाए, असंखगुणहीणयं तु हीणकमा ।।४७०।।

अपकर्षितं तु ददाति, अपूर्वादिमवर्गणा हीनक्रमं ।
पूर्वादिवर्गणायामसंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमाः ।। ४७० ।।

टीका – पूर्वोक्त विधान करि अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसविषै ते अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै बहुत द्रव्य दीजिए है, तातै ताकी द्वितीयादि अत वर्गणा पर्यंत विषै विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा विषै जो द्रव्य दीया, तातै साधिक अपकर्षण भागहार मात्र जो असख्यात तितना गुणा घटता पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै द्रव्य दीजिए है । इहां नवीन द्रव्य दीया तिस ही की विवक्षा जाननी । इस पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का पुरातन द्रव्य वर्गणा के द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए बहुभाग मात्र है । तिस सहित नवीन दीया द्रव्य है, सो अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा के द्रव्य तै एक विशेष मात्र ही घटता जानना । जातै पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया है । बहुरि तिस पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै उपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषै एक एक चय घटता द्रव्य निक्षेपण करिए है । इस ही कथन के विशेष निर्णय करने कौ क्षेत्र रूप कल्पना करि स्थापि कथन कीजिए है—

पूर्व स्पर्धकनि का सर्व द्रव्य ड्योढ गुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र है, सो ड्योढ गुणहानि का जेता प्रमाण तितना लबा अर प्रथम वर्गणा का जेता परमाणूनि का प्रमाण तितना चौडा क्षेत्र असा स्थापना ▭ । यामै अपकर्षण कीया द्रव्य कौ जुदा करने के अर्थि चौडाई विषै अपकर्षण का भागहार का जेता प्रमाण तितने खड करिए, तब असा हो है—▭▭▭▭▭ । तहा असै अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र चौडा क्षेत्र एक खड का है, सो अपकर्षण कीया द्रव्य का स्वरूप जानना । अवशेष बहुभाग मात्र चौडा क्षेत्र अवशेष खडनि का रह्या, सो अपकर्षण कीए पीछै अवशेष पूर्व स्पर्धक स्वरूप जानने । लबे ते दोऊ ही स्पर्धक गुणहानि मात्र है । ते एक खड बहुखड असै भए ▭▭ । बहुरि तहा एक खंड असा ▭ तीहिविषै अपकर्षण कीया द्रव्य का विभाग करने के अर्थि एक गुणहानि का स्पर्धक प्रमाण कौ असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण होइ अर तहा लंबाई ड्योढ गुणहानि मात्र थी, तातै असख्यात गुणा जो

उक्कट्टिदं तु देदि, अपुव्वादिमवग्गणाउ हीणकमं ।
पुव्वादिवग्गणाए, असंखगुणहीणयं तु हीणकमा ।।४७०।।

अपकर्षितं तु ददाति, अपूर्वादिमवर्गणा हीनक्रमं ।
पूर्वादिवर्गणायामसंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमाः ।। ४७० ।।

टीका – पूर्वोक्त विधान करि अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिसविषै ते अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै वहुत द्रव्य दीजिए है, तातै ताकी द्वितीयादि अत वर्गणा पर्यत विषै विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा विषै जो द्रव्य दीया, तातै साधिक अपकर्षण भागहार मात्र जो असख्यात तितना गुणा घटता पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै द्रव्य दीजिए है । इहां नवीन द्रव्य दीया तिस ही की विवक्षा जाननी । इस पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का पुरातन द्रव्य वर्गणा के द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए बहुभाग मात्र है । तिस सहित नवीन दीया द्रव्य है, सो अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा के द्रव्य तै एक विशेष मात्र ही घटता जानना । जातै पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया है । वहुरि तिस पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै उपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषै एक एक चय घटता द्रव्य निक्षेपण करिए है । इस ही कथन के विशेष निर्णय करने कौ क्षेत्र रूप कल्पना करि स्थापि कथन कीजिए है—

पूर्व स्पर्धकनि का सर्व द्रव्य ड्योढ गुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र हैं, सो ड्योढ गुणहानि का जेता प्रमाण तितना लंबा अर प्रथम वर्गणा का जेता परमाणूनि का प्रमाण तितना चौडा क्षेत्र अैसा स्थापना ▭ । यामै अपकर्षण कीया द्रव्य कौ जुदा करने के अर्थि चौडाई विषै अपकर्षण का भागहार का जेता प्रमाण तितने खंड करिए, तव अैसा हो है—▭▭▭▭▭ । तहां अैसै अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र चौडा क्षेत्र एक खड का है, सो अपकर्षण कीया द्रव्य का स्वरूप जानना । अवशेष वहुभाग मात्र चौडा क्षेत्र अवशेष खडनि का रह्या, सो अपकर्षण कीए पीछै अवशेष पूर्व स्पर्धक स्वरूप जानने । लवे ते दोऊ ही स्पर्धक गुणहानि मात्र है । ते एक खड वहुखड अैसै भए ▭▭ । वहुरि तहा एक खंड अैसा ▭ तीहिविषै अपकर्षण कीया द्रव्य का विभाग करने के अर्थि एक गुणहानि का स्पर्धक प्रमाण कौ असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण होइ अर तहा लवाई ड्योढ गुणहानि मात्र थी, तातै असंख्यात गुणा जो

अपकर्षण भागहार, ताकौ ड्योढ गुणा कीएं जेता प्रमाण होइ तितना तिस एक खंड की लबाई विषै खड ऐसे करने । तहां एक खड विषै लम्बाई का प्रमाण अपूर्व स्पर्धकनि का ~~प्रमाण मात्र~~ आया, चौडे पूर्वोक्त प्रमाण मात्र है ही । बहुरि इन खंडनि विषै जिस द्रव्य करि अपूर्व स्पर्धक नवीन बनै, तिस द्रव्य रूप साधिक एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र खंड ग्रहण करने । इहां अपूर्व स्पर्धक प्रमाण गच्छ का एक बार सकलन धन मात्र जे पूर्व स्पर्धक सम्बन्धी विशेष तै दूणा प्रमाण लीए विशेष, तिनका अधिकपना साधिक शब्द करि जानना । सो तिन खडनि कौ ग्रहण करि पूर्वै जे अवशेष बहुखंड मात्र पूर्व स्पर्धक स्वरूप क्षेत्र ऐसा □ रह्या था, ताके नीचै अविरोधपनै जोडिए, सो जोडने योग्य तै सर्व खडनि कौ चौडाई विषै बरोबरि आगै ऐसे | | | | स्थापिए तब प्रथम वर्गणा कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीएं एक खड की चौडाई है, ताकौ इहां ग्रहे हुए खंडनि का प्रमाण एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र ताकरि गुणै चौडाई का प्रमाण हो है, सो अवशेष पूर्वस्पर्धकरूप क्षेत्र की चौडाई के समान हो है । बहुरि इहा ग्रहै हुए खंडनि का प्रमाण विषै विशेषनि का साधिकपना कह्या है, तातै तिस पूर्व स्पर्धकस्वरूप क्षेत्र तै चौडाई का प्रमाण क्रम तै किछू साधिक जानना । अर इहां जोडने योग्य खंडनि की लम्बाई अपूर्व स्पर्धक प्रमाण मात्र है, तातै नीचै जोड्या क्षेत्र का लम्बाई का प्रमाण अपूर्व स्पर्धक प्रमाण मात्र भया, सो ऐसै पूर्व स्पर्धकनि का क्षेत्र के नीचै तिस द्रव्य करि अपूर्व स्पर्धक की रचना भई तिस द्रव्यरूप जो ग्रहे खंडनि का अपूर्व स्पर्धकरूप क्षेत्र, ताकौ जोडें ऐसा
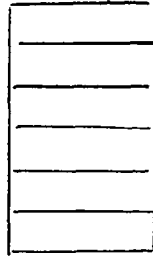
पूर्वस्पर्धक क्षेत्र
अपूर्वस्पर्धक क्षेत्र

भया । ऐसै पूर्वस्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै अपूर्वस्पर्धकनि की वर्गणा अनुक्रम तै विशेष अधिक जाननी । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जितना द्रव्य करि अपूर्वस्पर्धक बनै, तिनरूप क्षेत्र जोडने का विधान तौ कह्या अब अवशेष रह्या द्रव्य पूर्व अपूर्वस्पर्धकनि विषै देना, तिसरूप क्षेत्र जोडने का विधान कहिए है—

असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार तै ड्योढ गुणा प्रमाण लीएं खड कीएं थे, तिनविषै साधिक एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र खंड ग्रहण कीएं पीछै

अवशेष जे खड रहे, तिन विषै एक खड ऐसा □ । ताकौं सकल खंड कहिए । ताकी चौडाई विषै असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार तै ड्योढ गुणा प्रमाण मात्र खंड ऐसे |‌|‌|‌|‌|‌| करने, सोइ तितने खंडनि कौं विकल खंड कहिए । तहां एक विकल खड कौं अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी क्षेत्र की चौड़ाई विषै क्रम तै जोडना अर अवशेष विकल खडनि कौं तैसै ही पूर्व स्पर्धक सम्बन्धी क्षेत्र की चौडाई विषै अनुक्रम परिपाटी लीए जोडना । याही प्रकार जेते अवशेष सकल खड रहे, तिनकौं पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी क्षेत्र विषै अविरोधपने चौड़ाई विषै जानने । ऐसै जोडे ऐसा
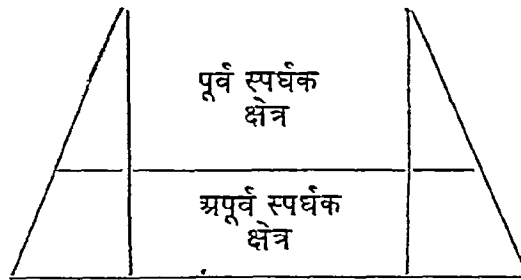
क्षेत्र भया । इहां पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै जोडै समस्त विकल खंड ते मिलि करि भी एक सकल खड प्रमाण न भए, जातै अपकर्षण भागहार मात्र विकल खंडनि करि हीन हो है । ऐसै पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै दीया किंचिदून एक सकल खड है । अर अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषै पहिले वा पीछै दीए हुए एक घाटि अपकर्षण भागहार मात्र सकल खड हैं, तातै अपूर्व स्पर्धक की अंत वर्गणा विषै दीया द्रव्य तै पूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै दीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है । असख्यात का प्रमाण इहा साधिक अपकर्षण भागहार मात्र जानना ऐसै पूर्वोक्त कथन कौ क्षेत्ररूप स्थापि प्रगट कीया ।

कोहादीणमपुव्वं, जेट्ठं सरिसं तु अवरमसरित्थं ।
लोहादिआदिवग्गणअविभागा होंति अहियकमा ।।४७१।।

क्रोधादीनामपूर्वं, ज्येष्ठं सदृशं तु अवरमसदृशं ।
लोभादिआदिवर्गणाअविभागा भवंति अधिकक्रमाः ।।४७१।।

टीका – क्रोधादि के चारचो कषायनि का अपूर्व स्पर्धकनि की उत्कृष्ट वर्गणा जो अत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा, सो अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि के प्रमाण की अपेक्षा समान है । बहुरि जघन्य वर्गणा जो प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा, सो

असमान है। तहा लोभादिक की जघन्य वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रम करि अधिक है। लोभ की जघन्य वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद तौ स्तोक है, तातै मायाकी के अधिक है, तातै मानकी के अधिक है, तातै क्रोधकी के अधिक है।

सगसगफड्ढयएहिं, सगजेट्ठे भाजिदे सगीआदि।
मज्झेवि अणंताओ, वग्गणगाओ समाणाओ ॥४७२॥

स्वकस्वकस्पर्धकैः स्वकज्येष्ठे भाजिते स्वकीयादि।
मध्येऽपि अनंता, वर्गणाः समानाः ॥४७२॥

टीका – सामान्य आलाप करि अभव्य राशि तै अनत गुणा वा सिद्ध राशि के अनतवे भाग मात्र हीनाधिकरूप जो अपना अपना स्पर्धकनि का जो प्रमाण, ताका भाग अपनी अपनी उत्कृष्ट वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कौ दीएं अपनी अपनी आदि वर्गणा का प्रमाण आवै है।

अकसदृष्टि करि जैसै च्यार्‍यों कषायनि के समान प्रमाण लीए उत्कृष्ट वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद पन्द्रह सौ बारह (१५१२) इनकौ लोभ, माया, मान, क्रोध के स्पर्धकनि का प्रमाण क्रम तै सत्ताइस, चौबीस, इकईस, अठारह का भाग दीए लोभ की जघन्य वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद छप्पन (५६), मायाकी के तरेसठि (६३), मानकी के बहत्तरि (७२), क्रोधकी के चौरासी (८४) हो है। अथवा अपनी अपनी जघन्य वर्गणानि के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कौ अपनी अपनी स्पर्धकनि का प्रमाण करि गुणै अपनी अपनी उत्कृष्ट वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है। कैसै ? सो कहिए है—

लोभादिक की प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद समूह तै दूसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के दूणे, तीसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के तिगुणे, चौथे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के चौगुणे ऐसै क्रम तै जितने अपने स्पर्धकनि का प्रमाण, तितने गुणे अंत स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है, सो च्यार्‍यो कषायनि का समान है। बहुरि मध्य विषै भी अनंत वर्गणा च्यार्‍यों कषायनि की परस्पर समान हो है, सो कथन आगै करिए है।

जे हीणा अवहारे, रूवा तेहिं गुणित्तु पुव्वफलं।
हीणवहारेणहिये, अद्धं पुव्वं फलेणहियं ॥४७३॥

ये हीणा अवहारे, रूपाः तैः गुणितं पूर्वफलं ।
हीनावहारेणाधिके, अर्धं पूर्वं फलेनाधिकं ।।४७३।।

टीका – इस गाथा का अर्थरूप व्याख्यान क्षपणासार विषै किछू कीया नाही अर मेरे जानने में भी स्पष्ट न आया, तातै इहां न लिख्या है । बुद्धिमान होइ यथार्थ याका अर्थ होइ सो जानियो ।

कोहदुसेसेणवहिदकोहे तक्कंडयं तु माणतिए ।
रूपहियं सगकंडयहिदकोहादी समाणसला ।।४७४।।

क्रोधद्विशेषेणावहितक्रोधे तत्कांडकं तु मानत्रयं ।
रूपाधिकं स्वककांडकहितक्रोधादि समानशलाकाः ।।४७४।।

टीका – क्रोधद्विक अवशेष कहिए क्रोध के स्पर्धकनि का प्रमाण कौं मान के स्पर्धकनि का प्रमाण विषै घटाएं जो अवशेष रहै, ताका भाग क्रोध के स्पर्धकनि का प्रमाण कौं दीएं जो प्रमाण आवै ताका नाम क्रोधकांडक है । बहुरि मानत्रिक विषै एक एक अधिक है, सो क्रोधकांडक तै एक अधिक का नाम मानकांडक है । यातै एक अधिक का नाम मायाकांडक है । यातै एक अधिक का नाम लोभकांडक है ।

अंकसंदृष्टि करि जैसै क्रोध के स्पर्धक अठारह, ते मान के इकईस स्पर्धक विषै घटाए अवशेष तीन, ताका भाग क्रोध के अठारह स्पर्धक कौं दीएं क्रोध कांडक का प्रमाण छह, यातै एक अधिक मान, माया, लोभ के कांडकनि का प्रमाण क्रम तै सात, आठ, नवरूप जानने । बहुरि अपने अपने कांडकनि का भाग अपने अपने स्पर्धकनि का प्रमाण कौं दीए, जो नाना कांडकनि का प्रमाण आवै, तितनी वर्गणानि के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्‍यो कषायनि के परस्पर समान हो हैं । कैसै ? सो कहिए है–

क्रोधादिक की प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा तै द्वितीय तृतीयादि स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतै दूणे, तिगुणे इत्यादि होइ अपना अपना कांडक का जेता प्रमाण, तितना स्थान भए जो स्पर्धक, ताकी प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्‍यो कषायनि के समान[1] हो हैं । बहुरि तहातै ऊपरि प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के जेते अविभाग प्रतिच्छेद, तितने तितने एक एक स्पर्धक

[1] समान के स्थान पर ब प्रति में 'असमान' पाठ मिलता है ।

की प्रथम वर्गणा विषै बधते अपने अपने काडक प्रमाण स्थान भए जो स्पर्धक, ताकी प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद समान हो है। या प्रकार अपना अपना काडक मात्र स्पर्धक भए च्यार्यो कषायनि की वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि की समानता होतै नाना कांडक वर्गणानि विषै समानता हो है।

अकसदृष्टि करि जैसै क्रोध, मान, माया, लोभ के प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद क्रमतै चौरासी, बहत्तरि, तरेसठि, छप्पन है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै तितने तितने बधते अपना काडक मात्र छह, सात, आठ, नव स्पर्धक भए। तहा प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्यो कषायनि के परस्पर समान पाचसै च्यारि है। बहुरि ताके ऊपरि तैसै ही बधती होतै अपने कांडक मात्र स्पर्धक भए तहा प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यारयो कषायनि के समान एक हजार आठ हो है। बहुरि ताके ऊपरि तैसै ही बधती होतै अपने काडक मात्र स्थान भए तहां प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेद च्यार्यो कषायनि के समान पन्द्रह सौ बारह हो है। असै अपना अपना काडक का भाग अपना अपना स्पर्धक प्रमाण कौ दोए नाना काडक का प्रमाण तीन आया सो तीन ही स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा परस्पर समानरूप है और वर्गणानि का समान रूप नाही है।

क्रोध	मान	माया	लोभ
१५१२	१५१२	१५१२	१५१२
०	०	०	०
०	०	०	०
१०९२	१०८०	१०७१	१०६४
१००८	१००८	१००८	१००८
०	०	०	०
०	०	०	०
५८८	५७६	५६७	५६०
५०४	५०४	५०४	५०४
४२०	४३२	४४१	४४८
३३६	३६०	३७८	३९२
२५२	२८८	३१५	३३६
१६८	२१६	२५२	२८०
८४	१४४	१८९	२२४
	७२	१२६	१६८
		६३	११२
			५६

ग्रैसें इहा ग्रविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण कह्या है । सो विवक्षित वर्गणा विषै जो एक परमाणू रूप वर्ग तीहि विषै जेते ग्रविभाग प्रतिच्छेद पाइए, ताकी ग्रपेक्षा कथन कीया है । सर्व वर्गनि का समूह रूप वर्गणा के ग्रविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण यथासभव जानना ।

ताहे दव्ववहारो, पदेसगुणहाणिफड्ढयवहारो ।
पल्लस्स पढममूलं, ग्रसंखगुणियक्कमा होंति ।।४७५।।

तत्र द्रव्यावहारः प्रदेशगुणहानिस्पर्धकावहारः ।
पल्यस्य प्रथममूलं ग्रसंख्यगुणितक्रमा भवति ।।४७५।।

टोका – ग्रश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषै ग्रपूर्व स्पर्धक करने का द्रव्य ग्रहण करने के ग्रर्थि सर्व द्रव्य कौ तिस ग्रपकर्षण भागहार का भाग दीया, तातै प्रदेश सबधी एक गुणहानि विषै जेता स्पर्धकनि का प्रमाण, ताकौ ग्रपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण ल्यावने के ग्रर्थि जाका भाग दीया, सो ग्रसख्यात गुणा है । तातै पल्य का प्रथम वर्गमूल ग्रसख्यात गुणा है । इहा ग्रैसा प्रयोजन जानना–

जो ग्रपकर्षण भागहार तै ग्रसख्यात गुणा वा पल्य का प्रथम वर्गमूल के ग्रसख्यातवे भाग मात्र जो भागहार, ताका भाग ग्रनुभाग सबन्धी एक गुणहानि की स्पर्धक शलाका कौ दीए प्रथम समय विषै कीए जो ग्रपूर्व स्पर्धक, तिनका प्रमाण ग्रावै है ।

ताहे ग्रपुव्वफड्ढयपुव्वस्सादीदणंतिमुवदेदि ।
बंधो हु लताणंतिमभागो त्ति ग्रपुव्वफड्ढयदो ।।४७६।।

तस्मिन् ग्रपूर्वस्पर्धकपूर्वस्यादितोऽनंतिममुदेति ।
बधो हि लतानंतिमभाग इति ग्रपूर्वस्पर्धकतः ।।४७६।।

टोका – तिस ग्रश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषै उदय निषेक सबधी सर्व ग्रपूर्व स्पर्धक ग्रर पूर्व स्पर्धक की ग्रादि तै लगाय ताका ग्रनतवा भाग उदय हो है । कैसे ? सो कहिए है–

ग्रपूर्व स्पर्धकरूप परिणया है ग्रनुभाग सत्त्व जाका ग्रैसा जो कर्म, ताका ग्रसख्यातवा भाग मात्र प्रदेशनि कौ ग्रपकर्षण करि उदीरणा कर्ता जो जीव, ताकै

वर्तमान समय विषै उदय आवने योग्य जो उदय निषेक, तीहि विषैं सर्व ही अनुभाग सत्व अपूर्व स्पर्धक स्वरूप हैं। तातैं ते तौ सर्व ही स्पर्धक उदीरणारूप है अर उदय निषेक तैं ऊपरि के निषेक, तिनके समान अनुभाग शक्ति धरै जे अपूर्व स्पर्धक ते उदय न हो है। तातैं ते अनुदीर्ण रूप है। असैं केई अपूर्वस्पर्धकनि का उदय अर केई अपूर्व स्पर्धकनि का अनुदय जानना। बहुरि पूर्व स्पर्धकनि विषै भी जे प्रथम स्थिति विषै लता दारुरूप स्पर्धक है, तिन विषै लता समान अनुभाग का अनंतवा भाग मात्र स्पर्धक उदय हो है, सो उदीरणारूप है। बहुरि उदय निषेक तैं ऊपरि के निषेकनि के समान शक्ति लीए लता भाग का अनंतवां भाग उदय न हो है, सो अनुदीर्णरूप है। बहुरि ताके उपरिवर्ती लताभाग का अनंत बहुभागनि विषै बहुभाग अर समस्त दारु भाग है सो उदय कौ न-प्राप्त हो है। असैं पूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा तैं लगाय अनतवा भाग उदयरूप हो है, अन्य अनुदयरूप है। असें अश्वकर्ण करण का प्रथम समय विषैं उदय होने का स्वरूप कह्या। बहुरि इस समय विषै सज्वलन का बध हो है। तहां पूर्वैं लता भाग के अनतवे भाग मात्र बध होता था, सो अब तातैं अनतवे भाग मात्र अपूर्व स्पर्धक का प्रथम स्पर्धक तै लगाय अत स्पर्धक पर्यंत अर पूर्व स्पर्धकनि का लता भाग का अनतवा भाग पर्यत जे स्पर्धक, तिनरूप होइ बध रूप स्पर्धक परिणमै है। इहा उदय रूप अनुभाग तै बधरूप अनुभाग अनत गुणा घटता है। अैसा जानना।

अैसैं यहु कही सो अश्वकर्ण करण काल की प्रथम समय सबन्धी प्ररूपणा जाननी।

बिदियादिसु समयेसु वि, पढमं व अपूव्वफड्ढयाण विही।
णवरि य संखगुणूणं........[1] ....पडिसमयं ॥४७७॥

द्वितीयादिषु समयेषु अपि प्रथमं व अपूर्वस्पर्धकानां विधिः।
नवरि च संख्यगुणोनं............तु प्रतिसमयम् ।४७७॥

टीका – अश्वकर्ण करण का द्वितीयादि समयनि विषै अपूर्व स्पर्धकनि का विधान, ताके प्रथम समयवत् जानना। तहा विशेष है सो कहिए है – इस गाथा विषै लिखनेवाले ने अक्षर केते इक न लिखे, तातै आधा गाथा का अर्थ न जानि इहां नाहीं लिख्या है।

---

१ छहो हस्तलिखित प्रतियो मे अैसा ही मिला। हमने कुछ जोडने का अभिप्राय नही रखा।

णवफड्ढयाण करणं, पडिसमयं एवमेव णवरिं तु ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, फड्ढयमाणं असंखगुणहीणं ॥४७८॥

नवस्पर्धकानां करणं, प्रतिसमयं एवमेव नवरि तु ।
द्रव्यमसंख्येयगुणं, स्पर्धकमानं असंख्यगुणहीनम् ॥४७८॥

टीका – ऐसें ही प्रथम समयवत् समय समय प्रति नवीन स्पर्धकनि कौं करै है । विशेष इतना– तहा द्रव्य तौ क्रम तै असख्यात गुणा बधता अपकर्षण करिए है । अर नवीन स्पर्धक कीएं तिनका प्रमाण असख्यात गुणा घटता हो है । सोई कहिए है–

अश्वकर्ण का द्वितीय समय विषै जो प्रथम समय विषै पूर्व स्पर्धकनि के द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य अपकर्षण किया था, तातै असख्यात गुणा द्रव्य कौ पूर्व स्पर्धक अर प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनका जो द्रव्य था, तातै अपकर्षणकरि तिस द्रव्य का असख्यातवा भाग मात्र द्रव्य करि तौ इहां नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है । ते प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धक तिनकी प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के नीचै घटता अनुभाग लीएं करिए है ।

तहा तिस प्रथम वर्गणा तै एक एक वर्गणा प्रति एक एक विशेष मात्र द्रव्य की अधिकता द्वितीय समय सबधी नवीन अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा पर्यंत जाननी । तहा पूर्वोक्त प्रकार समपट्टिका धन, चयधन जोडै जेता द्रव्य होइ तितने द्रव्य करि तौ इहा नवीन स्पर्धक बनै । बहुरि अपकर्षण कीया द्रव्य विषै इतना द्रव्य घटाए जो अवशेष द्रव्य रह्या ताकौ द्वितीय समय विषै कीने नवीन अपूर्व स्पर्धक अर पूर्वस्पर्धक, अर अपूर्व स्पर्धक तिनिका एक गोपुच्छ भया, तिसविषै चय घटता क्रम करि सर्वत्र देना । प्रथम समय विषै कीने बहुरि प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनिके प्रमाण तै द्वितीय समय विषै कीए नवीन अपूर्वस्पर्धक तिनका प्रमाण असख्यात गुणा घटता जानना । बहुरि अश्वकर्ण करण का तृतीय समय विषै जो द्वितीय समय विषै द्रव्य अपकर्षण कीया, तातै असंख्यात गुणा द्रव्य पूर्व स्पर्धक अर प्रथम द्वितीय समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनके द्रव्य तै अपकर्षण करिए है, ताके असख्यातवा भागमात्र द्रव्य करि तौ द्वितीय समय विषै कीए स्पर्धक, तिनके नीचै इहा नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है अर अवशेष द्रव्य कौं तृतीय, द्वितीय, प्रथम समय सबंधी अपूर्व स्पर्धकनि का एक गोपुच्छ भया ताविषै क्रम

करि निक्षेपण करिए है । इहां द्वितीय समय विषैं कीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण तैं तृतीय समय विषै कीए नवीन अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण असख्यात गुणा घटता जानना । ऐसैं ही अपूर्व स्पर्धक करण काल का अंत समय पर्यंत समय समय प्रति असख्यात गुणा द्रव्य कौ अपकर्षण करै है अर नवीन अपूर्व स्पर्धक नीचै नीचै हो है, तिनका प्रमाण असंख्यात गुणा घटता हो है । अन्य विशेष जैसैं प्रथम समय विषैं कह्या है तैसैं जानना ।

पढमादिसु दिज्जकमं, तक्कालजफड्ढयाण चरिमो त्ति ।
हीणकमं से काले, असंखगुणहीणयं तु हीणकमं ॥४७६॥

प्रथमादिषु देयक्रमं, तत्कालजद्रव्यस्पर्धकानां चरम इति ।
हीनक्रमं स्वे काले, असंख्यगुणहीनकं तु हीनक्रमम् ॥४७९॥

टीका – अपकर्षण कीया द्रव्य कौ जैसै दीया तैसै जो अनुक्रम सो देय क्रम कहिए, सो ऐसै है–

अपूर्व स्पर्धक करणकाल का प्रथमादि समयनि विषै तिस काल कीए स्पर्धकनि का अत पर्यत तौ विशेष हीन क्रम लीए अर ताके अनंतरि असख्यात गुणा घटता ताके ऊपरि विशेष हीन क्रम लीए जानना । सो कहिए है–

प्रथम समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य, तिसविषै तिस समय कीए अपूर्व स्पर्धक, तिनकी प्रथम वर्गणा विषै बहुत द्रव्य दीजिए है । तातै तिनकी द्वितीय वर्गणा आदि अत वर्गणा पर्यत चय घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा विषै दीया द्रव्य तै अपूर्वस्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषै असख्यात गुणा घटता है । तातै ताके ऊपरि तिनकी अत वर्गणा पर्यत चय घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए बहुरि ? द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य, तिसविषै तिस समय कीए नवीन अपूर्वस्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणा विषै बहुत द्रव्य अर द्वितीयादि अत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है । बहुरि तिसकी अत वर्गणा के द्रव्य तै प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषै असख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है । तातै ताके ऊपरि तिनकी अत वर्गणा पर्यंत वा ताके ऊपरि स्पर्धकनि की प्रथमादि अत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है । बहुरि तृतीय ..
नवीन बने अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै बहुत द्रव्य, ताके ऊपरि .
वर्गणा पर्यत चय घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । ताके ऊपरि द्वितीय

कीए अपूर्व स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा विषै असख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। ताके उपरि तिनकी अत वर्गणा पर्यंत वा प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धक की प्रथमादि अनत वर्गणा पर्यंत वा पूर्व स्पर्धकनि की प्रथमादि अत वर्गणा पर्यंत चय घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। असै ही चतुर्थादि समयनि विषै भी जानना। इहां विवक्षित समय विषै जे अपूर्व स्पर्धक बनै, ते तौ अपकर्षण कीया द्रव्य विषै केते इक द्रव्य तै बनै अर तिनके ऊपरि जे स्पर्धक है, ते पूर्वे थे ही। बहुरि तिन सबनि विषै अवशेष द्रव्य विभाग करि दीया, तातै निजकाल विषै बने अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा विषै दीया द्रव्य तै अनतर वर्गणा विषै असख्यात गुणा घटता द्रव्य दीया कह्या, अन्यत्र चय घटता क्रम लीए कह्या है।

पढमादिसु दिस्सकमं, तक्कालजफड्ढयाण चरिमो त्ति।
हीणकमं से काले, हीणं हीणं कमं तत्तो ॥४८०॥

प्रथमादिषु दृश्यक्रमं, तत्कालजस्पर्धकानां चरम इति।
हीनक्रमं स्वे काले, हीनं हीनं क्रमं ततः ॥४८०॥

टीका – अपूर्व स्पर्धक करण काल का प्रथमादि समयनि विषै दृश्य कहिए देखने मे आवै असा परमाणूनि का प्रमाण, तिनका अनुक्रम सो दृश्यक्रम कहिए। सो कैसै है ? सो कहिए है–

तहा तिस विवक्षित समय विषै बने अपूर्व स्पर्धक, तिनका तो जो देय द्रव्य, सो ही दृश्य द्रव्य है। जातै तिस समय अपकर्षण कीया द्रव्य ही तै तिनकी रचना भई है। सो तिनकी प्रथम वर्गणा तै लगाय अत वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दृश्य है। बहुरि तिस अत वर्गणा के द्रव्य तै ताके ऊपरि जो वर्गणा, तिसका भी दृश्य द्रव्य एक चय मात्र घटता है जातै दिया द्रव्य तौ तिस अत वर्गणा द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता है तथापि दीया द्रव्य अर पूर्वे वाका सत्तारूप पुरातन द्रव्य दोऊ मिलि तिसतै एक चय मात्र घटता दृश्य द्रव्य हो है। बहुरि ताके उपरि पूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा पर्यंत दीया द्रव्य अर पूर्व द्रव्य मिलि क्रम तै चय प्रमाण करि घटता दृश्य द्रव्य जानना। असै विवक्षित समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धक तिनकी प्रथम वर्गणा तै लगाय पूर्व स्पर्धकनि की अत वर्गणा पर्यंत एक गोपुच्छ भया, तातै तहा चय घटता क्रम लीए ही दृश्य द्रव्य जानना।

असै अश्वकर्ण करण काल का प्रथमादि समयनि विषै यावत् प्रथम अनुभाग काडक का घात न होइ तावत् स्थितिकाडक, अनुभाग काडक, स्थितिबध, अनुभाग

सत्त्व तौ तिनि समयनि विषै समान रूप है। अर अप्रशस्तकर्मनि का अनुभाग बध समय समय अनत गुणा घटता है। अर गुणश्रेणी विषै समय समय असख्यात गुणा द्रव्य कौ अपकर्षण करि दीजिए है। अर अतीत समय संबधी स्पर्धकनि के नीचै अपूर्व शक्ति लीए नवीन अपूर्व स्पर्धक समय समय प्रति करिए है।

असै प्रथम अनुभाग काडक का घात भए कहा हो है ? सो कहै है–

पढमाणुभागखंडे, पडिदे अणुभागसंतकम्मं तु।
लोभादणंतगुणिदं, उवरिं पि अणंतगुणिदकमं ॥४८१॥

प्रथमानुभागखंडे, पतिते अनुभागसत्त्वकर्म तु।
लोभादनंतगुणितमुपर्यपि अनंतगुणितक्रमं ॥४८१॥

टीका – असे प्रथम अनुभाग खड का पतन होतै लोभ तै अनंत गुणा क्रम लीएं अनुभाग सत्त्वरूप कर्म हो है। तहा लोभ का स्तोक, तातै माया का अनंत गुणा, तातै मान का अनत गुणा, तातै क्रोध का अनत गुणा अनुभाग सत्व हो है; असा जानना जातै तहा अश्वकर्ण क्रिया करि प्रथम अनुभाग कांडक का घात भए पीछै अवशेष अनुभाग सत्व हो है बहुरि यातै उपरिवर्ती अश्वकर्ण काल के सर्व समयनि विषै भी असै ही अल्प बहुत्व का क्रम लीए अनुभाग सत्व जानना।

आदोलस्स य पढमे, णिव्वात्तिदअपुव्वफड्ढयाणि बहू।
पडिसमयं पलिदोवममूलासंखेज्जभागभजियकमा ॥४८२॥

आंदोलस्य च प्रथमे, निर्वर्तितापूर्वस्पर्धकानि बहूनि।
प्रतिसमयं पलितोपममूलासंख्येयभागभजितक्रमं ॥ ४८२ ॥

टीका – आदोल कहिए अश्वकर्ण, ताका प्रथम समय विषै जे अपूर्व स्पर्धक कीए ते बहुत है। पीछे समय समय प्रति पल्य के वर्गमूल का असख्यातवा भाग करि भाजित क्रम लीए जानने। प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण कौ पल्य के वर्गमूल का असख्यातवा भाग का भाग दीए द्वितीय समय विषै नवीन कीए अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण हो है। याकौ पल्य वर्गमूल का असख्यातवां भाग का भाग दीएं तृतीय समय विषै कीए नवीन अपूर्वस्पर्धकनि का प्रमाण हो है। असै ही अपूर्वस्पर्धक करण काल का अत समय पर्यंत क्रम जानना।

आदोलस्स य चरिमे, अपुव्वादिमवग्गणाविभागादो ।
दोचढिमादीणादी, चढिदव्वा मेत्तणंतगुणा ॥४८३॥

आंदोलस्य च चरमेऽपूर्वादिमवर्गणाविभागात् ।
द्विचटितादीनामादिः, चटितव्यामात्रानंतगुणा ॥ ४८३ ॥

टीका – असैं क्रम तैं अपूर्व स्पर्धक होतैं अपूर्व स्पर्धक सहित अश्वकर्ण काल का अंत समय विषै सर्व अपूर्व स्पर्धक भए । तहां प्रथम समय स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेद स्तोक हैं । तातैं दूसरे स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै दूणे, तीसरे स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै तिगुणे असैं जेथवा स्पर्धक होइ, तिसकी आदि वर्गणा विषैं तितने गुणे होइ सो अनंतगुणा पर्यंत चढना । अंत स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै अनंत गुणे हो है, असा जानना । इहां विवक्षित वर्गणा की एक एक परमाणू विषै पाइए है, जे अविभाग प्रतिच्छेद, तिनिकी अपेक्षा अल्प बहुत्व कह्या है । सर्व परमाणू अपेक्षा किंचित् ऊन दूणा, तिगुणा क्रम जानना । असैं पूर्वैं ही यतिवृषभ आचार्य करि प्रतिपादन कीया है । चार्यो कषायनि विषै असैं ही क्रम जानना ।

आदोलस्स य पढमे, रसखंडे पाडिदे अपुव्वादो ।
कोहादो अहियकमा, पदेसगुणहाणिफड्ढया तत्तो ॥४८४॥
होदि असंखेज्जगुणं, इगिफड्ढयवग्गणा अणंतगुणा ।
तत्तो अणंतगुणिदा, कोहस्स अपुव्वफड्ढयाणं च ॥४८५॥
माणादीणहियकमा, लोभगपुव्वं च वग्गणा तेंसिं ।
कोहो त्ति य अट्ठपदा, अणंतगुणिदक्कमा होंति ॥४८६॥

आंदोलस्य च प्रथमे, रसखंडे पातिते अपूर्वात् ।
क्रोधात् अधिकक्रमाः, प्रदेशगुणहानिस्पर्धकास्ततः ॥ ४८४ ॥

भवति असंख्येयगुणं, एकस्पर्धकवर्गणा अनंतगुणा ।
ततः अनंतगुणितं क्रोधस्य अपूर्वस्पर्धकानां च ॥ ४८५ ॥

मानादीनामधिकक्रमं, लोभगपूर्वं च वर्गणा तेषां ।
क्रोध इति च अष्ट पदानि, अनंतगुणितक्रमाणि भवंति ॥ ४८६ ॥

टीका – अश्वकर्ण का प्रथम समय अनुभाग कांडक का घात होत सतै भए अैसे क्रोध के अपूर्व स्पर्धक स्तोक है। तातै मान के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक है। तातै माया के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक है। तातै लोभ के अपूर्व स्पर्धक विशेष अधिक है। बहुरि तातै प्रदेश सम्बन्धी एक गुणहानि विषै स्पर्धकनि का प्रमाण असख्यात गुणा है, जातै याकौ असख्यात का भाग दीएं अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण आवै है। तातै अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण कौ असंख्यात करि गुणै याका प्रमाण भया कह्या। बहुरि तातै एक स्पर्धकविषै पाइए जे वर्गणा, तिनका प्रमाण अनंत गुणा है, जातै पूर्व वा अपूर्वस्पर्धक विषै वर्गणा अभव्य राशि तै अनत गुणी वा सिद्ध राशि के अनंतवे भाग मात्र पाइए है। तातै अनत का गुणकार सभवै है। बहुरि तिनतै क्रोध के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का प्रमाण अनत गुणा है; जातै एक स्पर्धक की वर्गणा का प्रमाण कह्या, ताकौ क्रोध के अपूर्वस्पर्धकनि का प्रमाण प्रदेश सम्बन्धी गुणहानि विषैं स्पर्धकनि के प्रमाण के असख्यातवां भाग मात्र प्रमाण करि गुणैं यहु हो है। बहुरि तातै मान के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा विशेष अधिक है। तिनतै माया के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा विशेष अधिक है। तातै लोभ के सर्व अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा विशेष अधिक है। इहा इनके अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण विशेष अधिक क्रम लीएं है। तातै तिनकी वर्गणानिका प्रमाण भी विशेष अधिक क्रम लीए कह्या। बहुरि लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण तै लोभ के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनंत गुणा है, जातै लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण प्रदेश गुणहानि की स्पर्धक शलाका के असख्यातवे भाग मात्र, ताकौ एक स्पर्धक की वर्गणा का प्रमाण करि गुणै लोभ के अपूर्व स्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण हो है अर एक गुणहानि की स्पर्धक शलाका कौ प्रदेश सम्बन्धी नाना गुणहानि करि गुणै लोभ के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण हो है। सो इहा एक स्पर्धक वर्गणा का प्रमाण तै नाना गुणहानि का प्रमाण अनत गुणा है। तातै अनत का गुणकार सभवै है। बहुरि तातै लोभ के पूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का प्रमाण अनंत गुणा है, जातै ताकौ एक स्पर्धक की वर्गणा शलाका करि गुणै यहु हो है। बहुरि तिसतै माया के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनत गुणा है, जातै प्रथम अनुभाग काडक का घात कीए पीछै अनुभाग सत्व अश्वकर्ण के आकार भया है; तातै अनतगुणापना संभवै है। बहुरि तातै माया के पूर्व स्पर्धकनि की वर्गणा का प्रमाण अनंत गुणा है। तातै मान के पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण अनंत गुणा है। तातै मान के पूर्वस्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण अनंत गुणा है। तातै क्रोध के पूर्व स्पर्धकनि का

प्रमाण अनत गुणा है । तातै क्रोध के पूर्व स्पर्धकनि की वर्गणानि का प्रमाण अनत गुणा है । इन विषै कारण पूर्वोक्त हो है । असै अल्पबहुत्व जानना ।

रसठिदिखंडाणेवं, संखेज्जसहस्सगाणि गंतूणं ।
तत्थ य अपुव्वफड्ढयकरणविही णिट्ठिदा होई ॥४८७॥

रसस्थितिखंडानामेवं, संख्येयसहस्रकाणि गत्वा ।
तत्र च अपूर्वस्पर्धककरणविधिर्निष्ठिता भवति ॥४८७॥

टीका – असै क्रम करि हजारौं अनुभाग काडक गए एक स्थिति काडक होइ असै सख्यात हजार स्थितिकाडक जाविषै होइ असा अतर्मुहूर्त मात्र अश्वकर्णकरण का काल भए तहा अपूर्व स्पर्धक करण की विधि है, सो निष्ठिता कहिए पूर्ण भई ।

भावार्थ यहु– अपूर्व स्पर्धक क्रिया सहित अश्वकर्ण का काल समाप्त भया । आगै कृष्टि क्रिया सहित अश्वकर्ण क्रिया होसी असा यतिवृषभ आचार्य का तात्पर्य जानना ।

हयकण्णकरणचरिमे, संजलणाणट्ठवस्सठिदिबंधो ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति सेसाणं ॥४८८॥

हयकर्णकरणचरमे, संज्वलनानामष्टवर्षस्थितिबंधः ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति शेषाणां ॥४८८॥

टीका – अपूर्वस्पर्धक सहित अश्वकर्ण करण काल का अत समय विषै सज्व-लन चतुष्टय का आठ वर्ष मात्र स्थितिबध है । ताका प्रथम समय विषै सोलह वर्ष मात्र था, सो एक एक स्थितिबधापसरण विषै अतर्मुहूर्त मात्र घाटि इहा अवशेष आठ वर्ष मात्र रहै है । बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थितिबध सख्यात हजार वर्ष प्रमाण है । ताका प्रथम समय विषै सख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो एक एक स्थिति बंधापसरण विषै सख्यात गुणा घाटि सख्यात हजार स्थितिबधापसरणनि करि घट्या परतु आलाप करि इतना ही कहिए है ।

ठिदिसत्तमघादीणं, असंखवस्साण होंति घादीणं ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥४८९॥

स्थितिसत्त्वमघातिनामसंख्यवर्षा भवंति घातिनाम् ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ।।४८९।।

टीका – बहुरि तिस ही अंत समय विषै अघातिया नाम, गोत्र, वेदनीय तिनका स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है । प्रथम समय विषै असंख्यात वर्ष मात्र था, सो असंख्यात गुणा घटता क्रम लीए संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि घट्या तथापि आलाप करि इतना ही कहिए । बहुरि च्यारि घातिया कर्मनि का स्थिति सत्त्व संख्यात वर्ष मात्र है । प्रथम समय विषै भी संख्यात वर्ष मात्र था, सो संख्यात गुणा घटता क्रम लीए संख्यात हजार स्थिति कांडकनि करि घट्या, परंतु सामान्य आलाप करि इतना ही कहिए है ।

इति अपूर्वस्पर्धक अधिकार समाप्त ।।

अब अपूर्व स्पर्धक करने का काल के अनंतरि समय तै लगाय कृष्टि करण का काल है । जिस करण तै कर्म का अनुभाग कृष कहिये हीन करिए, सो सार्थक नाम कृष्टि जानना, सो दोय प्रकार है –बादरकृष्टि, सूक्ष्मकृष्टि । तहां संज्वलन कषायनि के पूर्व-अपूर्व स्पर्धक जैसै ईटनि की पंक्ति होइ तैसै अनुभाग का एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधती लीए परमाणूनि का समूह रूप जो वर्गणा, तिनके समूह रूप है । तिनके अनंत गुणा घटता अनुभाग होने करि स्थूल खंड करिए, सो बादर कृष्टि करण है, अर तिन स्थूल खंडनि कौ अनंत गुणा घटता अनुभाग रूप करि सूक्ष्म सूक्ष्म खंड करिए, सो सूक्ष्मकृष्टि करण है । तहां बादरकृष्टि करण का काल प्रमाण जानने कौ सूत्र कहै है–

छक्कम्मे संछुद्धे, कोहे कोहस्स वेदगद्धा जा ।
तस्स य पढमतिभागो, होदि हु हयकण्णकरणद्धा ।।४९०।।

बिदियतिभागो किट्टीकरणद्धा किट्टिवेदगद्धा हु ।
तदियतिभागो किट्टीकरणो हयकण्णकरणं च ।।४९१।।

षट्कर्मणि संक्षुब्धे, क्रोधे क्रोधस्य वेदकाद्धा या ।
तस्य च प्रथमत्रिभागः, भवति हि हयकर्णकरणाद्धा।।४९०।।

द्वितीयत्रिभागः कृष्टिकरणाद्धा किट्टीवेदकाद्धा हि ।
तृतीयत्रिभागः कृष्टिकरणं हयकर्णकरणं च ।।४९१।।

टीका – छह नोकषायनि कौ सज्वलन क्रोध विषै सक्रमण करि नाश करने के अनंतरि समय तै लगाय जो अतर्मुहूर्त मात्र क्रोध वेदक काल है, ताकौ सख्यात का भाग देइ, तहा बहुभाग के समान रूप तीन भाग करिए । बहुरि अवशेष एक भाग कौ सख्यात का भाग देइ तहा बहुभाग कौ प्रथम त्रिभाग विषै जोडिए । बहुरि अवशेष एक भाग कौ सख्यात का भाग देइ, तहा बहुभाग दूसरा त्रिभाग विषै जोडिए । अवशेष एक भाग तीसरा त्रिभाग विषै जोडिए असे करतै पहिला त्रिभाग साधिक भया, सो तौ अपूर्व स्पर्धक सहित अश्वकर्ण करण का काल है, सो पूर्वै होइ गया । बहुरि दूसरा त्रिभाग किंचित् ऊन है, सो च्यारि सज्वलन कषायनि का कृष्टि करने का काल है, सो अब वर्तै है । बहुरि तीसरा त्रिभाग किंचिदून है, सो क्रोध कृष्टि का वेदक काल है, आगें प्रवर्तसी । बहुरि इस कृष्टि करण काल विषै भी अश्वकर्ण करण पाइए है । जातै इहा भी अश्वकर्ण के आकारि सज्वलन कषायनि का अनुभागसत्व वा अनुभाग-काडक वर्तै है । तातै इहा कृष्टि सहित अश्वकर्ण करण पाइए है, असा जानना । तहा प्रथम समय विषै एक स्थिति बधापसरण होने करि सज्वलन चतुष्क का अतर्मुहूर्त घाटि आठ वर्ष प्रमाण अन्य कर्मनि का पूर्वस्थिति बध तै सख्यात गुणा घटता सख्यात वर्ष प्रमाण स्थिति बध हो है । बहुरि एक स्थिति काडक घात होने करि घातिया च्यारि कर्मनि का पूर्व स्थिति सत्व तै सख्यात बहुभाग मात्र घटता सख्यात हजार वर्ष मात्र अर तीन अघातियानि का पूर्व स्थिति सत्व तै असख्यात बहुभाग मात्र घटता असख्यात वर्ष मात्र स्थिति सत्व पाइए है ।

कोहादीणं सगसगपुव्वापुव्वगयफड्ढयेहिंतो ।
उक्कड्डिदूण दव्वं, ताणं किट्टी करेदि कमे ॥४९२॥

क्रोधदीना स्वकस्वकपूर्वापूर्वगतस्पर्धकान् ।
अपकर्षयित्वा द्रव्यं, तेषां कृष्टि करोति क्रमेण ॥४९२॥

टीका - सज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभनि का अपना अपना पूर्व अपूर्वस्पर्धक रूप जो सब द्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि यथाक्रम लीए तिन क्रोधादिकनि की कृष्टि करै है ।

उक्कट्टिददव्वस्स य, पल्लासंखेज्जभागबहुभागो ।
बादरकीट्टिणिबद्धो फड्ढयगे सेसइगिभागो ॥४९३॥

अपकर्षितद्रव्यस्य च, पल्यासंख्येयभागबहुभागः ।
बादरकृष्टिनिबद्धः स्पर्धके शेषैकभागः ॥४९३॥

टीका – अपकर्षण कीया जो द्रव्य, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग मात्र द्रव्य तौ बादर कृष्टि सम्बन्धी है । याकरि बादर कृष्टि निपजै है । अवशेष एक भाग मात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै निक्षेपरण करिए है ।

किट्टीयो इगिफड्ढयवग्गरणसंखाणणंतभागो दु ।
एक्केक्कम्हि कसाये, तिग-तिग अहवा अणंता वा ॥४९४॥

कृष्टय एकस्पर्धकवर्गणासंख्यानामनंतभागस्तु ।
एकैकस्मिन् कषाये, त्रिकत्रिकमथवा अनंता वा ॥४९४॥

टीका– एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधने का क्रम लीए प्रत्येक सिद्धराशि का अनंतवा भाग मात्र परमाणूनि का समूहरूप ईटनि की पक्ति के आकार जे वर्गरणा, ते एक स्पर्धक विषै एक गुरणहानि विषै जेते स्पर्धक पाइए, तिनतै अनंत गुणे पाईए है । सो असै एक स्पर्धक विषै जो वर्गरणानि का प्रमारण, ताकौ वर्गणा शलाका कहिए । ताके अनतवे भाग मात्र सर्व कृष्टिनि का प्रमाण है । अनुभाग का स्तोक बहुत अपेक्षा कृष्टिनि का विभाग करिए है । तहा एक एक कषाय विषै संग्रह कृष्टि तीन तीन है । बहुरि एक एक सग्रह कृष्टि विषै अतर कृष्टि अनंत अनत है । तहां नीचै ही नीचै लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि है, तिसविषै अन्तर कृष्टि अनंत है । ताके ऊपरि लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि है । तहा अतर कृष्टि अनन्त है । ताके ऊपरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि है । तहां अन्तर कृष्टि अनत हैं । असै ही क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि पर्यंत अवशेष नव सग्रह कृष्टि जाननी । तहा एक एक सग्रह कृष्टि विषै अनत अनत अतर कृष्टि जाननी । एक प्रकार बधता गुरणकार रूप जो अतर कृष्टि, तिनके समूह ही का नाम सग्रह कृष्टि जानना ।

अकसायकसायाणं, दव्वस्स विभंजणं जहा होई ।
किट्टिस्स तहेव हवे, कोहो अकसायपडिबद्धं ॥४९५॥

अकषायकषायाणां द्रव्यस्य विभंजनं यथा भवति ।
कृष्टेस्तथैव भवेत् क्रोधः अकषायप्रतिबद्धः॥ ४९५॥

टीका – अकषाय कहिए नोकषाय, अर कषाय इनिके द्रव्य का विभाग जैसे हो है तैसे ही इन कृष्टिनि के प्रमाण का विभाग जानना। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टि हैं ते क्रोध की कृष्टिनि विषै जोडनी, जातै नोकषायनि का सर्व द्रव्य सज्वलन क्रोधरूप सक्रमण भया है। तहा द्रव्य विभाग कैसे हो है? सो कहिए है–

पूर्वें अपूर्वस्पर्धक करण काल विषै जैसे अनुक्रम कहि आए है, तिस अनुक्रम करि सर्व चारित्र मोह का द्रव्य साधिक द्वयर्ध गुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र है। तहा लोभ का द्रव्य साधिक आठवा भाग मात्र, माया का किंचिदून आठवा भाग मात्र, मान का किंचिदून आठवा भाग मात्र, क्रोध का किंचिदून आठवा भाग मात्र अर याही मे किंचिदून द्वितीय भाग मात्र नोकषाय का द्रव्य मिलाए क्रोध का द्रव्य पाच गुणा किंचिदून आठवा भाग मात्र हो है। बहुरि इस अपने अपने द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग दीए अपना अपना अपकर्षण कीया द्रव्य का प्रमाण आवै है। याकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै देना है। ताकौ जुदा राखि अवशेष बहुभागनि विषै क्रोध विषै जो नोकषायनि का द्रव्य मिल्या, ताकौ जुदा कीए जो अपना अपना द्रव्य रह्या, ताकौ जुदा जुदा पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा बहुभागनि के समान रूप तीन पुज करने। बहुरि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग प्रथम पुज विषै जोडने। बहुरि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग द्वितीय पुज विषै जोडने। अवशेष एक भाग तृतीय पुज विषै जोडना। ऐसे साधिक त्रिभाग मात्र प्रथम पुज भया, सो अपनी अपनी प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य है। किंचिदून त्रिभाग मात्र द्वितीय पुज सो अपनी अपनी द्वितीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य है। किंचिदून त्रिभाग मात्र तृतीय पुज सो अपनी अपनी तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य है। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी सर्व द्रव्य कौ क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै मिलावना। या प्रकार कृष्टि सम्बन्धी सर्व द्रव्य कौ चौईस का भाग दीए क्रोध की तृतीय कृष्टि का तेरह भाग मात्र अर अन्य ग्यारह कृष्टिनि का एक एक भाग मात्र द्रव्य हो है। यहां लोभ की कृष्टि विषै साधिकपना अन्यत्र किंचित् न्यूनपना यथासम्भव जानना। ऐसे द्रव्य का विभाग कीया। बहुरि याही प्रकार अब कृष्टि के प्रमाणका विभाग करिए है—

एक स्पर्धक की वर्गणा शलाका के अनतवे भाग मात्र सर्व कृष्टिनि का प्रमाण है। ताकौ आवली के असख्यातवा भाग का भाग दीए तहा बहुभाग के समान

दोय भाग करि अवशेष एक भाग कौ प्रथम समान भाग विषै मिलाए साधिक आधा तौ कषायनि के द्रव्य करि कीया कृष्टिनि का प्रमाण हो है अर द्वितीय समान भाग मात्र किंचिदून आधा नोकषायनि के द्रव्य करि कीया कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि कषाय सम्बन्धी कृष्टिनि के प्रमाण कौ आवली का असख्यातवां भाग का भाग देइ तहा एक भाग जुदा राखि बहुभागनि के समानरूप च्यारि भाग करने। बहुरि अवशेष एक भाग कौ आवली का असख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा बहुभाग प्रथम समान भाग विषै मिलाए साधिक चौथा भाग मात्र लोभ की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौ आवली का असख्यातवा भाग का भाग दीए तहां बहुभाग दूसरे समान भाग विषै मिलाए किंचिदून चतुर्थ भाग मात्र माया की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौ आवली का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग तीसरा समान भाग विषै मिलाए किंचिदून चौथा भाग मात्र क्रोध की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि अवशेष एक भाग चौथा समान भाग विषै मिलाए किंचिदून चौथा भाग मात्र मान की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टिनि का प्रमाण क्रोध की कृष्टिनि का प्रमाण विषै जोडना। असैं सर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौ आठ का भाग देइ तहा एक एक भाग मात्र लोभ, माया, मान की पाच भाग मात्र क्रोध की कृष्टिनि का प्रमाण हो है। तहा लोभ की विषै साधिकपना अन्य की विषै किंचित् न्यूनपना यथा सभव जानना। बहुरि क्रोध की कृष्टिनि विषै नोकषाय सम्बन्धी कृष्टि जुदी कीए अवशेष अपना अपना कृष्टिनि का जो प्रमाण, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग के समान तीन भाग करिए। बहुरि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग प्रथम समान भाग विषै मिलाए अपना अपना प्रथम संग्रह कृष्टिनि का आयाम साधिक हो है। बहुरि अवशेष एक भाग कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहां बहुभाग द्वितीय समान भाग विषै जोडें, अपना अपना द्वितीय सग्रह कृष्टि का आयाम किंचित् ऊन हो है। बहुरि अवशेष एक भाग तीसरा समान भाग विषै जोडें अपनी अपनी तृतीय संग्रहकृष्टि का आयाम किंचित् ऊन हो है। बहुरि नोकषाय सम्बन्धी कृष्टिनि का प्रमाण, ताकौ क्रोध की तृतीय सग्रहकृष्टि का आयाम विषै जोडना। असैं सर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौं चौईस का भाग देइ तहा क्रोध की तृतीय सग्रहकृष्टि का आयाम तेरह भाग मात्र अन्य ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आयाम एक भाग मात्र हो है। तहा लोभ की विषै

माधिकपना अन्यत्र किंचित् न्यूनपना यथासम्भव जानना । इहा सग्रह कृष्टि विषै जितनी अतर कृष्टि का प्रमाण होइ, तीहिका नाम सग्रह कृष्टि का आयाम है ।

पढमादिसंगहाओ, पल्लासंखेज्जभागहीणाओ ।
कोहस्स तदीयाए, अकसायाणं तु किट्टीओ ।।४९६।।

प्रथमादिसंग्रहाः पल्यासंख्येयभागहीनाः ।
क्रोधस्य तृतीयायामकषायानां तु कृष्टयः ।।४९६।।

टीका – पूर्वोक्त प्रकार करि प्रथम आदि बारह सग्रह कृष्टिनि का आयाम है सो पल्य का असख्यातवा भाग का क्रम करि घटता जानना । बहुरि नोकषाय सबधी सर्वकृष्टि तै क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै प्राप्त जानना ।

कोहस्स य माणस्स य, मायालोभोदएण चडिदस्स ।
बारस णव छत्तिण्णि य, संगहकिट्टी कमे होंति ।।४९७।।

क्रोधस्य च मानस्य च मायालोभोदयेन चटितस्य ।
द्वादश नव षट् त्रीणि च संग्रहकृष्टयः क्रमेण भवंति ।।४९७।।

टीका – सज्वलन क्रोध का उदय सहित जो जीव श्रेणी चढै ताकै तो च्यारचो कषायनि की बारह सग्रह कृष्टि हो है । बहुरि मान का उदय सहित श्रेणी चढै ताकै क्रोध का पहिले ही सक्रमण करि क्षय होइ, तातै अवशेष तीन कषायनि की नव सग्रह कृष्टि हो है । बहुरि माया का उदय सहित जो श्रेणी चढै ताकै क्रोध मान का पहलै ही सक्रमण करि क्षय होइ, तातै दोय कषायनि की छह सग्रह कृष्टि हो है । बहुरि लोभ का उदय सहित जो श्रेणी चढै ताकै क्रोध, मान, माया का पहलै ही सक्रमण करि क्षय होइ, तातै एक लोभ ही की तीन सग्रह कृष्टि हो है । तहा जेती सग्रह कृष्टि होइ, तिन ही विषै कृष्टि प्रमाण का विभाग यथासभव जानना ।

संगहगे एक्केक्के, अन्तरकिट्टी हवदि हु अणंता ।
लोभादि अणतगुणा, कोहादि अणंतगुणहीणा[1] ।।४९८।।

संग्रहके एकैकस्मिन्, अंतरकृष्टिः भवति हि अनंता ।
लोभादौ अनतगुणा, क्रोधादौ अनंतगुणहीना ।।४९८।।

१–षट्खण्डागम धवला पुस्तक–६ पृष्ठ ३७५, ३७६,

टीका – एक एक संग्रह कृष्टि विषै अंतर कृष्टि अनत पाइए है, जातै अनती कृष्टिनि के समूह का ही नाम सग्रह कृष्टि है। बहुरि तहा कृष्टिनि विषै लोभ तै लगाय क्रम तै अनत गुणा बधता अर क्रोध तै अनंत गुणा घटता अनुभाग पाइए है, सोई कहिए है–

लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै जो जघन्य कृष्टि है, सो स्तोक है। सर्व तै मद अनुभाग सहित है। तातै ताकी दूसरी कृष्टि अनत गुणी है। अभव्य राशि तै अनंत गुणा वा सिद्ध राशि के अनंतवे भाग मात्र अनत प्रमाण लीए जो गुणकार, तिस करि जघन्य कृष्टि के अनुभाग कौ गुणै द्वितीय कृष्टि का अनुभाग हो है असे ही आगे भी जानना। बहुरि दूसरी कृष्टि तै तीसरी कृष्टि अनत गुणी है। असै ही प्रथम सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि पर्यंत अनुक्रम जानना। बहुरि तिस प्रथम सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि तै द्वितीय सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनत गुणी है, सो इहा गुणकार का प्रमाण अन्य प्रकार हो है, जातै इहा परस्थान गुणकार भया, सो सर्व स्वस्थान गुणकारनि तै यहु अनत गुणा है, सो असै गुणकार का भेद ही करि सग्रह कृष्टिनि का भेद भया है। कृष्टिनि का अनुभाग विषै गुणकार का प्रमाण यावत् एक प्रकार बधता भया तावत् सो ही सग्रह कृष्टि कही। बहुरि जहा नीचली कृष्टि तै ऊपरली कृष्टि का गुणकार अन्यत्र प्रकार भया तहा तै अन्य सग्रह कृष्टि कही है। सो इस कथन कौ आगै व्यक्त करि दिखाइएगा। बहुरि द्वितीय कृष्टि की जघन्य कृष्टि तै ताकी द्वितीय कृष्टि अनत गुणी है। असै अत कृष्टि पर्यंत क्रम जानना। बहुरि द्वितीय कृष्टि की अत कृष्टि तै तृतीय कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी हैं। इहा परस्थान गुणकार जानना। तातै ताकी द्वितीयादि अत पर्यंत कृष्टि क्रम तै अनत गुणी है, असै लोभ की तीन सग्रह कृष्टि भई। बहुरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि तै माया की प्रथम सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनत गुणी है। बहुरि लोभवत् क्रम जानना। बहुरि माया की तृतीय सग्रह कृष्टि की अतकृष्टि तै मान की प्रथम सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनत गुणी है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार क्रम जानना। बहुरि मान की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि तै क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि अनंत गुणी है। बहुरि पूर्वोक्त प्रकार क्रम जानना। बहुरि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अत कृष्टि तै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा अनत गुणी है, जातै कृष्टि का अनुभाग तै स्पर्धक का अनुभाग अनंत गुणापने कौ लीए है। इहां गुणकार अनुभाग अपेक्षा ही जानना।

अब इस कथन कौं स्पष्ट करने कौं सूत्र कहै है—

लोभादी कोहो त्ति य, सट्ठाणंतरमणंतगुणिदकमं ।
तत्तो बादरसंगहकिट्टी अंतरमणंतगुणिदकमं ॥४६६॥

लोभादितः क्रोधातं च, स्वस्थानांतरमनंतगुणितक्रमं ।
ततो बादरसंग्रहकृष्टेसंतरमनंतगुणितक्रमं ॥४६६॥

टीका – लोभ तै लगाय क्रोध पर्यंत स्वस्थान अतर है सो अनत गुणा क्रम लीए है । बहुरि तिस स्वस्थान अतर तै बादर सग्रह कृष्टि, तिनका अतर अनत गुणा क्रम लीए है । सोई कहिए है–

बादर सग्रह कृष्टि है, तहा एक एक सग्रह कृष्टि विषै अंतर कृष्टि सिद्ध राशि के अनतवे भाग मात्र है । बहुरि तिनके अतराल एक घाटि कृष्टि प्रमाण हैं, जातै दोय बीचि अतराल एक होइ, तीनि बीचि दोय होइ, अैसै विवक्षित प्रमाण विषै अतराल एक घाटि तिस प्रमाण मात्र हो है । बहुरि इहा अतर की उत्पत्ति कौं कारण जे गुणकार तिनकौं अतर कहिए । जातै कारण विषै कार्य का उपचार हो है । बहुरि इहा कृष्टिनि विषै गुणकार ही का नाम अतर भया तातै तिन का नाम कृष्ट्यतर कहिए । बहुरि नीचली संग्रह कृष्टि अर ऊपरली सग्रह कृष्टिनि विषै ग्यारह अतर हो हैं, जातै सग्रह कृष्टि बारह विषै एक घाटि अतरनि का प्रमाण हो है, सो इनका नाम सग्रह कृष्ट्यतर कहिए ।

भावार्थ यहु – जेते अतराल होइ तितनी बार गुणकार होइ तहा स्वस्थान गुणकारनि का नाम कृष्ट्यतर है । परस्थान गुणकारनि का नाम सग्रह कृष्ट्यतर है । एक ही सग्रह कृष्टि विषै नीचली अतर कृष्टि तै ऊपरली अतर कृष्टि विषै गुणकार होइ, ताकौ तौ स्वस्थान गुणकार कहिए है । बहुरि तहा नीचली सग्रह कृष्टि की अत की अतर कृष्टि तै अन्य सग्रह कृष्टि की आदि अतर कृष्टि विषै जो गुणकार होइ, ताकौ परस्थान गुणकार कहिए हैं । अैसै सज्ञा कहि कृष्ट्यतर वा सग्रह कृष्टनि का अल्प बहुत्व कहिए है । तहा निस्सदेह होने कौं अकसदृष्टि करि भी कथन करिए है–

तहा अनत की सदृष्टि दोय अर एक सग्रह कृष्टनि विषै अतर कृष्टि के प्रमाण की सदृष्टि च्यारि जाननी । तहा प्रथम लोभ की प्रथम सग्रहकृष्टि की जघन्य कृष्टि स्थापि, ताकौ जिस अनत गुणकार करि गुणै, ताकी द्वितीय कृष्टि होइ ।

तिस गुणकार का नाम जघन्य कृष्ट्यतर है, ताकी संदृष्टि दोय का अक, बहुरि द्वितीय कृष्टि कौं जिस गुणकार करि गुणें तृतीय कृष्टि होई तिस गुणकार का नाम द्वितीय कृष्ट्यतर है। सो यहु जघन्य कृष्ट्यतर तै अनत गुणा है। ताकी सदृष्टि च्यारि का अक, अैसै क्रम तै तृतीयादि कृष्ट्यंतर क्रम तै अनत गुणे होइ, जिस गुणकार करि द्विचरम कृष्टि कौ गुणै अंत कृष्टि होइ, सो अनत का गुणकार द्विचरम गुणकार तै अनत गुणा है, ताकी संदृष्टि आठ का अक।

बहुरि इस प्रथम सग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि कौं जिस गुणकार करि गुणै, द्वितीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि होइ, सो परस्थान गुणकार है। तातै याकौ छोडि द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि कौ जिस गुणकार करि गुणै, ताकी द्वितीय कृष्टि होइ, सो प्रथम गुणकार पूर्वोक्त अत का स्वस्थान गुणकार तै अनंत गुणा है, ताकी सदृष्टि सोलह का अक अैसै ही बीचि बीचि परस्थान गुणकार छोडि, एक एक कृष्टि प्रति गुणकार का प्रमाण अनत गुणा जानना। सो कृष्टिनि का जेता प्रमाण तिन मै एक घाटि तो अंतराल पाइए अर तहा ग्यारह परस्थान गुणकार पाइए अर एक जघन्य गुणकार हो है। अैसै तेरह घटाए अवशेष जेता प्रमाण, तितनी बार जघन्य गुणकार कौ अनत करि गुणै, जो गुणकार भया, तिस करि क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि की द्विचरम कृष्टि कौ गुणै, ताकी अंतर कृष्टि हो है। अक सदृष्टि करि अठतालीस कृष्टिनि विषै तेरह घटाए पैंतीस रहे, सो पैंतीस बार दोय कौ दोय करि गुणै, सोलह गुणा बादाल प्रमाण हो है। बहुरि इहा तै स्वस्थान गुणकार छोडि बहुरि करि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि की अत वर्गणा कौ जिस गुणकार करि गुणै द्वितीय सग्रह कृष्टि की प्रथम वर्गणा होइ, सो परस्थान गुणकार पूर्वोक्त अत का स्वस्थान गुणकार तै अनत गुणा है। ताकी सदृष्टि बत्तीस गुणा बादाल है। बहुरि लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि की अतकृष्टि कौ जिस गुणकार करि गुणे लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि होइ, सो द्वितीय परस्थान गुणकार सो प्रथम परस्थान गुणकार तै अनत गुणा है। बहुरि लोभ की तृतीय कृष्टि की अत कृष्टि कौ जिस गुणकार करि गुणे, माया की प्रथम सग्रह कृष्टि की प्रथम सग्रह कृष्टि होइ सो तीसरा परस्थान गुणकार द्वितीय परस्थान गुणकार तै अनत गुणा है। याही प्रकार ग्यारह परस्थान गुणकारनि कौ क्रम तै अनत करि गुणे क्रोध की द्वितीय कृष्टि की अत कृष्टि कौ जिस गुणकार करि गुणै क्रोध की तृतीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि होइ तिस गुणकार का प्रमाण आवै है।

यहु गुणकारनि का यंत्र है, तहा पण्णट्ठी की सदृष्टि ऐसी ६५–बादाल की ऐसी ४२ अर इनके आगे जितने का अंक, तितने का इनकौ गुणकार जानना ।

नाम	लोभ	माया	मान	क्रोध	
तृतीय सग्रहकृष्टि-विषै स्वस्थान गुणकार	५१२ २५६ १२८	६५ = ४ ६५ = २ ६५ = १	६५ = २०४८ ६५ = १०२४ ६५ = ५१२	४२ = १६ ४२ = ८ ४२ = ४	
परस्थान गुणकार	४२=६४	४२=५१२	४२ = ४०९६	४२ = ३२७६८	
द्वितीय सग्रहकृष्टि-विषै स्वस्थान गुणकार	६४ ३२ १६	३२७६८ १६३८४ ८१९२	६५ = २५६ ६५ = १२८ ६५ = ६४	४२ = २ ४२ = १ ६५ = ३२७६८	
परस्थान गुणकार	४२=३२	४२=२५६	४२ = २०४८	४२ = १६३८४	
प्रथम सग्रहकृष्टि-विषै स्वस्थान गुणकार	८ ४ २	४०९६ २०४८ १०२४	६५ = ३२ ६५ = १६ ६५ = ८	६५ = १६३८४ ६५ = ८१९२ ६५ = ४०९६	अपूर्व स्पर्धक वर्गणा गुणकार
परस्थान गुणकार	जघन्य	४२=१२८	४२ = १०२४	४२ = ८१९२	४२ = ६५ =

अकसदृष्टि करि ग्यारह परस्थान गुणकारनि कौ दूणा दूणा कीए जैसै बत्तीस हजार सात सै अडसठि गुणा बादाल ४२९४९६७२९६ प्रमाण होइ । बहुरि यातै जिस गुणकार करि क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि कौ गुणै लोभ के अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अनुभाग का अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है । तिस परस्थान गुणकार का प्रमाण अनत गुणा जानना । ताकि सदृष्टि पण्णट्ठी गुणा बादाल है । ऐसै गुणकारनि का प्रमाण कह्या ।

इहा ऐसा अर्थ जानना – अक सदृष्टि करि जैसै लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै जो अनुभाग पाइए है, तातै दूणा द्वितीय कृष्टि विषै, तातै चौगुणा तृतीय कृष्टि विषै है । तातै आठ गुणा अत कृष्टि विषै है । तातै बत्तीस गुणित

बादाल गुणा लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषै अनुभाग है। इहा तै पहलै अन्य प्रकार गुणकार था, तातै तहा पर्यंत प्रथम सग्रह कृष्टि का ही इहा अन्य प्रकार गुणकार भया तातै इहा तै लगाय द्वितीय सग्रह कृष्टि कही। असै ही अंत पर्यंत विधान जानना। बहुरि याही प्रकार यथार्थ कथन जानना। दोय की जायगा अनत जानना। अर सग्रह कृष्टि विषै च्यारि अतर कृष्टि कही है, तहां अनती जाननी।

असै अनुभाग के अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा कृष्टिनि का कथन जानना।

लोहस्स अवरकिट्टीगदव्वादो कोधजेट्ठकिट्टिस्स।
दव्वोत्ति य हीणकमं, देदि अणंतेण भागेण ॥५००॥

लोभस्य अवरकृष्टिगद्रव्यात् क्रोधज्येष्ठकृष्टेः।
द्रव्यांतं च हीनक्रमं, दीयते अनंतेन भागेन ॥५००॥

टीका – लोभ की जघन्य कृष्टि का द्रव्य तै लगाय क्रोध की उत्कृष्ट कृष्टि का द्रव्य पर्यंत हीन क्रम लीए द्रव्य दीजिये है। सोई कहिए है–

कृष्टि विषै देने योग्य अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो द्रव्य सो सर्वधन है। याकौ कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीए मध्य कृष्टि विषै जितना द्रव्य दीया, ताका प्रमाण मात्र मध्य धन हो है। याकौ एक घाटि गच्छ का आधा करि हीन, जो दो गुणहानि, ताका भाग दीए एक विशेष का प्रमाण आवै है। याकौ दो गुणहानि करि गुणें जो प्रमाण आवै, तितना द्रव्य तौ लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै दीजिए है। याके आगे द्वितीयादि कृष्टि तै लगाय सर्व सग्रह कृष्टिनि की अतर कृष्टि उल्लघि क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि पर्यन्त एक एक विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। इहा पूर्व पूर्व कृष्टि तै उत्तर उत्तर कृष्टि विषै द्रव्य दीया सो ही दृश्यमान है, सो अनत भाग घटता क्रम लीए है, पूर्व कृष्टि कौ अनत का भाग दीएं तहा एक भाग मात्र घटता उत्तर कृष्टि का द्रव्य प्रमाण हो है।

लोभस्स अवरकिट्टिगदव्वादो कोधजेट्ठकिट्टिस्स।
दव्वं तु होदि हीणं, असंखभागेण जोगेण ॥५०१॥

लोभस्यावरकृष्टिगद्रव्यतः क्रोधज्येष्ठकृष्टेः।
द्रव्यं तु भवति हीनं, असंख्यभागेन योगेन ॥५०१॥

टीका – लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य जो प्रदेश समूह, तातै क्रोध की तृतीय कृष्टि की उत्कृष्ट कृष्टि का द्रव्य एक घाटि कृष्टि प्रमाण मात्र विशेषनि करि घटता भया सो अनतवा भाग मात्र घटता भया जानना । जातै सर्व कृष्टिनि का प्रमाण एक स्पर्धक की वर्गणा के अनतवे भाग मात्र है सो एक घाटि इतने चय घटने तै लोभ की जघन्य कृष्टि का द्रव्य के अनतवे भाग मात्र ही द्रव्य घटता भया है । बहुरि पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै जो देने योग्य द्रव्य कह्या था, ताकौ साधिक द्व्यर्ध गुणहानि का भाग दीए अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै दीया द्रव्य का प्रमाण हो है । सो यहु क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है । बहुरि तिस तै तिनकी द्वितीय वर्गणा आदि पूर्व स्पर्धकनि की अत वर्गणा पर्यंतनि विषै विशेष घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है ।

अैसे कृष्टिकारक का प्रथम समय का निरूपण जानना ।

पडिसमयमसंखगुणं, कमेण उक्कट्टिदूण दव्वं खु ।
संगहहेट्ठापासे, अपुव्वकिट्टी करेदी हु ॥५०२॥

प्रथमसमयमसंख्यगुणं, क्रमेणापकृष्य द्रव्यं खलु ।
संग्रहाधस्तनपार्श्वे, अपूर्वकृष्टि करोति हि ॥५०२॥

टीका – बहुरि प्रथम समय तै द्वितीयादि समयनि विषै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य कौ अपकर्षण करि सग्रह कृष्टि के नीचै वा पार्श्व विषै अपूर्व कृष्टि कौ करै है । पूर्व समय विषै जे कृष्टि करि थी, तिन विषै बारह बारह सग्रह कृष्टिनि की जे जघन्य कृष्टि, तिन तै अनत गुणा घटता अनुभाग लीए नीचै केतीकइक नवीन कृष्टि अपूर्व शक्ति युक्त करिए है । याही तै इनका नाम अध स्तन कृष्टि जानना । बहुरि पूर्व समयनि विषै जे कृष्टि करी थी, तिन ही के समान शक्ति लीए, तिनके पास केतीकइक कृष्टि करिए है ।

भावार्थ यहु – पूर्व समयनि विषै करि कृष्टिनि विषै जो नवीन द्रव्य का निक्षेपण करिए, सो पार्श्व विषै करी कृष्टि कहिए है ।

हेट्ठा असंखभागं, फासे वित्थारदो असंखगुणं ।
मज्झिमखंडं उभयं, दव्वविसेसे हवे फासे ॥५०३॥

अधस्तनमसंख्यभागं, पार्श्वे विस्तारतोऽसंख्यगुणं ।
मध्यमखंडमुभयं, द्रव्यविशेषे भवेत् पार्श्वे ॥५०३॥

टीका – सग्रह कृष्टि के नीचे करी हुई कृष्टिनि का प्रमाण तौ सर्व कृष्टिनि का प्रमाण के असख्यातवे भाग मात्र है। बहुरि पार्श्व विषै करि हुई कृष्टिनि का प्रमाण तिन तै असख्यात गुणा है। तहा पार्श्व विषै करी कृष्टि, तिन विषै मध्यम खंड अर उभय द्रव्य विशेष हो है। अर स्तोक जानि न कह्या तथापि तहां अध स्तन शीर्ष का भी होना जानना। कैसे ? सो कहिए है—

द्वितीयादि समयनि विषै समय समय प्रति असख्यात गुणा द्रव्य कौ पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी द्रव्य तै अपकर्षण करि तहां पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै देने योग्य द्रव्य जुदा कीएं अवशेष कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य हो है। तिस विषै अध स्तन शीर्ष , अध स्तन कृष्टि, मध्यम खंड, उभय द्रव्य विशेष असै च्यारि विभाग करिए, सो अधःस्तन शीर्षादिक का स्वरूप उपशम चारित्र विषै सूक्ष्म कृष्टि का वर्णन करने तै पूर्वै विशेष करि कह्या है, सो जानना। वा इहा भी किछू कहिए है—

तहां पूर्व समय विषै करी कृष्टि, तिन विषै प्रथम कृष्टि तै लगाय विशेष घटता क्रम है सो सर्व पूर्व कृष्टिनि कौ आदि कृष्टि समान करने के अर्थि घटे विशेषनि का द्रव्य मात्र जो द्रव्य तहा दीजिए, ताका नाम अध स्तन शीर्ष विशेष द्रव्य है। बहुरि पूर्वै न थी असी करी जे नवीन कृष्टि तिनि कौं पूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि के समान करने के अर्थि जो द्रव्य दीया, ताका नाम अध स्तन कृष्टि द्रव्य है। बहुरि इन सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषै आदि कृष्टि तै लगाय अत कृष्टि पर्यंत विशेष घटता क्रम करने के अर्थि जो द्रव्य दीया, ताका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि इन तीनो को जुदा कीए अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताकौ सर्व कृष्टिनि विषै समान रूप दीजिए, ताका नाम मध्यम खड है। असै सग्रह कृष्टिनि के पार्श्ववर्ती कृष्टिनि विषै तौ अधःस्तन शीर्ष मध्यम खड उभय द्रव्य विशेष रूप तीन प्रकार द्रव्य दीजिए है। अर सग्रह कृष्टिनि के नीचै जे नवीन कृष्टि करी, तिन विषै अध·स्तन कृष्टि,[१] मध्यम खड, उभय द्रव्य विशेष रूप तीन प्रकार द्रव्य दीजिए है। अब याका विशेष दिखाइए है–तहा द्वितीय समय विषै कैसे द्रव्य दीजिए है, सो वर्णन कीजिए है—

क्रोध मान माया लोभ के पूर्व अपूर्व स्पर्धक सम्बन्धी द्रव्य तै पहले समय जो अपकर्षण कीया द्रव्य, तातै असख्यात गुणा द्रव्य अपकर्षण करै है। तहा सर्व द्रव्य कौं आठ का भाग दीए एक एक भाग मात्र लोभ माया मान का पाच भाग मात्र क्रोध का द्रव्य पूर्वोक्त प्रकार यथासम्भव साधिक वा किंचित् न्यूनपना लीए जानना।

१–कलकत्ता से छपी प्रति मे 'कृष्टि' के स्थान पर 'शीर्ष' शब्द मिलता है।

वहुरि याकौं पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र द्रव्य पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि विषै देना । ताकौं जुदा राखि अवशेष द्रव्य का (पल्य का) प्रथम समयवत् बारह सग्रह कृष्टिनि विषै विभाग करिए तब सर्व द्रव्य कौं चौईस का भाग दीए तहा ग्यारह सग्रह कृष्टिनि का एक एक भाग मात्र अर क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि का तेरह भाग मात्र द्रव्य हो है। इहा साधिकपना वा न्यूनपना यथासम्भव जानि लेना ।

अब द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तिस विषै एक एक सग्रह कृष्टि का द्रव्य जो कह्या, तिस विषै अध स्तन शीर्षादि च्यारि प्रकार द्रव्य का प्रमाण ल्याइए है–तहा प्रथम समय विषै अत कृष्टि तै लगाय कृष्टि कृष्टि प्रति जितना द्रव्य बध्या, सो एक विशेष है । ताका प्रमाण पूर्वै कह्या था, सो आदि विषै जो विशेष का प्रमाण सो आदि अर एक एक विशेष कृष्टि कृष्टि प्रति बध्या, तातै एक विशेष उत्तर अर प्रथम समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ, सो ऐसै आदि उत्तर गच्छ स्थापि श्रेणी व्यवहार नाम गणित के अनुसारि—

रूपेणोनो गच्छो दलीकृतः प्रचयताडितो मिश्रः ।
प्रभवेण पदाभ्यस्तः संकलितं भवति सर्वेषां ।।१।।

इस सूत्र तै एक घाटि गच्छ का आधा कौं विशेष करि गुणि, ताकौं आदि विषै जोडि ताकौं गच्छ करि गुणै सबनि का सकलित धन कहिए जोड्या हुवा प्रमाण हो है । सो जो जो प्रमाण होइ तितना तितना अध स्तन शीर्ष द्रव्य हो है । सोई कहिए है—

एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर प्रथम कृष्टि विषै विशेष मिल्या नाही, तातै एक घाटि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै प्रथम समय विषै कीनी अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहा सकलन धन मात्र लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि का जो द्वितीय समय विषै अपकर्षण द्रव्य विषै द्रव्य कह्या था, तिस द्रव्य कौ द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया, ताहि विषै जो कृष्टिनि विषै देने योग्य द्रव्य कह्या था, तीहि विषै अधःस्तन शीर्ष द्रव्य हो है ।

वहुरि ऐसै ही लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि की अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर द्वितीय सग्रह कृष्टि की अतर सग्रह

कृष्टि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि तहा सकलन धन मात्र लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध स्तन शीर्ष द्रव्य हो है ।

बहुरि लोभ की प्रथम द्वितीय सग्रह कृष्टिनि विषै जो अंतर कृष्टिनि का प्रमाण तितने विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहा सकलन धन मात्र लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध स्तन शीर्ष द्रव्य हो है ।

बहुरि लोभ की प्रथम, द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टिनि की अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर माया की प्रथम सग्रह कृष्टि की अंतर कृष्टि प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां सकलन धन मात्र माया की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध स्तन शीर्ष द्रव्य हो है । असै ही अवशेष आठ संग्रह कृष्टिनि विषै अपने अपने नीचै की सग्रह कृष्टिनि की अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपना अपना अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहा संकलन धन मात्र अपना अपना संग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध.स्तन शीर्ष का द्रव्य हो है । इस सर्व कौ जोडे एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर, एक घाटि प्रथम समय विषै कीनी सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापै, जो संकलन धन होइ, तितना सर्व अध.स्तन शीर्ष विशेष द्रव्य जानना ।

बहुरि प्रथम समय विषै जो लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै द्रव्य का प्रमाण कह्या था, तीहि प्रमाण एक एक (घाटि) कृष्टि का द्रव्य स्थापि, ताकौ अपनी अपनी संग्रह कृष्टिनि विषै करी जे (अतर कृष्टि) नवीन कृष्टि, तिनका प्रमाण करि गुणै अपनी अपनी सग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै अध स्तन कृष्टि का द्रव्य प्रमाण हो है । सर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि ताही कौ गुणै सर्व अध स्तन कृष्टि द्रव्य हो है । बहुरि प्रथम समय, द्वितीय समय सम्बन्धी जो कृष्टि विषै देने योग्य द्रव्य, ताकौ जोडे सर्व धन होइ, याकौ पुरातन वा नवीन करी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीए मध्य धन हो है । ताकौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि न्यून दोगुणहानि का भाग दीए एक उभय द्रव्य का विशेष हो है । सो एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण गच्छ स्थापि, तहा पूर्वोक्त सूत्र अनुसारि सकलन धन मात्र क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै जो द्वितीय समय विषै कृष्टिनि विषै देने योग्य अपकर्षण द्रव्य कह्या था, तिस विषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य का प्रमाण हो है ।

बहुरि एक अधिक क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि का पुरातन नवीन कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर क्रोध की प्रथम, द्वितीय कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि मात्र गच्छ स्थापि तहां सकलन धन मात्र क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है। बहुरि एक अधिक क्रोध की तृतीय द्वितीय सग्रह कृष्टिनि का पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि मात्र गच्छ स्थापि, तहा सकलन धन मात्र क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै उभय द्रव्य विशेष द्रव्य हो है।

बहुरि एक अधिक क्रोध की तीनो सग्रह कृष्टिनि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर मान की तृतीय सग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहा सकलन धन मात्र मान की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै उभय द्रव्य विशेष हो है। ऐसे एक अधिक अपनी ऊपरि की संग्रह कृष्टिनि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी सग्रह कृष्टि की पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, सकलन की अवशेष आठ सग्रह कृष्टिनि विषै भी उभय द्रव्य, विशेष द्रव्य का प्रमाण आवै है। इस सर्व कौ जोडे एक उभय द्रव्य विशेष आदि, एक उभय द्रव्य विशेष उत्तर, सब पुरातन नवीन कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि सकलन धन कीए सर्व उभय द्रव्य विशेष द्रव्य का प्रमाण आवै है।

बहुरि द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य तीहि विषै पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य घटाए जो अवशेष द्रव्य रह्या, ताकौ सर्व पुरातन नवीन कृष्टि के प्रमाण का भाग दीए एक खड का प्रमाण आवै, ताकौ अपनी अपनी पुरातन नवीन कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणे अपनी अपनी सग्रह कृष्टि का द्रव्य विषै मध्यम खड का प्रमाण आवै है। बहुरि तिस एक खड कौ सर्व पुरातन नवीन कृष्टि प्रमाण करि गुणे, सर्व मध्यम खण्ड का द्रव्य हो है। इहा प्रथम समय विषै कीनी कृष्टिनि कौ पुरातन कहिए। द्वितीय समय विषै करिए है, तिनकौ नवीन कहिए है। ऐसे द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य विषै जो कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य, तिसविषै च्यारि प्रकार कहे। अब इनके देने का विधान कहिए है—

लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि के नीचै जे अपूर्व नवीन कृष्टि करी, तिनकी जघन्य कृष्टि विषै बहुत द्रव्य दीजिए है। तहा अधःस्तन शीर्ष का द्रव्य तौ न दीजिए

है अर अध स्तन कृष्टि का द्रव्य तै एक कृष्टि का द्रव्य अर मध्यम खड का द्रव्य तै एक खड का द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष का द्रव्य तै सर्व नवीन पुरातन कृष्टिनि का जेता प्रमाण तितने विशेषनि का द्रव्य ग्रहि तहा ही दीजिए है। ऐसा यतिवृषभ आचार्य का तात्पर्य है।

बहुरि द्वितीयादि अंतपर्यन्त जे नवीन कृष्टि, तिनविषै अध स्तन कृष्टि का द्रव्य तै एक कृष्टि का द्रव्य अर मध्यम खड तै एक खड तौ समान रूप सर्वत्र दीजिए है अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य विषै एक एक विशेष मात्र द्रव्य घटता क्रम तै दीजिए है। सो कृष्टि कृष्टि प्रति उभय द्रव्य का एक विशेष जो घटचा, सो अनतवे भाग मात्र घटचा, तातै पूर्व कृष्टि तै उत्तर कृष्टि विषै अनतवे भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए है, इहा प्रथम सग्रह कृष्टि का अध स्तन कृष्टि द्रव्य तौ समाप्त भया। बहुरि नवीन कृष्टि की अत कृष्टि के ऊपरि पुरातन कृष्टि की जघन्य कृष्टि है, तीहिविषै मध्यम खड का द्रव्य तै एक खड अर उभय द्रव्य विशेष तै जितनी कृष्टि नीचै नवीन होइ आई तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए है। सो इहा नवीन कृष्टि की अतकृष्टि विषै दीया द्रव्य तै एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य अर एक उभय द्रव्य का विशेष का द्रव्य घटता दीया, सो तिस नवीन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य तौ असख्यातवे भाग मात्र अर एक उभय द्रव्य का विशेष अनतवे भाग मात्र है, तातै तिस नवीन अत कृष्टि तै असख्यातवा भाग मात्र द्रव्य पुरातन कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै दीया कहिए है। इहां पुरातन जघन्य कृष्टि विषै प्रथम समय विषै दीया द्रव्य एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य के समान है। ताकौ जोडै एक गोपुच्छाकार होइ जाइ, परतु ताकी इहा विवक्षा नाही। इहा द्वितीय समय विषै दीया द्रव्य ही की विवक्षा है, तातै असख्यातवा गुणा[1] घटता कह्या ऐसै आगै भी जहा नवीन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै पुरातन जघन्य कृष्टि विषै दीया द्रव्य असख्यात बहुभाग मात्र घटता है, तहा ऐसी ही युक्ति जाननी। बहुरि याके ऊपरि पुरातन कृष्टि की द्वितीय कृष्टि, तिस विषै अध स्तन शीर्ष का द्रव्य तै एक विशेष का द्रव्य अर मध्यम खड तै एक खड का द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष तै जितनी कृष्टि नीचै नवीन अर एक पुरातन होइ आई, तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए है। सो इहा पुरातन

१–'गुणा' शब्द के स्थान पर छपी प्रति मे 'भाग' शब्द मिलता है।

जघन्य कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै एक अध स्तन शीर्ष के विशेष का द्रव्य बध्या अर एक उभय द्रव्य का विशेष घट्या, सो उभय द्रव्य का विशेष विषै प्रथम समय सम्बन्धी विशेष मात्र अध स्तन शीर्ष का विशेष घटाए जो अवशेष रह्या सो पुरातन प्रथम कृष्टि विषै दीया द्रव्य के अनतवे भाग मात्र है । तातै तिस पुरातन प्रथम कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै इस द्वितीय कृष्टि विषै दीया द्रव्य अनतवे भाग मात्र घटता कहिए है, बहुरि पुरातन कृष्टि की तृतीयादि अत पर्यंत कृष्टिनि विषै मध्यम खड तै एक एक खड का द्रव्य तौ समान रूप अर अध स्तन शीर्ष द्रव्य तै एक एक विशेष का द्रव्य क्रम तै बधता अर उभय द्रव्य विशेष तै (एक एक विशेष तै)[१] एक एक विशेप का द्रव्य क्रम तै घटता दीजिए है । तातै अनतवा भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए । ऐसै लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार द्रव्य देने का विधान कह्या । बहुरि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि की पुरातन अत कृष्टि के ऊपरि लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि की नवीन कृष्टि की जघन्य कृष्टि है, तिस विषै लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार द्रव्य विषै अध स्तन शीर्ष द्रव्य तौ न दीजिए है अर अध,स्तन कृष्टि का द्रव्य तै एक कृष्टि का द्रव्य अर मध्यम खड द्रव्य तै एक खड का अर उभय द्रव्य विशेष तै नीचै होइ आई जे प्रथम सग्रह कृष्टि की जे नवीन पुरातन कृष्टि, तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेपनि का द्रव्य दीजिए है । सो इहा प्रथम सग्रह कृष्टि की पुरातन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै एक अध स्तन शीर्ष विशेष का द्रव्य अर एक उभय द्रव्य विशेप का द्रव्य तौ घटता अर एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य बधता दीया, सो एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य विषै एक अध स्तन शीर्ष का विशेष अर एक उभय द्रव्य विशेप का द्रव्य घटाए जो अवशेष रह्या सो प्रथम सग्रह कृष्टि की पुरातन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है तातै तिस पुरातन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र बधता कहिए है । ऐसै इहा दीयमान द्रव्य की अपेक्षा गोपुच्छ का अभाव भया । ऐसै ही आगै भी जहा पुरातन कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै नवीन कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषै दीया द्रव्य असख्यातवा भाग मात्र बधता है, तहा ऐसी ही युक्ति जाननी । बहुरि याके उपरि नवीन कृष्टि की द्वितीयादि अत पर्यंत कृष्टिनि विषै एक एक उभय द्रव्य विशेष मात्र घटता द्रव्य दीजिए है । तहा

१-यह मात्र छपी प्रति मे ही मिलता है ।

क्रम ते अनतवां भाग घटता दीया द्रव्य क्रम तै जानना । इहा अध स्तन कृष्टि द्रव्य समाप्त भया ।

बहुरि द्वितीय सग्रह कृष्टि की तिस नवीन अत कृष्टि के ऊपरि पुरातन जघन्य कृष्टि है, तिस विषै अध स्तन शीर्ष का द्रव्य तै तौ नीचै होइ आई जे प्रथम संग्रह सबधी पुरातन कृष्टि, तिनके प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य अर मध्यम खड द्रव्य तै एक खड का द्रव्य अर उभय द्रव्य विशेष तै नीचे होइ आई जे सर्व नवीन पुरातन कृष्टि, तिनका प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य दीजिए । सो एक एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य विषै इहा अध स्तन शीर्ष का द्रव्य दीया, सो घटाए अवशेष द्वितीय सग्रह की जघन्य कृष्टि के समान होइ उभय द्रव्य का विशेष मिलाए जो द्रव्य भया, सो नवीन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य के असंख्यातवे भाग मात्र है, तातै नवीन अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै इहा जघन्य पुरातन कृष्टि विषै दीया द्रव्य असख्यातवा भाग मात्र घटता द्रव्य दीया कहिए ।

बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यत पुरातन कृष्टिनि विषै क्रम तै एक एक अध स्तन शीर्ष का विशेष बधता अर एक एक उभय द्रव्य का विशेष घटता दीजिए है । तहा अनतवा भाग मात्र घटता अनुक्रम पूर्वोक्त प्रकार है । ऐसै लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि का च्यारि प्रकार द्रव्य देने का विधान है ।

बहुरि ताके ऊपरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की नवीन पुरातन कृष्टि है; तिन विषै द्रव्य देने का विधान लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि का च्यारि प्रकार द्रव्य स्थापि, तहा द्वितीय कृष्टिवत् जानना ।

विशेष इतना – पुरातन कृष्टिनि विषै अध स्तन शीर्ष का द्रव्य तै जेती नीचै पुरातन कृष्टि भई तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का द्रव्य देना अर नवीन वा पुरातन कृष्टिनि विषै उभयद्रव्य का विशेष तै जेती नीचै नवीन पुरातन कृष्टि भईं, तिनके प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि का प्रमाण द्रव्य देना । इहा लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि का च्यारि प्रकार द्रव्य समाप्त भया ।

बहुरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की पुरातन अतकृष्टि के ऊपरि माया की प्रथम सग्रह कृष्टि की नवीन जघन्य कृष्टि है, तिस विषै माया की प्रथम सग्रह कृष्टि की च्यारि प्रकार द्रव्य विषै अध स्तन शीर्ष का द्रव्य बिना एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य एक मध्यम खंड का द्रव्य अर लोभ को सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनि का प्रमाण

करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेषनि का द्रव्य दीजिए है सो एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य विषं लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि विषै जो अध स्तन शीर्ष का द्रव्य दिया, ताकौ घटाएं अवशेष लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अत कृष्टि का प्रथम समय विषै जो द्रव्य था, ताका प्रमाण होइ, तामैं एक उभय द्रव्य का विशेष घटाए अवशेष द्रव्य लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि के असख्यातवे भाग मात्र है, तातै लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै इहा माया की जघन्य नूतन कृष्टि विषै दीया द्रव्य असख्यातवा भाग मात्र बधता जानना ।

बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यत नवीन कृष्टिनि विषै एक एक उभय द्रव्य का विशेष प्रमाण अनतवा भाग घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि माया की प्रथम संग्रह कृष्टि की पुरातन जघन्य कृष्टि तै लगाय क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि का पुरातन अत कृष्टि पर्यंत पूर्वोक्त प्रकार विधान द्रव्य देने का जानना । तहा सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनि विषै एक एक मध्यम खड का द्रव्य कौ देना अर जेती नीचै नूतन पुरातन कृष्टि भई तिनके प्रमाण करि हीन सर्व नूतन पुरातन कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेपनि का द्रव्य कौ देना अर नवीन कृष्टिनि विषै एक एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य देना अर पुरातन कृष्टि विषै जेती नीचै पुरातन कृष्टि भई, तिनके प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेषनि का द्रव्य देना । ऐसै द्वितीय समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य, तिस विषै जो कृष्टि सबधी द्रव्य था, तिसके निक्षेपण करने का विधान कह्या ।

बहुरि जो अपना अपना पूर्व अपूर्व स्पर्धक सबधी द्रव्य था, ताकौ "**दिवड्ढगुणहाणिभ जिदे पढमा ।**" इत्यादि विधानकरि तिस द्रव्य कौ साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए लब्ध प्रमाण मात्र अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै बहुत द्रव्य दीजिए है ।

बहुरि ऊपरि प्रथम गुणहानि पर्यन्त चय घटता क्रम करि दीजिए है । बहुरि ऊपरि गुणहानि गुणहानि प्रति आधा आधा द्रव्य दीजिए है । या प्रकार जेसै यहु द्वितीय समय विषै वर्णन कीया तैसै ही कृष्टि करण काल का तृतीयादि अत पर्यत समयनि विषै विधान जानना ।

विशेष इतना – समय समय प्रति अपकर्षण कीया द्रव्य का प्रमाण क्रम तै असख्यात गुणा बधता जानना । अर नीचै नीचै जे नवीन कृष्टि करिए है, तिनका प्रमाण क्रम तै असख्यात गुणा घटता जानना ।

पुव्वादिम्हि अपुव्वा, पुव्वादि अपुव्वपढमगे सेसे ।
दिज्जदि असंखभागेणूणं अहियं अणंतभागूणं ॥५०४॥

पूर्वादौ अपूर्वा पूर्वादौ अपूर्वप्रथमके शेषे ।
दीयते असंख्यभागेनोनमधिकं अनंतभागोनं ॥५०४॥

टीका - अपूर्व जो नवीन कृष्टि, ताकी अंत कृष्टि तैं पूर्वैं जो पुरातन कृष्टि, ताकी आदि कृष्टि विषै तौ असंख्यातवे भाग घटता द्रव्य दीजिए है । बहुरि पूर्वैं जो पुरातन कृष्टि की अंत कृष्टि, तातैं अपूर्व जो नवीन कृष्टि, ताकी प्रथम कृष्टि विषै असंख्यातवा भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है । बहुरि अवशेष सर्व कृष्टिनि विषै पूर्व कृष्टि तैं उत्तर कृष्टि विषै द्रव्य अनंतवा भाग मात्र घटता दीजिए है । सो कथन करिही आए है ।

बारेक्कारमणंतं, पुव्वादि अपुव्वआदि सेसं तु ।
तेवीस ऊंटकूडा, दिज्जे दिस्से अणंतभागूणं ॥५०५॥

द्वादशैकादशमनंतं, पूर्वादि अपूर्वादि शेषं तु ।
त्रयोविंशतिरुष्ट्रकूटा देये दृश्ये अनंतभागोनम् ॥५०५॥

टीका – तहा पुरातन प्रथम कृष्टि तौ बारह अर प्रथम संग्रह की बिना नवीन संग्रह कृष्टि ग्यारह अर अवशेष कृष्टि अनंत जाननी । असैं देय जो देने योग्य द्रव्य, तिसविषै तेईस स्थाननि विषै उष्ट्रकूट रचना हो है ।

जैसैं ऊंट की पीठि पिछाडी तौ ऊंची अर मध्य विषै नीची अर आगैं ऊंची वा नीची हो है, तैसें इहां पहलै नवीन जघन्य कृष्टि विषै बहुत, बहुरि द्वितीयादि नवीन कृष्टिनि विषै क्रम तैं घटता अर आगैं पुरातन कृष्टिनि विषै अध स्तन शीर्ष विशेष करि बधता अर अध स्तन कृष्टि अथवा उभय द्रव्य विशेष करि घटता द्रव्य दीजिए है । तातैं देयमान द्रव्य विषै तेईस उष्ट्र कूट रचना हो है ।

बहुरि दृश्यमान विषै लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि की नवीन जघन्य कृष्टि तैं लगाय क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की पुरातन अंत कृष्टि पर्यन्त अनंतवे भाग मात्र घटता क्रम लीए द्रव्य जानना । जातैं नवीन कृष्टिनि विषै तौ विवक्षित समय विषै दीया द्रव्य, सोई दृश्यमान है अर पुरातन कृष्टिनि विषै पूर्व समयनि विषै दीया द्रव्य

अर विवक्षित समय विषै दीया द्रव्य, मिलाए दृश्यमान द्रव्य हो है, सो नूतन कृष्टिनि विपैं तौ अध स्तन कृष्टि का द्रव्य दीए अर पुरातन कृष्टिनि विषै अध स्तन शीर्ष का द्रव्य दीए तौ सर्वकृष्टि पुरातन प्रथम कृष्टि के समान हो है। तहा एक एक मध्यम खड कौ दीए तिनका समान प्रमाण ही रहया।

बहुरि उभय द्रव्य विशेष क्रम तै एक एक विशेष घटता दीया सो यहु विशेष विवक्षित कृष्टि की नीचली कृष्टि का द्रव्य के अनतवे भाग मात्र है। तातै दृश्यमान द्रव्य की अपेक्षा सर्वत्र अनतवा भाग मात्र घटता क्रम कह्या है। बहुरि अत कृष्टि तै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै दीया द्रव्य अनत गुणा घटता है, जातै तहा एक भाग विषै द्वयर्ध गुणहानि का भाग दीए, ताका प्रमाण हो है।

किट्टीकरणद्धाए, चरिमे अंतमुहुत्तसंजुत्तो।
चत्तारि होंति मासा, संजलणाणं तु ठिदिबंधो ॥५०६॥

कृष्टिकरणाद्धायाः, चरमे अंतर्मुहूर्तसंयुक्ताः।
चत्वारो भवंति मासाः संज्वलनानां तु स्थितिबंधः ॥५०६॥

टीका – कृष्टिकरण काल अतर्मुहूर्त मात्र है, ताका अत समय विषै अतर्मुहूर्त अधिक च्यारि मास प्रमाण सज्वलन चतुष्क का स्थितिबध है। अपूर्व स्पर्धक करण काल का अत समय विषै आठ वर्ष मात्र था, सो एक एक स्थितिबधापसरण विषै अतर्मुहूर्त मात्र घटि इहा इतना रहै है।

सेसाणं वस्साणं, संखेज्जसहस्सगाणि ठिदिबंधो।
मोहस्स य ठिदिसंतं, अडवस्संतोमुहुत्तहियं ॥५०७॥

शेषाणां वर्षाणां, संख्येयसहस्रकानि स्थितिबंधः।
मोहस्य च स्थितिसत्त्वं, अष्टवर्षोऽतर्मुहूर्ताधिकः ॥५०७॥

टीका – बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थिति बध सख्यात हजार वर्ष मात्र है। पूर्वै भी सख्यात हजार वर्ष मात्र ही था, सो सख्यात गुणा घटता क्रमरूप संख्यात हजार स्थितिबधापसरण भए भी आलाप करि इतना ही कह्या।

बहुरि मोहनीय का स्थितिसत्व पूर्वै सख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो घटिकरि इहा अतर्मुहूर्त अधिक आठ वर्ष मात्र रह्या।

घादितियाणं संखं, वस्ससहस्साणि होदि ठिदिसंतं।
वस्साणमसंखेज्जसहस्साणि अघादितिण्णं तु ॥५०८॥

घातित्रयाणां संख्यं, वर्षसहस्राणि भवति स्थितिसत्त्वम् ।
वर्षाणामसंख्येयसहस्राणि अघातित्रयाणां तु ॥५०८॥

टीका – तीन घातियानि का सख्यात हजार वर्ष प्रमाण स्थितिसत्त्व है। बहुरि तीन अघातियानि का असख्यात हजार वर्ष मात्र इहा स्थिति सत्त्व है।

पडिपदमणंतगुणिदा, किट्टीयो फड्ढया विसेसहिया।
किट्टीण फड्ढयाणं, लक्खणमणुभागमासेज्ज ॥५०९॥

प्रतिपदमनंतगुणिता, कृष्टयः स्पर्धका विशेषाधिकाः ।
कृष्टीनां स्पर्धकानां, लक्षणमनुभागमासाद्य ॥५०९॥

टीका – कृष्टि है ते तौ प्रतिपद अनत गुणा अनुभाग लीए है। प्रथम कृष्टि का अनुभाग तैं द्वितीय कृष्टि का अनुभाग अनत गुणा, तातैं तृतीय कृष्टि का, असै अंत कृष्टि पर्यंत क्रम ते अनत गुणा अनुभाग पाइए है। बहुरि स्पर्धक है ते प्रतिपद विशेष अधिक अनुभाग लीए है। स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा तैं द्वितीय विषै तातैं तृतीय वर्गणा विषै असैं अनत वर्गणा पर्यंत क्रम तै किछू विशेष अधिक अनुभाग पाइए है। असैं अनुभाग कौ आश्रय करि कृष्टि अर स्पर्धकनि का लक्षण है। द्रव्य अपेक्षा तौ चय घटता क्रम दोऊनि विषै ही है, परतु अनुभाग का क्रम की अपेक्षा इनका लक्षण जुदा जानि जुदापना कह्या है।

पुव्वापुव्वफड्ढयमणुहवदि हु किट्टिकारओ णियमा।
तस्सद्धा णिट्ठायदि, पढमट्ठिदि आवलीसेसे ॥५१०॥

पूर्वापूर्वस्पर्धकमनुभवति हि कृष्टिकारको नियमात् ।
तस्याद्धा निष्ठापयति, प्रथमस्थितौ आवलिशेषे ॥५१०॥

टीका – कृष्टि करने वाला तिसकाल विषै पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि ही के उदय कौ नियम करि भोगवै है। जैसै अपूर्व स्पर्धक करने तै पूर्वस्पर्धक सहित अपूर्व स्पर्धकनिकौं भोगवै है, तैसैं कृष्टि करतैं कृष्टि कौं नाही भोगवै है, असा जानना। या प्रकार

सज्वलन क्रोध का प्रथम स्थिति विषै उच्छिष्टावलि मात्र काल अवशेष रहै, तिस कृष्टिकरण काल कौ निष्ठापन करै, समाप्त करै है ।

इति कृष्टिकरणाधिकार ।

अथ कृष्टिवेदनाधिकार कहिए है—

से काले किट्टीओ, अणुहवदि हु चारिमासमडवस्सं ।
बंधो संतं मोहे, पुव्वालावं तु सेसाण ॥५११॥

स्वे काले कृष्टीन्, अनुभवति हि चतुर्मासमष्टवर्ष ।
बंधः सत्त्वं मोहे, पूर्वालापस्तु शेषाणाम् ॥५११॥

टीका – कृष्टिकरण काल के अनतरि अपने कृष्टिवेदक काल विषै कृष्टिनि के उदय कौ अनुभवे है । द्वितीय स्थिति के निषेकनि विषै तिष्ठती कृष्टिनि कौ प्रथम स्थिति के निषेकनि विषै प्राप्त करि भोगवै है । तिस भोगवने ही का नाम वेदना है । ताके काल का प्रथम समय विषै च्यारि सज्वलनरूप मोह का स्थितिवध च्यारि मास है अर स्थिति सत्त्व आठ वर्ष मात्र है । पूर्वं अतर्मुहूर्त अधिक थे, सो अतर्मुहूर्त घाटि इतने रहे । बहुरि अवशेष कर्मनि का स्थितिवध, स्थिति सत्व यद्यपि घटता भया है, तथापि आलाप करि पूर्वोक्त प्रकार जैसै कृष्टिकरण काल का अत समय विषै करै तैसै ही जानना ।

ताहे कोहुच्छिट्ठं, सव्व घादी हु देसघादी हु ।
दोसमऊणदुआवलिणवकं ते फड्ढयगदाओ ॥५१२॥

तत्र क्रोधोच्छिष्ट, सर्व घाति हि देशघाति हि ।
द्विसमयोनद्वयावलिनवकं तत् स्पर्धकगतम् ॥५१२॥

टीका – इहा अनुभाग वध तौ गुड, खड, शर्करा, अमृतरूप यथा संभव उत्कृष्ट है । बहुरि अनुभाग सत्व है, सो क्रोध की उच्छिष्टावली का तौ सर्वघाती है । काहेतै ? समय घाटि आवली प्रमाण क्रोध के निषेक उदयावली कौ प्राप्त भये है । तिनविषै पूर्वस्पर्धक रूप अनुभाग सत्त्व लता, दारु समान शक्ति युक्त है । सो ऐसी शक्ति की अपेक्षा इहा सर्वघाती कहे है । शैल समानादि की अपेक्षा सर्वघाति न कहे है । सो ए निषेक उदय काल विषै कृष्टि रूप परिणमि जो वर्तमान समय मे उदय आवने योग्य निषेक, तिनविषै उदयरूप होइ निर्जरै है । इहा आवलि विषै एक समय

घाटि कह्या है, सो उच्छिष्टावली का प्रथम निषेक वर्तमान समय-विषै कृष्टिरूप परिणमने तैं परमुखरूप होइ उदय आवै है, तातैं कह्या है । बहुरि सज्वलन चतुष्क का जे दोय समय घाटि दोय आवलि मात्र नवक समयप्रबद्ध रहै है, तिनविषै अनुभाग देशघाती शक्ति करि संयुक्त है । जातै कृष्टिकरण काल विषै कृष्टिरूप बध नाही, तातै ते स्पर्धकरूप शक्ति करि युक्त है, ते दोय समय घाटि दोऊ आवली काल विषै कृष्टिरूप परिणमि सत्ता नाश कौ प्राप्त होसी । नवक समयप्रबद्ध का स्वरूप वा अन्यरूप परिणमने का विधान पूर्वै कह्या है, सोई जानना । नवक बध अर उच्छिष्टावली मात्र निषेक अवशेष रहे थे तिनका तौ अैसें स्वरूप जानना । अवशेष सर्व निषेक कृष्टि करण काल का अंत समय विषै ही कृष्टिरूप परिणमै है ।

लोहादो कोहादो, कारउ वेदउ हवे किट्टी ।
आदिमसंगहकिट्टिं, वेदयदि ण बिदीय तिदियं च ।।५१३।।

लोभात् क्रोधात्, कारको वेदको भवेत् कृष्टेः ।
आदिमसंग्रहकृष्टिं, वेदयति न द्वितीयां तृतीयां च ।।५१३।।

टीका – कृष्टि का कारक तौ लोभ तै लगाय क्रम लीए है । अर वेदक है सो क्रोध तै लगाय क्रम लीए है ।

भावार्थ यहु – कृष्टिकरण विषै तौ पहिले लोभ की, पीछै मान की, पीछै माया की, पीछै क्रोध की अैसे क्रम लीए कृष्टि कही थी । इहा कृष्टि का वेदने विषै पहिले क्रोध की, पीछै मान की, पीछै माया की, पीछै लोभ की कृष्टिनि का अनुभवन हो है ।

बहुरि इतना जानना । कृष्टिकरण विषै जाकौ तृतीय सग्रह कृष्टि कही है, ताकौ तौ इहा कृष्टि वेदन विषै प्रथम कृष्टि कहनी अर जाकौ तहा प्रथम कृष्टि कही, ताकौ इहा तृतीय कृष्टि कहनी, जो अैसे न होइ तो पहले स्तोक शक्ति लीए कृष्टिनि का अनुभवन होइ, पीछै बहुत शक्ति लीए कृष्टिनि का अनुभव होइ, सो बनै नाही, जातै समय समय अनत गुणा घटता अनुभाग का उदय हो है । तातै सग्रह कृष्टिनि विषै कृष्टिकारक तै कृष्टिवेदक कै उलटा क्रम जानना । बहुरि तहा अतर कृष्टिनि विषै पूर्वोक्त प्रकार ही क्रम जानना । बहुरि इहा पहले क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि कौ ही अनुभवै है, द्वितीय तृतीय सग्रह कृष्टि को नाही अनुभवै है, अैसा जानना

किट्टीवेदगपढमे, कोहस्स य पढमसंगहादो दु ।
कोहस्स य पढमठिदी, पत्तो उव्वट्टगो मोहे ॥५१४॥

कृष्टिवेदकप्रथमे, क्रोधस्य च प्रथमसंग्रहात् तु ।
क्रोधस्य च प्रथमस्थितिः, प्राप्तः अपवर्तको मोहे ॥५१४॥

टीका – कृष्टिवेदक काल का प्रथम समय विषै क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि तै क्रोध की प्रथम स्थिति करै है, कैसै ? सो कहिए है—

कृष्टिकरण काल का अत समय पर्यंत तौ कृष्टिनि का तौ दृश्यमान प्रदेशनि का समूह है सो चय घटता क्रम लीए गोपुच्छाकाररूप अपने स्थान विषै तिष्ठै है । अर स्पर्धकनि का अपने स्थान विषै प्रदेश समूह एक गोपुच्छाकार रूप तिष्ठै है । तहा कृष्टिनि का द्रव्य तै स्पर्धकनि का द्रव्य असख्यात गुणा है, तातै कृष्टि अर स्पर्धकनि के एक गोपुच्छाकार है नाही । बहुरि कृष्टिकरण काल की समाप्तता के अनतरि सर्व ही द्रव्य (लीए एक भूमि)[1] कृष्टिरूप परिणमि एक गोपुच्छाकार तिष्ठै है । तहां सज्वलन के सर्व द्रव्य कौ आठ का भाग देइ तहा एक एक भाग मात्र लोभ, माया, मान का, पाच भाग मात्र क्रोध का द्रव्य जानना ।

वहुरि बारह सग्रह कृष्टिनि विषै विभाग कीजिए तौ सर्व सज्वलन द्रव्य कौ चौईस का भाग दीए तहा अन्य सग्रह कृष्टिनि का एक एक भाग मात्र क्रोध का प्रथम सग्रहकृष्टि का तेरह भाग मात्र द्रव्य है, इहा साधिकपना न्यूनपना है, सो यथा-सम्भव पूर्वोक्त प्रकार जानना । पूर्वै कृष्टिकरण काल का द्वितीय समय विषै जैसै विधान कह्या है, तैसै कहना ।

वहुरि प्रथम समय विषै करी कृष्टिनि का प्रमाण विषै ताके असंख्यातवे भाग मात्र द्वितीयादि समयनि विषै करी कृष्टिनि का प्रमाण जोडै सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण हो है । सो कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषै क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का जो द्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहा एक भाग ग्रहि ताकौं पल्य का असख्यातवां भाग का भाग देइ, तहा एक भाग मात्र द्रव्य कौं ग्रहि प्रथम स्थिति कौं करै है । सो क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक का काल तैं

1–घ प्रति मे "लीए एक भूमि" इतना अश मिलता है ।

उच्छिष्टावली मात्र अधिक प्रथम स्थिति के निषेकनि का प्रमाण है । सोई इहा गुण-श्रेणी आयाम जानना । ताके वर्तमान उदयरूप प्रथम निषेक विषै तौ स्तोक द्रव्य दीजिए है । तातै द्वितीयादि अत समय पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । असै तिस एक भाग मात्र द्रव्य का गुणश्रेणी रूप देना हो है । इहां प्रथम स्थिति का जो अंत का निषेक ताही का नाम गुणश्रेणी शीर्ष है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कह्या । ताकौ स्थिति की अपेक्षा क्रोध की द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टि तै भी अपकर्षण कीया जो द्रव्य, तामै मिलाएं जो द्रव्य भया, ताकौ इहा आठ वर्ष मात्र स्थिति है, ताकी सख्यात आवली भई सोई गच्छ, ताका भाग दीए मध्यधन होइ । तामै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र चय मिलाए द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषै दीया द्रव्य का प्रमाण हो है, सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असंख्यात गुणा है । बहुरि ताके असख्यातवा भाग मात्र विशेष का प्रमाण है, सो द्वितीयादि निषेकनि विषै अतिस्थापनावली के नीचै एक एक विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । असै क्रम करि समय समय प्रति उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी कीजिए है । बहुरि इहा मोह का अपवर्तन घात हो है । इहां तै पहलै अश्वकर्णरूप अनुभाग का अतर्मुहूर्त करि संपूर्ण होइ असा काडकघात वर्तै था । अब सज्वलन की बारह सग्रह कृष्टि तिनका समय समय प्रति अनत गुणा घटता अनुभाग होने करि अपवर्तन घात वर्तै है ।

पढमस्स संगहस्स य, असंखभागा उदेदि कोहस्स ।
बंधेवि तहा चेव य, माणतियाणं तहा बंधे ॥५१५॥

प्रथमस्य संग्रहस्य च, असंख्यभागान् उदयति क्रोधस्य ।
बंधेऽपि तथा चैव च, मानत्रयाणां तथा बंधे ॥५१५॥

टीका – कृष्टिवेदक का प्रथम समय विषै क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि सम्बन्धी जे अतर कृष्टि, तिनके प्रमाण कौ असख्यात का भाग दीए तहा बहुभाग मात्र कृष्टि उदय आवै है । तहा एक भाग मात्र नीचे की ऊपरि की कृष्टि कौ छोडि बीचि की बहुभाग मात्र कृष्टिनि का उदय हो है । जे प्रथम द्वितीयादि कृष्टि, तिनकौ नीचली कृष्टि कहिए । बहुरि अत उपात आदि जे कृष्टि, तिनकौं ऊपरली कृष्टि कहिए है । तहा उदयरूप न होइ असी नीचली कृष्टि ते तौ अनत गुणा बधता अनुभाग रूप होइ करि अर ऊपरि की कृष्टि अनत गुणा घटता अनुभागरूप होइ करि ते कृष्टि बीचि की कृष्टिरूप परिणमि उदय आवै है ।

बहुरि बंध विषै भी नीचली ऊपरली असख्यातवा भाग मात्र कृष्टि छोडि बीचि की असख्यात बहुभाग मात्र कृष्टि जाननी। उदयरूप कृष्टिनि विषै जो ऊपरली अनुदय कृष्टिनि का प्रमाण तातै साधिक दूणा प्रमाण लीए नीचली ऊपरली कृष्टिनि का प्रमाण घटाए बधरूप कृष्टिनि का प्रमाण हो है। इनका बध इहा हो है। बहुरि इहा मानादिक की अपनी अपनी प्रथम सग्रह कृष्टि की नीचली ऊपरली कृष्टि प्रमाण का असख्यातवा भाग मात्र कृष्टिनि कौं नीचे ऊपरि छोडि बीचि की बहुभाग मात्र कृष्टि बधै है। बहुरि इहा मानादिकनि की तीनो ही सग्रह कृष्टिनि का उदय नाही है अर क्रोध की द्वितीय, तृतीय सग्रहकृष्टि का बध वा उदय नाही है, असा जानना।

कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्स य हेट्ठिमणुभयट्ठाणा।
तत्तो उदयट्ठाणा, उवरिं पुण अणुभयट्ठाणा ॥५१६॥

उवरिं उदयट्ठाणा, चत्तारि पदाणि होंति अहियकमा।
मज्झे उभयट्ठाणा, होंति असंखेज्जसंगुणिया ॥५१७॥

क्रोधस्य प्रथमसंग्रहकृष्टेश्चाधस्तनानुभयस्थानानि।
तत उदयस्थानानि, उपरि पुनरनुभयस्थानानि ॥५१६॥

उपरि उदयस्थानानि, चत्वारि पदानि भवंति अधिकक्रमाणि।
मध्ये उभयस्थानानि, भवंति असंख्येयसंगुणितानि ॥५१७॥

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि की अतर कृष्टिनि विषै अध स्तन कहिए प्रथम द्वितीयादि नीचली जे अनुभय स्थान कहिए जिनिका उदय अर बध दोऊ नाही असी नीचली कृष्टि, तिनिका प्रमाण स्तोक है, ताकी सदृष्टि दोय का अक। बहुरि तातै ताही कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग मात्र विशेष करि अधिक तीन अनुभय कृष्टिनि के ऊपरिवर्ती जे नीचली उदयस्थान कहिए जिनिका उदय पाइए बंध न पाइए असी कृष्टि, तिनिका प्रमाण है। ताकी संदृष्टि तीन का अक। बहुरि तातै ताही कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए तहां एक भाग मात्र विशेष करि अधिक उपरितन कहिए अन्त उपात आदि ऊपरिकी अनुभयस्थाना कहिए बध-उदय रहित कृष्टि, तिनका प्रमाण है। ताकी सदृष्टि च्यारि का अक। बहुरि तातै ताहीकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग मात्र विशेषकरि अधिक तिनि कृष्टिनि के नीचै पाइए असी ऊपरली उदयस्थाना

कहिए उदय सहित बध रहित कृष्टि, तिनका प्रमाण है । ताकी सदृष्टि सात का अंक असै च्यारि पद तौ अधिक क्रम लीए है । बहुरि तातै असख्यात गुणा बीचिकी उभय-स्थाना कहिए जिनिका बध भी पाइए असी कृष्टिनि का प्रमाण है । सोई कहिए है–

क्रोध की प्रथम सग्रहकृष्टि विषै जो कृष्टिनि का प्रमाण, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग मात्र तौ बीचिकी उभय कृष्टिनि का प्रमाण है । बहुरि अवशेष एक भाग रह्या ताकौ **'प्रक्षेपयोगोद्धृतमिश्रपिंडः'** इत्यादि सूत्र विधान तै अक सदृष्टि अपेक्षा दोय, तीन, च्यारि, सात शलाकानि कौ जोडै सोलह भया, ताका भाग देइ जो एक भाग का प्रमाण आया, ताकौ अपनी अपनी दोय आदि शलाकानि करि गुणै, नीचली अनुभय कृष्टि आदिकनि का प्रमाण आवै है । असै ही बारह सग्रह कृष्टिनि का वेदक काल का प्रथम समय विषै अल्प बहुत्व जानना ।

बिदियादिसु चउठाणा, पुव्विल्लेहिं असंखगुणहीणा ।
तत्तो असंखगुणिदा, उवरिमणुभया तदो उभया[1] ॥५१८॥

द्वितीयादिषु चतुःस्थानानि, पूर्वेभ्योऽसंख्यगुणहीनानि ।
ततः असंख्यगुणितानि, उपर्यनुभयानि तत उभयानि ॥५१८॥

टीका – अब कृष्टिकरण काल का द्वितीयादि समयनि विषै कहिए है–पूर्व समय विषै जे नीचली बध रहित केवल उदय कृष्टि थी, ते तौ उत्तर समय विषै उभय कृष्टि रूप हो है । अर अपूर्व समय विषै अनुभय कृष्टि थी, तिन विषै अत की केतीक कृष्टि उभयरूप तिनतै नीचली केतीक केवल उदय रूप उत्तर समय विषै हो है । बहुरि पूर्व समय विषै जे ऊपरिकी केवल उदय कृष्टि थी, ते सर्व उत्तर समय विषै अनुभय रूप हो है । बहुरि पूर्व समय विषै जे उभय कृष्टि थी, तिनविषै अत की केतीक कृष्टि अनुभय रूप, तिनतै नीचै केतीक केवल उदय रूप कृष्टि उत्तर समय विषै हो है । असै समय समय प्रति बध अर उदय विषै अनुभाग का घटना हो है, जातै नीचली कृष्टिनि विषै अनुभाग स्तोक पाइए है, ऊपरिकी कृष्टिनि विषै अनुभाग बहुत पाइये है । असै होतै अल्प-बहुत्व कहिए है—

नीचे की अनुभय कृष्टि तौ स्तोक है, तातै तिनके ऊपरि जे नीचली केवल उदय कृष्टि ते विशेष अधिक है । तातै परै पूर्व समय विषै जो उत्कृष्ट अनुभाग लीए

१–षट्खडागम धवला पुस्तक–६, पृष्ठ ३८४,

अन की बंध रूप कृष्टि थी, तातै लगाय नीचै जे उत्तर समय विषै अनुभय कृष्टि भई, ते विशेष अधिक है। तातै तिनके नीचे जे विवक्षित समय विषै केवल उदय रूप कृष्टि भई, ते विशेष अधिक है। ऐसै ए च्यारि स्थान तौ पूर्व समय विषै नीचली अनुभय कृष्टि आदिका प्रमाण जो था, तातै असख्यात गुणे घाटि है।

बहुरि तिन उदय कृष्टिनि तै पूर्व समय विषै जो ऊपरि की उदय कृष्टि थी, तिनविषै स्तोक अनुभाग लीए जो आदि की जघन्य कृष्टि, तीहि समान कृष्टि तै लगाय जे उत्तर समय विषै सर्व अनुभय कृष्टि भई, ते असख्यात गुणी है। जातै पूर्व समय विषै जो ऊपरिकी अनुभय कृष्टिनि का प्रमाण था, ताके असख्यातवे भाग मात्र कृष्टि पूर्व समय सवधी ऊपरि की जघन्य उदय कृष्टि तै नीचै उत्तर उत्तर समय विषै ऊपरि की जघन्य अनुभय कृष्टि हो हैं। बहुरि तातै पूर्व समय सबधी ऊपरि की उदय कृष्टि का प्रमाण के असख्यावे भाग मात्र कृष्टि नीचै उतरै इस विवक्षित समय विषै ऊपरि की जघन्य उदय कृष्टि हो हैं। बहुरि तिन अनुभय कृष्टिनि का प्रमाण तै बीचि विषै जे बध उदय युक्त उभय कृष्टि है, ते असख्यात गुणी है। ऐसै द्वितीयादि समयनि विषै कृष्टिनि का अल्प-बहुत्व जानना।

पुव्विल्लबंधजेट्ठा, हेट्ठासंखेज्जभागमोदरिय।
संपडिगो चरिमोदयवरमवरं अणुभयाणं च ॥५१९॥

पौर्विकबंधज्येष्ठात्, अधस्तनमसंख्येयभागमवतीर्य।
सांप्रतिकः चरमोदयवरमवरं अनुभयानां च ॥५१९॥

टीका – पूर्व समय सबधी बध की उत्कृष्ट कृष्टि कहिए अत की बध कृष्टि तातै लगाय पूर्व समय सबधी उभयकृष्टिनि के असख्यातवे भाग मात्र कृष्टि नीचै उतरि करि साप्रतिक कहिए वर्तमान उत्तर समय सबधी अत की केवल उदय रूप उत्कृष्ट कृष्टि हो है। अर ताके अनतरि उपरि अनुभय कृष्टि की जघन्य कृष्टि पाइए है। बहुरि तिस उत्कृष्ट उदय कृष्टि तै नीचे पूर्व समय सबधी उदय कृष्टि के असख्यातवे भाग मात्र कृष्टि नीचै उतरि साप्रतिक उदय की जघन्य कृष्टि हो है। ताके अनतर नीचै उभयकृष्टि की उत्कृष्ट कृष्टि हो है, ऐसै तौ ऊपरि भी कृष्टिनि विषै विधान जानना।

हेट्ठिमणुभयवरादो, असंखबहुभागमेत्तमोदरिय।
संपडिबंधजहण्णं, उदयुक्कस्सं च होदि त्ति ॥५२०॥

अधःस्तनानुभयवरान् असंख्यबहुभागमात्रमवतीर्य ।
संप्रतिबंधजघन्यं, उदयोत्कृष्टं च भवतीति ।।५२०।।

टीका – पूर्व समय सम्बन्धी अनुभय कृष्टि की जो उत्कृष्ट कृष्टि कहिए अंत कृष्टि, तातै पूर्व समय सम्बन्धी अनुभय कृष्टिनि का असख्यात बहुभाग मात्र कृष्टि नीचे उतरि सांप्रतिक बध कृष्टि, जो बध उदय युक्त उभय कृष्टि, ताकी जघन्य कृष्टि हो है । बहुरि ताके अनतरि नीचली कृष्टि सो केवल उदय कृष्टिनि की उत्कृष्ट कृष्टि है तातै लगाय पूर्व समय सम्बन्धी उदय कृष्टिनि के असख्यातवे भाग मात्र कृष्टि उतरि करि साप्रतिक उदय कृष्टि की जघन्य कृष्टि हो है । ताके नीचै पूर्व समय संबंधी अनुभय कृष्टिनि के असख्यातवे, भाग मात्र कृष्टि नीचै उतरि साप्रतिक जघन्य अनुभय कृष्टि हो है । सोई सर्व कृष्टिनि विषै जघन्य कृष्टि है । ऐसै नीचली कृष्टिनि विषै विधान जानना । ऐसै समय समय प्रति पूर्व समय सबधी नीचली अनुभय उदय कृष्टि ऊपरली उदय अनुदय कृष्टिनि का प्रमाण तै उत्तर समय सबधी तिनका प्रमाण असख्यात गुणा घटता है । अर बीचि विषै जो उभय कृष्टि है, तिनका प्रमाण विशेष अधिक हो है, ऐसा जानना ।

पडिसमयं अहिगदिणा, उदये बंधे च होदि उक्कस्सं ।
बंधुदये च जहण्णं, अणंतगुणहीणया किट्टी ।।५२१।।

प्रतिसमयमहिगतिना, उदये बंधे च भवति उत्कृष्टं ।
बंधोदये च जघन्यं, अनंतगुणहीनका कृष्टिः ।।५२१।।

टीका – समय समय प्रति सर्प की गतिवत् उत्कृष्ट कृष्टि तौ उदय अर बंध विषै बहुरि जघन्य कृष्टि बध अर उदय विषै अनत गुणा घटता क्रम लीए अनुभाग अपेक्षा जाननी । सोई कहिए है—

सर्व कृष्टिनि के अनत बहुभाग मात्र बीचि की कृष्टि बधरूप है, तिनतै साधिक उदय रूप है । तिन विषै जो सर्व तै स्तोक अनुभाग लीए प्रथम कृष्टि, सो जघन्य कृष्टि कहिए । सर्व तै अधिक अनुभाग लीए अत कृष्टि, सो उत्कृष्ट कृष्टि कहिए । तहा कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषै जो उदय की उत्कृष्ट कृष्टि, सो बहुत अनुभाग युक्त है । तातै तिसही समय विषै बध की उत्कृष्ट कृष्टि अनत गुणा घटता अनुभाग लाए है । तातै द्वितीय समय विषै उदय की उत्कृट कृष्टि अनत गुणा घटता अनुभाग लीएं है । तातै तिस ही समय विषै बंध की उत्कृष्ट कृष्टि अनंत गुणा घटता अनुभाग

लीए है। तातै तीसरा समय विषै उदय की उत्कृष्ट कृष्टि अनत गुणा घटता अनुभाग लीए है। तातै तिस ही समय विषै वध की उत्कृष्ट कृष्टि अनत गुणा घटता अनुभाग लीए है। या प्रकार जैसे सर्प इधर तै उधर, उधर तै इधर गमन करै है तैसै विवक्षित समय विषै उदय की तै वध की अर पूर्व समय सबधी बध की तै उत्तर समय सम्बन्धी उदय की उत्कृष्ट कृष्टि विषै अनत गुणा घटता अनुभाग क्रम तै जानना। बहुरि कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषै वध की जघन्य कृष्टि बहुत अनुभाग युक्त है। तातै तिस समय विषै उदय की जघन्य कृष्टि अनत गुणा घटता अनुभाग युक्त है। तातै दूसरा समय विषै वध की जघन्य कृष्टि अनन्त गुणा घटता अनुभाग युक्त है, तातै तिस समय विषै उदय की जघन्य कृष्टि अनन्त गुणा घटता अनुभाग युक्त है। ऐसै सर्प की चालवत् एक समय विषै वध की तै उदय की अर पूर्व समय सबधी उदय की तै उत्तर समय सबधी वध की जघन्य कृष्टि विषै अनत गुणा घटता अनुभाग जानना। ऐसी प्ररूपणा क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक काल का अत समय पर्यंत है। बहुरि ताकी द्वितीय तृतीय सग्रह कृष्टि वेदक कै भी ऐसै ही क्रम जानना।

अव सक्रमण द्रव्य का विधान कहिए है—

संकमदि संगहाणं, दव्वं सगहेट्ठिमस्स पढमोत्ति।
तदणुदये संखगुणं, इदरेसु हवे जहाजोग्गं ॥५२२॥

संक्रामति संग्रहाणां, द्रव्यं स्वकाधस्तनस्य प्रथम इति।
तदनुदये संख्यगुणमितरेषु भवेत् यथायोग्यम् ॥५२२॥

टीका – सग्रह कृष्टिनि का द्रव्य है, सो विवक्षित स्वकीय कषाय के नीचै जो कषाय, ताकी प्रथम सग्रह कृष्टि पर्यंत सक्रमण करै है।

भावार्थ यहु – जो स्वस्थान विषै विवक्षित कषाय की सग्रह कृष्टि का द्रव्य, तिस ही कषाय की अन्य सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण करै तौ तीसरी सग्रह कृष्टि पर्यंत करै। अर परस्थान विषै जो अन्य कषाय विषै सक्रमण करै तौ तिस विवक्षित कषाय तै लगती जो कषाय, ताकी प्रथम सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण करै जो द्रव्य जिस विषै सक्रमण करै, सो द्रव्य तिस ही रूप परिणमै है। तहा जिस सग्रह कृष्टि कौ भोगवै है, ताका अपकर्षण कीया हुवा द्रव्य तै ताके अनतरि भोगने योग्य जो सग्रह कृष्टि तिस विषै सख्यात गुणा द्रव्य सक्रमण हो है। औरनि विषै यथायोग्य सक्रमण हो है। सोई कहिए है—

जैसे प्रवृत्ति विषै जमाखरच कहिए, तैसैं इहा आय द्रव्य, व्यय द्रव्य कहिए है। जो अन्य सग्रह कृष्टिनि का द्रव्य सक्रमरण करि विवक्षित सग्रह कृष्टि विषैं आया-प्राप्त भया, ताका नाम आय द्रव्य है। बहुरि विवक्षित संग्रह कृष्टि का द्रव्य संक्रमरण करि अन्य सग्रह कृष्टिनि विषै गया, ताका नाम व्यय द्रव्य है।

बहुरि इहा क्रोध को प्रथम संग्रह कृष्टि बिना अन्य ग्यारह सग्रह कृष्टिनि का अपना अपना जो द्रव्य, ताकौ अपकर्षरण भागहार का भाग दीए जो एक भाग मात्र द्रव्य सक्रमरण करै है, सो एक द्रव्य कहिए है। बहुरि क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य कौ अपकर्षरण भागहार का भाग दीए जो एक भाग मात्र द्रव्य सक्रमरण करै, सो तेरह द्रव्य कहिए है, जातै अन्य संग्रह कृष्टि का द्रव्य तै क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य नोकषाय के द्रव्य मिलने तै तेरह गुरणा है। तहा लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि अर द्वितीय सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमण करै है, तातै ताकै आय द्रव्य दोय है। बहुरि लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि का ही अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमण करै है, तातै ताके आय द्रव्य एक है, बहुरि लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै माया की प्रथम, द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमरण करै है, तातै ताकै आय द्रव्य तीन है। बहुरि माया की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै माया की द्वितीय प्रथम संग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमण करै है, तातै ताकै आय द्रव्य दोय है। बहुरि माया की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै माया की प्रथम सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमरण करै है, तातै ताकै आय द्रव्य एक है। बहुरि माया की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै मान की प्रथम, द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य संक्रमरण करै है, तातै ताकै आय द्रव्य तीन है। बहुरि मान की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै मान की द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमरण हो है। तातै ताकै आय द्रव्य दोय है। बहुरि मान की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै मान की प्रथम सग्रह कृष्टि का ही अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमरण हो है, तातै ताकै आय द्रव्य एक है। बहुरि मान की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै क्रोध की प्रथम, द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमण हो है, तातै ताकै आय द्रव्य पंद्रह हैं। बहुरि क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि विषै क्रोध की प्रथम, द्वितीय कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य सक्रमरण हो है, तातै ताकै आय द्रव्य चौदह हैं। बहुरि क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै क्रोध को प्रथम सग्रह कृष्टि का अपकर्षरण कीया द्रव्य तेरह, तातै चौदह

गुणा सक्रमण हो है । तातै ताकै आय द्रव्य एक सौ बियासी है । इहा चौदह गुणा करने का प्रयोजन कहिए है—

अनतरि भोगने योग्य सग्रह कृष्टि विषै सख्यात गुणा द्रव्य का सक्रमण होना कह्या है, सो इहा सख्यात का प्रमाण अपने गुणाकार तै एक अधिक जानना । सो यह क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि कौं भोगवै है । अर ताके अनतरि क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि कौं भोगवैगा । तातै क्रोध की प्रथम कृष्टि का अपकर्षण कीया द्रव्य तै सख्यात गुणा द्रव्य का द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण हो है । बहुरि इहा प्रथम कृष्टि का द्रव्य विषै तेरह का गुणकार है, तातै एक अधिक कीए सख्यात का प्रमाण चौदह इहा जानना । अन्य सग्रह कृष्टि वेदक विषै सख्यात का प्रमाण अन्य होगा, सो आगै कहैगे । बहुरि क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य है नाही, जातै आनुपूर्वी सक्रमण पाइए है । इहा सक्रमण द्रव्य कौ अपकर्षण द्रव्य का अनुभाग घटने की अपेक्षा हानि होने तै कह्या है ।

असै आय द्रव्य का विभाग कह्या ।

अब व्यय द्रव्य का विभाग कहिए है—

क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य क्रोध की द्वितीय, तृतीय मान की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै एक सौ बियासी तेरह तेरह द्रव्य मिलि, ताकै व्यय द्रव्य दोय सै आठ हो हैं । बहुरि क्रोध की द्वितीय कृष्टि का द्रव्य क्रोध की तृतीय, मान की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य दोय हो है । बहुरि क्रोध की तृतीय कृष्टि का द्रव्य मान की प्रथम सग्रह कृष्टि ही विषै गया, तातै ताके व्यय द्रव्य एक है । बहुरि मान की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य मान की द्वितीय, तृतीय माया की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै गया तातै ताकै व्यय द्रव्य तीन है । बहुरि मान की द्वितीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य मान की तृतीय, माया की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य दोय हैं । बहुरि मान की तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य माया की प्रथम सग्रह कृष्टि ही विषै गया, तातै ताके व्यय द्रव्य एक है । बहुरि माया की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य माया की द्वितीय, तृतीय लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य तीन हैं । बहुरि माया की द्वितीय कृष्टि का द्रव्य, माया की तृतीय, लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य दोय है । बहुरि माया की तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै ही गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य एक है । बहुरि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्रव्य लोभ की द्वितीय,

तृतीय सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य दोय है । बहुरि लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य, लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै गया, तातै ताकै व्यय द्रव्य एक है । बहुरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य अन्यत्र न जाय है, जातै विपरीत संक्रमण का अभाव है, तातै ताकै व्यय द्रव्य नाही है ।

ग्रैसै व्यय द्रव्य का विभाग कह्या ।

आगै अनुसमय अपवर्तन की प्रवृत्ति का क्रम कहिए है—

पडिसमयं संखेज्जदिभागं णासेदि कंडयेण विणा ।
बारससंगहकिट्टीणग्गादो किट्टिवेदगो णियमा ।।५२३।।

प्रतिसमयं संख्येयभागं नाशयति कांडकेन विना ।
द्वादशसंग्रहकृष्टीनामग्रतः कृष्टिवेदको नियमात् ।।५२३।।

टीका – कृष्टि वेदक जीव है, सो काडक बिना बारह सग्रह कृष्टिनि का अग्र भाग तैं सर्व कृष्टिनि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टिनि कौ नष्ट करै है नियम तै ।

भावार्थ – कृष्टिकरण काल का अत समय पर्यंत तौ अतर्मुहूर्त काल करि निष्पन्न जो कांडक विधान, ताकरि अनुभाग का नाश होता था, अब कृष्टि भोगने का प्रथम समय तै लगाय समय समय प्रति अग्रघात होने लगा । तहां बारह सग्रह कृष्टिनि का जे अतर कृष्टि, तिन विषै अत कृष्टि तै लगती जे बहुत अनुभाग युक्त ऊपरि की केतीक कृष्टि, तिनका नाश करि तिनि कृष्टिनि के द्रव्य कौ स्तोक अनुभाग युक्त नीचली कृष्टिनि विषै निक्षेपण करिए है । तहा जिनि कृष्टिनि का नाश कीया, तिनिका नाम घात कृष्टि है, सो अपनी अपनी सग्रह कृष्टि विषै अतर कृष्टिनि का प्रमाण स्थापि, ताकौं अपकर्षण भागहार के असख्यातवे भाग मात्र जो असख्यात ताका भाग दीए अपनी अपनी घात कृष्टिनि का प्रमाण आवै है । बहुरि इन घात कृष्टिनि के जे परमाणू, ताका नाम घात द्रव्य है, सो अपनी अपनी अत कृष्टि का द्रव्य कौ घात कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै अत कृष्टि के नीचै एक एक विशेष बधता है । तातै विशेष अधिक कीए घात द्रव्य का प्रमाण आवै है ।

णासेदि परट्ठाणिय, गोउच्छं अग्गकिट्टिघादादो ।
सट्ठाणियगोउच्छं, संकमदव्वादु घादेदि ।।५२४।।

नाशयति परस्थानकं, गोपुच्छमग्रकृष्टिघातात् ।
स्वस्थानिकगोपुच्छं, संक्रमद्रव्यात् घातयति ।।५२४।।

टीका – अग्रकृष्टि घात तें तौ परस्थान गोपुच्छ कौं नष्ट करै है अर संक्रम द्रव्य जो अन्य संग्रहरूप भया औसा पूर्वोक्त व्यय द्रव्य, तातें स्वस्थान गोपुच्छ कौं नष्ट करै है । कैसें ? सो कहिए है—

विवक्षित एक संग्रह कृष्टि विषै जो अंतर कृष्टिनि कै विशेष घटता क्रम पाइए है, सो इहां स्वस्थान गोपुच्छ कहिए है । बहुरि नीचली विवक्षित संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि तें ऊपरि की अन्य संग्रह कृष्टि की आदि कृष्टि कै विशेष घटता क्रम पाइए है, सो इहां परस्थान गोपुच्छ कहिए । तहां कृष्टिनि कौ हीन अधिक द्रव्य का संक्रमण होने तें चय घटता क्रम नष्ट भया, तातें पूर्वें स्वस्थान गोपुच्छ था, ताका संक्रमण द्रव्य करि नाश भया । बहुरि नीचली संग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि अर ऊपरली संग्रह कृष्टि की आदि कृष्टि, तिनिकै बीचि कृष्टिनि का घात होने तें एक विशेष घटता क्रम न रह्या, तातें पूर्वें परस्थान गोपुच्छ था, ताका घातद्रव्य करि नाश भया ।

आयादो वयमहियं, हीणं सरिसं कहिंपि अण्णं च ।
तम्हा आयद्दव्वा, ण होदि सट्ठाणगोउच्छं ।।५२५।।

आयतो व्ययमधिकं, हीनं सदृशं कुत्रापि अन्यच्च ।
तस्मादायद्रव्यान्न भवति स्वस्थानगोपुच्छम् ।।५२५।।

टीका – इहां कोऊ कहै व्यय द्रव्य गया अर आय द्रव्य आया, तातें व्यय द्रव्य करि स्वस्थान गोपुच्छ का नाश कह्या, आय द्रव्य करि स्वस्थान गोपुच्छ का होना कह्या, तहां कहिए है—

कहीं संग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य तें व्यय द्रव्य अधिक है, कहीं हीन है, कहीं समान है, कहीं आय द्रव्य है, व्यय नाहीं, कहीं व्यय द्रव्य है, आय द्रव्य नाहीं । तातें आय द्रव्य तें स्वस्थान गोपुच्छ न हो है ।

अब जैसें स्वस्थान परस्थान गोपुच्छ का सद्भाव हो है, तैसें कहिए है—

घादयदव्वादो पुण, वय आयदखेत्तदव्वगं देदि ।
सेसासंखाभागे अणंतभागूणयं देदि ।।५२६।।

घातकद्रव्यात् पुनर्व्ययमायतक्षेत्रद्रव्यकं ददाति ।
शेषासंख्यभागं अनंतभागोनकं ददाति ॥५२६॥

टीका – घात द्रव्य तै व्यय द्रव्य अर आयतक्षेत्र द्रव्य कौ दीए एक गोपुच्छ हो है । कैसै ? सो कहिए है—

पूर्वै जो व्यय द्रव्य कह्या, तामैं जिनि कृष्टिनि का घात कीया, तिनि कृष्टिनि का व्यय द्रव्य घटाएं अवशेष रहै, तितना द्रव्य घात द्रव्य तै ग्रहण करि जिन कृष्टिनि का जितना जितना व्यय द्रव्य भया था, तिन कृष्टिनि का तितना तितना देइ पूरण कीए स्वस्थान गोपुच्छ का सद्भाव हो है ।

घात कृष्टि सम्बन्धी व्यय द्रव्य कितना ? सो कहिए है—

अपनी अपनी सग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए तिस अत कृष्टि का व्यय द्रव्य का प्रमाण आवै है । ताकौ अपनी अपनी घात कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणे अर तहा विशेष अधिक कीए सर्वघात कृष्टि सम्बन्धी व्यय द्रव्य का प्रमाण हो है, सो घात कृष्टि नि का तौ नाश ही भया, सो तहा द्रव्य देना ही नाही । तातै याकौ व्यय द्रव्य विषै घटाइ अवशेष व्यय द्रव्य मात्र द्रव्य देने करि स्वस्थान गोपुच्छ की सिद्धि हो है । बहुरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि का घात कीए पीछै अवशेष रही जे कृष्टि, तिन विषै जो अत कृष्टि, तिसतै लोभ की द्वितीय सग्रह की प्रथम सग्रह कृष्टि है, सो बीचि की कृष्टि का घात होने तै एक अधिक लोभ की तृतीय सग्रह की घात कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जे विशेष कहिए चय, तिन करि हीन भई सो अपने नीचै लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की घात कृष्टिनि का जो प्रमाण तितने विशेषनि का जेता द्रव्य होइ तितना द्रव्य कौ अपने घात द्रव्य तै ग्रहण करि तहा लोभ की द्वितीय सग्रह की प्रथम कृष्टि विषै दीए यहु प्रथम कृष्टि तिस तृतीय सग्रह की अत कृष्टि तै एक विशेष मात्र घटती हो है । असै ही याकी द्वितीयादि घात कीए पीछै अवशेष रही कृष्टिनि की अंत कृष्टि पर्यंत कृष्टिनि विषै तितना तितना द्रव्य घात द्रव्य तै ग्रहण करि दीए लोभ की तृतीय, द्वितीय संग्रह विषै एक गोपुच्छ भया, सो इहां आय तै नीचै तृतीय सग्रह ताकी घात कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जे विशेष, तिनका द्रव्य प्रमाण तौ चौड़ा अर अपनी घात कीए पीछै अवशेष रही कृष्टिनि का प्रमाण मात्र लंबा क्षेत्र कल्पना कीएं एक आयत चतुरस्र क्षेत्र भया । बहुरि असैं ही आय तैं नीचै द्वितीय, तृतीय संग्रह कृष्टि तिन

दोऊनि की घात कृष्टिनि का जेता प्रमाण तितना विशेष प्रमाण तौ जुदा जुदा चौडा अर अपनी घात कीए पीछै अवशेष रही कृष्टिनि का प्रमाण मात्र लम्बा ग्रैसा दोय आयत चतुरस्र क्षेत्र प्रमाण द्रव्य कौ अपनी घात द्रव्य तै ग्रहण करि लोभ की प्रथम सग्रह की प्रथमादि कृष्टिनि विषै दोए लोभ की तीनो सग्रह कृष्टिनि का एक गोपुच्छ भया। ग्रैसे ही क्रम करि अपने नीचली सग्रह कृष्टिनि की घात कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेषनि करि तौ जुदा जुदा चौडा अर अपना घात कीए पीछै अवशेष रही कृष्टिनि का प्रमाण मात्र लम्वा ग्रैसै क्रम तै तीन, च्यारि, पाच, छह, सात, आठ, नव, दश, ग्यारह आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप द्रव्य, ताकौ अपने अपने घात द्रव्य तै ग्रहण करि क्रम तै माया की तृतीय सग्रहादि क्रोध की प्रथम सग्रह पर्यंत सग्रह कृष्टिनि विषै दीए वारह सग्रह कृष्टिनि का एक गोपुच्छ हो है। ग्रैसै आयत चतुरस्र क्षेत्र रूप द्रव्य देने करि परस्थान गोपुच्छ की सिद्धि भई। या प्रकार स्वस्थान, परस्थान गोपुच्छ सम्पूर्ण हो है।

वहुरि इहाँ सर्व मोहनीय का द्रव्य साधिक द्व्यर्ध गुणहानि गुणित आदि वर्गणा मात्र है, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए अर साधिक नव गुणा कीएं समस्त व्यय द्रव्य का प्रमाण आवै है। जातै सर्व मोह के द्रव्य कौ चौईस का अर अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक व्यय द्रव्य का प्रमाण होइ अर पूर्वोक्त समस्त व्यय द्रव्यनि कौ जोडे दोय सै छब्बीस होइ। तहा दोय सै छब्बीस गुणकार का चौईस करि अपवर्तन कीए साधिक नव का गुणकार हो है। बहुरि सर्व मोहनीय के द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार के असख्यातवा भाग का भाग दीए सर्व घात द्रव्य का प्रमाण हो है। सो इस घात द्रव्य तै पूर्वोक्त व्यय द्रव्य अर आयत चतुरस्र क्षेत्ररूप जो द्रव्य ग्रहण कीया सो याके असख्यातवे भाग मात्र है, सो घटाए अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य रह्या, ताकौ अनतवा भाग मात्र जो एक विशेष ताकरि घटता क्रम लीए दीजिए है। कैसे ? सो कहिए है—सर्व अवशेष घात द्रव्य का घात कीए पीछै अवशेष रही कृष्टि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीए मध्यधन हो है। बहुरि ताकौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताका भाग दीएं विशेष का प्रमाण हो है। वहुरि गच्छ का एक बार सकलन धन करि तिस चय कौ गुणे उत्तरधन हो है। बहुरि याकौ तिस द्रव्य मे घटाए अवशेष आदि धन हो है। ताकौ गच्छ का भाग दीए एक खण्ड का प्रमाण हो है। तहा एक खड कौ अर उत्तरधन तै गच्छ प्रमाण विशेषनि कौ ग्रहि लोभ की जघन्य कृष्टि विषै दीजिए है। बहुरि

ताकी द्वितीय कृष्टि तै लगाय क्रोध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत एक एक खड समान रूप अर उत्तर धन विषै एक एक विशेष घटता दीजिए है । अर ऐसै अवशेष घात द्रव्य सर्व समाप्त हो है । ऐसै होतै सर्वत्र एक गोपुच्छ हो है ।

उदयगदसंगहस्स य, मज्झिमखंडादिकरणमेदेण ।
दव्वेण होदि णियमा, एवं सव्वेसु समयेसु ।।५२७।।

उदयगतसंग्रहस्य च मध्यमखंडादिकरणमेतेन ।
द्रव्येण भवति नियमादेवं सर्वेषु समयेषु ।।५२७।।

टीका – उदय कौ प्राप्त जो सग्रह कृष्टि ताका इस घात द्रव्य ही करि मध्यम खडादिक करना हो है ।

भावार्थ – जिस सग्रह कृष्टि कौ वेदे है, ताविषै आय द्रव्य का अभाव है । तातै सक्रमण द्रव्य करि कीए तौ मध्यम खंडादिक होइ नाही । तातै मध्यम खड उभय द्रव्य विशेष इत्यादि वक्ष्यमाण विधान करने के अर्थि तिस भोगवनेरूप सग्रह कृष्टिनि का घात द्रव्य तै ताका असख्यातवा भाग मात्र द्रव्य कौ जुदा स्थापि, अवशेष घात द्रव्य ही कौ पूर्वोक्त प्रकार विशेष घटता क्रम लीए एक गोपुच्छाकार करि दीजिए है । एक भाग का आगै मध्यम खडादि विधान तै द्रव्य देना कहैंगे, सो जानना । ऐसै समय समय प्रति सर्व समयनि विषै विधान हो है ।

या प्रकार घात द्रव्य करि एक गोपुच्छ भया । अब जो अन्य सग्रह का विवक्षित सग्रह विषै द्रव्य आया, ताकौ पूर्वै आय द्रव्य कह्या था, ताका नाम इहा सक्रमण द्रव्य कहिए । बहुरि जो नवीन समयप्रबद्ध विषै द्रव्य वधि करि कृष्टि रूप हो है, सो बध द्रव्य कहिए । ताका विधान कैसे है ? सो कहिए है—

केता इक सक्रमण द्रव्य अर बध द्रव्य करि केती इक नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है । तहा सक्रमण द्रव्य करि तौ तिनि सग्रह कृष्टिनि की जो जघन्य कृष्टि, ताके नीचै केतीक नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है । सो इनका नाम अधःस्तन कृष्टि है । बहुरि केतीक तिनि सग्रह कृष्टिनि की पूर्व अवयव कृष्टिनि के वीचि वीचि नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है । इनका नाम अतर कृष्टि है । बहुरि वंध द्रव्य करि अवयव कृष्टिनि के वीचि वीचि ही नवीन अपूर्व कृष्टि करिए है, सो इनका भी

नाम अतर कृष्टि है। वहुरि केताइक संक्रमण द्रव्य वा बध द्रव्य कौ पूर्व कृष्टिनि ही विर्षे निक्षेपण करै है, सो यहु विधान कहिए है।

हेट्ठाकिट्टिप्पहुदिसु, संकमिदासंखभागमेत्तं तु।
सेसा संखाभागा, अंतरकिट्टिस्स दव्वं तु ॥५२८॥

अधःस्तनकृष्टिप्रभृतिषु, संक्रमितासंख्यभागमात्रं तु।
शेषा असख्यभागा, अंतरकृष्टेर्द्रव्य तु ॥५२८॥

टीका – सक्रमण द्रव्य कौ असख्यात का भाग दीए तहा एक भाग मात्र द्रव्य तौ नीचली कृष्टि आदि विषै दीजिए है।

भावार्थ यहु – या द्रव्य करि अध स्तन अपूर्व कृष्टि करिए है। बहुरि अवशेष असख्यात वहुभाग है, ते अतर कृष्टिनि का द्रव्य है। याकरि अतर कृष्टि करिए है।

बंधदव्वाणंतिमभागं पुण पुव्वकिट्टिपडिबद्धं।
सेसाणंता भागा, अंतरकिट्टिस्स दव्वं तु ॥५२९॥

वंधद्रव्यानंतिमभागं पुनः पूर्वकृष्टिप्रतिबद्धं।
शेषानंता भागा, अंतरकृष्टेर्द्रव्य तु ॥५२९॥

टीका – बध द्रव्य कौ अनत का भाग दीए तहा एक भाग मात्र तौ पूर्व कृष्टि सबधी है। या द्रव्य कौ पूर्व कृष्टि कही थी, तिन ही विषै निक्षेपण करिए है। वहुरि अवशेप अनत वहुभाग हैं, ते अतर कृष्टिनि का द्रव्य है। या द्रव्य करि नवीन अतर कृष्टि करिए है।

कोहस्स पढमकिट्टि, मोत्तूणेकारसंगहाणं तु।
बंधणसंकमदव्वादपुव्वकिट्टिं करेदी हु ॥५३०॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टि, मुक्त्वा एकादशसग्रहाणां तु।
वधनसंक्रमद्रव्यायपूर्वकृष्टि करोति हि ॥५३०॥

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि बिना अवशेष ग्यारह सग्रह कृष्टिनि कौ यथासभव बध द्रव्य अथवा सक्रमण द्रव्य तै अपूर्व कृष्टि करै है। क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण द्रव्य के अभाव तै बध द्रव्य करि ही[1] अपूर्व कृष्टि करिए है।

---

1 ग प्रति मे 'ही' के स्थान पर 'हीन' पाठ मिलता है।

बंधरगादव्वादो पुण, चदुसुट्ठाणेसु पढमकिट्टीसु ।
बंधापुव्वकिट्टीदो, संकमकिट्टी असंखगुणा ॥५३१॥

बंधनद्रव्यात्पुनः, चतुर्षु स्थानेषु प्रथमकृष्टिषु ।
बंधापूर्वकृष्टितः, संक्रमकृष्टिः असंख्यगुणा ॥५३१॥

टीका – बहुरि बध द्रव्य तै क्रोधादि च्यारि कषायनि की प्रथम संग्रह कृष्टि रूप जे च्यारि स्थान, तिन ही विषै अपूर्व कृष्टि करिए है। सक्रमरण द्रव्य करि पूर्वै ग्यारह स्थाननि विषै कृष्टि करनी कही है। बहुरि बध द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टिनि तै संक्रमरण द्रव्य करि निपजी कृष्टि पल्य का असंख्यातवा भाग गुणी है, जातै बध द्रव्य समयप्रबद्ध मात्र है, तातै सक्रमण द्रव्य असख्यात गुरणा है। अर कृष्टि है, ते द्रव्य के अनुसारि निपजै है।

संखातीदगुणारिण य, पल्लस्सादिमपदारिण गंतूण ।
एक्केक्कबंधकिट्टी किट्टीरणं अंतरे होदि ॥५३२॥

संख्यातीतगुणानि च, पल्यस्यादिमपदानि गत्वा ।
एकैकबंधकृष्टिः, कृष्टीनामतरं भवति ॥५३२॥

टीका – जिनि सग्रह कृष्टिनि का बध सभवै तिनकी जे अवयव कृष्टि है, तिनि विषै तिनका असख्यातवा भाग मात्र नीचै की वा उपरि की कृष्टि तौ बध योग्य ही नाही अर बीचि मै जे बहुभाग मात्र बध्यमान कृष्टि है, तिनकी दोय कृष्टिनि के बीचि एक अतराल बहुरि एक कृष्टि यहु अर एक कृष्टि ऊपरि की, तिनिके बीचि एक अतराल असै जे अतराल है, तिनि विषै पहला, दूसरा आदि सख्यात पल्य का प्रथम वर्गमूल मात्र अतराल उल्लघि जो अतराल है, तिस विषै नवीन एक अपूर्व कृष्टि करिए है। बहुरि ताके ऊपरि तितने ही अतराल उल्लघि, जो अतराल आवै, तहां दूसरी अपूर्व कृष्टि करिए है। असै ही बध की उत्कृष्ट कृष्टि के नीचै पल्य का असख्यात का वर्गमूल मात्र कृष्टि उतरै तहा अतराल विषै जो उत्कृष्ट अपूर्व कृष्टि करिए है, तहा पर्यंत असै ही क्रम लीए कृष्टिनि के बीचि अपूर्व कृष्टिनि का होना जानना।

दिज्जदि अरणंतभागेणूणकमं बंधगे य रणंतगुणं ।
तण्णंतरे णंतगुणूणं तत्तोणंतभागूणं ॥५३३॥

दीयते अनंतभागेनोनक्रमं बधके चानंतगुणं ।
तदनतरेऽनंतगुणोनं ततोऽनंतभागोनं ।।५३३।।

टीका – बंध द्रव्य कृष्टिनि विषै कैसै दीजिए है ? सो कहिए है–पूर्व कृष्टि विषै बहुत द्रव्य दीजिए है। बहुरि दूसरी पूर्व कृष्टि विषै ताके अनतवे भाग मात्र जो चय विशेष, ताकरि घटता द्रव्य दीजिए है। असै यावत् अपूर्व कृष्टि न प्राप्त होइ तावत् अनत भाग रूप विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। बहुरि तहा अत कृष्टि विषै जो दीया द्रव्य, तातै अपूर्व कृष्टि विषै अनत गुणा द्रव्य दीजिए है। जातै यहु कृष्टि इस ही द्रव्य करि नवीन निपजै है। बहुरि यातै याके अनतरवर्ती जो पूर्व कृष्टि तिस विषै अनत गुणा घटता द्रव्य दीजिए है। तातै उपरि अनतवा भागरूप विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य यावत् अपूर्व कृष्टि प्राप्त न होइ तावत् दीजिए। असै ही अनुक्रम लीए बंध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत बंध द्रव्य देने का विधान जानना। नवीन बंध द्रव्य करि करी अपूर्व कृष्टि भी अनत है।

असै बंध कृष्टिनि का स्वरूप कह्या है।

संकमदो किट्टीणं, संगहकिट्टीणमंतरे होदि ।
संगह अंतरजादो, किट्टी अंतरभवा असंखगुणा ।।५३४।।

सक्रमतः कृष्टीनां, संग्रहकृष्टीनामंतरे भवति ।
संग्रहे अंतरजातः, कृष्टिरतर्भवा असंख्यगुणा ।।५३४।।

टीका – सक्रमण द्रव्य तै निपजी जे अपूर्व कृष्टि, केतीक इक कृष्टि तौ सग्रह कृष्टिनि के नीचै निपजै है। अर केतीक पूर्व अवयव कृष्टि थी, तिनि का अतराल विषै निपजै है। तहा सग्रह कृष्टिनि का अतराल विषै निपजी कृष्टिनि तै अवयव कृष्टिनि का अतराल विषै निपजी कृष्टि असख्यात गुणी है।

संगहअंतरजाणं, अपुव्वकिट्टिं व बंधकिट्टिं वा ।
इदराणमंतरं पुण, पल्लपदासंखभागं तु ।।५३५।।

संग्रहातरजानामपूर्वकृष्टिमिव बंधकृष्टिमिव ।
इतरेषामंतरं पुनः, पल्यपदासंख्यभागस्तु ।।५३५।।

टीका – संग्रह कृष्टिनि के नीचै जे कृष्टि कीनी, तहां द्रव्य देने का विधान तौ जैसे कृष्टि कारक का द्वितीय समय विषै अपूर्व कृष्टिनि का विधान कह्या था, तैसे जानना । विशेष इतना—

तहां अध.स्तन अपूर्व कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै पूर्व कृष्टि की जघन्य कृष्टि विषै दीया द्रव्य असख्यातवे भाग घटता कह्या था, इहां असंख्यात गुणा घटता जानना, जातै इहा अध स्तन कृष्टि द्रव्य तै मध्यम खंड द्रव्य असख्यात गुणा घटता है । बहुरि तहा पूर्व कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै अपूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि विषै दीया द्रव्य संख्यात भाग अधिक कह्या था । इहा असख्यात गुणा बधता जानना, जातै इहा मध्यम खड के द्रव्य तै अध स्तन कृष्टि का द्रव्य असख्यात गुणा है । बहुरि जे अवयव कृष्टिनि के बीचि नवीन कृष्टि कीनी, तहा द्रव्य देने का विधान जैसे बध द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टिनि विषै विधान कह्या तैसे जानना । विशेष इतना—

तहां असंख्यात पल्य का वर्गमूल प्रमाण अंतरालरूप स्थान जाइ जाइ बध द्रव्य करि निपजी एक एक अपूर्व कृष्टि कही थी । इहा पल्य का प्रथम वर्गमूल का असंख्यातवा भाग मात्र जो उत्कर्षण वा अपकर्षण भागहार ताका जितना प्रमाण तितना तितना अतराल भए सक्रमण द्रव्य करि एक एक अपूर्व कृष्टि निपजाइए है ।

अब इहा प्रथम द्रव्य देने का विशेष तात्पर्य निरूपण करिए है–तहां प्रथम ही क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि बिना अन्त ग्यारह सग्रह कृष्टिनि विषै जो आय द्रव्य ताही का नाम सक्रमण द्रव्य है, ताका अर क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य का तौ अभाव है, तातै पूर्वै कह्या था जो वेद्यमान कृष्टि विषै घात द्रव्य का असख्यातवा भाग मात्र द्रव्य ताकौ जुदा स्थापना, तिस जुदा स्थाप्या घात द्रव्य कौ देने का विधान कहिए है–पूर्व कृष्टिनि विषै एक एक विशेष घटता क्रम है, तिस विशेष का प्रमाण ल्याइए है–

इहां घात कीए पीछै अवशेष सर्व कृष्टि का प्रमाण मात्र जे गच्छ, तिस एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताकरि गुणित जो गच्छ, ताका भाग सर्व द्रव्य कौ दीए एक विशेष हो है । सो लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषै एक एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर एक घाटि अपनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, श्रेणी व्यवहार गणित तै जो संकलन धन आवै तितना अध स्तन शीर्ष द्रव्य है । अर अन्य सग्रह कृष्टिनि विषै जेती नीचली संग्रह संबधी

कृष्टि का प्रमाण तितने विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, जो सकलन धन आवै तितना तितना अध-स्तन शीर्ष द्रव्य है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आय द्रव्य तैं अर क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य तैं ग्रहि करि जुदा स्थापना। याकौं यथायोग्य कृष्टिनि विषै दीए सर्व पूर्व कृष्टि लोभ की तृतीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि के समान होइ। बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि कौं अपकर्षण भागहार तैं असंख्यात गुणा ऐसा जो पल्य का असंख्यातवां भाग, ताका भाग दीए एक खंड का प्रमाण आवै, ताकौं अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै अपना अपना मध्यम खंड द्रव्य हो है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आय द्रव्य तैं अर क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना। याकौं एक एक खंड करि कृष्टिनि विषै दीए सर्व कृष्टि समान ही रहैं हैं। बहुरि एक मध्यम खंड करि अधिक जो लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की प्रथम कृष्टि का द्रव्य तीहि प्रमाण एक अध स्तन कृष्टि का द्रव्य स्थापि, ताकौं अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण कौ अपकर्षण भाग-हार तैं असंख्यात गुणा जो पल्य का असंख्यातवां भाग ताका भाग दीए जो संग्रह कृष्टिनि के नीचैं करी अध स्तन कृष्टिनि का प्रमाण ताकरि गुणैं अध स्तन अपूर्व कृष्टि संबंधी द्रव्य हो है। सो याकौं ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का आय द्रव्य तैं ग्रहि जुदा स्थापना। याकरि संग्रह कृष्टिनि के नीचैं नवीन अपूर्व कृष्टि निपजै है। क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषैं संक्रमण द्रव्य के अभाव तैं नीचैं अपूर्व कृष्टि न हो है। बहुरि पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ सो एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताकरि गुणित गच्छ का भाग इहां संभवता सर्व द्रव्य कौं दीए उभय द्रव्य का एक विशेष होइ सो क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर अपनी भोगवने रूप क्रोध की प्रथम संग्रह की सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां जेता सकलन धन भया, तितना उभय द्रव्य विशेष द्रव्य भया, ताविषै अपना एक विशेष का अनंतवां भाग मात्र द्रव्य घटाए जो द्रव्य भया, ताकौं क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य तैं ग्रहि करि जुदा स्थापना। इहां क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का घात द्रव्य जुदा स्थाप्या था, सो पूर्ण भया। बहुरि जो पहलै संग्रह कृष्टि भई, तिनकी कृष्टिनि का प्रमाण तैं एक अधिक विशेष तौ आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि सकलन कीए अपना अपना उभय द्रव्य विशेष द्रव्य

हो है। याकौ ग्यारह संग्रह कृष्टिनि का अपना अपना आय द्रव्य तै ग्रहि जुदा स्थापना।

विशेष इतना – जो सग्रह कृष्टि बंधै है, ताका उभय द्रव्य विशेष विषै एक विशेष का अनतवा भाग मात्र द्रव्य घटावना। यह घटाया द्रव्य है, सो बध द्रव्य तै ग्रहि करि दीजिएगा। याकौ यथायोग्य कृष्टिनि विषै दीए सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टिनि कै विशेष घटता क्रमरूप गोपुच्छ हो है। बहुरि इन कहे च्यारि द्रव्यनि कौ घटाए अवशेष जो अपना अपना आय द्रव्य रह्या, ताकौ अपनी अपनी सक्रमण द्रव्य करी अपूर्व अतर कृष्टिनि का प्रमाण का भाग दीए एक अंतर कृष्टि सबंधी एक खड होइ, ताकौ अपनी अपनी संक्रमण द्रव्य करि अतर कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै अपना अपना द्रव्य करि निपजी जे अतर कृष्टि, तिनके समान द्रव्य हो है। ताकौ जुदा स्थापना। याकरि पूर्व कृष्टिनि के बीचि बीचि नवीन अपूर्व कृष्टि निपजाइए है।

इहां संक्रमण द्रव्य करि भई अतर कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने कौ उपाय कहिए है। एक मध्यम खड करि अधिक लोभ की तृतीय कृष्टि की प्रथम कृष्टि का द्रव्य मात्र द्रव्य करि एक कृष्टि होइ तौ पूर्वोक्त च्यारि प्रकार द्रव्य करि हीन अपना अपना आय द्रव्य करि केती कृष्टि होइ ?

असै त्रैराशिक कीए लब्ध मात्र सक्रमण द्रव्य करि करी अतर कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। बहुरि याका भाग, अपनी अपनी पूर्व कृष्टिनि का भाग दीएं अपनी अतर कृष्टि के अतराल का प्रमाण आवै है। दोय अपूर्व अंतर कृष्टिनि के बीचि इतनी पूर्व कृष्टि पाइए है। असै सक्रमण द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि का द्रव्य विभाग कह्या।

अब बध द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि का द्रव्य विभाग कहिए है। मोहनीय का एक समयप्रबद्ध, ताकौ आवली का असख्यातवा भाग का भाग दीए तहा बहुभाग के च्यारि समान पुज करि अवशेष एक भाग कौ आवली का असख्यातवा भाग का भाग दीए तहा बहुभाग प्रथम पुज विषै जोड़ै, लोभ का बध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग कौ आवली का असख्यातवा भाग का भाग देइ तहा बहुभाग द्वितीय पुंज विषै जोडै, माया का बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग कौं आवली का असंख्यातवा भाग का भाग दीए तहा बहुभाग तृतीय पुज विषै जोड़ै क्रोध का बंध द्रव्य हो है। अवशेष एक भाग चतुर्थ पुज विषै जोडै मान का बंध द्रव्य हो है। अब वध द्रव्य

करि अतर कृष्टिनि का वा तहा अतरालनि का प्रमाण ल्यावने के अर्थि इन द्रव्य विषै बध द्रव्य करि करी अतर कृष्टिनि का विशेष सकलन रूप द्रव्य अर पूर्व एक विशेष का अनतवा भाग मात्र द्रव्य आगै कहिए है, तिनकौं घटाए अवशेष जेता जेता द्रव्य रह्या, ताकौ इच्छाराशि करि त्रैराशिक करिए है–

एक मध्यम खंड करि अधिक लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य मात्र द्रव्य करि एक अतर कृष्टि द्रव्य होइ तौ पूर्वोक्त द्रव्य करि केती अतर कृष्टि होइ ? ऐसे त्रैराशिक कीए लब्ध मात्र बध द्रव्य करि निपजी अंतर कृष्टिनि का प्रमाण सर्व पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौ छह गुणहानि का भाग दीएं जितना प्रमाण होइ तितना हो है। ते अतर कृष्टि मान विषै स्तोक, तातै क्रोध विषै विशेष अधिक तातै माया विषै विशेष अधिक तातै लोभ विषै विशेष अधिक जाननी, जातै इनके द्रव्य विषै भी ऐसा ही क्रम है। इहां एक एक कषाय की एक एक सग्रह कृष्टि ही का बध है, तातै च्यारि ही सग्रह कृष्टिनि विषै बध कृष्टि की रचना जाननी। इन बध द्रव्य करि करी अतर कृष्टिनि का प्रमाण है, सो पूर्वोक्त सक्रमण द्रव्य करि करी अतर कृष्टिनि का प्रमाण तै असख्यात गुणा घटता है। जातै सक्रमण की अतर कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने कौ सर्व कृष्टिनि कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीया, तातै इहा बध की अतर कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने कौ सर्व कृष्टिनि कौ असख्यात पल्य का प्रथम वर्गमूल का भाग दीया, सो यहु भागहार तिस भागहार तै असख्यात गुणा है। बहुरि अपनी अपनी सग्रह कृष्टि की उपरि नीचै असख्यातवा भाग मात्र कृष्टि छोडि सक्रमण की अन्तर कृष्टि सहित जे बीचि की असख्यात बहुभाग मात्र बधरूप पूर्व कृष्टि तिनकौ बंध द्रव्य करि करी अपनी अपनी अपूर्व अतर कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीए लोभ, माया, मान विषै गुणहानि का चौथा भाग मात्र अर क्रोध विषै यातै तेरह गुणा अतरालनि का प्रमाण हो है। बध द्रव्य करि ऐसी दोय अपूर्व अतर कृष्टि, तिनके बीचि जेती पूर्व कृष्टि पाइए, तिनके प्रमाण का नाम इहा अतराल जानना, सो यहु सक्रमण की अतर कृष्टिनि का अतराल तै असख्यात गुणा है। ऐसे प्रमाण ल्याइ, अब बध द्रव्य का विभाग कहिए है–

अपना अपना पूर्वोक्त बध द्रव्य कौ स्थापि, ताकौ अनत का भाग देइ, तहां एक भाग जुदा राखि अवशेष बहुभाग रहे, तिनतै बधातर कृष्टि विशेष द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना, ताका प्रमाण कहिए है– बध द्रव्य करि करी जे अपूर्व अंतर कृष्टि,

तिनि विषै जो अत की कृष्टि तिस विषै पूर्व अत की कृष्टि तै जेती कृष्टि नीचै यहु पाइए तितने विशेष यामै चाहिये ताकौ तौ आदि स्थापिए । अर बीचि में जो अतराल का प्रमाण, तितने विशेष उत्तर स्थापिए अर अपनी अपनी बध द्रव्य करि करी अतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापिए असै स्थापै जो संकलन धन आवै, तितना बधातर कृष्टि विशेष द्रव्य जानना । इस द्रव्य करि बध द्रव्य तैं जे नवीन अपूर्व कृष्टि करी, तिनि विषै जैसै अन्य कृष्टिनि का अर इनका एक गोपुच्छ होइ तैसे विशेषनि का सद्भाव हो है । सो एक विशेष का अनंतवा भाग मात्र (बंध द्रव्य)[१] करि घटते पूर्वै उभय द्रव्य विशेष कहे थे, तिन विषै इनका अवस्थान जानना ।

भावार्थ यहु – जो अन्य कृष्टिनि विषै तो पूर्वोक्त सक्रमण द्रव्य का उभय द्रव्य विशेष द्रव्य देना । अर बंध की अतर कृष्टिनि विषै इहां कह्या, बंधातर विशेष द्रव्य सो देना । इहां भी एक विशेष का अनतवां भाग मात्र घटतापना जानना । जातै इहां भी आगै कहिए है, जो एक विशेष का अनतवां भाग मात्र बंध द्रव्य ताका निक्षेपण हो है । असै दीएं अन्य कृष्टिनि कै अर बंध करि करी नवीन कृष्टिनि कैं एक गोपुच्छ हो है । बहुरि तिन बहुभागनि विषै इतना द्रव्य घटाए अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताकौ बंध की नवीन अतर कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीए एक खड मात्र एक कृष्टि का द्रव्य होइ । ताकौ बध की अंतर कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै सर्वकृष्टि सबंधी द्रव्य होइ, सो याका नाम बधांतर कृष्टि समान खंड द्रव्य है । इस द्रव्य करि समान प्रमाण लीए बध की नवीन अपूर्व अतर कृष्टि निपजै है ।

बहुरि पूर्वै जो बंध द्रव्य कौं अनत का भाग देइ एक भाग जुदा राख्या था, तिसतै बध विशेष द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना सो कितना है ? सो कहिए है–

पूर्व अपूर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र इहा गच्छ, सो एक गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि ताकरि गुणित गच्छ का भाग, तिस जुदा राख्या एक भाग कौ दीए एक विशेष होइ, ताकौ अपना सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै बध विशेष द्रव्य हो है । इस द्रव्य कौ जहा उभय द्रव्य विशेष द्रव्य विषै अनतवा भाग घटाया था, तहा देना । बहुरि जुदा राख्या एक भाग विषै इतना द्रव्य घटाए जो अवशेष रह्या, ताकौ अपनी सर्व बध कृष्टि कौ प्रमाण का भाग दीए एक खड होइ, ताकौ अपनी बध कृष्टिनि का प्रमाण करि ही गुणै जो द्रव्य होइ सो बंध का मध्यम

---

१. 'बध द्रव्य' इतना हस्तलिखित प्रतिओ में नही मिलता ।

खड द्रव्य जानना । यहु द्रव्य अवशेष रह्या, ताकौ बध कृष्टिनि विषै समानरूप जहा उभय द्रव्य विशेष द्रव्य विषै एक विशेष का अनतवा भाग घटाया तहां ही दीजिए है ।

भावार्थ यहु – बध का विशेष अर मध्यम खड का द्रव्य दीए उभय द्रव्य का विशेष विषै घटाया था द्रव्य सो पूर्ण हो है । ग्रैसै बध द्रव्य का (विशेष)[1] विभाग जानना । अब इन सक्रमण द्रव्य का वा बध द्रव्य देने का विधान कहिए है–तहा लोभ की तृतीय, सग्रह कृष्टि विषै तो बध द्रव्य का अभाव है, तातै तहा सक्रमण द्रव्य ही कौ देने का विधान कहिए है—

लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै पच प्रकार द्रव्य कह्या । तहा नीचै जे अपूर्व कृष्टि करी, तिनकी जघन्य कृष्टि विषै अध स्तन खड तै एक खड अर मध्यम खड तै एक खड अर उभय द्रव्य विशेष तै सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि मात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करै है, सो यहु आगै कृष्टिनि विषै दीजिए है द्रव्य तातै बहुत है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यंत जे अध स्तन अपूर्व कृष्टि, तिन विषै एक एक अध स्तन खंड अर एक एक मध्यम खड तौ समानरूप अर उभय द्रव्य विशेष विषै एक एक विशेष घटता ग्रैसा द्रव्य दीजिए है । इहां अध स्तन खण्ड द्रव्य तौ समाप्त भया । बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि की प्रथम कृष्टि, तिस विषै मध्यम खड तै एक खंड उभय द्रव्य विशेष तै जेती कृष्टि होइ आईं, तितनी करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करिए है । सो यहु अपूर्व कृष्टिनि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता है, जातै मध्यम खड तै अध स्तन कृष्टि खंड असख्यात गुणा है । अर एक उभय द्रव्य विशेष भी इहा घटचा है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि पूर्व कृष्टि, तिन विषै एक दोय आदि एक एक बधता अध स्तन शीर्ष का विशेष अर एक एक मध्यम खड अर होइ गईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण उभय द्रव्य का विशेष क्रम तै यावत् अपकर्षण भागहार का अर्ध प्रमाण मात्र पूर्व कृष्टि होइ तावत् निक्षेपण करिए है । इहा कृष्टिनि विषै (मध्य) एक उभय द्रव्य का विशेष विषै एक अध स्तन शीर्ष विशेष घटाए जो प्रमाण होइ, तितना विशेष करि घटता दीया द्रव्य का क्रम जानना । बहुरि तिनके ऊपरि सक्रमण द्रव्य करि करी अपूर्व अतरकृष्टि है । तीहिं विषै अंतरकृष्टि सबंधी समान खड द्रव्य तै

---

[1] इतना हस्तलिखित प्रतिओ में नही मिलता ।

एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष तै भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र विशेषनि कौ ग्रहि निक्षेपण करै है। सो यहु नीचली पूर्व कृष्टि विषै दीया, द्रव्य तै असंख्यात गुणा है। जातै एक घाटि भई कृष्टिनि का प्रमाण मात्र पूर्व विशेष अर एक मध्यम खण्ड, इन करि हीन जो यहु अतर कृष्टि सम्बन्धी एक खड है, सो पूर्व कृष्टि के समान है, सो तिस दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा है। तहा एक उभय द्रव्य का हीनपना जानना। बहुरि ताके ऊपरि जो पूर्व कृष्टि, तिस विषै भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भई पूर्व अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है, सो यहु सक्रमण की अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता है, जातै इहा मिलै अध स्तन शीर्ष विशेष अर मध्यम खड का द्रव्य है सो इन करि हीन अतर कृष्टि सबंधी समान खड का द्रव्य जो पूर्व कृष्टि के समान है, तातै असख्यात गुणा घटता है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टिनि विषै एक एक अध स्तन शीर्ष बधता अर एक एक मध्यम खंड समानरूप अर एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता ऐसै क्रम तै यावत् आधा अपकर्षण भागहार मात्र पूर्व कृष्टि होइ तावत् निक्षेपण करिए है। बहुरि तिनके ऊपरि संक्रमण की अपूर्व अतर कृष्टि है, तिस विषै सक्रमण अतर कृष्टि सबंधी समान खंड द्रव्य तै एक खड उभय द्रव्य विशेष तै भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र विशेषनि कौं ग्रहि निक्षेपण करै है। सो यहु यातै नीचली पूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै पूर्वोक्त प्रकार असख्यात गुणा है। बहुरि याके ऊपरि पूर्व कृष्टि, तिस विषै भई अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेष अर एक एक मध्यम खड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है। सो यहु तिनि अतर कृष्टिनि विषै दीया द्रव्य तै पूर्वोक्त प्रकार असख्यात गुणा घटता जानना। याही प्रकार अपूर्व कृष्टि तै पूर्व कृष्टि विषै असंख्यात गुणा घटता अर पूर्व कृष्टि तै अपूर्व कृष्टि विषै असख्यात गुणा बधता क्रम करि लोभ की तृतीय कृष्टि की अत कृष्टि पर्यंत द्रव्य देने का विधान जानना। बहुरि ताके ऊपरि लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि, तिसके पच प्रकार द्रव्य स्थापि, तहा ताके नीचै सक्रमण द्रव्य करि करी जो अध स्तन अपूर्व कृष्टि, तिनकी जघन्य कृष्टि विषै अध स्तन खड तै एक खड मध्यम खड तै एक खड उभय द्रव्य विशेष तै भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि निक्षेपण करै है। सो यह लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा है। कारण पूर्वोक्त प्रकार जानना। बहुरि यातै ऊपरि

गा गा अध स्तन खड, एक मध्यम खड समान रूप एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता क्रम लीए अध स्तन अपूर्व कृष्टि की चरम कृष्टि पर्यंत द्रव्य देना । इहा अध - स्तन कृष्टि द्रव्य समाप्त भया ।

बहुरि इनके ऊपरि पूर्व कृष्टि की आदि कृष्टि तिस विषै भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है, सो यहु अपूर्व कृष्टि की अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता है । कारण पूर्वोक्त प्रकार जानना । तातै आगे जैसे लोभ को तृतीय सग्रह कृष्टि विषै विधान कह्या है, तैसे ही सर्व जानना ।

विशेष इतना – इहा अपकर्षण भागहार मात्र बीचि मे पूर्व कृष्टि भए अपूर्व कृष्टि कौ निपजावै है । बहुरि ताके ऊपरि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि है, सो याका बध भी है अर याकै आय द्रव्य भी है । तातै इहा पच प्रकार सक्रमण द्रव्य अर च्यारि प्रकार बध द्रव्य स्थापि देने का विधान कहिए है । सक्रमण द्रव्य करि करी नीचै अध स्तन अपूर्व कृष्टि, ताकी जघन्य कृष्टि विषै एक एक अध स्तन खंड अर एक मध्यम खड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष निक्षेपण करिए है । सो यहु लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि की अंत कृष्टि विषै दीय द्रव्य तै असख्यात गुणा है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यंत अध - स्तन कृष्टिनि विषै एक एक अध स्तन खड एक एक मध्यम खड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि मात्र उभय द्रव्य कौ विशेष करि क्रम तै दीजिए है । बहुरि तिनके ऊपरि पूर्व कृष्टिनि की प्रथम कृष्टि विषै भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है । सो यहु अपूर्व अध स्तन कृष्टि को अत कृष्टि का दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता है, सो इहा असख्यात गुणा बा वा असख्यात गुणा घटता का कारण पूर्वोक्त ही जानना । बहुरि ताकै ऊपरि सक्रमण अतर कृष्टि का अतराल तै एक घाटि कृष्टि पर्यत कृष्टिनि विषै एक एक अध स्तन शीर्ष का विशेष बधता अर एक एक उभय द्रव्य का विशेष घटता ऐसै क्रम करि दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि सक्रमण द्रव्य करि करी अपूर्व अतर कृष्टि तीहि विषै सक्रमण अतर सबधी समान खड तै एक खड अर उभय द्रव्य विशेष तै भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष दीजिए है । बहुरि

ताके उपरि ऐसैं ही क्रम तैं अपकर्षण भागहार मात्र बीचि मैं पूर्व कृष्टि भए एक सक्रमण की अतर कृष्टि निपजाइए है। तहा पूर्व कृष्टि विषै तौ भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय कृष्टि के द्रव्य के विशेष दीजिए है। अर संक्रमण की अतर कृष्टिनि विषै सक्रमण अतर कृष्टि सबधी समान एक खड अर भई, कृष्टि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है।

तहां इतना विशेष जानना – इन त्रिषै बध होने योग्य कृष्टि की जघन्य कृष्टि तैं लगाय जे पूर्व कृष्टि अर सक्रमण द्रव्य करि करी अपूर्व कृष्टि है, तिन विषै पूर्वोक्त सक्रमण द्रव्य अपना एक निषेक का अनतवा भाग मात्र घाटि दीजिए है। अर तहां बध द्रव्य तैं पूर्व जघन्य बध कृष्टि विषै तो बंध द्रव्य सबधी मध्यम खड तै एक खड अर बध विशेष द्रव्य तैं सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष द्रव्य दीजिए है। अर ताके ऊपरि कृष्टिनि विषै यातै एक एक बध का विशेष मात्र घटता क्रम लीए दीजिए है। ऐसे द्रव्य जो सक्रमण द्रव्य विषै एक विशेष का अनतवा भाग मात्र घटता द्रव्य दीया था, सो पूर्ण हो है। बहुरि या प्रकार द्रव्य दीया, तहा अपूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य तौ आय तै नीचली पूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा बधता अर पूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य, आय तैं नीचली अपूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य तैं असख्यात गुणा घटता जानना। ऐसै एक अधिक सक्रमण कृष्टि का अतराल का भाग गुणहानि का चौथा भाग मात्र जो बध कृष्टि का अतराल, ताकौ दीए जो प्रमाण आवै तितनी सक्रमण की अपूर्व अतर कृष्टि यावत् पूर्ण होइ तावत् ऐसै ही क्रम जानना। बहुरि इहा जो सक्रमण की अतर कृष्टि अत विषै भई, ताके उपरि जो अतराल विषै बध करि अपूर्व अतर कृष्टि निपजाइए है, तिस विषै सक्रमण द्रव्य न दीजिए है।

बध द्रव्य ही के बंधातर कृष्टि समान खंड द्रव्य तै एक खंड अर उभय द्रव्य विशेष की जायगा जो अतर कृष्टि सबधी विशेष द्रव्य कह्या, तिस तै भई सर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष जानना एक विशेष का अनतवा भाग करि हीन अर मध्यम खड तै एक खड अर बध विशेष द्रव्य तै भई बध कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व बंध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है, सो यहु याके नीचै जो सक्रमण द्रव्य की अतर कृष्टि तिस विषै दीया जो बध द्रव्य, तातै अनंत गुणा जानना। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि तिस विषै

सक्रमण द्रव्य तै भई कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेप अपने एक विशेप का अनतवा भाग करि दीजिए है । तहा ही बध द्रव्य तै एक मध्यम खड अर बध विशेष तै भई बध कृष्टिनि करि हीन सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए । सो याकै नीकै बधातर कृष्टिनि विषै दिया वंध द्रव्य अनत गुणा घाटि है ।

इहा अनत गुणा वा अनत गुणा घाटि द्रव्य कह्या, ताका कारण यहु जो इहा दीया बध द्रव्य तै बधातर का द्रव्य अनत गुणा है । बहुरि ताके उपरि पूर्वोक्त प्रकार बीचि बीचि पूर्व कृष्टि होइ सक्रमण का अपूर्व कृष्टि होइ ऐसै एक अधिक सक्रमण का अतराल करि बध के अतराल का भाग दीए जो प्रमाण आवै, तितनी संक्रमण की अपूर्व अतर कृष्टि भये एक बध की अपूर्व अतर कृष्टि होइ, तहा द्रव्य देने का विधान पूर्वोक्त प्रकार जानना । याही प्रकार तावत् बधातर कृष्टिनि की अत कृष्टि होइ तावत् विधान जानना । इहा बध द्रव्य के अतर कृष्टि सबधी समान खड द्रव्य अर बधातर कृष्टि विशेष द्रव्य समाप्त भया । बहुरि ताकै ऊपरि पूर्वोक्त चार प्रकार, सक्रमण द्रव्य दोय प्रकार बध द्रव्य ही का यथायोग्य निक्षेपण हो है । सो बध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जानना । इहा सर्व बध द्रव्य समाप्त भया । बहुरि ताके ऊपरि च्यारि प्रकार संक्रमण द्रव्य ही का यथायोग्य निक्षेपण हो है, सो अत कृष्टि पर्यंत जानना । इहा सर्व सक्रमण द्रव्य भी समाप्त भया ।

बहुरि जैसै लोभ की तीन सग्रह कृष्टिनि विषै द्रव्य देने का विधान कह्या, तैसं ही मान, माया विषै भी कहना ।

विशेष इतना ही – जो मान की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण द्रव्य करि निपजा अपूर्व कृष्टिनि के बीचि अतराल अपकर्षण भागहार का पद्रहवा भाग मात्र है । बहुरि क्रोध की तृतीय, द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै भी लोभवत् विधान जानना ।

विशेष इतना ही – सक्रमण की अतर कृष्टिनि का अतराल इहा तृतीय सग्रह कृष्टि विषै अपकर्षण भागहार का चौदहवा भाग मात्र द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै अपकर्षण भागहार का एक सौ बियासीवा भाग मात्र जानना । बहुरि लोभ, मान, माया की बध्यमान सग्रह कृष्टिनि कै बध रहित जे नीचै उपरि कृष्टि, तिनके बीचि सक्रमण द्रव्य करि अपूर्व अतर कृष्टि करिए है, ऐसा जानना । बहुरि ताके ऊपरि

क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि, तिस विषै सक्रमण द्रव्य का तौ अभाव है, तातै घात द्रव्य का एक भाग जुदा स्थाप्या था, ताका तीन प्रकार द्रव्य अर बध द्रव्य का च्यारि प्रकार द्रव्य स्थापि, तहा अध स्तन अपूर्व कृष्टि होने का तौ अभाव है। (क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि होने का तौ अभाव है।)[१] क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि के ऊपरि प्रथम सग्रह कृष्टि की प्रथम पूर्व कृष्टि है, तिस विषै घात द्रव्य की भईं पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष निक्षेपण करिए है। सो यहु दीया द्रव्य क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि की अत कृष्टि विषै दिया सक्रमण द्रव्य के अनतवे भाग मात्र घटता है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक अध स्तन शीर्ष विशेष वधता एक एक उभय द्रव्य का विशेष घटता असै क्रम तै द्रव्य दीजिए है।

इहां विशेष इतना – बध होने योग्य कृष्टि की जघन्य कृष्टि समान पूर्व कृष्टि तै लगाय कृष्टिनि विषै उभय द्रव्य का विशेष द्रव्य अपने विशेष का अनतवां भाग मात्र घटता दीजिए है। तहा जघन्य बध कृष्टि विषै बध द्रव्य का एक मध्यम खड अर, अपनी वध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र बध के विशेष दीजिए है। अर ताके ऊपरि कृष्टिनि विषै एक एक बध का विशेष घटता क्रम करि दीजिए है। असैं एक जघन्य वध कृष्टि के ऊपरि सवा तीन गुणहानि मात्र कृष्टि भए ताके ऊपरि अत-राल विषै वध द्रव्य करि अपूर्व अतर कृष्टि निपजाइए है। तहा बधातर कृष्टि सबधी समान खड तै एक खड अर बधातर कृष्टि के विशेष द्रव्य तै जेती सर्व कृष्टि होइ आईं, तिन करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष अपने एक विशेष के अनतवे भाग करि हीन सर्व अर मध्यम खड तै एक खड अर भईं सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष असैं च्यारि प्रकार बध द्रव्य ही दीजिए है। घात द्रव्य न दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य याके नीचली पूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै अनत गुणा है। बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि, तिस विषै घात द्रव्य तै अहि पूर्वै भई सर्व पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधःस्तन शीर्ष के विशेष अर एक मध्यम खड अर भईं कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष अपने अपने विशेष का अनतवा भाग करि हीन निक्षेपण करै है। तहा बध द्रव्य का एक मध्यम खंड अर भईं बध कृष्टिनि करि हीन बध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र बध विशेष निक्षेपण करिए है। सो यहु बंध द्रव्य बधातर कृष्टि का बंध द्रव्य तै अनंत गुणा घटता है। याका सर्व पूर्व द्रव्य वा दीया द्रव्य मिलि

तिस वधातर कृष्टि तै उभय द्रव्य का एक विशेष मात्र घटता हो है । बहुरि ताके ऊपरि पूर्वोक्त प्रमाण पूर्व कृष्टि भए बध द्रव्य करि एक अपूर्व कृष्टि निपजै है, तिन विषै द्रव्य का देना पूर्वोक्त प्रकार जानना । ऐसै बध की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जानना । ताके ऊपरि कृष्टिनि विषै घात द्रव्य ही का निक्षेपण अपनी उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत हो है । ऐसै दीयमान द्रव्य की पक्ति का अनुक्रम जानना । सो इहा जैसै ऊंट की पीठ आदि विषै ऊची, आगै नीची, आगै कही ऊची, कही नीची तैसै कही बहुत, कही स्तोक, कही किछू हीन, किछू अधिक द्रव्य देने तै अनत जायगा उष्ट्र-कूट रचना हो है, जातै ऐसै दीए ही सर्व कृष्टिनि का एक गोपुच्छ होइ । ऐसै ही यतिवृषभ मुनि का उपदेश है । ऐसै दीयमान प्रदेशनि का निरूपण किया ।

बहुरि दृश्यमान कहिए पूर्वै था वा दीया द्रव्य मिलि जैसै भया, सो लोभ की तृतीय सग्रह की जघन्य कृष्टि विषै बहुत द्रव्य है, तातै क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का घात कीए पीछै जो उत्कृष्ट कृष्टि रही, तहा पर्यंत कृष्टि के द्रव्य के अनतवे भाग मात्र जो एक एक उभय द्रव्य का विशेष तीहि करि घटता अनुक्रम तै दृश्यमान द्रव्य जानना ।

या प्रकार ऐसै प्रथम समय विषै दीयमान द्रव्य का निरूपण कीया, तैसै ही द्वितीयादि समय विषै भी जानना । ऐसै तात्पर्य निरूपण कीया ।

कोहादिकिट्टिवेदगपढमे तस्स य असंखभाग तु ।
णासेदि हु पडिसमयं, तस्सासंखेज्जभागकमं ॥५३६॥

क्रोधादिकृष्टिवेदकप्रथमे तस्य च असंख्यभागस्तु ।
नाशयति हि प्रतिसमयं, तस्यासंख्य भागक्रमम् ॥५३६॥

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदक जीव है, सो प्रथम समय विषै सर्व कृष्टिनि का असख्यातवा भाग मात्र कृष्टिनि कौ नासै है– घात करै है । बहुरि द्वितीय समय विषै ताके असख्यातवे भाग मात्र कृष्टिनि का घात करै है, ऐसै ही क्रम तै समय समय प्रति असख्यातवा भाग मात्र क्रम करि घात कृष्टिनि का प्रमाण क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का द्विचरम समय पर्यंत जानना, जातै अत समय विषै नवक बध अर उच्छिष्टावली बिना विवक्षित सग्रह की सर्व ही कृष्टिनि का अभाव हो है ।

कोहस्स य जे पढमे, संगहकिट्टम्हि णट्ठकिट्टीओ।
बंधुज्झियकिट्टीणं, तस्स असंखेज्जभागो हु ॥५३७॥

क्रोधस्य च याः प्रथमे, संग्रहकृष्टौ नष्टकृष्टयः।
बंधोज्झितकृष्टीनां, तस्यासंख्येय भागो हि ॥५३७॥

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक का सर्व काल विषै जे नष्ट कृष्टि भई, जिनि कृष्टिनि का घात कीया, तिनि का प्रमाण कृष्टि वेदक का प्रथम समय विषै क्रोध का प्रथम सग्रह कृष्टि विषै को ऊपरि की बध रहित कृष्टिनि का पूर्वै प्रमाण कह्या था, ताके असख्यातवे भाग मात्र जानना।

कोहादिकिट्टियादिट्ठिदिम्हि समयाहियावलीसेसे।
ताहे जहण्णुदीरइ, चरिमो पुण वेदगो तस्स ॥५३८॥

क्रोधादिकृष्टिकादिस्थितौ समयाधिकावलीशेषे।
तत्र जघन्यमुदीरयति, चरमः पुनर्वेदकस्तस्य ॥५३८॥

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं, तहा जघन्य स्थिति उदीरणा करने वाला हो है। जो आवली के उपरि एक समय हैं, तिस सबधी निषेक कौ अपकर्षण करि उदयावली विषै निक्षेपण करै है। बहुरि तहा ही क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि, वेदक का अत समय विषै हो है।

ताहे संजलणाणं, बंधो अंतोमुहुत्तपरिहीणो।
सत्तो वि य सददिवसा, अडमासब्भहियछब्बरिसा ॥५३९॥

तत्र संज्वलनानां, बंधोऽन्तर्मुहूर्तपरिहीनः।
सत्त्वमपि च शतदिवसा, अष्टमासाभ्यधिकषड्वर्षाः ॥५३९॥

टीका – तहां संज्वलन चतुष्क का स्थितिबध अतर्मुहूर्त घाटि शत दिवस कहिए सौ दिन, ताका तीन महिना अर दश दिन है। पहले समय च्यारि मास था, सो संख्यात स्थिति बधापसरणनि करि घटि इहां इतना रह्या। क्रोध की तीनौ सग्रह कृष्टिनि का वेदक काल विषै जो दोय मास घटै तौ एक संग्रह कृष्टि वेदक काल विषै कितना घटै असैं त्रैराशिकतैं स्थितिबंध घटने का प्रमाण पूर्वोक्त आया है।

बहुरि तहा सज्वलन चतुष्क का स्थितिसत्त्व अतर्मुहूर्त घाटि आठ महीना अधिक छह वर्ष है। प्रथम समय आठ वर्ष था, सो घटि करि इहा इतना रह्या। क्रोध की तीनौ सग्रह कृष्टिनि का वेदक काल विषै जो च्यारि वर्ष घटै तौ एक सग्रह कृष्टि वेदक काल विषै कितना घटै असै त्रैराशिक तै स्थिति सत्त्व घटने का प्रमाण पूर्वोक्त आवै है।

घादितियाणं बंधो, दसवासंतोमुहुत्तपरिहीणा।
सत्तं संखं वस्सा, सेसाणं संखऽसंखवस्साणि ॥५४०॥

घातित्रयाणां बंधो, दशवर्षा अंतर्मुहूर्तपरिहीनाः।
सत्त्वं संख्यं वर्षाः शेषाणां संख्यासंख्यवर्षाः ॥५४०॥

टीका – घाति कर्मनि का स्थितिबध अतर्मुहूर्त घाटि दश वर्ष मात्र है। प्रथम समय विषै सख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो इहा सख्यात गुणा क्रम तै घटि इतना रह्या। बहुरि घाति कर्मनि का स्थिति सत्त्व सख्यात हजार वर्ष मात्र है। पूर्वै सख्यात हजार वर्ष मात्र था, सो सख्यात हजार स्थिति काडकनि करि सख्यात गुणा घटता क्रम लीए घटचा, तथापि आलाप करि सख्यात हजार वर्ष मात्र ही रह्या। बहुरि अघाति कर्मनि का स्थिति बध सख्यात हजार वर्ष मात्र है। इहा भी पूर्ववत् तात्पर्य जानना। बहुरि आयु बिना तीन अघातियानि का स्थिति सत्त्व असख्यात वर्ष मात्र है। यद्यपि पूर्व तै असख्यात गुणा घटता क्रम करि घटचा तथापि आलाप करि इतना ही रह्या असै क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक का निरूपण किया।

से काले कोहस्स य, बिदियादो संगहादु पढमठिदी।
कोहस्स विदियसंगहकिट्टस्स य वेदगो होदि ॥५४१॥

स्वे काले क्रोधस्य च, द्वितीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः।
क्रोधस्य द्वितीयसंग्रहकृष्टेश्च वेदको भवति ॥५४१॥

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक का अनतर समयरूप अपने काल विषै क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि समूह का अपकर्षण करि उदयादि गुणश्रेणीरूप प्रथम स्थिति करै है। ताका प्रमाण क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि का वेदक काल तै आवली मात्र अधिक है। याके प्रथमादि समयनि विषै असख्यात गुणा क्रम लीए

अपकर्षण किया हुआ द्रव्य दीजिए है । बहुरि तहां ही क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टिनि का वेदक हो है ।

कोहस्स पढमसंगहकिट्टिस्सावलिपमाण पढमठिदी ।
दोसमऊणदुआवलिणवकं च वि चेउदे ताहे ॥५४२॥

क्रोधस्य प्रथम संग्रहकृष्टेरावलिप्रमाणं प्रथमस्थितिः ।
द्विसमयोनद्व्यावलिनवकं चापि चतुर्दश तत्र ॥५४२॥

टीका – तिस समय विषै क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति विषै उच्छिष्टावली मात्र निषेक अर द्वितीय स्थिति विषै दोय समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्धरूप निषेक अवशेष सत्त्वरूप रहै हैं । इन बिना क्रोध की प्रथम संग्रह कृष्टि का अन्य सर्व प्रदेश क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि के नीचै अनंत गुणा घटता अनुभागरूप होइ, ताकी अपूर्व कृष्टि होइ परिणमै है । तब ही अन्य संग्रह कृष्टिनि विषै भी यथासंभव संक्रमण हो है । तीहि काल विषै क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि का द्रव्य चौदह गुणा हो है । एक गुणा आय का था, तातै तेरह गुणा प्रथम संग्रह का आया, मिल चौदह गुणा भया ।

पढमादिसंगहाणं, चरिमे फालिं तु बिदियपहुदीणं ।
हेट्ठा सव्वं देदि हु, मज्झे पुव्वं व इगिभागं ॥५४३॥

प्रथमादिसंग्रहाणां, चरमे फालिं तु द्वितीयप्रभृतीनाम् ।
अधस्तनं सर्वं ददाति हि, मध्ये पूर्वं इव एकभागम् ॥५४३॥

टीका – प्रथमादि संग्रह कृष्टिनि का अंत समय विषै जो संक्रमण द्रव्यरूप फालि, ताहि द्वितीयादि संग्रह कृष्टिनि के नीचै सर्व दे है अर मध्य विषै पूर्ववत् एक भाग कौ दे है ।

भावार्थ – जिस संग्रह कृष्टि कौ भोगवै है, ताका नवक समयप्रबद्ध बिना सर्व द्रव्य सो सर्व संक्रमणरूप है । जो उच्छिष्टावली, सो अंत फालि है । ताकौ अनंतर समय विषै याके अनंतर जो संग्रह कृष्टि भोगिए, ताके नीचै अर बीचि मे अपूर्व कृष्टिरूप परिणमावै है । तहां तिस संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि के बीचि जे अपूर्व कृष्टि करिए है, ते पूर्ववत् अंत समय विषै अपने द्रव्य का असंख्यातवां

भाग मात्र द्रव्य करि निपजाइए है। बहुरि अवशेष सर्व द्रव्य करि तिस सग्रह के नीचै अपूर्व कृष्टि निपजाइए है, असै विधान है। जातै इहा क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि के अनतरि द्वितीय सग्रह कृष्टि भोगिए है, सो इहा भी असा ही विधान जानना।

इहां प्रश्न – जो पूर्वै कृष्टि वेदक का प्रथम समय का व्याख्यान विषै नीचै करी कृष्टिनि का प्रमाण तै बीचि करी कृष्टिनि का प्रमाण असख्यात गुणा कह्या था, इहा बीचि करि कृष्टिनि विषै दीया द्रव्य तै नीचै करी कृष्टिनि विषै दीया द्रव्य असख्यात गुणा कह्या, तातै विरुद्ध आवै है ?

ताका समाधान – तहा तो सग्रह कृष्टि के द्रव्य का असख्यातवा भाग मात्र द्रव्य ग्रह्या था ताका विधान कह्या था, इहा सर्व सग्रह कृष्टि के द्रव्य की अपेक्षा वर्णन है, तातै इहा असा विधान जानना। बहुरि जो इहा भी पूर्ववत् विधान करिए तौ अतर कृष्टिनि के बीचि नवीन कृष्टि बहुत निपजै सर्व अवयव कृष्टिनि के बीचि बीचि अपूर्व कृष्टि होइ, तब पूर्व कृष्टिनि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता द्रव्य जो कृष्टि विषै दिया, तातै अनतरवर्ती कृष्टिनि विषै दीया द्रव्य असख्यात गुणा होइ, सो असा द्रव्य देना। सूत्र विषै नाही कह्या है, तातै इहा विधान कह्या है, सोई अगीकार करना।

कोहस्स बिदियकिट्टी, वेदयमाणस्स पढमकिट्टि वा।
उदओ बंधो णासो, अपुव्वकिट्टीण करणं च ॥५४४॥

क्रोधस्य द्वितीयकृष्टिः, वेदकस्य प्रथम कृष्टिरिव।
उदयो बंधो नाशः, अपूर्वकृष्टीनां करणं च ॥५४४॥

टीका – क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि का वेदक कै कृष्टिनि का उदय अर बध अर घात अर सक्रमण द्रव्य करि वा बध द्रव्य करि अपूर्व कृष्टि का करना इत्यादि विधान जैसै प्रथम संग्रह कृष्टि का कह्या, तैसै ही समस्त कहना।

कोहस्स बिदियसंगहकिट्टी वेदंतयस्स संकमणं।
सट्ठाणे तदियो त्ति य तदणंतरहेट्ठिमस्स पढमं च ॥५४५॥

क्रोधस्य द्वितीयसंग्रहकृष्टि वेद्यमानस्य संक्रमणं।
स्वस्थाने तृतीयांतं च, तदनंतरमधस्तनस्य प्रथमं च ॥५४५॥

टीका – क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि का वेदक कै स्वस्थान कहिए विवक्षित कषाय ही विषै सक्रमण तौ तीसरी सग्रह (कृष्टि)[1] पर्यंत होइ अर परस्थान कहिए अन्य कषाय विषै सक्रमण सो आय के नीचै जो कषाय, ताकी प्रथम संग्रह कृष्टि विषै होइ, सोई कहिए है–

पढमो बिदिये तदिये, हेट्ठिमपढमे च बिदियगो तदिये ।
हेट्ठिमपढमे तदियो, हेट्ठिमपढमे च संकमदि ।।५४६।।

प्रथमो द्वितीये तृतीये, अधस्तनप्रथमे च द्वितीयकस्तृतीये ।
अधस्तनप्रथमे तृतीयोऽधस्तनप्रथमे च संक्रामति ।।५४६।।

टीका – विवक्षित कषाय की पहली सग्रह कृष्टि का द्रव्य तौ अपनी दूसरी तीसरी अर नीचली कषाय की पहली सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण करै है अर दूसरी सग्रह कृष्टि का द्रव्य अपनी तीसरी अर नीचली कषाय की पहली सग्रह कृष्टि विषै संक्रमण करै है। अर तीसरी संग्रह कृष्टि का द्रव्य नीचली कषाय की पहली संग्रह कृष्टि विषै ही सक्रमण करै है । इहा वेदक अपेक्षा जाकौ भोगवै है, ताके पीछै जाकौ भोगवै, ताकौ नीचली कषाय कह्या है, सो क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि तै प्रदेश समूह है सो क्रोध की तीसरी, मान की पहली सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण करै है । अर क्रोध की तीसरी सग्रह कृष्टि का द्रव्य तै मान की पहली ही विषै सक्रमण करै है । अर मान की पहली का द्रव्य मान की दूसरी, तीसरी, माया की पहली विषै सक्रमण करै है । मान की दूसरी का द्रव्य मान की तीसरी, माया की पहली विषै सक्रमण करै है । अर मान की तीसरी का द्रव्य, माया की पहली विषै सक्रमण करै है । अर माया की पहली का द्रव्य, माया की दूसरी, तीसरी, लोभ की पहली विषै सक्रमण करै है । अर माया की दूसरी का द्रव्य, माया की तीसरी, लोभ की पहली विषै सक्रमण करै है अर माया की तीसरी का द्रव्य लोभ की पहली विषै सक्रमण करै है । अर लोभ का पहली का द्रव्य लोभ की दूसरी, तीसरी विषै सक्रमण करै है । अर लोभ की दूसरी का द्रव्य लोभ की तीसरी विषै सक्रमण होइ प्रवेश करै है । इहा स्वस्थान विषै तौ विवक्षित सग्रह का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए तहा एक भाग मात्र अपनी अन्य सग्रह कृष्टि विषै संक्रमण करै है । अर परस्थान विषैं तिस ही कौ अध

---

१. 'कृष्टि' शब्द हस्तलिखित प्रतियो मे नही मिलता ।

प्रवृत्त भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र द्रव्य वा अन्य कषाय की प्रथम संग्रह कृष्टि विषै संक्रमण करै है, असा विशेष जानना ।

कोहस्स पढमकिट्टी, सुण्णो त्ति ण तस्स अत्थि संकमणं ।
लोभंतिमकिटि्टस्स य, णत्थि पडित्थावणूणादो ।।५४७।।

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिः, शून्या इति न तस्या अस्ति संक्रमणं ।
लोभांतिमकृष्टेश्च, नास्ति प्रतिस्थापनमूनतः ।।५४७।।

टीका – इहां लोभ की प्रथम संग्रह कृष्टि तौ शून्य भई–नास्ति भई, तातै ताकै संक्रमण नाही अर लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का भी संक्रमण नाही, जातै प्रतिलोम जो ऊलटा संक्रमण ताका अभाव है ।

असै दोय बिना अवशेष दश संग्रह कृष्टिनि का संक्रमण कीया । तहां भोगने-रूप द्वितीय संग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य का अभाव है । तहा घात द्रव्य ही का पूर्व कृष्टिनि विषै देना पूर्वोक्त प्रकार हो है । बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि विषै व्यय द्रव्य नाही, परन्तु आय द्रव्य है, तातै दश संग्रह कृष्टि विषै संक्रमण द्रव्य का पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषै देना पूर्वोक्त प्रकार हो है । असा जानना ।

जस्स कसायस्स जं, किट्टि वेदयदि तस्स तं चेव ।
सेसाण कसायाणं, पढमं किट्टि तु बंधदि हु ।।५४८।।

यस्य कषायस्य यां कृष्टि वेदयति तस्य तां चैव ।
शेषाणां कषायाणां, प्रथमा कृष्टि बध्नाति हि ।।५४८।।

टीका – जिस कषाय की जिस संग्रह कृष्टि कौ वेदै भोगवै है, तिस कषाय की तौ तिस ही संग्रह कृष्टि कौ बांधै है । बहुरि अन्य कषायनि की प्रथम संग्रह कृष्टि कौ बांधै है, असी व्याप्ति है । तातै बंध द्रव्य की च्यारि ही संग्रह कृष्टि विषै जानना, सो इहां क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि कौ अर कषायनि की प्रथम संग्रह कृष्टि कौ बांधै है ।

माणतिय कोहतदियै, मायालोहस्स तिसतिये अहिया ।
संखगुणं वेदिज्जे, अंतरकिट्टि पदेसो य ।।५४९।।

---
१. 'कृष्टि' शब्द हस्तलिखित प्रतियो मे नही मिलता ।

मानत्रयं क्रोधतृतीये, मायालोभस्य त्रिकत्रिके अधिका ।
संख्यगुण वेद्यमाने, अंतरकृष्टिः प्रदेशश्च ।।५४९।।

टीका – इहां संग्रह कृष्टि विषै अवयव कृष्टिनि का वा द्रव्य का अल्प बहुत्व कहिए है, सो मान को तीन अर क्रोध की एक तीसरी ही अर माया लोभ की तीन तीन संग्रह कृष्टिनि विषै तौ विशेष अधिक अर वेद्यमान क्रोध की दूसरी कृष्टि विषै संख्यात गुणा कृष्टिनि का वा प्रदेशनि का प्रमाण क्रम तै है । सोई कहिए है–

मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का स्तोक, तातै मान की दूसरी का, तातै मान की तीसरी का, तातै क्रोध की तीसरी का, तातै माया की तीसरी का, तातै क्रोध की प्रथम का, तातै लोभ की दूसरी का, तातै लोभ की तीसरी का अवयव कृष्टिनि का प्रमाण क्रम तै विशेष करि अधिक है । तहां विशेष का प्रमाण स्वस्थान विषै तौ पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीए आवै है । जैसै मान की प्रथम संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण तैं याही कौं पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग दीए जो एक भाग मात्र विशेष ताकरि अधिक मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण हो है, ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि परस्थान विषै आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीएं विशेष का प्रमाण आवै है । जैसै मान की तीसरी संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टि प्रमाण याही कौं आवली का असंख्यातवां भाग का भाग दीए एक भाग मात्र विशेष करि अधिक क्रोध की तृतीय संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण हो है । ऐसै ही अन्यत्र जानना । बहुरि लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण क्रम तै वेद्यमान क्रोध की द्वितीय संग्रह की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण संख्यात गुणा है सो चौदह गुणा जानना । ऐसै अवयव कृष्टिनि के प्रमाण का अल्प बहुत्व कह्या । याही प्रकार प्रदेश जे इन संग्रह कृष्टिनि के परमाणू, तिनके प्रमाण का ही अल्प बहुत्व जानना, जातै बंध द्रव्य, संक्रमण द्रव्य मिलि ऐसा क्रम हो है । बहुरि इस द्रव्य ही के अनुसारि कृष्टिनि का भी अल्प बहुत्व जानना । यातै थोडे द्रव्य करि थोरी, बहुत द्रव्य करि बहुत निपजैं हैं ।

वेदिज्जादिट्टिदिए, समयाहियआवलीयपरिसेसे ।
ताहे जहण्णुदीरणचरिमो पुण वेदगो तस्स ।।५५०।।

वेद्यमानादिस्थितौ, समयाधिकावलिक परिशेषे ।
तत्र जघन्योदीरणचरमः पुनः वेदकस्तस्य ।।५५०।।

टीका – जिस संग्रह कृष्टि कौ वेदै है, तिसकी प्रथम स्थिति विषै दोय आवली अवशेष रहै तौ आगाल प्रत्यागाल का नाश हो है। बहुरि समय अधिक आवली अवशेष रहैं जघन्य स्थिति जो उदयावली तै ऊपरि एक निषेक, ताका उदीरक कहिए उदयाली विषै देनेरूप उदीरणा करनेवाला हो है। तहां ही तिसके वेदक काल का अंत समय हो है, सो इहा क्रोध की द्वितीय संग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहै जघन्य स्थिति का उदीरक अर ताके वेदक का अंत समय भया।

ताहे संजलणाणं, बंधो अंतोमुहुत्तपरिहीणो।
सत्तोवि य दीणसीदी, चउमासब्भहियपणवस्सा ॥५५१॥

तत्र संज्लनानां, बंधोऽंतर्मुहूर्तपरिहीनः।
सत्त्वमपि च दिनाशीतिः, चतुर्मासाभ्यधिकपंचवर्षाः ॥५५१॥

टीका – तहां सज्वलन चतुष्क का स्थितिबध चतुष्क का स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त घाटि असी दिन, ताका दोय मास अर बीस दिन मात्र है। अर तिनका सत्व अंतर्मुहूर्त घाटि, च्यारि मास अधिक पंच वर्ष मात्र है। इहा भी पूर्ववत् निरूपण जानना।

घादितियाणं बंधो, वासपुधत्तं तु सेसपयडीणं।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि हवंति णियमेण ॥५५२॥

घातित्रयाणां बंधो, वर्षपृथक्त्वं तु शेषप्रकृतिनाम्।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि भवंति नियमेन ॥५५२॥

टीका – तीन घातियानि का स्थितिबध पृथक्त्व वर्ष मात्र है। तीनके ऊपरि यथायोग्य पृथक्त्व सज्ञा जाननी। बहुरि अवशेष अघातियानि का स्थितिबध सख्यात हजार वर्ष मात्र है नियमकरि।

घादितियाणं सत्तं, संखसहस्साणि होंति वस्साणं।
तिण्हं पि अघादीणं, वस्साणि असंखमेत्ताणि ॥५५३॥

घातित्रयाणां सत्वं संख्यसहस्राणि भवंति वर्षाणां।
त्रयाणामपि अघातिनां, वर्षा असंख्यमात्रा ॥५५३॥

टीका – तीन घातियानि की स्थिति सत्त्व संख्यात हजार वर्ष मात्र है । आयु बिना तीन अघातियानि का स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है ।

से काले कोहस्स य, तदियादो संगहादु पढमाठिदी ।
अंते संजलणाणं, बंधं सत्तं दुमास चउवस्सा ॥५५४॥

स्वे काले क्रोधस्य च, तृतीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः ।
अंते संज्वलनानां, बंधं सत्त्वं द्विमासं चतुर्वर्षाः ॥५५४॥

टीका – ताके अनतरि अपने काल विषै क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि का वेदक हो है । तहा याका द्रव्य एक गुणा था अर याकै चौदह गुणा द्वितीय सग्रह का उच्छिष्टावली नवक समयप्रबद्ध बिना द्रव्य मिलने तै पद्रह गुणा हो है । तिस द्रव्य तिसके वेदक का काल तै आवली मात्र अधिक प्रथम स्थिति करै है । तहां वर्णन क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि वेदकवत् जानना । तहां अत समय विषै सज्वलन चतुष्क का स्थितिबध दोय मास अर स्थिति सत्त्व च्यारि वर्ष मात्र जानना । अवशेष कर्मनि का पूर्ववत् आलाप है ।

से काले माणस्स य, पढमादो संगहादु पढमठिदी ।
माणोदयअद्धाये, तिभागमेत्ता हु पढमठिदी ॥५५५॥

स्वे काले मानस्य च, प्रथमात् संग्रहात् प्रथमस्थितिः ।
मानोदयाद्धायाः, त्रिभागमात्रा हि प्रथमस्थितिः ॥५५५॥

टीका – क्रोध की वेदक कौ अनतरि अपने काल की विषै मान की प्रथम संग्रह कृष्टि का द्रव्य एक गुणा था अर पद्रह गुणा क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य मिल्या, सो मिल करि सोलह गुणा भया । ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग दिए एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि गुणश्रेणी रूप प्रथम स्थिति करै है । सो क्रोध वेदक काल तै किछू घाटि जो मान का वेदक काल, ताका तीसरा भाग आवली करि अधिक तिस प्रथम स्थिति का प्रमाण है । तहा मान की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदक हो है ।

कोहपढमं व माणो, चरिमे अंतोमुहुत्तपरिहीणो ।
दिणमासपण्णचत्तं, बंधं सत्तं तिसंजलणाणं ॥५५६॥

क्रोधप्रथमं व मानः, चरमे अंतर्मुहूर्तपरिहीनः ।
दिनमासपंचाशचत्वारिंशत् बंधः सत्त्वं त्रिसंज्वलनानां ।।५५६।।

टीका – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदकवत् मान की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदक का विधान जानना ।

विशेष इतना – क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदक के बध द्रव्य करि उपजी जे नवीन अतर कृष्टि, तिनका प्रमाण ल्यावने कौ भागहार का प्रमाण छह गुणहानि मात्र कह्या था, इहा तातै चौथाई घाटि है, तातै साढा च्यारि गुणहानि मात्र है । आगै लोभ इतना इतना ही घाटि जानना । सो इहा माया की प्रथम संग्रह कृष्टि वेदक कै तीन गुणहानि मात्र, लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै ड्योढ गुण-हानि मात्र भागहार जानना । याका भाग सर्व कृष्टिनि कौ दीए क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक कै तौ गुणहानि का चौथा भाग मात्र अतराल का प्रमाण कह्या था । इहा वा आगै तातै सोहलवा भाग मात्र क्रम तै घटता जानना । सो मान, माया, लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक कै बध द्रव्य करि निपजी नवीन कृष्टिनि के बीचि जे कृष्टि पाइए, तिनका प्रमाण मात्र अतराल सो क्रम तै गुणहानि का तीन सोलह्वा भाग मात्र, दोइ सोलह्वा भाग मात्र, एक सोलहवा भाग मात्र गुणा स्थापिए । वहुरि क्रोध की प्रथम, द्वितीय, तृतीय कृष्टि वेदक कै गुणकार क्रम तैं तेरह चौदह, पद्रह का अर मान की प्रथमादि सग्रह कृष्टि वेदक कै गुणकार क्रम तैं सोहल, सत-रह, अठारह का वा माया की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक कै गुणकार क्रम तै उगणीस, वीस, इकईस का, लोभ की प्रथमादि सग्रह कृष्टि वेदक कै गुणकार क्रम तै बाईस का है । तहा अपने अपने गुणकार करि गुण्य कौ गुणै अतराल का प्रमाण आवै है । वहुरि इतना जानना—

क्रोध वेदक कै च्यारचो कषायनि का, मान वेदक कै क्रोध बिना तीन कषा-यनि का, माया वेदक कै क्रोध, मान बिना कषायनि का, लोभ वेदक कै लोभ ही का बध है । तातै इनके ही बध द्रव्य करि अतर कृष्टि निपजै है । बहुरि जिस कृष्टि कौ भोगिए है, ताका द्रव्य जिन कृष्टिनि विषै सक्रमण करै है, तिन विषै सक्रमण द्रव्य करि निपजी जे कृष्टि, तिनका अतराल विषै भी यथासभव जानना । बहुरि मान प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहै अत समय होइ । तहा क्रोध बिना तीन सज्वलन का स्थितिबंध अतर्मुहूर्त घाटि पचास दिन है । अर स्थितिसत्त्व अतर्मुहूर्त घाटि चालीस मास मात्र है । इहां क्रोध

की प्रथम सग्रह कृष्टिवत् त्रैराशिक आदि विधान जानना । इहा तै आगे पूर्व सग्रह कृष्टि का द्रव्य मिलने तै वेद्यमान कृष्टि का द्रव्य विषै एक एक गुणकार क्रम तै बधै है । तहा मान की द्वितीय, तृतीय अर माया की प्रथम, द्वितीय, तृतीय अर लोभ की प्रथम, द्वितीय, तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य क्रम तै सतरह, अठारह, उगणीस, बीस, इकईस, बाईस, तेईस, चौईस गुणा है, सो अपने अपने द्रव्य कौ अपकर्षण करि अपने वेदक काल तै, आवली मात्र अधिक प्रथम स्थिति करिए है । तहा पूर्वोक्त विधान तै तिस प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहै अपनी अपनी वेदक काल का अत समय हो है ।

तहा स्थितिबध स्थितिसत्त्व का विशेष कहिए है—

बिदियस्स माणचरिमे, चत्तं वत्तीसदिवसमासाणि ।
अंतमुहुत्तहीणा, बंधो सत्तो तिसंजलणगाणं ॥५५७॥

द्वितीयस्य मानचरमे, चत्वारिंशद्द्वात्रिंशद्दिवसमासाः ।
अंतर्मुहुर्तहीना, बंधः सत्त्वं त्रिसंज्वलनानां ॥५५७॥

टीका – ताके अनतरि मान की द्वितीय संग्रह कृष्टि का वेदक हो है । ताका अंत समय विषै तीन सज्वलन का स्थितिबध अंतर्मुहूर्त घाटि चालीस दिन अर स्थितिसत्त्व अतर्मुहूर्त धाटि बत्तीस मास मात्र है ।

तदियस्स माणचरिमे, तीसं चउवीस दिवसमासाणि ।
तिण्हं संजलणाणं, ठिदिबंधो तह य सत्तो य ॥५५८॥

तृतीयस्य मानचरिमे, त्रिंशद्चतुर्विंशद्दिवसमासाः ।
त्रयाणां संज्वलनानां स्थितिबंधस्तथा च सत्त्वं च ॥५५८॥

टीका – ताके अनतरि मान की तृतीय सग्रह कृष्टि का वेदक हो है । ताका अंत समय विषै तीन सज्वलननि का स्थितिबध अतर्मुहूर्त घाटि तीस दिन अर स्थिति सत्त्व अतर्मुहूर्त घाटि चौवीस मास मात्र हो है ।

पढमगमायाचरिमे, पणवीसं वीसदिवसमासाणि ।
अंतोमुहुत्तहीणा, बंधो सत्तो दुसंजलणगाणं ॥५५९॥

प्रथमगमायाचरिमे, पंचविंशतिः विंशतिः दिवसमासाः ।
अंतर्मुहूर्तहीनाः, बंधः सत्त्वं द्विसंज्वलनकयोः ॥५५९॥

टीका – ताके अनतरि माया की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदक हो है। सो याका काल माया वेदक काल के तीसरे भाग मात्र है। ताका अत समय विषै सज्वलन माया-लोभ का स्थिति बध अतर्मुहूर्त घाटि पचीस दिन स्थितिसत्त्व अतर्मुहूर्त घाटि वीस मास मात्र हो है।

बिदियगमायाचरिमे, वीसं सोलं च दिवसमासाणि।
अंतोमुहुत्तहीणा, बंधो सत्तो दुसंजलणगाणं ॥५६०॥

द्वितीयगमायाचरिमे, विंशं षोडश च दिवसमासाः।
अंतर्मुहूर्तहीनाः, बध. सत्त्वं द्विसंज्वलनकयोः ॥५६०॥

टीका – ताके अनतरि माया की द्वितीय सग्रह कृष्टि का वेदक हो है। ताका अन समय विषै दोय सज्वलननि का स्थिति बध अतर्मुहूर्त घाटि वीस दिन अर स्थिति सत्त्व अतर्मुहूर्त घाटि सोलह मास मात्र हो है।

तदियगमायाचरिमे, पण्णर बारसय दिवसमासाणि।
दोण्हं संजलणाणं, ठिदिबंधो तह य सत्तो य ॥५६१॥

तृतीयकमायाचरमे, पंचदश द्वादश दिवसमासाः।
द्वयोः सज्वलनयोः, स्थितिबधस्तथा च सत्त्वं च ॥५६१॥

टीका – ताके अनतर माया की तृतीय सग्रह कृष्टि का वेदक हो है। ताका अन समय विषै दोय सज्वलननि का स्थिति बध अतर्मुहूर्त घाटि पद्रह दिन अर स्थिति सत्त्व अतर्मुहूर्त घाटि बारह मास प्रमाण हो है।

मासपुधत्तं वासा, संखसहस्साणि बंध सत्तो य।
घादितियाणिदराणं, संखमसंखेज्जवस्साणि ॥५६२॥

मासपृथक्त्वं वर्षाः, संख्यसहस्राः बध. सत्त्वं च।
घातित्रयाणामितरेषा संख्यमसंख्येयवर्षा. ॥५६२॥

टीका – तहा ही तीन घातियानि का स्थितिबध पृथक्त्व मास प्रमाण है। स्थिति सत्त्व यथा योग्य सख्यात हजार वर्ष मात्र है। बहुरि तीन अघातियानि का स्थिति बध यथा योग्य सख्यात वर्ष मात्र है। स्थिति सत्त्व यथायोग्य असख्यात वर्ष मात्र है।

लोहस्स पढमचरिमे, लोहस्संतोमुहुत्त बंधदुगे ।
दिवसपुधत्तं वासा, संखसहस्साणि घादितिये ।।५६३।।

लोभस्य प्रथमचरिमे, लोभस्यांतर्मुहूर्त बंधद्विके ।
दिवसपृथक्त्वं वर्षाः, संख्यसहस्रा घातित्रये ।।५६३।।

टीका – ताके अनतरि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदक हो है । ताका काल समस्त लोभ वेदक काल के तीसरे भाग मात्र वा बादर लोभ वेदक काल तै आधा है । ताका अत समय विषै सज्वलन लोभ का स्थितिबध वा स्थितिसत्त्व अत-र्मुहूर्त मात्र है । तहां स्थितिबध तै स्थितिसत्त्व सख्यात गुणा जानना । बहुरि तीन घातियानि का स्थितिबध पृथक्त्व दिन मात्र अर स्थितिसत्त्व सख्यात हजार वर्ष मात्र है ।

सेसाणं पयडीणं, वासपुधत्तं तु होदि ठिदिबंधो ।
ठिदिसत्तमसंखेज्जा, वस्साणि हवंति णियमेण ।।५६४।।

शेषाणां प्रकृतीनां, वर्षपृथक्त्वं तु भवति स्थितिबंधः ।
स्थितिसत्त्वमसंख्येया, वर्षा भवंति नियमेन ।।५६४।।

टीका – अवशेष तीन अघातिया प्रकृतिनि का स्थिति बध पृथक्त्व वर्ष मात्र अर स्थितिसत्त्व यथायोग्य नियम करि असख्यात वर्ष मात्र है ।

से काले लोहस्स य, बिदियादो संगहादु पढमठिदी ।
ताहे सुहुमं किट्टिं, करेदि तव्विदियतदियादो ।।५६५।।

स्वे काले लोभस्य च, द्वितीयतः संग्रहात् प्रथमस्थितिः ।
तत्र सूक्ष्मां कृष्टिं, करोति तद्द्वितीयतृतीयतः ।।५६५।।

टीका – बहुरि ताके अनतरि अपने काल विषै लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि के द्रव्य तै प्रदेश समूह का अपकर्षण करि उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी रूप प्रथम स्थिति करै है । ताका प्रमाण अवशेष रह्या अनिवृत्तिकरण काल तै आवली मात्र अधिक है । बहुरि तिस ही काल विषै लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि अर तृतीय सग्रह कृष्टि का जो द्रव्य, तातै प्रदेश समूह को अपकर्षण करि सूक्ष्म है अनुभाग शक्ति जिन विषै असी सूक्ष्म कृष्टि करै है । सो बादर लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य सर्व

मोह का द्रव्य का चौईस का भाग तै तेईस गुणा है । तातै अपकर्षण कीया द्रव्य, अनुभाग की अपेक्षा सर्व मोह द्रव्य का चौईसवा भाग को अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग, तातै पाच सै पिचहत्तरि गुणा है । तहा तेईस गुणा तौ लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि रूप द्रव्य है । अर अवशेष पाच सै बावन गुणा द्रव्य रह्या, ताकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है । इहा अपकर्षण कीया द्रव्य विषै तेईस का गुणकार था, ताकौ तातै एक अधिक चौईस, ताकरि गुणै ताके अनतरि भोगवने योग्य सूक्ष्म कृष्टि, ता विषै संक्रमण होने योग्य द्रव्य पाच सै बावन गुणा हो है । जातै अनतरि भोगवने योग्य कृष्टि विषै सक्रमण द्रव्य सख्यात गुणा कह्या है । बहुरि लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य तै अपकर्षण कीया द्रव्य है, सो सर्व मोह द्रव्य का चौईसवा भाग कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भागहार मात्र है, ताकरि सूक्ष्म कृष्टि करिए है । मिलि करि मोह द्रव्य का चौईसवा भाग कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए, तातै पाच सै तरेपन गुणा द्रव्य भया । सो इतने द्रव्य करि सूक्ष्म कृष्टि करिए है, असा तात्पर्य जानना ।

लोहस्स तदियसंगहकिट्टीए हेट्ठदो अवट्ठाणं ।
सुहुमाणं किट्टीणं, कोहस्स य पढमकिट्टिणिभा ॥५६६॥

लोभस्य तृतीयसंग्रहकृष्ट्या अधस्तनतः अवस्थानम् ।
सूक्ष्मानां कृष्टीनां, क्रोधस्य च प्रथमकृष्टिनिभा ॥५६६॥

टीका – तिनि सूक्ष्म कृष्टिनि का लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि के नीचै अवस्थान है । बहुरि ते सूक्ष्म कृष्टि क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि के समान हो है । कैसे ? सो कहिए है—

जैसे अपूर्व स्पर्धकनि के नीचै अनत गुणा घटता अनुभाग लीए क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि है, तैसे बादर कृष्टि के नीचै अनत गुणा घटता अनुभाग लीए सूक्ष्म कृष्टिनि की रचना हो है । बहुरि जैसे क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि की अवयव कृष्टिनि का प्रमाण या बिना अवशेष बादर कृष्टिनि का जो प्रमाण, तातै सख्यात गुणा है । तैसे ही सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि बिना अवशेष कृष्टिनि का प्रमाण तै सख्यात गुणा है । बहुरि जैसे क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि जघन्य कृष्टि तै लगाय उत्कृष्ट कृष्टि पर्यत अनत गुणा अनुभाग क्रम लीए है, तैसे ही सूक्ष्म कृष्टि भी जघन्य तै लगाय उत्कृष्ट पर्यंत अनत गुणा अनुभाग लीए है ।

कोहस्स पढमकिट्टी, कोहे छुद्धे दु माणपढमं च ।
माणाछुद्धे मायापढमं मायाए संछुद्धे ॥५६७॥

लोहस्स पढमकिट्टी, आदिमसमयकदसुहुमकिट्टी य ।
अहियकमा पंचपदा, सगसंखेज्जदिमभागेण ॥५६८॥

क्रोधस्य प्रथमकृष्टिः, क्रोधे क्षुब्धे तु मानप्रथमं च ।
मानक्षुब्धे मायाप्रथम मायायां संक्षुब्धायाम् ॥५६७॥

लोभस्य प्रथमकृष्टिरादिमसमयकृतसूक्ष्मकृष्टिश्च ।
अधिकक्रमाणि पंचपदानि, स्वकसंख्येयभागेन ॥५६८॥

टीका – प्रथम समय विषै कीन्ही सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण ल्यावने के अर्थि अल्पबहुत्व कहिए है—

क्रोध की प्रथम संग्रह की अवयव कृष्टि स्तोक है । कृष्टि प्रमाण का चौईसवा भाग तै तेरह गुणी है । बहुरि क्रोध की तीनो सग्रह कृष्टि मान की के ऊपरि मिलाए मान की प्रथम सग्रह की अवयव कृष्टि विशेष अधिक हो है । पूर्व राशि कौ त्रिभाग अधिक च्यारि का भाग दीए एक भाग मात्र अधिक है, सो सोलह गुणी हो है । बहुरि मान की तीनो सग्रह कृष्टि माया के ऊपरि मिलाए माया की प्रथम सग्रह की अवयव कृष्टि विशेष अधिक है, सो पूर्व राशि कौ त्रिभाग अधिक पाच का भाग दीए एक भाग मात्र अधिक है, सो तेरह की जायगा उगणीस गुणी हो है । बहुरि माया की तीनो संग्रह कृष्टि लोभ ऊपरि मिलाए लोभ की प्रथम सग्रह की अवयव कृष्टि विशेष अधिक हो है । सो पूर्व राशि कौ त्रिभाग अधिक छह का भाग दीए एक भाग मात्र अधिक हो है, सो बाईस गुणी हो है । बहुरि तातै प्रथम समय विषै कीन्ही सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण विशेष अधिक है । पूर्व राशि कौ ग्यारह का भाग दीए एक भाग मात्र अधिक हो है, सो चौईस गुणी हो है, ऐसै पच स्थान सख्यातवा भाग अधिक क्रम लीएं जानने ।

सुहुमाओ किट्टिओ, पडिसमयमसंखगुणविहीणाओ ।
दव्वमसंखेज्जगुणं, बिदियस्स य लोहचरिमो त्ति ॥५६९॥

सूक्ष्माः कृष्टयः, प्रतिसमयमसख्यगुणविहीनाः ।
द्रव्यमसंख्येयगुणं, द्वितीयस्य च लोभचरम इति ॥५६९॥

टीका – सूक्ष्म कृष्टि का प्रथम समय विषै कीनी ते बहुत है। तातै द्वितीय समय विषै कीनी अपूर्व सूक्ष्म कृष्टि सख्यात गुणी घाटि है। असै क्रम तै समय समय प्रति करी नवीन अपूर्व कृष्टि सख्यात गुणी घाटि जाननी। बहुरि सूक्ष्म कृष्टि विषै दिया द्रव्य प्रथम समय विषै स्तोक है। तातै दूसरा समय विषै सख्यात गुणा है। असै समय समय प्रति सूक्ष्म कृष्टि विषै दीया द्रव्य क्रम तै सख्यात गुणा जानना। सो द्वितीय सग्रह कृष्टि वेदक कालरूप जो सूक्ष्म कृष्टि करने का काल, ताका अत समय पर्यंत जानना।

दव्वं पढमे समये, देदि हु सुहुमेसणंतभागूणं।
थूलपढमे असंखगुणूणं तत्तो अणंतभागूणं ॥५७०॥

द्रव्यं प्रथमे समये, ददाति हि सूक्ष्मेऽवनंतभागोनं।
स्थूलप्रथमे असंख्यगुणोनं तत अनंतभागोनं ॥५७०॥

टीका – सूक्ष्म कृष्टि करण काल का प्रथम समय विषै सूक्ष्म कृष्टि की जघन्य कृष्टि तै लगाय अनतवा भाग घटता क्रम लीए अर उत्कृष्ट सूक्ष्म कृष्टि तै प्रथम जघन्य बादर कृष्टि विषै असख्यात गुणा घटता अर तातै द्वितीयादि बादर कृष्टिनि विषै अनतवा भाग घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। सो इहाँ विशेष निर्णय के अर्थि व्याख्यान करिए है–सो बादर कृष्टि करण का द्वितीय समय विषै जो विधान कह्या था, ताकौ स्मरण करि इहा जो विधान कहिए है, ताकौ समझना।

तहा प्रथम आय द्रव्य, व्यय द्रव्य, घात द्रव्यनि का स्वरूप कहिए है–

लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि का द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए तहा एक भाग मात्र लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य है। बहुरि इतना ही लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै व्यय द्रव्य है। आनुपूर्वी सक्रमण के नियम तै लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य है नाही। बहुरि अपनी अपनी सग्रह की अत कृष्टि का द्रव्य कौ अपनी अपनी कृष्टिनि का प्रमाण कौ अपकर्षण भागहार का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र जो अत विषै नष्ट करी असी घात कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै अर विशेष अधिक कीए घात द्रव्य का प्रमाण हो है। तहा घात कृष्टि सबधी व्यय द्रव्य सर्व व्यय द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र है। ताकौ घटाए जो व्यय द्रव्य रह्या, तितना घात द्रव्य तै ग्रहण करि जिन कृष्टिनि का व्यय द्रव्य भया था, तहा ही दीए स्वस्थान गोपुच्छ हो है। बहुरि घात कृष्टिनि का प्रमाण

मात्र जे विशेष, तिनकौ घात कीए पीछे अवशेष रही जे कृष्टि तिन एक एक विषै देना । तातै ताकौ अवशेष कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै जो द्रव्य होइ तितना द्रव्य घात द्रव्य तै ग्रहि करि दीए परस्थान गोपुच्छ भी होइ है । ऐसै सर्व कृष्टिनि का एक गोपुच्छ भया ।

बहुरि पूर्वोक्त दोय प्रकार द्रव्य दीए पीछे अवशेष जो घात द्रव्य रह्या, तिस विषै कीए पीछे अवशेष रही कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ का भाग दीए जो एक खड मध्यम धन रूप भया, ताकौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र जे विशेष, तिन करि अधिक कीए जो द्रव्य भया, ताकौ तृतीय सग्रह कृष्टि का अवशेष घात द्रव्य तै ग्रहि तृतीय सग्रह का जघन्य कृष्टि विषै दीजिए है । अवशेष द्रव्य विषै घटता क्रम लीए अन्य कृष्टिनि विषै दीजिए है । ऐसै अपने अपने अवशेष घात द्रव्य कौ दीए अवशेष घात द्रव्य एक गोपुच्छाकार हो है । ऐसै एक गोपुच्छाकार तिष्ठती जे कृष्टि तिनि विषै संक्रमण द्रव्य अर बध द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि विषै सक्रमण द्रव्य अर बध द्रव्य देने का विधान कहिए है—

तहा द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै आय द्रव्य का अभाव है । तातै घात द्रव्य तै किछू द्रव्य जुदा राखि इहा कहिए है तैसै देना । अवशेष कौ पूर्वोक्त प्रकार देना । तहा बादर कृष्टि सबधी एक विशेष आदि, एक विशेष उत्तर घात कीए पीछे तृतीय सग्रह की अवशेष रही कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापै जो सकलन धन[1] होइ, तितना द्रव्य तृतीय सग्रह कृष्टि का आय द्रव्य तै ग्रहि जुदा स्थापना । अर जितनी तृतीय सग्रह कृष्टि भई, तितने विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर अर अपनी अपनी अवशेष कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापै, जो सकलन धन होइ, तितना द्रव्य द्वितीय सग्रह का घात द्रव्य तै ग्रहि जुदा स्थापना, इनि दोऊनि का नाम अध-स्तन शीर्ष द्रव्य है । बहुरि तृतीय सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य कौ असख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र जो गुण्य, सो एक खड है । ताकौ तृतीय सग्रह सबधी कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै जो होइ तितना द्रव्य कौ तृतीय सग्रह के आय द्रव्य तै ग्रहि स्थापना । अर तिस ही गुण्य कौ द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै जो होइ, तितना द्रव्य कौ द्वितीय सग्रह के घात द्रव्य तै ग्रहि स्थापना । इनि का नाम मध्यमखड द्रव्य है । बहुरि उभय द्रव्य

---

१. अ और ख प्रति मे 'धन' शब्द मिलता है ।

संबधी एक विशेष आदि अर एक विशेष उत्तर द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहा संकलन धन मात्र उभय द्रव्य के विशेष तिन विषै अपने एक विशेष का अनंतवा भाग मात्र घटाएं अवशेष रह्या तितना द्वितीय संग्रह की कृष्टि के घात द्रव्य तै ग्रहि जुदा स्थापना। यहु वेद्यमान कृष्टि है। तातै याका बंध नाम भी है। सो घटाया द्रव्य कौ बंध द्रव्य विषै देइ पूर्ण करेंगे, इहा द्वितीय संग्रह का घात द्रव्य पूर्ण भया। बहुरि एक अधिक द्वितीय संग्रह की जेती कृष्टि भई तितने विशेष आदि, एक विशेष उत्तर अर संक्रमण द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टि सहित सर्व तृतीय संग्रह कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापै, तहा संकलन धन मात्र उभय द्रव्य के विशेषनि कौ तृतीय संग्रह के आय द्रव्य तै ग्रहि स्थापने। इनि दोऊनि का नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है। बहुरि इन तीन तीन प्रकार द्रव्य करि हीन जो तृतीय संग्रह का आय द्रव्य, ताकरि अपूर्व नूतन कृष्टि निपजाइए है, तिनका प्रमाण ल्याइए है—

एक मध्यम खंड अधिक जो तृतीय संग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि का द्रव्य, तिस प्रमाण द्रव्य करि एक संक्रमण संबंधी अंतर कृष्टि निपजै तौ पूर्वोक्त तीन प्रकार द्रव्य रहित संक्रमण द्रव्य करि केती नवीन कृष्टि निपजै असैं त्रैराशिक कीए संक्रमण द्रव्य करि निपजी कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। याका भाग तृतीय संग्रह की पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण कौ दीए संक्रमण कृष्टिनि के बीचि अंतराल का प्रमाण आवै है, सो संक्रमण कृष्टिनि के प्रमाण का भाग अवशेष संक्रमण द्रव्य कौ दीए एक खंड होइ। ताकौ संक्रमण कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणे जो द्रव्य भया ताका नाम संक्रमण अंतर कृष्टि संबंधी समान खंड द्रव्य है। अब बंध द्रव्य का विभाग कहिए है—

बंध द्रव्य करि निपजी जे अपूर्व अंतर कृष्टि, तिनि विषै जो अंतरकृष्टि, तिस तै लगाय ताके ऊपरि जेती कृष्टि पाइए, तितने विशेष तौ आदि अर बंधांतर कृष्टिनि का अंतराल मात्र विशेष उत्तर अर बंधांतर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहां संकलन मात्र द्रव्य कौ मोहनीय का समयप्रबद्ध तै ग्रहि जुदा स्थापना। याका नाम बंधांतर कृष्टि विशेष द्रव्य है। इहा एक मध्यम खंड अधिक तृतीय संग्रह की जघन्य कृष्टि का द्रव्य मात्र द्रव्य तै एक कृष्टि निपजै तौ किंचित् ऊन मोह का समयप्रबद्ध मात्र द्रव्य करि केति निपजै? असैं त्रैराशिक कीएं बंध द्रव्य करि करी अपूर्व अंतर कृष्टिनि का प्रमाण आवै है। याका भाग किंचिदून सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो द्वितीय संग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण, ताकौ दीए बंधांतर कृष्टिनि के बीचि अंत-

राल का प्रमाण आवै है । बहुरि बध द्रव्य तै पूर्वोक्त बधातर कृष्टि विशेप द्रव्य अर बंध द्रव्य का अनतवा भाग मात्र द्रव्य जुदा स्थापि अवशेप रह्या द्रव्य कौं बधातर कृष्टि का भाग दीए एक खड होइ । अर याकौ बधातर कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै पूर्वोक्त द्रव्य होइ, ताका नाम बधातर कृष्टि सबधी समान खड द्रव्य है । बहुरि पूर्वै जो समयप्रबद्ध का एक भाग मात्र द्रव्य जुदा राख्या, ताकौ बध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो इहा गच्छ, तिसका एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि, ताकरि गुणी ताका भाग दीए इहा विशेप का प्रमाण होइ, ताकौ सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ का एक बार सकलन धन मात्र प्रमाण करि गुणै जो द्रव्य होइ, तितना द्रव्य जुदा स्थाप्या, बध द्रव्य का अनतवा भाग मात्र द्रव्य तै ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम बध विशेष द्रव्य है । बहुरि बंध द्रव्य का अनंतवा भाग विषै इतना घटाए जो अवशेष रह्या, ताकौ सर्व बध कृष्टिनि का प्रमाण का भाग दीए एक खड होइ । ताकौ बध कृष्टिनि का प्रमाण ही करि गुणै जो द्रव्य होइ, ताका नाम बध द्रव्य मध्यम खंड है । बहुरि इहा सूक्ष्म कृष्टि विषै सक्रमण होने योग्य जो द्वितीय, तृतीय सग्रह का द्रव्य अपकर्षण कीया ताका विभाग कहिए है—

सूक्ष्मकृष्टि सम्बन्धी जो द्रव्य, ताकौ प्रथम समय विषै करी सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ कौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन दो गुणहानि करि गुणी ताका भाग दीए एक विशेष होइ, ताकौ सूक्ष्म कृष्टि का प्रमाण मात्र गच्छ का एक बार सकलन धन मात्र प्रमाण करि गुणै जो होइ, तितना द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी द्रव्य तै ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम सूक्ष्म कृष्टि सम्बन्धी विशेष द्रव्य है । बहुरि याकौ घटाए जो अवशेष सूक्ष्म कृष्टि सबधी द्रव्य रह्या, ताकौ सूक्ष्म कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीए एक खड होइ अर याकौ सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण करि ही गुणै जो द्रव्य होइ, सो सूक्ष्म कृष्टि सबधी समान खड द्रव्य है । ऐसै क्रम करि विभाग रूप दिया जो द्रव्य, ताके देने का विधान कहिए है—

सूक्ष्म कृष्टि की जो जघन्य कृष्टि, तिस विषै बहुत द्रव्य दीजिए है । तहां सूक्ष्म कृष्टि संबधी समान खड द्रव्य तै एक खड अर सूक्ष्म कृष्टि संबधी विशेप तै सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेप ग्रहि दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत सूक्ष्म कृष्टिनि विषै कृष्टि द्रव्य का अनतवा भाग मात्र जो एक सूक्ष्म कृष्टि संबंधी विशेप, ताकरि घटता अनुक्रम तै द्रव्य दीजिए है ।

भावार्थ यहु – एक एक तौ सूक्ष्म कृष्टि सबंधी समान खड अर बीचि होइ गई कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र सूक्ष्म कृष्टि सबधी विशेष क्रम तै तिन विषै दीजिए है । इहा सूक्ष्म कृष्टि सबधी द्रव्य समाप्त भया ।

बहुरि अत सूक्ष्म कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै ताके ऊपरि जघन्य बादर कृष्टि विषै दीया द्रव्य असंख्यात गुणा घटता है । तहा तृतीय सग्रह का च्यारि प्रकार द्रव्य विषै मध्यम खड तै अर उभय द्रव्य विशेष तै सर्व बादर कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि तहा जघन्य बादर कृष्टि विषै दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीयादि बादर कृष्टिनि विषै अनतवा भाग मात्र विशेप घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है ।

भावार्थ – द्वितीयादि बादर कृष्टिनि विषै एकादि एक एक बधता क्रम लीएं अधस्तन शीर्ष के विशेष अर एकादि एक अधिक करि हीन सर्व बादर कृष्टि प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष अर एक एक मध्यम खड तहा दीजिए है । सो एक उभय द्रव्य का विशेष विषै एक अध स्तन शीर्ष विशेष घटाइए है; इतना इतना क्रम तै घटता द्रव्य दीजिए है, सो सक्रमण द्रव्य करि निपजी अपूर्व कृष्टि पर्यंत यहु अनुक्रम जानना । बहुरि जहा सक्रमण द्रव्य तै नवीन अपूर्व कृष्टि निपजी, तिस विषै सक्रमणांतर कृष्टि सबधी समान खड द्रव्य तै एक खड उभय द्रव्य विशेप द्रव्य तै भई कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है । सो यहु अपनी नीचली पूर्व कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा है । बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि विषै भई कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्ष के विशेष एक मध्यम खड भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है । सो यहु यातै नीचली अपूर्वकृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घाटि है । बहुरि ताके ऊपरि भी पूर्वोक्त प्रकार द्रव्य दीजिए है । बहुरि द्वितीय सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि भई कृष्टिनि का प्रमाण मात्र अधस्तन शीर्ष के विशेष एक मध्यम खण्ड भई कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र उभय द्रव्य के विशेष दीजिए है । ताके ऊपरि एक एक अधस्तन शीर्ष विशेष बधता अर एक उभय द्रव्य का विशेष घटता क्रम करि दीजिए है ।

विशेष इतना – बध कृष्टि की जघन्य कृष्टि तै लगाय उभय द्रव्य कौ विशेष विषै एक विशेष का अनतवा भाग मात्र घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है । अर तहा बध द्रव्य तै एक एक मध्यम खड अर भई बध कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र बध विशेष कौ ग्रहि दीजिए है । ऐसै क्रम होतै जहा बध द्रव्य करि

अपूर्व कृष्टि निपजाइए है, तहां बध द्रव्य तै बधांतर कृष्टि सबधी समान खण्ड द्रव्य तै एक खण्ड अर बधातर कृष्टि सबधी विशेष द्रव्य तै भई सर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि करि दीजिए है । सो यहु नीचली कृष्टि विषै दीया बध द्रव्य तै अनत गुणा है । ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि विषै तीन प्रकार घात द्रव्य दोय प्रकार बध द्रव्य दीजिए है । सो इहा दीया बध द्रव्य अपूर्व अतर कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै अनंत गुणा घाटि है । ताके ऊपरि बधरूप पूर्व कृष्टि वा बध करि निपजी अपूर्व कृष्टि वा बध रहित पूर्व कृष्टिनि विषै द्रव्य देने का विधान पूर्वोक्त प्रकार ही जानना । असै प्रथम समय विषै सूक्ष्म कृष्टि सबधी प्ररूपण समाप्त भया ।

बिदियादिसु समयेसु, अपुव्वाओ पुव्वकिट्टिहेट्ठाओ ।
पुव्वाणमंतरेसु वि, अंतरजणिदा असंखगुणा ॥५७१॥

द्वितीयादिषु समयेषु, अपूर्वाः पूर्वकृष्टचधस्तनाः ।
पूर्वाणामंतरेष्वपि, अंतरजनिता असंख्यगुणाः ॥५७१॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषै अपूर्व नवीन सूक्ष्म कृष्टि करिए है । ते पूर्वसमय विषै कीनी जे सूक्ष्म कृष्टि, तिनके नीचै करिए है अर तिनके बीचि बीचि करिए है । नीचै करिए, तिनकौ अध स्तन कृष्टि कहिए । बीचि करिए, तिनकौ अतर कृष्टि कहिए । तहा अध स्तन कृष्टिनि का प्रमाण स्तोक है । तिन तै अतर कृष्टिनि का प्रमाण असख्यात गुणा है ।

दव्वगपढमे समये, देदि अपुव्वेसणंतभागूणं ।
पुव्वापुव्वपवेसे, असंखभागूणमहियं च ॥५७२॥

द्रव्यगप्रथमे समये, ददाति अपूर्वेष्वनंतभागोनम् ।
पूर्वापूर्वप्रवेशे, असंख्यभागोनमधिक च ॥५७२॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषै प्रथम समयवत् द्रव्य दीजिए है ।

विशेष इतना–सूक्ष्म कृष्टि सबधी द्रव्य कौ अधःस्तन अपूर्व कृष्टिनि विषै अनतवां भाग घटता क्रम लीए बहुरि अपूर्व कृष्टि का प्रवेश विषै असख्यातवा भाग मात्र घटता अर अपूर्व कृष्टि का प्रवेश होतै असख्यातवा भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है । सोई विशेष करि कहिए है—

द्वितीयादि समयनि विषै घात द्रव्य अर सक्रमण द्रव्य का विभाग तौ पूर्ववत् करना । बहुरि सूक्ष्म कृष्टि के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य समय समय प्रति असख्यात गुणा है । ताका विभाग विषै विशेष है, सो कहिए है—

तिस अपकर्षण कीया द्रव्य तै पूर्वसमय विषै कीनी कृष्टि सबधी एक विशेष आदि एक विशेष उत्तर पूर्वसमय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण मात्र गच्छ स्थापि, तहा सकलन धन मात्र द्रव्य ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम अध स्तन शीर्ष विशेष है । बहुरि पूर्वसमय विषै कीनी कृष्टिनि विषै जो जघन्य कृष्टि, ताका द्रव्य मात्र एक खड, ताकौं इस वर्तमान समय विषै कीनी अध स्तन कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै जो द्रव्य होइ, ताकौ ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम अधःस्तन (शीर्ष) अपूर्व कृष्टि सम्बन्धी समान खड द्रव्य है । बहुरि तिस ही जघन्य पूर्व कृष्टि का द्रव्य मात्र एक खड कौ वर्तमान समय विषै कीनी अतर अपूर्व कृष्टिनि का प्रमाण करि गुणै जो द्रव्य होइ ताकौ ग्रहि जुदा स्थापना । याका नाम अंतर अपूर्व कृष्टि सबधी समान खड द्रव्य है । बहुरि पूर्व समय अर इस विवक्षित समय सम्बन्धी सर्व सूक्ष्म कृष्टि के द्रव्य कौ पूर्व अपूर्व सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताकौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन दो गुणहानि गुणि, ताका भाग दीए एक उभय द्रव्य सम्बन्धी विशेष होइ । ताकौ सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्म कृष्टि प्रमाण गच्छ का एक बार सकलन धन मात्र प्रमाण करि गुणै जो द्रव्य होइ, ताकौ ग्रहि, जुदा स्थापना । याका नाम उभय द्रव्य विशेष द्रव्य है । बहुरि ग्रैसै कह्या च्यारि प्रकार द्रव्य कौ इस विवक्षित समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य मै घटाए अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताकौ सर्व पूर्व अपूर्व सूक्ष्म कृष्टिनि के प्रमाण का भाग दीए एक खंड होइ, ताकौ तिस भागहार मात्र प्रमाण करि गुणै जो द्रव्य होइ, ताकौं जुदा स्थापना । याका नाम मध्यम धन खण्ड द्रव्य है । ग्रैसै सूक्ष्म कृष्टि के अर्थि अपकर्षण कीया द्रव्य के पाच प्रकार विभाग कहे । तिनके सूक्ष्म कृष्टिनि विषै देने का विधान अर पूर्वोक्त बादर कृष्टि सम्बन्धी च्यारि प्रकार सक्रमण द्रव्य का तृतीय सग्रह कृष्टि विषै देने का विधान अर च्यारि प्रकार बध द्रव्य, तीन प्रकार घात द्रव्य का अनतवा भाग का द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै देने का विधान इस विवक्षित समय विषै निरूपण कीजिए है—

विवक्षित समय विषै कीनी अधस्तन अपूर्व कृष्टि, तिनकी जघन्य कृष्टि विषै बहुत द्रव्य दीजिए है । तहा पच प्रकार सूक्ष्म कृष्टि सबधी द्रव्यनि विषै अधःस्तन कृष्टि सबधी समान खण्ड द्रव्य तै एक खण्ड मध्यम खण्ड द्रव्य तै एक खण्ड उभय द्रव्य

विशेष द्रव्य तै सर्व पूर्व अपूर्व (सूक्ष्म)[१] कृष्टि मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि द्वितीय कृष्टि विषै अनतवां भाग घटता द्रव्य दीजिए है। तहा एक अधस्तन कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड, एक मध्यम खण्ड, एक घाटि सर्व पूर्व अपूर्व कृष्टि मात्र उभय द्रव्य विशेष ग्रहि दीजिए है। ऐसै ही तृतीयादि अत पर्यंत अधस्तन अपूर्व कृष्टिनि विषै एक एक उभय द्रव्य का विशेष मात्र घटता क्रम करि दीजिए है।

बहुरि तिस अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै पूर्व समय सम्बन्धी सूक्ष्म कृष्टिनि की जो जघन्य कृष्टि, तिस विषै असंख्यातवा भाग मात्र घटता द्रव्य दीजिए है। तहा मध्यम खंड तै एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष द्रव्य तै भई कृष्टिनि करि हीन सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष द्रव्य ग्रहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय पूर्व कृष्टि विषै अनंतवां भाग घटता द्रव्य दीजिए है। तहा अधस्तन शीर्ष विशेष द्रव्य तै एक विशेष मध्यम खण्ड तै एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष तै भई कृष्टिनि करि सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। ऐसै ही तृतीयादि पूर्व कृष्टिनि विषैं एक एक अधःस्तन शीर्ष विशेष बधता अर एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता अर एक एक मध्यम खण्ड समान रूप द्रव्य दीजिए है। यावत् अपूर्व अंतर कृष्टि प्राप्त न होइ तावत् ऐसा क्रम जानना। बहुरि ऐसै पल्य का असंख्यातवा भाग मात्र कृष्टि भएं, तहां अंत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै ताके ऊपरि नवीन निपजाई जो अपूर्व अंतर कृष्टि तिस विषै असंख्यातवा भाग मात्र अधिक द्रव्य दीजिए है। तहा अतर कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड द्रव्य तै एक खण्ड अर मध्यम खण्ड तै एक खण्ड तै एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेष द्रव्य तै भई कृष्टिनि करि हीन सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि तातै ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि, तिस विषै असख्यातवां भाग मात्र घटता द्रव्य दीजिए है, तहा अधस्तन शीर्ष विशेष तै एक घाटि भई पूर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष अर मध्यम खण्ड तै एक खण्ड अर उभय द्रव्य विशेष तै भई सर्व कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टिनि का प्रमाण मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है। बहुरि ताके ऊपरि एक एक अध स्तन शीर्ष विशेष बधता एक एक उभय द्रव्य विशेष घटता एक एक मध्यम खण्ड समान रूप दीजिए है, यावत् अपूर्व अंतर कृष्टि न प्राप्त होइ। बहुरि ताके ऊपरि अपूर्व अतर कृष्टि विषै एक अतर कृष्टि सम्बन्धी समान खण्ड एक मध्यम खण्ड भई कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र उभय द्रव्य विशेष दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य अपनी नीचली कृष्टिनि विषै

---

१. 'सूक्ष्म' शब्द अ और ख प्रति मे मिलता है।

दीया द्रव्य तै असख्यातवा भाग मात्र अधिक है । बहुरि ताके ऊपरि पूर्व कृष्टि विषै एक घाटि भई पूर्व कृष्टि प्रमाण मात्र अध स्तन शीर्ष विशेष एक मध्यम खण्ड भई सर्व कृष्टिनि करि हीन सर्व कृष्टि प्रमाण मात्र उभय द्रव्य विशेष द्रव्य दीजिए है, सो यहु तिस अपूर्व अतर कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यातवां भाग मात्र घटता है । ताके ऊपरि पूर्व अपूर्व कृष्टिनि विषै अैसै ही अनुक्रम करि द्रव्य का देना जानना । यावत् प्रथम समय कृत सूक्ष्म कृष्टिनि की अंत कृष्टि होइ । बहुरि ताके ऊपरि लोभ की तृतीय बादर सग्रह कृष्टि की जघन्य कृष्टि, तिस विषै अत सूक्ष्म कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घटता दीजिए है । तहा च्यारि प्रकार सक्रमण द्रव्य विषै मध्यम खण्ड तै एक खण्ड उभय द्रव्य विशेष तै सर्व बादर कृष्टि मात्र विशेष ग्रहि दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि तृतीय संग्रह कृष्टि विषै च्यारि प्रकार सक्रमण द्रव्य देने का अर द्वितीय सग्रह कृष्टि विषै च्यारि प्रकार बध द्रव्य, तीन प्रकार घात द्रव्य देने का विधान द्वितीय सग्रह की उत्कृष्ट कृष्टि पर्यंत जैसै प्रथम समय विषै द्रव्य देने का विधान कह्या तैसै ही जानना । या प्रकार द्वितीयादि समयनि विषै द्रव्य देने का विधान जानना ।

पढमादिसु दिस्सकमं, सुहुमेसु अणंतभागहीणकमं ।
बादरकिट्टिपदेसो, असंखगुणिदं तदो हीणं ।।५७३।।

प्रथमादिषु दृश्यक्रमं, सूक्ष्मेष्वनंतभागहीनक्रमं ।
बादरकृष्टिप्रदेशः, असंख्यगुणितस्ततो हीनः ।।५७३।।

टीका – अब दीया द्रव्य वा पूर्व द्रव्य मिलै कृष्टिनि विषै देखने मे आया अैसा दृश्यमान द्रव्य, ताका क्रम कहिए है ।

प्रथमादि समयनि विषै जघन्य सूक्ष्म कृष्टि विषै दृश्यमान द्रव्य बहुत है । ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यंत सूक्ष्म कृष्टिनि विषै अनत गुणा घटता क्रम लीए दृश्यमान द्रव्य है । एक एक विशेष मात्र घटता है । बहुरि ताके ऊपरि तृतीय सग्रह की बादर जघन्य कृष्टि, ताका प्रवेश होतै तिस विषै दृश्यमान द्रव्य अत सूक्ष्म कृष्टि का दृश्यमान द्रव्य तै असंख्यात गुणा है । ताके ऊपरि द्वितीयादि द्वितीय सग्रह की अत बादर कृष्टि पर्यंत दृश्यमान द्रव्य अनत गुणा घटता क्रम लीए एक एक विशेष मात्र घटता है अैसा जानना ।

लोहस्सयतदियादो, सुहुमगदं बिदियदो दु तदियगदं ।
बिदियादो सुहुमगदं, दव्वं संखेज्जगुणिदकमं ।।५७४।।

लोभस्य च तृतीयतः, सूक्ष्मगतं द्वितीयस्तु तृतीयगतं ।
द्वितीयतः सूक्ष्मगतं, द्रव्यं संख्येयगुणितक्रमं ॥५७४॥

टीका – लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि तैं जो द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणम्या सो स्तोक है । तातैं लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि तैं जो द्रव्य लोभ की तृतीय सग्रह कृष्टि रूप परिणम्या, सो सख्यात गुणा है । तातैं लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि तैं जो द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणम्या, सो सख्यात गुणा है, जातैं लोभ की तृतीय सग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण तैं सूक्ष्म कृष्टि का प्रमाण सख्यात गुणा है ।

किट्टीवेदगपढमे, कोहस्स य बिदियदो दु तदियादो ।
माणस्स य पढमगदो, माणतियादो दु माणपढमगदो ॥५७५॥

मायतियादो लोभस्सादिगदो लोभपढमदो बिदियं ।
तदियं च गदा दव्वा, दसपदमहियकमा होंति ॥५७६॥

कृष्टिवेदकप्रथमे, क्रोधस्य च द्वितीयतस्तु तृतीयतः ।
मानस्य च प्रथमगतं, मानत्रयात् तु मानप्रथमगतः ॥५७५॥

मायात्रिकात् लोभस्यादिगता लोभप्रथमतो द्वितीयं ।
तृतीयं च गतानि द्रव्याणि, दशपदमधिकक्रमाणि भवंति ॥५७६॥

टीका – इहा सूक्ष्म कृष्टिनि विषै सक्रमण भया द्रव्य के प्रमाण ल्यावने का साधक अैसा बादर कृष्टि विषै सक्रमण भया प्रदेशनि का अल्प बहुत्व कहिए है ।

बादर कृष्टि वेदक काल का प्रथम समय विषै क्रोध की द्वितीय सग्रह कृष्टि तैं मान को प्रथम सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण भया द्रव्य स्तोक है । तातैं क्रोध की तृतीय सग्रह कृष्टि तैं मान की प्रथम सग्रह कृष्टि विषै सक्रमण भया द्रव्य, विशेष अधिक है । जातैं स्तोक अनुभाग युक्त तृतीय संग्रह विषै कृष्टिनि का प्रमाण है, सो बहु अनुभाग युक्त द्वितीय सग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण तैं विशेष अधिक है, तातैं सक्रमण द्रव्य भी विशेष अधिक जानना । इहा पात्र के अनुसारि अधिकपना जानना । पात्र के अनुसारि कहा ? द्वितीय सग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण तैं तृतीय सग्रह की कृष्टिनि का प्रमाण जैसैं अधिक कह्या, तैसैं ही संक्रमण द्रव्य भी अधिक कहना । सो इहा पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए एक भाग मात्र अधिक जानना । बहुरि

लोभस्स बिदियकिट्टिं, वेदयमाणस्स जाव पढमठिदी ।
आवलितियमवसेसं, आगच्छदि बिदियदो तदियं ।।५७८।।

लोभस्य द्वितीयकृष्टिं, वेद्यमानस्य यावत् प्रथमस्थितिः ।
आवलित्रिकमवशेषमागच्छति द्वितीयतस्तृतीयं ।।५७८।।

टीका – या प्रकार लोभ की द्वितीय संग्रह कृष्टि कौं वेदता जीवकैं, ताकी प्रथम स्थिति विषै यावत् तीन आवली अवशेष रहै तावत् द्वितीय संग्रह तै तृतीय संग्रह कौं द्रव्य का संक्रमण रूप होइ प्राप्त हो है । सो कहिए है—

लोभ की द्वितीय संग्रह की प्रथम स्थिति विषै विश्रमणावली, संक्रमणावली, उच्छिष्टावली ए तीन अवशेष रहै तावत् लोभ की द्वितीय संग्रह का द्रव्य, लोभ की तृतीय संग्रह विषै दीजिए है । जातै तृतीय संग्रह विषै संक्रमण भया जो द्रव्य, सो तहा विश्रमणावली पर्यंत तौ तहा विश्राम करि तिष्ठै, पीछै संक्रमणावली विषै सूक्ष्म कृष्टिरूप होइ संक्रमण करै तब उच्छिष्टावली मात्र प्रथम स्थिति अवशेष रहि जाय, तातै तीन आवली अवशेष रहै तावत् द्वितीय संग्रह का द्रव्य, तृतीय संग्रह विषै संक्रमण होना कह्या । बहुरि ताके ऊपरि द्वितीय संग्रह का द्रव्य अपकर्षण संक्रमण करि सूक्ष्म कृष्टि ही विषै संक्रमण करै है । यावत् दोय आवली अवशेप रहै तावत् असे जानना । बहुरि तहा आगाल प्रत्यागाल की व्युच्छित्ति करि बहुरि समय घाटि आवली मात्र निषेकनि कौं अधोगलनरूप क्रम तै भोगि समय अधिक आवली अवशेष राखै है ।

तत्तो सुहुमं गच्छदि, समयाहियआवलीयसेसाए ।
सव्वं तदियं सुहुमे, णव उच्छिट्ठं विहाय बिदियं च ।।५७९।।

ततः सूक्ष्मं गच्छति, समयाधिकावलीशेषायां ।
सर्वं तृतीयं सूक्ष्मे, नवकमुच्छिष्टं विहाय द्वितीयं च ।।५७९।।

टीका – बहुरि तहा द्वितीय संग्रह की प्रथम स्थिति विषै समय अधिक आवली अवशेष रहैं अनिवृत्तिकरण का अंत समय हो है । तहा लोभ की तृतीय संग्रह कृष्टि का तौ सर्व द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि कौं प्राप्त हो है । बहुरि लोभ की द्वितीय संग्रह का द्रव्य विषै समय अधिक उच्छिष्टावली मात्र निषेक अर समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध ए तौ बादर कृष्टिरूप रहै हैं । अन्य सर्व द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि

रूप द्रव्यार्थिक नय अपेक्षा तो इस समय विषै परिणमै है । बहुरि पर्यायार्थिक नय अपेक्षा अगले समय विषै उच्छिष्टावली मात्र निषेक अर दोय समय घाटि दोय आवली मात्र नवक समयप्रबद्ध बिना अन्य सर्व द्वितीय संग्रह का द्रव्य सूक्ष्म कृष्टि रूप परिणमै है, ऐसा जानना ।

लोभस्स तिघादीणं, ताहे अघादितियाण ठिदिबंधो ।
अंतो दु मुहुत्तस्स य, दिवसस्स य होदि वरिसस्स ॥५८०॥

लोभस्य त्रिघातिनां तत्राघातित्रयाणां स्थितिबंधः ।
अंतस्तु मुहूर्तस्य च, दिवसस्य च भवति वर्षस्य ॥५८०॥

टीका – तहां अनिवृत्तिकरण का अत समय विषै संज्वलन लोभ का जघन्य स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त मात्र है । इहां ही मोहबध की व्युच्छित्ति भई । बहुरि तीन घातियानि का एक दिन तै किछू घाटि अर तीन अघातियानि का एक बध तै किंचित् न्यून स्थिति बन्ध हो है ।

ताणं पुण ठिदिसंतं, कमेण अंतोमुहुत्तयं होइ ।
वस्साणं संखेज्जसहस्साणि असंखवस्साणि ॥५८१॥

तेषां पुनः स्थितिसत्त्वं, क्रमेणांतर्मुहूर्तकं भवति ।
वर्षाणां संख्येयसहस्राणि असंख्यवर्षाणि ॥५८१॥

टीका – तहा तिनका स्थिति सत्त्व क्रम करि लोभ का अंतर्मुहूर्त, तीन घातियानि का यथायोग्य संख्यात हजार वर्ष मात्र, तीन अघातियनि का यथायोग्य असख्यात वर्ष मात्र है ।

से काले सुहुमगुणं, पडिवज्जदि सुहुमकिट्टिठिदिखंडं ।
आणायदि तद्दव्वं, उक्कट्टिय कुणदि गुणसेढिं ॥५८२॥

स्वे काले सूक्ष्मगुण, प्रतिपद्यते सूक्ष्मकृष्टिस्थितिखंडं ।
आनयति तद्द्रव्यं, अपकृष्य करोति गुणश्रेणि ॥५८२॥

टीका – अनिवृत्तिकरण का अंत समय के अनतरि सूक्ष्मकृष्टिनि कौं वेदतौं संतौ अपने काल विषै सूक्ष्म सापराय गुणस्थान कौं प्राप्त हो है । इहां ताका प्रथम समय विषै लोभ की सूक्ष्मकृष्टिनि की अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति है, ताके संख्यातवे भाग

मात्र स्थिति काडक आयाम लाछित हो है। बहुरि मोह का कृष्टि कौ प्राप्त भया अनुभाग, ताका तौ अनुसमयापवर्तन अर ज्ञानावरणादिकनि का स्थितिकाडक घात वा अनुभाग काडक घात सो पूर्वोक्तवत् वर्ते है। बहुरि तिस समय विषै द्रव्य निक्षेपण का विधान कहिए है–

सूक्ष्मकृष्टि सबधी स्थिति विषै प्राप्त जो मोह का सर्वद्रव्य, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ तहा एक भाग अपकर्षण करि गुणश्रेणी करै है।

गुणसेढि अंतरट्ठिदि, बिदियट्ठिदि इदि हवंति पव्वतिया।
सुहुमगुणादो अहिया, अवट्ठिदुदयादि गुणसेढी ॥५८३॥

गुणश्रेणिरंतरस्थिति, द्वितीयस्थितिरिति भवंति पर्वत्रयाणि।
सूक्ष्मगुणतोऽधिका, अवस्थितोदयादि गुणश्रेणिः ॥५८३॥

टीका – गुणश्रेणी, अतर स्थिति, द्वितीय स्थिति ए तीन पर्व है। अपकर्षण कीया हुआ द्रव्य इन तीन विषै विभाग करि दीजिए है। इहा यावत् अपकर्षण कीया द्रव्य कौ असख्यात गुणा क्रम लीए दीजिए है, ताका नाम गुणश्रेणी है। बहुरि ताके ऊपरिवर्ती जिनि निषेकनि का पूर्वै अभाव कीया था, तिनका प्रमाणरूप अतर स्थिति है। ताके उपरिवर्ती अवशेष सर्वस्थिति, ताका नाम द्वितीय स्थिति है। तहा सूक्ष्म सापराय का जो काल तातै किछू विशेष करि अधिक है, तौ भी इहा सभवता ज्ञानावरणादिकनि का गुणश्रेणी आयाम तै अन्तर्मुहूर्त मात्र घटता असा इहा गुणश्रेणी है, सो यहु उदयादि अवस्थित है। उदयरूप जो वर्तमान समय, तातै लगाय यहु पाइए है। पूर्ववत् उदयावली भए पीछे नाही है, तातै उदयादि कहिए है। बहुरि अवस्थिति प्रमाण लीए है। पूर्व गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम विषै एक एक समय व्यतीत होतै गुणश्रेणी आयाम विषै घटता होता था, अब एक एक समय व्यतीत होतै ताके अनतरवर्ती अतरायाम का एक एक समय मिलि गुणश्रेणी आयाम का जेता का तेता रहै है, तातै अवस्थित कहिए।

उक्कट्टिदइगिभागं, गुणसेढीए असंखबहुभागं।
अंतरहिद बिदियठिदी, संखसलागा हि अवहरिया ॥५८४॥

अपकर्षितैकभागं, गुणश्रेण्यामसंख्यबहुभागम्।
अंतर्रहिते द्वितीयस्थितिः, संख्यशलाका हि अपहरिताः ॥५८४॥

गुणिय चउरादिखंडे, अंतरसयलट्ठिदिम्हि णिक्खिवदि ।
सेसबहुभागमावलिहीणे बिदियट्ठिदीए हु ॥५८५॥

गुणित्वा चतुरादिखंडे अंतरसकलस्थितौ निक्षिपति ।
शेषबहुभागमावलिहीने द्वितीयस्थितौ हि ॥५८५॥

टीका– अपकर्षण कीया जो द्रव्य ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग मात्र असख्यात का भाग दीए तहा एक भाग मात्र द्रव्य कौ गुणश्रेणी आयाम विषै दीजिए है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौ अंतर स्थिति का भाग द्वितीय स्थिति कौ दीए जो सख्यात प्रमाण लीएं एक शलाका का प्रमाण आवै, ताका भाग दीजिए तहा एक भाग कौ सदृष्टि अपेक्षा च्यारि करि गुणिय, इतना द्रव्य अतर स्थिति विषै दीजिए है । बहुरि अवशेष सर्व द्रव्य सो अत विषै अतिस्थापनावली करि हीन जो द्वितीय स्थिति, तीहि विषै दीजिए है । सोई दिखाइए है–

अतर स्थिति प्रमाण सर्व तै स्तोक सो सदृष्टि करि चौगुणा अतर्मुहूर्त मात्र बहुरि तातै स्थितिकाडकायाम का प्रमाण सख्यात गुणा, सो सदृष्टि करि सोलह गुणा अतर्मुहूर्त मात्र बहुरि तातै स्थिति काडक के नीचै जो अवशेष स्थिति रहै, ताका प्रमाण सख्यात गुणा, सो सदृष्टि करि चौसठि गुणा अतर्मुहूर्त मात्र स्थिति काडकायाम अर अवशेष स्थिति जोडे सर्व द्वितीय स्थिति का प्रमाण होइ, सो असी गुणा अतर्मुहूर्त मात्र यहाँ अतर स्थिति काडकायाम का भाग द्वितीय स्थिति आयाम कौ दीए सदृष्टि करि बीस पाए, सो ऐसा सख्यात प्रमाण लीए जो शलाका, ताका भाग असख्यात बहुभाग मात्र अपकर्षण द्रव्य कौ दीएं, तहा एक खड कौ अतर स्थिति विषै देना कहिए, तौ अतर स्थिति का अत निषेक विषै दीया द्रव्य तै द्वितीय स्थिति विषै दीया द्रव्य किचित् ऊन होइ, अर दोय खण्ड देना कहिए तौ किंचित् न्यून त्रिभाग मात्र होइ । ऐसै क्रम करि यथायोग्य सख्यात खड ग्रहि अतर स्थिति विषै दीजिए है । सो यहु अपकर्षण कीया सर्वद्रव्य के संख्यातवे भाग मात्र होइ । सदृष्टि करि तिस संख्यात बहुभाग मात्र द्रव्य कौ बीस का भाग देइ च्यारि करि गुणे अतर स्थिति विषै दीया द्रव्य का प्रमाण आवै है । बहुरि तिस असख्यात बहुभाग मात्र द्रव्य विषै इतना घटाए जो अवशेष रहा, सो द्वितीय स्थिति विषै अत विषै अतिस्थापनावली छोडि सर्वत्र दीजिए है । संदृष्टि करि तिस असख्यात बहुभाग मात्र द्रव्य कौ बीस का भाग देइ, तहां सोलह भाग मात्र द्रव्य द्वितीय स्थिति विषै दीजिए है ।

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु ।
हीणकमं संखेज्जगुणूणं हीणक्कमं तत्तो ।।५८६।।

अंतरप्रथमस्थित्यंतं, असंख्यगुणितक्रमेण दीयते हि ।
हीनक्रमं संख्येयगुणोनं हीनक्रमं ततः ।।५८६।।

टीका – अतरायाम की प्रथम स्थिति जो प्रथम निषेक, तहां पर्यंत तौ असस्यात गुणा क्रम लीएं द्रव्य दीजिए है । ताके ऊपरि हीन क्रम लीए संख्यात गुणा घटता बहुरि हीन क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । सोई कहिए—

गुणश्रेणी आयाम का प्रथम निषेक विषै दीया द्रव्य की एक शलाका तातै द्वितीय निषेक विषै दीया द्रव्य की शलाका पल्य की असख्यातवा भाग गुणी है । अैसे क्रम तै गुणकार लीए अत निषेक पर्यंत जेती शलाका होइ, तिनका जोड दीए जो प्रमाण होइ, ताका भाग गुणश्रेणी विषै देने योग्य पूर्वोक्त द्रव्य कौ देइ, तहां एक भाग कौ अपनी अपनी शलाका प्रमाण करि गुणै प्रथमादि निषेकनि विषै द्रव्य देने का प्रमाण आवै है । अक सदृष्टि करि जैसै एक तै लगाय चौगुणी चौगुणी शलाका च्यारि निषेकनि विषै स्थापि १।४।१६।६४ । जोडै पिचासी होइ । ताका भाग द्रव्य कौ देइ, एक, च्यारि आदि करि गुणै प्रथमादि निषेकनि विषै दीया द्रव्य का प्रमाण आवै है । इहा गुणकार विषै जोड़ देने का प्रमाण करणसूत्र यह जानना—

पदमितगुणहतिगुणितप्रभेदः स्याद्गुणधनं तदा तदा द्व्यूनं ।
एकोनगुणविभक्तं गुणसंकलितं विजानीयात् ।।१।।

गच्छ मात्र गुणाकारनि कौ परस्पर गुणै गुणधन होइ । तहा प्रथम स्थान घटाइ अवशेष कौं एक घाटि गुणकार का भाग दीए गुणकार विषै सकलन धन आवै है । जैसै इहा सदृष्टि विषै गच्छ च्यारि, गुणकार च्यारि सो च्यारि जायगा च्यारि च्यारि माडि परस्पर गुणै दोय सै छप्पन होइ, तामै आदि एक घटाइ अवशेष कौ एक घाटि गुणकार तीन, ताका भाग दीए जोड पिच्यासी हो है । सो अैसै वर्तमान उदयरूप गुणश्रेणी का प्रथम निषेक तै लगाय गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत दीजिए है । गुणश्रेणी का अत का निषेक कौं गुणश्रेणी शीर्ष कहिए है । सो सूक्ष्मसापराय का प्रथम समय विषै तो इहा कह्या गुणश्रेणी आयाम, ताका जो अन्त निषेक सोई गुणश्रेणी शीर्ष है। बहुरि द्वितीयादि समयनि विषै एक एक समय व्यतीत होतै जो अतरायाम का प्रथ-

मादि निषेक गुणश्रेणी विषै (आणि) मिल्या, सो गुणश्रेणी शीर्ष है। जातै इहां अवस्थित गुणश्रेणी आयाम है। बहुरि गुणश्रेणी के ऊपरिवर्ती जो अंतरायाम के निषेक, तिनि विषैं द्रव्य देने का विधान कहिए है–

अन्तरायाम विषै देने योग्य जो पूर्वोक्त द्रव्य, ताकौ अन्तरायाम मात्र गच्छ का भाग दीए मध्यम धन होइ। तीहि विषै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडें, जो होइ तितना द्रव्य अन्तरायाम का प्रथम निषेक विषै दीजिए है, सो यहु द्रव्य गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा है। तातैं सूत्र विषैं अतरायाम का प्रथम निषेक पर्यंत असख्यात गुणा देय द्रव्य कह्या। बहुरि ताके ऊपरि अन्तरायाम के द्वितीयादि निषेकनि विषै एक एक विशेष करि घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है, सो यावत् अन्तरायाम का अत निषेक होइ तावत् असा क्रम जानना।

अब द्वितीय स्थिति निषेकनि विषै द्रव्य देने का विधान कहिए है—

द्वितीय स्थिति विषै देने योग्य जो पूर्वोक्त द्रव्य, ताकौ आवली रहित द्वितीय स्थिति का प्रमाण मात्र जो गच्छ, ताका भाग दीए मध्य धन होइ। यामै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडै जो होइ, तितना द्रव्य द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषै दीजिए है। सो यहु दीया द्रव्य अतरायाम का अत निषेक विषैं दीया द्रव्य तैं सख्यात गुणा घटता है। तातैं सूत्र विषैं इहा दीया द्रव्य सख्यात गुणा घटता कह्या। बहुरि ताके उपरि द्वितीय स्थिति के द्वितीयादि निषेकनि विषै एक-एक विशेष घटता क्रम करि द्रव्य दीजिए है। असै देयद्रव्य का विधान कह्या।

अंतरपढमठिदित्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु।
हीणकमेण असंखेज्जेण, गुणं तो विहीणकमं ॥५८७॥

अंतरप्रथमस्थित्यंतं च, असंख्यगुणितक्रमेण दृश्यते हि।
हीनक्रमेण असंख्येयेन, गुणमतो विहीनक्रमम् ॥५८७॥

टीका – पूर्व द्रव्य वा दीया द्रव्य मिलि जो दृश्यमान होइ, ताका विधान कहिए है। वर्तमान समय सबंधी निषेक विषै दृश्यमान द्रव्य स्तोक है, तातै अंतरायाम का प्रथम निषेक पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए है। बहुरि ताके ऊपरि अंतरायाम का अंत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए है। इहां पर्यंत देय द्रव्य का जैसैं क्रम कह्या तैसैं ही दृश्यमान द्रव्य का भी क्रम जानना। बहुरि तातै ताके उपरि द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक का दृश्यमान द्रव्य असख्यात गुणा है। बहुरि ताके

ऊपरि ताका अत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए दृश्यमान द्रव्य है । याप्रकार सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय तै लगाय प्रथम स्थिति काडक का घात यावत् न होइ निवरै तावत् अैसा क्रम जानना । विशेष इतना अपकर्षण कीया द्रव्य का प्रमाण समय समय असख्यात गुणा जानना ।

तहा प्रथम काडक की अत फालि के द्रव्य का प्रमाण ल्यावने निमित्त कहिए है—

कंडयगुणचरिमठिदी, सविसेसा चरिमफालिया तस्स ।
संखेज्जभागमंतरठिदिम्हि सव्वे तु बहुभागं ॥५८८॥

कांडकगुणचरमस्थितिः, सविशेषा चरमस्फालिका तस्य ।
संख्येयभागमंतरस्थितौ सर्वायां तु बहुभागम् ॥५८८॥

टीका – काडकायाम करि गुणित जो विशेष सहित अतस्थिति, तीहिं प्रमाण अत फालि का द्रव्य है । ताका सख्यातवा भाग तौ अंतरस्थिति विषै, बहुभाग सर्वस्थिति विषै दीजिए है, सोइ कहिए है—

द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक विषै एक घाटि द्वितीय स्थिति आयाम मात्र विशेष घटाए, ताका अत निषेक का द्रव्य होइ तिसतै लगाय नीचे के काडक आयाम मात्र निषेकनि का द्रव्य अत फालि विषै ग्रहण करिए है । तातै तिस अत निषेक के द्रव्य कौ जो काडक आयाम, सोई फालि का आयाम ताकरि गुणे तहा नीचले निषेकनि विषै जे विशेष अधिक पाइए हैं, तिनकौ अधिक कीए अत फालि के सर्व द्रव्य का प्रमाण हो है, यामे नीचले निषेकनि का अपकर्षण कीया जो द्रव्य, ताकौ जोडे जो द्रव्य होइ, ताकौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग देइ एक भाग कौं गुणश्रेणी आयाम विषै दीए पीछै अवशेष जो द्रव्य रह्या, ताके देने का विधान कहिए है–

अतरायाम का भाग फालि के आयाम कौ दीए जो सख्यात मात्र प्रमाण होइ, ताका भाग तिस अवशेष द्रव्य कौ दीए जो एक खड होइ, तामै पूर्वे जो अतरस्थिति विषै द्रव्य दीया था, ताकौ घटाय अवशेष को अगीकार करि, बहुरि इतना द्रव्य घटाए जो अवशेष द्रव्य रह्या, ताकौ काडक के नीचै अवशेष स्थिति जो पाइए, ताकौ अत-रायाम का भाग दीए जो सख्यात का प्रमाण आवै, तामै एक अधिक करि, ताका भाग दीएं जो एक खड का प्रमाण होइ, ताकौ पूर्वे अगीकार किया द्रव्य विषै जोडे जेता होइ तितना द्रव्य अतरायाम विषै पूर्वोक्त प्रकार गोपुच्छ आकार करि चय

घटता क्रम लीएं देना। बहुरि तिस बहुभाग मात्र द्रव्य विषै इतना द्रव्य घटाएं जो अवशेष रह्या, ताकौ द्वितीय स्थिति विषै पूर्वोक्त प्रकार गोपुच्छ आकार करि चय घटता क्रम लीए देना। तहा अतरस्थिति का अत निषेक विषै दीया द्रव्य तै द्वितीय स्थिति का आदि निषेक विषै दीया द्रव्य सख्यात गुणा घटता जानना। ऐसै ही अत फालि का द्रव्य का संख्यातवा भाग अतरायाम विषै बहुभाग द्वितीय स्थिति विषै देने का विधान जानना। इहां संदृष्टि विषै सख्यात की सहनानी च्यारि जानि कथन समझना। इहा इतना जानना—

जो काडक विषै स्थिति घटाइए, तिसके द्रव्य कौ नीचले निषेकनि विषै देने के अर्थि समय समय जेता ग्रहण करिए सो तौ फालि द्रव्य कहिए। अर गुणश्रेणी आदि के अर्थि जो सर्व स्थिति के द्रव्य को अपकर्षण करि ग्रहिए, सो अपकृष्टि द्रव्य कहिए है। तहां काडक की प्रथमादि फालि पतन समय विषै तौ अपकृष्टि द्रव्य बहुत है। फालि द्रव्य स्तोक है, तातै अपकृष्टि द्रव्य ही का मुख्यपनै देने का विधान कह्या, बहुरि अंत फालि विषै फालि द्रव्य बहुत है। अपकृष्टि द्रव्य स्तोक है, तातै फालि द्रव्य विषै अवशेष रही स्थिति का अपकृष्टि द्रव्य कौ साधिक करि द्रव्य देने का विधान कह्या है। या प्रकार प्रथम काडक काल सपूर्ण होतै अतर पूरण भया। जिनि बीचि के निषेकनि का अभाव भया था, तिनका सद्भाव भया तब अतर पूरण होने करि गुणश्रेणी आयाम बिना ऊपरि के सर्व निषेकनि विषै एक गोपुच्छ भया, ऐसै सूक्ष्म सापराय काल का प्रथम समय तै लगाय प्रथम काडक की अत फालि पतन पर्यंत तौ तीन स्थाननि विषै द्रव्य देने का विधान समान रूप कह्या।

अब द्वितीयादि काडकनि विषै देयद्रव्य दृश्यद्रव्य का विधान कहिए है—

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु।
हीणं तु मोहबिदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति ॥५८६॥

अंतरप्रथमस्थितिरिति च, असंख्यगुणितक्रमेण दीयते हि।
हीनं तु मोहद्वितीयस्थितिकांडकतो द्विघात इति ॥५८६॥

टीका – मोह की द्वितीय स्थिति काडकघात तै लगाय द्विचरम कांडकघात पर्यंत काडक करि गृहीत स्थिति तै नीचै अर उदयावली तै उपरि जे निषेक, तिनिका द्रव्य कौ अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि, ताकौ पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ, तहा एक भाग कौ पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणी

आयाम विषै प्रथम उदयनि निषेक विषै तौ स्तोक अर द्वितीयादि निषेकनि विषै गुण-श्रेणी शीर्ष पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए दीजिए है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौ गुणश्रेणी तै ऊपरि की अतर्मुहूर्त मात्र स्थिति मात्र जो गच्छ ताका भाग देइ तहा एक खड विषै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष मिलाए जो द्रव्य होइ, तितना गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपरि जो निषेक, तीहि विषै दीजिए है । सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा है । असै अतर का प्रथम निषेक पर्यंत तौ असख्यात गुणा क्रम करि द्रव्य दीजिए है । बहुरि ताके ऊपरि एक एक विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । सो यावत् अतिस्थापनावली प्राप्त होइ तावत् असा क्रम जानना । यहा प्रथम स्थिति काडक काल का अत समय विषै ही अतर है, सो पूरण भया, तातै अतरायाम विषै जुदा द्रव्य देने का विधान न कह्या ।

बहुरि सर्वस्थिति काडकनि विषै अत फालि पर्यंत जो अपकृष्ट द्रव्य है, सो तौ सकल द्रव्य के असख्यातवे भाग मात्र जानना । बहुरि अत फालि का पतन समय विषै काडक स्थिति तै आयाम जो फालि द्रव्य है, सो सर्व द्रव्य के संख्यातवे भाग मात्र जानना ।

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु ।
हीणं तु मोहबिदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति ।।५९०।।

अंतरप्रथमस्थितिरिति च, असंख्यगुणितक्रमेण दृश्यते हि ।
हीनं तु मोहद्वितीयस्थितिकांडकतो द्विघातांतम् ।।५९०।।

टीका – मोह का द्वितीय स्थिति काडक घात तै लगाय द्विचरम काडक घात पर्यंत दृश्यमान द्रव्य गुणश्रेणी का प्रथम निषेक विषै स्तोक है, तातै गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपरि जो अतरायाम का प्रथम निषेक तहा पर्यंत असख्यात गुणा क्रम लीए है । ताके ऊपरि अत निषेक पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए दृश्यमान द्रव्य है, जातै प्रथम काडक की अत फालि का पतन समय विषै गुणश्रेणी तै ऊपरि सर्व स्थिति का एक गोपुच्छ हो है ।

पढमगुणसेढिसीसं, पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिमसमये दिस्सं, विसेसअहियं हवे सीसे[1] ।।५९१।।

१–प फूलचदजी कृत अर्थ इस प्रकार है–इसप्रकार प्रथम गुणश्रेणी शीर्ष तक जानना चाहिए । गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपर पूर्व के द्रव्य से उपरिम समय मे असख्यात गुणा दृश्यद्रव्य है । आगें मोहनीय के प्राप्त होने तक विशेष हीन प्रदेश पु ज दिखाई देता है ।

प्रथमगुणश्रेणिशीर्षं पूर्वस्मात् असंख्यसंगुणितं ।
उपरिमसमये दृश्यं, विशेषाधिकं भवेत् शीर्षे ।।५९१।।

टीका – प्रथम समय विषै जो गुणश्रेणी शीर्ष है, सोई गाथा का अर्थ कीजायगा चाहिए ।

सुहुमद्धादो अहिया, गुणसेढी अंतरं तु तत्तो दु ।
पढमे खंडं पढमे संतो मोहस्स संखगुणिदकमा ।।५९२।।

सूक्ष्माद्धातः अधिका, गुणश्रेणि अंतरं तु ततस्तु ।
प्रथमं खंड प्रथमे, सत्त्वं मोहस्य संख्यगुणितक्रमं ।।५९२।।

टीका – अंतर्मुहूर्त मात्र जो सूक्ष्मसापराय का काल, तातै ताही का असख्यातवां भाग करि अधिक सूक्ष्म सापराय का प्रथम समय विषै मोह की गुणश्रेणी का आयाम है । तातै अतरायाम सख्यात गुणा है । तातै सूक्ष्म सापराय के मोह का प्रथम स्थितिकांडक आयाम सख्यात गुणा है । तातै सूक्ष्मसापराय का प्रथम समय विषै मोह का स्थितिसत्त्व सख्यात गुणा है ।

एदेणप्पाबहुगविधाणेण बिदीयखंडयादीसु ।
गुणसेढिमुज्झियेया, गोपुच्छा होदि सुहुमम्हि ।।५९३।।

एतेनाल्पबहुकविधानेन द्वितीयकांडकादिषु ।
गुणश्रेणिमुज्झित्वा, एकं गोपुच्छं भवति सूक्ष्मे ।।५९३।।

टीका – इस अल्प-बहुत्व विधान करि सूक्ष्मसापराय विषै द्वितीय आदि स्थिति काडकनि का काल विषै गुणश्रेणी कौ छोडि, ताके उपरिवर्ती सर्व स्थिति का एक गोपुच्छ हो है । कैसे ? सो कहिए है—

इहा अंतरायाम तै प्रथम स्थिति काडकायाम सख्यात गुणा कह्या । तातै प्रथम स्थिति काडक की जो अत फालि, ताका द्रव्य विषै अतरायाम विषै देने योग्य गोपुच्छ रूप द्रव्य कौ अतरायाम विषै देइ द्वितीय स्थिति कै अर इस अतरायाम कै एक गोपुच्छ कीया जो प्रथम स्थिति काडक आयाम तै अतरायाम बहुत होता तो तहा अंतरायाम पूर्ण न होता तब अतर स्थिति कै अर द्वितीय स्थिति कै एक गोपुच्छ न होता । सो इहा अतरायाम तै प्रथम स्थिति काडकायाम बहुत कह्या, तातै अतरायाम कै अर द्वितीय स्थिति के एक गोपुच्छ प्रथम स्थितिकांडक की अत फालि का पतन समय विषै ही भया । जहा विशेष घटता क्रम लीए होइ, तहां गोपुच्छ संज्ञा है ।

सुहुमाणं किट्टीणं, हेट्ठा अणुदिण्णगा हु थोवाओ ।
उवरिं तु विसेसहिया, मज्झे उदया असंखगुणा ॥५६४॥

सूक्ष्माणां कृष्टीनामधस्तना अनुदीर्णका हि स्तोकाः ।
ऊपरि तु विशेषाधिका, मध्ये उदया असख्यगुणाः ॥५६४॥

टीका – सूक्ष्मसापराय विषै जे सूक्ष्म कृष्टि है, तिनि विषै जे जघन्य कृष्टि आदि नीचै की कृष्टि उदय रूप न हो है। तिनिका प्रमाण स्तोक है। बहुरि यातै याही कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए तहा एक भाग मात्र करि अधिक जे अत कृष्टि तै लगाय ऊपरली कृष्टि उदय रूप न होइ, तिनिका प्रमाण है। बहुरि यातै पल्य का असख्यातवा भाग गुणा जे बीचि का कृष्टि उदय रूप हो है, तिनिका प्रमाण है। इहा सर्व सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण कौ पल्य का असख्यातवा भाग का भाग दीए बहुभाग मात्र बीचि की उदय कृष्टिनि का प्रमाण है। एक भाग कौ अक सदृष्टि अपेक्षा पाच का भाग दीए दोय भाग मात्र नीचली, तीन भाग मात्र ऊपरली अनुदय कृष्टिनि का प्रमाण है। यहा जे अनुदयरूप कृष्टि कही, ते बीचि की कृष्टि रूप परिणमि उदय हो है, असा जानना।

सुहुमे संखसहस्से, खंडे तीदे वसाणखंडेण ।
आगायदि गुणसेढी, आगादो संखभागे च ॥५६५॥

सूक्ष्मे संख्यसहस्रे, खंडेऽतीतेऽवसानखंडेन ।
आगाप्यते गुणश्रेणी, अग्रतः सख्यभागे च ॥५९५॥

टीका – पूर्वोक्त क्रम करि सूक्ष्मसापराय विषै ताका काल का सख्यात बहु-भाग गए सख्यातवा भाग अवशेष रहै सख्यात हजार स्थिति काडक व्यतीत होतै अवसान खड जो अत का स्थिति काडक, ताकरि पूर्व गुणश्रेणी आयाम के सख्यातवे भाग मात्र आयाम विषै गुणश्रेणी करै है। इहा तै पहलै सर्व सूक्ष्मसापराय काल तै साधिक अवस्थित गुणश्रेणी आयाम था, अब जेता अवशेष सूक्ष्म सापराय का काल रह्या, तितना गुणश्रेणी आयाम जानना।

एत्तो सुहुमंतो त्ति य, दिज्जस्स य दिस्समाणगस्स कमो ।
सम्मत्तचरिमखंडे, तक्कदिकज्जे वि उत्तं च ॥५६६॥

इतः सूक्ष्मांत इति च, देयस्य च दृश्यमानस्य क्रमः ।
सम्यक्त्वचरमखंडे, तत्कृतकार्येऽपि उक्तमिव ।।५६६।।

टीका – इहा तै लगाय सूक्ष्म सांपराय का अत पर्यंत देयद्रव्य अर दृश्यमान द्रव्य का क्रम है । जैसैं क्षायिक सम्यक्त्व विधान विषै सम्यक्त्व मोहनीय का अंत स्थिति काडक विषै वा ताका कृतकृत्यपना विषै कह्या था तैसें ही जानना । सो कहिए है—

इहां सर्व मोह की स्थिति विषै सूक्ष्म सांपराय का जितना काल अवशेष रह्या तितनी स्थिति बिना अवशेष सर्व स्थिति का घात अत काडक करि कीजिए है । तहा इस काडक की स्थिति के निषेकनि का द्रव्य विषै जो द्रव्य अत काडकोत्करण काल का प्रथम समय विषै ग्रह्या, ताकौ प्रथम फालि कहिए है । ताके देने का विधान कहिए है —

प्रथम फालि द्रव्य कौ अपकर्षण करि ताकौ पल्य का असंख्यातवां भाग का भाग देइ तहां बहुभाग मात्र द्रव्य कौ इहां सम्बन्धी सूक्ष्मसापराय काल का अत समय पर्यंत तौ गुणश्रेणी आयामरूप प्रथम पर्व, तिस विषै दीजिए है । तहां तिसके उदय रूप प्रथम निषेक विषै स्तोक, तातै द्वितीयादि निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । तहा सर्व गुणकार शलाका के जोड का भाग तिस द्रव्य कौ देइ अपनी अपनी गुणकार शलाका करि गुणैं निषेकनि विषै द्रव्य देने का प्रमाण आवै है । इहां सूक्ष्मसांपराय का जो अन्त समय, ताका नाम गुणश्रेणी शीर्ष है । बहुरि अवशेष एक भाग मात्र जो द्रव्य, ताकौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग देइ तहा बहुभाग मात्र द्रव्य कौ तिस गुणश्रेणी शीर्ष तै उपरि पहलै जो गुणश्रेणी आयाम था ताका शीर्ष पर्यंत जो द्वितीय पर्व, तिस विषै दीजिए है । तहा तिस द्रव्य कौ द्वितीय पर्व मात्र गच्छ का भाग देइ तहा एक भाग विषै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडै गुणश्रेणी शीर्ष के अनतरि जो निषेक, तीहि विषै दीया द्रव्य का प्रमाण आवै है । सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घाटि है, ताके ऊपरि ताके द्वितीयादि निषेकनि विषै चय घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । बहुरि अवशेष एक भाग मात्र द्रव्य रह्या, ताकौ द्वितीय पर्व के ऊपरि जो सर्वस्थिति, ताका अत विषै अतिस्थापनावली छोडि सर्व निषेकरूप जो तृतीय पर्व, तिस विषै दीजिए है । तहा तिस द्रव्य कौ तृतीय पर्व मात्र गच्छ का भाग देइ तहां एक भाग विषै एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण मात्र विशेष जोडै जो होइ तितना द्रव्य पुरा-

तन गुणश्रेणी का शीर्ष के अनतरिवर्ती जो निषेक, तिस विषै दीजिए है। सो यहु पुरातन गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा घाटि है। बहुरि ताकै ऊपरि चय घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। ऐसै अत काडक की प्रथम फालि पतन समय विषै द्रव्य देने का विधान कह्या। याही प्रकार अत काडक की द्विचरम फालि पतन पर्यंत द्रव्य देने का विधान जानना। बहुरि अत काडक की अत फालि के द्रव्य का विधान कहिए है–

किंचिदून द्वयर्ध गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध मात्र अत फालि का द्रव्य है। ताकौ असख्यात गुणा पल्य का वर्गमूल मात्र पल्य का असंख्यातवा भाग का भाग देइ तहा एक भाग मात्र द्रव्य कौ वर्तमान उदयरूप जो समय, तातै लगाय सूक्ष्मसापराय का द्विचरम समय पर्यंत जो प्रथम पर्व, तिस विषै दीजिए है। तहा प्रथम निषेक (पर्व)[१] विषै स्तोक, द्वितीयादि निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है। तहां सर्व गुणकार शलाकानि के जोड का भाग द्रव्य कौ देइ अपनी अपनी गुणकार शलाका करि गुणें निषेकनि विषै देने योग्य द्रव्य का प्रमाण आवै है। बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौ सूक्ष्मसापराय का अत समय सबधी निषेकरूप जो द्वितीय पर्व, तिस विषै दीजिए है। यहु द्विचरम समय विषै दीया द्रव्य तै असख्यात पल्य वर्गमूल करि गुणित जानना। ऐसै देयद्रव्य का विधान कह्या। दृश्यमान द्रव्य का विधान भी यथासभव जानना।

उक्किण्णे अवसाणे, खंडे मोहस्स णत्थि ठिदिघादो।
ठिदिसत्तं मोहस्स य, सुहुमद्धासेसपरिमाणं ॥५९७॥

उत्कीर्णेऽवसाने, खंडे मोहस्य नास्ति स्थितिघातः।
स्थितिसत्त्व मोहस्य च, सूक्ष्माद्धाशेषपरिमाणं ॥५९७॥

टीका – या प्रकार मोहराजा का मस्तक समान जो लोभ का अत कांडक, ताका घात करते सतै अब मोह का स्थिति घात न हो है। अब सूक्ष्मसापराय का जेता काल अवशेष रह्या तितना ही मोह का स्थित सत्त्व रह्या है, सो अनुसमयापवर्तमान सूक्ष्म कृष्टि रूप अनुभाग कौ प्राप्त हो है, ताके एक एक निषेक कौ एक एक समय विषै भोगवता सता सूक्ष्मसापराय का अत समय कौं प्राप्त हो है।

१–'पर्व' इतना ध प्रति मे मिलता है।

णामदुगे वेयणीये, अडबारमुहुत्तयं तिघादीणं ।
अंतोमुहुत्तमेत्तं, ठिदिबंधो चरिम सुहमम्हि ॥५६८॥

नामद्विके वेदनीये अष्टद्वादशमुहूर्तकं त्रिघातिनाम् ।
अंतर्मुहूर्तमात्रं स्थितिबंधः चरमे सूक्ष्मे ॥५९८॥

टीका – तहां सूक्ष्मसांपराय का अंत समय विषै नाम गोत्र का आठ मुहूर्त, वेदनीय का बारह मुहूर्त, तीन घातियानि का अंतर्मुहूर्त मात्र जघन्य स्थिति बंध हो है ।

तिण्हं घादीणं, ठिदिसंतो अंतोमुहुत्तमेत्तं तु ।
तिण्हमघादीणं, ठिदिसंतमसंखेज्जवस्साणि ॥५६६॥

त्रयाणां घातिनां, स्थितिसत्त्वमंतर्मुहूर्तमात्रं तु ।
त्रयाणामघातिनां, स्थितिसत्त्वमसंख्येयवर्षाः ॥५९९॥

टीका – तहां हा तीन घातियानि का स्थिति सत्त्व अंतर्मुहूर्त मात्र है । सो क्षीणकषाय के काल तैं संख्यात गुणा है । बहुरि तीन अघातियानि का स्थिति सत्त्व असंख्यात वर्ष मात्र है । मोह का स्थिति सत्त्व क्षय कौं सन्मुख है । द्रव्यार्थिक नय करि इस समय विषैं विद्यमान है । तथापि नष्ट ही भया जानना । असैं क्षय कौं सन्मुख जो लोभ की संग्रह कृष्टि, ताकौं अनुभवे है । असा पाचवा सूक्ष्म सापराय चारित्र करि संयुक्त सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्ती जीव जानना ।

असैं कृष्टिवेदना अधिकार समाप्त भया ।

से काले सो खीणकसाओ, ठिदिरसगबंधपरिहीणो ।
सम्मत्तडवस्सं वा, गुणसेढी दिज्ज दिस्सं च ॥६००॥

स्वे काले स क्षीणकषायः, स्थितिरसगबंधपरिहीणः ।
सम्यक्त्वाष्टवर्षमिव, गुणश्रेणी देयं दृश्यं च ॥६००॥

टीका – समस्त चारित्र मोह का क्षय के अनंतरि अपने काल विषै सो जीव क्षीण भए हैं द्रव्य भावरूप समस्त कषाय जाकै असा क्षीणकषाय हो है, सो स्थिति अनुभाग बध रहित है । योग निमित्त तैं प्रकृति प्रदेश बंध याकै साता वेदनीय का सभवे है, सो ईर्यापथ बध है । प्रथम समय विषै बधि अनतर समय विषै निर्जर है ।

बहुरि जैसै क्षायिक सम्यक्त्व का विधान विषै सम्यक्त्व मोहनी की आठ वर्ष की स्थिति अवशेष रहै कथन कीया था, तैसे इहां गुणश्रेणी वा देयद्रव्य वा दृश्यमान द्रव्य जानना । सो कहिए है–

छह कर्मनि का प्रदेश समूह कौ अपकर्षण करि ताकौ पल्य का असख्यातवां भाग का भाग देइ तहा एक भाग कौ गुणश्रेणी आयाम विषै दीजिए है। ताका प्रमाण क्षीणकषाय के काल तै ताही का सख्यातवा भाग मात्र अधिक है । तहा पूर्वोक्त क्रम करि उदय रूप प्रथम निषेक विषै स्तोक, द्वितीयादि गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत निषेकनि विषैं असख्यात गुणा क्रम लीए दीजिए है । बहुरि अवशेष बहुभाग मात्र द्रव्य कौं गुणश्रेणी शीर्ष के ऊपरि जो अतिस्थापनावली रहित अवशेष स्थिति, तीहि प्रमाण इहा गच्छ । ताकौ एक घाटि गच्छ का आधा प्रमाण करि हीन जो दो गुणहानि करि गुणी, ताका भाग दीए, तहा एक खड कौ दो गुणहानि करि गुणे जो होइ तितना द्रव्य गुणश्रेणी शीर्ष के अनतरवर्ती निषेक विषै दीजिए है, सो यहु गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा है । बहुरि ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है, सो यावत् अतिस्थापनावली न प्राप्त होइ तावत् ऐसा क्रम जानना । बहुरि सूक्ष्मसापराय का अत समय विषै अपकर्षण कीया द्रव्य तै इहां अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा जानना, जातै सकषाय परिणाम सबंधी गुणश्रेणी निर्जरा तै निष्कषाय गुणश्रेणी निर्जरा कै असख्यात गुणापना सभवै है । बहुरि इहा क्षीणकषाय के प्रथमादि समयनि विषै अपकर्षण किया द्रव्य का प्रमाण समानरूप है, जातै इहा विशुद्धता समान पाइए है । बहुरि इहा दीयमान वा दृश्यमान द्रव्य का अन्य विशेष निरूपण जैसैं सम्यक्त्व मोहनी की क्षपणा विषै कीया था, तैसे इहां तीन घातिया कर्मनि का जानना ।

इहां ऐसा जानना–क्षीणकषाय का प्रथम समय तै लगाय अंतर्मुहूर्त पर्यंत तौ पहला पृथक्त्व-वितर्क वीचार नामा शुक्लध्यान वर्तै है । अर क्षीणकषाय काल का सख्यातवा भाग अवशेष रहैं एकत्ववितर्क अविचार दूसरा शुक्लध्यान वर्तै है ।

घादीण मुहुत्तंतं, अघादियाणं असंखगा भागा ।
ठिदिखंडं रसखंडो, अणंतभागा अपसत्थाणं ॥६०१॥

घातिनां मुहूर्तांतमघातिकानामसंख्यका भागाः ।
स्थितिखंडं रसखंडं, अनंतभागा अप्रशस्तानाम् ॥६०१॥

टीका – इहा क्षीणकषाय विषै तीन घातियानि का तौ अतर्मुहूर्त मात्र अर तीन अघातियानि का पूर्व सत्त्व का असख्यात बहुभाग मात्र स्थितिकांडक आयाम है । बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनि का पूर्व अनुभाग कौ अनत का भाग दीएं तहां बहुभाग मात्र अनुभागकाडक आयाम है ।

बहुठिदिखंडे तीदे, संखा भागा गदा तदद्धाए ।
चरिमं खंडं गिण्हदि, लोभं वा तत्थ दिज्जादि ॥६०२॥

बहुस्थितिखंडेऽतीते, संख्यभागा गतास्तद्धायाः ।
चरमं खंडं गृह्णाति, लोभ इव तत्र देयादि ॥६०२॥

टीका – पूर्वोक्त प्रकार क्रम लीएं सख्यात हजार स्थिति काडक व्यतीत भए क्षीणकषाय काल कौ सख्यात का भाग देतैं तहा बहुभाग गए एक भाग अवशेष रह्या, तब तीन घातियानि का अत काडक कौ ग्रहण करै है । तहा देयादिक द्रव्य का विधान सूक्ष्म लोभ विषै कह्या था, तैसै जानना । सो कहिए है—

इहां क्षीणकषाय काल जितना अवशेष रह्या, तीहि बिना तीन घातियानि की अवशेष रही सर्व स्थिति कौ अंत कांडक करि घातै है । क्षीणकषाय सबधी गुणश्रेणी शीर्ष तैं लगाय ताके नीचला क्षीणकषाय काल का संख्यातवां भाग मात्र निषेक अर तातै संख्यात गुणा गुणश्रेणी शीर्ष के उपरिवर्ती निषेकनि कौ ग्रहि अत कांडक करि लांछित करै है, असा जानना । ताके द्रव्य देने का विधान जैसै लोभ का अंत कांडक विषै कह्या तैसै जानना । बहुरि असै अत कांडक की प्रथमादिक फालिनि कौ घात करि पीछै किंचित् ऊन द्वयर्ध गुणहानि गुणित समयप्रवद्ध मात्र जो अंत फालि का द्रव्य, ताकौ उदय निषेक तैं लगाय क्षीणकषाय का द्विचरम समय पर्यंत असंख्यात गुणा क्रम लीए अर द्विचरम समय विषै दीया द्रव्य तै असंख्यात पल्य वर्गमूल गुणा (क्षीण)[1] क्षीणकषाय का अत समय संबधी निषेक विषै द्रव्य दीजिए है ।

चरिमे खंडे पडिदे, कदकरणिज्जयो त्ति भण्णदे एसो ।
तस्स दुचरिमे णिद्दा, पयला सत्तुदयवोछिण्णा ॥६०३॥

चरिमे खंडे पतिते, कृतकरणीय इति भण्यते एषः ।
तस्य द्विचरमे निद्रा, प्रचला सत्त्वोदयव्युच्छिन्ना ॥६०३॥

---

१. 'क्षीण' इतना घ प्रति मे मिलता है ।

टीका–ऐसें अंत कांडक का घात होतें याकौं कृतकृत्य छद्मस्थ कहिए । जातैं याकै ऊपरि तीनि घातियानि का स्थितिकांडक घात नाहीं है । केवल उदयावली के बाह्य तिष्ठता द्रव्य कौ उदयावली विषै प्राप्त करणे रूप उदीरणा ही करै है, सो यावत् अधिक समय आवली अवशेष रहै, तहां पर्यंत वर्ते है । बहुरि ताके ऊपरि एक एक समय विषै एक एक निषेक का क्रम तैं उदय ही पाइए है । जातैं उदयावली विषै प्राप्त द्रव्य की उदीरणा न हो है । बहुरि ऐसैं क्षीणकषाय का द्विचरम समय प्राप्त भया तब निद्रा प्रचला कर्म का सत्त्व अर उदय का व्युच्छेद भया । इहां शुक्लध्यान होतें भी अव्यक्त निद्रा वा प्रचला का उदय संभवै था, सो भी नाश भया । अब इहां क्षपकश्रेणी चढने वाले जीव, तीन वेद विषै एक वेद अर च्यारि कषाय विषै एक कषाय का उदय सहित श्रेणी चढने की अपेक्षा बारह प्रकार हैं । तहां पूर्वोक्त सर्व प्ररूपणा पुरुष वेद अर क्रोध कषाय सहित श्रेणी चढने वाले की जाननी । बहुरि अवशेष ग्यारह प्रकार जीवनि विषै विशेष है, सो कहिए है ।

तहां पुरुषवेद अर मानादिक कषाय सहित श्रेणी चढने वाले कै विशेष है, सो कहिए है—

कोहस्स य पढमठिदीजुत्ता कोहादिएक्कदोतीहिं ।
खवणद्धा हि कमसो, माणतियाणं तु पढमठिदी ॥६०४॥

क्रोधस्य च प्रथमस्थितियुक्ता क्रोधादि एकद्वित्रयाणाम् ।
क्षपणाद्धा हि क्रमशो, मानत्रयाणां तु प्रथमस्थिति ॥६०४॥

टीका – पुरुषवेद युक्त मानादि कषाय सहित श्रेणी चढ्या जीव कै अधः करण तैं लगाय अंतरकरण की समाप्ति पर्यंत तौ सर्व प्ररूपणा पुरुष वेद क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव के समान जाननी । ताके अनंतरि क्रोध की प्रथम स्थिति सहित क्रोधादिक एक, दोय, तीन कषायनि का क्षपणाकाल, सो क्रम तैं मानादिक तीन कषायनि की प्रथम स्थिति हो है, सोई कहिए है—

मान सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सोई अंतरकरण की समाप्ति के अनंतर क्रोध की प्रथम स्थिति न स्थापै है । मान की प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र स्थापै है । सो क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कै नपुंसकवेद का क्षपणाकाल तैं लगाय कृष्टि कारक काल पर्यंत तो क्रोध की प्रथम स्थिति अर क्रोध की तीनो संग्रह कृष्टि का वेदक काल मात्र क्रोध का क्षपणा काल इनि दोऊनि कौ मिलाए जेता प्रमाण होइ

तितना मान सहित श्रेणी चढ्या कै मान की प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना । बहुरि माया सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सो अंतरकरण की समाप्ति कै अनंतरि क्रोध अर मान की प्रथम स्थिति नाही स्थापै है । माया की प्रथम स्थिति अंतर्मुहूर्त मात्र स्थापै है, सो क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव कै जो पूर्वोक्त क्रोध की प्रथम स्थिति अर क्रोध क्षपणाकाल अर मान की तीनों संग्रह कृष्टि का वेदक काल मात्र मान क्षपणाकाल इन तीनौ कौ मिलाए जो होइ, तेता माया सहित श्रेणी चढ्या जीव कै माया की प्रथम स्थिति का प्रमाण हो है । बहुरि लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सो अंतरकरण की समाप्ति के अनंतरि क्रोध अर मान अर माया की प्रथम स्थिति नाही स्थापै है, लोभ की प्रथम स्थिति स्थापै है । सो क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कै जो पूर्वोक्त क्रोध की प्रथम स्थिति अर क्रोध क्षपणाकाल अर मान क्षपणा काल अर माया का वेदककाल मात्र जो माया का क्षपणा काल इन च्यारो कौ मिलाए, जो होइ तितना लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव कै लोभ की प्रथम स्थिति का प्रमाण जानना ।

माणतियाणुदयमहो, कोहादिगिदुतियं खवियपणिधम्हि ।
हयकण्णकिट्टिकरणं, किच्चा लोहं विणासेदि ॥६०५॥

मानत्रयाणामुदयमथ, क्रोधाद्येकद्वित्रयं क्षपकप्रणिधौ ।
हयकर्णकृष्टिकरणं, कृत्वा लोभं विनाशयति ॥६०५॥

टीका – मानादिक तीन कषायनि का उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव है, सो क्रम तै क्रोधादिक एक, दोय, तीन कषायनि का क्षपणाकाल के निकटि अश्वकर्ण सहित कृष्टिकरण कौ करि लोभ कौ विनाशे है । सोई कहिए है–

तहा प्रथम मान सहित श्रेणी चढ्या का व्याख्यान करिए है, क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव जिस काल विषै च्यारो कषायनि का अश्वकर्ण करण अर अपूर्व स्पर्धक विधान कौ करै है तिस काल विषै मान सहित श्रेणी चढ्या जीव, पूर्व स्पर्धक रूप जो क्रोध था, ताकौ मान कषाय रूप परिणमाय क्षय करै है । तातै क्रोध सहित श्रेणी चढचा के बारह संग्रह कृष्टि हो है । मान सहित श्रेणी चढचा कै तीन कषायनि की नव ही संग्रह कृष्टि हो है । बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढचा जिस काल विषै बादर कृष्टि करै है, तिस काल विषै मान सहित श्रेणी चढचा जीव तीन कषायनि की अश्व-कर्ण सहित अपूर्व स्पर्धक क्रिया करै है । बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढचा जीव, जिस

काल विषै क्रोध की तीन सग्रह कृष्टि कौ वेद क्षपावै है, तिस काल विषै मान सहित श्रेणी चढ्या जीव मानादि तीन कषायनि की नव बादर सग्रह कृष्टि करै है। बहुरि ताके ऊपरि मान कषाय का वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कै अर मान सहित श्रेणी चढ्या कै समान है।

अब माया सहित श्रेणी चढ्या जीव का व्याख्यान करिए है—क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषै अश्वकर्ण क्रिया करै है, तिस काल विषै यह क्रोध कौ मान रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषै कृष्टि करै है, तिस काल विषै यह मान को माया रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषै क्रोध की तीन सग्रह कृष्टि कौ वेदि क्षपावै है, तिस काल विषै यह माया अर लोभ की छह बादर सग्रह कृष्टि का वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कै अर याकै समान है।

अब लोभ सहित श्रेणी चढ्या जीव का व्याख्यान कहिए है—क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषै अश्वकर्ण करै है, तिस काल विषै यहु पूर्व स्पर्धक रूप क्रोध कौं मानरूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव जिस काल विषै कृष्टि करै है तिस काल विषै यहु पूर्व स्पर्धक रूप मान कौं माया रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जिस काल विषै क्रोध की तीन सग्रह कृष्टिनि कौ वेदि क्षय करै है तिस काल विषै यहु पूर्व स्पर्धक रूप माया कौ लोभ रूप परिणमाइ क्षय करै है। बहुरि क्रोध सहित श्रेणी चढ्या जीव, जिस काल मान की तीन सग्रह कृष्टिनि कौ वेदि क्षय करै है, तिस काल विषै यहु लोभ की तीन बादर सग्रह कृष्टि करै है। तातै उपरि लोभ की प्रथम सग्रह कृष्टि वेदक काल आदि सर्व प्ररूपणा क्रोध सहित श्रेणी चढ्या कै अर याकै समान है।

ऐसे पुरुषवेद सहित चढ्या च्यारि प्रकार जीवनि के विशेष का वर्णन कीया।

अब स्त्रीवेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि कै विशेष कहिए है—

पुरिसोदएण चडिदस्सित्थी, खवणद्धउ त्ति पढमठिदी।
इत्थिस्स सत्तकम्मं, अवगदवेदो समं विणासेदि ॥६०६॥

पुरुषोदयेन चटितस्य स्त्री, क्षपणाद्धांतं प्रथमस्थितिः।
स्त्रिया सप्तकर्माणि, अपगतवेदः समं विनाशयति ॥६०६॥

टीका – स्त्रीवेद सहित चढ्या जीव कै यावत् अंतरकरण न होइ, तावत् प्ररूपणा सर्व समान है। बहुरि अंतरकरण करत संता यहु पुरुष वेद की प्रथम स्थिति नाही करै है। स्त्रीवेद ही की प्रथम स्थिति स्थापै है, जातै जिस वेद का कषाय के उदै श्रेणी चढै ताही का प्रथम स्थिति स्थापै है। तिस स्त्री वेद की प्रथम स्थिति का प्रमाण पुरुष वेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या जीव कै जितना नपुंसक वेद का क्षपणाकाल सहित स्त्री वेद का क्षपणाकाल होइ तितना जानना। बहुरि नपुंसक वेद की वा स्त्री वेद की क्षपणा करने विषै स्त्री वेद सहित चढ्या जीव कै पुरुषवेद सहित चढ्या जीव कै समान काल है। बहुरि ताके ऊपरि पुरुषवेद सहित चढ्या जीव है सो तौ पुरुष वेद का उदय युक्त हुवा सप्त नोकषाय का क्षपणाकाल विषै सप्त नोकषायनि कौ क्षपावै है। तहा पुरुष वेद के नवक समयप्रबद्धनि कौं, ताके पीछे समय घाटि दोय आवली काल विषै क्षपावै है। बहुरि यह स्त्री वेद सहित चढ्या जीव है, सो वेद उदय करि रहित होत संता सप्त नोकषाय का क्षपणाकाल विषै सर्व सप्त नोकषायनि कौ क्षपावै है। पुरुष वेद का बंध याकै नाही है, तातै नवक समयप्रबद्ध का पीछै खिपावना याकै न संभवे है। बहुरि ताके ऊपरि अश्वकर्णादि क्रियानि विषै जैसै पुरुष वेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि का विशेष कह्या तैसै ही स्त्रीवेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि का विशेष वर्णन जानना।

अब नपुंसक वेद सहित चढे च्यारि प्रकार जीवनि का व्याख्यान करिए है–

थीपढमट्ठिदिमेत्ता, संढस्स वि अंतरादु संढेक्क।
तस्सद्धा त्ति तदुवरिं, संढा इत्थि च खवदि थीचरिमे ॥६०७॥

अवगयवेदो संतो, सत्त कसाये खवेदि कोहुदये।
पुरिसुदये चडणविही, सेसुदयाणं तु हेट्ठुवरिं ॥६०८॥

स्त्रीप्रथमस्थितिमात्रा, षंढस्यापि अंतरात् षंढैकः।
तस्याद्धा इति तदुपरि, षंढं स्त्री च क्षपयति स्त्रीचरमे ॥६०७॥

अपगतवेदः संतः, सप्त कषायान् क्षपयति स्त्रीचरमे।
पुरुषोदयेन चटनविधिः शेषोदयानां तु अधस्तनोपरि ॥६०८॥

टीका – नपुंसक वेद सहित श्रेणी चढ्या जीव कै यावत् अंतरकरण न करिए तावत् सर्व प्ररूपणा समान है; ताके ऊपरि पुरुष वेद की प्रथम स्थिति नाही

स्थापै है, नपु सक वेद ही की प्रथम स्थिति स्थापै है, ताका प्रमाण स्त्रीवेद सहित चढ्या कै जितना स्त्री वेद की प्रथम स्थिति, ताका प्रमाण कह्या तावन्मात्र ही है। बहुरि अतरकरण कीए पीछे यावत् पुरुष वेद सहित चढ्या जीव कै नपु सक वेद का क्षपणाकाल है, तावत् याकै एक नपुसक वेद ही की क्षपणा हुआ करै है, परन्तु तहां नपुसक वेद की क्षपणा होइ निवरै नाही, तहा पीछै पुरुष वेद सहित श्रेणी चढ्या कै जो स्त्री वेद का क्षपणाकाल है, तिस विषै याकै नपुसक वेद अर स्त्री वेद इन दोऊ-निकी क्षपणा होने लगै, सो स्त्रोवेद क्षपणाकाल का अत समय विषै सर्व नपुसक, स्त्री वेद कौ युगपत् क्षय करै है। इहा द्रव्यार्थिकनय विद्यमान का नाश कौ कहै है, तिस अपेक्षा इस समय नष्ट भया कह्या। पर्यायार्थिक अविद्यमान वस्तु का नाश कौ कहै है, तिस अपेक्षा इस समय विषै एक निषेक का सत्त्व है, सो अगले समय विषै नष्ट होगा अैसा जानना। ताके अनतरि स्त्री वेद सहित चढ्या जीववत् अपगत वेद होत सता सप्त नोकषायनि का क्षपणाकाल विषै सर्व सप्त नोकषायनि कौ क्षपावै है। इहा भी पुरुष वेद का बध का अभाव है। तातै नवक समयप्रबद्ध का पीछे क्षिपावना न सभवै है। ताके ऊपरि जैसे पुरुष वेद सहित श्रेणी चढे च्यारि प्रकार जीवनि का वर्णन कीया, तैसै ही नपुसक वेद सहित श्रेणी चढे च्यारि प्रकार जीवनि का वर्णन जानना। अैसै तीन प्रकार पुरुष वेद सहित श्रेणी चढे, च्यारि प्रकार स्त्री वेद सहित चढे, च्यारि प्रकार नपुसक वेद सहित श्रेणी चढे, ए ग्यारह प्रकार जीव, तिनके बीचि की क्रियानि विषै इहा विशेष वर्णन कीया, सो विशेष जानना। अब शेष नीचै वा ऊपरी सर्व विधान क्रोध का उदय अर पुरुष वेद का उदय सहित श्रेणी चढ्या कै जैसे कह्या तैसै ही अवशेष ग्यारह प्रकार उदय सहित जीवनि कै जानना।

इहां तर्क – जो अनिवृत्तिकरण विषै एक समयवर्ती सब जीवनि कै परिणाम समान कहे है, इहा तुम परस्पर विशेष कैसै कहो हो ?

ताका समाधान–परिणामनि की विशुद्धता की अपेक्षा समान नाही है; परतु नाना प्रकार वेद कषाय का उदय रूप सहकारी कारण का निकट होतै नाना प्रकार क्षपणा कार्य हो है। अैसै अवसर पाइ विशेष का कथन करि पूर्वै क्षीणकषाय का द्विचरम समय पर्यंत कथन कीया था, अब आगै कथन करिए है—

चरिमे पढमं विग्घं, चउदंसण उदयसत्त वोच्छिण्णा।
से काले जोगिजिणो, सव्वण्हू सव्वदरसी य ॥६०६॥

चरमे प्रथमं विघ्नं, चतुर्दर्शनं उदयसत्त्वव्युच्छिन्नाः ।
स्वे काले योगिजिनः, सर्वज्ञः सर्वदर्शी च ॥६०६॥

टीका – क्षीणकषाय का अंत समय विषै पहला पंच प्रकार ज्ञानावरण अर विघ्न कहिए पंच प्रकार अंतराय अर चउदसण कहिए च्यारि प्रकार दर्शनावरण, ए उदय तै अर सत्त्व तै व्युच्छित्ति रूप भए । इहां अघातिकर्मनि का स्थितिसत्त्व पल्य के असंख्यातवे भाग मात्र असंख्यात वर्ष का है । जैसै घाति कर्मनि विषै मोह विशेष अप्रशस्त था, ताका पहलै नाश भया, अवशेषनि का इहां नाश भया, तैसै कर्मनि विषै विशेष अप्रशस्त घाति कर्म थे, तिनका इहा नाश भया । अघातियानि का आगे नाश होगा ।

बहुरि इहां कोऊ पूछै कि छद्मस्थ का तौ शरीर निगोद सहित था, अर केवली का शरीर निगोद रहित कहिए है, सो कैसै भया ?

ताका समाधान–क्षीणकषाय का प्रथम समय विषै निगोद जीव अनंत मरै है, दूसरे समय तिनकौ आवली का असंख्यातवा भाग का भाग दीएं एक भाग मात्र अधिक मरै है । असै पृथक्त्व आवली पर्यंत क्रम जानना । ताके ऊपरि पूर्व समय विषै मरे जीवनि तै तिनकौ संख्यात का भाग दीए एक भाग मात्र अधिक जीव मरै है । सो असै क्षीणकषाय का काल आवली का असंख्यातवा भाग मात्र अवशेष रहै तावत् क्रम जानना । बहुरि इस विशेष अधिक रूप मरणकाल का अंत समय विषै मरे जीवनि का प्रमाण कौ पल्य का असंख्यातवा भाग करि गुणै, ताकौ अनंतरि गुणकार की श्रेणी लीए मरण काल का जो प्रथम समय तीहिं विषै मरे जीवनि का प्रमाण हो है । तातै परै क्षीणकषाय का अंत समय पर्यंत समय समय पल्य का असंख्यातवा भाग गुणा निगोद जीव मरै है, असै सर्व निगोद जीवनि का अभाव होतै केवली का शरीर निगोद रहित है ।

इहां तर्क – जो असै मरण होतै यथाख्यात चारित्र कैसै कहिए ?

ताका समाधान–इहा शुक्लध्यान बल करि तिनके निपजने का निरोध हो है; बहुरि उपजे थे, ते स्वयमेव अपनी आयु नाश तै मरै है । यावत् निगोद जीवनि का जघन्य आयु मात्र क्षीणकषाय का काल अवशेष रहै तावत् निगोद जीव तहां उपजै भी है । अर पूर्वे उपजे जीव मरै है, तहा पीछै उपजै नाहीं । आयु नाश तै केवल मरै ही है, तातै इनकौं किछू दोष नाही उपजै है । असै क्षीणकषाय का अंत समय विषै कर्मनि का नाश करि ताके अनंतरि अपने काल विषै सयोग केवली जिन हो है । सो

सर्वज्ञ अर सर्वदर्शी हो है। सर्व पदार्थनि कौ आकार रूप विशेष ग्रहण करै है। तातै सर्वज्ञ कहिए। बहुरि सर्व पदार्थनि कौ निराकार रूप सामान्य ग्रहण करै है, तातै सर्वदर्शी कहिए है।

खीणे घादिचउक्के, णंतचउक्कस्स होदि उप्पत्ती।
सादी अपज्जवसिदा, उक्कस्साणंतपरिसंखा ॥६१०॥

क्षीणे घातिचतुष्केऽनंतचतुष्कस्य भवति उत्पत्तिः।
सादिरपर्यवसिता, उत्कृष्टानंतपरिसख्या ॥६१०॥

टीका – घातिया कर्मनि का चतुष्क का नाश होतै अनत चतुष्टय की उत्पत्ति हो है। अनंतपना कैसे सभवे है ? सो कहिए है—

सादि कहिए उपजने काल विषै आदि सहित है, तथापि अपर्यवसिता कहिए अवसान जो अत, ताकरि रहित है, तातै अनत कहिए। अथवा अविभाग प्रतिच्छेदनि की अपेक्षा इनकी उत्कृष्ट अनंतानत मात्र सख्या है, तातै भी अनत कहिए।

अब किस कर्मनि का नाश कै कौन गुण हो है, सो कहिए है—

आवरणदुगाण खये, केवलणाणं च दंसणं होइ।
विरियंतरायियस्स य, खएण विरियं हवे णंतं ॥६११॥

आवरणद्विकयोः क्षये, केवलज्ञानं च दर्शनं भवति ॥
वीर्यांतरायिकस्य च, क्षयेण वीर्यं भवेदनंतम् ॥६११॥

टीका – ज्ञानावरण, दर्शनावरण इन दोऊनि का नाश करि केवलज्ञान अर केवलदर्शन हो है। तहा केवलज्ञान है सो इद्रिय, मन, प्रकाशादिक की सहाय रहित है। सो सूक्ष्म, अतरित, दूर आदि सर्व पदार्थनि कौ प्रत्यक्ष युगपत् जाने है। तहा परमाणू आदि सूक्ष्म कहिए। अतीत, अनागत काल सबधी अतरित कहिए। दूर क्षेत्रवर्ती दूर कहिए। बहुरि तैसे ही केवलदर्शन है, सो देखे है। जैसे चद्र विषै शीत स्पर्श, श्वेत वर्णपनौ युगपत् है, तैसे जिनेद्र विषै केवलज्ञान, केवलदर्शन युगपत् प्रवर्तै है, छद्मस्थवत् क्रमवर्ती नाही है। बहुरि वीर्यांतराय कर्म का क्षय करि अनत वीर्य हो है, सो समस्त ज्ञेयनि कौ सदा काल जानते भी खेद उपजने का अभाव कौ उपकारी काहू करि घाती न जाय ऐसी समर्थतारूप है।

णवणोकसायविग्घचउक्काणं च य खयादणंतसुहं ।
अणुवममव्वाबाहं, अप्पसमुत्थं णिरावेक्खं ॥६१२॥

नवनोकषायविघ्नचतुष्काणां च क्षयादनंतसुखम् ।
अनुपममव्याबाधमात्मसमुत्थं निरपेक्षम् ॥६१२॥

टीका – नव नोकषाय अर दानादि अतराय चतुष्क का क्षय तै अनत सुख हो है, सो अन्यत्र अैसा न पाइए है, तातै अनौपम्य है । बहुरि काहू करि बाधित नाही, तातै अव्याबाध है । बहुरि आत्मा करि उत्पन्न है, तातै आत्मसमुत्थ है । बहुरि इद्रिय विषय प्रकाशादिक की अपेक्षा रहित है, तातै निरपेक्ष है, अैसा ज्ञानवैराग्य ताकी उत्कृष्टता कौ प्राप्त भया जो केवली, तिनकै अनाकुल लक्षरण अनत सुख जानना ।

सत्तण्हं पयडीणं, खयादु खइयं तु होदि सम्मत्तं ।
वरचरणं उवसमदो, खयदो दु चरित्तमोहस्स ॥६१३॥

सप्तानां प्रकृतीनां, क्षयात् क्षायिकं तु भवति सम्यक्त्वम् ।
वरचरण उपशमतः, क्षयतस्तु चारित्रमोहस्य ॥६१३॥

टीका – च्यारि अनतानुबधी, तीन मिथ्यात्व, इन सात प्रकृतिनि के क्षय तै क्षायिक सम्यक्त्व हो है, सो तत्त्वार्थनि का यथार्थ श्रद्धानरूप जानना । बहुरि चारित्र मोह की इकईस प्रकृतिनि के उपशम तै वा क्षय तै उत्कृष्ट यथाख्यात चारित्र हो है, सो निष्कषाय आत्मचरण रूप है । इहा क्षायिक यथाख्यात चारित्र ही है । तथापि यथाख्यात का प्रसग पाइ उपशांत कषाय विषै पाइए है जो उपशम यथाख्यात, ताका भी कारण दिखाया है ।

अब इहा कोऊ कहै कि केवली कै असाता वेदनीय के उदय तै क्षुधादि परिषह पाइए है, तातै आहारादि क्रिया सभवै है, तिस प्रति कहै है—

जं णोकसायविग्घचउक्काण बलेण दुक्खपहुदीणं ।
असुहपयडिणुदयभवं, इंदियखेदं हवे दुक्खं ॥६१४॥

यत् नोकषायविघ्नचतुष्काणां बलेन दुःखप्रभृतीनाम् ॥
अशुभप्रकृतीनामुदयभवं इंद्रियखेदं भवेत् दुःखं ॥६१४॥

टीका – जो नोकषाय अर अंतरायचतुष्क, इनका उदय के बल करि दु ख रूप असाता वेदनीय आदि अशुभ प्रकृतिनि का उदय करि उपज्या अैसा इद्रिय कै खेद आकुलता, ताका नाम दु ख है । सो केवली कै नाही संभवै है ।

जं णोकसायविग्घचउक्काण बलेण सादपहुदीणं ।
सुहपयडीणुदयभवं, इंदियतोसं हवे सोक्खं ॥६१५॥

यत् नोकषाय विघ्नचतुष्काणां बलेन सातप्रभृतीनां ।
शुभप्रकृतीनामुदयभवं, इंद्रियतोषं भवेत् सौख्यं ॥६१५॥

टीका – जो नोकषाय अर अतराय चतुष्क का उदय के बल करि साता वेद-नीय आदि शुभ प्रकृतिनि का उदय करि उपज्या इद्रियनि के सतोष किछू निराकुलता ताका नाम इ द्रिय जनित सुख है, सो भी केवली के नाही सभवै है ।

णट्ठा य रायदोसा, इंदियणाणं च केवलिम्हि जदो ।
तेण दु सातासादजसुहदुक्खं णत्थि इंदियजं ॥६१६॥

नष्टौ च रागद्वेषौ, इंद्रियज्ञानं च केवलिनि यतः ।
तेन तु सातासातजसुखदुःखं नास्ति इंद्रियजं ॥६१६॥

टीका – जातै केवली विषै राग द्वेष नष्ट भए है। बहुरि इद्रिय जनित ज्ञान भी नष्ट भया है तातै साता असाता वेदनीय का उदय करि निपज्या असा इद्रिय जनित सुख दु ख नाही है । इस हेतु तै यहु सिद्ध भया जो कारण के सद्भाव तै केवली कै असातावेदनीय के उदय तै उपजे असै परिषह उपचार मात्र कहिए है, तथापि तिनका दुःख नाही व्यापै है, जातै घातिकर्मनि का उदय के बल होतै वेदनीय का उदय तै सुख दु ख व्यापै है । जैसै उपघात परघात नाम कर्म का उदय होतै भी घाति कर्मनि के बल बिना अपना वा अन्य का घात न हो है, जो असै न होइ तो परिषहनि के निमित्त तै केवली कौ दु ख होइ तब लाभ के अर्थि कार्य करते जैसै मूल नाश होइ तैसै यहु कार्य भया, सो न सभवै है, तातै केवली कै भोजन है असा वचन अयुक्त है ।

अब अन्य हेतु कहैं है—

समयट्ठिदिगो बंधो, सादस्सुदयाप्पिगो जदो तस्स ।
तेण असादस्सुदओ, सादसरूवेण परिणमदि ॥६१७॥

समयस्थितिको बंधः, सातस्योदयात्मको यतः तस्य ।
तेन असातस्योदयः, सातस्वरूपेण परिणमति ॥६१७॥

टीका – जातै केवली कै एक समय मात्र स्थिति लीएं साता वेदनीय का बध हो है, सो उदयरूप ही है, तातै ताकै असाता का उदय है सो भी सातारूप होइ परि-णमै है, जातै इहा परम विशुद्धता करि साता का अनुभाग की बहुत अधिकता पाइए है, तातै असाताजनित क्षुधादि परिषह की वेदना नाही है। वेदना बिना ताका प्रतिकार रूप आहार कैसै सभवै है ?

इहा कोऊ कहै कि जो आहार न सभवै तौ शास्त्रनि विषै केवली कै आहार-मार्गणा का सद्भाव कैसै कह्या है ? सो कहिए है—

पडिसमयं दिव्वतमं, जोगी णोकम्मदेहपडिबद्धं ।
समयपबद्धं बंधदि, गलिदवसेसाउमेत्तठिदी ।।६१८।।

प्रतिसमयं दिव्यतमं, योगी नोकर्मदेहप्रतिबद्धम् ।
समयप्रबद्धं बध्नाति, गलितावशेषायुर्मात्रस्थितिः ।।६१८।।

टीका – सयोगी जिन है, सो समय समय प्रति नोकर्म, जो औदारिक शरीर तीहि सबधी जो समयप्रबद्ध, ताकौ बाधे है, ग्रहण करै है। ताकी स्थिति, आयु व्यतीत भए पीछे जेता अवशेष रह्या तावन्मात्र जाननी। सो नोकर्म वर्गणा का ग्रहण ही का नाम आहारमार्गणा है, ताका सद्भाव केवली कै है, जातै ओज, लेप्य, मानस, केवल, कर्म, नोकर्म भेद तै छह प्रकार आहार है। तहां केवली कै कर्म नोकर्म ए दोय आहार सभवै है। साता वेदनीय का समयप्रबद्ध कौ ग्रहै है, सो कर्म आहार है। औदारिक शरीर का समयप्रबद्ध ग्रहै है, सो नोकर्म आहार है।

णवरि समुग्धादगदे, पदरे तह लोगपूरणे पदरे ।
णत्थि तिसमये णियमा, णोकम्माहारयं तत्थ ।।६१९।।

नवरि समुद्घातगते प्रतरे तथा लोकपूरणे प्रतरे ।
नास्ति त्रिसमये नियमात् नोकर्माहारकस्तत्र ।।६१९।।

टीका – इतना विशेष जो केवल समुद्घात कौ प्राप्त केवली विषै दोय तौ प्रतर के समय अर एक लोक पूरण का समय, इनि तीन समयनि विषै नोकर्म का आहार नियम तै नाही है। अन्य सर्व काल विषै सयोगी जिन को नोकर्म का आहार है।

अब इहां समुद्घात कब हो है, सो कहना—तहां क्षीणकषाय के अंनतरि ईर्या-पथ बध कौं कारण जो योग, तिन करि सहित जो तीर्थंकर केवली भया, सो समव-

नरगा विषै मडप के मध्य तीन पीठिका ऊपरि जो सिंहासन तीहि विषै विराजमान है। अष्ट प्रातिहार्य, चौतीस अतिशय सहित है। धातु मल रहित, परम औदारिक शरीर सहित है। सर्वलोक पूज्य है। बहुरि एक योजन विषै तिष्ठते असे दूर वा निकटवर्ती तिर्यंच वा मनुष्य वा देव, तिनकी अठारह महाभाषा, सात सै क्षुल्लक भाषा ताके आकारि तद्रूप परिणम्या असा जो दिव्यध्वनि, ताकरि आसन्न भव्य जीवनि कौं ससार ते पार करै है। जैसै बिना इच्छा चंद्रमा समुद्र कौं बधावै है, तैसै अबुद्धिपूर्वक पनै केवली जगत का हित कौं करै है। जातै सर्व जीवनि का उपकार रूप परिणामनि तै असा कर्म पूर्वं बध्या है, जाके उदय तै सर्व जीवनि का स्वयमेव उपकार हो है अर भव्य जीवनि का भला होना है, तातै ऐसा निमित्त बना है। बहुरि भगवान विहार करै, तब आकाश विषै दोय सै पचीस कमलनि कै ऊपरि स्वयमेव गमन करै है। सो याप्रकार उत्कृष्ट तौ किंचित ऊन कोडि पूर्व अर जघन्य पृथक्त्व वर्ष प्रमाण तीर्थंकर केवली की स्थिति सयोग गुणस्थान विषै जाननी। सामान्य केवलीनि कै अतिशयादिक यथासभव जानना अर जघन्य स्थिति अतर्मुहूर्त जाननी। तहां सयोगी का प्रथम समय तै लगाय उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी निर्जरा पाइए है। तहा प्रथम समय विषै वेदनीय नाम गोत्र का द्रव्य कौं अपकर्षण भागहार का भाग देइ, तहा एक भाग मात्र द्रव्य ग्रहि पूर्वोक्त प्रकार गुणश्रेणी विषै देने योग्य द्रव्य कौ उदय रूप प्रथम निषेक विषै तौ स्तोक अर द्वितीयादि गुणश्रेणी शीर्ष पर्यंत निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम लीए निक्षेपण करिए है। बहुरि उपरितन स्थिति विषै देने योग्य द्रव्य को प्रथम निषेक विषै गुणश्रेणी शीर्ष विषै दीया द्रव्य तै असख्यात गुणा अर द्वितीयादि अतिस्थापनावली यावत् न प्राप्त होइ तावत् निषेकनि विषै विशेष घटता क्रम लीए निक्षेपण करिए है। इहा क्षीणकषाय करि अपकर्षण कीया द्रव्य तै सयोग केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य असख्यात गुणा जानना। बहुरि ताके गुणश्रेणी आयाम तै याका गुणश्रेणी आयाम सख्यात गुणा घटता जानना। बहुरि सयोग केवली का द्वितीयादि समयनि विषै भी असा ही विधान जानना। परिणाम अवस्थित है, तहा अपकर्षण कीया द्रव्य की अर गुणश्रेणी आयाम की समानता जाननी। इतना ही विशेष गुणश्रेणी आयाम अवस्थित है, तातै ज्यू ज्यू गुणश्रेणी आयाम का एक एक समय व्यतीत हो है, त्यू त्यू उपरितन स्थिति का एक एक समय गुणश्रेणी विषै मिलै है।

या प्रकार सयोगी का काल बहुत व्यतीत होतै समुद्घात क्रिया जिस काल विषै हो है, सो कहिए है—

अंतोमुहुत्तमाऊ, परिसेसे केवली समुग्घादं।
दंड कवाटं पदरं, लोगस्स य पूरणं कुणई ॥६२०॥

अंतर्मुहूर्तमायुषि, परिशेषे केवली समुद्घातं।
दंडं कपाटं प्रतरं, लोकस्य च पूरणं करोति ॥६२०॥

टीका – अपनी आयु अंतर्मूहूर्त मात्र अवशेष रहै केवली समुद्घात क्रिया करै है। तहां दंड, कपाट, प्रतर, लोकपूरणरूप समुद्घात क्रिया कौं करै है।

हेट्ठा दंडस्संतोमुहुत्तमावज्जिदं हवे करणं।
तं च समुग्घादस्स य, अहिमुहभावो जिणिंदस्स ॥६२१॥

अधस्तनं दंडस्यांतर्मुहूर्तमावर्जितं भवेत् करणं।
तच्च समुद्घातस्य च, अभिमुखभावो जिनेंद्रस्य ॥६२१॥

टीका – दंड समुद्घात करने का काल कै अंतर्मुहूर्त काल आधा कहिए पहलै आवर्जित नामा करण हो है, सो जिनेंद्र देव कै जो समुद्घात क्रिया कौं सन्मुखपना, सोई आवर्जितकरण कहिए।

सट्ठाणे आवज्जिदकरणेवि य णत्थि ठिदिरसाण हदी।
उदयादि अवट्ठिदया, गुणसेढी तस्स दव्वं च ॥६२२॥

स्वस्थाने आवर्जितकरणेऽपि च नास्ति स्थितिरसयोः हतिः।
उदयादिः, अवस्थितौ, गुणश्रेणिः, तस्य द्रव्यं च ॥६२२॥

टीका – आवर्जितकरण करने तै पहलै जो स्वस्थान, तीहि विषै अर आवर्जित करण विषै भी सयोग केवली कै कांडकादि विधान करि स्थिति अनुभाग का घात नाही है। बहुरि उदयादि अवस्थितरूप गुणश्रेणी आयाम है अर तिस गुणश्रेणी का द्रव्य भी अवस्थित है। तहां विशेष इतना जो स्वस्थान केवली का गुणश्रेणी आयाम तै आवर्जितकरण युक्त केवली का गुणश्रेणी आयाम संख्यात गुणा घाटि है। बहुरि स्वस्थान केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य तै आवर्जितकरण युक्त केवली करि अपकर्षण कीया द्रव्य असंख्यात गुणा है, जातै गुणश्रेणी निर्जरा के ग्यारह स्थान कहे है। तहां असा ही क्रम कह्या है। यद्यपि केवली कै परिणामनि की समानता है तथापि आयु का अंतर्मुहूर्त मात्र अवशेष रहने का निमित्त पाइ विशेष होने तै स्व-

स्थान जिन तैं समुद्घात कौं सन्मुख जिन के[1] गुणश्रेणी आयाम वा अपकर्षण कीया द्रव्य की समानता नाहीं कही है। बहुरि स्वस्थान जिन कै प्रथमादि अंत समय पर्यंत गुणश्रेणी आयाम अर अपकर्षण कीया द्रव्य समान है, तातैं अवस्थित जानना। बहुरि आवर्जितकरण का प्रथम समय तैं लगाय सयोगी कै द्विचरम स्थितिकांडक की अंत फालि का पतन जिस समय होगा, तहां पर्यंत गुणश्रेणी आयाम अर अपकर्षण कीया द्रव्य समान है तातैं अवस्थित जानना।

अब आवर्जितकरण विषै गुणश्रेणी आयाम कितना है? सो कहिए है—

जोगिस्स सेसकाले, गयजोगी तस्स संखभागो य।
जावदियं तावदिया, आवज्जिदकरणगुणसेढी ॥६२३॥

योगिनः शेषकाले, गतयोगी तस्य संख्यभागश्च।
यावत् तावत्कं, आवर्जितकरणगुणश्रेणिः ॥६२३॥

टीका – आवर्जितकरण करने के पहले समय जो सयोगी का अवशेष काल रह्या अर अयोगी का सर्व काल अर अयोगी के काल का संख्यातवां भाग, इनकौं मिलाए जितना होइ, तितना आवर्जितकरण काल का प्रथम समय तैं लगाय द्विचरम कांडक की अंत फालि का पतन समय पर्यंत समयनि विषै अवस्थित गुणश्रेणी आयाम जानना। तहां अपकर्षण कीया द्रव्य देने का विधान जैसैं स्वस्थान जिन विषै कह्या तैसैं जानना।

या प्रकार अंतर्मुहूर्त मात्र आवर्जितकरण काल विषैं क्रिया विशेष कहे, ताके अनंतरि समुद्घात क्रिया हो है। सो अघाति कर्मनि की स्थिति समान करने के अर्थि जीव के प्रदेशनि का समुद्गमन फैलना, ताका नाम समुद्घात है। सो दंड, कपाट, प्रतर, लोकपूरण भेद तैं च्यारि प्रकार है। सो समुद्घात करने वाले जीव पूर्व कौं सन्मुख वा उत्तर कौं सन्मुख हो हैं। बहुरि पद्मासन वा कायोत्सर्ग आसन युक्त हो है सो प्रथम समय विषै दंड समुद्घात करै है। तहां उत्कृष्ट अवगाह युक्त केवली का शरीर एक सौ आठ प्रमाणांगुल प्रमाण ऊंचो होइ, ताके नवमे भाग चौडाई होइ, सो बारह अंगुल चौडाई की सूक्ष्म परिधि सैंतीस अंगुल अर एक अंगुल का एक सौ तेरह भाग मे पिच्याणवै भाग मात्र हो है, सो यहु तो कायोत्सर्ग स्थित केवली के परिधि का प्रमाण जानना। बहुरि पद्मासन स्थिति के चौडाई का प्रमाण तातैं तिगुणा,

१–'जिन के' स्थान पर 'जिनि के' ऐसा पाठ घ प्रति मे मिलता है।

छत्तीस अंगुल है । ताके सूक्ष्म परिधि का प्रमाण एक सौ तेरह अंगुल अर एक अंगुल का एक सौ तेरह भाग सत्ताईस भाग मात्र हो है । असें परिधि रूप होइ किंचिदून चौदह राजू ऊंचे प्रदेश हो है । इहां नीचले ऊपरले वातवलयनि विषें जीव के प्रदेश न फैले है, तातें तिनके घटावने के अर्थि किंचिदून कह्या है । असें दंड के आकारि प्रदेश फैलने तें दंड समुद्घात कह्या ।

बहुरि द्वितीय समय विषै कपाट समुद्घात करै है । तहां पूर्व दिशा सन्मुख कायोत्सर्ग आसन युक्त केवली के प्रदेश किंचिदून चौदह राजू ऊंचे, सात राजू चौडे, बारह अंगुल मोटे हो है । बहुरि पूर्व सन्मुख पद्मासन स्थित केवली के प्रदेश ऊंचे, चौडे, पूर्वोक्त मोटे छत्तीस अंगुल हो है । बहुरि उत्तर सन्मुख कायोत्सर्ग स्थित केवली के प्रदेश किंचिदून चौदह राजू ऊंचे अर नीचे सात राजू क्रम तें घटि मध्यलोक निकटि एक राजू क्रम तें बधि ब्रह्म स्वर्ग निकटि पांच राजू क्रम तें घटि ऊपरि एक राजू चौड़े अर बारह अंगुल मोटे प्रदेश हो है । बहुरि उत्तर सन्मुख पद्मासन स्थित केवली के प्रदेश ऊंचे, चौड़े तैसें ही अर मोटे छत्तीस अंगुल है । असें कपाट आकारि प्रदेश फैलने तें कपाट कह्या—

बहुरि तीसरे समय प्रतर करै है । तहां वातवलय बिना अवशेष सर्व लोक विषै आत्मा के प्रदेश फैले हैं । सो याका नाम मंथान भी है—

बहुरि चतुर्थ समय विषै लोकपूरण हो है । तहां वातवलय सहित सर्व लोक विषै आत्मा के प्रदेश फैले हैं । असें च्यारि समयनि विषै दंड, कपाट, प्रतर, लोकपूरण क्रम तें प्रदेश फैलै है ।

तहां कार्य विशेष हो है, सो कहिए है—

ठिदिखंडमसंखेज्जे, भागे रसखंडमप्पसत्थाणं ।
हणदि अणंता भागा, दंडादी चउसु समएसु ॥६२४॥

स्थितिखंडमसंख्येयान्, भागान् रसखंडमप्रशस्तानां ।
हंति अनंतान् भागान्, दंडादिचतुर्षु समयेषु ॥६२४॥

टीका – दडादिक के च्यारि समयनि विषै स्थिति खंड तौ असख्यात बहुभाग मात्र, अप्रशस्तनि का अनुभाग खड अनंत भाग मात्र, ताकौ घातै है, सोई कहिए है—

दडरूप प्रथम समय विषै जो नाम, गोत्र, वेदनीय का स्थिति सत्त्व पूर्वै पल्य का असंख्यातवां भाग मात्र था, ताकौ असंख्यात का भाग दीए तहां बहुभाग मात्र

घटाइ, एक भाग मात्र अवशेष राखे है। बहुरि अप्रशस्त प्रकृतिनि कौ क्षीणकषाय का अंत समय विषै जो अनुभाग रह्या था, ताकौ अनंत का भाग दीए तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। बहुरि कपाट रूप द्वितीय समय विषै जो दंड समय विषै स्थिति अनुभाग रहे थे, तिनकौ क्रम तै असंख्यात अनंत का भाग दीए तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखे है। बहुरि प्रतर रूप तीसरा समय विषै कपाट समय विषै जो स्थिति अनुभाग रह्या, ताकौ असंख्यात अनंत का भाग क्रम तै दीए तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। बहुरि लोकपूरण रूप चौथा समय विषै जो प्रतर समय विषै स्थिति अनुभाग रह्या था, ताकौ असंख्यात अनंत का भाग क्रम तै दीए तहां बहुभाग घटाइ एक भाग मात्र अवशेष राखै है। प्रशस्त प्रकृतिनि का स्थिति घात हो है, अनुभाग घात न हो है असा जानना। बहुरि गुणश्रेणी निर्जरा आवर्जितकरणवत् हो है।

चउसमएसु रसस्स य, अणुसमओवट्टणा असत्थाणं।
ठिदिखंडस्सिगिसमयिगघादो अंतोमुहुत्तुवरिं ॥६२५॥

चतुः समयेषु रसस्य च, अनुसमयापवर्तनमशस्तानां।
स्थितिखंडस्यैकसमयिकघातो अंतर्मुहूर्तोपरि ॥६२५॥

टीका – असें च्यारि समयनि विषै अप्रशस्त प्रकृतिनि के अनुभाग का अनुसमयापवर्तन भया। समय समय अनुभाग का घटना भया। बहुरि स्थिति खंड का एक समय करि घात भया। एक एक समय विषै एक एक स्थिति कांडक घात कीया सो यह माहात्म्य समुद्घात क्रिया का जानना। बहुरि लोकपूरण के अनंतरि अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति कांडक वा अनुभाग कांडक का आयाम जानना। अंतर्मुहूर्त काल करि स्थिति अनुभाग का घटावना जानना।

जगपूरणम्हि एक्का, जोगस्स य वग्गणा ठिदी तत्थ।
अंतोमुहुत्तमेत्ता, संखगुणा आउआ होदि ॥६२६॥

जगत्पूरणे एका, योगस्य च वर्गणा स्थितिस्तत्र।
अंतर्मुहूर्तमात्रा, संख्यगुणा आयुषो भवति ॥६२६॥

टीका – लोकपूरण का समय विषै योगनि की एक वर्गणा है। पूर्वै आत्मा के प्रदेशनि विषै हीनाधिक योगनि के अविभाग प्रतिच्छेद थे। इहां आत्मा के सर्व

प्रदेशनि विषै समान प्रमाण लीए योगनि के अविभाग प्रतिच्छेद भए। याका नाम समयोग परिणाम है। सो यहु सूक्ष्म निगोदिया कै जो जघन्य योगस्थान है, ताकी जघन्य वर्गणा तै असख्यात गुणी जो यथायोग्य मध्यम वर्गणा, ताका वर्गनि के समान इहा सर्व आत्मप्रदेशनि विषै समान रूप अविभाग प्रतिच्छेद हो है। सो यहु एक समय ही रहै है। पीछे हीनाधिकता लीए पूर्वस्पर्धक रूप योग परिणमि जाय है। बहुरि तहां लोकपूरण समय विषै अतर्मुहूर्त मात्र स्थिति अवशेष राखिए है। सो यहु अवशेष रह्या आयु तै संख्यात गुणा जानना। इहा पूर्व स्थिति थी, तामै इतनी स्थिति बिना अवशेष सर्व स्थिति का काडक करि घात भया है।

इस लोकपूरण क्रिया के अनतरि समुद्घात क्रिया कौ समेटै है, सो क्रम कहिए है—

एत्तो पदर कवाडं, दंडं पच्चा चउत्थसमयम्हि।
पविसिय देहं तु जिणो, जोगणिरोधं करेदीदि ॥६२७॥

अतः प्रतरं कपाटं, दंडं प्रतीत्य चतुर्थसमये।
प्रविश्य देहं तु जिनो, योगनिरोधं करोतीति ॥६२७॥

टीका – इस लोकपूरण के अनंतरि प्रथम समय विषै लोकपूरण कौ समेटि प्रतररूप आत्मप्रदेश करै है। द्वितीय समय विषै प्रतर समेटि कपाट रूप आत्मप्रदेश करै है। तीसरे समय कपाट समेटि दड रूप आत्मप्रदेश करै है। ताके अनतरि चौथा समय विषै दड समेटि सर्व प्रदेश मूल शरीर विषै प्रवेश करै है। इहां समुद्घात क्रिया के करने समेटने विषै सात समय भए। तहां दंड के दोय समयनि विषै औदारिक काययोग है, जातै इहां अन्य योग न सभवै है। बहुरि कपाट के दोय समयनि विषै औदारिक मिश्रकाययोग है, जातै इहा मूल औदारिक शरीर अर कार्माण शरीर इन दोऊनि का अवलबन करि आत्मप्रदेश चचल हो है। बहुरि प्रतर के दोय समय अर लोकपूरण का एक समय विषै कार्माणकाययोग है, जातै तहा मूल शरीर का अवलबन करि आत्मप्रदेश चचल न हो है। वा शरीर योग्य नोकर्मरूप पुद्गल कौ नाही ग्रहण करै है। तहा अनाहारक है असा जानना। पीछै मूल शरीर विषै प्रवेश करि तिस शरीर प्रमाण आत्मा भया, तहां औदारिक योग ही है। असै समुद्घात क्रिया का वर्णन किया।

बहुरि लोकपूरण पीछै स्थिति अनुभाग काडक घात का आरंभ कीया था, सो मूल शरीर विषै प्रवेश करि शरीर प्रमाण आत्मा होइ अतर्मुहूर्त काल तहां

विश्राम कीया । तहा सख्यात हजार स्थिति काडक भएं पीछे योगनि का निरोध करै है । इहा निरोध नाम नाश का जानना ।

बादरमण वचि उस्सास, कायजोगं तु सुहुमजचउक्कं ।
रुंभदि कमसो बादरसुहुमेण य कायजोगेण ॥६२८॥

बादरमनो वच उच्छ्वास, काययोगं तु सूक्ष्मजचतुष्कं ।
रुणद्धि क्रमशो बादरसूक्ष्मेण च काययोगेन ॥६२८॥

टीका – बादर काययोग रूप होइ बादर मनोयोग, वचन योग, उश्वास, काय योग इन च्यारयो कौ क्रम तै नष्ट करै है । बहुरि सूक्ष्म काययोग रूप होइ तिन चारयो सूक्ष्मनि कौं क्रम तै नष्ट करै है । सोई कहिए है—

केवली भगवान बादर काययोग प्रवर्ततौ सतौ पहले बादर मनोयोग कौ नष्ट करि सूक्ष्म रूप करै है । पीछै बादर वचन योग कौ नष्ट करि सूक्ष्म रूप करै है । पीछै बादर उश्वास कौ नष्ट करि सूक्ष्मरूप करै है । पीछै बादर काययोग कौ नष्ट करि सूक्ष्मरूप करै है, या प्रकार जो बादर रूप इनकी शक्ति पूर्वै थी, ताकौ घटाइ सूक्ष्म करी । बहुरि केवली सूक्ष्म काययोग रूप प्रवर्ततौ सतौ पहलै सूक्ष्म मनोयोग कौ, पीछै सूक्ष्म वचन योग कौ, पीछै सूक्ष्म उश्वास कौं, पीछै सूक्ष्म काययोग कौ नष्ट करै है ।

इहां प्रश्न–जो विद्यमान का नाश सभवै । इहा काययोग रूप प्रवर्तना अन्य योग है नाही, जातै सिद्धात विषै एकै कालि एक योग कह्या है । बहुरि जे योग नाही, तिनका नाश कैसै करै है ?

ताका समाधान – जो वर्तमान व्यक्तरूप काय योग ही प्रवर्तै है, परतु मन वचन योग की वर्गणानि विषै मन वचन योग उपजावने की शक्ति तहा पाइए है, ताकौ नष्ट करै है । तिनकी पहलै बादर योग उपजावने की शक्ति दूर करि सूक्ष्म कृष्टि योग उपजावने की शक्तिरूप तिनकौ करै है । पीछै ताकौ भी मिटाइ योग उपजावने की शक्ति करि रहित करै है, ऐसा अर्थ जानना ।

इहा कारण विषै कार्य का उपचार हो है; इस न्याय करि योग कौ कारण जो वर्गणानि विषै शक्ति, ताकौ योग कहिए है ।

इहा पूर्वै बादर योग थे, तिनकौ सूक्ष्म रूप परिणमाए, ते कैसै भए ? सो कहिए है—

सण्णिविसुहुमणि पुण्णे, जहण्णमणवयणकायजोगादो ।
कुणदि असंखगुणूणं, सुहुमणिपुण्णवरदो वि उस्सासं ।।६२९।।

संज्ञिद्विसूक्ष्मे पूर्णे, जघन्यमनोवचनकाययोगतः ।
करोति असंख्यगुणोनं, सूक्ष्मनिपूर्णावरतोऽपि उच्छ्वासं ।।६२९।।

टीका – संज्ञी पर्याप्त कै जो जघन्य मनो योग पाइए है, तातै असख्यात गुणा घटता अैसा सूक्ष्म मनोयोग करै है । अर बेंद्रिय पर्याप्त कै जो जघन्य वचन योग पाइए है, तातै असख्यात गुणा बादर वचन योग था, ताकौ घटाइ तातै असख्यात गुणा घटता सूक्ष्म वचन योग करै है । बहुरि सूक्ष्म निगोद पर्याप्त का जघन्य काय योग तै असख्यात गुणा बादर काययोग था, ताकौ मिटाइ तातै असख्यात गुणा घटता सूक्ष्म काययोग करै है । बहुरि सूक्ष्म निगोदिया पर्याप्त का जघन्य उश्वास तै असख्यात गुणा बादर उश्वास था, ताकौ मिटाइ तातै असख्यात गुणा घटता सूक्ष्म उश्वास करै है ।

एक्केक्कस्स णिठंभणकालो अंतोमुहुत्तमेत्तो हु ।
सुहुमं देहणिमाणमाणं हियमाणि करणाणि ।।६३०।।

एकैकस्य निष्टंभनकालो अंतर्मुहूर्तमात्रो हि ।
सूक्ष्मं देहनिर्माणं आनं हीयमानं करणानि ।।६३०।।

टीका – एक एक बादर वा सूक्ष्म मनोयोगादिक के निरोध करने का काल प्रत्येक अंतर्मुहूर्त मात्र जानना । बहुरि सूक्ष्म काययोग विषै तिष्ठता सूक्ष्म उश्वास कौं नष्ट करने के अनंतरि सूक्ष्म काययोग नाश करने कौ प्रवर्तै है ।

ताकै बिना इच्छा अबुद्धिपूर्वक आगै कहिए है, ते कार्य हो है ।

सुहुमस्स य पढमादो, मुहुत्तअंतो त्ति कुणदि हु अपुव्वे ।
पुव्वगफड्ढगहेट्ठा, सेढिस्स असंखभागमिदो ।।६३१।।

सूक्ष्मस्य च प्रथमात्, मुहूर्तांतरिति करोति हि अपूर्वान् ।
पूर्वस्पर्धकाधस्तनं, श्रेण्या असंख्यभागमितं ।।६३१।।

टीका – सूक्ष्म काय योग होने का प्रथम समय तै लगाय अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत पूर्व स्पर्धकनि के नीचै जगच्छ्रेणि के असख्यातवे भाग मात्र अपूर्व स्पर्धक करै है । सोई कहिए है—

पूर्व स्पर्धकनि का स्वरूप गोम्मटसार का कर्मकाड विषै जो बध, सत्त्व, उदय अधिकार है, तिस विषै प्रदेश बध का कथन का प्रसग पाइ योगनि का वर्णन कीया है, तहा तै जानना; इहा भी किछू कहिए है—

जघन्य योगस्थान युक्त जीव, ताके लोक मात्र प्रदेश तिन विषै जिस प्रदेश विषै सब तै स्तोक योग शक्ति पाइए ताकौ स्थापि, ताके उपरि तिस तै बधती अर अन्य प्रदेशनि तै हीन जिस अन्य प्रदेश विषै योग शक्ति पाइए, ताकौ स्थापे, तिस प्रदेश तैं विषैं जितनी योग शक्ति बधती है, ताका नाम अविभाग प्रतिच्छेद है। बुद्धि विषै इतने प्रमाण खड कल्पि याकरि योगशक्ति का प्रमाण कीजिए तव जघन्य शक्ति युक्त प्रदेशनि विषै असख्यात लोक मात्र अविभाग प्रतिच्छेद हो है। इनका समूह रूप जो एक प्रदेश, ताकौ जघन्य वर्ग कहिए है। बहुरि इतने-इतने अविभाग प्रतिच्छेद जिनि प्रदेशनि विषै समान रूप पाइए, तिनिके समूह का नाम जघन्य वर्गणा है। ते प्रदेश कितने है ?

सर्व जीव के प्रदेशनि कौ साधिक ड्योढ गुणहानि का भाग दीए एक भाग मात्र हैं, सो असख्यात जगत्प्रतर प्रमाण है। इहा एक गुणहानि विषै जो स्पर्धकनि का प्रमाण, ताकौं एक स्पर्धक विषै जो वर्गणानि का प्रमाण, ताकौ गुणैं जो होइ, सो एक गुणहानि का प्रमाण जानना। बहुरि ताके उपरि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तै एक अविभाग प्रतिच्छेद जिनि विषै अधिक पाइए, असै वर्गनि का समूह रूप द्वितीय वर्गणा है। ते वर्गरूप प्रदेश कितने है ?

जघन्य वर्गणा के प्रदेशनि तै एक विशेष मात्र घटती है। विशेष का प्रमाण जघन्य वर्गणा कौ दोय गुणहानि का भाग दीए, जो होइ, सो जानना। बहुरि इहा तै ऊपरि द्वितीय गुणहानि की प्रथम वर्गणा पर्यंत वर्गणानि विषै प्रदेश रूप वर्गणानि का प्रमाण एक एक विशेष मात्र घटता क्रम तै जानना।

तहा द्वितीय वर्गणा का वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तै एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप तृतीय वर्गणा होइ असै एक एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का क्रम लीए जगच्छ्रेणि का असख्यातवा भाग मात्र वर्गणानि की रचना करिए, इनका समूह का नाम जघन्य स्पर्धक है। बहुरि ताके ऊपरि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तै दूणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा हो है। ताके ऊपरि तातै एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप, ताकी द्वितीय वर्गणा है, असै क्रम

लीएं श्रेणी का असख्यातवां भाग मात्र वर्गणा होइ, तिनके समूह का नाम द्वितीय स्पर्धक है । बहुरि ताके ऊपरि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि तै तिगुणा अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप तृतीय स्पर्धक की प्रथम वर्गणा होइ । ताके ऊपरि पूर्वोक्तवत् एक एक अधिक अविभाग प्रतिच्छेद अधिक युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीयादि वर्गणा होइ, असै श्रेणी का असख्यातवा भाग मात्र वर्गणा होइ, तिनके समूह का नाम तृतीय स्पर्धक है । या प्रकार अविभाग प्रतिच्छेद वधने का यावत् अनुक्रम होइ तावत् सोई स्पर्धक अर युगपत् अनेक स्पर्धक बधै, अन्य स्पर्धक होइ । सो असै जगच्छ्रेणि के असख्यातवे भाग मात्र स्पर्धक भए, तिनिका समूह रूप प्रथम गुणहानि हो है । बहुरि ताके ऊपरि एक गुणहानि विषै जो स्पर्धकनि का प्रमाण तातै एक अधिक प्रमाण करि गुणित जो जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण होइ तितने अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय गुणहानि का प्रथम स्पर्धक की प्रथम वर्गणा होइ । या विषै वर्गनि का प्रमाण प्रथम गुणहानि की प्रथम वर्गणा के वर्गनि का प्रमाण तै आधा जानना । बहुरि ताके ऊपरि प्रथम गुणहानिवत् अनुक्रम जानना । वर्गणानि विषै वर्गनि का प्रमाण एक एक विशेष घटता है । सो इहा विशेष का प्रमाण प्रथम गुणहानि के विशेष तै आधा जानना । असै द्वितीय गुणहानि समाप्त होइ है ।

असै जघन्य स्पर्धक तै लगाय जितने स्पर्धक होइ तितना गुणकार करि जघन्य वर्ग के अविभाग प्रतिच्छेदनि कौ गुणै विवक्षित स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का वर्ग विषै अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण होइ । ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानि विषै एक एक अविभाग प्रतिच्छेद बधता क्रम लीए वर्ग पाइए है । असख्यात लोक मात्र अविभाग प्रतिच्छेदनि का समूह रूप एक प्रदेश का नाम वर्ग है । असख्यात जगत्प्रतर मात्र वर्गनि का समूह रूप एक वर्गणा है । जगच्छ्रेणि के असंख्यातवे भाग मात्र वर्गणानि का समूह रूप एक स्पर्धक है । ताके असख्यातवे भाग मात्र जगच्छ्रेणि का असंख्यातवां भाग प्रमाण स्पर्धकनि का समूह रूप एक गुणहानि हो है । गुणहानि गुणहानि प्रति वर्गणानि विषै वर्गनि का प्रमाण वा विशेष का प्रमाण क्रम तै आधा आधा हो है । याही तै गुणहानि असा नाम है । असै पल्य का असख्यातवा भाग मात्र नाना गुणहानि का समूह रूप जघन्य योगस्थान हो है । स्पर्धकनि की सदृष्टि इहां जघन्य वर्ग विषै अविभाग प्रतिच्छेद आठ, सो असै वर्गनि का समूह रूप प्रथम वर्गणा है, ताके ऊपरि नव नव अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्गनि का समूह रूप द्वितीय वर्गणा

ऐसें एक एक बधता क्रम ग्यारह अविभाग प्रतिच्छेद युक्त वर्ग पर्यंत कीया, इहां प्रथम स्पर्धक भया। बहुरि दूसरे स्पर्धक के प्रथम वर्गणा के वर्गनि विषै सोलह सोलह अविभाग प्रतिच्छेद ऊपरि एक एक बधता बहुरि तीसरे स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के वर्गनि विषै चौईस चौईस ऊपरि एक एक बधता अविभाग प्रतिच्छेद है। ऐसैं अंक सदृष्टि करि पूर्वोक्त कथन के अनुसारि रचना जाननी—

	अंतर		अंतर		अंतर		अंतर	
११	०	१९	०	२७	०	३५	०	४३
१० १०	०	१८ १८	०	२६ २६	०	३४ ३४	०	४२ ४२
९ ९ ९	०	१७ १७ १७	०	२५ २५ २५	०	३३ ३३ ३३	०	४१ ४१ ४१
८ ८ ८ ८	०	१६ १६ १६ १६	०	२४ २४ २४ २४	०	३२ ३२ ३२ ३२	०	४० ४० ४० ४०

ऐसें जघन्य योगस्थान सूक्ष्म निगोदिया लब्धि अपर्याप्त का विग्रहगति विषै प्रथम समयवर्ती जीव कै हो है। ताके प्रदेशनि विषै योगशक्ति की हीन-अधिकता पूर्वोक्त प्रकार जाननी। बहुरि या विषै सूच्यंगुल का असख्यातवा भाग मात्र जे जघन्य स्पर्धक, तिनके जेते अविभाग प्रतिच्छेद होइ, तितने मिलाए दूसरा स्थान हो है। तिस जघन्य योगस्थान तै बधता औरनि तै घटता योगस्थान कोई जीव के होइ तो दूसरा स्थान होइ, यातै घाटि न होइ। या प्रकार एक एक स्थान प्रति सूच्यगुल का असख्यातवा भाग मात्र जघन्य स्पर्धक बधैं। ऐसें जगच्छ्रेणि का असख्यातवा भाग मात्र स्थान भएं सर्वोत्कृष्ट योगस्थान हो है। सो सज्ञी पर्याप्तक कै सभवै है। याप्रकार योगस्थान है, तिन विषै सयोगि जिन है, सो पहिली सज्ञी पर्याप्त कै सभवता जो बादर काययोग रूप स्थान, तिस रूप प्रवर्ततौ ताकौ नष्ट करि सूक्ष्म निगोदिया का जघन्य स्थान तै असख्यात गुणा घटता सूक्ष्म काययोग तिसरूप प्रवर्त्या। बहुरि तिस पूर्व स्पर्धक रूप सूक्ष्म काययोग की शक्ति कौ अपूर्व स्पर्धक रूप परिणमावे है। इहा तै पहलै कबहू ऐसी क्रिया न भई, तातै सार्थक अपूर्व स्पर्धक नाम है। ते अपूर्व स्पर्धक योगनि का जघन्य स्थान सबधी जघन्य स्पर्धक के नीचै असख्यात गुणा घटता अविभाग प्रतिच्छेद लीए हो है। तिनका प्रमाण जगच्छ्रेणि के असख्यातवा भाग प्रमाण है।

पुव्वादिवग्गणाणं, जीवपदेसा विभागपिंडादो।
होदि असंखं भागं, अपुव्वपढमम्हि ताण दुगं ॥६३२॥

पूर्वादिवर्गणानां, जीवप्रदेशाविभागपिंडतः ।
भवति असंख्यं भागमपूर्वप्रथमे तयोर्द्विकम् ॥६३२॥

टीका – पूर्वस्पर्धकनि के जीव के प्रदेशनि का पिंड तै अर आदि वर्गणा का अविभाग प्रतिच्छेदनि का पिंड तै अपूर्व स्पर्धक का प्रथम समय विषै तिनके ते दोऊ असंख्यातवे भाग मात्र हो है।

भावार्थ–पूर्व स्पर्धकनि के सर्व प्रदेश साधिक द्व्यर्धगुणहानि गुणित प्रथम वर्गणा मात्र है । तिनकौं अपकर्षण भागहार मात्र असख्यात का भाग दीए जो एक भाग मात्र प्रदेश, तिनकौ अपूर्व स्पर्धक रूप करे है । बहुरि पूर्व स्पर्धकनि की जो आदि वर्गणा, ताका वर्ग विषै जेते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है, ताकौ पल्य के असंख्यातवां भाग मात्र असख्यात का भाग दीए तहा एक भाग मात्र अपूर्वस्पर्धक की अंत वर्गणा का वर्ग विषै अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है । इहा प्रथम समय विषै अपकर्षण कीए जे जीव के प्रदेश, तिनि विषै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै तो बहुत प्रदेश दीजिए है । अर द्वितीयादि अत पर्यंत वर्गणानि विषै विशेप घटता क्रम लीए दीजिए है । इहां विशेष का प्रमाण प्रथम वर्गणा कौ जगच्छ्रेणि का असख्यातवां भाग का भाग दीए आवै है । बहुरि अपूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा विषै दीया प्रदेश समूह कौ साधिक अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र पूर्वस्पर्धक[1] की प्रथम वर्गणा विषै दीया प्रदेश समूह हो है । ताके ऊपरि यथोचित विशेष घटता क्रम लीए प्रदेश दीजिए है । इहा प्रदेश देने का अर्थ यहु जानना । जो प्रदेशनि कौ अैसं योगरूप परिणमाइए है । इहा प्रथम समय विषै कीने अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण जो एक गुणहानि विषै पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण है, ताके असख्यातवे भाग मात्र जानना ।

ओक्कट्टदि पडिसमयं, जीवपदेसे असंखगुणियकमे ।
कुणदि अपुव्वफड्ढयं, तग्गुणहीणक्कमेणेव ॥६३३॥

अपकर्षति प्रतिसमयं, जीव प्रदेशान् असंख्यगुणितक्रमेण ।
करोति अपूर्वस्पर्धकं, तद्गुणहीनक्रमेणैव ॥६३३॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषै समय-समय प्रति असख्यात गुणा क्रम करि जोव प्रदेशनि कौ अपकर्षण करै है । बहुरि असंख्यात गुणा घटता क्रम करि नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है । तहां द्रव्य देने का विधान कहिए है—

१–पूर्वस्पर्धक के स्थान पर ख प्रति मे अपूर्वस्पर्धक पाठ मिलता है ।

द्वितीय समय विषै जेते प्रथम समय विषै प्रदेश अपकर्षण कीए, तिनि तै असख्यात गुणा प्रदेशनि कौ अपकर्षण करि प्रथम समय विषै कीने थे जे अपूर्वस्पर्धक, तिनके नीचे इस समय विषै नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है । तहा अपकर्षण कीए प्रदेशनि विषै तिन नवीन कीए अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै बहुत प्रदेश दीजिए है । ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यंत वर्गणानि विषै विशेष घटता क्रम लीए दीजिए है । यहा प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धकनि तै द्वितीय समय विषै कीए नवीन अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण असख्यात गुणा घटता जानना । बहुरि तिसकी अत वर्गणा के ऊपरि प्रथम समय विषै कीए अपूर्व स्पर्धकनि की प्रथम वर्गणा, तीहि विषै तातै असख्यात गुणा घटता दीजिए है । ताके ऊपरि पूर्व स्पर्धक की अत वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए दीजिए है । बहुरि तृतीयादि समयनि विषै भी अैसे ही विधान जानना ।

विशेष इतना—समय-समय प्रति अपकर्षण कीए प्रदेशनि का प्रमाण असख्यात गुणा क्रम तै जानना । अर नीचे-नीचे नवीन अपूर्व स्पर्धक करिए है, तिनका प्रमाण असख्यात गुणा घटता क्रम तै जानना । बहुरि तहा अपकर्षण कीया प्रदेशनि विषै नवीन स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै बहुत प्रदेश देइ । ताके ऊपरि ताकी अत वर्गणा पर्यंत तौ विशेष घटता क्रम लीए देना । अर ताके ऊपरि पूर्व समय विषै कीने स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै असख्यात गुणा घटता दीजिए है । ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीए दीजिए है । अैसे देय प्रदेशनि का विधान कह्या अर दृश्यमान प्रदेश सर्व समयनि विषै पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि के विशेष घटता क्रम लीए ही जानना ।

सेढिपदस्स असंखं, भागं पुव्वाण फड्ढयाणं वा ।
सव्वे होंति अपुव्वा, हु फड्डया जोगपडिबद्धा ।।६३४।।

श्रेणिपदस्यासंख्यं, भागं पूर्वेषां स्पर्धकानां वा ।
सर्वे भवंति अपूर्वा, हि स्पर्धका योगप्रतिबद्धाः ।।६३४।।

टीका – सर्व समयनि विषै कीए योग सबधी अपूर्व स्पर्धक, तिनिका जो प्रमाण सो जगच्छ्रेणि का प्रथम वर्गमूल के असख्यातवे भाग मात्र है । अथवा सर्व पूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण के असख्यातवे भाग मात्र है । जातै पूर्व स्पर्धकनि विषै पल्य का असख्यातवा भाग मात्र गुणहानि पाइए है । तहा एक गुणहानि विषै जो स्पर्धकनि का प्रमाण, ताके असख्यातवे भाग मात्र सर्व अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण है । (ऐसे

अंतर्मुहूर्त काल विषै अपूर्वस्पर्धकनि का प्रमाण है ।)[1] ऐसै अंतर्मुहूर्त काल विषै अपूर्व स्पर्धक क्रिया हो है । इहां स्थिति अनुभाग कांडक का घात गुणश्रेणी निर्जरा पूर्ववत् ही प्रवर्तै है ।

एत्तो करेदि किट्टिं, मुहुत्तअंतो त्ति ते अपुव्वाणं ।
हेट्ठा दु फड्ढयाणं, सेढिस्स असंखभागमिदं ॥६३५॥

इतः करोति कृष्टिं मुहूर्तांतरिति ता अपूर्वेषाम् ।
अधस्तनात् स्पर्धकानां श्रेण्या असंख्यभागमितं ॥६३५॥

टीका – याके अनंतरि अंतर्मुहूर्त काल पर्यंत अपूर्व स्पर्धकनि के नीचै सूक्ष्म कृष्टि करै है । जो पूर्व अपूर्व स्पर्धकरूप योग शक्ति थी, ताकौ घटाइ असंख्यात गुणी घाटि करै है । तिन सूक्ष्म कृष्टिनि का प्रमाण जगच्छ्रेणि के असंख्यातवें भाग मात्र है । एक स्पर्धक विषै जो वर्गणानि का प्रमाण, ताके असंख्यातवें भाग मात्र है ।

अपुव्वादिवग्गणाणं, जीवपदेसाविभागपिंडादो ।
होंति असंखं भागं, किट्टीपढमम्हि ताण दुगं ॥६३६॥

अपूर्वादिवर्गणानां, जीवप्रदेशाविभागपिंडतः ।
भवंति असंख्यं भागं, कृष्टिप्रथमे तयोर्द्विकम् ॥६३६॥

टीका – अपूर्व स्पर्धक संबंधी सर्व जीव प्रदेशनि कै अर अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के अविभाग प्रतिच्छेदनि के असंख्यातवें भाग मात्र कृष्टिकरण का प्रथम समय विषै तिनके ते दोऊ हो है ।

भावार्थ–सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धकनि का जो प्रदेश समूह, ताकौ अपकर्षण भागहार का भाग दीए एक भाग मात्र प्रदेश प्रथम समय विषै ग्रहि कृष्टि करिए है । सो इनिका प्रमाण सर्व अपूर्व स्पर्धकनि के प्रदेशनि का प्रमाण के असंख्यातवें भाग मात्र है । बहुरि अपूर्व[2] स्पर्धकनि की जघन्य वर्गणा के वर्ग के जेते अविभाग प्रतिच्छेद हैं, तिनके असंख्यातवें भाग मात्र उत्कृष्ट अंतकृष्टि के एक प्रदेश संबंधी अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है ।

बहुरि इहां प्रथम समय विषै अपकर्षण कीया प्रदेश देने का विधान कहिए है–जघन्य कृष्टि विषै बहुत प्रदेश दीजिए है । ताके ऊपरि द्वितीयादि अंत पर्यंत

१–इतना वाक्य घ प्रति मे मिलता है ।
२–अपूर्व के स्थान पर अ और ख प्रति मे पूर्व पाठ मिलता है ।

कृष्टिनि विषै विशेष घटता क्रम लीए (द्रव्य) दीजिए है। इहा विशेष का प्रमाण प्रथम कृष्टि कौं जगच्छ्रेणि का असख्यातवा भाग का भाग दीए आवै है। बहुरि अत कृष्टि तै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै असख्यात गुणा घाटि दीजिए है। बहुरि उपरि विशेष घटता क्रम लीए प्रदेश दीजिए है। इहा प्रथम समय विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण है, सौ एक स्पर्धक विषै जितना वर्गणानि का प्रमाण, ताके असंख्यातवे भाग मात्र है।

उक्कट्टदि पडिसमयं, जीवपदेसे असंखगुणियकमे।
तंगुणहीणकमेण य, करेदि किट्टिं तु पडिसमए ॥६३७॥

अपकर्षति प्रतिसमयं, जीवप्रदेशान् असंख्यगुणितक्रमेण।
तद्गुणहीनक्रमेण च, करोति कृष्टिं तु प्रतिसमयं ॥६३७॥

टीका – द्वितीयादि समयनि विषै समय-समय प्रति असख्यात गुणा क्रम करि जीव के प्रदेशनि कौं अपकर्षण करै है। बहुरि समय-समय प्रति पूर्व समय विषै कीनी जे कृष्टि, तिनके नीचे असख्यात गुणा घटता क्रम लीए नवीन कृष्टि करै है।

इहा अपकर्षण कीया प्रदेश देने का विधान कहिए है-नवीन कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषै जो बहुत प्रदेश दीजिए है, ताके ऊपरि द्वितीयादि अत पर्यंत कृष्टिनि विषै विशेष घटता क्रम लीए दीजिए है। ताके ऊपरि पूर्व समय विषै कीनी कृष्टि की प्रथम कृष्टि विषै असख्यात गुणा घटता दीजिए है। इस कृष्टि विषै पूर्व जेते प्रदेश थे, तितने अर एक विशेष इतना प्रदेश नवीन अत कृष्टि तै या विषै घाटि दीजिए है है। बहुरि ताके ऊपरि अत कृष्टि पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए दीजिए है। इहा मध्यम खडादि विधान पूर्वोक्त प्रकार जानना। बहुरि अत कृष्टि विषै दीया द्रव्य तै अपूर्व स्पर्धक की आदि वर्गणा विषै दीया प्रदेश सख्यात गुणा जानना। ताके ऊपरि अत पूर्वस्पर्धक वर्गणा पर्यंत विशेष घटता क्रम लीए प्रदेश दीजिए है।

सेढिपदस्स असंखं, भागमपुव्वाण फड्ढयाणं व।
सव्वाओ किट्टीओ, पल्लस्स असंखभागगुणिदकमा ॥६३८॥

श्रेणिपदस्य असंख्यं, भागं अपूर्वेषां स्पर्धकानां वा।
सर्वाः कृष्टयः पल्यस्य, असंख्यभागगुणितक्रमाः ॥६३८॥

टीका – सर्व समयनि विषै कीनी कृष्टिनि का प्रमाण जगच्छ्रेणि का असख्यातवा भाग मात्र है। अथवा अपूर्व स्पर्धकनि का प्रमाण के असख्यातवा भाग मात्र है।

इहां कोऊ कहै–स्पर्धक अर कृष्टि विषै विशेष कहा ?

ताका समाधान–अविभाग प्रतिच्छेद अपेक्षा स्पर्धक तौ विशेष बधता क्रम लीए है। अपूर्व स्पर्धकनि विषै भी पूर्व स्पर्धकवत् ही अविभाग प्रतिच्छेदनि का क्रम पाइए है। बहुरि कृष्टि है सो गुणकार बधता क्रम लीए है अैसा विशेष है। कृष्टिनि विषै गुणकार पल्य का असख्यातवा भाग मात्र जानना। अत कृष्टि विषै समान अविभाग प्रतिच्छेद युक्त असख्यात जगतप्रतर प्रमाण जीव प्रदेश है। तिन विषै जो एक प्रदेश तीहि विषै जेते अविभाग प्रतिच्छेद है, तिनतै द्वितीय कृष्टि का एक प्रदेश विषै पल्य का असख्यातवा भाग गुणे है। तातै तृतीय कृष्टि का एक प्रदेश विषै तितने गुणे है, अैसै अंत कृष्टि पर्यत क्रम जानना। अत कृष्टि तै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा का एक प्रदेश विषै अविभाग प्रतिच्छेद पल्य का असख्यातवा भाग गुणा है। इस गुणकार कौ कृष्टि स्पर्धक सबधी कहिए, ताके ऊपरि द्वितीयादि वर्गणानि के प्रदेशनि विषै यथासभव स्पर्धक विधानवत् विशेष बधते अविभाग प्रतिच्छेद पाइए है, अैसै एक एक प्रदेश अपेक्षा कथन कीया। नाना प्रदेशनि की अपेक्षा जघन्य कृष्टि के सर्व प्रदेश सबधी अविभाग प्रतिच्छेदनि कौ पल्य का असख्यातवा भाग करि गुणे द्वितीय कृष्टि के सर्व अविभाग प्रतिच्छेदनि का प्रमाण हो है। अैसे अत कृष्टि पर्यत गुणकार जानना। बहुरि अत कृष्टि तै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा के सर्व प्रदेश सबंधी अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात गुणे घाटि है। जातै अपूर्व स्पर्धक की प्रथम वर्गणा विषै अविभाग प्रतिच्छेद अत कृष्टि तै जेते गुणे है, तिस गुणकार तै असख्यात गुणे गुणकार करि गुणित तिस प्रथम वर्गणा के प्रदेश मात्र अत कृष्टि के प्रदेश पाइए है।

एत्थापुव्वविहाणं, अपुव्वफड्ढयविहिं व संजलणे।
बादरकिट्टिविहिं वा, करणं सुहुमाण किट्टीणं ॥६३६॥

अत्रापूर्वविधानं, अपूर्वस्पर्धकविधिरिव संज्वलने।
बादरकृष्टिविधिरिव, करणं सूक्ष्माणां कृष्टीनां ॥६३६॥

टीका – इहा योगनि के अपूर्व स्पर्धक करने का विधान जैसे पूर्वे संज्वलन कषाय के अपूर्व स्पर्धक करने का विधान कह्या, तैसै जानना। बहुरि इहां योगनि की

[illegible] करने का विधान पूर्वं जैसें सज्वलन कषाय की बादर कृष्टि करने का विधान कह्या है, तैसें जानना । प्रमाणादिक का विशेप है, सो विशेष जानना ।

किट्टीकरणे चरमे, से काले उभयफड्ढये सव्वे ।
णासेइ मुहुत्तं तु, किट्टीगदवेदगो जोगी ॥६४०॥

कृष्टिकरणचरमे, स्वे काले उभयस्पर्धकान् सर्वान् ।
नाशयति मुहूर्तं तु, कृष्टिगतवेदको योगी ॥६४०॥

टीका – कृष्टि करण काल का अत समय भए, ताके अनंतरि अपने काल विषै सर्व पूर्व अपूर्व स्पर्धक रूप प्रदेशनि कौ नष्ट करै है । कृष्टि करण काल का अंत समय पर्यंत पूर्व अपूर्व स्पर्धक दृश्यमान थे, अब ते सर्व ही कृष्टि रूप परिणमे, बहुरि इस समय तै लगाय सयोगी गुणस्थान का अंत पर्यंत जो अंतर्मुहूर्त काल, तिस विषै कृष्टि को प्राप्त योग, ताकौ वेदे है–अनुभवे है । प्रदेशनि विषै जो कृष्टि रूप योग शक्ति भई, सो अब वह प्रगट परिणामै है ।

प्रथमे असंखभागं, हेट्ठुवरिं णासिदूण बिदियादी ।
हेट्ठुवरिमसंखगुणं, कमेण किट्टि विणासेदि ॥६४१॥

प्रथमे असंख्यभागं, अधस्तनोपरि नाशयित्वा द्वितीयादौ ।
अधस्तनोपर्यसंख्यगुणं, क्रमेण कृष्टिं विनाशयति ॥६४१॥

टीका – कृष्टि वेदक काल का प्रथम समय विषै स्तोक अविभाग प्रतिच्छेद युक्त नीचे की अर बहुत अविभाग प्रतिच्छेद युक्त ऊपरि की जे कृष्टि, तिनकौ बीचि की कृष्टि रूप परिणमाइ नष्ट करै है । तिनका प्रमाण सर्व कृष्टिनि के असख्यातवे भाग मात्र है । बहुरि द्वितीयादि समयनि विषै तिनतै असख्यात गुणा क्रम लीए नीचे ऊपरि की कृष्टिनि कौ तैसें ही नष्ट करै है । इहा अैसा जानना—

नीचै ऊपरि की कृष्टिनि कौ नाही वेदै है । बीचि की कृष्टिनि कौ वेदै है । वेदक काल विषै नीचै ऊपरि की कृष्टि है, तिनिकौ बीचि की कृष्टि रूप परिणमाइ वेदै है ।

मज्झिम बहुभागुदया, किट्टि पक्खिय विसेसहीणकमा ।
पडिसमयं सत्तीदो, असंखगुणहीणया होंति ॥६४२॥

मध्या बहुभागोदयाः, कृष्टिमपेक्ष्य विशेषहीनक्रमाः ।
प्रतिसमयं शक्तितः, असंख्यगुणहीनका भवंति ॥६४२॥

टीका – सर्व कृष्टिनि कौं असख्यात का भाग दीए तहा वहुभाग मात्र जे बीचि की कृष्टि, ते उदय रूप हो है। ते प्रथम समय तै द्वितीयादि समयनि विषै विशेष घटता क्रम लीएं जाननी। ऐसैं कृष्टि नाश करने तै अविभाग प्रतिच्छेद रूप शक्ति अपेक्षा प्रथम समय तै द्वितीयादि सयोगी का अत समय पर्यंत असख्यात गुणा घटता क्रम लीए योग पाइए है।

किट्टिगजोगी झाणं, झायदि तदियं खु सुहुमकिरियं तु।
चरिमे असंखभागे, किट्टीणं णासदि सजोगी ॥६४३॥

कृष्टिगयोगी ध्यानं ध्यायति तृतीयं खलु सूक्ष्मक्रियं तु।
चरमे असंख्यभागान् कृष्टीनां नाशयति सयोगी ॥६४३॥

टीका – ऐसें सूक्ष्मकृष्टि का वेदक, जो सयोगी जिन, सो तीसरा सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति नामा शुक्लध्यान कौं ध्यावै है। सूक्ष्म कृष्टि कौं प्राप्त काययोग जनित इहां क्रिया जो परिस्पंद सो पाइए है। अर अप्रतिपाति कहिए पडने तै रहित है, तातै तिस ध्यान का नाम सार्थ है। याका फल योग निरोध होना ही जानना। यद्यपि प्रत्यक्ष निरंतर ज्ञानी कै चिता निरोध लक्षरण रूप ध्यान सभवै नाही तथापि योगनि का निरोध होतै आस्रव निरोध होने रूप ध्यान फल कौं देखि उपचार तै केवली कै ध्यान कह्या है। अथवा छद्मस्थनि कै चिता का कारण योग है, तातै कारण विषै कार्य का उपचार करि योग का भी नाम चिता है। ताका इहां निरोध हो है। तातै भी ध्यान कहना सभवै है। छद्मस्थनि कै चिता का निरोध का नाम ध्यान है, केवली के योग निरोध का नाम ध्यान है ऐसा जानना। ऐसै पूर्वोक्त प्रकार समय-समय प्रति असंख्यात गुणा क्रम लीए कृष्टिनि कौं नष्ट करता सता सयोगी का अत समय विषै जे कृष्टिनि का सख्यात बहुभाग मात्र बीचि की कृष्टि अवशेष रही, तिनि कौं नष्ट करै है। जातै याके अनतरि अयोगी होना है।

जोगिस्स सेसकालं, मोत्तूण अजोगिसव्वकालं च।
चरिमं खंडं गेण्हदि, सीसेण य उवरिमठिदीओ ॥६४४॥

योगिनः शेषकालं, मुक्त्वा अयोगिसर्वकालं च।
चरमं खंडं गृह्णाति, शीर्षेण च उपरिस्थितिः ॥६४४॥

टीका – सयोगी गुणस्थान का अतर्मुहूर्त मात्र काल अवशेष रहैं वेदनी, नाम, गोत्र का अतस्थिति कांडक कौं ग्रहै है। ताकरि सयोगी का जो अवशेप काल रह्या

नो अर अयोगी का सर्व काल मिलाए जो होइ तितने निषेकनि कि छौडो अवशेष सर्व स्थिति के गुणश्रेणी शीर्ष सहित जे उपरितन स्थिति के निषेक, तिनकौ लाछित करै है । नष्ट करने कौ प्रारभै है ।

तत्थ गुणसेढिकरणं, दिज्जादिकमो य सम्मखवणं वा ।
अंतिमफालीपडणं, सजोगगुणठाणचरिमम्हि ॥६४५॥

तत्र गुणश्रेणिकरणं, देयादिक्रमश्च सम्यक्षपणमिव ।
अतिमस्फालिपतनं, सयोगगुणस्थानचरमे ॥६४५॥

टीका – तहा गुणश्रेणी का करना वा तहा देय द्रव्यादिक का अनुक्रम सो जैसै पूर्वै क्षायिक सम्यक्त्व होतै सम्यक्त्व मोहनी का क्षपणाविधान विषै कह्या था, तैसै जानना । अत काडक के द्रव्य कौ अपकर्षण करि पूर्वोक्त क्रम तै उदय निषेक विषै स्तोक द्रव्य दीजिए है । ताके ऊपरि काडक घात भए पीछै जो अवशेष स्थिति रहेगी, ताका अत समय पर्यत असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । यहा यहु गुणश्रेणी आयाम प्रारभ भया, सो गलितावशेष जानना । बहुरि इसका अत समय सबधी निषेक ही का नाम गुणश्रेणी शीर्ष है । बहुरि इसतै याके ऊपरि जो स्थिति काडक का प्रथम निषेक, ताविषै असख्यात गुणा द्रव्य दीजिए है । ताके ऊपरि पूर्वै जो गुणश्रेणी आयाम था, ताका अत पर्यंत विशेष घटता क्रम करि दीजिए है, ताके ऊपरि जो अनतरवर्ती निषेक, ता विषै असख्यात गुणा घटता द्रव्य दीजिए है । ताके ऊपरि विशेष घटता क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । ऐसै अत काडकोत्करण का प्रथमादि समय विषै द्रव्य देने का विधान है । सो ऐसे अत काडक की द्विचरम फालि का पतन रूप जो सयोगी का द्विचरम समय तहा पर्यंत तौ ऐसै ही विधान है । बहुरि सयोगी का अत समय विषै तिनकी अत फालि का पतन हो है । तहा तिस अत फालि के द्रव्य कौ उदय निषेक विषै स्तोक अर द्वितीयादि अयोगी का अत समय सबधी पर्यत निषेकनि विषै असख्यात गुणा क्रम लीए द्रव्य दीजिए है । तहा विशेष है सो जानि लेना । ऐसै सयोगी का अत समय विषै अघातियानि के अत काडक की अत फालि का पतन अर योग का निरोध अर सयोग गुणस्थान की समाप्ति युगपत् हो है । यातै उपरि गुणश्रेणी अर स्थिति अनुभाग का घात न हो है । अध स्थिति गलन करि एक एक समय विषै एक एक निषेक क्रम तै उदय रूप होइ निर्जरै है । सो समय समय असख्यात गुणा द्रव्य की निर्जरा प्रवर्तै है । ऐसै सयोग गुणस्थान का प्ररूपण समाप्त भया ।

से काले जोगिजिणो, ताहे आउगसमा हि कम्माणि ।
तुरियं तु समुच्छिण्णं, किरियं झायदि अयोगिजिणो ।।६४६।।

स्वे काले योगिजिनः, तत्र आयुष्कसमानि कर्माणि ।
तुरीयं तु समुच्छिन्नक्रियं ध्यायति अयोगिजिनः ।।६४६।।

टीका – ताके अनतरि अपने काल विषै अयोगी जिन हो है । तहा आयु समान तीन अघातियानि की स्थिति हो है । सो अयोगी जिन, चौथा समुच्छिन्न क्रियानिवृत्ति नामा शुक्ल ध्यान कौ ध्यावै है । सो समुच्छिन्न कहिए उच्छेद भई मन, वचन, काय की क्रिया अर निवृत्ति जो प्रतिपात, ताकरि रहित यहु ध्यान है, तातै याका नाम सार्थ है । इहा भी ध्यान का उपचार पूर्वोक्त प्रकार जानना, जातै वस्तु वृत्ति करि एकाग्र चितानिरोध ध्यान का लक्षण है, सो केवली विषै सभवै नाही । **समस्त आस्रव रहित केवली कै अवशेष कर्म निर्जरा को कारण जो स्वात्मा विषै प्रवृत्ति, ताही का नाम ध्यान है ।**

सीलेसिं संपत्तो, णिरुद्धणिस्सेसआसओ जीवो ।
बंधरयविप्पमुक्को, गयजोगो केवली होइ ।।६४७।।

शीलेशत्व संप्राप्तो, निरुद्धनिःशेषास्रवो जीवः ।
बंधरजोविप्रमुक्तः, गतयोगः केवली भवति ।।६४७।।

टीका – गया है योग जाका अैसा अयोग केवली जीव है, सो समस्त शील गुण का स्वामीपना होने तै शैलेश्य अवस्था को प्राप्त हो गया है । यद्यपि सयोगी जिन कौं समस्त शील गुण का स्वामीपना सभवै है, परतु योगनि का आस्रव पाइए है । तातै सकल सवर के न सभवनै तै ताके शैलेश्य अवस्था न सभवै है । अयोगी कै योगास्रव भी न पाइए है तातै सकल सवर होने तै ताके शैलेश्य अवस्था सभवै है । बहुरि सो अयोगी जीव निरोधे है, समस्त आस्रव जानै अैसा है । बहुरि कर्मबधरूपी रजकरि विप्रमुक्त कहिए रहित है ।

भावार्थ यहु – अयोगी जिन सर्वथा निरास्रव निर्बध भया है ।

बाहत्तरिपयडीओ, दुचरिमगे तेरसं च चरिमम्हि ।
झाणजलणेण कवलिय, सिद्धो सो होदि से काले ।।६४८।।

द्वासप्तति प्रकृतयः द्विचरमके त्रयोदश च चरमे ।
ध्यानज्वलनेन कवलितः सिद्धः स भवति स्वे काले ।।६४८।।

टीका – अयोगी का काल पाच ह्रस्व अक्षर जेते काल करि उच्चारण करिए तितना है । तहा एक एक समय विषै एक एक निषेक गलन रूप जो अध स्थिति गलन ताकरि क्षीण हुई तिस काल का द्विचरम समय विषै बहत्तरि प्रकृति अर अत समय विषै तेरह प्रकृति शुक्लध्यान रूपी ज्वलन जो अग्नि, ताकरि कवलित कहिए ग्रासीभूत हो है । तहा अनुदयरूप वेदनीय, देवगति, शरीर ५, बधन ५, संघात ५, सस्थान ६, अगोपाग ३, संहनन ६, वर्णादिक २०, देवगत्यानुपूर्वी, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उश्वास, अप्रशस्त प्रशस्त विहायोगति, अपर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, दुर्भग, सुस्वर, दु स्वर, अनादेय, अयशस्कीर्ति, निर्माण, नीच गोत्र ए बहत्तरि प्रकृति तौ द्विचरम विषै क्षय भई । बहुरि उदयरूप वेदनीय, मनुष्य आयु, मनुष्य गति, पचेद्री जाति, मनुष्यानुपूर्वी, त्रस, बादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशस्कीर्ति तीर्थंकर, उच्चगोत्र ए तेरह प्रकृति अत समय विषै क्षय भई । असै क्षय करि अनंतर समय विषै सिद्ध हो है । जैसे कालिमा रहित शुद्ध सोना निष्पन्न होइ, तैसे सर्व कर्म मल रहित कृतकृत्य दशारूप निष्पन्न आत्मा हो है ।

तिहुवणसिहरेण मही, वित्थारे अट्ठजोयणुदयथिरे ।
धवलच्छत्तायारे, मणोहरे ईसिपब्भारे ।।६४९।।

त्रिभुवनशिखरेण मही, विस्तारे अष्ट योजनान्युदयस्थिरा ।
धवलछत्राकारा मनोहरा ईषत्प्रभारा ।।६४९।।

टीका – सो जीव ऊर्ध्वगमन स्वभाव करि तीन लोक के शिखर विषै ईषत्प्राग्भार है नाम जाका असी जो आठवी पृथ्वी, ताके ऊपरि एक समय मात्र काल करि जाइ तनुवातवलय का अत विषै विराजमान हो है । कैसी है वह पृथ्वी ? मनुष्य पृथ्वी के समान पैंतालीस लाख योजन चौडी गोल आकार है । बहुरि आठ योजन ऊची है । बहुरि स्थिर है । बहुरि श्वेत छत्र के आकारि है, सो श्वेत वर्ण है । वीचि मे मोटी छेहडे पतली असी है । बहुरि मनोहर है । यद्यपि ईषत्प्राग्भार नामा पृथ्वी घनोदधि-वातवलय पर्यंत है, परतु इहा तिस पृथ्वी के बीचि पाइए है जो सिद्धशिला, ताकी अपेक्षा असा प्ररूपण कीया है । धर्मास्तिकाय के अभाव तै तहां तै ऊपरि गमन न हो है । तहा ही चरम शरीर तै किंचित् ऊन आकार रूप जीव द्रव्य अनत ज्ञानानदमय विराजै हैं ।

पुव्वण्हस्स तिजोगो, संतो खीणो य पढमसुक्कं तु ।
बिदियं सुक्कं खीणो इगिजोगो झायदे झाणी ॥६५०॥

पूर्वज्ञस्य त्रियोगः शांतः क्षीणश्च प्रथमशुक्लं तु ।
द्वितीयं शुक्लं क्षीण एकयोगो ध्यायति ध्यानी ॥६५०॥

टीका – शुक्लध्यान च्यारि प्रकार है, तहां सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति, व्युरतक्रियानिर्वृति ए दोऊ तो सयोगी अयोगी केवली के हो है, ते पूर्वे कहे । अर दोय शुक्लध्यान कौन कै हो है ? सो गाथा मे वर्णन न कीया था, सो अब इहां वर्णन करिए है—

जो महामुनि पूर्वनि का ज्ञाता, तीन योगनि का धारक, उपशम श्रेणी वा क्षपक श्रेणीवर्ती सो पृथक्त्व वितर्क विचार नामा पहला शुक्लध्यान कौ ध्यावै है । बहुरि दूसरे शुक्लध्यान कौ क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती तीन योगनि विषै एक योग का धारक होइ, सो ध्यावै है । इहां पृथक्त्व कहिए जुदा जुदा वितर्क कहिए भावश्रुतज्ञान, ताकरि विचार कहिए अर्थव्यजन योगनि का सक्रमण, तहा अर्थ नै ध्यावने योग्य द्रव्य वा गुण वा पर्याय, तिनका अर व्यंजन श्रुत के शब्द, तिनका अर योग मन वा वचन वा काय, तिनिका जो पलटना, सो विचार है । अैसै जिस ध्यान विषै प्रवृत्ति होइ, सो पृथक्त्व वितर्क विचार जानना । बहुरि जहां एकत्व कहिए एकता लीए वितर्क कहिए भावश्रुत, ताकरि अविचार कहिए जिस अर्थ कौ जिस श्रुत शब्द रूप जिस योग की प्रवृत्ति लीएं ध्यावै, ताकौं तैसे ही ध्यावै पलटना न होइ, अैसै एकत्व वितर्क अविचार ध्यान विषै प्रवृत्ति जाननी ।

सो मे तिहुणमहियो, सिद्धो बुद्धो णिरंजणो णिच्चो ।
दिसदु वरणाणदंसणचरित्तसुद्धिं समाहिं च ॥६५१॥

स मे त्रिभुवनमहितः, सिद्धः बुद्धो निरंजनो नित्यः ।
दिशतु वरज्ञानदर्शनचारित्रशुद्धिं समाधिं च ॥६५१॥

टीका – सो सिद्ध भगवान त्रिभुवन करि पूजित अर बुद्ध कहिए सब का ज्ञाता अर निरंजन कहिए कर्म रहित अर नित्य कहिए विनाश रहित अैसा है, सो मुझको उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन चारित्र की शुद्धता अर समाधि कहिए अनुभव दशा वा सन्यास मरण, ताकौ द्यो प्राप्त करो । इहां सिद्धनि कै जो मोक्ष अवस्था भई, ताकौ स्वरूप सर्व कर्म का सर्वथा नाश तै संपूर्ण आत्मस्वरूप की प्राप्ति रूप जानना । बहुरि अन्यमति अन्यथा कहै है, सो न श्रद्धान करना । तहा—

बौद्ध तौ कहै जैसे दीपक का निर्वाण कहिए बुझना, तैसे आत्मा का स्कध सन्तान का नाश होने ते जो अभाव होना, सो निर्वाण है, ताकौ कहिए है–

जहा मूल वस्तु का नाश होइ तौ ताके अर्थि उपाय काहे कौ करिए ? ज्ञानी तौ अपूर्व लाभ के अर्थि उपाय करै ताते अभाव मात्र मोक्ष कहना युक्त नाही ।

बहुरि योगमतवाला कहै है–बुद्धि, सुख, दु ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, सस्कार ए नव आत्मा के गुण है, तिनका नाश, सोइ मोक्ष है । ताकौ भी तिस पूर्वोक्त वचन ही करि निराकरण-समाधान कीया । जहा विशेषरूप गुणनि का अभाव भया, तहा आत्मवस्तु का अभाव आया, सो बनै नाही ।

बहुरि साख्यमतवाला कहै है–दूरी भया है कार्य-कारण सबध जाका असा जो आत्मा, ताकै बहुत सूता पुरुष की ज्यो अव्यक्त चैतन्यता रूप होना, सो निर्वाण है । ताका भी पूर्वोक्त वचन करि निराकरण भया । इहा भी अपना चैतन्य गुण था, सो उलटा अव्यक्त भया । असे नाना प्रकार अन्यथा प्ररूपै है । तिनिका निराकरण जैन के न्यायशास्त्रनि मैं कीया है, सो जानना ।

मोक्ष अवस्था कौ प्राप्त सिद्ध भगवान है, ते निरतर अनत अतीद्रिय आनद कौ अनुभवै है । जाते इद्रिय मन करि किंचित् जानना होइ अर किछू निराकुलता होइ, तब ही आत्मा आप कौ सुखी मानै है । तौ जहा सर्व का जानना भया अर सर्वथा निराकुलपना भया तौ तहा परम सुख कैसे न हो है ? तीन लोक के तीन काल सबधी पुण्यवत जीवनि का सुख तै भी अनत गुणा सुख सिद्धनि कै एक समय विषै हो है । जाते ससार विषै सुख असे है जैसे महारोगी किंचित् रोग की हीनता भए आप कौ सुखी मानै अर सिद्धनि कै सुख असे है जैसे रोग रहित निराकुल पुरुष सहज ही सुखी है । असे अनत सुख विराजमान सम्यक्त्वादि अष्ट गुण सहित लोकाग्र विषै विराजमान सिद्ध भगवान हैं, सो कल्याण करो ।

या प्रकार बाहुबलि नामा मत्री करि पूजित जो माधवचद्र नामा आचार्य, ताकरि यतिवृषभ नामा आचार्य जाका मूल कर्ता, वीरसेन आचार्य टीका कर्ता असा धवल, जयधवल शास्त्र ताके अनुसारि क्षपणासार ग्रथ कीया, ताके अनुसारि इहा क्षपणा का वर्णन रूप जे लब्धिसार की गाथा, तिनका व्याख्यान कीया ।

अब आचार्य लब्धिसार शास्त्र की समाप्ति करने विषै अपना नाम प्रगट करै है—

वीरिंदणंदिवच्छेणप्पसुदेणभयणंदिसिस्सेण ।
दंसणचरित्तलद्धी, सुसूयिया णेमिचंदेण ॥६५२॥

वीरेंद्रनंदिवत्सेनाल्पश्रुतेनाभयनंदिशिष्येण ।
दर्शनचारित्रलब्धिः सुसूत्रिता नेमिचन्द्रेण ॥६५२॥

टीका – नेमिचंद्र आचार्य करि इस लब्धिसार नाम शास्त्र विषै दर्शन चारित्र की लब्धि, सो सुसूत्रिता कहिए भले प्रकार कही है । कैसा है नेमिचद्र, वीरनदि अर इंद्रनदि नामा आचार्य तिनिका वत्स है । ज्ञानदानकरि पोष्या है । बहुरि अभयनदि नामा आचार्य, तिनिका शिष्य है ।

अब आचार्य अपने गुरु कौ नमस्कार रूप अंत मंगल करै है—

जस्स य पायपसाए, णणंतसंसारजलहिमुत्तिण्णो ।
वीरिंदणंदिवच्छो, णमामि तं अभयणंदिगुरुं ॥६५३॥

यस्य च पादप्रसादेनानंतसंसारजलधिमुत्तीर्णः ।
वीरेंद्रनंदिवत्सो, नमामि तमभयनंदिगुरुम् ॥६५३॥

टीका – वीरनंदि अर इंद्रनंदि का वत्स जो मै नेमिचंद्र आचार्य, सो जाके चरणनि का प्रसाद करि अनंत संसार समुद्रतैं पार भया, तिस अभयनदि नामा गुरु कौं मैं नमस्कार करौं हौं ।

ऐसैं लब्धिसार नामा शास्त्र के जे गाथासूत्र, तिनका अर्थ उपशम श्रेणी का व्याख्यान पर्यंत संस्कृत टीका के अनुसारि अर क्षपणा का व्याख्यान क्षपणासार के अनुसारि इहा अपनी बुद्धि माफिक मै कीया है । इहां जो चुक होइ, ताकौ सम्यग्ज्ञानी जीव शुद्ध करियो । बहुरि इस शास्त्र का अभ्यास तै दर्शन चारित्र की लब्धि का स्वरूप जानि आप स्वरूप श्रद्धान आचरण तै सम्यग्दर्शन, चारित्र का धारक होइ केवलज्ञान कौं पाइ सर्व कर्म कौ नाश कर उत्कृष्ट ज्ञानानदमय कृतकृत्य अवस्थारूप सिद्ध पद कौ प्राप्त होइ ।

दोहा—सम्यग्दर्शन चरण के, कारण कर्ता कर्म ।
फल भोक्ता मम देहु सब, अपनौ अपनौ धर्म ॥१॥

चौपाई

मंगल तत्त्वनि कौ श्रद्धान, मंगल है फुनि सम्यग्ज्ञान ।
मंगल शुद्ध चरित्र अनूप इनके धारक मंगलरूप ॥१॥

इति श्रीलब्धिसार-क्षपणासारव्याख्यान सपूण ।

गाथा-सूची

प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करनेवाले दातारों की सूची

नाम	राशि
१ श्री भगवानजीभाई कचराभाई शाह ट्रस्ट, थाणा	६६५१.००
२. श्री वृन्दावनदासजी भगवानदासजी जैन, मौ	२००१.००
३. श्रीमती सुधा वी. पाटनी, भोपाल	२००० ००
४. श्रीमती पतासीदेवी ध० प० स्व० श्री इन्दरचन्दजी पाटनी, लाडनू	१०००.००
५. श्री सौभाग्यमलजी पाटनी, बम्बई	१००० ००
६. श्रीमती बसन्तीदेवी ध० प० श्री हरकचन्दजी छाबडा, बम्बई	५०१ ००
७. श्रीमती नारायणीदेवी ध० प० श्री गुलाबचन्दजी रारा, दिल्ली	५०१ ००
८. श्री हुलासमलजी कासलीवाल, कलकत्ता	५०१ ००
९. श्रीमती सत्यवती जैन ध० प० श्री रतनचन्दजी जैन, दिल्ली	५०१ ००
१०. चुन्नीलाल लल्लूभाई पटेल, अहमदाबाद	५०१.००
११. मजुलाबेन चिमनलाल शाह, बम्बई	५०० ००
१२. श्रीमति स्मिता दीपकभाई दोशी, बम्बई	५०० ००
१३. श्री डॉ० सुमतिचन्दजी जैन, मलकापुर	५०० ००
१४ श्री प. रखबचन्दजी चपरोत, मन्दसौर	५०० ००
१५ श्री रतनलालजी कुचडोदवाले, मन्दसौर	५०० ००
१६ श्रीमती तारावती जैन, हरिद्वार	५०० ००
१७ श्रीमती रगूबाई ध० प० श्री उम्मेदमलजी भण्डारी, सायला	३००.००
१८ श्री तखतराजजी जैन एव परिवार, कलकत्ता	३०० ००
१९ श्रीमती अमृतबेन प्रेमजी जैन, मलाड बम्बई	२५१ ००
२० श्री शामजी भाणजी शाह, गोरेगाव-बम्बई	२५१ ००
२१. श्री धनकुमारजी जैन, जयपुर	२५१ ००
	१२०८ ००
योग	२३७१८ ००